स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2008-09 ई.

दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

इस पंचाँग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade Mark No. 472584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।

तिमिर हरण मंगल करण सूर्य भयो प्रकाश। सकल अंधेरा मिट गयो धरती धवल आकाश॥

पंचांगदिवाकर

वि. २०६५

राजा सूर्य

मंत्री सूर्य
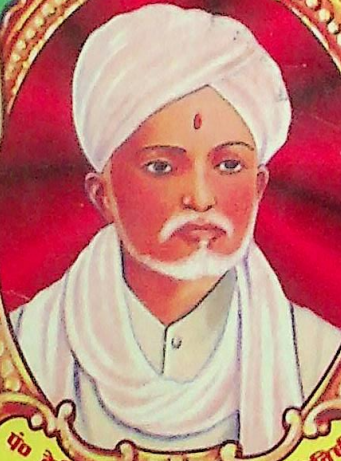
पं० देवी दयालु मशहूरे आलम ज्योतिषी
पंचाँग दिवाकर कर्ता लाहौर वाले

पं० शिव राम दत्त ज्यो०

पं० मोहन लाल ज्यो०

मशहूरे आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी की असली, प्रामाणिक व शुद्ध पंचाँगदिवाकर, जालन्धर।

एकमात्र वितरक :
मॉडर्न पब्लिशर्ज़
रेलवे रोड, जालन्धर
फोन : 2457160

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

अन्य प्राप्ति स्थान :
जनरल बुक डिपो
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 2457959

मूल्य: रु० 56.00

स्थापित सं० 1875 ई०

मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी के सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 133वां

पंचाँग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद—आलम जन्त्री उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं बर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश यात्रा योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित निर्दिष्ट किए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री—संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 301 रुपए होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 551 रुपए अथवा 11 पौंड होगी।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री—आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जाता है। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। इसके लिए **वृहद् जन्मपत्री** के लिए फीस 551 रुपए से 1100 रुपए तक। विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 1000 रुपए अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वर्षफल—आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा ? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन्, ई० व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 275 रुपए होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा-व्यापारियों के लिए चाँस—वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए चाँस की मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। मासिक रिपोर्ट की फीस 401 रुपए है। यदि एक जिन्स से अधिक होगी तो रुपए अतिरिक्त होंगे।

शेयर-बाज़ार—शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों के तेज़ी से चाँस के लिए शेयर बाज़ार की मासिक रिपोर्ट की फीस 501 रुपए। साथ में अपनी जन्मपत्री की फोटो कापी भी भेज दें।

कम्प्यूटर (Computrized) शुद्ध/वैज्ञानिक जन्मपत्री—लेटैस्ट प्रामाणिक सॉफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 251/- रुपये, वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्त लिखित उपायों सहित 550 रुपये।
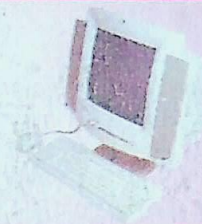
Pt. Panna Lal Jyotishi M.A. Office Pt. Devi Dayal Jyotishi & Sons.

Adda Hoshiarpur, Jalandhar—144008 (India) Ph. 2457959, 2221325

कृपया ड्राफ्ट/मनीआर्डर पं० पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर के नाम से ही भेजें।

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः

संस्थापक : पं. देवी दयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः
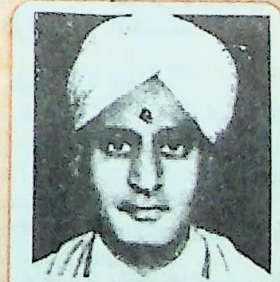
स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

वि. संवत् २०६५ (सन् 2008-09 ई.)

असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

मशहूरे आलम

राजा सूर्य

—राजा चन्द्र—
पूर्वस्थ कुछ प्रदेशों में राजा चन्द्र होगा।

देखें पृष्ठ 72, 73

मन्त्री सूर्य

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)
सुपुत्र: स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी
सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम)
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर- 144 008 (भारत) फोन नं. 0181-2457959, फैक्स 2227388

प्रकाशक : मॉडर्न पब्लिशर्ज़, रेलवे रोड, जालन्धर शहर फोन : 2458388

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष
१३३ वां

स्थापित
वि. संवत्
१९३३

Printed at: MBD Printographics (P) Ltd. Ram Nagar, Industrial Area, Gagret, Distt. Una (H.P.)

विषय-सूची — पंचांगदिवाकर संवत् २०६५ (सं. 2008-09 ई.)

✤ देखें पृष्ठ 72-73

वर्ष का राजा—सूर्य✤, मन्त्री—सूर्य

इस वर्ष के नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के उपयोगी, आकर्षक विषय

- आधुनिक सन्दर्भ में वर–कन्या मिलान
- अनिष्ट ग्रहों तथा विविध समस्याओं के उपायों सम्बन्धी विशेष लेख
- सन्तान सुख बाधाकारक योग एवं निवारण
- शिव पूजन में रुद्राक्ष का महत्त्व एवं महिमा

पंचाँग दिवाकर के १३३वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर जगद् गुरु शंकराचार्य स्वामी नारायणानन्द तीर्थ महाराज जी का शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा—
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्
(वाराणसी)

प्रमुख व्रत, पर्व, त्यौहार एवं छुट्टियाँ (सन् 2008-09 ई.)

→जनवरी 2008 ई.←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	मंग.
लोहड़ी पर्व (पं., हरि.)	13 जन.	रवि
मकर संक्रान्ति	14 जन.	चंद्र
पुत्रदा एका. (स्मार्त)	18 जन.	शुक्र
पूर्णिमा, माघस्नान प्रा.	22 जन.	मं.
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	25 जन.	शुक्र
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	शनि

→फरवरी←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
षट्तिला एका. व्रत	2 फर.	शनि
मौनी अमावस पितृकार्येषु	6 फर.	बुध
मौनी अमावस स्नान (महोदय योग 7 घं. 48 मि. तक)	7 फर.	गुरु
गौरी तृतीया व्रत	9 फर.	शनि
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	10 फर.	रवि
वसन्त पंचमी, श्रीपंचमी	11 फर.	चंद्र
रथ-आरोग्य सप्तमी	13 फर.	बुध
भीष्म द्वादशी	17 फर.	रवि
माघ पूर्णिमा स्नान	21 फर.	गुरु
ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण	21 फर.	गुरु
श्रीगुरु रविदास जयं.	21 फर.	गुरु

→मार्च←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	6 मार्च	गुरु
होलाष्टक प्रारम्भ	14 मार्च	शुक्र
गोविन्द द्वादशी	18 मार्च	मंग
महाविषुव दिवस	20 मार्च	गुरु
फा. पूर्णिमा, होली	21 मार्च	शुक्र
होलिका दहन (सायं)	21 मार्च	शुक्र
होलाष्टक समाप्त	21 मार्च	शुक्र
गुड फ्राइडे	21 मार्च	शुक्र
होला मेला (आनन्दपुर सा.)	22 मार्च	शनि
वसन्तोत्सव	22 मार्च	शनि
अङ्गारकी गणेशचतुर्थी	25 मार्च	मंग.
श्रीशीतलाष्टमी व्रत	30 मार्च	रवि

→अप्रैल←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
वारुणी पर्व	3 अप्रै.	गुरु
वि. संवत् 2064 पूर्ण	6 अप्रै.	रवि
वि. संवत् 2065 प्रा.	6 अप्रै.	रवि
चैत्र(वासंत)नवरात्रे शुरु	6 अप्रै.	रवि
गौरी तृतीया (गणगौर)	8 अप्रै.	मंग.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	10 अप्रै.	गुरु
स्कन्द षष्ठी	11 अप्रै.	शुक्र
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै.	रवि
श्रीदुर्गाष्टमी व्रत	13 अप्रै.	रवि
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	13 अप्रै.	रवि
श्रीरामनवमी व्र. स्मा.	13 अप्रै.	रवि
श्रीरामनवमी वैष्णव	14 अप्रै.	चंद्र
वासन्त नवरात्रे समाप्त	14 अप्रै.	चंद्र
डा. अम्बेदकर जयन्ती	14 अप्रै.	चंद्र
कामदा एकादशी व्रत	16 अप्रै.	बुध
अनङ्ग त्रयोदशी	18 अप्रै.	शुक्र
श्रीमहावीर जयन्ती	18 अप्रै.	शुक्र
चैत्र पूर्णिमा स्नानादि	20 अप्रै.	रवि
वैशाख स्नान प्रारम्भ	20 अप्रै.	रवि

→मई←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
त्रिस्पर्शा महाद्वादशी	2 मई	शुक्र
सोमवती अमा वस	5 मई	चंद्र
अक्षय तृतीया	7 मई	बुध
श्रीपरशुराम जयन्ती	7 मई	बुध
आद्य गुरु शंकराचार्य जयं.	9 मई	शुक्र
श्रीगंगा जयन्ती	11 मई	रवि
श्री सीता नवमी	13 मई	मंग.
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	13 मई	मंग.
नृसिंह जयन्ती	18 मई	रवि
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	19 मई	चंद्र
वैशाख स्नान समाप्त	19 मई	चंद्र
भद्रकाली एकादशी	31 मई	रवि.

→जून←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
भावुका अमावस	3 जून	मंग.
वट सावित्री व्रत (अमापक्ष)	3 जून	मंग.
शनैश्चर जयन्ती	3 जून	मंग.
रम्भा तृतीया व्रत	6 जून	शुक्र
गंगा दशहरा पर्व	12 जून	गुरु
गंगा दशहरा स्नान (11 घं. 39 मि. तक)	13 जून	शुक्र
निर्जला एकादशी व्रत	14 जून	शनि
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	18 जून	बुध
सन्त कबीर जयन्ती	18 जून	बुध
सा. दक्षिणायन प्रारम्भ	21 जून	शनि

→जुलाई←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
रथयात्रा (पुरी)	4 जुला.	शुक्र
कुमार षष्ठी	8 जुला.	मंग.
विवस्वत सप्तमी	9 जुला.	बुध
हरिशयनी एकादशी	13 जुला.	रवि
चातुर्मास्य व्रत प्रारम्भ	13 जला.	रवि
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला.	बुध
कोकिला व्रत	17 जुला.	गुरु
गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा	18 जुला.	शु.
नाग पंचमी (राज.)	23 जुला.	बुध

→अगस्त←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
हरियाली अमावस	1 अग.	शुक्र
खण्डग्रास सूर्यग्रहण	1 अग.	शुक्र
मधुश्रवा-हरियाली तीज	4 अग.	चंद्र
सिंघारा तीज	4 अग.	चंद्र
नाग पंचमी	6 अग.	बुध
ऋक्, युजर्वेदि उपाकर्म	6 अग.	बुध
गो. तुलसीदास जयंती	8 अग.	शु.
दुर्गाष्टमी (मे. चिंतपूर्णी)	9 अग.	शनि
भारत स्वतन्त्रता दिन	15 अग.	शुक्र
रक्षा-बन्धन (राखी)	16 अग.	शनि
भाद्रपद सक्रान्ति	16 अग.	शनि
खण्डग्रास चन्द्रग्रहण	16 अग.	शनि
दर्शनश्रीअमरनाथ गुफा	16 अग.	शनि
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी	20 अग.	बुध
चन्दन षष्ठी व्रत	22 अग.	शुक्र
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	23 अग.	शनि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव)	24 अग.	रवि
गोकुल अष्टमी	24 अग.	रवि
श्रीगुग्गा नवमी	25 अग.	चन्द्र
कुशोत्पाट्नी शनैश्चरी अमा.	30 अग.	शनि
पिठोरी अमावस	30 अग.	शनि

→सितम्बर←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
हरितालिका तृतीया	2 सितं.	मंग.
सामवेदि उपाकर्म	2 सितं.	मंग.
सिद्धि विनायक व्रत	3 सितं.	बुध
कलंक चतुर्थी (चंद्रदर्शन निषेध)	3 सितं.	बुध
ऋषि पंचमी	4 सितं.	गुरु
सूर्य षष्ठी व्रत	5 सितं.	शुक्र
सन्तान सप्तमी व्रत	6 सितं.	शनि
श्रीमहालक्ष्मी व्रत शुरु	7 सितं.	रवि
श्रीराधाष्टमी	7 सितं.	रवि
श्रीचन्द्रनवमी(उदासीन)	9 सितं.	मंग.
श्रीवामन जयन्ती	12 सितं.	शुक्र
अनन्त चतुर्दशी व्रत	14 सितं.	रवि
मे. बाबा सोढल, जालं.	14 सितं.	रवि
प्रोष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध	15 सितं.	चंद्र
महालय श्राद्ध(पक्ष)प्रा.	15 सितं.	चंद्र
जीवित्पुत्रिका व्रत	22 सितं.	चंद्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	22 सितं.	चंद्र
सर्वपितृ श्राद्ध (13/50 बाद)	28 सितं.	रवि
पितृ विसर्जन	28 सितं.	रवि
सोमवती अमावस	29 सितं.	चंद्र
महालय श्राद्ध समाप्त	29 सितं.	चंद्र
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ	30 सितं.	मंग.

→अक्तूबर←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
महात्मा गाँधी जयं.	2 अक्तू.	गुरु
उपांग ललिता व्रत	4 अक्तू.	शनि
सरस्वती आवाहन	6 अक्तू.	चंद्र
सरस्वती पूजन	7 अक्तू.	मंग.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	7 अक्तू.	मंग.
महानवमी (शस्त्र पूजा)	8 अक्तू.	बुध
नवरात्रे समाप्त	8 अक्तू.	बुध
विजयादशमी (दशहरा)	9 अक्तू.	गुरु
सरस्वती विसर्जन	10 अक्तू.	शुक्र
भरत मिलाप	11 अक्तू.	शनि
शरद् पूर्णिमा	14 अक्तू.	मंग.
महर्षि वाल्मीकि जयं.	14 अक्तू.	मंग.
कार्तिक स्नान प्रारम्भ	14 अक्तू.	मंग.
कार्तिक संक्रान्ति	16 अक्तू.	गुरु
करवा चौथ व्रत	17 अक्तू.	शुक्र
अहोई अष्टमी व्रत	21 अक्तू.	मंग.
गोवत्स द्वादशी	25 अक्तू.	शनि
धन त्रयोदशी	26 अक्तू.	रवि
नरक चतुर्दशी	27 अक्तू.	चंद्र
श्रीहनुमान जयन्ती	27 अक्तू.	चंद्र
भौमवासरी का. अमावस	28 अक्तू.	मंग.
दीपावली	28 अक्तू.	मंग.
अन्नकूट-गोवर्धन पूजा	29 अक्तू.	बुध
भाई दूज, यम द्वितीया	30 अक्तू.	गुरु

→नवम्बर←

व्रत/पर्व	तिथि	वार
सूर्य षष्ठी व्रत	4 नवं.	मंग.
गोपाष्टमी	6 नवं.	गुरु
अक्षय-कूष्माण्ड नवमी	7 नवं.	शुक्र
भीष्मपंचक प्रारम्भ	9 नवं.	रवि
देवप्रबोधिनी एकादशी	9 नवं.	रवि
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	9 नवं.	रवि
तुलसी विवाह	10 नवं.	चंद्र
वैकुण्ठ चतुर्दशी	11 नवं.	मंग.
कार्तिक पूर्णिमा	13 नवं.	गुरु

श्रीगुरुनानक जयन्ती	13 नवं. गुरु
भीष्मपंचक समाप्त	13 नवं. गुरु
मेलापुष्कर, रामतीर्थ(अमृत.)	13 नवं. गुरु
श्रीकाल भैरवाष्टमी	19 नवं. बुध

→दिसम्बर←

स्कन्द-चम्पा षष्ठी	4 दिसं. गुरु
मित्र सप्तमी	5 दिसं. शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी	6 दिसं. शनि
मोक्षदा एकादशी व्रत	9 दिसं. मंग.
श्री गीता जयन्ती	9 दिसं. मंग.
पिशाचमोचन श्राद्ध	11 दिसं. गुरु
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	12 दिसं. शुक्र
सूर्य उत्तरायण में	21 दिसं. रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. गुरु
शनैश्चरी अमावस	27 दिसं. शनि

→जनवरी 2009 ई.←

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. गुरु
पुत्रदा एकादशी व्रत	7 जन. बुध
पूर्णिमा, माघस्नान प्रा.	11 जन. रवि
लोहड़ी पर्व (पं., हरि.)	12 जन. चंद्र
मकर संक्रान्ति	13 जन. मंग.
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	14 जन. बुध
षट्तिला एका. व्रत	21 जन. बुध
सोमवती मौनी अमावस	26 जन. चंद्र
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. चंद्र
गौरी तृतीया व्रत	29 जन. गुरु
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	30 जन. शुक्र
वसन्तपंचमी, श्रीपंचमी	31 जन. शनि
सरस्वती जयन्ती	31 जन. शनि

→फरवरी←

रथ-आरोग्य सप्तमी	2 फर. चंद्र
पुत्र सप्तमी व्रत	2 फर. चंद्र
भीष्म द्वादशी	6 फर. शुक्र
माघ पूर्णिमा	9 फर. चंद्र
श्रीगुरु रविदास जयंती	9 फर. चंद्र
माघ स्नान समाप्त	9 फर. चंद्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	23 फर. चंद्र

→मार्च←

होलाष्टक प्रारम्भ	4 मार्च बुध
गोविन्द द्वादशी	8 मार्च रवि
होलिका दहन	10 मार्च मंग.
फा. पूर्णिमा, होली	11 मार्च बुध
होलाष्टक समाप्त	11 मार्च बुध
वसन्तोत्सव	11 मार्च बुध
होला मेला (आनन्दपुर सा.)	12 मार्च गुरु
श्रीशीतलाष्टमी व्रत	19 मार्च गुरु
महाविषुव दिवस	20 मार्च शुक्र
वारुणी पर्व	24 मार्च मंग.
वि. संवत् 2065 पूर्ण	26 मार्च गुरु

एकादशी व्रत-सं. २०६५

सफला एका. (पौष कृ.)	4 जन. शु.
पुत्रदा (पौष शु.) स्मार्त	18 जन. शु.
पुत्रदा (,, ,,) वैष्णव	19 जन. श.
षट्तिला (माघ कृष्ण) स्मा.	2 फर. श.
जया (माघ शुक्ल)	17 फर. र
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	3 मार्च चं.
आमलकी (फागु. शुक्ल)	17 मार्च चं.
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	2 अप्रै. बु.
कामदा (चैत्र शुक्ल)	16 अप्रै. बु.
वरूथिनी (वैशाख कृष्ण)	2 मई शु.
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	15 मई गु.
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	31 मई श.
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	14 जून श.
योगिनी (आषाढ़. कृष्ण)	29 जून र.
देवशयनी (आषाढ़ शुक्ल)	13 जुला. र.
कामिका (श्रावण कृ.) स्मा.	28 जु. चं.
कामिका (श्रावणकृ.) वैष्णव	29 जु. मं.
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	12 अग. मं.
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	27 अग. बुध
पद्मा (भाद्रपद शुक्ल)	11 सितं. गु.
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	25 सितं. गु.
पापांकुशा (आश्विन शुक्ल)	11 अक्तू. श.
रमा (कार्तिक कृष्ण)	24 अक्तू. शु.
देवप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	9 नवं. र
उत्पन्ना (मार्गशीर्ष कृ.)	23 नवं. र.
मोक्षदा (मार्गशीर्ष शु.)	9 दिसं. मं.
सफला (पौष कृष्ण)	23 दिसं. मं.

(एकादशी व्रत सन् 2009 ई.)

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	7 जन. बुध
षट्तिला (माघ कृष्ण)	21 जन. बुध
जया (माघ शुक्ल)	6 फर. शुक्र
विजया (फाल्गुन कृष्ण)	20 फर. शुक्र
आमलकी (फाल्गुन शु.)	7 मार्च शनि
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	22 मार्च रवि

श्रीसत्यनारायण व्रत

श्रीसत्यनारायण व्रत का पूर्णमाशी के स्नान, दानादि उदयव्यापिनी के पर्वकालीन तारीख से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष पूर्णिमा व्रत	22 जन. मं.
माघ पूर्णिमा व्रत	20 फर. बु.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	21 मार्च शु.
चैत्र पूर्णिमा व्रत	19 अप्रै. श.
वैशाख पूर्णिमा व्रत	19 मई चं.
ज्येष्ठ पूर्णिमा व्रत	18 जून बु.
आषाढ़ पूर्णिमा व्रत	17 जुला. गु.
श्रावणपूर्णिमा व्रत	16 अग. श.
भाद्रपद पूर्णिमा व्रत	14 सितं. र
आश्विन पूर्णिमा व्रत	14 अक्तू. मं.
कार्तिक पूर्णिमा व्रत	12 नवं. बु.
मार्गशीर्ष पूर्णिमा व्रत	12 दिसं. शु.

——(सन् 2009 ई.)——

पौष पूर्णिमा व्रत	10 जन. श.
माघ पूर्णिमा व्रत	9 फर. चं.
फाल्गुन पूर्णिमा व्रत	10 मार्च मं.

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

पौष (भौमवती)	8 जन. मं.
माघ (मौनी)	7 फर. गु.
फाल्गुन	7 मार्च शु.
चैत्र	6 अप्रै. र.
वैशाख (सोमवती)	5 मई चं.
ज्येष्ठ (भौमवती)	3 जून मं.
आषाढ़	3 जुला. गु.
श्रावण	1 अग. शु.
भाद्रपद (शनैश्चरी)	30 अग. श.
आश्विन (सोमवती)	29 सितं. चं.
कार्तिक (भौमवती)	28 अक्तू. मं.
मार्गशीर्ष	27 नवं. गु.
पौष (शनैश्चरी)	27 दिसं. श.

——(सन् 2009 ई.)——

माघ (सोमवती)	26 जन. चं.
फाल्गुन	25 फर. बु.
चैत्र	26 मार्च गु.

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

श्रीगणेश संकष्ट(माघ कृ.)	25 जन. शु.
तिल चतुर्थी (माघ शु.)	10 फर. र.
फाल्गुन	24 फर. र.
चैत्र (अङ्गारकी)	25 मार्च मं.
वैशाख	24 अप्रै. गु.
ज्येष्ठ	23 मई शु.
आषाढ़	22 जून र.
श्रावण	21 जुला. चं.
भाद्रपद (बहुला चतु.)	20 अग. बु.
सिद्धि विनायकव्रत (भा.शु.)	3 सितं. बु.
आश्विन	18 सितं. गु.
कार्तिक	17 अक्तू. शु.
मार्गशीर्ष	16 नवं. र.
पौष	15 दिसं. च.

——(सन् 2009 ई.)——

माघ कृ.(श्रीगणेश संकष्ट)	14 जन. बु.
माघ शुक्ल (तिल चतु.)	30 जन. शु.
फाल्गुन	12 फर. गु.
चैत्र	14 मार्च श.

मुस्लिम त्यौहार
सन् 2008-09 ई.

मुहर्रम, हिजरी 1429 प्रारम्भ	10 जन. गु.
मुहर्रम (ताजिया)	19 जन. श.
चेहलम	27 फर. बु.
आखिरी चहार	5 मार्च बु.
शहादत-ए-इमाम हसन	7 मार्च शु.
ईद-ए-मिलाद	21 मार्च शु.
ईद-ए-मौलाद	26 मार्च बु.
ग्यारहवीं शरीफ	18 अप्रै. शु.
उर्स ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	5-10 जुला.
जन्म श्रीहजरत अली	17 जुला. गु.
शबे मिराज	31 जुला. गु.
शबे बारात	18 अग. चं.
रमज़ान	2 सितं. मं.
शहादत-ए-हजरत अली	22 सितं. चं.
जमातुलविदा	26 सितं. शु.
शबे-कदर	28 सितं. र
ईद-उल-फितर	2 अक्तू. गु.
ईदुलजुहा (बकरीद)	9 दिसं. मं.
मुहर्रम, हिजरी 1430 प्रा	30 दिसं. मं.

——(सन् 2009 ई.)——

मुहर्रम (ताजिया)	8 जन. गु.
चेहलम	16 फर. चं.
शहादत-ए-इमाम हसन	24 फर. मं.
आखिरी चहार	25 फर. बु.
ईद-ए-मिलाद	10 मार्च मं.
ईद-ए-मौलाद	15 मार्च र.

नोट— सभी मुस्लिम त्यौहार चन्द्रदर्शन पर निर्भर होते हैं। अक्षांश भेद के कारण चन्द्रदर्शन की तारीखों में अन्तर के कारण त्यौहारों में एक दिन का अन्तर सम्भव है। अन्य छुट्टियां भी सरकारी गज़ट से मिला लें। परिवर्तन की स्थिति में लेखक, प्रकाशक, उत्तरदायी नहीं होंगे। —सम्पादक

पितृपक्ष में श्राद्ध-2008 ई.

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2008 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

पूर्णिमा का श्राद्ध / प्रतिपदा का श्राद्ध (14/44 बाद)	15 सितं. चं.
द्वितीया का श्राद्ध	16 सितं. मं.
तृतीया का श्राद्ध	17 सितं. बु.
चतुर्थी का श्राद्ध	18 सितं. गु.
पंचमी का श्राद्ध	19 सितं. शु.
षष्ठी का श्राद्ध	20 सितं. श.
सप्तमी का श्राद्ध	21 सितं. र.
अष्टमी का श्राद्ध	22 सितं. चं.
नवमी का श्राद्ध	23 सितं. मं.
दशमी का श्राद्ध	24 सितं. बु.
एकादशी का श्राद्ध	25 सितं. गु.
द्वादशी का श्राद्ध	26 सितं. शु.
त्रयोदशी का श्राद्ध	27 सितं. श.
चतुर्दशी का श्राद्ध*	27 सितं. श.
अमावस का श्राद्ध	28 सितं. र.
सर्वपितृ श्राद्ध	28 सितं. र.

✤ = चतुर्दशी को शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में मृतों का श्राद्ध अमावस्या में करने का विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	13 फर. बु.
श्रीहोलिका दहन	21 मार्च शु.
श्रीभगवतनाराण जयं.	25 मार्च मं.
वैशाखी पर्व	13-15 अप्रै.
रामनवमी पर्व	14 अप्रै. चं.
जानकी जयन्ती	13 मई मं.
गंगा दशहरा	12 जून. गु.
गुरु पूर्णिमा	18 जुला. शु.
तुलसी जयन्ती पर्व	8 अग. शु.

कृष्ण जयन्ती	23-25 अग.
वामन जयन्ती	12 सितं. शु.
विजयादशमी	9 अक्तू. गु.
शरद् पूर्णिमा व्रत	14 अक्तू. मं.
महंत गु. गोविन्ददास जयं.	26 अक्तू. र.
श्रीहनुमान जयन्ती	27 अक्तू. चं.
दीपावली पर्व	28 अक्तू. मं.
श्रीगीता जयन्ती	9 दिसं. मं.

प्रदोष व्रत-2008 ई.

पौष कृष्ण (शनि)	5 जन. श.
पौष शुक्ल	20 जन. र.
माघ कृष्ण (सोम)	4 फर. चं.
माघ शुक्ल (सोम)	18 फर. चं.
फाल्गुन कृष्ण	5 मार्च बु.
फाल्गुन शुक्ल	19 मार्च बु.
चैत्र कृष्ण	3 अप्रै. गु.
चैत्र शुक्ल	17 अप्रै. गु.
वैशाख कृष्ण	3 मई श.
वैशाख शुक्ल	17 मई श.
ज्येष्ठ कृष्ण	1 जून र.
ज्येष्ठ शुक्ल	15 जून र.
आषाढ कृष्ण (सोम)	30 जून चं.
आषाढ़ शुक्ल (भौम)	15 जुला. मं.
श्रावण कृष्ण	30 जुला. बु.
श्रावण शुक्ल	14 अग. गु.
भाद्रपद कृष्ण	28 अग. गु.
भाद्रपद शुक्ल	12 सितं. शु.
आश्विन कृष्ण	26 सितं. शु.
आश्विन शुक्ल	12 अक्तू. र.
कार्तिक कृष्ण	26 अक्तू. र.
कार्तिक शुक्ल	11 नवं. मं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	25 नवं. मं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	10 दिसं. बु.
पौष कृष्ण	24 दिसं. बु.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम, हरिद्वार

स्वा. स्वरूपानन्द जयंती	11 फर.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्दजी	24 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्दजी	22 अप्रै.
स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	6 मई
गुरु प्रेमानन्दजी जयंती	18 जुला.
निर्वाण गु. प्रेमानन्द जी	5 अग.

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन

श्रीगुरु गोबिन्द सिंहजी	5 जन. श.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. बु.
लाला लाजपतराय	28 जन. चं.
स्वामी विवेकानन्द	29 जनं. मं.
स्वामी रामानन्दाचार्य	29 जन. मं.
सिद्ध बा. लालदयालजी	9 फर. श.
श्रीगुरु रविदास जी	21 फर. गु.
गुरु रामदास जयन्ती	1 मार्च श.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	2 मार्च र.
श्रीरामकृष्ण परमहंसजी	9 मार्च र.
श्री चैतन्य महाप्रभु	21 मार्च शु.
सन्त तुकाराम	23 मार्च र.
शहीदी स: भगत सिंह	23 मार्च र.
डा. अम्बेदकर	14 अप्रै. चं.
श्रीमहावीर	18 अप्रै. शु.
श्रीवल्लभाचार्य जी	2 मई शु.
श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई बु.
श्री छत्रपति शिवाजी	7 मई बु.
भगवान परशुराम	7 मई बु.
आद्य गुरु शंकराचार्य	9 मई शु.
स्वामी रामानुजाचार्य	10 मई श.
महात्मा बुद्ध	19 मई चं.
नारद जयन्ती	22 मई गु.
श्रीमहाराणा प्रताप	6 जून शु.
सन्त कबीर जयन्ती	18 जून बु.
ऋषि वेदव्यास	18 जुला. शु.
श्री ध्यानू भगत	24 जन मं.
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला.
लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	1 अग. शु.
गो. सन्त तुलसीदास	8 अग. शु.
सन्त ज्ञानेश्वर	24 अग. र.
भक्त नवल (जोधपुर)	24 अग. र.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. चं.
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	9 सितं. मं.
महाराज अग्रसेन	30 सितं. मं.
महात्मा गांधी, शास्त्रीजी	2 अक्तू. गु.
श्रीमाधवाचार्य जी	9 अक्तू. गु.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. बु.
श्रीधनवन्तरी	26 अक्तू. र.
श्रीहनुमान	27 अक्तू. चं.
श्रीविश्वकर्मा जयंती	30 अक्तू. गु.
श्रीवीर वैरागी	11 नवं. मं.
श्रीगुरु नानकदेव जी	13 नवं. गु.
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. गु.
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं. शु.
सत्य श्रीसाईं बाबा	23 नवं. र.
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. बु.
श्रीदत्तात्रेय	12 दिसं. शु.

—(सन् 2009 ई.)—

स्वामी विवेकानन्दजी	17 जन. श.
स्वामी रामानन्दाचार्यजी	17 जन. श.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शु.
सिद्ध बा. लालदयालजी	28 जन. बु.
लाला लाजपतराय जी	28 जन. बु.
श्रीगुरु रविदास जी	9 फर. चं.
गुरु रामदास जी	18 फर. बु.
स्वामी दयानन्द सरस्वती	19 फर. गु.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	27 फर. शु.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	11 मार्च बु.
सन्त तुकाराम जी	12 मार्च गु.

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. मंग.
गुड फ्राइडे	21 मार्च शुक्र
ईस्टर सण्डे	23 मार्च रवि
लो सण्डे	30 मार्च रवि
रोगेशन सण्डे	27 अप्रै. रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. गुरु

—(सन् 2009 ई.)—

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. गुरु
गुड फ्राइडे	10 अप्रै. शुक्र

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	14 अप्रै. चं.
श्रीमातङ्गी जयन्ती	8 मई गु.
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	13 मई मं.
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	19 मई चं.
श्रीधूमावती जयन्ती	11 जून बु.
श्रीमहाकाली जयन्ती	24 अग. र.
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	12 सितं. शु.
श्रीकमला जयन्ती	17 अक्तू. शु.
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	12 दिसं. शु.
श्रीललिता जयन्ती	9 फर. (09) चं.

दशावतार जयन्तियां

श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	8 अप्रै. मं.
श्रीरामावतार जयन्ती	14 अप्रै. चं.
श्रीपरशुराम जयन्ती	7 मई बु.
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	18 मई र.
श्रीकूर्मावतार जयंती	19 मई चं.
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	19 मई चं.
श्रीकल्कि अवतार	6 अग. बु.
श्रीकृष्णावतार	23 अग. श.
श्रीवाराहावतार	2 सितं. मं.
श्रीवामनावतार	12 सितं. शु.

मास-शिवरात्रि व्रत

पौष	6 जन. रवि
माघ	5 फर. मंग.
फाल्गुन	6 मार्च गुरु
चैत्र	4 अप्रै. शुक्र
वैशाख	4 मई रवि
ज्येष्ठ	2 जून चंद्र
आषाढ़	1 जुला. मंग.
श्रावण	30 जुला. बुध
भाद्रपद	29 अग. शुक्र
आश्विन	27 सितं. शनि
कार्तिक	27 अक्तू. चंद्र
मार्गशीर्ष	25 नवं. मंग.
पौष	25 दिसं. गुरु
माघ (2009 ई.)	24 जन. शनि
फाल्गुन	23 फर. चंद्र
चैत्र	24 मार्च मंग.

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले—सन् 2008 ई.

मेला	तिथि
मेला लोहड़ी (सर्वत्र)	13 जन.
मे. दांऊ (रोपड़)	13 जन.
मे. माघी (मुक्तसर)	14 जन.
मे. पोंगल (द.भारत)	14 जन.
मे. मस्तुआणा (पं.)	1 फर.
मे. मौनी अमावस, यू.पी. प्रयाग, हरिद्वार आदि	7 फर.
मे. बसन्त पंचमी	11 फर.
मे. जैसलमेर (राज.)	19-21 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	19-21 फर.
माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	21 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	6 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	6 मार्च
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	14-21 मार्च
मे. सावातिल्ला	19 मार्च
होला (आनन्दपुर साहिब)	22 मार्च
श्रीवीरमदास, बधोछी, पटियाला	25 मार्च
श्रीगुरु रामराय (देहरादून)	27 मार्च
मे. नवचण्डी (मेरठ)	27 मार्च
मे. शीतलामाता, कुराली (पं.)	29-30 मार्च
भण्डारा स्वा. सन्तदास जी, गोपाल नगर, जालंधर	30 मार्च
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	5 अप्रै.
मे. नानकसर चीमा	6 अप्रै.
मेला नवरात्रे (मनसादेवी, हरिद्वार)	6-13 अप्रै.
मनसादेवी, पंचकूला (हरि.)	6-13 अप्रै.
गौरी तृतीया (जयपुर)	8 अप्रै.
माईसरखाना (बठिण्डा)	11 अप्रै.
मे. नरीसैमरी (मथुरा)	11 अप्रै.
मे. वैशाखी	13 अप्रै.
मे. श्रीरामनवमी	13 अप्रै.
मे. कौंसा देवी (चण्डीगढ़)	19-20 अप्रै.
मे. पिंजौर (हरियाणा)	5 मई
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	11 मई
जोड़ मेला, गाँव-भरोमजारा नवांशहर	23-24 मई
मे. भद्रकाली, कपूरथला, पं.	31 मई
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	12 जून
रथयात्रा उत्सव, पुरी, उड़ी.	4 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	18 जुला.
मे. काहनूवाल, (गुरदासपुर)	18 जुला.
मे. नाग पंचमी राज., बंगाल	23 जुला.
सिंघारा तीज	4 अग.
गौरी तीज, जयपुर, राज.	4 अग.
मे. बग्गीदेहरी, कण्डे लालोवाल गुरदासपुर	16 अग.
कृष्णजन्माष्टमी पर्व, मथुरा	24 अग.
गुग्गा नवमी, अम्बाला	24-25 अग.
गुग्गा जाहिरपीर, नकोदर, पं.	25 अग.
गोगामेड़ी, श्रीगंगानगर, राज.	25 अग.
मे.भरोमजारा नवांशहर	27-28 अग.
मे. सुथरेशाह, दिल्ली	30 अग.
रामदेव रोणेचा, जोधपुर, राज.	10 सितं.
वामन द्वादशी, पटियाला	12 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	13-15 सितं.
मे. बाबा सोढल, जालन्धर	14 सितं.
श्रीगोईदवाल साहिब, अमृतसर	15 सितं.
गुग्गापीर, लुधियाना	15 सितं.
मे. फाल्गु, कुरुक्षेत्र प्रा.	28-29 सितं.
आशापूर्णी, पठानकोट	30-8 अक्तू.
मे. हरचोवाल, गुरदासपुर	7-8 अक्तू.
मे. दशहरा (सर्वत्र)	9 अक्तू.
बाबा बुड्ढा सा., अमृतसर	9 अक्तू.
अचलेश्वर (बटाला)	8-9 नवं.
मे. जन्मवीर वैरागी, नकोदर	11 नवं.
मे. बग्गी देहरी, गाँ-कण्डे लालोवाल (गुरदासपुर)	12-13 नवं.
मे. रामतीर्थ, अमृतसर	13 नवं.
कपालमोचन, हरियाणा	13 नवं.
श्रीगढ़गंगा, पुष्कर	13 नवं.
भण्डारा संत प्रीतमदास जी गोपाल नगर, जालन्धर	30 नवं.
मे. चमकौर साहिब	26-28 दिसं.
मे. जोड़ फतेहगढ़ प्रा.	26 दिसं.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला	तिथि
लोहड़ी पर्व	13 जन.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	4-5 अप्रै.
गुप्तगंगा, कफी-अखनूर	5 अप्रै.
नवरात्रे पर्व	6-13 अप्रै.
मे. बाहूफोर्ट	13 अप्रै.
मे. रामबन	14 अप्रै.
गुरुगद्दी 1008 सतगुरु	13-14 अप्रै.
बाबा कांशीगिरजी (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	18 मई
मे. मानसर } मे. क्षीर (खीर) भवानी	9-10 जून
	11 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	18 जून
जन्म गु. हरगोबिन्द जी	19 जून
मे. शरीक भवानी	11 जुला.
शहीदी दिवस	13 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	13 जुला.
मे. ज्वालामुखी	17 जुला.
मे. रूद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	18 जुला.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	16 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य	16 अग.
मे. रामबन	24 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	28 अग.
मेला पात, भद्रवाह	4-7 सितं.
मे. आशापति, मार्तण्ड	28-29 सितं.
मे. झिड़ी बाबा	13 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	26 नवं.

हिमाचल प्रदेश के मेले—सन् 2008 ई.

मेला	तिथि
मेला श्री ब्रह्मा, कुल्लू	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	11 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	6-13 मार्च
कालेश्वर महादेव, नादौन	6 मार्च
मे. स्वर्गाश्रम, नूरपुर	6 मार्च
मे. काठगढ़	6 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	7 मार्च
मे. बाबा बालकनाथ प्रा.	14 मार्च
मे. नलवाड़, बिलासपुर	17-22 मार्च
वड़भाग सिंह, ऊना	18-21 मार्च
सुजानपुर टिहरा, हमीरपुर	22-25 मार्च
होला मेला, पौंटा साहिब	22 मार्च
मे. नलवाड़, सुन्दरनगर	22-29 मार्च
मे. नलवाड़, घुमारवीं	5-9 अप्रै.
बालासुन्दरी, सिरमौर	6-20 अप्रै.
नयनादेवी, बिलासपुर	6-14 अप्रै.
मे. ललवाड़, सुन्दरनगर	8-13 अप्रै.
मारकण्डा, बिलासपुर	12-15 अप्रै.
लाहौल, मण्डी	12 अप्रै.
श्रीदुर्गाष्टमी, कांगड़ा	13 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा, कांगड़ा	13 अप्रै.
राजगढ़, सिरमौर	13-15 अप्रै.
बिशू प्रारम्भ	13 अप्रै.
रोहरू (महासू)	16-17 अप्रै.
कशाधा, हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
त्राम्बली (कुल्लू)	**16-17 अप्रै.**
खनाणी शिम., कुल्लू	19-20 अप्रै.
पीपल जातर, कुल्लू	28-30 अप्रै.
मे. स्वीटी	30 अप्रै.
मे. आनी (कुल्लू)	7-9 मई
माहूनाग, करसोग	8-9 मई
मनीकरण, कुल्लू	14-20 मई
घाघरस, बिलासपुर	14 मई
ढुंगरी जातर	14-15 मई
बंजार (कुल्लू)	14-18 मई
कमलाहिया (धर्मपुर)	18 मई
शाढी जातर	18-23 मई
पशु मेला (हमीरपुर)	19 मई
हरिदेवी, घुमारवीं	21 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मुरारीदेवी, सरकाघाट	25-27 मई
श्यामाकाली (सरकाघाट)	28 मई
ग्राम पंजगाई, बिलासपुर	29-30 मई
मे. स्थूल मढोल	1-4 जून
नौवाही देवी, सरकाघाट	14 जून
बाडी-सरयांझ (सोलन)	14 जून
मे. अहल, हमीरपुर	14 जून
भुन्तर मेला	**15-17 जून**
टाणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
मे. माँ शूलिनी, सोलन	29 जू.-1 जुला.
त्रिमौणी, सिरमौर	6 जुला.
मे. नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिब्वो, ज्वाली	20 जुला.
मे. मिंजर (चम्बा)	27 जुला.
मे. चिन्तपूर्णी (ऊना)	**2-9 अग.**
नयनादेवी, बिलासपुर	9 अग.
सन्तोषी माता, लदरौर	16 अग.
गुग्गा नवमी, बिलासपुर	25 अग.
मे. बन्द्राल (कुल्लू)	25 अग.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	29 अग.
गणपति उत्सव (मण्डी)	**3-14 सितं.**
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	6 सितं.
वामन द्वादशी (नाहन)	12 सितं.
नलवाड़ (चिच्चोट)	16-23 सितं.
लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मे. सायर, अर्की	16-17 सितं.
चामुण्डा देवी, कांगड़ा	30-8 अक्तू.
मे. रामलीला	30-8 अक्तू.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	30-9 अक्तू.
ज्वालामुखी	7-8 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन)	7 अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू)	**9-14 अक्तू.**
काली बाड़ी, शिमला	27-28 अक्तू.
रेणुका, रिवालसर, सिरमौर	9-10 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी, ऊना	9-13 नवं.
लावी, रामपुर-चिच्चोट	11-14 नवं.
मे. जोगी पांगा	13 नवं.

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल सन् 2008-09 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. चंद्र	24-07	मध्याह्न बाद
फाल्गु. संक्रान्ति	13 फर. बुध	13-05	सूर्योदय से
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शुक्र	9-57	प्रातः ऊषाकाल से सायं 16/21 तक
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. रवि	18-29	मध्याह्न बाद से
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई बुध	15-24	प्रातः 9/00 से प्रारम्भ
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून शनि	22-02	दोपहर बाद से प्रारम्भ
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. बुध	8-57	प्रातः ऊषाकाल से दुपै. 15/21 तक
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. शनि	17-24	प्रातः 11/00 से प्रारम्भ
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. मंग.	17-22	प्रातः 10/58 से प्रारम्भ
कार्तिक संक्रान्ति	16 अक्तू. गुरु	29-21	अगले दिन दुपै. 11/45 तक
मार्ग. संक्रान्ति	15 नवं. शनि	29-09	अगले दिन दुपै. 11/33 तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसं. चंद्र	19-46	मध्याह्न बाद से प्रारम्भ
माघ संक्रान्ति 09	13 जन. मंग.	30-27	अगले दिन दुपैहर 12/51 तक
फागुन संक्रान्ति	12 फर. गुरु	19-24	मध्याह्न बाद से प्रारम्भ
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शनि	16-16	प्रातः 9/52 से प्रारम्भ

जैन व्रत-पर्व व उत्सव

श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	2 जन. बु.	संवत्सरी महापर्व	3 सितं. बु.
मेरू त्रयोदशी	5 फर. मं.	श्रीकालू निर्वाण दिवस	5 सितं. शु.
मर्यादा महोत्सव	13 फर. बु.	श्रीतुलसी पट्टारोहण	9 सितं. मं.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	19-21 मार्च	श्रीमहावीर निर्वाण	28 अक्तू. मं.
ऋषभदेव जयन्ती	29 मार्च श.	श्रीवीर संवत 2534 प्रा.	29 अक्तू. बु.
वरसी तप प्रारम्भ	30 मार्च र.	आचार्य श्रीतुलसी जन्म	30 अक्तू. गु.
ओली तप प्रारम्भ	13 अप्रै. र.	ज्ञान पंचमी	3 नवं. चं.
श्रीमहावीर जयन्ती	18 अप्रै. शु.	चातुर्मास्य व्रत समाप्त	13 नवं. गु.
ओली तप समाप्त	20 अप्रै. र.	श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	22 नवं. श.
वरसी तप समाप्त	8 मई गु.	मौनी एकादशी	9 दिसं. मं.
केवल ज्ञान दिवस	14 मई बु.	आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	16 दिसं. मं.
मे. चक्रेश्वरीदेवी(सरहिंद)	5-7 जून	श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	21 दिसं. र.
चातुर्मास्य नियम प्रा.	18 जुला. शु.	——(सन् 2009 ई.)——	
तेरापन्थ स्थापना दिवस	18 जुला. शु.	मेरू त्रयोदशी	9 जन. शु.
जैन महोत्सव	1 अग. शु.	मर्यादा महोत्सव	2 फर. चं.
श्रीजयाचार्य निर्वाण	28 अग. गु.	जैन महोत्सव (कांगड़ा)	9-11 मार्च
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	28 अग. गु.	ऋषभदेव जयन्ती	18 मार्च बुध
जैन महोत्सव	30 अग. श.	वरसी तप प्रारम्भ	19 मार्च गु.

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2008-09 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	5 जन. श.	श्रीबुद्ध जयन्ती	19 मई चं.	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	14 अक्तू. मं.
मकर संक्रान्ति	14 जन. चं.	रथयात्रा (पुरी) उड़ी	4 जुला. शु.	दीपावली	28 अक्तू. मं.
मुहर्रम (ताजिया)	19 जन. श.	जन्म श्रीहजरल अली	17 जुला. गु.	श्रीगुरुनानक जयंती	13 नवं. गु.
श्रीगुरु रविदास जयंती	21 फर. गु.	शहीदी सः ऊधम सिंह	31 जुला. गु.	ईदुलजुहा (बकरीद)	9 दिसं. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	6 मार्च गु.	भारत स्वतन्त्र दिवस	15 अग. शु.	क्रिसमिस डे	25 दिसं. गु.
गुड फ्राइडे	21 मार्च शु.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	24 अग. र.	(सन् 2009 ई.)	
होला मेला (पं.)	22 मार्च श.	श्रीगणेश चतुर्थी (महारा.)	3 सितं. बु.	मुहर्रम (ताजिया)	8 जन. गु.
श्रीरामनवमी	13 अप्रै. र.	जमातुलविदा	26 सितं. शु.	मकर संक्रान्ति	13 जन. मं.
वैशाखी	13 अप्रै. र.	ईदुलफितर	2 अक्तू. गु.	श्रीगुरु रविदास जयंती	9 फर. चं.
डॉ. अम्बेदकर जयंती	14 अप्रै. चं.	महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तू. गु.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	23 फर. चं.
श्रीमहावीर जयंती	18 अप्रै. शु.	दशहरा	9 अक्तू. गु.	होला मेला (पं.)	12 मार्च गु.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि-2008-09 ई.

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कलैण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	13 नवंबर	जन्म से	24 सितंबर	13 नवंबर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	6 मई	19 सितंबर	9 अप्रैल	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	18 मई	6 अप्रैल	15 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	16 अक्तूबर	13 सितंबर	2 सितंबर	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जनदेव जी	27 अप्रैल	1 सितंबर	7 जून	2 मई	16 सितंबर	16 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	19 जून	28 मई	10 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	19 फर. 08 ई. 7 फर. 09 ई.	4 अप्रै. 08 ई. 24 मार्च 09 ई.	22 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	27 जुलाई	22 अक्तूबर	19 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	25 अप्रैल	18 अप्रैल	3 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	15 जन. 08 ई. 3 जन. 09 ई.	30 नवंबर	3 नवम्बर	5 जनवरी	24 नवंबर	21 अक्तूबर

श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	31 अग.	17 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2008 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार	30 अक्तू.	6 कार्तिक (ना.शा.)	20 अक्तू., 2008 ई.
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे तदनुसार	13 अप्रै.	1 वैशाख (ना. शा.)	14 अप्रैल, 2008 ई.

वि. संवत् २०६५ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा-सूर्य/चन्द्र **वर्ष का मन्त्री-सूर्य**

(देखें पृष्ठ 72)

- वि. संवत् (प्लव नामक) २०६५ का शुभारम्भ = 6 अप्रै., रविवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,109 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,105 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,891 वर्ष
- २०६५ में कलि वर्ष = 5109वां वर्ष (6 अग., बुधवार)
- श्री कृष्ण जन्म संवत् = 5244 प्रा., 23 अगस्त, शनिवार
- सप्तर्षि संवत् 5084 प्रारम्भ = 6 अप्रैल, रविवार
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2632 प्रा., = 19 मई, सोमवार
- महावीर निर्वाण संवत् 2534 प्रा. = 28 अक्तू., मंगलवार
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2009 प्रारम्भ = 1 जन., गुरुवार
- (*i*) शाका संवत् 1930 प्रा. = 21 मार्च, सन् 2008 ई. शुक्रवार
  (*ii*) शाका संवत् 1931 प्रारम्भ = 22 मार्च, 2009 ई., रविवार
- (*i*) हिजरी सन् 1429 (मुस्लिम) प्रा. = 10 जन., 2008 ई., गुरुवार
  (*ii*) हिजरी सन् 1430 (मुस्लिम) प्रा. = 30 दिसं., 2008 ई., मंगलवार
- बंगाली सन् 1415 प्रारम्भ = 7 अप्रैल, 2008 ई., सोमवार
- नानकशाही संवत् 540 प्रारम्भ = 14 मार्च, 2008 ई., शुक्रवार
- खालसा सम्वत् 310 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, 2008 ई., रविवार
- जय हिन्द संवत् 62वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, 2008 ई. शुक्रवार
- पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 133वाँ = 6 अप्रै., 2008 ई., रविवार

सन् 2008-09 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा आदि—एक दृष्टि में

(मास) 2008 ई.↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्यनारायण व्रत	पूर्णिमा	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदानार्थ)
जनवरी	14 (माघ)	4,18/19	5, 20	22	22	25	8
फरवरी	13 (फागु.)	2, 17	4, 18	20	21	24	7
मार्च	14 (चैत्र)	3, 17	5, 19	21	21	25	7
अप्रैल	13 (वैशा.)	2, 16	3, 17	19	20	24	6
मई	14 (ज्ये.)	2, 15, 31	3, 17	19	19/20	23	5
जून	14 (आषा.)	14, 29	1, 15, 30	18	18	22	3
जुलाई	16 (श्राव.)	13,28/29	15, 30	17	18	21	3
अगस्त	16 (भाद्र.)	12, 27	14, 28	16	16	20	1, 30
सितम्बर	16 (आश्वि.)	11, 25	12, 26	14	15	18	29
अक्तूबर	16 (कार्ति.)	11, 24	12, 26	14	14	17	28
नवम्बर	15 (मार्ग.)	9, 23	11, 25	12	13	16	27
दिसम्बर	15 (पौष)	9, 23	10, 24	12	12	15	27
जनवरी (09)	13 (माघ)	7, 21	9, 23	10	11	14	26
फरवरी	12 (फाल्गु.)	6, 20	7, 22	9	9	12	25
मार्च	14 (चैत्र)	7, 22	8, 24	11	11	14	26

वर्ष 2008 ई. में गोचरवश आने वाले कालसर्प योग

(1) 29 अग. से 13 सितं. तक
(2) 25 सितं. से 10 अक्तू. (प्रात:) तक
(3) 23 अक्तू. से 5 नवं. तक
(4) 19 नवं. से 2 दिसं. तक
(5) 9 दिसं. से 27 दिसं. मध्य राहु का गुरू-शुक्र के साथ-योग सम्बन्ध
(6) **राहु और गुरु का योग** 9 दिसं. से 26 मार्च (2009 ई.) तक रहेगा॥ इसका विचार **पितृ-दोष** में विशेषतया किया जाता है॥

एक मास (श्रावण) में दो ग्रहणों का लगना—सन् 2008 ई. में श्रावण मास में दो ग्रहण घटित हो रहे हैं, जिसका फल शास्त्र में अशुभ कहा गया है। (देखें पृष्ठ 12)

ज्योतिष ज्ञान शास्त्र का अधिकारी

वेदस्य चक्षुः किल ज्योतिषशास्त्रमेतत् प्रधानताऽङ्गेषु॥ (वसिष्ठ) यह ज्योतिष शास्त्र वेदाङ्गों में नेत्र स्वरूप है। ज्योतिष शास्त्र के बिना संसार का शुभाशुभ ज्ञान न होने से इसकी प्रधानता मानी गई है। इस विद्या को ब्राह्मण ही जानने का अधिकारी होता है। **वेदाङ्गत्वाद वश्यमध्येतव्यं द्विजैरेव उक्तम्**—ज्योतिषशास्त्र में **ब्राह्मण को ही विशेषतः अधिकारी** कहा गया है— **(ब्राह्मणपाठेऽधिकारः) तस्माद्द्विजैरध्ययनीयमेतत्पुण्यं रहस्यं परमं च तत्त्वम्। यो ज्योतिषं वेत्ति नरः स सम्यक् धर्मार्थकामान् लभते यशश्च॥** (सि. शि.) अर्थात् इस पुण्य जनक वेदाङ्ग रूप परमतत्त्वात्मक व रहस्यात्मक ज्योतिषशास्त्र को पढ़ने का अधिकारी ब्राह्मण है। जो ब्राह्मण ज्योतिष शास्त्र को (सम्यक् रूपेण) जानने वाला है। वह अच्छी तरह से धर्म, अर्थ, काम और यश को प्राप्त करता है। **वसिष्ठ जी** अनुसार भी **अध्येतव्यं ब्राह्मणैरेवतस्मात् ज्योतिशशास्त्रं पुण्यमेतत् रहस्यम्॥** [illegible] किया गया है।

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०६५ वि.

(1 जनवरी, सन् 2008 ई. से 26 मार्च, 2009 ई. तक)

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती—ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं—इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्र में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट—हमारे कार्यालय से छपी 'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग' पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। मूल्य 35 रु., पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मि.	ता. मास	घं. मि.
5 जन.	17 02	7 जन.	21 25
14 जन.	24 28	16 जन.	22 05
23 जन.	10 07	25 जन.	9 34
1 फर.	25 02	4 फर.	5 35
11 फर.	6 05	13 फर.	3 27
19 फर.	19 01	21 फर.	18 55
29 फर.	9 21	2 मार्च	14 26
9 मार्च	13 41	11 मार्च	9 47
17 मार्च	25 37	19 मार्च	26 27
27 मार्च	17 12	29 मार्च	22 48
5 अप्रै.	23 31	7 अप्रै.	18 33
14 अप्रै.	7 02	16 अप्रै.	8 19
23 अप्रै.	24 08	26 अप्रै.	5 59
3 मई	10 07	5 मई	5 05
11 मई	13 17	13 मई	13 55
21 मई	6 19	23 मई	12 08
30 मई	19 40	1 जून	15 38
7 जून	21 32	9 जून	20 48
17 जून	12 21	19 जून	18 1
27 जून	3 09	28 जून	24 33
5 जुला	7 26	7 जुला	5 29
14 जुला	18 52	16 जुला	24 27
24 जुला	8 54	26 जुला	7 16
1 अग.	17 35	3 अग.	15 13
11 अग.	2 11	13 अग.	7 49
20 अग.	14 29	22 अग.	12 42
29 अग.	2 27	30 अग.	24 37
7 सितं.	10 08	9 सितं.	15 57
16 सितं.	21 33	18 सितं.	18 45
25 सितं.	9 15	27 सितं.	8 26
4 अक्तू	18 7	6 अक्तू	24 08
14 अक्तू	6 48	16 अक्तू	3 01
22 अक्तू	14 41	24 अक्तू	14 26
1 नवं.	1 32	3 नवं.	7 37
10 नवं.	17 20	12 नवं.	13 29
18 नवं.	20 46	20 नवं.	19 53
28 नवं.	8 07	30 नवं.	14 11
8 दिसं.	3 13	9 दिसं.	24 31
16 दिसं.	5 21	18 दिसं.	2 52
25 दिसं.	14 12	27 दिसं.	20 18
4 जन(09)	10 54	6 जन.	9 52
12 जन.	16 17	14 जन.	12 24
21 जन.	20 31	24 जन.	2 41
31 जन.	16 39	2 फर.	16 36
9 फर.	3 28	10 फर.	23 19
18 फर.	3 43	20 फर.	9 49
27 फर.	22 22	1 मार्च	22 00
8 मार्च	12 41	10 मार्च	9 25
17 मार्च	11 54	19 मार्च	17 41
27 मार्च	5 41	— —	— —

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल—सं० २०६५

(1 जन. सन् 2008 ई० से 26 मार्च, सन् 2009 ई. तक)

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
ता. मास	घं. मि.	ता. मास	घं. मि.
11 जन.	13 14	15 जन.	23 26
7 फर.	20 30	12 फर.	4 50
6 मार्च	5 42	10 मार्च	11 47
2 अप्रै.	15 37	6 अप्रै.	21 08
29 अप्रै.	24 36	4 मई	7 49
27 मई	7 47	31 मई	17 57
23 जून	13 35	28 जून	2 09
20 जुला	19 16	25 जुला	8 19
17 अग.	2 04	21 अग.	13 44
13 सितं.	10 27	17 सितं.	20 17
10 अक्तू	19 48	15 अक्तू	5 05
7 नवं.	4 44	11 नवं.	15 42
4 दिसं.	12 08	9 दिसं.	2 15
(सन् 2009 ई.)			
31 दिसं	18 07	5 जन.	10 45
27 जन.	23 58	1 फर.	16 53
24 फर.	6 53	28 फर.	22 22
23 मार्च	15 03	28 मार्च	5 11

पंचक नक्षत्र विचार

वासवोत्तर दलादि पंचके याम्यदिग्गमनं गृहगोपनम्।
प्रेत दाहतृण काष्ठ संचयं शय्यका वितरणं च वर्जयेत्॥

—पंचक नक्षत्रों में काष्ठ छेदन (लकड़ी तोड़ना), तिनके तोड़ना, दक्षिण दिशा की यात्रा, प्रेतादि-दाहसंस्कार, स्तम्भारोपन, तृण, ताम्बा, पीतल, लकड़ी आदि का संचय, दुकान, मकान या झौंपड़ी आदि की छत डालना, चारपाई, खाट, चटाई आदि बुनना, बैठक की गद्दियों का निर्माण करना त्याज्य माना गया है। पंचकों में हानि, लाभ एवं व्याधि आदि पाँच गुणा, त्रिपुष्कर में तीन गुना तथा द्विपुष्कर में दोगुणा लाभ या हानि की सम्भावना होती है। विधिवत् नक्षत्र पूजा, दान एवं ब्राह्मण भोजन करवाना शुभप्रद होता है। प्रेत दाह अथवा किसी अन्य कारण से हानि की आशंका हो तो उस स्थिति में किसी विद्वान् ब्राह्मण से पंचक शान्ति करवाने का विधान होता है।

ध्यान रहे, मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, वधू-प्रवेश, उपनयन आदि तथा रक्षा-बन्धन, भैय्या दूज आदि पर्वों में पंचक नक्षत्रों के निषेध के बारे में कहीं भी विचार नहीं किया जाता।

बृहद् ज्योतिषानुसार तो धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद व रेवती नक्षत्र सभी कार्यों में सिद्धिप्रदायक एवं शुभ माने जाते हैं जबकि पू. भाद्रपद एवं शतभिषा नक्षत्र साधारण रूप से कार्य सिद्धि कारक माने गए हैं।

—सम्पादक।

ग्रहण विवरण (सन् 2008-09 ई.)

सन् 2008-09 ई. में पृथ्वी पर कुल पाँच ग्रहण घटित होंगे—

(1) **कंकण सूर्यग्रहण** (भारत में अदृश्य) (7 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार)
(2) **ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य) (21 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार)
(3) **खग्रास सूर्यग्रहण** (भारत में खण्डरूप में दृश्य) (1 अगस्त, 2008 ई., शुक्रवार)
(4) **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (भारत में दृश्य) (16 अगस्त, 2008 ई., शनिवार)
(5) **कंकण सूर्यग्रहण** (भारत में दृश्य) (26 जनवरी, 2009 ई., सोमवार)

◎भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण◎

(1) कंकण सूर्यग्रहण (7 फरवरी, 2008 ई., गुरुवार)—यह ग्रहण माघ अमावस, गुरुवार, वि. संवत् २०६४ तदनुसार 7 फरवरी, 2008 ई. को भा.स्टैं.टा. अनुसार प्रात: 7 घं. 9 मिं. से 11 घं. 42 मिं. तक दिखाई देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया, फिज़ी में दिखाई देगा।

ग्रहण जहाँ दिखायी न पड़े वहाँ ग्रहण-सम्बन्धित कार्य करना आवश्यक नहीं होता।

◎भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण◎

(2) ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण (21 फरवरी, 2008 ई. गुरुवार)—

यह ग्रहण माघ पूर्णिमा तदनुसार 21 फरवरी, 2008 ई. को भारत के केवल सुदूर पश्चिम-उत्तर नगरों (गुजरात, राजस्थान एवं जम्मू-काश्मीर के पश्चिमोत्तरी कुछ भागों में) कुछ मिनटों के लिए ग्रहण आरम्भ के समय ग्रस्तास्त रूप में दिखाई देगा। भा. स्टैं. टा. अनुसार ग्रहण प्रात: 7 घं. 13 मिं. से 10 घं. 39 मिं. तक रहेगा।

इस ग्रहण का सविस्तार एवं सचित्र विवरण हम गतवर्षीय 'पंचांगदिवाकर' पृष्ठ 12-13 पर दे आए हैं। इस वर्ष 2008 ई. की मुफीद आलम जन्त्री का अवलोकन कर सकते हैं।

विशेष— क्योंकि यह ग्रहण भारत के सुदूर पश्चिमोत्तर क्षेत्रों को (पश्चिम राजस्थान, गुजरात) छोड़कर शेष भारत में दिखाई नहीं देगा। अतएव भारत के अधिकांश (इन क्षेत्रों को छोड़कर) भागों में इस चन्द्रग्रहण का कोई महात्म, सूतकादि धार्मिक कृत्यों का विचार नहीं होगा। जप, दान आदि का माहात्म उसी क्षेत्र में माना जाता है, जहाँ ग्रहण दिखाई दें।

(3) खण्डग्रास सूर्यग्रहण

(1 अगस्त, 2008 ई., श्रावण अमावस, शुक्रवार)

यह खग्रास सूर्यग्रहण 1 अगस्त, 2008 ई., शुक्रवार को दोपहर बाद समस्त भारत में खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। भारत के प्रत्येक नगर / गाँव में इसे देखा जा सकेगा। केवल मणिपुर, नागालैण्ड के पूर्वी भागों तथा अंदमान-निकोबार द्वीप समूह में इस ग्रहण का मोक्ष नहीं दिखाई देगा, क्योंकि वहाँ ग्रहण समाप्ति से पहले ही सूर्यास्त हो जाएगा। भारत के शेष अन्य सभी स्थलों पर इसे स्पर्श से मोक्ष (प्रारम्भ से समाप्ति) तक खण्डग्रास रूप में देखा जा सकेगा।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण उत्तर-अमरीका के उत्तरी, पूर्वी क्षेत्रों, ग्रीनलैण्ड, उत्तरी यूरोप(इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड आदि) तथा जापान को छोड़कर सम्पूर्ण एशिया (पाकिस्तान, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया आदि) में दिखाई देगा।

भा. स्टैं. टा. अनुसार विश्व में यह ग्रहण यद्यपि 13 घं. 34 मिं. से 18 घं. 08 मिं. तक घटित रहेगा, परन्तु **भारत में यह दोपहर बाद लगभग 15 घं. 50 मिं. से तथा अलग-अलग समय से प्रारम्भ होकर अलग-अलग समय पर समाप्त होगा।**

ग्रहण चित्र (1) तथा चित्र (2) में ग्रहण स्पर्श तथा ग्रहण मोक्षकाल (भा.स्टैं.टा.) बतलाने वाली रेखाएँ 5-5 मिनटों के अन्तर पर दी गई हैं। आप अपने नगर के अक्षांश-रेखांश द्वारा इन चित्रों में नगर का स्थान अंकित कर उस नगर में इस ग्रहण का स्पर्श तथा मोक्षकाल (भा.स्टैं.टा.) सरलता से जान सकते हैं। ग्रहण स्पर्श (प्रारम्भ) के लिए चित्र नं. (1) तथा ग्रहण मोक्ष (समाप्ति) के लिए चित्र नं. (2) देखें।

आगे पृष्ठ 13,14 पर भारत के प्रसिद्ध नगरों में इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्षकाल (भा.स्टै.टा.) दिया गया है।

ग्रहण का ग्रासमान— भारत के पूर्वी क्षेत्रों में इस ग्रहण का ग्रासमान अधिकतम (ईटानगर = 0.773 = लगभग 75 प्रतिशत) होगा जबकि सबसे कम ग्रास दक्षिण भारत तिरूवन्तपुरम (केरल) में होगा। यहाँ ग्रास लगभग 20 प्रतिशत होगा। दिल्ली में ग्रासमान लगभग 62 प्रतिशत रहेगा।

ग्रहण का सूतक— इस ग्रहण का सूतक 1 अग., 2008 ई. को सूर्योदय से पहिले प्रात: लगभग 3 बजकर 50 मिनट (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा। खण्डग्रास सूर्यग्रहण का सूतक स्पर्शकाल से ठीक 12 घण्टे पहले आरम्भ होता है। अतएव आगामी पृष्ठ....या चित्र से अपने नगर के स्पर्शकाल से ठीक 12 घण्टे पूर्व सूतक का प्रारम्भ काल जान सकते हैं।

ग्रहण-काल में कृत्य-अकृत्य— ग्रहणकाल में स्नानादि करके इष्टदेव, भगवान् सूर्य की पूजा, पाठ, जपादि करना चाहिए। पूजा, पाठ, पितृ-तर्पण, वैदिक मन्त्रों का अनुष्ठान करना चाहिए। ग्रहण-उपरान्त अन्न, जल, वस्त्र, फलों आदि का दान सुपात्र को देना चाहिए। गर्भवती महिलाओं को ग्रहणकाल में सब्ज़ी काटना, पापड़ सेंकनादि उत्तेजित कार्यों से परहेज़ करना चाहिए तथा धार्मिकग्रन्थ का पाठ करते हुए प्रसन्नचित्त रहे। इससे भावी सन्तति स्वस्थ एवं सद्गुणी होती है।

कुरुक्षेत्र, हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नानादि का अनन्त माहात्म्य होगा। इस सूर्यग्रहण को नंगी आंखों से नहीं देखना चाहिए।

ग्रहणस्पर्शकाले स्नानं मध्ये होमः सुरार्चनम्।
श्राद्धं च मुच्यमाने दां मुक्ते स्नानमिति क्रमः॥ (धर्मसिन्धु)

अर्थात् ग्रहण में स्पर्श के समय स्नान, मध्य में होम और देवपूजन और ग्रहण मोक्ष के समय में श्राद्ध और अन्न, वस्त्र, धनादि का दान और सर्वमुक्त होने पर स्नान करें—यह क्रम है।

नीचे दिए गए ग्रहण चित्र (1) में ग्रहण प्रारम्भ (स्पर्श) की रेखाएँ दी गई हैं। यदि आपको पृष्ठ 13, 14 पर अपना शहर न मिलें तो अपने स्थानीय नगर के अक्षांश-रेखांश को इस ग्रहण चित्र में स्थापित कर अपने नगरमें ग्रहण प्रारम्भ एवं समाप्ति काल सरलता से जान सकते हैं।

ग्रहण चित्र (2) में नीचे ग्रहण समाप्ति (मोक्ष) की रेखाएँ दी गई हैं। यदि आपको पृष्ठ 13, 14 पर अपना नगर न मिलें तो आप अपने नगर को इस ग्रहण चित्र में स्थापित कर अपने स्थानीय नगर का समाप्तिकाल जान सकते हैं।
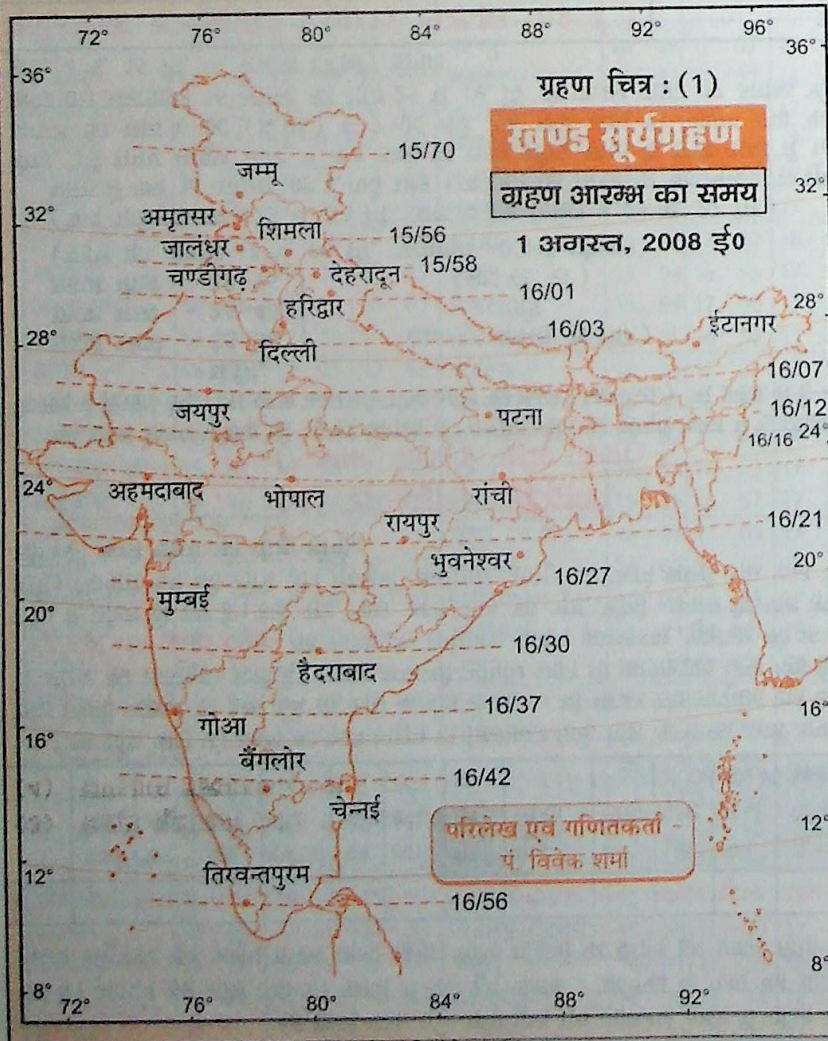
ग्रहण का राशिफल– यह ग्रहण कर्क राशि तथा पुष्य एवं आश्लेषा नक्षत्र में घटित हो रहा है। अतएव इस राशि तथा इन नक्षत्रों में पैदा हुए जातक / जातिका के लिए यह ग्रहण विशेष अशुभप्रद एवं अशुभ प्रभाव वाला रहेगा। बारह राशियों पर प्रभाव इस प्रकार रहेगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	कार्य सिद्धि	धन लाभ	धन हानि	दुर्घटना चोट भय	धन हानि	लाभ उन्नति	रोग, कष्ट भय	गुप्त चिन्ता	लाभ सौख्य	स्त्री कष्ट	रोग, कष्ट भय	मान हानि खर्च

जिस राशि वाले को ग्रहण का फल अशुभ हो विशेषकर कर्क राशि वालों को, उन्हें अपने राशि स्वामी चन्द्रमा का तथा ताँबे या कांसे के पात्र में अन्न / घी भरकर संकल्पपूर्वक दान देने से अरिष्ट की शान्ति हो जाती है। नवग्रह सम्बन्धी औषधि स्नान भी कल्याणप्रद माना गया है।

ग्रहण का अन्य फल– यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण श्रावण अमावस्या, शुक्रवार को कर्क राशि में घटित हो रहा है। रूई, सूत, घास, अन्न, तेल, घी, गुड़, चीनी, अनाज के भाव तेज होंगे। व्यापारी वर्ग को लाभ हो। गुरुजनों, कारीगरों, साधु, यज्ञ करने वालों और जल से जीविका करने वालों को पीड़ा होगी।

(4) खण्डग्रास चन्द्रग्रहण

(16/17 अगस्त, 2008 ई., शनि/ रविवार)–

यह ग्रहण श्रावण पूर्णिमा को 16/17 अगस्त की मध्यगत रात्रि को सम्पूर्ण भारत में खण्डग्रास के रूप में दिखाई देगा। इस ग्रहण का स्पर्श-मोक्ष आदि का काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार से है—

	घं.मिं.	
ग्रहण स्पर्श	25-06	(16/17 अगस्त, शनिवार)
ग्रहण मध्य	26-40	रात्रि
ग्रहण मोक्ष	28-15	(भा. स्टैं. टा.)

(ग्रहण की अवधि—3 घं. 09 मिं., परमग्रास—0.813 प्रतिशत)

(चन्द्र मालिन्यारम्भ—23 घं. 53 मिं., चन्द्र क्रान्ति निर्मल = 29 घं. 27 मिं.)

भारत में जब 16 अगस्त, 08 ई. की रात्रि 1 बजकर 06 मिनट पर यह चन्द्रग्रहण शुरु होगा, उस समय सम्पूर्ण भारत में चन्द्र उदय हो चुका होगा। भारत के सभी नगरों में 16 अगस्त को सायं 6-00 (घं.मिं.) से 7-00 बजे तक चन्द्र-उदय हो जाएगा तथा यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण 16 अगस्त की रात्रि 25 घं. 06 मिं. से प्रारम्भ होकर 17 अगस्त की प्रातः 4 घं. 15 मिं. पर समाप्त (मोक्ष) होगा।

भारत के अतिरिक्त यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण ऐण्टार्कटिका, ऑस्ट्रेलिया, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को छोड़कर एशिया (पाकिस्तान, बर्मा, नेपाल, श्रीलंका, सिंगापुर, मलेशिया आदि), यूरोप, अफ्रीका तथा दक्षिण अमरीका में दिखाई देगा।

ग्रहण का सूतक— इस खण्डग्रास चन्द्रग्रहण का सूतक ग्रहण प्रारम्भ से 9 घण्टे पूर्व 16 अगस्त को 16 घं. 06 मिं. (सायं 4 बजकर 6 मिंट) (भा.स्टैं.टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा।

कृत्य-अकृत्य– ग्रहण के सूतक और ग्रहण काल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र-अनुष्ठान, तीर्थ-स्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है।

सूतक एवं ग्रहण-काल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैल, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूठ-कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग से परहेज़ करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं।

ग्रहण का राशियों पर प्रभाव— यह खण्डग्रास चन्द्रग्रहण श्रवण एवं धनिष्ठा नक्षत्र तथा मकर एवं कुम्भ राशियों में घटित हो रहा है। इसलिए इन नक्षत्र एवं राशियों में उत्पन्न जातकों को चन्द्रमा का जप, दान करना कल्याणकारी रहेगा। बारह राशि वालों के लिए इस ग्रहण का फल इस प्रकार होगा—

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन लाभ	लाभ उन्नति	विघ्न, धन हानि	हानि कष्ट	स्त्री/ पति कष्ट	लाभ उन्नति	गुप्त चिन्ता	सिद्धि शरीर कष्ट	धन हानि	शरीर कष्ट चोट	दुर्घटना	धन हानि

ग्रहण का अन्य फल— यह ग्रहण श्रवण/धनिष्ठा तथा मकर-कुम्भ राशियों में घटित हो रहा है। फलस्वरूप माया फैलाने वाले, नित्य उद्यम करने वालों, ज्योतिषी, वैदिक कर्म करने वाले ब्राह्मण, दानी, स्त्रियों से द्वेष रखने वालों, दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में रहने वालों, पर्वतों पर रहने वालों को पीड़ा, कष्ट हो। उड़द के संग्रह से लाभ होगा। कश्मीर, चीन, यवन (ईरान, ईराक) देशों में उथल-पुथल, शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाली फसलों का नाश हो।

विशेष— श्रावण मास में ही सूर्य एवं चन्द्रग्रहण घटित होकर भारत में दिखाई दे रहे हैं। फलस्वरूप राजयुद्ध (सत्ता-परिवर्तन, चुनाव), दुर्भिक्ष, भय का वातावरण, महंगाई तथा जन-धन की हानि हो।

यथा—**यद्यकेमासे ग्रहणं भवेच्च शशिसूर्ययो:। राजयुद्धं तदा ज्ञेयं क्षयं याति वसुंधरा॥**

खण्डग्रास सूर्यग्रहण (1 अगस्त, 2008 ई.)

[भारत के विभिन्न नगरों में ग्रहण का स्पर्श (प्रारम्भ), परमग्रास, मोक्ष (समाप्ति काल) (भा.स्टैं.टा.)]

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मिं.	ग्रहण मध्य घं. मिं.	ग्रहण समाप्त घं.मिं.
अमृतसर	15 56	16 57	17 53
अजमेर	16 08	17 06	17 59
अगरतला	16 15	17 10	18 01
अयोध्या	16 10	17 07	18 00
अम्बाला	15 58	16 58	17 54
अलवर	16 06	17 04	17 58
अर्की (हि.प्र.)	15 58	16 58	17 54
अल्मोड़ा	16 01	17 01	17 55
अहमदाबाद	16 16	17 11	18 01
अलीगढ़	16 06	17 03	17 58
आगरा	16 08	17 05	17 58
आबू (राज.)	16 12	17 08	18 00
अबोहर (पं.)	16 00	17 00	17 55
आनन्दपुर सा.	15 57	16 58	17 53
आईजोल	15 16	17 10	18 01
इन्दौर			
ईटानगर	16 09	17 05	17 57
इलाहाबाद	16 11	17 08	18 01
इम्फाल	16 14	17 08	– –
उज्जैन	16 16	17 11	18 02
उदयपुर (राज.)	16 12	17 09	18 00
ऊना (हि.प्र.)	15 56	16 55	17 53
ऊधमपुर (का.)	15 54	16 55	17 51
कपूरथला	15 56	16 58	17 53
कठुआ (का.)	15 55	16 56	17 52
कन्नौज (उ.प्र.)	16 08	17 05	17 58
कोलकाता	16 18	17 13	18 03
करनाल	16 00	17 01	17 55
करतारपुर	15 56	16 57	17 53
कटक	16 22	17 16	18 05
कांगड़ा	15 55	16 56	17 52
कानपुर	16 09	17 07	18 00
कोल्हापुर	16 33	17 21	18 05
कालका	15 58	16 59	17 54
किश्तवाड़ (का.)	15 52	16 54	17 50
कुराली	15 58	16 59	17 54
कुरुक्षेत्र	16 00	17 01	17 55
कोचीन	16 52	17 30	18 06
कुल्लू	15 54	16 56	17 52
कैथल	15 59	17 00	17 55
कोटखाई (हि.प्र.)	15 58	16 58	17 54
कोहिमा	16 12	17 07	17 58
कोटकपूरा (पं.)	15 58	16 59	17 34
कन्याकुमारी	16 57	17 32	18 05
खन्ना	15 58	16 59	17 34
खरड़	15 58	16 57	17 54
खुर्जा (उ.प्र.)	16 06	17 03	17 57
गंगटोक	16 08	17 05	17 58
गाज़ियाबाद	16 03	17 03	17 57
ग्वालियर	16 11	17 07	18 00
गुड़गांव	16 03	17 02	17 57
गुवाहटी	16 11	17 07	17 58
गोईंदवाल	15 56	16 57	17 53
गोराया	15 56	16 57	17 53
गया	16 13	17 09	18 01
चम्बा (हि.प्र.)	15 54	16 55	17 51
चण्डीगढ़	15 58	16 59	17 54
चन्दौसी (उ.प्र.)	16 06	17 03	17 57
चमौली (उत्तरां)	15 59	17 00	17 54
चेन्नई	16 41	17 26	18 08
छिन्दवाड़ा	16 18	17 13	18 03
जालन्धर	15 56	16 57	17 53
जम्मू	15 54	16 55	17 51
जयपुर	16 07	17 05	17 58
जबलपुर(म.प्र.)	16 17	17 12	18 02
जलगांव (म.)	16 21	17 15	18 03
जैसलमेर	16 07	17 05	17 58
जीन्द	16 01	17 02	17 56
जोगिन्द्रनगर	15 57	16 56	17 53
जोधपुर	16 09	17 06	17 58
जैतों	15 58	16 59	17 54
जीरा	15 57	16 58	17 53
झांसी	16 12	17 08	18 00
झुझुनूं	16 04	17 04	17 58
टोहाना	15 59	17 00	17 55
डोडा (का.)	15 52	16 54	17 50
डलहौजी	15 54	16 55	17 51
डिब्रूगढ़	16 09	17 04	17 56
दार्जिलिंग	16 09	17 06	17 58
तिरूवन्तपुरम	16 56	17 32	18 05
दिल्ली	16 03	17 03	17 57
दुर्ग (छत्ती.)	16 21	17 15	18 04
देहरादून	16 00	17 00	17 55
द्वारिका	16 18	17 11	17 59
धर्मशाला(हि.प्र.)	15 56	16 56	17 53
धूरी	15 57	16 58	17 54
नवलगढ़	16 06	17 04	17 57
नकोदर	15 56	16 57	17 53
नरवाना (ह.)	16 00	17 01	17 55
नवांशहर	15 56	16 57	17 53
नंगल	15 56	16 57	17 53
नागपुर	16 21	17 15	18 04
नाहन (हि.प्र.)	15 58	16 58	17 54
नासिक	16 24	17 16	18 03
नालागढ़ (हि.प्र.)	15 58	16 58	17 54
नौशेहरा(ज.का.)	15 52	16 54	17 50
पटना	16 12	17 08	18 00
पठानकोट	15 55	16 56	17 52
पटियाला	15 58	16 59	17 54
पणजी (गोआ)	16 37	17 23	18 05
पाण्डिच्चेरी	16 44	17 27	18 08
पंचकूला	15 58	16 59	17 54
पानीपत	16 02	17 02	17 56
पिहोवा	16 00	17 01	17 55
पिथौरागढ़	15 59	16 59	17 55
पुँछ (ज.का.)	15 50	16 51	17 49
पीलीभीत	16 03	17 03	17 57
पोर्ट-ब्लेयर	16 39	17 25	– –
पालमपुर	15 54	16 56	17 52
पूना	16 28	17 18	18 04
पुरी	16 24	17 17	18 05
पपरौला (हि.प्र.)	15 54	16 56	17 52
फर्रूखाबाद	16 04	17 04	17 58
फगवाड़ा	15 56	16 57	17 53
फरीदकोट	15 58	16 59	17 54
फाज़िल्का	15 59	17 00	17 55
फरीदाबाद	16 03	17 03	17 57
फतेहाबाद (हरि.)	16 02	17 02	17 56
वाराणसी	16 12	17 09	18 01
बटाला	15 55	16 56	17 52
बंगा (पं.)	15 56	16 57	17 53
बलाचौर (पं.)	15 57	16 58	17 54
बड़ौदा (गु.)	16 18	17 22	18 02
बरनाला	15 58	16 59	17 54
बिजनौर	16 02	17 02	17 56
बुलन्दशहर	16 03	17 03	17 57

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मि.	ग्रहण मध्य घं. मि.	ग्रहण समाप्त घं.मि.
बरेली	16 04	17 04	17 57
बारामूला (का.)	15 50	16 52	17 49
बनिहाल (का.)	15 51	16 53	17 50
बल्लभगढ़ (हरि.)	16 03	17 03	17 57
बीकानेर	16 04	17 04	17 58
बागपत	16 02	17 02	17 57
बैजनाथ	15 55	16 56	17 52
बिलासपुर (हि.प्र.)	15 55	16 56	17 52
बैंगलौर	16 42	17 26	18 07
भटिण्डा	15 59	17 00	17 55
भद्रवाह	15 52	16 54	17 51
भिवानी	16 03	17 03	17 57
भागलपुर	16 12	17 09	18 00
भोपाल	16 16	17 11	18 02
भुवनेश्वर	16 23	17 16	18 05
मलेरकोटला	15 58	16 59	17 54
मोगा	15 57	16 58	17 53
मदुरई	16 51	17 30	18 07

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मि.	ग्रहण मध्य घं. मि.	ग्रहण समाप्त घं.मि.
मोहाली	15 58	16 59	17 54
मेरठ	16 02	17 02	17 57
मुर्शीदाबाद	16 15	17 10	18 01
मुज़फ्फरनगर	16 02	17 02	17 57
मंगलौर	16 44	17 26	18 06
मुक्तसर	15 58	16 59	17 54
मन्दसौर (म.प्र.)	16 15	17 10	18 01
मण्डी (हि.प्र.)	15 55	16 56	17 53
मनीकरण	15 54	16 55	17 51
मुम्बई	16 27	17 17	18 04
मुज्ज़फरपुर	16 11	17 07	18 00
यमुनानगर	16 02	17 02	17 56
रामपुरबुशैहर	15 55	16 56	17 52
रोहड़ु	15 58	16 58	17 54
रोपड़	15 58	16 59	17 54
रोहतक	16 03	17 02	17 57
रिवाड़ी	16 02	17 02	17 56
रामबन (का.)	15 52	16 54	17 51

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मि.	ग्रहण मध्य घं. मि.	ग्रहण समाप्त घं.मि.
रियासी (का.)	15 54	16 55	17 51
रामनगर (का.)	15 52	16 54	17 51
रतलाम (म.प्र.)	16 16	17 11	18 02
राँची (झार.)	16 16	17 12	18 02
राजौरी (का.)	15 51	16 53	17 50
रामपुर (उ.प्र.)	16 03	17 03	17 57
रायपुर (छत्ती.)	16 21	17 15	18 04
राजकोट	16 18	17 12	18 01
रूड़की	16 01	17 00	17 55
लखनऊ	16 08	17 06	17 59
लुधियाना	15 57	16 58	17 53
लाडवा	16 01	17 01	17 55
शिमला	15 58	16 58	17 54
शाहाबाद (ह.)	16 01	17 01	17 55
शाहजहांपुर	16 06	17 03	17 58
श्रीनगर	15 50	16 52	17 49
संगरूर	15 57	16 58	17 54
सरहिन्द	15 58	16 59	17 54
सपाटू	15 58	16 58	17 54

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं. मि.	ग्रहण मध्य घं. मि.	ग्रहण समाप्त घं.मि.
सहारनपुर	16 01	17 01	17 55
सरकाघाट	15 55	16 56	17 52
सुन्दरनगर	15 54	16 55	17 52
सुनाम (पं.)	15 57	16 58	17 54
सोलन	15 58	16 58	17 54
सिलीगुड़ी	16 10	17 06	17 59
सिरसा	16 03	17 03	17 57
सोनीपत	16 02	17 02	17 56
हमीरपुर	15 57	16 57	17 53
हरिद्वार	16 01	17 01	17 55
हज़ारीबाग	16 15	17 11	18 02
हनुमानगढ़	16 03	17 03	17 57
होशियारपुर	15 56	16 57	17 53
हैदराबाद	16 30	17 20	18 06
हांसी (ह.)	16 02	17 01	17 56
हाटकोटी (हि.प्र.)	15 58	16 58	17 54
हिसार	16 04	17 04	17 58
हुबली	16 37	17 23	18 06

(5) कंकण सूर्यग्रहण

(26 जनवरी, 2009 ई., माघ अमावस, सोमवार)

यह कंकण सूर्यग्रहण 26 जनवरी, 2009 ई. सोमवार को दोपहर बाद दक्षिण भारत, दक्षिण-पूर्वी भारत, उत्तर-पूर्वी भारत तथा अंडेमान, नीकोबार द्वीप समूह में दिखाई देगा। उत्तर, उत्तर-पश्चिमी एवं मध्य भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

यहाँ दिए गए भारत के मानचित्र (ग्रहणचित्र-3) में खींची गई 'क—ख' रेखा से दाईं (नीचे) ओर स्थित नगरों (दक्षिणी कर्नाटक, दक्षिण आंध्र प्रदेश, तामिलनाडू, केरल, दक्षिणी उड़ीसा, दक्षिणी बंगाल, मिज़ोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैंड, पूर्वी अरु. प्रदेश, असम, मेघालय) में कंकण रूप में सूर्य ग्रहण दिखाई देगा। पृष्ठ 15 पर इन प्रदेशों के प्रमुख नगरों में ग्रहण आरम्भ, परमग्रास तथा ग्रहण समाप्ति का समय (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है।

ग्रहण का ग्रासमान— चित्र (३) में दी गई 'क—ख' रेखा पर स्थित नगरों में इस ग्रहण का ग्रासमान शून्य होगा और इस रेखा से जो नगर दक्षिण या पूर्व की ओर जितना अधिक हटा होगा, उस नगर में इस ग्रहण का परमग्रासमान उतना ही अधिक होगा। इस प्रकार भारत में इस ग्रहण का अधिकतम ग्रासमान, जो लगभग ४० प्रतिशत होगा, पोर्ट-ब्लेयर (अंदेमान, द्वीप समूह) में देखा जा सकेगा।

ग्रहण का सूतक— इस ग्रहण का सूतक 25 जनवरी, 2009 ई० की रात्रि 2 बजकर 09 मिनट (26/09 भा. स्टैं. टा.) पर प्रारम्भ हो जाएगा। यद्यपि स्थानीय नगर के स्पर्श-काल से ठीक 12 घण्टे पूर्व भी ग्रहण कर सकते हैं। जैसे—कोलकाता में सूतक 26 जन. की प्रातः 3 घं. 02 मिं. से प्रारम्भ होगा।

ग्रहण का राशिफल— यह ग्रहण श्रवण नक्षत्र तथा मकर राशि में घटित हो रहा है। फलस्वरूप इस नक्षत्र एवं राशि वालों को सूर्य पूजा एवं सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना कल्याणकारी होगा।

ग्रहणं जन्मनक्षत्रे जायते चन्द्रसूर्ययोः। यस्य तस्याशुभं हानि वैरं रोगः पराभवः॥

अर्थात् जिसके जन्मनक्षत्र में सूर्य का ग्रहण होता है तो उसे हानि, शत्रुता, रोग और तिरस्कार मिलता है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	कष्ट, चिंता	गुप्त चिंता	सौख्य लाभ	स्त्री/पति	कष्ट, भय	मान हानि	कार्य सिद्धि	धन लाभ	धन हानि	चोट, दुर्घटना	धन हानि	लाभ धन प्राप्ति

राश्यानुसार अशुभ फल के नाश के लिए गायत्री का जप, सुवर्ण व गाय का दान, औषधि स्नान, राशिस्वामी की शान्ति करानी चाहिए। स्वराशि से दूषित राशि में ग्रहण होने पर अपने सामर्थ्य अनुसार सोने के बिम्ब समान सर्प बनाकर, तांबे के बर्तन में तिल, दक्षिणा और वस्त्र ब्राह्मण को देने से अनिष्ट ग्रहण का दोष दूर होता है।

ग्रहण का अन्य फल—मकर राशि तथा श्रवण नक्षत्र में घटित होने के कारण दक्षिण दिशा (राज्यों) में रहने वालों को, मन्त्री जन, नीच लोगों, वैदिक कर्म करने वाले ब्राह्मणों, सत्यधर्मी लोगों को कष्ट रहे। सन्ध्याकाल में घटित होने से गर्भवती स्त्रियों को कष्ट तथा वर्षा का अभाव हो। कृषकों तथा कृषि सम्बन्धी कार्य करने वालों को लाभ तथा उनकी मनमानी होगी।
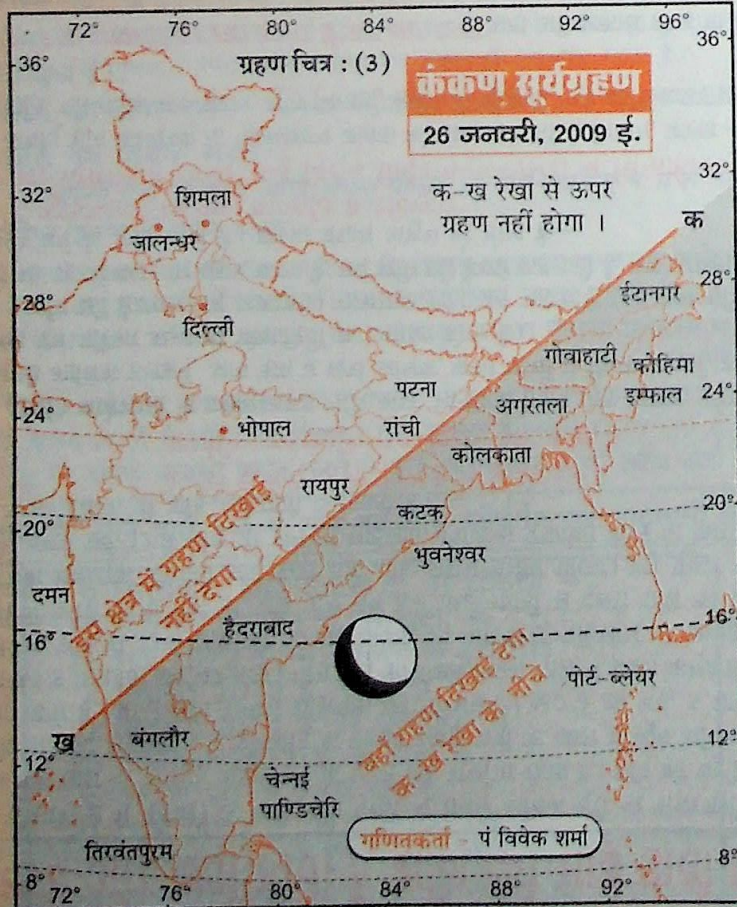
कंकण सूर्यग्रहण (26 जनवरी, 2009 ई०)

[(दक्षिण-पूर्वी भारत के प्रमुख नगरों में ग्रहण आरम्भ, परमग्रास एवं समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा. में)]

नगर	ग्रहण प्रारम्भ घं.	मिं.	ग्रहण मध्य घं.	मिं.	ग्रहण समाप्त घं.	मिं.
अगरतला (त्रिपु.)	15	02	15	32	16	1
ऐज़वाल (मिज़ो)	14	58	15	23	16	5
इम्फाल (मणि.)	15	01	15	33	16	3
ईटानगर (अरु. प्र.)	15	17	15	33	15	49
Cannonore (केर.)	14	32	15	13	15	51
कन्याकुमारी	14	09	15	11	16	06
कटक (उड़ी.)	14	56	15	28	15	59
Kavaratti	14	32	15	08	15	42
Kavalure	14	29	15	17	16	02
कोहिमा (नागा.)	15	05	15	33	16	00
कोलकत्ता (बं.)	15	02	15	30	15	58
कोरापुट (उड़ी.)	14	55	15	26	15	55
कोच्चि (केरल)	14	19	15	12	15	59
Kozikode (केर.)	14	27	15	13	15	55
कुर्नूल (आ.प्र.)	14	50	15	20	15	48
गुवाहाटी (आसा.)	15	17	15	32	15	48
चेन्नई	14	29	15	19	16	05
तन्जोर	14	20	15	16	16	06
त्रिचुर (केरल)	14	22	15	12	15	58
तिरुवनंतपुरुम	14	11	15	11	16	04
Tamenlong (मणि.)	15	03	15	33	16	02
Tiruneveli (ता.ना.)	14	12	15	12	16	05
डिब्रूगढ़ (आसा.)	15	15	15	33	15	52
नेल्लूरु (आं.प्र.)	14	36	15	20	16	01
Nowgang (आसा.)	15	14	15	33	15	51
पाण्डिच्चेरि (ता.ना.)	14	24	15	18	16	06
पोर्ट-ब्लेयर	14	18	15	26	16	26
पुरी (उड़ीसा)	14	52	15	28	16	02
बंगलोर (क.)	14	33	15	17	15	57
भुवनेश्वर (उड़ी.)	14	55	15	28	16	00
मदुरुई (ता.ना.)	14	17	15	14	16	05
मेंगलोर (कर्ना.)	14	41	15	14	15	45
मैसूर (कर्ना.)	14	31	15	15	15	55
मुर्शिदाबाद (बंगा.)	15	14	15	31	15	47
मेदिनीपुर (बंगा.)	15	04	15	30	15	55
राजामुन्दरी (आ.प्र.)	14	46	15	24	15	59
विजयवाड़ा (आ.प्र.)	14	46	15	22	15	56
शिलांग (मेघा)	15	11	15	32	15	53
सम्बलपुर (उड़ी.)	15	11	15	28	15	44
Sibsagar (आसा.)	15	12	15	33	15	54
Silchar (आसा.)	15	04	15	33	16	00
Sringeri (कर्ना.)	14	43	15	15	15	45
हुबली (बंगा.)	15	03	15	16	15	30
हैदराबाद (आ.प्र.)	15	02	15	21	15	40

विशेष— ग्रहण का फल, कृत-कृत्य, सूतक आदि केवल उन्हीं क्षेत्रों के ('क-ख' रेखा के दायीं ओर) लिए है, जहाँ यह कंकण ग्रहण दिखाई देगा। ग्रहण जहाँ दिखायी नहीं देगा (उत्तर एवं उत्तर-पश्चिमी भारत)—वहाँ ग्रहण के सूतक, ग्रहण सम्बन्धी कार्य एवं निषेध आवश्यक नहीं होते। परन्तु माघ (मौनी) अमावस होने से उत्तरी भारत में भी स्नान, दान, तर्पण का माहात्म्य तो अवश्य रहेगा ही।

गङ्गा कनखले पुण्या प्रयागं पुष्करं गायाम्। कुरुक्षेत्रं तथा पुण्यं राहुग्रस्ते दिवाकरे॥

मत्स्यपुराण में वर्णित है कि कनखल (हरिद्वार) में गंगा पुण्य दातृ और प्रयाग, पुष्कर, गया, कुरुक्षेत्र में स्नान पुण्यदायक होता है।

कब और क्यों होती है शनि की साढ़ेसाती एवं अढैय्या ? (अनिष्ट शान्ति के लिए कुछ उपयोगी उपाय)

सौरमण्डल में नवग्रहों के मध्य शनि पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर संचरणशील है। शनि एक राशि पर लगभग अढ़ाई वर्ष के काल तक संचरित रहता है। शनि की वक्री-मार्गी आदि गति की समयावधि में परिवर्तन के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून अधिकता भी होती रहती है। परन्तु शनि सम्पूर्ण राशिचक्र का परिभ्रमण (360°) 29 वर्ष, 5 मास, 17 दिन एवं 5 घण्टों में तय करता है। गोचरवश शनि जब किसी राशि में प्रवेश करता है, तभी शनि उस राशि से 12वीं राशि को आगामी अढ़ाई वर्ष कष्टकारी, पहिली (1) अर्थात् **जिस राशि** में प्रवेश किया गया हो, उसे पाँच वर्ष तक तथा अपनी से दूसरी राशि को लगभग साढ़ेसात वर्ष तक आगामी साढ़े सात वर्षों तक अशुभ प्रभाव करेगा। इस प्रकार पहिली (1), दूसरी एवं 12वीं राशि पर लगभग साढ़ेसात वर्षों तक प्रभावित करने के कारण शनि की चक्र-प्रक्रिया ही शनि-साढ़ेसाती कहलाती है।

द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुखैः युतो भवेत्॥

शनि साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप शरीर कष्ट, मानसिक तनाव, गृह-कलह-क्लेश, धन सम्बन्धी आर्थिक उलझनें, आय कम व खर्च अधिक, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, शत्रुभय, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियों का सामना होता है।

शनि की ढैय्या (लघु कल्याणी) गोचरवश शनि जब चन्द्रराशि (या नाम राशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब **शनि की ढैय्या** कहलाती है, यह लगभग अढ़ाई (2½) वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव अशुभ ही होता है—

''लघुकल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः
राशो चतुर्थाष्टमे व्याधिं बन्धु विरोधं विदेशगमनं–क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥''

अर्थात् शनि की ढैय्या के फलस्वरूप जातक को रोग, बन्धुओं से वियोग, कलह-क्लेश, धन हानि, परिवारिक मन-मुटाव, गुप्त चिन्ताएँ, विदेश में परेशानी, एवं आर्थिक उलझनों का सामना होता है।

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा—ऐसा आवश्यक नहीं। यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली एवं नवांश कुण्डली में शनि उच्चस्थ, मित्रक्षेत्री, स्वक्षेत्री अथवा वर्गोत्तम स्थिति में पड़ा हो, तो जातक की जन्म राशि या नाम राशि पर शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या का प्रभाव अपेक्षाकृत कम अरिष्टकर होगा। **वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ लग्न** की कुण्डली में शनि यदि शुभ स्थिति में हो, तो शनि की दशा व्यवसाय एवं कैरियर की दृष्टि से विशेष शुभ रहती है। अधिक विवरण के लिए **फलित ज्योतिष की ज्योतिष तत्त्व** (द्वितीय खण्ड) का अध्ययन कर सकते हैं।

शनि साढ़ेसाती प्रत्येक व्यक्ति को तीस वर्षों में एक बार अवश्य आती है। प्रत्येक व्यक्ति को साढ़ेसाती लगने से पहले **भगवान शिव, श्री हनुमान, सूर्य** एवं **शनि सम्बन्धी** जप, तप, हवन दान आदि अवश्य कर लेना चाहिए, ताकि साढ़ेसाती के अरिष्ट प्रभाव से बचा जा सके।

कोई महत्त्वपूर्ण नया उद्योग या नया कार्य व्यवसाय नहीं करना चाहिए। विशेष कार्यारम्भ करने से पहले यह देख लें कि आपकी राशि पर साढ़ेसाती तो नहीं, अथवा जन्म कुण्डली में शनि की अशुभ स्थिति होकर उसकी अरिष्ट दशा चल रही है, तो फिर शनि पूजन, मन्त्र जप एवं स्तोत्र पाठ, दानादि करने के बाद ही शुभ कार्य का आरम्भ करना चाहिए। अन्यथा कार्य-व्यवसाय में लाभ की अपेक्षा हानि होने की सम्भावना होगी।

इसके विपरीत कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक (Professional) विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय एवं कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा, अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट के सहयोगी भी परायों जैसा व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जप तथा **औषधि स्नान** आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुण्डली में शनि यदि अशुभ स्थिति में हो, अथवा जन्म नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप, आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई न कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराय होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय—शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें—

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा—

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

विधि— सायं सूर्यास्त के बाद स्नानादि के बाद धुले वस्त्र धारण करके पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में तैल सरसों का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगा कर, स्टील का एक लोटा शुद्ध जल भरकर रखें।

मन्त्रजप—ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

शनि-साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी कुछ अन्य उपाय

शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हजार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित **शनि यन्त्र** धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—*''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।'' जप संख्या 23 हजार*

शनि का वैदिक मन्त्र—

''ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ शं नमः॥''

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र—

''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥''

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

आगामी आने वाले वर्षों में शनि का राशि परिवर्तन एवं साढ़ेसाती ज्ञान

9 सितम्बर, सन् 2009 ई. से कन्या में
15 नवम्बर, 2011 ई. से तुला में
16 मई 2012 ई. से कन्या में (वक्री)
4 अगस्त 2012 ई. से तुला में
2 नवबंर 2014 ई. से वृश्चिक में
26 जनवरी 2017 ई. से धनु में
6 अप्रैल 2017 ई. से वक्री
21 जून 2017 ई. से वृश्चिक (व.)
26 अक्तूबर 2017 ई. से धनु में
24 जनवरी, सन् 2020 ई. से मकर में

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं पाया विचार सं० २०६५

(सन् 2008-09 ई०)

गतवर्ष की 16 जुलाई 2007 ई. को प्रातः 4 बजकर 41 मिनट से शनि सिंह राशि में प्रवेश कर चुका है, ता. 19 दिसं. (2007) को वक्री होकर 2 मई, 2008 ई. तक सिंह राशि में ही वक्री रहेगा। ता. 3 मई से 30 दिसम्बर 2008 ई. तक शनि मार्गी (Direct) अवस्था में **सिंह** में ही संचार करेगा। 31 दिसं. से वक्री होकर **सम्वत् के अन्त** तक वक्री (Retrograte) अवस्था में ही संचरित रहेगा।

ध्यान रहे, शनि, भौम आदि क्रूर ग्रह जब वक्री हों एवं गुरु, शुक्रादि ग्रह अतिचारी हों, तो प्रजा में असन्तोष, अत्यधिक मंहगाई, व्याधिभय, दुःख, हिंसा एवं जातीय उपद्रवों का भय, राजनेताओं में विग्रह, टकराव, कहीं छत्रभंग, दुर्भिक्ष एवं अराजकता का भय रहे।

यथा— **यदा क्रूर ग्रहो वक्री अतिचारी तु सौम्यकः।**
पीडा-व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥

विभिन्न राशियों पर शनि द्वारा सिंह राशि का गोचर फल यद्यपि गतवर्षीय पंचाँग दिवाकर में लिख चुके हैं, परन्तु प्रस्तुत वर्ष के दौरान **सिंहस्थ शनि पर वर्षारम्भ से 8 दिसं. (2008 ई.) तक गुरू की शुभ (नवम) दृष्टि रहेगी।** इसके अतिरिक्त **30 अप्रैल (08) के बाद से सिंह राशि से केतु का अशुभ संचार भी हट जाएगा।** अतएवं सिंह राशि तथा अन्य राशियों पर शनि का अशुभ प्रभाव (गतवर्ष की अपेक्षा) कम पड़ेगा। गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप सिंह एवं अन्य राशियों पर शनि का अरिष्ट प्रभाव (गतवर्ष की अपेक्षा) कम पड़ेगा।

सिंह राशिकालीन शनि का साढ़ेसाती विचार सं० २०६५

(6 अप्रैल 2008 ई. से 26 मार्च 2009 ई. तक)

* **कर्क राशि** पर शनि साढ़ेसाती का प्रभाव अभी (6 अप्रैल, 2008 ई. से) लगभग एक वर्ष, 5 महीने तक रहेगा।
* **सिंहराशि** पर शनि साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव अभी लगभग 3 वर्ष, 7 मास शेष है।
* **कन्या राशि पर शनि साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव अभी लगभग 6 वर्ष 7 मास तक शेष रहेगा।**
* **वृष और मकर** राशि वालों को शनि की ढैय्या का प्रभाव अभी एक वर्ष और 5 महीने तक शेष होगा।

—मेषादि राशियों पर शनि साढ़ेसाती का प्रभाव—संवत् २०६५—

मेष राशि—को शनि पंचम में होगा तथा **शनि का पाया भी लोहा** होने से गुप्त चिन्ताएं, अनावश्यक खर्च व उलझनें रहेंगी, परन्तु गुरु की दृष्टि होने से भाग्यवश धन-लाभ होते रहेंगे।

वृष राशि—शनि की ढैय्या का प्रभाव अभी रहेगा। मकान, वाहनादि पर खर्च अधिक, इस पर **शनि का पाया ताम्र** होने से कुछ बिगड़े काम बनें, आकस्मिक धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

मिथुन राशि—तृतीयस्थ शनि शुभ होगा। आकस्मिक धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। उच्च विद्या एवं विदेशी कार्यों में सफलता मिले। इस पर **शनि का पाया चाँदी** होने से भूमि, वाहन, विवाहादि सुखों का लाभ हो।

कर्क राशि—शनि साढ़ेसाती उतरती अवस्था में होगी। इस पर **शनि का पाया सुवर्ण** है। गुप्त परेशानियाँ रहे, आय कम व खर्च अधिक हो। व्यवसाय में उलझनें बढ़ें। ता. ९ दिसं. के बाद शुभ कार्य घटित होंगे।

सिंह राशि—साढ़ेसाती के कारण पूर्वार्ध भाग में कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। **पाया सुवर्ण** का होने से निकट के बन्धुओं से मतभेद पैदा हों। गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप (उत्तरार्द्ध में) रुके कार्यों में सफलता प्राप्ति होगी।

कन्या राशि—शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव अभी चढ़ती अवस्था में है। आय के साधनों में अड़चनें रहें। खर्च भी बढ़ेंगे। **पाया सुवर्ण** होने से अपने नजदीकी लोग भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। मानसिक तनाव व उलझनें बढ़ेंगी। शिवोपासना करनी कल्याणप्रद होगी। ता. ९ दिसं. के बाद समय शुभ हो।

तुला राशि—गृह में किसी मंगल कार्य का आयोजन हो। धन-लाभ, पदोन्नति, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति हो। **शनि का पाया ताम्र** होने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध हों। विदेश आदि कार्यों में सफलता मिले।

वृश्चिक राशि—कारोबार में विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। शनि का पाया रजत होने से विशेष परिश्रम के बाद ही कामयाबी होगी।

धनु राशि—अड़चनों के बावजूद (गुरू की शुभ स्थिति) से कुछ बिगड़े काम बनें। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क होंगे। धन लाभ के अवसर भी मिलेंगे। यद्यपि इस पर **शनि का पाया लोहा** होने से शरीर कष्ट व तनाव भी रहे।

मकर राशि—शनि की ढैय्या के कारण मानसिक तनाव, शरीर कष्ट, व उलझनें बढ़ेंगी। खर्च भी अधिक होंगे। इस राशि पर **शनि का पाया ताम्र** होने से आकस्मिक धन लाभ एवं उच्च विद्या में सफलता प्राप्त हो।

कुम्भ राशि—राशि स्वामी शनि पर गुरु की दृष्टि रहने से गतवर्ष के रूके हुए कामों में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। आय की अपेक्षा खर्च अधिक रहेंगे। शनि का **पाया लोहा** होने से गुप्त चिन्ताएँ एवं शत्रुभय होगा।

मीन राशि—अत्यन्त कठिन परिस्थितियों के बाद बिगड़े कामों में सुधार होगा। **शनि का पाया** रजत होने से पूर्वार्द्ध भाग में भूमि, वाहन, विवाह आदि सुख-प्राप्ति के योग हैं। श्रेष्ठ लोगों से सम्पर्क बढ़ेंगे।

गुरू का शुभाशुभ गोचरफल-संवत् २०६५ (2008-09 ई.)

गतवर्ष 22 नवम्बर, 2007 ई. से गुरु स्वराशि धनु राशि में प्रातः 5 बजकर 3 मिनट से प्रवेश कर चुके हैं। सन् 2008 ई. के अधिकांश कालावधि में गुरु धनु राशि में ही संचार करेंगे। **ता. 9 दिसम्बर 2008 ई० को रात्रि 11 बजकर 42 मिनट** पर मकर (नीच) राशि में प्रवेश होगा। धनु राशि में गुरु द्वारा संचार का फल यद्यपि गतवर्षीय संवत् २०६४ की पंचांगदिवाकर में लिख चुके हैं। फिर भी पाठकों के लाभार्थ निम्नरूपेण पुनः अंकित कर रहे हैं। **ध्यान रहे,** धनु राशि में संचरण काल में गुरु की **मेष, मिथुन** एवं **सिंह** राशि पर क्रमशः (पंचम, सप्तम एवं नवम) शुभ दृष्टियाँ रहेंगी। गुरू की शुभ दृष्टि होने की स्थिति में सम्बन्धित राशि के अशुभ फल में कमी आ जाएगी।

धनु राशि में संचरणकाल गुरू का शुभाशुभ फल

(22 नवम्बर 2007 ई. 8 दिसम्बर 2008 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
बिगड़े कामों में सुधार भूमि, वाहनादि सुख मिले प्रिय-बन्धु मिलाप	आय कम व खर्च अधिक ऋण-रोग भय घरेलू उल-झनें बढ़ेंगी	धन लाभ व भाग्य में उन्नति विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि हो भाग्य-उन्नति विदेश योग	आय कम, खर्च अधिक रहेगा रोग व शत्रुभय निजबन्धु से विरोध	भूमि-वाहनादि सुख हों धन-लाभ, धर्म में रुचि, गृह में शुभ कार्य हो	बनते कामों में बाधाएँ, खर्च अधिक, शरीर-कष्ट गृह कलह-क्लेश द्वितीय भाग शुभ हो।	प्रिय-बन्धु से मेल, धन लाभ, अच्छा पदोन्नति विदेश यात्रा के योग हैं।	अचानक धन लाभ के अवसर हो, भाग्य में वृद्धि किसी श्रेष्ठजन से मेल विदेश यात्रा हो	संघर्ष के बाव-जूद निर्वाह योग्य धन लाभ पर, खर्चों में अधिकता परिवार में मतभेद रहे।	अल्प-धन लाभ धर्म-कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च हो	धन-सम्पदा सवारी का लाभ, भाग्य में उन्नति प्रिय मिलन व्यय अधिक	आय कम व खर्च अधिक हो, परिवार में कलह-तनाव एवं उलझनें हों।

मकर राशिस्थ गुरू का शुभाशुभ फल

(9 दिसम्बर 2008 ई. 26 मार्च 2009 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय कम व खर्च अधिक परिवार में मन मुटाव तनाव व परेशानी हो।	योजना में कुछ सफलता भूमि, वाहनादि सुख मिलें प्रिय-बन्धु सुख	आय कम खर्च अधिक ऋण-रोग एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।	विघ्नों के बाद कार्य सिद्धि धन-लाभ भाग्य उन्नति हो।	आय कम खर्च अधिक रहें। रोग व शत्रु भय, बन्धु विरोध रहे।	भूमि-वाहनादि सुख हों धन लाभ धर्म-कर्म में रुचि गृह में शुभ कार्य हो।	कार्यों में विघ्न-बाधाएं व खर्च अधिक स्वास्थ्य हानि व तनाव।	धन लाभ हो किसी प्रिय-बन्धु का सुख, पदोन्नति, दीर्घ विदेश यात्रा हो।	अचानक धन लाभ के चांस हों भाग्य वृद्धि किसी प्रिय व श्रेष्ठ जन से सम्पर्क।	संघर्ष से निर्वाह योग्य धन-लाभ, खर्चों की अधिकता परिवार-वैमनस्य	अल्प धन-लाभ, धर्म-कर्म में रूझान शुभ कार्यों पर खर्च अधिक	धन-सम्पदा सवारी का लाभ, भाग्य उन्नति प्रिय-मिलन व्यय अधिक

गुरु का कारकत्व—गुरू पति सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरू अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरू सम्बन्धित सुख में कमी करता है। कुण्डली के अन्य ग्रहों पर विचार कर लेना चाहिए।

हमारे कार्यालय से छपी ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग I में **गोचर विचार** विस्तार से पढ़ें।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति—अथवा गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मन्त्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मन्त्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र—''ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्''

गुरु बीज मन्त्र—''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥''

राहु का शुभाशुभ फल—संवत् २०६५

वर्षारम्भ से 29 अप्रैल, 2008 ई० तक राहु कुम्भ राशि में ही संचार करेगा। इसका शुभाशुभ गोचर हम गतवर्षीय पंचाँग दिवाकर २०६४ में लिख चुके हैं। 30 अप्रैल, 2008 ई. की प्रातः 9 बजकर 30 मिनट से संवत् के अन्त तक राहु मकर राशि में संचार करेगा। इसका शुभाशुभ गोचर फल इस प्रकार से होगा—

मकर राशिस्थ राहु का गोचर फल संवत् २०६५

(30 अप्रैल 2008 ई. से 26 मार्च 2009 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
खुश-खबरी मिले, शुभ कार्य हो, धन लाभ अच्छा पर खर्च बढ़े।	संघर्ष अधिक, निर्वाह योग्य धन में विघ्न हो, निजबन्धु से विरोध खर्च बहुत बढ़े।	लाभ कम खर्च अधिक हो, शरीर कष्ट व मित्रों से विरोध हो, अपने भी पराये हों।	बनते कामों में बाधाएं, धन-लाभ कम, खर्च अधिक रहे, तनाव भी रहे।	अचानक धन-लाभ, प्रिय-बन्धु से मेल, कार्यों में सफलता मिले।	निज-बन्धु से कलह-क्लेश, रोग व शत्रु भय, खर्च व चिन्ता बढ़े। वर्षांत में खुश-खबरी मिले।	किसी बन्धु से क्लेश, लाभ कम व खर्चों में वृद्धि हो वृथा दौड़-धूप बढ़े।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि शुभ यात्रा, धन व पदोन्नति के चांस बनेंगे। परन्तु खर्च भी बढ़ेंगे।	घरेलू कलह-क्लेश हो, वृथा खर्च बढ़े, शरीर कष्ट व तनाव बढ़े।	निज-बन्धु से बिगाड़ हो, रोग व शत्रु भय हो, खर्चों में वृद्धि हो, दीर्घ यात्रा हो।	बनते कामों में विघ्न, वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक रहे। तनाव बढ़े।	कुछ बिगड़े कामों में सुधार, भूमि-वाहन आदि सुख धन लाभ हो।

केतु संचार—30 अप्रैल, 2008 ई० को प्रातः 9.30 बजे से सम्वत् के अन्त तक केतु कर्क राशि में संचार करेगा। इसका शुभाशुभ गोचर फल इस प्रकार से होगा—

कर्क राशिस्थ केतु का गोचरफल २०६५

(30 अप्रैल 2008 ई. से 26 मार्च 2009 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आर्थिक संकट के कारण घरेलू झंझट व अशान्ति रहे।	बिगड़े कामों में सुधार परिश्रम से धन लाभ अच्छा वाहन सुख मिले।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम व खर्च अधिक रहे।	शरीर कष्ट व तनाव रहे, बनते कामों में विघ्न, खर्च ज्यादा हो।	रोग व शत्रु भय अपने परायों जैसा व्यवहार रखें। खर्च अधिक रहेंगे।	धन लाभ साधारण वाहन, भूमि आदि साधनों की प्राप्ति संघर्ष अधिक रहे।	लाभ अल्प व खर्च अधिक रहे। गृह में कोई मंगल कार्य हो। विदेश यात्रा योग बने।	भाग्य उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़े, दुर्घटना से चोट आदि का भय।	धन-हानि, रोग व शत्रु भय विद्या में विघ्न परिवार सम्बन्धी चिन्ता खर्च अधिक रहें।	कुटुम्ब में किसी प्रियजन से वैमनस्य, खर्च अधिक, किसी से धोखा मिले।	पराक्रम से धन लाभ हो बिगड़े कामों में सुधार, खुश-खबरी मिले।	घरेलू कलह-क्लेश मन अशान्त लाभ कम खर्च अधिक।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र—

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र—

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाश्य पुस्तक **अनिष्ट ग्रह शान्ति और उपयोगी उपाय** मँगवाकर पढ़ें। **—सम्पादक**

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योगः-वि. संवत् २०६५ (सन् 2008-09)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग की** उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो **'रवि योग'** अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योगों—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग—गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरू धारण करना, विदेश-गमन करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल में, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना प्रशस्त होगा। विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश, कार्य निर्धारित मुहूर्तों में ही करने कल्याणकारी होंगे। पण्डित विवेक शर्मा पंचाँगकर्त्ता।

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008 ई.	घं. मिं.	2008 ई.	घं. मिं.
6 अप्रै.	21 08	7 अप्रै.	सू. उ.
8 अप्रै.	15 54	10 अप्रै.	सू. उ.
13 अप्रै.	7 13	14 अप्रै.	7 02
15 अप्रै.	सू. उ.	15 अप्रै.	7 25
23 अप्रै.	सू. उ.	23 अप्रै.	24 08
27 अप्रै.	8 34	28 अप्रै.	सू. उ.
28 अप्रै.	10 41	29 अप्रै.	सू. उ.
4 मई	7 49	5 मई	5 05
6 मई	सू. उ.	6 मई	23 03
7 मई	सू. उ.	8 मई	सू. उ.
9 मई	15 30	10 मई	सू. उ.
11 मई	सू. उ.	11 मई	13 17
17 मई	21 46	18 मई	सू. उ.
20 मई	3 23	20 मई	सू. उ.
21 मई	सू. उ.	21 मई	6 19
26 मई	सू. उ.	26 मई	19 04
30 मई	19 40	31 मई	सू. उ.
1 जून	सू. उ.	1 जून	15 38
3 जून	सू. उ.	3 जून	9 50
4 जून	सू. उ.	5 जून	3 47
5 जून	25 09	6 जून	23 01

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008 ई.	घं. मिं.	2008 ई.	घं. मिं.
11 जून	23 05	12 जून	सू. उ.
14 जून	सू. उ.	15 जून	सू. उ.
16 जून	9 23	17 जून	सू. उ.
21 जून	22 52	22 जून	सू. उ.
27 जून	3 09	28 जून	सू. उ.
30 जून	19 56	1 जुला	सू. उ.
2 जुला	सू. उ.	2 जुला	14 25
3 जुला	11 44	4 जुला	9 21
9 जुला	6 32	10 जुला	सू. उ.
12 जुला	सू. उ.	12 जुला	13 00
14 जुला	सू. उ.	14 जुला	18 52
19 जुला	4 55	20 जुला	सू. उ.
24 जुला	8 54	26 जुला	सू. उ.
28 जुला	सू. उ.	29 जुला	सू. उ.
31 जुला	सू. उ.	1 अग.	सू. उ.
6 अग.	सू. उ.	6 अग.	16 26
15 अग.	12 08	16 अग.	13 33
19 अग.	14 53	20 अग.	सू. उ.
21 अग.	सू. उ.	22 अग.	12 42
25 अग.	सू. उ.	26 अग.	सू. उ.
28 अग.	सू. उ.	[illegible]	[illegible]

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008 ई.	घं. मिं.	2008 ई.	घं. मिं.
31 अग.	24 19	1 सितं.	सू. उ.
12 सितं.	सू. उ.	12 सितं.	21 59
16 सितं.	सू. उ.	16 सितं.	21 33
18 सितं.	सू. उ.	18 सितं.	18 45
20 सितं.	15 28	21 सितं.	सू. उ.
22 सितं.	सू. उ.	22 सितं.	12 25
25 सितं.	सू. उ.	25 सितं.	9 15
28 सितं.	8 29	29 सितं.	सू. उ.
5 अक्तू.	21 06	6 अक्तू.	सू. उ.
10 अक्तू.	सू. उ.	10 अक्तू.	7 11
14 अक्तू.	सू. उ.	14 अक्तू.	6 48
18 अक्तू.	सू. उ.	18 अक्तू.	20 13
26 अक्तू.	सू. उ.	27 अक्तू.	सू. उ.
30 अक्तू.	22 51	31 अक्तू.	25 32
2 नवं.	सू. उ.	3 नवं.	सू. उ.
9 नवं.	18 13	10 नवं.	सू. उ.
11 नवं.	15 42	12 नवं.	सू. उ.
17 नवं.	22 07	18 नवं.	सू. उ.
18 नवं.	20 46	19 नवं.	सू. उ.
23 नवं.	सू. उ.	23 नवं.	22 49
27 नवं.	5 22	28 नवं.	8 07
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008-09	घं. मिं.	2008-09	घं. मिं.
7 दिसं.	सू. उ.	8 दिसं.	3 13
9 दिसं.	सू. उ.	9 दिसं.	24 31
10 दिसं.	22 09	11 दिसं.	सू. उ.
15 दिसं.	7 32	16 दिसं.	5 21
16 दिसं.	सू. उ.	16 दिसं.	27 46
24 दिसं.	11 20	25 दिसं.	14 12
28 दिसं.	23 20	29 दिसं.	सू. उ.
30 दिसं.	2 14	30 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2009 ई.)			
4 जन.	सू. उ.	4 जन.	10 54
6 जन.	सू. उ.	6 जन.	9 52
7 जन.	8 19	8 जन.	सू. उ.
11 जन.	18 55	12 जन.	16 17
13 जन.	सू. उ.	13 जन.	14 03
21 जन.	सू. उ.	21 जन.	20 31
25 जन.	सू. उ.	26 जन.	सू. उ.
26 जन.	8 25	27 जन.	सू. उ.
1 फर.	16 53	2 फर.	सू. उ.
3 फर.	15 47	5 फर.	सू. उ.
8 फर.	सू. उ.	8 फर.	27 28
[illegible]	[illegible] 34	15 फर.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2009 ई.	घं. मिं.	2009 ई.	घं. मिं.
16 फर.	25 05	17 फर.	सू. उ.
22 फर.	सू. उ.	22 फर.	15 34
23 फर.	सू. उ.	23 फर.	17 54
27 फर.	22 22	28 फर.	सू. उ.
1 मार्च	सू. उ.	1 मार्च	22 00
3 मार्च	सू. उ.	3 मार्च	20 21
4 मार्च	सू. उ.	5 मार्च	सू. उ.
6 मार्च	16 08	7 मार्च	सू. उ.
8 मार्च	सू. उ.	8 मार्च	12 41
14 मार्च	7 05	15 मार्च	सू. उ.
16 मार्च	9 38	17 मार्च	सू. उ.
21 मार्च	23 37	22 मार्च	सू. उ.
27 मार्च	5 41		

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
23 अप्रै.	सू. उ.	23 अप्रै.	24 08
21 मई	सू. उ.	21 मई	6 19
30 मई	19 40	31 मई	सू. उ.
27 जून	सू. उ.	27 जून	26 09
25 जुला	सू. उ.	25 जुला	8 19
28 जुला	25 57	29 जुला	सू. उ.
31 जुला	19 25	1 अग.	सू. उ.

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008 ई.	घं. मिं.	2008 ई.	घं. मिं.
25 अग.	8 30	26 अग.	सू. उ.
28 अग.	सू. उ.	28 अग.	26 27
20 सितं.	15 28	21 सितं.	सू. उ.
22 सितं.	सू. उ.	22 सितं.	12 25
25 सितं.	सू. उ.	25 सितं.	9 15
15 अक्तू.	5 05	15 अक्तू.	सू. उ.
18 अक्तू.	सू. उ.	18 अक्तू.	20 13
26 अक्तू.	15 45	27 अक्तू.	सू. उ.
11 नवं.	15 42	12 नवं.	सू. उ.
23 नवं.	सू. उ.	23 नवं.	22 49
27 नवं.	5 22	27 नवं.	सू. उ.
9 दिसं.	सू. उ.	9 दिसं.	24 31
24 दिसं.	11 20	25 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2009 ई.)			
6 जन.	सू. उ.	6 जन.	9 52
21 जन.	सू. उ.	21 जन.	20 31
27 फर.	22 22	28 फर.	सू. उ.

रवि योग—सं. २०६५

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
8 अप्रै.	15 54	9 अप्रै.	13 22
10 अप्रै.	11 08	11 अप्रै.	9 18
13 अप्रै.	7 13	13 अप्रै.	18 29
14 अप्रै.	7 02	16 अप्रै.	8 19
18 अप्रै.	11 23	19 अप्रै.	13 26
26 अप्रै.	5 59	27 अप्रै.	8 34
27 अप्रै.	10 25	28 अप्रै.	10 41
7 मई	20 09	8 मई	17 35
9 मई	15 30	10 मई	14 02
11 मई	4 31	11 मई	13 17
13 मई	13 55	15 मई	17 01
17 मई	21 46	18 मई	24 30
26 मई	19 04	27 मई	20 21
5 जून	25 09	6 जून	23 01
7 जून	21 32	7 जून	22 38
8 जून	20 46	9 जून	20 48
11 जून	23 05	14 जून	3 40
16 जून	9 23	17 जून	12 21

रवि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008-09	घं. मिं.	2008-09	घं. मिं.
25 जून	3 11	26 जून	3 30
6 जुला	6 06	7 जुला	5 29
8 जुला	5 37	9 जुला	6 32
11 जुला	10 22	13 जुला	15 54
15 जुला	21 45	16 जुला	24 27
24 जुला	8 54	25 जुला	8 19
4 अग.	14 56	5 अग.	15 20
6 अग.	16 26	7 अग.	18 12
9 अग.	23 16	12 अग.	5 06
14 अग.	10 12	15 अग.	12 08
22 अग.	12 42	23 अग.	11 27
2 सितं.	25 21	3 सितं.	26 47
5 सितं.	4 48	6 सितं.	7 18
8 सितं.	13 06	10 सितं.	18 30
12 सितं.	21 59	13 सितं.	7 14
13 सितं.	22 46	14 सितं.	22 54
20 सितं.	15 28	21 सितं.	13 52
2 अक्तू.	13 03	3 अक्तू.	15 23
4 अक्तू.	18 07	5 अक्तू.	21 06
7 अक्तू.	26 58	10 अक्तू.	7 11
10 अक्तू.	11 43	11 अक्तू.	8 13
13 अक्तू.	7 58	14 अक्तू.	6 48
19 अक्तू.	18 15	20 अक्तू.	16 39
31 अक्तू.	25 32	2 नवं.	4 30
3 नवं.	7 37	4 नवं.	10 41
7 नवं.	17 27	9 नवं.	18 13
11 नवं.	15 42	12 नवं.	13 29
17 नवं.	22 07	18 नवं.	20 46
19 नवं.	12 29	19 नवं.	20 01
30 नवं.	14 11	1 दिसं.	17 18
2 दिसं.	16 42	2 दिसं.	20 17
3 दिसं.	22 58	4 दिसं.	25 09
7 दिसं.	3 22	8 दिसं.	26 15
10 दिसं.	22 09	11 दिसं.	19 22
17 दिसं.	26 52	18 दिसं.	26 43
31 दिसं.	4 55	1 जन.	7 14
(सन् 2009 ई.)			
2 जन.	9 05	3 जन.	10 20
5 जन.	10 45	7 जन.	8 19

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2009 ई.	घं. मिं.	2009 ई.	घं. मिं.
9 जन.	3 37	9 जन.	24 46
16 जन.	11 12	17 जन.	11 46
29 जन.	14 40	30 जन.	15 54
31 जन.	16 39	1 फर.	16 53
3 फर.	15 47	5 फर.	12 45
6 फर.	5 17	6 फर.	10 40
8 फर.	5 54	9 फर.	3 28
14 फर.	21 34	15 फर.	22 59
27 फर.	22 22	28 फर.	22 22
1 मार्च	22 00	2 मार्च	21 19
5 मार्च	17 43	7 मार्च	14 26
9 मार्च	10 59	10 मार्च	9 25
16 मार्च	9 38	17 मार्च	11 54
17 मार्च	24 37	18 मार्च	14 39

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2008-09 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे—ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। तो त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008-09	घं. मिं.	2008-09	घं. मिं.
19 जन.	16 36	19 जन.	26 16
29 जन.	सू. उ.	29 जन.	16 22
23 मार्च	6 41	23 मार्च	26 55
27 मई	सू. उ.	27 मई	20 21
20 जुला	6 35	20 जुला	15 38
29 जुला	सू. उ.	29 जुला	23 45
21 सितं.	13 52	21 सितं.	23 40
30 सितं.	14 03	1 अक्तू.	सू. उ.
11 अक्तू.	7 15	11 अक्तू.	8 13
23 नवं.	22 49	24 नवं.	सू. उ.
17 जन.	11 46	17 जन.	19 50
27 जन.	15 22	28 जन.	सू. उ.
23 मार्च	2 02	23 मार्च	सू. उ.

(रवि पुष्य योग)

16 मार्च	25 47	17 मार्च	सू. उ.
13 अप्रै.	7 13	14 अप्रै.	सू. उ.
11 मई	सू. उ.	11 मई	13 17
11 जन.	18 55	12 जन.	सू. उ.
8 फर.	सू. उ.	8 फर.	27 28
8 मार्च	सू. उ.	8 मार्च	12 41

(गुरु पुष्य योग)

31 जुला	19 25	1 अग.	सू. उ.
28 अग.	सू. उ.	28 अग.	26 27
25 सितं.	सू. उ.	25 सितं.	9 15

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2008-09	घं. मिं.	2008-09	घं. मिं.
17 फर.	20 37	18 फर.	सू. उ.
23 फर.	सू. उ.	23 फर.	9 16
4 मार्च	सू. उ.	4 मार्च	17 20
12 अप्रै.	7 58	12 अप्रै.	12 47
22 अप्रै.	सू. उ.	22 अप्रै.	20 15
27 अप्रै.	8 34	28 अप्रै.	सू. उ.
6 मई	13 56	6 मई	23 03
15 जून	6 28	15 जून	15 58
29 जून	22 26	30 जून	सू. उ.
8 जुला	20 49	9 जुला	सू. उ.
23 अग.	11 27	23 अग.	18 26
31 अग.	24 27	1 सितं.	सू. उ.
6 सितं.	सू. उ.	6 सितं.	7 18
25 अक्तू.	14 55	25 अक्तू.	26 21
4 नवं.	18 26	5 नवं.	सू. उ.
14 दिसं.	10 12	14 दिसं.	14 36
23 दिसं.	8 41	24 दिसं.	सू. उ.
28 दिसं.	23 20	29 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2009 ई.)			
3 जन.	सू. उ.	3 जन.	10 20
15 फर.	22 59	16 फर.	सू. उ.
21 फर.	12 50	21 फर.	26 19
3 मार्च	सू. उ.	3 मार्च	20 21

"ज्योतिष शास्त्र में ग्रह-योगों का प्रभाव"

राष्ट्रीय 'दिल्ली संस्कृत अकादमी' नई दिल्ली में दिनांक 10 मार्च, 2007 ई. को पं. पंकज शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा पठित सार-गर्भित ज्योतिष लेख

जन्म कुण्डली के द्वादश भावों में से जब किसी एक भाव में दो या अधिक ग्रहों का संयोग हो, तो उसे ज्योतिषीय भाषा में 'ग्रह-योग' कहा जाता है। प्राचीन ज्योतिष आचार्यों ने अपने ग्रन्थों में जातक के सम्पूर्ण जीवन के विभिन्नांगों एवं विषयों पर विश्लेषण करते हुए जन्म कुण्डली एवं गोचर ग्रहों के फलादेश को विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। विशेष ग्रह-योगों के कारण कई बार फलादेश में चामत्कारिक रूप में फल वृद्धि अथवा हानि हो जाती है। ग्रह योगों का वर्णन केवल मात्र वृहद् संहिता, बृहद् होराशास्त्र, मानसागरी, ताजिक नीलकंठी, बृहद्ज्योतिसार, सारावली, बृहज्जातक आदि ज्योतिष ग्रन्थों में ही नहीं बल्कि पौराणिक एवं धार्मिक ग्रन्थों में जैसे-रामायण, महाभारत, अग्निपुराण, श्रीदेवीभागवत, नारद पुराण, गर्ग संहिता, श्रीमद्भागवत आदि में भी ग्रह-योगों के सम्बन्ध में अनेक स्थलों पर वर्णन मिलते हैं।

आदिकाल में ही ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्त, संहिता एवं होरा (जातक)-ये तीनों भेद स्वतन्त्र रूप में प्रस्फुटित होने शुरू हो चुके थे। ज्योतिष शास्त्र को वेदाङ्ग ज्योतिष का चक्षु माना जाता है, इसकी सहायता के बिना श्रौत, स्मार्त-अर्थात् धर्म परायण गृहस्थादिकों के कार्य सफल हुए नहीं माने जाते। जन्म से लेकर मृतक तक सभी संस्कारों पर्यन्त ज्योतिष एवं मुहूर्त्त शास्त्र का योगदान अक्षुण्ण रूप से माना जाता है-

वेदस्य निर्मलं चक्षुःज्योतिशास्त्रमकल्मषम्।
विनेतदखिलं कर्माणि श्रौत-स्मार्ता न सिद्ध्यन्ति॥

वेदाङ्ग साहित्य, रामायण, महाभारत एवं पौराणिक कालिक ग्रन्थों में ज्योतिष योगों के सम्बन्ध में अनेक स्थलों पर विवरण मिलते हैं। **जैसे महाभारत में मंगल का वक्री होकर अनुराधा नक्षत्र में जाना अशुभ माना गया है। एक ही मास में सूर्य, चन्द्र-दो ग्रहणों का घटित होना तथा १३ दिनों का पक्ष होना अनिष्टकर बताया गया है।** बनवास के समय धर्मराज द्वारा भविष्य में कलियुग का वर्णन यूँ मिलता है-

अस्मिन् कलियुगे त्वस्ति पुनः कौतूहलं मम। यदा सूर्यश्च चन्द्रश्च तथा तिष्य बृहस्पती॥ १०॥
एकराशौ समेष्यन्ति प्रपत्स्यति तदा कृतम्॥ ११॥ (महाभारत वनपर्व ॥ १९०॥)

रामायण एवं पौराणिक काल में भी विद्वान आचार्य लोग ज्योतिषीय योगों एवं अनेक शुभाशुभ फल के विषय में सुपरचित थे। **'वाल्मीकि रामायण'** के अयोध्याकाण्ड में श्री राम के बनवास के पश्चात् मृत्यु शय्या पर पड़े महाराज दशरथ ने रानी कौशल्या से अनिष्ट ग्रह-योग के बारे में संकेत दिया कि "मेरा नक्षत्र सूर्य, अंगारक (मंगल) एवं राहु-ग्रहों से पीड़ित होने वाला है, अतएव मेरे भाग्य में कोई भयंकर विपत्ति आने वाली है।"

नारद पुराण में तो बहुत अधिक ज्योतिष तथा ग्रह-दोषों के शुभाशुभ फलों के वर्णन मिलते हैं। उदाहरणार्थः-विवाह में सग्रह, कर्तृरि आदि दोषों का वर्णन करते हुए बताया गया है कि "चन्द्रमा यदि पापग्रह से युक्त हो तो वर-वधू के लिए घातक होता है। **कर्तृरि** लग्न से बारहवें मार्गी और दूसरे वक्री पाप ग्रह हों तो यह कर्तृरि दोष वर-वधू के लिए अनिष्टकारी होता है।

श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कन्ध एवं द्वितीय अध्याय में श्री शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षित को सत्ययुग के प्रारम्भ के विषय में वर्णन करते हैं कि-**"जिस समय चन्द्रमा, सूर्य और बृहस्पति एक ही समय, एक ही साथ पुष्य नक्षत्र के प्रथम पल में प्रवेश करते हैं, उसी समय सत्ययुग का प्रारम्भ होता है।"**

पुराणोत्तर काल में बृहज्जातक, बृहत्संहिता, (वाराहमिहिर) सारावली, बृहद होराशास्त्र (पाराशर), फलदीपिका (मंत्रेश्वर) आदि ज्योतिषीयग्रन्थों में फलित सम्बन्धी ग्रहयोगों के विस्तृत तौर पर विवरण मिलते हैं।

ग्रह-योगों के सम्बन्ध में सामान्य नियम है कि यदि कुण्डली में कोई ग्रह अपने मित्र ग्रह के साथ योग-कारक होकर बैठा हो, तो ऐसा ग्रह-योग उस भाव एवं उन ग्रहों के भावेश फल में वृद्धिकारक होगा। यदि कुण्डली में कोई दो ग्रह परस्पर शत्रु होकर बैठे हों, तो ऐसा योग सम्बन्धित भाव के फल की हानि करेगा। इसी प्रकार किन्हीं दो अधिक ग्रहों का योग, किसी जातक की कुण्डली के सभी भावों में एक जैसा फल नहीं प्रकट करता।

कुण्डली नं. १

६ ५ ४ ७ चं. गु. ३ ८ २ के. रा. बु. ९ ११ १ सू. मं. १० १२ श.

उदाहरणार्थ-सिंह लग्न की कुण्डली में नवम (भाग्य) स्थान पर सूर्य-मंगल का योग जातक को स्वास्थ्य, भाग्यशाली, उच्च प्रतिष्ठित, भूमि-जायदाद आदि सुखों से समायुक्त रखेगा। जबकि यही योग (सू.-मं.) यदि द्वादश भावस्थ कर्क राशि पर होगा, तो जातक को रोगयुक्त, भूमि-जायदाद सम्बन्धी विवादों के कारण धन-हानि एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में से गुज़रने को मजबूर करेगा। अतएव ग्रह-योगों के शुभाशुभ प्रभाव का निर्णय करते समय कुण्डली के भाव, भावेश, राशि, ग्रह की उच्च-नीच, स्वक्षेत्री, मित्र-शत्रु क्षेत्री आदि स्थितियों तथा उन पर पड़ने वाली शुभाशुभ दृष्टियों, गोचर स्थिति तथा दशान्तर्दशा आदि सभी बातों पर विचार कर लेना चाहिए।

रूचकादि पंच महापुरूष योग

कुण्डली नं. २

६ ४ सू. ५ मं. ७ चं. गु. ३ ८ २ के. रा. बु. ९ ११ १ १० १२ श.

जन्म कुण्डली में दो या अधिक ग्रहों के संयोग से ही ग्रह-योग बनते हों-यह आवश्यक नहीं। मानसागरी, फलदीपिका, सारावली, जातक-परिजात आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित **'पंचमहापुरुष'** योग के अनुसार यदि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र अथवा शनि इनमें से एक ग्रह भी अपनी स्वराशि का अथवा उच्च राशि का होकर केन्द्र में हो, तो क्रमं से रूचक, भद्र, हंस, मालव्य या शश नामक योग बनता है।

स्वगेहतुङ्गाश्रय केन्द्र संस्थैरूच्चोपगैर्वा वानि सूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रूचकाख्य भद्रहंसाख्य मालव्य शशिभिधानाः॥

(१) रूचक योग-कुण्डली में मंगल स्वराशि या उच्चराशिगत होकर केन्द्र में हो, तो

रूचक नामक योग होता है। ऐसा जातक अत्यन्त साहसी, शूरवीर, परिश्रमी, कीर्तिवान एवं शत्रुओं को जीतने वाला होता है–

दीर्घास्यो बहुसाहसाप्त विभवःशूरोऽरिहन्ता बली।
गर्विष्ठो रूचके प्रतीत गुणवान् सेनापतिः जित्वरः॥

उदाहरण कुण्डली
रूचक योग

उदाहरणस्वरूप साथ वाली कुण्डली एक वरिष्ठ सेठ की जो जुलाई, 1945 ई. में रावलपिंडी (पाक) में उत्पन्न होटल उद्योग एवं बृहद् प्रकाशन समूह का स्वामी है इनकी कुण्डली में स्पष्ट रूचक योग दृष्टिगोचर हो रहा है।

(२) भद्र योग–यदि बुध अपनी उच्च राशि या स्वराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो भद्र नामक योग बनता है। ऐसा जातक तीव्र बुद्धिमान, मृदु एवं मधुरभाषी, संतुलित शरीराकृति, सात्त्विक एवं परोपकारी स्वभाव का, धर्म एवं योगादि शास्त्रों का जानकार, निडर, विद्वान एवं स्वतन्त्र विचारक होता है। स्वर्गीय प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री की कुण्डली उदाहरणस्वरूप अनुशीलन की जा सकती है।

उदाहरण कुण्डली
स्व. प्रधान मन्त्री लाल बहादुर
२ अक्तू. १९०४ ई. शास्त्री

(३) हंस योग–यदि गुरु कुण्डली में स्वराशि, मूलत्रिकोण या उच्चराशि (कर्क) में केन्द्रगत हो तो हंसयोग बनता है। ऐसा जातक कमल के समान सुन्दर मुख, ऊंची नाक, नक्श वाला, श्वेत वर्ण, कामुक परन्तु गुणवान, विद्वान एवं उदार हृदयवाला होता है। ऐसा जातक दीर्घायु भी होता है। देखें उदाहरण कु. 116 (ज्यो. तत्त्व भाग दो)

(४) मालव्य योग–यदि शुक्र उच्च राशि या स्वक्षेत्री होकर केन्द्र भावों में हो, तो मालव्य योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक सुन्दर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला, ऊंची नाक, गुणवान, उच्च व्यवसायिक विद्या में शिक्षित, धनवान्, स्त्री, संतान, वाहन आदि सुखों से युक्त होता है एवं सम्पन्न होता। उदा. कु. नं. 77 (ज्यो. तत्त्व)

उदाहरण कु. शश योग
भू. पू. प्रधानमन्त्री
श्रीवाजपेयी

(५) शश योग–यदि शनि उच्च या स्वराशि या मूलत्रिकोण में होकर केन्द्र भाव में हो, तो शश या शशक योग होता है। इस योग के प्रभावस्वरूप जातक उच्च प्रतिष्ठित, उच्च पदाधिकारी, सुख-साधनों से युक्त, तीव्र बुद्धिमान तथा ग्राम या समाज का नेतृत्व करने में कुशल होता है। साथ दी गई कुण्डली जो कि भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की है, जो शशक योग का प्रबल उदाहरण है।

रूचकादि योगों में परिहार

पंचमहापुरुष सम्बन्धी उपरोक्त रूचकादि योगों के परिहार के सम्बन्ध में मानसागरी, पारिजातादि ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है कि रूचक, भद्रादि योग कालीन यदि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि के साथ सूर्य या चन्द्रमा का भी संयोग हो जाए तो राजयोग तुल्य महापुरुष का प्रभाव भंग हो जाएगा। यद्यपि ग्रह के उच्चादि की स्थिति में उसकी दशा में शुभ फल अवश्य होंगे। इसी भान्ति मालव्यादि योग कारक ग्रह की स्थिति यदि नवांश आदि वर्ग में भी अच्छी हो, तो मालव्य, शशादि योगों का विशेष शुभ फल अवश्य प्राप्त होगा।

अकेला ग्रह भी राजयोग कारक

जन्म कुण्डली में अकेला एक ग्रह भी अपनी उच्च (स्वोच्च) राशि में बैठकर बली, मित्र ग्रह द्वारा दृष्ट होकर, नवांश में भी स्वोच्च स्थिति में अर्थात् वर्गोत्तम स्थिति में हो, तो ऐसी ग्रह स्थिति राजयोग कारक होगी, अर्थात् जातक राजतुल्य धन सम्पदा व ऐश्वर्य प्रदान करेगी।

एक एव खगः स्वोच्चे वर्गोत्तमगते यदि।
बलवान् मित्र संदृष्ट करोति पृथिवी पतिम्॥ (सारावली)

यदि दो या अधिक ग्रह उच्च राशि में हो, तो विशेष रूप से धन–ऐश्वर्य सम्पदा आदि की प्राप्ति होती है।

स्वगृही ग्रहों का फल

बृहज्जातकनुसार जन्म समय अपने गृह (स्वगृह) में एक ग्रह हो, तो जातक अपने पिता के समान समृद्ध, दो ग्रह स्वगृही हों, तो कुल में प्रमुख तीन ग्रह स्वगृह में हो, तो अपने भाई बन्धुओं से पूज्य, ४ ग्रह स्वगृह में हो तो धनी, पांच ग्रह स्वगृही हों तो जातक सुखी, छः ग्रह स्वगृही हों तो भोगी, सातों ग्रह स्वगृही हों तो जातक राजा के समान सम्पन्न होता है।

शत्रु व नीच राशि का फल

बृहज्जातक अनुसार यदि कुण्डली में एक ग्रह शत्रु या नीच राशिगत हो, तो जातक धनहीन अथवा धन सम्बन्धी परेशानियों से दुःखी, दो ग्रह नीच हों तो जातक सुखहीन, तीन ग्रह हों तो मूढ़, चार ग्रह शत्रुगत या नीच हों तो व्याधि युक्त, पांच ग्रह नीच हों, तो जातक पराधीन होकर संतप्त एवं दुखी रहता है।

राजयोग कारक ग्रह-योगों का निरूपण

प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में अनेक प्रकार के राजयोगों का वर्णन पाया जाता है। तत्कालीन राजकीय शासन–प्रणाली के आधार पर, जिसमें राजा, महाराजा, सम्राट, दीवान, मन्त्री आदि के पद हुआ करते थे। इसी कारण प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों में राजयोगों का वर्णन अधिकांशतः मिलता है, परन्तु आजकल यद्यपि लोकतान्त्रिक प्रणालियों का ही प्रचलन हो चुका है, तथापि चूंकि शासनधिकार प्राप्ति एवं प्रभुत्व प्राप्ति का ही दूसरा नाम 'राजयोग' है। वर्तमान में प्रचलित उच्च-प्रशासक अधिकारी अधिकांशतः राजतुल्य धन-वैभवादि सुखों का उपभोग करते हैं। इसलिए शासन-पद्धति में परिवर्तन मात्र से राजयोगों के फलादेश में भी कोई अन्तर नहीं होंगे।

(1) चापाजहिंसराशिषु लग्नस्थो महीपालम्।
जनयति च मित्रदृष्टः स्वबाहुबलनिर्जितारिबलापक्षम्॥ (होरासार)

यदि मेष, सिंह या धनु लग्न में लग्न में मंगल हो और उसको मंगल का मित्र देखता हो, तो वह जातक अपनी भुजाओं के पराक्रम अर्थात् स्व-परिश्रम से राज्य प्राप्त कर राज्य करता है। (भावार्थ फलदीपिका पृ. १६८)

शेष पृष्ठ 26 पर

दिनमान से मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न, प्रदोष आदि जानना

प्राचीन भारतीय महर्षियों ने विभिन्न शास्त्रीय, वैदिक एवं लौकिक कार्यों को करने के लिए अपने सहस्रों वर्षों के अनुभवों एवं अनुसन्धानों के आधार पर मानव-उपयोगी **'काल मान'** के ज्ञान का प्रकाश किया था। आजकल यद्यपि काल-विभाजन अधिकांशतः घण्टा मिनटों, सैकिण्डों आदि में किया जाता है, परन्तु भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने दिन-रात (अहोरात्र) का विभाजन दिनमान, रात्रिमान, घड़ी, पल, विपल, प्रहर, मुहूर्त्तों आदि में दिया गया है। व्रत, पर्व, त्यौहारों एवं याज्ञादि अनुष्ठानों सम्बन्धी नियमों में मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष, ब्रह्म आदि काल के विशेष उल्लेख मिलते हैं। सर्वसाधारण लोगों की सुविधा के लिए इनकी जानकारी एवं स्पष्टीकरण लिख रहे हैं।

—अथ दिवारात्रौ पंचदश मुहूर्त्ता—

मुहूर्त्त—मुहूर्त्त मार्त्तण्ड के अनुसार दिन और रात में पन्द्रह-पन्द्रह कुल (३०) मुहूर्त्त होते हैं। दिनमान अथवा रात्रिमान को १५ से भाग देने पर प्रत्येक मुहूर्त्त का समान मान निकलता है।

दिन के पांच भाग—अक्षांश भेद एवं सूर्योदयास्त में अन्तर होने के कारण प्रत्येक नगर के दिनमान और रात्रिमान परिवर्तित होते रहते हैं। सम्भवतः इसी कारण हमारे पूर्वाचार्यों ने दिवस का प्रारम्भ काल सूर्योदय से मानते हुए दिन के पाँच भाग किए हैं, यथा—सूर्योदय से ३ मुहूर्त्त (२ घण्टा, २४ मिनट) तक **प्रातःकाल**, उसके बाद २ घण्टा, २४ मिनट **संगवकाल**, इसके बाद २ घण्टे २४ मिनट तक **मध्याह्नकाल**, फिर २ घण्टा, २४ मिनट के बाद **अपराह्नकाल** और फिर आगे २ घण्टा २४ मिनट का **सायंह्नकाल** होता है।

प्रातःकाल स्नानादि के पश्चात् देवपूजन, जपादि के लिए प्रशस्त, मध्याह्न में **ब्रह्मयज्ञ**, ऋषि तर्पण आदि, अपराह्न में श्राद्ध, पितृकर्म तथा **सायंकाल** में भी स्नान, संध्या, जप, देवार्चन आदि करने की शास्त्राज्ञा है।

स्नानसंध्या तर्पणादि जप होम सुरार्चनम्।
उपवासवता कार्यं सायं संध्याहुतीर्विना॥

अन्यत्रेऽपि

पूर्वाह्णो दैविकः कालो मध्याह्नश्चापि मानुषः।
अपराह्णः पितृणां तु सायाह्नो राक्षसः स्मृतः॥ ॥ व्यास॥

नारदपुराण के अनुसार दिन के तथा रात्रि के मुहूर्त्तों के अलग-अलग देवता स्वामी (अधिष्ठाता) माने गए हैं। साथ ही मुहूर्त्त स्वामियों के नक्षत्र भी वर्णित हैं। जिस नक्षत्र में जो कार्य विहित है, वह कार्य उसी नक्षत्र के मुहूर्त्त में करना विशेष फलप्रदायक होता है।

दिवसीय १५ मुहूर्त्तों के			रात्रि १५ मुहूर्त्तों के		
मु.क्रम	स्वामी	नक्षत्र	मु.क्रम	स्वामी	नक्षत्र
१	रूद्र	आर्द्रा	१	शिव	आर्द्रा
२	सर्प	आश्लेषा	२	अजपाद	पूर्वाभाद्रपद
३	मित्र	अनुराधा	३	अहिर्बुध्न्य	उत्तराभाद्रपद
४	पितर	मघा	४	पूषा	रेवती
५	वसु	धनिष्ठा	५	अश्विनी कु.	अश्विनी
६	जल	पूर्वाषाढ़ा	६	यम	भरणी
७	विश्वेदेवा	उत्तराषाढ़ा	७	अग्नि	कृतिका
८	विधि	अभिजित	८	ब्रह्मा	रोहिणी
९	ब्रह्मा	रोहिणी	९	चन्द्र	मृग
१०	इन्द्र	ज्येष्ठा	१०	अदिति	पुनर्वसु
११	इन्द्राग्नि	विशाखा	११	वृहस्पति	पुष्य
१२	राक्षस	मूल	१२	विष्णु	श्रवण
१३	वरुण	शतभिषा	१३	सूर्य	हस्त
१४	अर्यमा	उत्तराफाल्गुणी	१४	विश्वकर्मा	चित्रा
१५	भग	पूर्वाफाल्गुणी	१५	वायु	स्वाती

अभिजित मुहूर्त्त—यह दिन का अष्टम मुहूर्त्त है। यह विशेष प्रशस्त मुहूर्त्त कहलाता है। नारद पुराण अनुसार दिन के बारह बजे से 1 घड़ी पूर्व और एक घड़ी पश्चात् अर्थात् मध्याह्न 11.36 से 12.24 बजे तक का समय तथा तदनन्तर नवम मुहूर्त्त **'ब्राह्म'** या **'रौहिण'** कहलाता है, जो श्राद्ध में श्रेष्ठ माना जाता है। अभिजित् काल में क्रियमाण सभी कार्य सफल होते हैं, ऐसी मान्यता है।

—मध्याह्न, अपराह्न आदि का प्रारम्भ व समाप्ति—

मध्याह्न काल—अभीष्ट दिन के दिनमान को अढ़ाई से भाग देकर जो मान (घड़ी-पलों या घण्टा-मिनटों में) प्राप्त होवे, उसको अपने स्थानीय सूर्योदय में जमा करने से, आपको अपने नगर के **मध्याह्न** का **आरम्भकाल** ज्ञात होगा।

दिनमान को अढ़ाई से भाग देने के पश्चात् जो संख्या घण्टा/मिनटादि प्राप्त हो, उसे २ से भाग देकर अर्ध-भाग करें, तथा इस अर्ध-संख्या को **मध्याह्न** के आरम्भकाल में जमा कर देने से मध्याह्न का समाप्ति काल जान सकते हैं।

मध्याह्न काल की समाप्ति से अपराह्न का प्रारम्भकाल शुरु होता है।

दिनमान से मध्याह्न, अपराह्न, सायह्न जानने की प्रक्रिया

भारतीय भूखण्ड में दिनमान का विस्तार लगभग 9/30 घं. मिंट से लेकर 14-30 घं. मि. के मध्य में पड़ता है। इसीलिए 9/30 घं. मिं. दिनमान से लेकर 14/30 घं. मिं. के दिनमान के मध्यान्तर में आने वाले मध्याह्न, अपराह्न आदि के आरम्भ व समाप्ति काल जानने की प्रक्रिया लिख रहे हैं। मध्याह्न तथा अपराह्न काल के प्रारम्भ एवं समाप्ति काल के घण्टा मिनट को अपने नगर के सूर्योदय में अलग-अलग जमा कर देने से क्रमशः मध्याह्न एवं अपराह्न काल का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल पता चल जाएगा।

उदाहरण—मान लीजिए हमें जम्मू नगर में 31 अग. 2008 को मध्याह्न का आरम्भ, समाप्ति व मध्यम काल जानना है, तो 31 अग. के सूर्योदय (6/08) को उस दिन के सूर्यास्त (18-53 घं. मिं.) में से घटा देने पर हमें 12 घं. 45 मिनट का दिनमान प्राप्त हुआ। आगे दी गई तालिका में दिनमान घं. 12/45 मिं. के आगे दाईं ओर देखने से हमें मध्याह्न का आरम्भ 5 घं. 6 मिं. मिला। इसको उस दिन के सूर्योदय (6-08) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का प्रारम्भ 11 घं. 14 मिं. तथा उसी दिनमान के सामने समाप्ति काल (7.39) में सू.उ. जमा करने से हमें 31 अग. के मध्याह्न का समा. काल (13-47) प्राप्त हुआ। आरम्भ व समाप्ति के समयान्तर के अर्ध भाग (10/17) को मध्याह्नारम्भ (11-14) में जमा कर देने से हमें मध्याह्न का मध्य काल प्राप्त होगा।

इसी भान्ति अभीष्ट दिनमान की दाईं तरफ चौथे कालम में अपराह्न के आरम्भ तथा समाप्ति के घं.मिं. उस दिन के स्थानीय सूर्योदय में अलग-अलग जोड़ देने पर अपराह्न का आरम्भ व समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) मालूम हो जाएगा।

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	3 48	5 42	5 42	7 36	7 36	9 30
9 45	3 54	5 51	5 51	7 48	7 48	9 45
10 00	4 00	6 00	6 00	8 00	8 00	10 00
10 15	4 06	6 9	6 9	8 12	8 12	10 15
10 30	4 12	6 18	6 18	8 24	8 24	10 30
10 45	4 18	6 27	6 27	8 36	8 36	10 45
11 00	4 24	6 36	6 36	8 48	8 48	11 99
11 15	4 30	6 45	6 45	9 00	9 00	11 15
11 30	4 36	6 54	6 54	9 12	9 12	11 30
11 45	4 42	7 03	7 03	9 24	9 24	11 45
12 00	4 48	7 12	7 12	9 36	9 36	12 00

दिनमान	मध्याह्न		अपराह्न		सायह्न	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
12 15	4 54	7 21	7 21	9 48	9 48	12 15
12 30	5 00	7 30	7 30	10 00	10 00	12 30
12 45	5 06	7 39	7 39	10 12	10 12	12 45
13 00	5 12	7 48	7 48	10 24	10 24	13 00
13 15	5 18	7 57	7 57	10 36	10 36	13 15
13 30	5 24	8 06	8 06	10 48	10 48	13 30
13 45	5 30	8 15	8 15	11 00	11 00	13 45
14 00	5 36	8 24	8 24	11 12	11 12	14 00
14 15	5 42	8 33	8 33	11 24	11 24	14 15
14 30	5 48	8 42	8 42	11 36	11 36	14 30
15 00	6 00	9 00	9 00	12 00	12 00	15 00

सायह्नकाल का प्रारम्भ और समाप्ति जानने के लिए भी दी गई तालिकानुसार दिनमान देखकर उसके सामने लिखे अनुसार प्रारम्भ और समाप्ति (घं. मिं.) काल में अभीष्ट दिन को सूर्योदय जोड़ देने से सायंकाल का प्रा. व समाप्ति निकल आएगी।

–प्रदोषकाल ज्ञात करना–

स्थानीय सूर्यास्त के बाद मध्यमान से तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी), अर्थात् 2 घण्टे 24 मिनट तक प्रदोष काल होता है—

''त्रिमुहूर्त्त प्रदोषःस्यात् भानौऽस्तं गते सति।''

प्रदोषकाल में सूर्यास्त के बाद शिवपूजनार्चनादि तथा ब्राह्मण भोजन का विधान है। कुछ विद्वान् सूर्यास्त के बाद **2 घड़ी** (1 घण्टा, 12 मिनट) तक के काल को प्रदोष मानते हैं। सम्भवतः यह काल प्रदोष काल में शिवपूजन में ही विशेष प्रशस्त होने से ग्राह्य माना गया है। **रात्रिमान** में 15 मुहूर्त्तों में से प्रथम मुहूर्त्त का स्वामी भी भगवान् शिव ही हैं।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार सूर्यास्त के बाद 3 घड़ियाँ तक प्रदोष काल होती हैं। रात्रिमान के आधार पर प्रदोष काल का आरम्भ काल तो स्थानीय सूर्यास्त से ही माना जाता है। अतएव आगे प्रत्येक रात्रिमान के स्थानिक सूर्यास्त से प्रदोष काल शुरु होकर, उसकी दाईं तरफ लिखे हुए घण्टा मिनट जोड़ देने से आपके नगर के प्रदोष काल का समाप्ति काल प्राप्त हो जाएगा। (घं.मिं.) सूर्यास्त में से सूर्योदय घटा देने से **दिनमान** निकल आता है तथा कुल चौबीस घण्टों में से **दिनमान घटा देने से रात्रिमान** घण्टा मिनट में प्राप्त हो जाता है।

अपनी अभीष्ट रात्रिमान के साथ लिखे स्थानीय सूर्यास्त से प्रदोषकाल शुरु होगा। उस सूर्यास्त के साथ दाहिनी ओर प्रदोष समाप्ति के घण्टा मिनट जमा करने से प्रदोष काल का समाप्ति काल ज्ञात हो जाएगा।

निशीथकाल—**प्रदोषकाल** के समाप्तिकाल से **निशीथकाल** का प्रारम्भ माना जाता है, तथा उसमें 3 मुहूर्त्त (2 घण्टा, 24 मिनट) जमा कर देने से हमें निशीथ का समाप्ति काल प्राप्त हो जाएगा। **निशीथ** में 2 घ. 24 मिनट जोड़ देने से **महानिशीथ** काल निकल आएगा।

उदाहरण—जैसे 7 जुलाई को जालन्धर में प्रदोष का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल जानना है। इसी दिन जालन्धर में रात्रिमान 10 घं. 00 मिं. है। इस रात्रिमान के आगे नीचे के कोष्ठक में 'प्रदोपकाल' के नीचे 'प्रारम्भ' और 'समाप्ति' के घं.मिं. क्रमशः 'सूर्यास्त' और २ घं. ०० मिं. है। अतएव जालन्धर के इस दिन के सूर्यास्त 19 घं. 33 मिं. से प्रदोप काल का प्रारम्भ काल तथा इसमें समाप्तिकाल के २ घं. ०० मिं. जोड़ने से 21 घं. 33 मिं. प्रदोषकाल का समाप्तिकाल होगा। (भा. स्टैं. टा.)

इसी प्रकार इसी दिन के अरुणोदय काल जानने के लिए हमें 7 जुलाई को जालन्धर के सूर्यास्त में 'अरुणोदय' के नीचे प्रारम्भ और समाप्ति के घं.मिं. को, क्रमशः 8 घं. 40 मिं. और 10घं.00मिं. जमा करने होंगे। सूर्यास्त काल 19घं.33मिं. में इन्हें अलग-अलग जोड़ने पर हमें 28घं.13मिं. और 29घं.33मिं. मिले, जो इस दिन जालन्धर में अरुणोदय काल के क्रमशः प्रारम्भ और समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.) हैं।

इसी प्रकार किसी भी नगर का रात्रिमान निकालकर आप स्थानीय प्रदोष, निशीथ, महानिशीथ, अरुणोदय काल निकाल सकते हैं।

रात्रिमान	प्रदोषकाल		निर्शीथकाल		महानिषीथकाल		अरूणोदयकाल	
	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति	प्रारम्भ	समाप्ति
घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
9 30	सूर्यास्त	1 54	1 54	3 48	3 48	5 42	8 14	9 30
9 45	सूर्यास्त	1 57	1 57	3 54	3 54	5 51	8 27	9 45
10 00	सूर्यास्त	2 00	2 00	4 00	4 48	6 00	8 40	10 00
10 15	सूर्यास्त	2 03	2 03	4 06	4 06	6 09	8 53	10 15
10 30	सूर्यास्त	2 06	2 06	4 12	4 12	6 18	9 06	10 30
10 45	सूर्यास्त	2 09	2 09	4 18	4 18	6 27	9 19	10 45
11 00	सूर्यास्त	2 12	2 12	4 24	4 24	6 36	9 32	11 00
11 15	सूर्यास्त	2 15	2 15	4 30	4 30	6 45	9 45	11 15
11 30	सूर्यास्त	2 18	2 18	4 36	4 36	6 54	9 58	11 30
11 45	सूर्यास्त	2 21	2 21	4 42	4 42	7 03	10 11	11 45
12 00	सूर्यास्त	2 24	2 24	4 48	4 48	7 12	10 24	12 00
12 15	सूर्यास्त	2 27	2 27	4 54	4 54	7 21	10 37	12 15
12 30	सूर्यास्त	2 30	2 30	5 00	5 00	7 30	10 50	12 30
12 45	सूर्यास्त	2 33	2 33	5 06	5 06	7 39	11 03	12 45
13 00	सूर्यास्त	2 36	2 36	5 12	5 12	7 48	11 16	13 00
13 15	सूर्यास्त	2 39	2 39	5 18	5 18	7 57	11 29	13 15
13 30	सूर्यास्त	2 42	2 42	5 24	5 24	8 06	11 42	13 30
13 45	सूर्यास्त	2 45	2 45	5 30	5 30	8 15	11 55	13 45
14 00	सूर्यास्त	2 48	2 48	5 36	5 36	8 24	11 58	14 00
14 15	सूर्यास्त	2 51	2 51	5 42	5 42	8 33	12 11	14 15
14 30	सूर्यास्त	2 54	2 54	5 48	5 48	8 42	12 24	14 30
15 00	सूर्यास्त	3 00	3 00	6 00	6 00	9 00	12 50	15 00

सामान्य रूप में सूर्योदय से 4 से 5 घड़ी पूर्व **उषा:काल** होता है। इसे **ब्राह्म मुहूर्त्त** भी कहते हैं। इस मुहूर्त्त में श्री भगवान् का चिन्तन, पूजा, ध्यान पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

अरूणोदय—सूर्योदय से 4 घड़ी पूर्व **अरूणोदय** काल होता है, इसमें भी स्नान, जप, पुण्य श्लोकों व स्तोत्रों का पाठ आदि करने का विशेष फल होता है।

प्रदोषकाल में भगवान शिव पूजन व जप करने का विशेष विधान होता है। निशीथ एवं महानिशीथ (महानिशा) काल में ध्यान, समाधि श्री दुर्गालक्ष्मी, व काली की उपासना तथा यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि अनुष्ठान का विशेष प्रभावी होता है। सोमवासरी, भौमवारी एवं दीपावली की रात्रि को महानिशीथ काल में यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सम्बन्धी साधनाओं का विशेष महत्त्व होता है।

(2) जिसके जन्म समय में ५ ग्रह उच्च के पड़े हों, वह चक्रवर्ती राजा होता है। यदि ३ ग्रह उच्च के हों तो वही राजा होता है जो राजा का पुत्र हो परन्तु यदि राजवंश में उत्पन्न न हो तो मन्त्री के समान प्रतिष्ठित होता है।

(3) यदि लग्न में उच्च का बुध बैठा हो, वक्री शनि मकर राशि का हो तथा मीन राशि में बृहस्पति चन्द्रमा और शुक्र हों तो राजा होता है। अर्थात् राजा के तुल्य सम्पन्न होता है।

इत्यादि ११५ से भी अधिक राजयोगों का वर्णन ज्योतिष ग्रन्थों में मिलता है।

परिहार—कुछ स्थितियों में राज योग आदि उत्तम योगों का फल जातक को नहीं प्राप्त होता। यदि नवमांश आदि वर्ग कुण्डलियों में योगकारक ग्रहों की स्थिति अच्छी न हो, अथवा योगकर ग्रहों की दशा–अन्तर्दशा जन्म से पहले व्यतीत हो चुकी हो, या वृद्धावस्था में भोग्य हो, अथवा कुण्डली में विपरीत राजयोग पड़ा हो, अथवा भाग्येश व लग्नेश क्रूराक्रान्त या पाप दृष्ट हों, तो जातक राजयोग आदि शुभ योगों का फल नहीं भोग पाता।

इसके अतिरिक्त चन्द्रमा को केन्द्रगत मानकर अनफा, सुनफा आदि शुभ योग तथा केमद्रुम योग आदि अशुभ योगों के वर्णन मिलते हैं। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि सभी ग्रहों के साथ मिलकर सहस्रों योग बन जाते हैं। इनका फल जन्म लग्न एवं भाव व भावेश की स्थित्यनुसार बदल जाता है। राजहंस, नन्दा, अंशावतार, ... केदार, कलानिधि, लक्ष्मीयोग, भास्कर, विदेश यात्रा योग आदि शुभ एवं उत्तम सैंकड़ों शुभ योग पाए जाते हैं। साथ ही कर्तृरि, शूलयोग, पाश योग, कालसर्प, दरिद्र योग, शकट योग, महापातक योग आदि अशुभ अनेक मिलते हैं। विस्तार भय से सभी योगों का वर्णन नहीं दिया जा रहा है। इसके लिए हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित भाग–II** देखें।

ज्योतिष क्षेत्र में जातक के वैयक्तिक तौर पर ही ग्रहयोगों का प्रभाव नहीं पड़ता बल्कि धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी ग्रह–योगों का विशेष अधिक प्रभाव पड़ता देखा जाता है। जैसे कुम्भ महापर्वों पर सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति आदि ग्रहों का विशेष राशि–योग सम्वन्ध हो जाने पर प्रयाग राज, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन तीर्थों पर प्रत्येक द्वादश वर्षों के पश्चात् कुम्भ महापर्व तथा छः वर्षों के पश्चात् अर्धकुम्भ पर्वोत्सव समन्वित होते हैं। जिसमें सहस्रों नहीं, लाखों धर्म परायण श्रद्धालु लोग सम्मिलित होकर पौराणिक भारतीय जनमानस द्वारा ज्योतिष विशिष्ट, ग्रह–योगों के प्रति गहन आस्था अभिव्यक्त की जाती है। स्पष्ट है कि ग्रह–योगों के प्रति धारणा विभिन्न मानसिक विचार धाराओं वाले भारतीय लोगों को एकरूपता में पिरोने का काम भी करती है। भारतीय लोगों की ग्रह–योगों पर अगाध श्रद्धा है।

इसके अतिरिक्त भगवान् श्री राम, श्री कृष्ण, बुद्ध, श्रीपरशुराम, वामन आदि अवतारी महापुरुषों के पावन पर्व भी तिथि, नक्षत्र एवं ग्रह–योगों से सम्बन्धित ही होते हैं। जैसे–रामनवमी, कृष्णाष्टमी, अक्षयातीज (परशुराम जयंती), महाशिवरात्रि, दीपावली, बसन्त आदि पर्व विशेषतया उल्लेखनीय हैं। इन पर्वों पर व्रत, जप, दान आदि अनुष्ठान करने का विशेष महत्त्व है। निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि प्राचीन काल से ही ज्योतिष के विभिन्न ग्रह–योगों का भारतीय जनमानस पर [illegible] अत्यन्त अधिक प्रभाव रहा है।

वैवाहिक विलम्ब के कारण एवं निवारण

जन्म कुण्डली के सप्तम भाव से मुख्यतः विवाह का विचार किया जाता है। सप्तम भाव में शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति, सप्तम भाव के स्वामी (सप्तमेश) ग्रह की स्थिति, सप्तम भाव एवं सप्तमेश ग्रह पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टि, सप्तमाधिपति ग्रह यदि 6, 8, 12वें भाव में पड़े तो स्त्री या पुरुष का दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रहता है, अथवा वैचारिक मतभेद उत्पन्न होते रहते हैं। यदि सप्तमेश ग्रह पर गुरु या शुक्र ग्रह की शुभ दृष्टि या युति हो तो वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। इसके अतिरिक्त कुण्डली में सप्तम भाव के कारक ग्रह शुक्र की भी शुभाशुभ स्थिति पर विचार करना चाहिए। लड़की की कुण्डली में गुरु की शुभाशुभ स्थिति का अवश्य अवलोकन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त नवांश कुण्डली में सप्तमेश ग्रह की स्थिति, लड़की या लड़के की वर्तमान दशाऽन्तर्दशा व प्रत्यन्तर दशा का अनुशीलन, चलित कुण्डली तथा गोचरवश ग्रहों का लग्नेश, सप्तमेश एवं द्वितीयेश ग्रहों के साथ पारस्परिक सम्बन्धों का भी सूक्ष्मतः विचार करना चाहिए।

विवाह में बाधक एवं विलम्बकारक योग

यदि लड़के या लड़की की जन्मकुण्डली में निम्नलिखित योगों में से कोई पड़ा हो, तो उसके विवाह-सुख में बाधाएँ या विलम्ब होते हैं—

(१) सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, शनि, राहु आदि क्रूर (पाप) ग्रह हों, तो स्त्री या पति सुख में बाधा होती है। उदाहरणस्वरूप यदि सूर्य सप्तम में हो, तो विवाह में विलम्ब होता है। स्त्री या पति में वैमनस्य होता है—

विवाह विलम्बनम्। स्त्री द्वेषी, परदाररतः (भृगुसूत्र)

8 अग. 1982 ई.

साथ दी गई जन्म कुण्डली की जातिका का कर्क राशि का सूर्य सप्तम भाव में है। इसका तलाक विवाह से एक वर्ष के भीतर ही हो गया। इसी भान्ति सप्तम भाव में मंगल, शनि, राहु या केतु अथवा अकेला शुक्र (कारक होने से) हो तो भी विवाह सुख में कमी या विलम्ब करता है। यदि सप्तम या सप्तमेश ग्रह पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो या युति हो, तो विवाह सुख होता है।

(२) सप्तमेश शुभ ग्रह युक्त न होकर यदि ६, ८ या १२वें भाव में हो अथवा नीच या अस्तंगत हो, तो विवाह सुख में कमी करता है।

(३) षष्ठेश, अष्टमेश तथा द्वादशेश सप्तम में हो तथा ये ग्रह किसी शुभ (शुक्र, गुरु आदि) ग्रह से युक्त या दृष्ट न हों, अथवा सप्तमेश ग्रह छठे, आठवें या बारहवें भाव का भी स्वामी हो, तो भी स्त्री या पुरुष के विवाह सुख में कमी करता है।

(४) सप्तमेश बारहवें भाव में हो तथा लग्नेश और जन्म राशि का स्वामी सप्तम में हो, तो विवाह-सुख का अभाव होता है।

(५) धन स्थान में शुक्र हो और धनेश मंगल के साथ हो, तो लड़के या लड़की के २७ वर्ष तक विवाह सुख में बाधाएँ आती हैं।

(६) सप्तम स्थान की राशि के नवांश में लग्नेश हो तथा सप्तमेश १२वें स्थान में हो, तो २७ वर्ष तक विवाह में बाधा आती है।

उदाहरण कुं. नियम ८

(७) लग्न में पाप ग्रह हों, द्वितीय में सप्तमेश शत्रु राशिगत हो, एवं चन्द्र से शुक्र सातवें भावस्थ हो, तो विवाह अत्यन्त विलम्ब से अथवा विघ्नों के बाद होता है।

(८) चन्द्रमा से ७वें स्थान पर शुक्र हो तथा उस राशि का स्वामी ११वें स्थान पर हो, तो २७वें वर्ष की आयु में विवाह होता है।

(९) कई बार सप्तम भाव पर गुरू/शुक्रादि शुभ ग्रहों की दृष्टि होने पर भी अशुभ एवं अकारक ग्रहों की दशाऽन्तरदशा होने पर अथवा गोचरवश मंगल, शनि आदि पाप ग्रहों का सप्तम या सप्तमेश ग्रह पर पड़ने से भी विवाह आदि शुभ कार्य में विघ्न बाधाएँ होती हैं।

(१०) **मंगलीक दोष का प्रभाव**—यदि किसी लड़की या लड़के की कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, या द्वादश भावों में से किसी एक भाव में मंगल स्थित हो, तो मंगलीक दोष होता है। इस दोष के कारण भी विवाह सुख में विलम्ब या बाधाएँ होती हैं। आगे लिखे उपयुक्त उपाय करने से लाभ होगा।

(११) **पितृदोष**—अज्ञानतावश अपने पूर्वजों के कारण अथवा अज्ञानतावश स्वयं अपने पूर्वजों को जो संताप देते हैं, वे भी हमारे दुःखों का कारण बनते हैं।

इसका विस्तृत विवरण आप हमारी शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक **चामत्कारी उपायों** में पढ़ सकेंगे।

विवाह में विलम्बकारी बाधाओं के निवारण के लिए कुछ उपयोगी उपाय

✡ जन्म कुण्डली में सूर्य सप्तम भाव में या दशादि के कारण बाधाकारक हो, तो **सूर्य गायत्री** (**ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्**) अथवा सूर्य के **बीज मन्त्र** (**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**) मन्त्र का १६००० की संख्या में पाठ करना चाहिए। पाठ प्रतिदिन प्रातःकाल को गर्म कम्बल या कुशासन पर बैठकर रुद्राक्ष की माला द्वारा नियमित संख्या में करना चाहिए। पाठारम्भ शुक्लपक्ष के रविवार से आरम्भ करना चाहिए। पाठोपरान्त ताँबे के पात्र में शुद्ध जल, लाल पुष्प, चावल, थोड़ी शक्कर डालकर फिर मन्त्रपूर्वक (**ॐ घृणि सूर्याय नमः**) सूर्य देव को अर्घ्य देना चाहिए। पाठपूर्ण होने के

पश्चात् **दशमांश संख्या में हवन तथा** ब्राह्मण भोजन एवं ताम्रबर्तन में कनक साथ में लाल वस्त्र, घी, दलिया, नारियल, लाल फल, मिष्ठान्नादि का दान करना चाहिए। रविवार का व्रत रखना भी लाभदायक होता है।

✿ **चन्द्रमा**–कुण्डली में चन्द्रमा या शनि नीच या पापदृष्ट होकर विवाह में बाधक हो, तो शीघ्र विवाह के लिए कन्याओं को 16 सोमवार के व्रत रखना तथा प्रत्येक सोमवार को शिव मन्दिर में जाकर 'ॐ सोमेश्वराय नमः' जपते हुए भगवान् शिवलिङ्ग का गंगाजल मिश्रित शुद्ध जल एवं दूध द्वारा अभिषेक करना चाहिए।

उद्यापन के दिन (अन्तिम 17वें सोमवार) को शिव-पार्वती के वस्त्र, देवी पार्वती जी की शृंगार सामग्री (बिंदिया, चूड़ियाँ, दातुन, मेंहदी, पुष्प, हार, साबुत सुपारी आदि) और फल, मिष्ठान्न, धूप-दीप आदि वस्तुएँ) शिव-पार्वती के पूजन उपरान्त दोनों के उतरीय वस्त्रों एवं मौली द्वारा श्रद्धापूर्वक गठबन्धन स्वयं अथवा पण्डित जी द्वारा मन्त्रपूर्वक करवाएँ।

फिर वर कामना पूर्ति हेतु कन्या को शिव-गौरी की पूजा करके निम्न मन्त्र की **एक माला** का जप करना चाहिए।

ॐ नमः मनोऽभिलषितं वरं देहि। ह्रीं ॐ गौरां पार्वती देव्यै नमः॥

यदि जप करना किसी कारण सम्भव न हो, तो **श्रीपार्वती चालीसा** का पाठ करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त चन्द्रमा की शान्ति के लिए निम्न **मन्त्रों का जप** करने का प्रावधान बताया जाता है—

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (११०००)

अथवा **चन्द्र-गायत्री**—मन्त्र का जप भी विशेष लाभदायक होता है। जपोपरान्त चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमा को मन्त्रपूर्वक अर्घ्य देना चाहिए।

मन्त्र— ॐ सों सोमाय नमः

दान योग्य वस्तुएँ चावल, चीनी, सफेद चन्दन, शंख, कपूर, दूध-दही, मिश्री, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल, बर्फी आदि। चन्द्रकान्त मणि या श्वेत मोती की अंगूठी (चाँदी की) भी विधिपूर्वक धारण करवानी उपयुक्त होगी।

उपायों सम्बन्धी अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी शीघ्र प्रकाशनाधीन ''अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय'' नामक पुस्तक का अध्ययन करें।

सोमवार व्रत सम्बन्धी पुस्तक हमारे कार्यालय से छपी पुस्तक का प्रयोग करें। अन्य प्रचलित पुस्तकों में अधिकतर शास्त्र विरुद्ध विधि-विधान लिखा रहता है।

*मंगल का दोष निवारण हेतु–

किसी कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष प्रबल हो, अथवा मंगल दशाऽन्तर्दशा के कारण विवाह में बाधाएँ उत्पन्न हो रही हों, तो उसे निम्नलिखित श्री दुर्गास्वरूपिणी देवी 'मङ्गलचण्डिका' के मन्त्र का जप तथा **मंगलचण्डिका स्तोत्र** का पाठ किया जाता है।

मन्त्र—'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मङ्गलचण्डिके ऐं क्रूं फट् स्वाहा॥'

इक्कीस अक्षर का यह मन्त्र कल्पवृक्ष के समान कामनापूर्ण कराने वाला मन्त्र है। इस मन्त्र का जाप दस लाख की संख्या में करने का विधान लिखा है। यदि इतनी संख्या में न हो सके, तो सवा लाख की संख्या में करे। मन्त्र जप शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार (भौम, शुक्र, गुरू आदि ग्रहों के अस्त का विचार करते हुए) शुभ तिथि से आरम्भ करना चाहिए। भगवती दुर्गा शक्ति की मूर्ति के समक्ष नित्य ज्योति जगा कर पूजनपूर्वक करना चाहिए।

मंगलचण्डिका स्तोत्र हमारी शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक 'अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय' देखें। *इसके अतिरिक्त मंगल के बीज मन्त्र का 10 हज़ार की संख्या में जप करना शुभ होगा—

''ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः॥''

भौम गायत्री मन्त्र का भी 11000 की संख्या में विधिवत् जप करने से विशेष लाभ होता है। भौमगायत्री का मन्त्र इसी पंचांग दिवाकर के पृष्ठ 45 पर देखें।

पाठोपरान्त जातिका को भौमवारी अमावस के दिन तीर्थ स्थान (विशेषकर गंगा स्नान) करवा कर मंगल से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करवाना चाहिए।

दान योग्य वस्तुएँ—गेहूँ, चने एवं मसर की दाल, लाल बैल, मूंगा, ताम्रबर्तन, लाल वस्त्र, नारियल, गुड़ से बनी चपाती, लाल गाय को चारा, लाल वस्त्र, लाल फल इत्यादि।

* इसके अतिरिक्त मंगलवार के व्रत भी विधिपूर्वक रखने का विधान है।

बुध—किसी लड़के या लड़की की कुण्डली में **बुध सप्तमेश** होकर पापाक्रान्त हो, तो २१ बुधवार के व्रत रखकर बुधवार के दिन ही प्रातः भगवान् विष्णु की षोडशोपचार पूजा एवं पुरूष-सूक्त का पाठ करने से लाभ होगा।

यदि ऐसा न कर सकें तो शुक्ल पक्ष के बुधवार से आरम्भ करके बुध ग्रह के बीज मन्त्र (**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**) मन्त्र का 9 हजार की संख्या में जप करना, हरे वस्त्र धारण करना तथा हरी वस्तुओं का दान करना कल्याणकारी होगा। पन्ना नग धारण करना तथा श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करके कन्या पूजन करना शुभ होगा।

अरिष्टकर गुरु की शान्ति–

* किसी कुण्डली में **अशुभ गुरु** ग्रह के कारण **विवाह कार्य** में बाधाएँ उत्पन्न हो रही हों, तो शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ करके वीरवार के विधिवत् 16 व्रत रखने **गुरु गायत्री** मन्त्र अथवा बीज मन्त्र (जो कि इसी संवत् २०६५ की पंचांगदिवाकर में दिए गए हैं) का पाठ 19 हज़ार की संख्या में करना लाभप्रद होगा। इसके अतिरिक्त पीले चावल, बेसन के लड्डू, चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र, शहद, पीले फल (आम, केले आदि), धर्मग्रन्थ, सुवर्ण, पीला कम्बल, पीली मिठाई, शक्कर, गाय आदि का दान करना तथा वृद्ध ब्राह्मण को दक्षिणा/दान सहित, मिष्ठान्न सहित भोजन कराना लाभप्रद होगा।

इसके अतिरिक्त माता-पिता एवं असहाय वृद्धजनों एवं गुरुजनों की यथाशक्ति सेवा करना। कपिला गौओं की मीठी चापातियों से सेवा करना कल्याणकारी होगा।

गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए पीले रंग का पुखराज (सवा पाँच से सवा सात रत्ति) वज़न का सुवर्ण की अंगूठी में कन्या के बाएँ हाथ की तर्जनी में अथवा **लड़के के दाएँ हाथ** की तर्जनी अंगुली में शुक्ल पक्ष के वीरवार को गंगाजल में धोकर मन्त्रपूर्वक धारण करवाना चाहिए। यदि किसी कारणवश पुखराज न धारण करवा सकें तो उसके बदले पीला सुनहला तथा विधिवत् तैयार करवाया गया **गुरू-यन्त्र** भी धारण करवाया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त केला या पीपल के वृक्ष को वीरवार के दिन गंगाजल सहित सींचना और परिक्रमा करना लाभप्रद होगा।

शुक्र का दोष—यदि कुण्डली में शुक्र ग्रह के दोष के कारण विवाह में विलम्ब हो रहा हो, तो लड़की या लड़के को विधिवत् 16 शुक्रवार के व्रत रखकर कथा का पाठ तथा निम्न मन्त्र का 16 हजार की संख्या में जप करना चाहिए—**"ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।" शुक्रगायत्री** का पाठ भी विशेष प्रभावी देखा गया है। इसके अतिरिक्त **श्री दुर्गासप्तशती** के १६ पाठ तथा कन्या पूजन करना चाहिए। छोटी कन्याओं को चाँदी की चूड़ियाँ, बर्फी, वस्त्र तथा क्षीर सहित भोजन करवाना चाहिए।

शुक्रवार के व्रतों के अतिरिक्त हीरे (या श्वेत मोती) की अंगूठी, मोहिनी कवच, श्री सूक्त या लक्ष्मी सूक्त का पाठ तथा शुक्र से सम्बन्धित वस्तुओं का दान सुपात्र को देना चाहिए।

दान योग्य वस्तुएँ—चावल, चाँदी, दूध, दही, श्वेत बर्फी, श्वेत वस्त्र, श्वेत फल, इतर आदि सुगन्धित वस्तुएँ। स्वयं भी श्वेत रेशमी वस्तुओं एवं इतर आदि का प्रयोग करना चाहिए।

अरिष्ट शनि के उपाय—कुण्डली में शनि विवाह में बाधाकारक होने की स्थिति में विधिवत् शनिवार के (19 व्रत) शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारम्भ करके निम्न बीज मन्त्र 23 हज़ार की संख्या में जप करना चाहिए—

बीज मन्त्र— ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।

काला वस्त्र धारण करके, काले या नीले रंग के कम्बल पर पश्चिम दिशा की ओर मुख करके नियमित रूप से तीन या एक माला का जप शनि प्रतिमा के सामने शनि मन्दिर में करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को पिप्लेश्वर महादेव (शिव) की पूजा करके पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को 7 बार लपेटते समय शनि स्तोत्र या बीज मन्त्र का पाठ करते रहें। फिर एक बर्तन में गंगाजल मिश्रित शुद्ध जल, अक्षत, काले तिल, काले पुष्प, लौंग, शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुँह करके पीपल की जड़ में मन्त्रपूर्वक डाल दें (ऐसी पूजा प्रत्येक शनिवार को करनी चाहिए) व्रत के अन्तिम शनिवार कुल जप के दशमांश का हवन करके छाया पात्र (तेल सरसों द्वारा) करके शनि मन्दिर में चढ़ा दें। उद्यापन के बाद शनि स्तोत्र का पाठ तथा जूते, जुराबें, नीले रंग के वस्त्र, काला छाता, फल सहित उड़द, कुल्थ तथा उड़द के आटे को मिला कर बनाई गई एवं तेल से चुपड़ी चापातियाँ व उड़द, पकौड़ों सहित वृद्धजन को खाना खिलाकर उक्त वस्तुओं का दान दक्षिणा करें। बछड़ा सहित **काली गाय** का दान भी लाभप्रद माना गया है। प्रत्येक शनिवार को तिल सहित कच्ची लस्सी भगवान् शिवलिंग पर चढ़ाना भी लाभप्रद होगा। भैरव एवं महाकाली की उपासना भी शनि शान्ति में लाभदायक होती है। इसके अतिरिक्त कुष्ट या अन्धाश्रम में काली दाल से निर्मित खिचड़ी, चावल, घी, वस्त्र दान भी लाभप्रद माना जाता है।

राहु की शान्ति—जन्म कुण्डली या वर्ष कुण्डली में राहु विवाह में अरिष्टकर हो, तो कृष्ण पक्ष के प्रथम शनिवार से ही प्रारम्भ करके राहु के बीजमन्त्र का 18 हज़ार की संख्या में जप करना चाहिए।

बीज मन्त्र— ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

इसमें माँ दुर्गा माता की उपासना एवं श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करने का विधान है। सतनाजा का दान विशेष होता है। शेष दान आदि की वस्तुएँ लगभग शनि ग्रह के समान ही होती हैं।

केतु की शान्ति के लिए निम्नलिखित मन्त्र का 17 हज़ार की संख्या में विधिवत् जप करना लाभप्रद होता है।

मन्त्र— ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

इसमें भी सप्तधान्य (सतनाजा), बकरा, तिल, भूरे वस्त्र, कपिला गाय, भूरा कम्बल, अन्ध विद्यालय या कुष्टाश्रम में अनाज, दवाईयाँ, दूध, वस्त्रादि एवं फलादि का दान प्रशस्त होता है। गणेश उपासना करना, गणेश चौथ का व्रत रखना मनोवांछित फल प्रदायक होगा।

नोट—उपायों सम्बन्धी अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी शीघ्र प्रकाश्य पुस्तक **"अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी शास्त्रोक्त उपाय"** जनवरी 2008 ई० के प्रथम सप्ताह में 100/- रूपये अग्रिम भेजकर शेष वी॰पी॰ से मंगवा सकते हैं।

—जनरल बुक डिपो जालन्धर शहर।

-पितृदोष के ज्योतिषीय कारण एवं उपाय-

भारतीय धर्मशास्त्र के अनुसार गृहस्थाश्रम में पंचमहायज्ञ को द्विजातियों के लिए आवश्यक कर्त्तव्य माना गया है। इस विषय में मनुस्मृति में कहा गया है—

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्। होमो दैवो बालिभौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

पञ्चमहायज्ञ इस प्रकार से हैं—

(१) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ, (3) भूतयज्ञ, (4) पितृयज्ञ और (5) मनुष्य यज्ञ।

गृहस्थाश्रम केवल सुखोपभोग हेतु नहीं है, अपितु इस आश्रम के कुछ आवश्यक कर्त्तव्य भी हैं, जिनको जातक ने अपने ऋषियों, देवताओं, पितरों आदि के ऋण के रूप में हमारा दायित्व बनता है।

ब्रह्मयज्ञ—वेदों एवं वेदाङ्ग का अध्ययन, आचरण एवं अध्यापन करना ब्रह्मयज्ञ है। गायत्री मन्त्र का विनियोग सहित यथेष्ठ संख्या में जप करने से भी ब्रह्मयज्ञ की पूर्ति होती है।

(२) **देवयज्ञ** में भगवान् शिव, शक्ति, गणेश, सूर्य एवं विष्णु—इन प्रमुख पंचदेवों की यथाविधि पूजन की परम्परा है। पूजनोपरान्त प्रमुख देवी-देवताओं के निमित्त यज्ञ द्वारा पवित्र अग्नि में आहुतियाँ दी जाती हैं। 'देवता' सूक्ष्म शरीरी होने से हवन किए गए द्रव्यों की सुगन्ध से ही सन्तुष्ट होते हैं और यज्ञकर्ता को आयु, आरोग्य, धन-सन्तति एवं ऐश्वर्य भोग का आशीर्वाद देते हैं।

(३) **पितृ यज्ञ**—स्मृतिकारों ने पितृयज्ञ के तीन मुख्य तत्त्व बतलाए हैं—(१) तर्पण (२) पिण्डदान एवं श्राद्धकर्म तथा (३) दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन करवाना।

'पितर' गृहस्थ की वंश संतति एवं वंश परम्परा अविच्छिन्न रखते हैं। पुत्र सन्तान द्वारा दिए गए अन्न, जल, तर्पणादि श्राद्धीय द्रव्यों से पितर संतृप्त होकर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं, और उन्हें लम्बी आयु, सन्तति, धन, विद्या, सौभाग्य सुख आदि प्रदान करते हैं—

आयु प्रजां धनं विद्यां स्वर्ग मोक्षं सुखानि च।
प्रयच्छन्ति तथा राज्य प्रीता नृणां पितामहाः॥

दिवंगत पितरों में पिता वसु, पितामह रूद्र तथा प्रपितामह आदित्य रूप कहलाते हैं। '**ब्रह्म यज्ञ**' करने पर ऋषि-ऋण से मुक्ति होती है, **देवयज्ञ** करने से 'देवऋण' की संकल्प पूर्ति होती है और **पितृयज्ञ** करने से '**पितृऋण**' से मुक्ति मिलती है।

भूत यज्ञ में गाय, कुत्ता, कुष्ट, रूग्ण, कौवा, कीड़े, चीटिंयों आदि को खाद्य पदार्थ प्रदान किए जाते हैं। तथा

मनुष्य यज्ञ में अतिथियों का भोजन, जलादि से सत्कार किया जाता है।

ज्योतिष में पितृदोष का प्रभाव

ज्योतिष में द्वादश भाव एवं नवग्रहों के आधार पर पितृदोष का विचार किया जाता है।

नवग्रहों में बृहस्पति (गुरु) आकाश तत्त्व का, सूर्य व मंगल अग्नि तत्त्व का, शुक्र एवं चन्द्र जल का तत्त्व, शनि वायु तत्त्व का तथा राहु व केतु चुम्बकीय छाया ग्रह कहलाते हैं। **सम्बन्धों में सूर्य** आत्मा एवं पिता का, **चन्द्रमा** मन एवं माता का, **मंगल** छोटे भाई-बहन तथा पुत्र एवं सम्पत्ति, रुधिर, चोटादि का, **बुध** मातुल पक्ष, मामा, मौसी, चाची का, बहन की सन्तान या सबसे छोटा पुत्र या पुत्री एवं बन्धु सुख का, **गुरु** पति सुख, बड़ा भाई, पुत्र सन्तति, विद्या आदि का कारक होता है। **शुक्र** से पत्नी एवं स्त्री सुख, एवं धन-सम्पदा, **शनि** से सांसारिक सुख-दुःख, श्वास प्रक्रिया, हड्डियों एवं वायु जनित रोगों का, डीज़ल या पेट्रोल से चालित कार्य, तकनीकि कार्यों एवं कर्मचारी वर्ग से सम्बन्ध रखता है।

राहु से मशीनरी, चर्म उद्योग, शेयर्ज व लाटरी तथा पितृपक्ष के सम्बन्धों का विचार तथा **केतु** से शल्य चिकित्सा, मैडीसन्ज (Medicines) चिकित्सक, तम्बाकू व शराब एवं पड़ोसियों से सम्बन्धित विषयों का कारक होता है।

जब **पितृकारक** ग्रहों का योग राहु-केतु, शनि आदि दुःखकारक एवं पृथकताजन्य ग्रहों के साथ होता है, तो **पितृदोष** कहलाता है।

पितृकारक ग्रहों का **प्रभाव लग्न, पंचम, सप्तम, अष्टम एवं नवम भावों** पर विशेष तौर देखा गया है।

पितृदोष के प्रमुख योग

(1) जब लग्न भाव पर राहु एवं शनि आदि अशुभ ग्रह का प्रभाव हो, तो पितृदोष होता है। अथवा जब **लग्नेश** ग्रह नीच राशिस्थ होकर राहु एवं शनि के साथ योग अथवा दृष्टि सम्बन्ध रखता हो तो **पितृदोष** होता है।

(2) नवम भाव में गुरु व शुक्र का योग हो अथवा दशम भाव में चन्द्र पर शनि व केतु का प्रभाव हो तो जातक पितृदोष से पीड़ित होता है। **नवम** में राहु युक्त गुरु हो तो भाग्य उन्नति में बार-बार विघ्न/बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

(3) लग्न व पंचम भाव पर शनि, राहु, केतु या मंगल ग्रहों का प्रभाव हो, तो जातक को **पितृदोष** के कारण सन्तान हानि अथवा सुख में कमी होती है।

(4) सूर्य लग्न एवं सूर्य स्थित राशि स्वामी ग्रह तथा चन्द्रलग्न एवं चंद्र स्थित राशि स्वामी ग्रह, जब राहु, शनि व केतु ग्रहों में से किसी एक या दो ग्रहों के प्रभाव में हो तो **पितृदोष** होता है। इससे प्रभावित जातक/जातिका को मानसिक तनाव, डिप्रैशन, स्त्री सम्बन्धी परेशानी, सन्तान कष्ट एवं कलह-क्लेश रहते हैं। व्यवसाय में भी आर्थिक परेशानियाँ एवं अस्थिरताएँ होती हैं।

(5) व्ययेश लग्न भाव में, अष्टमेश पंचम में एवं दशमेश अष्टम में हो तो पितृदोष के कारण धन एवं सन्तान हानि होती है।

(6) जन्म कुण्डली में बृहस्पति नीच राशि में या नीच नवांश में राहु या शनि युक्त होकर पंचम भाव में हो तो उच्च विद्या या सन्तान सुख में विघ्नकारक होता है। यदि यह योग सप्तम में हो तो स्त्री या पति के साथ कलह-क्लेश होता है। अष्टम में धन हानि एवं दीर्घायु में कमी, नवम भाव में यह योग हो तो भाग्योन्नति में बाधक तथा दशम या एकादश में हो तो कार्य व्यवसाय व लाभ उन्नति में **पितृदोष** के कारण बाधाएँ होती हैं।

कुछ लोग **चन्द्र-बुध** का योग अथवा **सूर्य-शनि** का समसप्तक योग होने से भी पितृदोष मानते हैं।

इत्यादि बहुत से **पितृदोष** कारक योग बनते हैं जिनके कारण कार्य क्षेत्र एवं गृहस्थ जीवन में दुःख व कष्ट बने रहते हैं। **पितृदोष** सम्बन्धी और अधिक विवरण के लिए हमारी शीघ्र प्रकाशनाधीन पुस्तक "अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय" मंगवाएँ। पता पंचांग दिवाकर कार्यालय की पुस्तक सूची में देखें।

तदर्थ पाठकों से निवेदन है कि पितृदोष के **निवारण हेतु** अपने दिवंगत आत्मीयजनों का श्रद्धापूर्वक श्राद्धकर्म (पितृ पूजन, तर्पण, ब्राह्मण भोजन, वस्त्र, फल, अनाज, दक्षिणा सहित) अवश्य करना चाहिए।

श्राद्ध के दिनों में, अमावस को, तथा अन्य पर्व के दिनों में पितृ तर्पण, पीपल वृक्ष को (रविवार को छोड़कर) अन्य दिनों में दूध, जल, गंगाजल सहित, तिल, चावल, जौं एवं पुष्पादि सहित विधि एवं मन्त्रपूर्वक सींचना चाहिए।

भगवान् शिव के विचित्र प्रतीक चिन्ह और उनके रहस्य

पुराणादि शास्त्रों एवं देवालयों में भगवान् शिव का मुखमण्डल एवं बाह्य स्वरूप अत्यन्त सुन्दर, मनोहारी, प्रशान्त, दिव्य-तेजमय, पूर्णानन्दमय एवं कल्याणमय वर्णित किया गया है। उन्होंने अभयमुद्रा धारण की हुई है तथा उनके मुखारविन्द पर मन्द-मन्द मुस्कान की छटा छाई रहती है।

भगवान् शिव के सौम्य एवं प्रशान्त स्वरूप उनके विराट् व्यक्तित्व के साथ अनेक रहस्यपूर्ण एवं आश्चर्यमय पदार्थों का समावेश परिलक्षित होता है। जैसे रूद्राक्ष माला, सर्पो के आभूषण, त्रिनेत्र व एक हाथ में त्रिशूल, दूसरे हाथ में डमरू ग्रहण किए हैं। उनकी सवारी वृषभ है और शिव कमण्डलू व भिक्षा पात्रादि ग्रहण किए हैं। जटाओं में गंगा धारण किए हुए तथा कण्ठ में कालकूट का विष, ज़हरीले सांप एवं समस्त शरीर अंगों पर भस्म धारण किए रहते हैं। भगवान् शिव के अंग-संग रहने वाली देवी पार्वती, गण, देव एवं अन्य विभिन्न वस्तुएं किसी न किसी महान् सन्देश या उद्देश्य या प्रतीकात्मक रूप को लक्षित करते हैं। भगवान् शिव का चिन्मय आदि स्वरूप शिवलिङ्ग माना गया है, जबकि प्रकृति रूपा पार्वती शिवलिंग की पीठाधार है—

पठिमम्बामयं सर्व शिवलिङ्गं च चिन्मयम्॥

ब्रह्माण्ड की आकृति भी शिवलिंग रूप है। शिवलिंग पूजा में शिव और शक्ति दोनों की पूजा हो जाती है। शिवलिंग यदि शिवमय आत्मा है, तो उनके साथ छाया की तरह अवस्थित पार्वती, उस आत्मा की शक्ति है।

भगवान् शिवलिंग पर अविरल (अखण्ड रूप) टपकने वाली जलधारा जटाओं में स्थित पावन गङ्गा की प्रतीक है। मानों समस्त पावनता एवं पवित्रता की **प्रतीक गङ्गा सर्व** कल्याणस्वरूप भगवान शिव में समाहित हो गई हो। वह **ज्ञान-गङ्गा** है। यह आध्यात्मिक **पीयूष चेतना की** (अमृतधारा) की प्रतीक है, जो मनुष्य इसे श्रद्धापूर्वक ग्रहण करता है, वह तीनों तापों के कष्ट से निवृत्त हो जाता है। शिव का **वाहन नन्दी,** वैसे ही हमारी आत्मा का वाहन शरीर (काया) है। अत: शिव को आत्मा का एवं नन्दी को शरीर का प्रतीक समझा जा सकता है। जैसे नन्दी की दृष्टि **सदाशिव** की ओर ही है, वैसे ही हमारे शरीर का लक्ष्य आत्मा बने, यह संकेत समझना चाहिए। **नन्दी धर्म** का भी प्रतीक माना गया है (विस्तृत विवरण के लिए पुस्तक 'शिव मन्त्रावली' में पढ़ें)।

नन्दी के साथ ही कुछ देवालयों में कछुआ भी रखा जाता है जिसका मुख भी शिवमूर्ति की ओर होता है। नन्दी हमारे स्थूल शरीर का तथा कछुआ सूक्ष्म-शरीर अर्थात् मन का द्योतक है। हमारा मन कछुए जैसा कवचधारी और सुदृढ़ बनना चाहिए। हमारा मन भी **चक्षु-कान** आदि इन्द्रियों के सुख में न जाकर आत्माभिमुखी होना चाहिए। मनुष्य को अपनी इन्द्रियों को बाह्य सुखाकर्षण में न पड़कर संयम करते हुए अन्तर्मुखी प्रवृत्ति की ओर उन्मुख रहना चाहिए।

मन्दिर के द्वार पर श्रीगणेश और श्री हनुमान जी इन दोनों के आदर्श-यदि जीवन में चरितार्थ नहीं, तो शिव अर्थात् कल्याणमय आत्मा का साक्षात्कार सम्भव नहीं। गौरी पुत्र **गणेश जी** सूक्ष्म बुद्धि, विघ्नहर्त्ता एवं मातृ-पितृ भक्ति के प्रतीक हैं तथा श्रीहनुमान जी अपने स्वामी श्रीराम की अनन्य भक्ति और निष्काम सेवा के अद्वितीय स्वरूप थे, वे अहंकार शून्यता, ब्रह्मचर्य एवं विनम्रता की साक्षात् मूर्ति हैं।

भगवान् शिव द्वारा धारण किए जाने वाले कपाल, कमण्डलु आदि पदार्थ सन्तोषी, तपस्वी, **अपरिग्रही जीवन के प्रतीक हैं।** भस्म् चिता भस्मालेपन तथा गले में मुण्डमाला, ज्ञान-वैराग्य और संसार की नश्वरता, **अनित्यता एवं क्षणभंगुरता की** प्रतीक हैं। समस्त **विभूतियों के स्वामी** होते हुए भी स्वयं उनसे अप्रभावित रहते हैं।

त्रिदल-बिल्वपत्री, तीन-नेत्र, त्रिपुण्ड्र, त्रिशूल आदि सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण-इन तीनों की विषमताओं को सम करने का संकेत है। उनके तीन नेत्र सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि के प्रतीक हैं क्योंकि शिव सूर्य की भान्ति तम और अज्ञान का नाश करने वाले, चन्द्रमा की तरह हृदय को आनन्द प्रदान करने वाले और तीसरा नेत्र, ज्ञान-अग्नि की भान्ति (काम, क्रोधादि) कुविचारों को जलाकर शुद्ध स्वरूप देता है।

भगवान् शिव नीलकण्ठ कैसे कहलाए?

शंख, डमरू आदि भीतरी अनाहत-नाद के भी संकेत हैं, जिसे 'नाद ब्रह्म' कहते हैं। देवासुरों द्वारा **समुद्रमंथन** के समय वासुकि नाग के मुख से भयंकर विष की ज्वालाएं उठीं और समुद्र जल में मिश्रित होकर वे कालकूट विष के रूप में प्रकट हो गईं। उसकी **ज्वालाएं आकाश तक व्याप्त होकर तबाही** करने लगीं, जिससे भगवान् विष्णु सहित देवताओं के अनुरोध पर, **भगवान् शिव** ने योगशक्ति से विष को आकृष्ट कर लोक कल्याण के लिए अपने कण्ठ में धारण कर लिया। इसी से वे **'नीलकण्ठ'** कहलाए। उसी समय समुद्र से अमृत किरणों से युक्त चन्द्रमा भी प्रकट हुए, जिन्हें देवताओं के अनुरोध पर भगवान् शंकर ने उद्दीप्त (तीव्र) विष की शान्ति के लिए अपने ललाट पर धारण कर लिया और वोह **'चन्द्रशेखर'** कहलाए।

इस प्रकार भगवान् शिव के प्रतीक चिन्हों के तत्त्व रहस्यों का चिन्तन व चरितार्थ करके एवं भावना से ओत-प्रोत बने व्यक्तित्व से ही शिवमय अर्थात् कल्याणमय बना जा सकता है। आगामी पृष्ठों में भगवान् शिव द्वारा धारित कुछ सर्प, गंगा, भस्मादि प्रतीकात्मक रहस्यों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है। विस्तृत जानकारी के लिए 'शिव-मन्त्रावली' पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए।

भगवान् शिव का अर्धनारीश्वर स्वरूप

भगवान् सदाशिव का अर्धनारीश्वर रूप परम परात्पर भगवान् शिव और उनकी शक्ति शिवा-दोनों के अभिन्न एवं अनन्य सम्बन्ध का द्योतक है। सृष्टि के समय सदाशिव अपने ही अर्द्धाङ्ग से स्त्री रूपी आद्याशक्ति का सृजन (आविर्भाव) करके सृष्टि की उत्पत्ति का सूत्रपात किया—

द्विधा कृतात्मनो देहमर्द्धेन पुरूषोऽभवत्।
अर्द्धेन नारी तस्यां स विराजमसृजत्प्रभुः॥

इस सम्बन्ध में श्री शिवपुराण की वायवीय संहिता में एक कथा आती है कि जब ब्रह्मा जी द्वारा रचित मानसिक सृष्टि से प्रजा की वृद्धि न हो सकी, तब उन्हें बड़ा दुख हुआ। उसी समय आकाशवाणी हुई—"हे ब्रह्मन्! अब मैथुनी सृष्टि के लिए प्रयास करो।" उस काल तक स्त्री जाति की उत्पत्ति न होने के कारण, वे इस निर्णय में सफल नहीं हो सके। तब वह आद्या शक्ति की प्रेरणा से भगवान् शिव की कृपा प्राप्त करने के लिए तप करने लगे। उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान् महेश्वर ने उन्हें अर्धनारीश्वर के रूप में दर्शन दिए। ब्रह्मा जी ने शिव और शक्ति के संयुक्त किन्तु दिव्य स्वरूप को प्रणाम करके दोनों की स्तुति की। ब्रह्मा जी की स्तुति से प्रसन्न होकर महेश्वर ने अपने शरीर के अर्धभाग से एक देवी की उत्पत्ति की, जो परमाशक्ति उमा थी। ब्रह्मा जी ने उस देवी से प्रार्थना की कि 'मैंने अब तक प्रजाओं की मानसिक सृष्टि की परन्तु अनेक प्रयासों के बाद भी वे वृद्धि को नहीं प्राप्त हो सकीं। अतएव अब मैं स्त्री-पुरुष के पारस्परिक संयोजन से, अर्थात् मैथुनी सृष्टि द्वारा प्रजा की वृद्धि, सृष्टि का विस्तार करना चाहता हूँ। इससे पूर्व नारी-जाति की उत्पत्ति नहीं हुई और स्त्रीकुल की सृष्टि करना मेरी शक्ति से बाहर है। हे देवि, आप सम्पूर्ण शक्तियों की भण्डार हैं। इसलिए हे मातेश्वरी! आप मुझे नारी कुल की सृष्टि करने की शक्ति प्रदान करें और साथ ही प्रार्थना करता हूं कि चराचर सृष्टि की वृद्धि के लिए आप मेरे पुत्र दक्ष की पुत्री के रूप में जन्म लेने की कृपा करें।

ब्रह्मा की प्रार्थना सुनकर परमेश्वरी शिवा ने "तथाऽस्तु" कहा और ब्रह्मा को उन्होंने नारी जाति की सृष्टि करने की शक्ति प्रदान की। देवी शिवा ने अपनी भौंहों के मध्यभाग से अपने ही समान कान्ति वाली एक शक्ति प्रकट की। उसे देखकर शिव ने उस शक्ति को ब्रह्मा जी का मनोरथ पूर्ण करने की आज्ञा दी। शिवजी की आज्ञानुसार और ब्रह्मा की प्रार्थना करने पर वह शक्ति कालान्तर में दक्ष की पुत्री बनी। इस प्रकार ब्रह्मा जी को मैथुनी शक्ति प्रदान कर देवी शिवा पुनः महादेव जी के शरीर में प्रविष्ट हो गई। फिर महादेव भी अन्तर्धान हो गए। तभी से लोक में मैथुनी सृष्टि चल पड़ी।

इस प्रकार शिव और शक्ति एक दूसरे से अभिन्न और सृष्टि के आदि कारण हैं। जैसे चान्द में चान्दनी, पुष्प में गन्ध एवं सूर्य में तेज नित्य एवं स्वयं सिद्ध है, उसी भान्ति शिव में शक्ति स्वभावतः सिद्ध है। भगवान् का अर्द्धनारीश्वर रूप विश्व की मानवी प्रजा का कारणभूत होने से जगत् की सभी स्त्रियां शक्ति स्वरूपिणी शिवा की अंशभूता और सभी पुरुष शंकर जी के अंशभूत हैं—

शंकरः पुरुषाः सर्वे स्त्रियः सर्वा महेश्वरी॥ (शिवपुराण वा० संहिता)

अर्धनारीश्वर के स्वरूप का ध्यान मन्त्र

दाएं हाथ में पुष्पाक्षत व जल लेकर ध्यान करना चाहिए।

नीलप्रवाल रूचिरं विलसस्त्रिनेत्रम्, पाशारूणोत्पलकपालक्र शूल हस्तम्।
अर्द्धाम्बिकेशमनिशं प्रविभक्तभूषं, बालेन्दु, बद्धमुकुटम् प्रणमामिरूपम्।

विराट् पुरुष मनु एवं आदि नारी शतरूपा का प्रादुर्भाव

महादेव जी से ही सनातन पराशक्ति को पाकर प्रजापति ब्रह्मा मैथुनी सृष्टि करने की इच्छा लेकर स्वयं भी आधे शरीर से अद्भुत नारी और आधे शरीर से पुरुष हो गये। आधे शरीर से जो नारी उत्पन्न हुई थी, वह उनके शतरूपा ही प्रकट हुई थी। ब्रह्मा जी ने अपने आधे पुरुष शरीर से विराट् को उत्पन्न किया। वे विराट् पुरुष ही स्वायम्भुव मनु कहलाते हैं। देवी शतरूपा ने अत्यन्त दुष्कर तपस्या करके उद्दीप्त यशवाले मनु को ही पतिरूप में प्राप्त किया। लेखक की पुस्तक शिवमंत्रावली में 'अर्धनारीश्वर स्तोत्र' भी दिया गया है।

भगवान् का दिव्यास्त्र-त्रिशूल

भगवान् शिव-त्रिशूल, पिनाक, पाशुपतादि अस्त्र धारण करने वाले हैं। **त्रिशूल भी शक्ति का प्रतीक है।** त्रिशूल द्वारा भगवान् शिव आसुरी शक्तियों का विनाश करते हैं।

शूलत्रयं संवितरन् दुरात्मने त्रिशूलधारिन् नियमेन शोभसे॥ (शैव० सं०)

(त्रिशूल तीनों प्रकार के शूलों (तापों) आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक तापों का नाश करने वाला भी माना जाता है। शस्त्रादि से चोट लगना, सवारी आदि दुर्घटनाग्रस्त होना, ऊँचाई से गिरना, विषादि से मरना आधिभौतिक ताप हैं। बाढ़, अग्नि, भूकम्प, अनावृष्टि, अतिवर्षा आदि आधिदैविक ताप हैं। मन और **इन्द्रियों से** होने वाले काम, क्रोध, द्वेषादि सन्ताप आध्यात्मिक ताप कहलाते हैं। **त्रिशूल साक्षी है** कि भगवान् शिव की पूजार्चना से साधक के तीनों ताप नष्ट होकर उसकी मानसिक, शारीरिक एवं आत्मिक शक्तियों का विकास होता है तथा काम, क्रोध, लोभादि राक्षसी वृत्तियों का नाश होता है। जब साधक भगवान् शिव की भक्ति के प्रभावस्वरूप परमात्मभाव में स्थित होता है, तो तीनों ताप साधक को कुछ भी कष्ट नहीं दे सकते। वह निर्लेप भाव में चिदानन्द स्वरूप में स्थित रहता है। शिवपुराणानुसार त्रिशूल सत्व, रज और तम-तीनों गुणों का भी प्रतीक है। त्रिलोचन भगवान् शिव की भक्ति की कृपावश साधक प्रथमतः तीनों गुणों में समत्व योग प्राप्त करके फिर बोधत्व, वैराग्य एवं शान्त स्थिति को उपलब्ध होता है—

शान्त वैराग्य बौधाख्येऽस्मिभिरग्रखैस्तरस्विभिः।
त्रिगुण त्रिपुर हन्ति त्रिशूलेन त्रिलोचनः॥

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनःशिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मनःशिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुकसान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार** की गणना **रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)—"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम ॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृह राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, बृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या·	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, ह्दय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व—उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी—स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**—मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा—ऐसा कहना चाहिए। जैसे—यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयरों में मन्दा-तेजी का रुख—सं. 2008 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों को ग्रहण कर लेने वाले अथवा नियन्त्रण में रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव हर वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के नियन्त्रण में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाजार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विंशोत्तरी ग्रह दशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रहदशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रह दशा अकस्मात् धन हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी कि हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गत संवत् 2063, 2064 में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रह स्थिति एवं तेजी-मन्दी के चांसों से सोना, चांदी, तांबे, गुड़, कॉपर, सोयाबीन, तेल, लोहे, स्टील, चने के अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए।

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक उतार-चढ़ाव व तेजी-मन्दी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा/हाजिर बाजार का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 501 रु०, 2 महीने की फीस 951 रु० होगी। पूरी फीस अग्रिम भेजें। रिपोर्ट लिखित रूप में भेजी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या मनीआर्डर इस पते पर भेजें—

—पं० विवेक शर्मा C/o पं० देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-144008 (पंजाब) फोन-0181-2457959

☞ **जनवरी**—2 जन. को बुध उ.षा. में आने से गेहूँ, चावल, तथा अन्य अनाज के भावों में मन्दी का रुख शुरु होगा। 4 जन. को बुध मकर में आएगा। उस पर मंगल की दृष्टि भी है। सोना, चाँदी, तांबा, रूई के भावों में तेजी बनेगी। गेहूँ, दालों, चावल आदि अनाजों में मन्दी बनेगी। 5 जन. को गुरु मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आने से मूँग, मोठ, ज्वार, बाजरा, कुलथी, सोना, चाँदी में मन्दी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी। 6 जन. को गुरु उदय होने से घी, तिल, तेल, गुड़ आदि में मन्दी, रूई, चांदी, अनाज में तेजी बनेगी।

8 जन. को बुध पश्चिम में उदय तथा शुक्र ज्येष्ठा में आने से दोपहर बाद गेहूँ, चना, चावल कुछ तेज; सोना, चाँदी, सरसों, तिल, तेल, हींग, तांबा, जिस्त में मन्दी बनेगी। इसी दिन मंगलवारी अमावस भी आगे मुख्य जिन्सों में तेजीकारक होगी।

9 जन. बुधवार को चन्द्रदर्शन होने से चांदी, सोना, रूई, सूत, वस्त्र, सन, बारदाना, जूट आदि, गुड़, शक्कर, चीनी में मन्दी, अन्न और घी में तेजी बनेगी। 10 जन. को बुध श्रवण में आने से गुड़, चीनी, अलसी, सरसों, चना, रूई, चावल में तेजी बनेगी।

11 जन. को सूर्य उ.षा. में आने से लोहा, सीसा, सरसों, अलसी, घी, गुड़, चावल, कपास, खल, चना, मूँग, अरहर, उड़द, गेहूँ, लाल शक्कर, चमड़ा, पिपरामिंट के भावों में तेजी बनेगी।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की विशेष उच्च दृष्टि है। सोना, चाँदी, कॉपर, लाल मिर्च, शेयरों, घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, चीनी, रूई, सोयाबीन, हल्दी में अगले दिन विशेष तेजी बनेगी। गेहूँ, अनाज व बारदाना में मन्दी का रुख रहेगा।

19 जन. को बुध धनिष्ठा में, गुरु पू.षा में तथा शुक्र मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में गुरु के साथ मेल करेगा। गुरु-शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है। गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, मोंठ, बाजरा, अलसी, शेयरों, चाँदी, सोना, कॉपर आदि धातुओं में तेजी बनेगी। रूई, कपास, चावल में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी। (19 जन. से बाज़ार का रुख तेजी की ओर रहेगा।)

24 जन. को सूर्य श्रवण में आने से सोना, चांदी, अलसी, गेहूँ, रूई, सूत, सन, कपास, जौं, चावल, लौंग, शक्कर, सुपारी, पीतल, कॉपर, गुड़ में तेजी बनेगी। 26 जन. को वक्री शनि मघा(4) में आने से क्रूड आयल, सरसों, सोयाबीन, स्टील, लोहे, पैट्रोल तथा कुछ धातुओं के भावों में तेजी बनेगी।

28 जन. रात्रि को मकर राशिस्थ बुध वक्री होने से शेयरों, चीनी, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर, चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी। रूई में घटाबढ़ी के बीच पहले कुछ तेज़ी, बाद में मन्दी बने, गेहूँ, जौं, चने में मन्दी का रुख बनेगा।

30 जन. को शुक्र पू.षा. में आने तथा मंगल मार्गी होने से उड़द, मूँग, मोठ, तिल, तेल, सरसों, चाँदी, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी, गुड़, शक्कर, चीनी में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बने। स्थूल रूप में, वे पदार्थ मन्दें हो जाएंगे जो पहले तेज थे और जो पदार्थ पहले मन्दे होंगे वे तेज हो जाएँगे।

31 जन. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई में पहले तेज होकर अचानक मन्दी का झटका लगेगा, चाँदी में अधिक तेजी बनेगी, शेयरों, चने, तेल, कॉपर, सोने, जिस्त, चावल में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेज़ी बनेगी।

शेयर-रुख—[इस मास की 4, 5, 7, 9, 30 तारीखें मन्दी का रुख रहेगा तथा 8, 11, 14, 24, 29, 31 जन. को शेयरों, तेल, चाँदी, घी, गुड़, एवं चने में अच्छी तेजी का चांस है।]

फरवरी—फरवरी के प्रारम्भिक 1-2 दिन तो बाज़ार में तेज़ी का रुख रहेगा, परन्तु 3-4 तारीख को मन्दी का वातावरण रहेगा। 4 फर. को गुरु पू.षा. (2) में आने से भी सायंकाल तक सोना, चाँदी, कॉपर आदि धातु तथा रूई, कपास आदि में मन्दी बनेगी।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा तथा वक्री बुध श्रवण में आने से गुड़, चीनी, अलसी, चना, चावल, सोना, चांदी, मोती, कॉपर, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों व अलसी, रूई में तेजी बने। 8 फर., शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने से चाँदी, सोने, चावल, चना, उड़द, सरसों, तिल, तेल, चावल, राजमाह, मसूर तेज होंगे। 10 फर. को शुक्र उ.षा. में आने से गुड़, चीनी, सोना, चाँदी, कॉपर, अलसी, अरण्डी, सरसों में मन्दी, रूई, अनाज में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 12 फर. को शुक्र मकर राशि में सूर्य व बुध के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की विशेष उच्च दृष्टि पड़ रही है। इसी दिन वक्री बुध पूर्व से उदित होगा। गुड़, चीनी, घी, गेहूँ, चना, रूई, सोना, चांदी, तांबा, कपास, तिलहन में तेजी बनेगी। चांदी में घटाबढ़ी होगी।

13 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की सप्तम दृष्टि रहेगी। घी, तेल, सरसों, मूँगफली, कपास, राई, अलसी, सोना, चांदी, शेयरों, मैन्था-आयल, क्रूयड आयल में तेजी बनेगी। रूई, अरण्डी, गेहूँ आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी। 14 से 17 फर. तक बाज़ार में अच्छी घटाबढ़ी रहेगी। अच्छी मन्दी या तेजी नहीं बन पाएगी।

18 फर. को राहु धनि(3), केतु मघा(1) में आने से उड़द, चना, चावल, जौं, गेहूँ, मूँग, ज्वार में तेज़ी बनेगी। अलसी में विशेष तेजी का योग है। 19 फर. को सूर्य शतभिषा में तथा बुध मार्गी होने से सोना, कॉपर, चाँदी, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, सोंठ, हल्दी, गुड़, गेहूँ में तेजी बनेगी। रूई, शेयरों में पहले मन्दी, फिर अचानक तेजी का रुख बनेगा।

20 फर. की रात्रि के बाद शुक्र श्रवण में आने से ता. 21 की प्रातः से ही चाँदी, सोना, गुड़, शक्कर, चीनी, मूँग, मोठ, उड़द, अनाज, चावल में मन्दी, तिल, तेल, सोयाबीन में तेजी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 21 फर. को गुरु पू.षा.(3) में आने से रूई, चावल, चांदी, सोना, तांबा तथा सभी अनाजों में मन्दी का योग है। (22 से 26 फर. तक अच्छी तेजी-मन्दी के रियेक्शन आएंगे। मन्दी में खरीदकर थोड़ी-सी तेजी में ही बेचकर लाभ ले लेवें।)

27 फर. को राहु धनिष्ठा के तृतीय चरण में आने से गेहूँ, चावल, मूँग, उड़द, मसूर, राई, काली मिर्च, खल-बिनौलों में तेजी छाई रहेगी।

शेयर-रुख—[इस मास की 6, 10, 12, 13, 14, 20, 27, 28 फर. को सोना, चाँदी, ताँबा, शेयरों में अच्छी तेजी का चाँस है।]

मार्च—2 मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आने से सोना, चाँदी, रूई, कपास, चावल, मूँग, मोठ, ज्वार, बाजरा, उड़द में तेज़ी, गेहूँ में मन्दी बनेगी।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. तथा बुध धनिष्ठा में आने से सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा, पीतल में अच्छी तेजी, रूई, कपास, सूत, गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द, तिल, तेल, घी, चावल, गुड़, चीनी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

6 मार्च को मंगल आर्द्रा में आने से रूई, कपास, अलसी, एरण्डी, गुड़, चीनी, तिल, तेल, खल-बिनौले व सोने में तेजी होगी, परन्तु चाँदी में कुछ मन्दी का रुख रहेगा।

8 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आकर सूर्य एवं राहु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि है। रूई, गुड़, चीनी, गेहूँ, चना, जौं, मूँग, मैदा, ज्वार, बाजरा तथा अन्य सफेद वस्तुओं में अच्छी घटाबढ़ी के बीच पहले मन्दी फिर तेजी बनेगी। 9 मार्च को रविवार, मीनस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से सोना, चांदी, गुड़, तेल, शक्कर में तेजी, रूई, चीनी, घी, चावल में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

10 मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य, शुक्र एवं राहु के साथ मेल करेगा, इन पर शनि की दृष्टि चल रही है। इसी दिन शनि मघा(3) में भी आएगा। अलसी, रूई, **सोना, चाँदी, ताँबा, घी, तेल, गुड़, खल-बिनौले, सरसों, छोटी इलायची, दूध, दही, कपास, काली मिर्च, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी का झटका लगेगा।**

11 मार्च को गुरु पू.षा.(4) में आकर रूई, घी, कपास, चावल, चांदी में मन्दा करेगा। 13 मार्च को शुक्र शतभिषा में आने से सोना, चाँदी, गेहूँ, गुड़, चीनी, चावल, घी, सरसों, रूई में तेजी बनेगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आएगा (30 मुहूर्त्ति)। तिल, तेल, अलसी, खाण्ड, सरसों, गुड़, शक्कर व सोने में तेज़ी बने, सर्व प्रकार के अनाजों, गेहूँ, धान्य, चावल, मक्का आदि में पहले तेजी के बाद मन्दी का रुख बनेगा।

15 मार्च को बुध शतभिषा में आने से दोपहर बाद सोने, चांदी, तांबा में मन्दी, गेहूँ, अनाज, चावल में तेजी बनेगी।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आने से गुड़, सोना, चावल, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल, सोयाबीन में तेजी बनेगी। (17 से 23 मार्च तक तेजी प्रधान बाज़ार में तेजी-मन्दी के रियेक्शन बनते रहेंगे।)

24 मार्च को बुध एवं शुक्र दोनों पू.भा. में आने से सोना, चांदी, तांबा, लोहा तथा अनाज में मन्दी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। (26 मार्च से पुनः बाजार में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा।)

30 मार्च को बुध मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सोना, चांदी, तांबा, रूई, बिनौला, चावल, खल, चना, लाख, सोयाबीन में तेजी करेगा।

31 मार्च को सूर्य रेवती में आकर उपरोक्त जिन्सों के अलावा गेहूँ, मूँगफली, बारदाना तथा अन्य खाद्य पदार्थों में भी तेजी करेगा।

शेयर-रुख—[इस मास की 4, 6, 10, 14, 17, 30, 31 मार्च को शेयरों में विशेष तेजी बन सकती है। अतएव इन तारीखों में भाव तेज होते ही सौदे निपटा लें।]

☞ **अप्रैल**—1 अप्रैल को बुध उ.भा. नक्षत्र में तथा शुक्र मीन राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। अकेला शुक्र यद्यपि मन्दीकारक होता है परन्तु यहां सूर्य एवं बुध के योग के कारण मन्दी न बनकर हमें तेजी का योग लगता है। चाँदी, सोना, रूई, अलसी, तांबा, खाण्ड, गुड़, सरसों, तेल, चना में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

3 अप्रैल को बुध पूर्व में अस्त होने से रूई, शेयरों, कपास, चावल, घी में मन्दी बनेगी, चांदी में तेजी बनेगी। 4 अप्रैल को शुक्र उ.भा. में आने से चावल, मोती, चांदी, कपूर, नमक, चीनी, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी बनेगी। 5 अप्रैल को गुरु उ.षा.(1) में आने से गुड़, चीनी, चावल, रूई, शक्कर, चाँदी में तेजी बनेगी।

8 अप्रैल को मंगल पुनर्वसु तथा बुध रेवती में रूई, चाँदी, नमक, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, केसर, मजीठ, लाल चन्दन, गेहूँ, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं में तेजी बनेगी। घी, गुड़, खाण्ड में पहले मन्दी का रुख बन सकता है। (ता. 9 से 12 अप्रैल तक पहले तेजी के बाद मन्दी के भी रियेक्शन बनेंगे, तुरन्त सौदे सैटल कर लाभ लेते रहें।)

13 अप्रैल को सूर्य मेष राशि में आएगा। इस पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। सोना, चाँदी, कॉपर, रूई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर में पहले तेजी बनकर मन्दी का रुख बनेगा। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं में मन्दी बनेगी।

14 अप्रैल को शुक्र रेवती में आने से भी रुई, कपास, चाँदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मोती, सोना में मन्दी का रुख रहेगा।

15 अप्रैल को बुध मेष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि है। यहाँ अकेला बुध मन्दीकारक होता है। परन्तु सूर्य के योग से अचानक तेजी की लाईन बन सकती है। सावधानपूर्वक आगे बढ़ें। सोना, चाँदी, कॉपर, मूँगा, मोती, जवाहरात, गेहूँ, चना, जौं आदि अन्न, तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, चीनी में मन्दी बनेगी। (19 अप्रैल तक अच्छी घटाबढ़ी के बीच तेजी-मन्दी बनती रहेगी। लाईन साधारण तेजी की ही चलेगी।)

21 अप्रैल को बुध भरणी में आने से गेहूँ, चावल, चाँदी, कॉपर में घटाबढ़ी के बाद ही तेजी का रुख बनेगा।

25 अप्रैल को शुक्र मेष राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि है। जौं, चना, गेहूँ आदि अन्न तथा घी में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, कॉपर, जिंक में दोपहर बाद विशेष तेजी, गुड़, शक्कर, बारदाना, पाट आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ऊन, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी बनेगी।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी तथा बुध कृतिका में आएगा। रूई, अलसी में मन्दी बनेगी। सोना, चाँदी, ताँबा, मूँगा, जिंक, स्टील, चादर आदि तथा हेगूँ, जौं, चना, चावल, मोठ, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, हींग में घटाबढ़ी होकर बीच-बीच में तेजी के अच्छे रियेक्शन आएंगे।

28 अप्रैल को [illegible] राशि में आने से रूई, सरसों, एरण्डी, अलसी, तेल, सोयाबीन आदि में मन्दी, सोना, चांदी में अच्छी घटाबढ़ी रहे तथा गेहूँ, चावल, गुड़, शक्कर, तांबा में अच्छी तेजी बनेगी।

29 अप्रैल को बुध वृष राशि में आएगा। बुध पर शनि की दृष्टि रहेगी। बाज़ार में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। रूई में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी। सोना, चांदी, गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, तिल, तेल में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 30 अप्रैल को राहु मकर राशि में तथा केतु कर्क में मंगल के साथ मेल करेगा। गुड़, तांबा, कांसा, सोयाबीन में अच्छी तेजी बनेगी। जौं, चना, गेहूँ, रूई में पहले मन्दी बनकर तेजी बनेगी।

शेयर-रुख—[**इस मास की 1, 2, 8, 15, 25, 27, 28, 29, 30 अप्रैल को शेयरों के वायदा बाज़ार में अच्छी तेजी का चाँस है। अवश्य लाभ उठाएँ।**]

☞ **मई**—3 मई को शनि मार्गी तथा शुक्र पूर्व में अस्त होने से रूई, चाँदी, शेयर-बाज़ार में मन्दी का रुख बनेगा। तिल, तेल, सरसों, हींग, काली एवं लाल मिर्च, क्रूड-आयल, सोयाबीन में तेज़ी बनेगी।

4 मई को मंगल पुष्य में आने से दोपहर बाद रूई, चांदी, घी, चावल में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बने, सोने में अच्छी तेजी बनेगी। 5 मई को बुध रोहिणी में आने से कपास, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। राई, सन, ऊनी व रेशमी धागों, रूई में मन्दी का रुख रहेगा। चांदी में भी बीच-बीच मन्दी के झटके लगेंगे।

6 मई, मंगलवार को कृतिका नक्षत्र कालीन चन्द्रदर्शन होने तथा शुक्र भरणी में आने से वायदा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहे। सोना, चांदी, रूई, लाल वस्तुओं, उड़द में पहले मन्दी, फिर तेजी बने। गुड़, सरसों, मूँगफली तेज रहे। चना, मूँग, मोठ, गेहूँ में घटाबढ़ी चलेगी।

9 मई को गुरु वक्री होने से शेयर्ज़, रूई, चावल, गुड़, तिल, तेल, नमक, सोयाबीन में मन्दी, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। 11 मई को सूर्य कृतिका में आने से घी, रूई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बुध के साथ योग करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। सरसों, सोना, चांदी, कॉपर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रूई, सूत, बादाम, तिल, तेल, नारियल में अच्छी तेजी का चाँस बनेगा। जौं, चना, गेहूँ, अरहर, चावल में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी बनेगी।

16 मई को बुध मृगशिर में आने से रूई में तेजी, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी तथा गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी बनेगी। 17 मई को शुक्र कृतिका में आने से जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दी बनेगी।

20 मई को शुक्र वृष राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। सोना, चांदी, कॉपर, शेयर्ज़, चावल, रूई, घी में घटाबढ़ी चलने के बाद तेजी का रुख बनेगा।

24 मई को सूर्य रोहिणी में आने से तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, लाल मिर्च, सुपारी में तेजी बनेगी। चांदी में मन्दी बनेगी।

26 मई को बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड शक्कर, सोने, चांदी, कॉपर, शेयरों में तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चने में मन्दी का रुख रहेगा। 28 मई को शुक्र रोहिणी में आने से चांदी, सोना आदि धातु तथा अलसी, एरण्डी, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी बनेगी। 29 मई को मंगल आश्लेषा में आने से चांदी, रूई, घी, चावल में मन्दी बनेगी।

30 मई को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चांदी, घी में अच्छी तेजी, रूई, शेयर-बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद तेजी, अलसी, चना, बिनौला, सोना, कॉपर भी तेज हों।

शेयर-रुख—[इस मास की 3, 4, 11, 12, 14, 15, 20, 21, 26, 27, 30 को शेयर बाज़ार में अच्छी तेजी का चांस है।]

☞ **जून**—मासारम्भ में कुछ तेजी के बाद ता. 3 से मन्दी का रुख शुरु होगा। 5 जून, गुरूवार को मिथुन राशिस्थ कालीन चन्द्रदर्शन होने से रूई, सूत तथा सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, घी तेज होंगे। सोना, चांदी, चीनी, गुड़ में मन्दी बनेगी।

7 जून को सूर्य मृगशिर में तथा वक्री बुध रोहिणी में आएगा। सोना, चाँदी, कॉपर, जिस्त, मूँग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, सोयाबीन, चावल में तेजी बनेगी। रूई, घी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

8 जून को शुक्र मृगशिर में आने से गेहूँ, चना, ज्वार में मन्दी, गुड़, चीनी, शक्कर, चावल, चाँदी में तेजी बनेगी।

12 जून को वक्री गुरु पू.षा.(4) में आने से रूई, घी, चावल, तथा अन्य अनाजों में मन्दी बनेगी। 13 जून को शुक्र मिथुन राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तक योग बनाएगा। रूई, कपास, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार, घी, गुड़, अलसी में अच्छी मन्दी, गेहूँ, जौं, चना, चावल, चांदी में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

14 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। साधारण तेजी ही बन पाएगी। सूत, बारदाना, कपास, रूई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, चीनी, शक्कर, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चावल, चना आदि अनाज में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी में अच्छी तेजी का रुख बनेगा।

16 जून को वक्री बुध पूर्व से उदय होने से गेहूँ, चना, चावल, तिलहन, घी, खाद्य, तेल, रूई, कपास, खल-बिनौला, चाँदी तथा शेयरों में तेजी बने। 18 जून को शुक्र आर्द्रा में आने से गेहूँ, चावल, चाँदी, चना आदि में अचानक मन्दी का रुख बनेगा। 19 जून को बुध मार्गी होने से सोना, गेहूँ, जौं, चना, अनाज, चाँदी, कॉपर में तेजी बनेगी। रूई, शक्कर, अलसी, सरसों में मन्दी बनेगी।

21 जून को मंगल सिंह राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। मं-श. पर गुरु की दृष्टि रहेगी। इसी दिन सूर्य आर्द्रा में आएगा। सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, स्टील आदि एंगल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, गेहूँ, अलसी, रूई, लाल मिर्च तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी बनेगी। खल, अलसी, रूई, गेहूँ, चावल, चना, जौं में भी साधारण तेजी बनेगी।

24 जून को शनि मघा(4) में आने से क्रूड आयल, तेल, सरसों में तेजी बनेगी।

29 जून को शुक्र पुनर्वसु में आने से चावल, गेहूँ, बिनौला तेज, सोना, चाँदी, रूई, कपास, सूत में मन्दी बने।

30 जून को बुध मृगशिर में आने से रूई में तेजी चाँदी में घटाबढ़ी होकर मन्दी, गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में भी मन्दी बनेगी।

शेयर-रुख—[इस मास की 7, 8, 13, 14, 15, 16, 21, 22, 23 जून को अच्छी तेज़ी का चाँस है।]

☞ **जुलाई**—2 जुला. को राहु धनि(1)तथा केतु आश्ले.(3) में आने से चांदी, सोना, कॉपर, चने, शेयरों में मन्दी बनेगी।

5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आएगा। रूई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्ज़ी, हरड़, सुपारी, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गल आदि करियाना पदार्थ तेज होंगे।

6 जुला. को बुध मिथुन राशि में सूर्य एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। रूई, सोना, चांदी, सरसों, तारामीरा में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी। 7 जुला. को शुक्र कर्क राशि में आने से रूई में पहले अच्छी मन्दी, फिर तेजी बने। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी तथा चांदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में मन्दी बनेगी।

10 जुला. को वक्री गुरु पू.षा.(3) में तथा शुक्र पुष्य में आने से रूई, सूत, सन, रेशम, ऊन, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी।

11 जुला. को भी बुध आर्द्रा में आने तथा शुक्र पश्चिम में उदय होने से गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ, चाँदी में मन्दी बनेगी।

13 जुला. को मंगल पू.फा. में आने से तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, सोना, चांदी में अगले दिन तेजी बनेगी।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। चांदी, सोना, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, सोना, चांदी, कॉपर में तेजी बनेगी। गेहूँ, चना, जौं, मटर, अरहर, उड़द, मूँग, चावल में मन्दी बनेगी।

18 जुला. को बुध पुनर्वसु में आने से चाँदी, रुई, घी, चना में मन्दी, गेहूँ, चावल आदि अनाज में तेजी बनेगी।

19 जुला. को सूर्य पुष्य में आने से तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चाँदी, स्टील में तेजी बने। रूई में पहले तेजी फिर मन्दी बनेगी। 20 जुला. को शुक्र आश्लेषा में आने से रूई में कुछ मन्दी, चावल, चांदी में भी मन्दी बनेगी।

23 जुला. को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। चांदी, सोना,

गुड़, सरसों, चावल, मूँगफली, घी, चना में झटके के साथ तेजी बने। शीघ्र ही मन्दी का रुख भी बन सकता है। अतएव तेजी बनते ही मुनाफा लेकर निकल जाएँ। रूई में मन्दी बनेगी।

25 जुला. को बुध पुष्य में आने से सोना, चाँदी, रूई, चावल, घी में मन्दी बनेगी।

28 जुला. को शनि पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, चना, उड़द, मूँग, सरसों, तिल में तेजी और रूई में घटाबढ़ी रहेगी। 31 जुला. को बुध आश्लेषा में आने से तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली, चावल, चाँदी में तेजी बनेगी।

शेयर-रुख—[**इस मास की 5, 6, 7, 13, 14, 16, 17, 18, 19, 23, 28, 29, 30, 31 को तेजी का रुख रहेगा।**]

☞ **अगस्त**—मासारम्भ ता. 1 को शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर मंगल एवं शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुएँ, घी, क्रूड-आयल, जिस्त, कांसा, लोहा, स्टील तथा शेयरों में तेजी का रुख शुरू होगा।

3 अग., रविवार को सिंह राशिस्थ कालीन चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, गुड़, तेल में तेज़ी तथा रूई में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी। 4 अग. को मंगल उ.फा. में आने से तिल, तेल, सरसों, मूँगफली, घी, गुड़, चीनी, नमक, सोना में तेजी बनेगी।

7 अग. को बुध सिंह राशि में आकर मं., शु. एवं शनि के साथ मेल करेगा। ध्यान रहे, इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। सोना, चांदी, तांबा, सूत, रूई, चना, गेहूँ में तेजी बनेगी, कपूर, गुड़, चीनी, शक्कर में मन्दी बनेगी। 8 अग. को वक्री गुरु पू.षा.(2) में आने से सोना, चाँदी, घी, चना, चावल, घी, कपास, हल्दी, रूई में मन्दी बनेगी।

9 अग. को मंगल कन्या राशि में आने से रूई, चांदी, सोना, ऊनी, सूती व लाल रंग के सभी प्रकार के वस्त्र, अलसी, सरसों, गेहूँ, गुड़, लाल-मिर्च आदि लाल रंग की जिन्सों में तेजी का वातावरण बनेगा।

11 अग. को बुध पश्चिम में उदय होने से गेहूँ, चने, खल-बिनौले, गुड़, सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, लोहादि धातुओं में तेजी बने। 12 अग. को शुक्र पू.फा. में आने से गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना में कुछ मन्दी बनेगी।

14 अग. को बुध पू.फा. में आने से गुड़, चीनी, गेहूँ आदि अनाज मन्दे होंगे। 16 अग. को सूर्य सिंह राशि में आकर शनि, बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी है। सोना, चाँदी, रूई, गुड़, खण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तथा लाल रंग की वस्तुएं तेज होंगी। शेयरों में घटाबढ़ी के बाद मन्दा बनेगा। 17 अग. को ही शनि अस्त होने से रूई, शेयरों, सोने में मन्दी बनेगी।

22 अग. को बुध उ.फा. में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेज़ी, रूई में घटाबढ़ी होकर मन्दी, चाँदी, घी में भी मन्दी बनेगी। 24 अग. को बुध कन्या राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। इसी दिन शनि पू.फा.(2) में आएगा। रूई, चांदी में पहले मन्दी बनकर तेजी का रुख बनेगा, गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, घी, शेयरों में तेजी बनेगी।

25 अग. को शुक्र भी कन्या राशि में बुध एवं मं. के साथ मेल करेगा। मंगल भी हस्त में आएगा। चांदी, चावल, साफ्टवेयर शेयरों, बैंकिंग सेक्टर, गेहूँ आदि सभी अनाज, गुड़, घी, चीनी, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में भी तेजी बनेगी।

30 अग. को सूर्य पू.फा. में आने से जीरा, सोना, गुड़, चीनी, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, रूई, सूत, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

शेयर-रुख—[**इस मास की 7, 9, 10, 11, 16, 21, 24, 25, 26, 27, 30, एवं 31 को तेजी की लाईन चलेगी।**]

☞ **सितम्बर**—मासारम्भ ता. 1 सोमवार को कन्या राशिस्थ कालीन चन्द्रदर्शन होने तथा इसी दिन बुध हस्त में आने से गेहूँ, चांदी, चावल, घी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी तथा रूई, सोना, गुड़, कॉपर, पेंटस (रंग) के भावों में तेजी बनेगी।

2 सितं. को शुक्र हस्त में आने तथा राहु श्रव.(4) में आने से रूई, चांदी, चावल, घी में मन्दी बनेगी। गेहूँ के संग्रह से आगे लाभ होगा। सोना, चांदी, कॉपर तेज होंगे। चीनी, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। ता. 7 तक तेज़ी-मन्दी के झटके लगते रहेंगे।

8 सितं. को गुरु मार्गी होने से रूई, चांदी में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बने, चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू, घी, तिल, तेल तथा अनाजों में तेजी बनेगी।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. तथा बुध एवं शुक्र दोनों चित्रा नक्षत्र में आएंगे। रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, गुड़, शेयरों में तेजी बनेगी। 15 सितं. को मंगल चित्रा में आने से गेहूँ, चावल, चना, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल में तेजी बनेगी।

16 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर मं., बु. एवं शु. के साथ मेल करेगा। रूई, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल वस्तुएं, सोना, तांबा, जिस्त, चना में तेजी बनेगी। चांदी, शेयरों में पहले तेजी बनकर मन्दी का रुख बनेगा।

19 सितं. को शुक्र तुला राशि में आकर शनि द्वारा दृष्टि रहेगा। रूई, चांदी, सोना, गुड़, चीनी, तांबा, क्रूडआयल, घी, लोहा, स्टील में अच्छी तेजी बनेगी। 20 सितं. को शनि पू.फा.(3) में आने से रूई, स्टील, लोहे, सरसों, सोयाबीन, तिल, तेलों में अच्छी तेज़ी बनेगी। 21 सितं. को शनि उदय होने से रूई, शेयरों, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बने। लोहा, जिस्त, सीसा, चावल, गुड़, चीनी में तेजी बनेगी।

24 सितं. को बुध वक्री तथा शुक्र स्वाती में आने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, शेयरों, चाँदी, रूई में तेजी बनेगी, गेहूँ, जौं, चना आदि अनाज में मन्दी बनेगी।

25 सितं. को मंगल तुला राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। रूई, कपास, सूत, सन, पाट, बारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, उड़द, मूँग, चना आदि अनाजों में तेजी बनेगी। 26 सितं. को सूर्य हस्त में आने से गेहूँ, जौं, गुड़, चीनी, कपास, रूई, हरड़, हींग, हल्दी, ग्वार, सोना, तांबा में तेजी बनेगी।

30 सितं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चांदी, घी में अच्छी तेजी, रूई, शेयर-बाज़ार में घटाबढ़ी के बाद तेजी, अलसी, चने, बिनौले भी तेज हों।

शेयर-रुख—[इस मास की 13, 15, 16, 17, 19, 20, 24, 25, 26, 30 तारीखें तेजीकारक हैं।]

अक्तूबर—1 अक्तू., बुधवार को तुला राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी, रूई, सूत, बारदाना, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी, गेहूँ तथा घी में तेजी बनेगी।

3 अक्तू. को वक्री बुध हस्त में आने से गेहूँ, चना, बाजरा, चावल आदि अनाजों में मन्दी बनेगी। 5 अक्तू. को मंगल स्वाती तथा शुक्र विशाखा में आने से रूई, ऊनी वस्त्र, गेहूँ, तिल, तेल, सोयाबीन, हल्दी, काली-मिर्च में तेजी, चाँदी में घटाबढ़ी, सोने में मन्दी बनेगी।

8 अक्तू. को मंगल अस्त होने तथा गुरु पू.षा. (3) में आने से रूई में मन्दी, गेहूँ, अलसी, चना, गुड़, ताँबा, जिस्त, निक्कल, लोहा, स्टील, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

10 अक्तू. को सूर्य चित्रा में आने से रूई, सूत, सोना, चाँदी, ताँबा, गुड़, चीनी, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, सन, केसर, कपूर, लाल एवं काली मिर्च में तेजी बने।

13 अक्तू. को शुक्र वृश्चिक राशि में आएगा। इसी दिन वक्री बुध पूर्व से उदय होगा। रूई, **साफ्टवेयर एवं बैंकिंग सेक्टर के शेयरों, चांदी में पहले मन्दी फिर तेजी बने।** गुड़, कपास, रूई, चावल, चना, तिलहन, घी, खाद्य-तेल आदि में भी घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बनेगी।

15 अक्तू. को बुध मार्गी होने से रूई, चांदी में घटाबढ़ी होकर तेजी बने, गेहूँ, जौं, चना, अनाज में तेजी बने। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन में मन्दी बनेगी।

16 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। शनि की दृष्टि इन पर रहेगी। इसी दिन शुक्र अनुराधा में आएगा। **रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताँबा, लाल-मिर्च, मजीठ, सुपारी में तेजी बनेगी।**

19 अक्तू. को शनि पू.फा.(4) में आने से क्रूड आयल, सरसों, सोयाबीन, तेल, काली-मिर्च में तेजी बनेगी। 23 अक्तू. को सूर्य स्वाती में आने से रूई, सूत, सन, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल, तांबा में अच्छी तेजी बनेगी।

24 अक्तू. को मंगल विशाखा में आने से बाज़ार में तेजी का रुख रहेगा। रूई, कपास, गेहूँ, घी, शेयरों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोयाबीन में तेजी बनेगी। 27 अक्तू. को बुध चित्रा तथा शुक्र ज्येष्ठा में आने से रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने, सोना, तांबा, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दी बनेगी।

28 अक्तू. को भौमवासरी अमावस भी तेजीकारक रहेगी। 30 अक्तू. गुरुवार को विशाखा नक्षत्र कालीन चन्द्रदर्शन होने से गेहूँ, बाजरा, मूँग, ज्वार, उड़द, गुड़, चीनी, सरसों, अलसी, घी तेज होंगे।

31 अक्तू. को बुध तुला राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि है। रूई, गुड़, चीनी, सोना, ताँबा, शेयरों में विशेष तेजी ; चाँदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में घटाबढ़ी के बाद साधारण तेजी बनेगी।

शेयर-रुख—[इस मास की 5, 8, 10, 13, 15, 16, 19, 24, 29, 31 तारीखें विशेष तेजीकारक रहेंगी।]

नवम्बर—3 नवं. को बुध पूर्व में अस्त होने से अनाज, चना, घी, चावल में मन्दी, रूई, चांदी, सोना में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख रहेगा। (4)नवं. को गुरु पू.षा.(4) तथा राहु श्रव.(3) में आने से रूई में मन्दी, अलसी, लोहा, स्टील, सोने में तेजी बनेगी।

5 नवं. को सूर्य विशाखा तथा बुध स्वाती में आने से जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, चीनी, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, सोना, ताँबा में तेजी बने, अलसी, चाँदी, घी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

7 नवं. को मंगल बृश्चिक तथा शुक्र धनु राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। गुड़, सोना, चांदी, तांबा, कांसा, जिस्त आदि धातु जौं, चना, साफ्टवेयर शेयरों में तेजी बनेगी। रूई, घी, कपास, चावल में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी।

12 नवं. को मंगल अनुराधा में आने से रूई, कपास, गेहूँ, लाल-मिर्च, लाल-चन्दन, गुड़, हल्दी, सोना, तांबा, राजमां, सोयाबीन में तेजी बनेगी। 13 नवं. को बुध विशाखा में आने से चना, चावल, गेहूँ, उड़द में तेजी, रूई में मन्दी बनेगी।

15 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। वायदा बाज़ार में तेजी का वातावरण बनेगा। रुई, तांबा, चांदी, सोना, गुड़, सोयाबीन, उड़द, चना में अच्छी तेजी का रुख बनेगा।

18 नवं. को शुक्र पू.षा. में आने से मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, नमक, रूई में मन्दी बनेगी।

19 नवं. को बुध बृश्चिक राशि में आकर सूर्य एवं मंगल के साथ मेल करेगा। इसी दिन सूर्य अनुराधा में भी आएगा। घी, तेल, सरसों, रूई, चाँदी, सोना, तांबा, सोयाबीन, मिर्च, चना, ऊन में तेजी बनेगी। 21 नवं. को बुध अनुराधा में आने से रुई, सोना, चाँदी, ताँवा में मामूली मन्दी बनेगी।

23 नवं. को गुरु उ.षा. में आने से गुड़, चीनी, सोना, हल्दी, ग्वार, चना में अच्छी तेजी बनेगी। 26 नवं. को शनि उ.फा. में आने से रूई, घी, शक्कर, कपास, सरसों, क्रूड-आयल, लोहे में तेजी बनेगी। 29 नवं. शनिवार को धनु राशिस्थ कालीन चन्द्रदर्शन होने तथा बुध ज्येष्ठा एवं शुक्र उ.षा. में आने से घी, गुड़, चीनी, चावल, रूई, सोना, चांदी में अच्छी तेजी बनेगी।

शेयर-रुख—[इस मास 5, 7, 12, 15, 19, 29, 30 को अच्छी तेजी का रुख रहेगा।]

☞ **दिसम्बर**—1 दिसं. को मंगल ज्येष्ठा में आने से चांदी, घी, ग्वार में मन्दी तथा रुई में घटाबढ़ी रहेगी।

2 दिसं. को शुक्र मकर राशि में तथा सूर्य ज्येष्ठा में आने से **साफ्टवेयर एवं I.T. सेक्टर के शेयरों**, गुड़, चीनी, घी, तथा गेहूँ, चना, जौं, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग में तेजी बनेगी, रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 3 से 7 दिसं. तक अच्छी घटाबढ़ी रहेगी। तेजी-मन्दी के झटके लगते रहेंगे।

8 दिसं. को बुध धनु राशि में आने से रूई, कपास, सूत, चांदी में मन्दी का रुख रहेगा।

9 दिसं. को गुरु मकर राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, जौं, चना, गेहूँ, कपूर, चन्दन, ग्वार, घी, मूँगफली, तांबा, सोना, चाँदी, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनेगी। जल्दी सौदे निपटा लें, क्योंकि शीघ्र ही मन्दी का रुख शुरु हो सकता है।

11 दिसं. को शुक्र श्रवण में आने से चांदी, सोना, गुड़, चीनी, शक्कर, मूँग, मोठ, उड़द, अनाज में मन्दी, तिल, तेल में तेजी, रूई में मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी।

15 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चाँदी, घी, उड़द में तेजी बनेगी। 17 दिसं. को बुध पू.षा. में आने से खल-बिनौला, उड़द में तेजी, सोना, चाँदी, चना में मन्दी बनेगी।

19 दिसं. को मंगल धनु राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। इसी दिन बुध पश्चिम से उदय होगा। गेहूँ, चना, घी, खल-बिनौले, गुड़, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहादि धातुओं में, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनेगी। 23 दिसं. को शुक्र धनिष्ठा में आने से चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चाँदी, सोना, रूई, कपास में तेजी बनेगी। 25 दिसं. को बुध उ.षा. में आने से गेहूँ, चावल, चना, बाजरा में मन्दी बनेगी।

27 दिसं. को बुध मकर राशि में आकर गुरु, शुक्र के साथ मेल करेगा। रूई, सोना, चाँदी, ग्वार, घी, तांबा, स्टील, जिस्त, लोहे में तेजी बनेगी। 28 दिसं. को सूर्य पू.षा. में आएगा, शुक्र कुम्भ राशि में आकर शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, चीनी, हल्दी, गुग्गुल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चाँदी, सोना में तेजी बनेगी। 29 दिसं., सोमवार को मकर राशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से सोना, चांदी, लोहा, उड़द, घी, रूई में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

31 दिसं. को शनि वक्री होगा। शनि-शुक्र का समसप्तक योग बना हुआ है। लोहा, स्टील, क्रूड-आयल, अलसी, तेल, सरसों, सोयाबीन आदि तिलहन, सोना, तांबा में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 3 जन. तक मन्दे में खरीदें तथा तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।

शेयर-बाज़ार—[इस मास की 2, 3, 9, 15, 16, 19, 20, 27, 31 को अच्छी तेजी का चाँस है, अवश्य लाभ लें।]

नोट—ऊपर दिए व्यापारिक रूख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाजार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें तथा तुरन्त फीस भेजकर टेलीफोन से ताज़ा मशवरा प्राप्त करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे।—**पं. विवेक शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पं.)**

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पूफा आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।
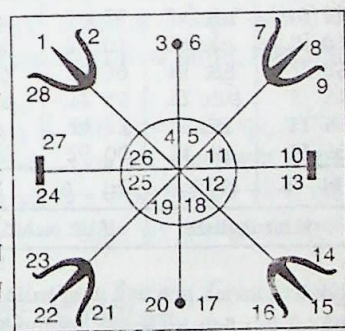
खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही पाप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उफा.	विशा.	पूषा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उषा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह, उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देने वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है—

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना ही अधिक जप, होम तथा शरीर-कष्टादि किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों के मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे—गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ-मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक *'शिव-मन्त्रावली'* में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षया तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु-पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल—सन् 2008-09 ई.

भारतीय मुहूर्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2008-09 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	22-14	सायं 16:14 से अगले दिन प्रात: 4:14 तक
19 फरवरी	मीन	12-20	प्रात: 6-20 से सायं 18-20 तक
20 मार्च	मेष	11-18	प्रात: 5-18 से सायं 17-18 तक
19 अप्रैल	वृष	22-21	सायं 16/21 से अगले दिन प्रात: 4/21 तक
20 मई	मिथुन	21-31	दोपहर 3-31 से 27-31 तक
21 जून	कर्क	5-29	20 जून की रात्रि 11/29 से 21 जून दोप. 11/29 तक
22 जुलाई	सिंह	16-25	प्रात: 10/25 से रात्रि 22/25 तक
22 अगस्त	कन्या	23-32	सायं 17/32 से अगले दिन प्रात: 5/32 तक
22 सितम्बर	तुला	21-15	दोपहर 3/31 से 27/31 तक
23 अक्तूबर	वृश्चिक	6-39	22 की रात्रि 24/39 से 23 की दोप. 12/39 तक
21 नवम्बर	धनु	28-14	20 नवं. की रात्रि 10/14 से 21 की प्रात: 10/14 तक
21 दिसम्बर	मकर	17-34	दोपहर 11/34 से रात्रि 23-34 तक
19 जन. (09)	कुम्भ	28-10	18 की रात्रि 22/10 से 19 की प्रात: 10/10 तक
18 फर.	मीन	18-16	दोपहर 12/16 से रात्रि 24/16 तक
20 मार्च	मेष	17-14	दोपहर 11/14 से रात्रि 23/14 तक

क्रान्तिसाम्य काल—2008-09 ई.

यहाँ सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। (महापात गणित द्वारा) विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को वर्जित किया गया है। इस समय विवाह के लिए अशुभ परन्तु यंत्र-मंत्र-तंत्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ समय होता है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
3 जन.	21	40	4 जन.	4	59
17 जन.	6	58	17 जन.	12	11
29 जन.	23	13	30 जन.	4	39
12 फर.	5	14	12 फर.	9	19
24 फर.	16	10	24 फर.	20	30
8 मार्च	25	1	9 मार्च	4	37
21 मार्च	7	26	21 मार्च	11	29
3 अप्रै.	22	10	3 अप्रै.	25	44
15 अप्रै.	20	46	15 अप्रै.	25	03
29 अप्रै.	16	58	29 अप्रै.	21	36
11 मई	13	25	11 मई	18	27
25 मई	11	46	25 मई	18	23
6 जून	19	10	6 जून	25	12
20 जून	23	31	21 जून	7	43
29 जून	21	06	29 जून	27	29
12 जुला.	14	49	12 जुला.	21	58
26 जुला.	7	31	26 जुला.	12	28
7 अग.	14	18	7 अग.	19	34
21 अग.	4	40	21 अग.	8	45
2 सितं.	9	28	2 सितं.	13	42
15 सितं.	23	10	15 सितं.	27	08
27 सितं.	26	50	28 सितं.	6	40
11 अक्तू.	17	40	11 अक्तू.	21	50
23 अक्तू.	16	58	23 अक्तू.	21	20
6 नवं.	9	05	6 नवं.	14	21
18 नवं.	9	50	18 नवं.	15	04
1 दिसं.	25	54	2 दिसं.	9	24
14 दिसं.	18	52	14 दिसं.	25	50
23 दिसं.	21	44	24 दिसं.	6	42

वारुणी पर्व (सन् 2009 ई.)

24 मार्च	3 54	24 मार्च	21 57

सूर्यग्रहण-चन्द्रग्रहण

1 अग., 2008 ई. को सूर्यग्रहण तथा 16 अग., 2008 ई. को चन्द्रग्रहण तथा 26 जन., 2009 ई. को सूर्यग्रहण भारत में दृश्य होंगे। पर्वकाल के लिए देखें पृष्ठ 10-15

दीपावली पर्व

28 अक्तू., 2008 ई. को दीपावली पर्व मंगलवार को होने के कारण यन्त्र-मन्त्र अनुष्ठान, साधना के लिए विशेष सिद्धिदायक होगी। स्थानीय नगर का निशीथ, महानिशीथ काल जानने के लिए देखें पृष्ठ 78

ज्वालामुखी योग—2008

इस योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में प्रारम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
13 फर.	26	00	14 फर.	19	59
14 फर	24	33	15 फर	17	51
11 मार्च	12	45	12 मार्च	7	51
14 अप्रै.	10	39	15 अप्रै.	7	25
18 जून	23	01	19 जून	18	01
23 अग.	18	26	24 अग.	10	02
24 अग.	16	12	25 अग.	8	30
19 सितं.	6	47	19 सितं.	17	07
23 अक्तू.	3	27	23 अक्तू.	14	21

अभीष्ट वर प्राप्ति के लिए

जिस कन्या के विवाह-कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ती हों। उसको गुरु-पुष्य, रवि पुष्य, अक्षया तीज, श्रावण मास में, दीपावली, बसन्त अथवा नवरात्रों में निम्नलिखित मन्त्र का आरम्भ करके यथेष्ट संख्या में ५१ हज़ार अथवा सवा लाख की संख्या में नियमित रूप में, शिव-पार्वती अथवा माता के मन्दिर में धूप, दीप जलाकर पीले एवं लाल पुष्प चढ़ाकर सुनिश्चित समय में नियमित रूप से संकल्पपूर्वक एवं विधिवत् जप करना चाहिए। इससे देवी की कृपा से अवश्य कामना सिद्धि होती है—

(१) **ॐ ह्रीं गौर्ये नमः**
हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकर प्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

(हे गौरी, शङ्कर की अर्द्धाङ्गिनी ! जिस प्रकार तुम शङ्कर की प्रिया हो, उसी प्रकार हे कल्याणी ! मुझ कन्या को दुर्लभ वर प्रदान करो।)

एक अन्य उपयोगी मन्त्र—

(२) **ॐ कात्यायनि महामाये महायोगिनी अधीश्वरी।**
नन्दगोपसुते देवि ! पतिं मे कुरू ते नमः॥

(हे कात्यायनि, महामाया, महायोगिनियों की अधीश्वरि ! मुझे भगवान् कृष्ण सदृश पति प्रदान करो ! तुम्हें नमस्कार है।)

(३) **ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रियभामिनी।**
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्रं लाभं च देहि मे॥

(ॐ देवेन्द्राणि ! देव इन्द्र की प्रिय पत्नी ! तुम्हें नमस्कार है। मुझे विवाह, भाग्य, आरोग्य और शीघ्र लाभ प्रदान करें।)

इस मन्त्र का भी प्रतिदिन कम से कम 108 बार लगातार अभीष्ट सिद्धि तक करते रहें। जप करने से पहले प्रतिष्ठित तुलसी-पादप की पूजा करके 12 परिक्रमाएँ करें, तदनन्तर दाएँ हाथ से दुग्ध और बाएँ हाथ से जल द्वारा श्रीसूर्यनारायण को 12 बार समन्त्र अर्घ्य दें। तदनन्तर जप करें। इस प्रकार प्रतिदिन अर्घ्यदान और जप करने से तथा प्रयास करते रहने से शीघ्र कार्य सिद्धि होगी।

(४) मन्त्र— **''ॐ शं शङ्कराय सकल जन्मार्जित पापविध्वंसनाय।**
पुरुषार्थचतुष्टयलाभाय च पतिं देहि कुरु कुरु स्वाहा॥''

(हे समस्त जन्मों में अर्जित पापों के विध्वंसक भगवान शङ्कर ! पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिए अनुकूल पति प्रदान करो। नमस्कार है, नमस्कार है।)

अशुभ ग्रहों के प्रभाव से निवारणार्थ तथा आर्थिक समस्याओं से पीड़ित जातिका को शिव-पार्वती की सर्विधि पूजा करनी चाहिए। प्रतिदिन 3 माला कम से कम 40 दिन या अभीष्ट प्राप्ति तक करें। केले के पौधे पर अथवा उसका स्तम्भ (टाहनी) पर मौली की 11 आवृत्तियां लपेटकर इस मन्त्र का जप करें। जप समाप्ति पर पौधे की परिक्रमा करें। जो कन्या नित्यप्रति इस मन्त्र का जाप करती है, उसका शीघ्र विवाह होता है।

घरेलू कलह-क्लेश निवारण के लिए

''ॐ दमयन्ती-नलाभ्यां तु नमस्कारं करोभ्यहम् अभिवादो भवेदत्र कलिदोष प्रशान्तिदः। ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां प्रथगधियाम्। निर्वेरता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे।''

इस मन्त्र को उत्तराभिमुख होकर रात के 9 से 11½ के मध्य प्रारम्भ करें। धूप, ज्योति जगाकर पाँच माला मन्त्र जाप 33 दिन तक प्रतिदिन करें। तर्पण करें तथा ब्राह्मण भोजन कराएँ। दीपावली की रात्रि या ग्रहण के समय इस मन्त्र को सिद्ध करके लिखकर देने से एवं घर में हवन करने से घर में कलह-क्लेश, झगड़े दूर होकर शान्ति एवं प्रेम का वातावरण बनता है।

—मनोवांछित पत्नी प्राप्ति के लिए—

(१) **पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।**
तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥ (दुर्गा. सप्त., २४)

प्रातःकाल शुद्ध होकर दुर्गाजी के चित्रपट या मूर्ति पर लाल पुष्प समर्पित करें। दीप प्रज्वलित करके षोडशोपचार पूजन करें, तथा उपर्युक्त मन्त्र की कम से कम 5 माला प्रतिदिन जप करें। किसी ब्राह्मण से जप कराना हो तो भी एक माला जप स्वयं विवाह सम्पन्न होने तक करना चाहिए। साथ ही दुर्गासप्तशती का इसी मन्त्र से सम्पुट करके 18 पाठ करना या कराना चाहिए।

अधिक तथा सम्पूर्ण जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक 'दुर्गा सप्तशती' (भाषा-टीका) पढ़ें।

(२) **'ॐ क्लीं विश्वावसुर्नाम गन्धर्वः कन्यानामधिपतिं लभामि**
देवदत्तां कन्यां सुरुपां सालंकारां तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।'

सवा लाख जप करने या कराने के बाद दशांश हवन, तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन अवश्य कराना चाहिए।

—व्यापार के बन्धन का निरस्तीकरण—

मन्त्र—ॐ दक्षिण भैरवाय भूत-प्रेत बंध, तंत्र बंध, निग्रहनी, सर्व शत्रु संहारिणी कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा॥

प्रयोग विधि—गोरोचन, कपूर, गुलाल और छार. छबीला को समान मात्रा में लेकर, उन्हें पीसकर तथा आपस में मिलाकर एक मिश्रण तेयार कर लें। तत्पश्चात् इस मिश्रण को उपरोक्त मन्त्र से 108 बार अभिमंत्रित करें। अब इस अभिमंत्रित मिश्रण को उपरोक्त मन्त्र का ही निरन्तर जाप करते हुए प्रातः दुकान खोलने से पूर्व दुकान के सामने बिखेर कर दुकान खोल लें।

किसी भी रविवार से आरम्भ करके यहं प्रयोग निरन्तर पाँच दिनों तक करना चाहिए। प्रतिदिन प्रयोग विधि एक समान ही रहेगी।

इस प्रयोग के प्रभाव से व्यापार पर किया गया बंधन दूर हो जाएगा और व्यापार निर्बाध रूप से आगे बढ़ेगा। लाभ में वृद्धि होगी तथा ग्राहकों, आगन्तुकों की संख्या में भी निरन्तर वृद्धि होगी। इस मन्त्र को प्रतिदिन 108 बार करने मात्र से ही लाभ होगा।

''दुकान में बिक्री बढ़ाने के लिए शाबर मन्त्र''

''भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा
उठे जो डण्डी बिके जो माल भंवर वीर सोखे नहीं जाय॥''

रविवार वाले दिन हाथ में काले (साबुत) उड़द लेकर यह मन्त्र 21 बार बोलकर दुकान में बिखेर दें। ऐसा चार रविवार करने से बिक्री में वृद्धि होती है। इन बिखरे हुए उड़दों को दूसरे दिन बुहारी निकालते समय उठाकर या तो चौराहे में डाल आएं या उठाकर एक पोटली में बाँधकर ऊँचे आले या ताक में रख दें। यह प्रयोग केवल रविवार को ही आरम्भ करें।

अज्ञात का पता मालूम करना

एक कोरा घड़ा व कसोरा ले आएं। उस पर कोई काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच में नीचे लिखा मंत्र लिखें। एक कागज़ पर लिखकर उसे घड़े में डाल दें और साथ ही चार पैसे तांबे के रख दीजिए। थोड़े या अधिक न हों कसोरे से ढक कर बाईं ओर घुमाइए और यह मन्त्र पढ़ें **''ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे''** सात बार घड़े को घुमा कर पृथक् स्थान पर रख दो। सात दिन करने से ही वह मनुष्य चल पड़ेगा या वह अपना पता पत्र के द्वारा भेज देगा। अज्ञात का नाम नीचे लिखें। इस यन्त्र को सफेद कागज़ पर लिखकर चरखे से बाँध कर उल्टा भी घुमा सकते हैं।

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे
भागे हुए का नाम		

—'सर्वव्याधि नाश के लिए महामृत्युज्जय मन्त्र'—

'ॐ हौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।'

अर्थ—हम परमपिता त्रयम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

पूजन विधि तथा महामृत्युज्जय मन्त्र के विविध स्वरूप, यन्त्र आदि जानने के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक 'शिव-मन्त्रावली' का अध्ययन करें।

—मुकद्दमे में विजय प्राप्ति यन्त्र—

इस यन्त्र को चाँदी के पत्रे अथवा भोजपत्र पर रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन-संक्रान्ति, हस्त, मूल नक्षत्र कालीन अथवा दीपावली। ग्रहण के दिन सू.उ. के पश्चात् तथा सूर्यास्त से पूर्व खुदवाकर प्रतिष्ठा कर प्रतिदिन पूजन करें तो कोर्ट-कचहरी आदि विषय में विजय प्राप्त होने की प्रबल संभावना होती है। यन्त्र को अपनी जेब में रखें—

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

पूजन मन्त्र— **'ॐ नीली-नीली, महानीली (शत्रु पक्ष/जज का नाम)**
जीभि तालू सर्व खिली, सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा॥'

—दरिद्रता नाशक कुबेर मन्त्र—

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये।
धनधान्यसमृद्धि मे देहि दापय स्वाहा॥

उपरोक्त कुबेर मन्त्र धर्मस्थान या शिवमन्दिर में द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में अथवा दीपावली या नवरात्रों में संकल्पपूर्वक प्रारम्भ करके सवा लाख की संख्या में पाठ करें। प्रतिदिन नियमित रूप से तीन अथवा एक माला का पाठ (अपनी सामर्थ्यानुसार) करें। सम्पूर्ति पर ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन करवाना शुभ होगा।

पृथ्वी में छिपा धन देखने का मन्त्र और अंजन

कुछ जानकारों का मानना है कि जो लोग उल्टे पैदा होते हैं, उनकी आँखों में विशेष प्रकार का सिद्ध काजल लगाने से उन्हें पृथ्वी के अन्दर गढ़ा धन दिख जाता है। पूरे भारत में यह भ्रम फैला हुआ है कि यहाँ अमुक-अमुक स्थान पर धरती में धन गढ़ा है। गढ़े धन को कैसे देखा और निकाला जाता है इसकी संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है—

''नमो भगवते रूद्राय डामरेश्वराय सिलि शाल पुनने नाग बेतालिनि स्वाहा।''

किसी योग्य गुरू के मार्गदर्शन में यह मन्त्र दस हज़ार की संख्या का जाप किसी प्राचीन शिवमन्दिर में करें। मन्त्र के सिद्ध हो जाने के पश्चात् गुरू के निर्देशानुसार शनिवार के दिन पुष्य नक्षत्र में तुलसी की जड़ को नर्मदा के जल में खूब महीन पीस कर उस लेप से बत्ती बना लें और उस बत्ती को उपरोक्त मन्त्र से ही 1008 बार अभिमन्त्रित करें। इस बत्ती को जलाकर किसी पात्र में अंजन (काजल) तैयार करें। इसे किसी छोटी कन्या या बालक या उल्टे पैदा हुए व्यक्ति की आँखों में लगाने से उसे पृथ्वी के भीतर गढ़ी हुई वस्तुएँ साफ़ दिखाई देती हैं।

विशेष—इस प्रक्रिया के करने से लाभ-हानि के सम्बन्ध में सम्पादक का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

शत्रु विजय मन्त्र प्रयोग—निम्न मन्त्र के दस हज़ार बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है तथा प्रयोग करने से पहले 108 बार जप करने से प्रयोग सिद्ध होता है। झगड़ा, फिसाद, मुकद्दमा एवं शत्रु पर विजय प्राप्त करने में इस मन्त्र का प्रयोग सफल माना जाता है।

मन्त्र— **''ॐ नमो विश्वरूपाय अमुकस्य अमुकेन सह**
विवादे विजयं कुरू-कुरू स्वाहा।''

विशेष—यह प्रयोग अत्यन्त गुप्त विधि से करने चाहिए इसके सम्बन्ध में किसी को प्रकाशित करने से निःसन्देह विघ्न होते हैं। निर्विघ्न पूरा करने से शीघ्र सिद्धि होती है। इन महामन्त्रों को छुपा कर रखें। चाहे जिसको अर्थात् अनाधिकारी को न देवें। नीच प्रवृत्ति वालों के स्पर्श से विद्या का फल घट जाता है। ऐसा स्पष्ट तौर पर लिखा गया है—

''गोप्यं चेदं महत्तन्त्रं यस्मै कस्मै न दापयेत्।
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफला यतः।''

घरेलू उपयोगी टोटके

(1) घर में अशान्ति रहने पर—यदि आपके अनेक उपाय करने पर भी अकारण ही अशान्ति बनी रहती हो, तो गाय के गोबर का एक छोटा दीपक बनाएं। उसमें तेल और रूई की बत्ती डालकर थोड़ा गुड़ डाल दें तथा उस दीपक को जलाकर दरवाज़े के बीच रख दें। परेशानियां कम होने लगेंगी। इसे आवश्यकतानुसार 2-3 बार, थोड़े समय के अन्तराल से कर लेना चाहिए। इसके लिए शनिवार विशेष उपयुक्त दिन है तथा तिल का तेल श्रेष्ठ है।

(2) पति की अप्रसन्नता दूर करने के लिए—यदि पति हमेशा अप्रसन्न रहता हो, पत्नी की बातों पर ध्यान न देता हो, हमेशा खोया-खोया सा रहता हो, जिसके कारण वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न हो तथा सारे प्रयत्न निष्फल हो रहे हों तो पति की अनुकूलता के लिए श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक भगवान शंकर एवं माता पार्वती का ध्यान करके सोमवार से निम्न मन्त्र का एक माला जप करें—

मन्त्र— **''ॐ क्लीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।**
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतात् क्लीं ॐ॥''

(3) गृह कलह शान्ति के अन्य उपाय—*(i)* यदि पति-पत्नी के मध्य परस्पर सामंजस्य एवं सहयोग की भावना का अभाव हो तो उन्हें गुरूवार को साथ-साथ राम-सीता मन्दिर या लक्ष्मीनारायण मन्दिर जाकर भगवान् को पुष्प एवं प्रसाद चढ़ाने चाहिए। प्रसाद मन्दिर में बाँटना चाहिए।

(ii) रोटी बनाते समय तवा गर्म होने पर पहले उस पर ठण्डे पानी के छींटें डालें और फिर रोटी।

(iii) अपने शयन-कक्ष में लाल वस्त्र में सौंफ बांधकर रखें।

(iv) रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

(v) शयन कक्ष में गमले में मोर पंख सजाकर इस प्रकार रखें कि वे कमरे के बाहर से दृष्टिगोचर न हों, किन्तु पति-पत्नी को पलंग से नज़र आते रहें।

(4) नज़र दोष निवारण के लिए—यदि किसी बालक/बालिका (अथवा किसी जातक को भी) को नज़र लगी हो तो उसकी लम्बाई से सात गुना ज्यादा लम्बा एक काले रंग का धागा लें और उसे सात बार सिर से पैर तक उतारें । अब पीपल पर तेल का दीपक और गुलाब की अगरबत्ती जलाएं। फिर वह उतारा हुआ काला धागा पीपल के वृक्ष पर लपेट दें, पीड़ित व्यक्ति (बालक) का नाम लेकर प्रार्थना करें कि इसकी बला तेरे सिर। पीछे मुड़कर न देखें। पानी की बोतल साथ ले जाएं और घर में प्रवेश करने से पहले हाथ-पैर धो लें। यह क्रिया शनिवार को करें। कई बार जबरदस्त नज़र लगने से मनुष्य के कामों में रुकावटें, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। ऐसे में श्रद्धा से किया गया यह उपाय कारगर सिद्ध होता है। यदि किसी को प्रेतबाधा आदि भी हो तो वह भी दूर हो जाती है।

नवग्रह गायत्री मन्त्राः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्॥

कलियुग में गायत्री से बढ़कर अन्य कोई सिद्धिप्रद मन्त्र नहीं हैं। अनिष्टकारी ग्रह शान्ति के लिए नवग्रह स्तोत्र का पाठ विशेष लाभकारी होता है, परन्तु किसी विशेष ग्रह की शान्ति अथवा सर्वग्रहों की शान्ति के लिए सूर्य, **भौम आदि के गायत्री मन्त्र** और भी अधिक प्रभावकारी एवं चामत्कारी रूप से लाभकारी माने जाते हैं।

१. **सूर्य—ॐ आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।**
२. **चन्द्र—ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्।**
३. **मंगल—ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।**
४. **बुध—ॐ सौम्यरूपाय विद्महे, वाणेशाय धीमहि, तन्नो बुधः प्रचोदयात्।**
५. **गुरू—ॐ अङ्गिरसाय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरू प्रचोदयात्।**
६. **शुक्र—ॐ भृगुसुताय विद्महे, दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।**
७. **शनि—ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे, मृत्युरूपाय धीमहि तन्नः सौरिः प्रचोदयात्।**
८. **राहु—ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।**
९. **केतु—ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।**

इसी भान्ति श्री गणेश, भगवान् शिव, श्री विष्णु-लक्ष्मी,श्री कृष्ण, श्री राम आदि प्रमुख देवी-देवताओं सम्बन्धी गायत्री मन्त्रों का विशेष महत्त्व होता है, जिसका विस्तृत वर्णन आप हमारी प्रकाशित पुस्तक **''शिवमन्त्रावली''** में देखेंगे।

ग्रहगोचरानुसार–बारह राशियों का वार्षिक एवं मासिक फलादेश–सन् 2008 ई.

बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिख रहे हैं। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण विषयों–विद्या, व्यवसाय, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म समय, वर्ष, स्थान (Place & Time of Birth), माता–पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। बड़ी विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 601 रु. से 1100 रुपये। **मध्यम जन्मपत्री** 375 रु., वर्षफल फीस 300 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 40 डालर होगी। डाकव्यय अतिरिक्त होगा, फीस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम भेजें।

—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर–8 (पं.)

मेष राशि (Aries)-(चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

ग्रहगोचर : मेष राशि के जातकों के लिए नववर्ष का उत्तरार्ध भाग प्रायः शुभ रहेगा। इस राशि पर भाग्येश-गुरु की शुभ दृष्टि 8 दिसम्बर तक रहेगी। परन्तु 29 अप्रैल तक पंचम में **शनि-केतु** का योग होने से गुप्त परेशानियों एवं कठिन परिस्थितियों वाला होगा। (13 अप्रैल से 13 मई) के मध्य सूर्य इस राशि पर **उच्च स्थिति** में होने से धन लाभ व उन्नति के चांस बनेंगे। **28 अप्रैल से 20 जून** के मध्य राशिस्वामी मगंल नीच राशि में होने से स्वास्थ्य हानि, अपव्यय एवं बनते कामों में विघ्न होंगे। 10 अगस्त के बाद इस राशि पर मंगल की स्वगृही दृष्टि शुभ रहेगी। जिससे शुभ फल घटित होंगे।

वृष राशि (Taurus)-(इ, उ, ए, ओ, व, वि, वृ, वे, वो)

ग्रहगोचर : इस राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर होगा। वर्षारम्भ से 18 जनवरी तक राशिस्वामी शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहेगी। ता. 12 फरवरी से 7 मार्च के मध्य शुक्र भाग्य स्थान में होने से तथा ता. 1 से 24 अप्रैल के मध्य शुक्र उच्च राशि में होने से अकस्मात धन लाभ व पदोन्नति के चांस बनेंगे। ता. 25 अप्रैल से 19 मई के मध्य शुक्र द्वादशस्थ होने से आय कम और खर्च अधिक होंगे। ता. 20 मई से 12 जून के मध्य स्वगृही शुक्र होने से बिगड़े कामों में सुधार होगा। 25 अग. से 18 सितं. के मध्य शुक्र नीच में अशुभ फलकारक होगा।

मिथुन राशि (Gemini)-(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 27 अप्रैल तक मिथुन राशि पर मंगल का संचार रहेगा। इस राशि पर गुरु की सप्तम दृष्टि 8 दिसम्बर तक रहेगी। ता. 4 जनवरी से 9 मार्च की अवधि में बुध अष्टम होने से स्वास्थ्य नर्म व विघ्न रहेंगे। 30 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य बुध नीच राशि (मीन) में होने से स्वास्थ्य हानि, धन के खर्च होने के योग हैं। 23 जुलाई से 24 अगस्त के मध्य मिश्रित प्रभाव होंगे। 25 अगस्त से 30 अक्तूबर तथा 1 नवं. से 18 नवम्बर के मध्य बुध क्रमशः उच्चराशि (कन्या) में एवं पंचम होने से आय के स्रोतों में वृद्धि होगी।

कर्क (Cancer)-(हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से साल के अन्त तक इस राशि पर शनि साढ़ेसाती का प्रभाव न्यूनाधिक रूप से रहेगा। ता. 28 अप्रैल से 20 जून के मध्य मंगल इस राशि पर नीच स्थिति में तथा 30 अप्रैल से वर्षान्त तक केतु का संचार रहेगा। इस अवधि में घरेलू व्यवसाय सम्बन्धी उलझने रहें तथा आय कम व खर्च अधिक होंगे। ता. 9 दिसम्बर से वर्षान्त तक गुरु की शुभ दृष्टि होने से शुभ फल होंगे।

सिंह राशि (Leo)-(म, मि, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे)

ग्रहगोचर : सिंह राशि को शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव वर्षारम्भ से अन्त तक रहेगा, परन्तु इस राशि पर वर्षारम्भ से **8 दिसम्बर** तक गुरु की शुभ दृष्टि भी रहेगी, जिससे वर्ष में कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। वर्षारम्भ से 29 अप्रैल तक इस राशि पर **शनि-केतु का योग** अशुभफलकारी होगा। अप्रैल-मई में राशि स्वामी सूर्य उच्च राशिस्थ होगा। ता. 21 जून से 9 अगस्त के मध्य इस राशि पर **मंगल-शनि** का योग तथा 16 अगस्त से 15 सितम्बर के मध्य **सूर्य-शनि** के अशुभ योग बनेंगे।

कन्या राशि (Virgo)-(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

ग्रहगोचर : कन्याराशि पर शनि साढ़ेसाती का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 27 अप्रैल तक इस राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि होने से मानसिक कष्ट, आर्थिक हानि एवं विघ्नादि रहेंगे। 30 मार्च से 28 अप्रैल तक राशिस्वामी बुध की स्थिति भी अशुभ होगी। ता. 29 अप्रैल से 6 अगस्त के मध्य राशिस्वामी बुध भाग्य एवं लाभ स्थान में होने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। 10 अगस्त से 24 सितं. के मध्य मंगल इसी राशि में होने से अशुभफल देगा। ता. 25 अगस्त से 31 अक्तूबर के मध्य बुध इसी राशि में लाभ व उन्नतिकारक होगा।

तुला राशि (Libra)-रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से वर्षान्त तक तुला राशि पर शनि की उच्च दृष्टि रहेगी। राशि स्वामी शुक्र वर्षारम्भ से क्रमशः द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ स्थान में 3 मार्च तक होगा जिससे कार्य/व्यवसाय में अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन एवं भूमि सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। ता. 13 अप्रैल से 13 मई के मध्य इस राशि पर सूर्य की नीच दृष्टि अशुभ होगी। ता. 25 अग. से 18 सितं. के बीच राशिस्वामी शुक्र नीच राशिस्थ जबकि 19 सितम्बर से 13 अक्तूबर तक शुक्र इसी राशि में शुभ फलकारक होगा।

बृश्चिक राशि (Scorpio)-(तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

ग्रहगोचर : इस राशि पर शुक्र का संचार वर्षारम्भ से 18 जनवरी तक तथा राशिस्वामी मंगल अष्टम स्थान में 27 अप्रैल तक रहेगा। सुख साधनों पर खर्च अधिक रहेंगे। ता. 28 अप्रैल से 20 जून तक मंगल नीच राशि (कर्क) में होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। ता. 21 जून से 9 अगस्त तक मंगल-शनि का योग दशम में होगा। ता. 7 नवम्बर से 18 दिसम्बर तक इस राशि पर मंगल का स्वगृही संचार रहेगा।

धनु राशि (Sagittarius)-(ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ में धनु राशि पर सूर्य, बुध एवं गुरु का संचार है। राशि स्वामी गुरु का संचार वर्षारम्भ में 8 दिसम्बर तक रहेगा। वर्षारम्भ से 27 अप्रैल तक इस राशि पर मंगल की दृष्टि रहेगी। 21 जून से 9 अगस्त तक भाग्य स्थान पर मंगल-शनि का योग रहेगा। ता. 10 अग. से 24 सितं. तक इस राशि पर मंगल की दृष्टि होगी। ता. 7 नवं. से 2 दिसं. के मध्य इस राशि पर गुरु-शुक्र का योग बनेगा।

मकर राशि (Capricorn)-(भो, ज, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी)

ग्रहगोचर : इस राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव वर्षभर रहेगा। वर्षारम्भ से 27 अप्रैल तक इस राशि पर मंगल की सर्वोच्च दृष्टि रहेगी। ता. 14 जनवरी से 12 फरवरी तक सूर्य का संचार रहेगा। व्यवसाय में कठिन समस्याओं के बावजूद निर्वाह योग्य साधन बनते रहेंगे। 30 अप्रैल से वर्ष के अन्त तक इस राशि पर राहु का संचार तथा 9 दिसम्बर से वर्षान्त तक गुरु का संचार होगा।

कुम्भ राशि (Aquarius)-(गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 29 अप्रैल तक राहु का संचार कुम्भ राशि पर रहेगा। ता. 13 फर. से 13 मार्च के मध्य इस राशि पर सूर्य-राहु का योग होने से तनाव एवं घरेलू उलझनें अधिक रहेगी। ता. 28 अप्रैल से 9 अगस्त के मध्य इस राशि पर मंगल की दृष्टि और शनि-मंगल का योग होने से दुर्घटना में चोटादि का भय रहेगा। ता. 8 नवम्बर से मंगल स्वगृही होने से उन्नति के चांस बनेंगे परन्तु तनाव, घरेलू चिन्ताएं भी रहेंगी।

मीन राशि (Pisces)-(दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

ग्रहगोचर : वर्षारम्भ से 8 दिसम्बर तक राशिस्वामी गुरु दशम स्थान में स्वगृही राशि (धनु) में संचार करेगा। धन लाभ व उन्नति के चांस बनेंगे। वर्षारम्भ से मंगल की गुरु पर विशेष दृष्टि होने से विदेशी कार्यों में सफलता होगी। ता. 21 जून से 24 सितम्बर के मध्य मीन राशि पर मंगल की अशुभ दृष्टि होगी। ता. 9 दिसम्बर से वर्षान्त तक राशिस्वामी गुरु नीच राशि में संचार करेगा। आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे।

राशिफल—जनवरी—सन् 2008 ई.

मेष—मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल तृतीय भाव में गुरु द्वारा दृष्ट है; पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परन्तु पंचम भाव में शनि-केतु का योग होने से पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा।

वृष—मासारम्भ में इस राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि पड़ने से पूर्वार्द्ध भाग में सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में व्यय अधिक तथा बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी।

मिथुन—मासारम्भ में राशिस्वामी बुध क्रमशः सप्तम और अष्टम में होने से मिश्रित प्रभाव होगा। धन लाभ एवं कुछ सोची योजनाओं में सफलता मिलेगी। उत्तरार्द्ध में बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य ढीला और आय की अपेक्षा खर्च अधिक होंगे। मानसिक तनाव भी रहेंगे।

कर्क—इस मास में धन लाभ साधारण होगा। खर्चों की अधिकता से मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। भाई-बन्धु से मनमुटाव रहेगा। धर्म-कर्म के कार्यों में रुचि बढ़ेगी। शुभ कार्यों पर भी खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियाँ रहेंगी।

सिंह—मासारम्भ में राशि पर शनि-केतु का योग है जिससे अत्यन्त संघर्षपूर्ण आर्थिक परेशानियों का सामना रहेगा। बनते कामों में विघ्न होंगे परन्तु गुरु की दृष्टि के कारण निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। संक्रान्ति को अन्नदान करना शुभ होगा।

कन्या—शनि की साढ़ेसाती के प्रभावस्वरूप अत्यधिक संघर्ष व भागदौड़ रहेगी। धन लाभ अल्प होगा। आर्थिक तंगी के कारण मन अशान्त रहेगा। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। मासान्त में कोई शुभ समाचार मिलेगा।

तुला—मासारम्भ में राशि स्वामी शुक्र द्वितीय भाव में है तथा शनि की इस राशि पर स्वोच्च दृष्टि पड़ रही है। जिससे मास में कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी परन्तु धन का अधिकांश खर्च विलास-मनोरंजन आदि कार्यों पर अधिक होगा। मासान्त में विदेश सम्बन्धी कार्य से लाभ हो।

वृश्चिक—मासारम्भ में शुक्र इसी राशि में संचारगत है तथा राशिस्वामी मंगल अष्टम है। अत्यधिक संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। ता. 19 से शुक्र दूसरे भाव में होने से खर्चों की अधिकता के कारण मानसिक तनाव एवं उत्तेजना बढ़ेगी।

धनु—इस राशि पर राशिस्वामी गुरु की शुभ स्थिति होने से अचानक धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी एवं व्यवसाय में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। द्वादश भाव में शुक्र की स्थिति के कारण मनोरंजन एवं विलासादि वस्तुओं पर व्यय अधिक होगा।

मकर—मासारम्भ से शनि की ढैय्या के प्रभाव से घरेलू उलझनें, मानसिक तनाव और स्वभाव में तेज़ी रहेगी। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। परन्तु मंगल की स्वोच्च दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। खर्च भी अधिक रहेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल होगा।

कुम्भ—इस राशि पर राहु का संचार तथा शनि की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। जिससे संघर्ष एवं कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। आय के क्षेत्र में दौड़ धूप अधिक रहेगी। आकस्मिक खर्च अधिक रहेंगे।

मीन—मासारम्भ से राशिस्वामी गुरु पर मंगल की शुभ दृष्टि पड़ने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। **माघ माहात्म्य का पाठ** करना शुभ रहेगा।

राशिफल–फरवरी–सन् 2008 ई.

मेष—पूर्वार्द्ध भाग में आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। वृथा दौड़-धूप अधिक रहेगी। पारिवारिक सहयोग में कमी रहेगी। परन्तु राशि पर गुरु की दृष्टि पड़ने से धर्म-कर्म की ओर रुचि रहेगी। उत्तरार्द्ध भाग में किसी शुभ कार्य पर व्यय होगा।

वृष—मासारम्भ में शुक्र अष्टम में है, जिससे बनते कार्यों में विघ्न पैदा होंगे। आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। घरेलू एवं व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। ता. 12 के बाद राशि स्वामी (शुक्र) भाग्यस्थान में होने से कार्यों में सफलता व लाभ के चांस बनेंगे।

मिथुन—मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की स्थिति तथा गुरु की दृष्टि पड़ रही है जिससे वृथा भागदौड़, निकटबन्धुओं से मनमुटाव और आय से खर्च अधिक रहेगा। मासान्त में कुछ बिगड़े कामों में सुधार, धन लाभ और अकस्मात् यात्रा भी होगी।

कर्क—प्रथम सप्ताह में धार्मिक एवं शुभ कार्यों पर खर्च अधिक रहेगा। दूसरे सप्ताह नए-नए श्रेष्ठ लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। तीसरे सप्ताह कोई बिगड़ा काम बनेगा। चौथे सप्ताह स्वभाव में तेज़ी एवं व्यर्थ की दौड़-धूप अधिक रहेगी।

सिंह—इस राशि पर शनि-केतु की स्थिति के कारण व्यवसाय में भागदौड़ अधिक रहे। परेशानियों में वृद्धि तथा फिजूल खर्ची बढ़ेगी, स्वास्थ्य में विकार, किसी बन्धु से मनमुटाव पैदा हों। मासान्त में कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के चांस बनेंगे।

कन्या—मासारम्भ में इस राशि पर शनि की साढ़ेसाती और मंगल की दृष्टि है। अत्यधिक कठिनाई एवं संघर्ष के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। आर्थिक एवं घरेलू उलझनों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी। मासान्त में शुभ कार्य एवं वाहन आदि पर विशेष खर्च होने के योग हैं।

तुला—मासारम्भ में शुक्र तृतीय भाव में है, जिससे पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गत किए गए प्रयासों में कुछ सफलता मिलेगी। मासान्त में आकस्मिक धन लाभ हो, परन्तु खर्चों में भी अधिकता रहेगी।

वृश्चिक—मासारम्भ में बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। परिवार में कुछ तनाव परन्तु आय के साधन बनते रहेंगे। किसी विशेष कार्य में परिश्रम और संघर्ष करना पड़ेगा। उत्तरार्द्ध में अकस्मात् खर्चों में वृद्धि होने के संकेत हैं। विदेश सम्बन्धी कार्यों की योजना बनेगी।

धनु—मासारम्भ में सूर्य दूसरे भाव में संचरित होने से आय कम तथा खर्च अधिक रहेगा। आँखों का कष्ट एवं पेट विकार होने का भय, गृह में कोई मंगल कार्य होने के संकेत हैं। उत्तरार्द्ध भाग में भूमि, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी।

मकर—मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे। अकस्मात् धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। मासान्त में अकस्मात् फिज़ूलखर्ची बढ़ेगी। घरेलू उलझनों के कारण साहस एवं पराक्रम में कमी होगी। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे।

कुम्भ—मास के पूर्वार्द्ध भाग में कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण होगा। रोज़गार के लिए दौड़-धूप अधिक हो। आपको किसी प्रियजन की सहायता से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। उत्तरार्द्ध में पदोन्नति एवं मान-सम्मान में वृद्धि होगी। **विद्यार्थियों को** आशा के अनुरूप सफलता मिलेगी।

मीन—पूर्वार्द्ध भाग में व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। पदोन्नति और धन लाभ के योग हैं। पारिवारिक सुख प्राप्त होगा। विदेशी मित्र के साथ नए कार्य की योजना बनेगी। उत्तरार्द्ध में व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें।

राशिफल–मार्च–सन् 2008 ई.

मेष—मास के पूर्वार्द्ध भाग में किसी मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा हुआ कार्य बनेगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। विदेश सम्बन्धी मामलों में कुछ सफलता की सम्भावना होगी। उत्तरार्द्ध में बाधाओं के बावजूद निर्वाह आय के साधन बनेंगे।

वृष—उलझनों के बावजूद धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। विदेश सम्बन्धी कार्यों में भी सफलता के योग हैं। परन्तु ता. 8 के बाद शुक्र-राहु का योग होने से बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ होंगी। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे।

मिथुन—ता. 9 मार्च तक आय कम, खर्च अधिक और स्वास्थ्य ढीला रहे। ता. 10 से बुध भाग्यस्थान पर होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। बिगड़े कामों में सुधार होगा। उत्तरार्द्ध में वृथा दौड़-धूप और धन का खर्च अधिक रहे।

कर्क—मासारम्भ में किसी मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा, विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। उत्तरार्द्ध में आय कम और खर्च अधिक रहेगा परन्तु शुभ मंगल कार्यों पर धन का व्यय होगा।

सिंह—मासारम्भ में सूर्य की दृष्टि के कारण संघर्ष के पश्चात् धन लाभ हो। उदर-विकार व आँखों में कष्ट का भय रहे। किसी शुभ कार्य पर खर्च भी हो। मासान्त में अधिकांश समय व्यर्थ के कार्यों में व्यतीत होगा। भूमि-जायदाद सम्बन्धी परिवार में कुछ परेशानी व खर्च अधिक रहें।

कन्या—राशि पर मंगल की दृष्टि होने से सरकारी एवं भूमि सम्बन्धी कार्यों में परेशानी और व्यर्थ का समय नष्ट होगा। व्यर्थ का वाद-विवाद और वृथा खर्च होने की सम्भावनाएँ हैं। स्वास्थ्य ढीला और चोटादि का भय होगा। सावधानी बरतें।

तुला—सर्विस अथवा व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से व्यय अधिक, मासान्त में स्थिति में सुधार की आशा है। कुछ आन्तरिक घरेलू समस्याएँ रहेंगी। अपने खर्च पर संयम रखना उचित होगा।

वृश्चिक—राशिस्वामी मंगल अष्टम में होने से अत्यन्त संघर्ष के बाद ही गुज़ारे योग्य आमदन के साधन बनेंगे। घरेलू उलझनों के कारण अशान्ति अधिक रहे। सीमित आय के साथ खर्च भी अधिक बढ़ेंगे।

धनु—परिवार सम्बन्धी शुभ समाचार मिलने के संकेत हैं। घर-परिवार में विवाहादि मंगल कार्य होगा। विदेश सम्बन्धी-मित्र से सम्पर्क स्थापित होगा। विदेशी रिश्तेदारों एवं मित्रों का आगमन होगा। किसी श्रेष्ठ व्यक्ति के सहयोग से बिगड़े कामों में सुधार होगा।

मकर—राशिस्वामी शनि अष्टम स्थान से तथा मंगल छठे होने से शरीर कष्ट, आय कम तथा व्यर्थ खर्च अधिक रहेंगे। पारिवारिक उलझनों के कारण भी मन संतप्त रहेगा। मासान्त में बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार होगा।

कुम्भ—मासारम्भ में निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु इस राशि पर राहु का संचार होने से परिस्थितियाँ संघर्षपूर्ण रहेगी। आराम कम व दौड़धूप अधिक रहेगी। भूमि व वाहन आदि पर खर्च होगा।

मीन—धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति होगी। नई-नई योजनाएँ बनाने में समय व्यतीत होगा। उत्तरार्द्ध भाग में सन्तान के कैरियर सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। परन्तु गुरु स्वराशिगत होने से परिवार में मंगल कार्य हों, और व्यवसाय में लाभ के अवसर मिलेंगे। शुभ यात्रा के भी योग हैं।

राशिफल–अप्रैल–सन् 2008 ई.

मेष—मास के आरम्भ में तीसरे भावस्थ मंगल की दशमस्थ चन्द्र पर शुभ दृष्टि पड़ने से कार्यक्षेत्र में परिश्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। धन लाभ एवं उन्नति की सम्भावनाएँ बढ़ेंगी। मासान्त में खर्चाधिक्य रहे।

वृष—राशिस्वामी शुक्र उच्चस्थ होने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। अकस्मात् धन लाभ एवं उन्नति के अवसर मिलेंगे। किसी प्रियबन्धु के साथ मिलाप होगा। धार्मिक कार्यों की ओर रुचि बढ़ेगी।

मिथुन—मासारम्भ से ता. 14 तक बुध (नीच राशि) मीन में रहने से स्वास्थ्य एवं धन हानि, बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 15 से 28 तक अकस्मात् धन लाभ व पदोन्नति के चांस मिलेंगे। स्वास्थ्य कुछ नर्म रहेगा। श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करना शुभ रहेगा।

कर्क—मासारम्भ में परिश्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। किसी मंगल कार्य पर व्यय होगा। ता. 18 के बाद अकस्मात् यात्रा के योग हैं। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के चांस मिलेंगे।

सिंह—मासारम्भ में अत्यधिक परिश्रम व संघर्ष के बाद धन लाभ चांस बनेंगे। वाहन आदि कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। शनि साढ़ेसाती के कारण मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। ता. 13 अप्रैल के बाद बिगड़े कामों में सुधार के योग हैं।

कन्या—मास के पूर्वार्द्ध भाग में राशिस्वामी बुध नीचस्थ होने से व्यवसाय में अत्यन्त कठिनाई एवं संघर्ष के बाद ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्च बहुत अधिक रहेंगे। मासान्त में आकस्मिक लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

तुला—मासारम्भ में राशि स्वामी शुक्र उच्च राशिस्थ होने से सोची हुई योजना में सफलता प्राप्त होगी। किसी प्रिय व्यक्ति से सम्पर्क होगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी मंगल कार्य का आयोजन होगा। ता. 13 अप्रैल से मासान्त तक वैशाख माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

वृश्चिक—मासारम्भ में विघ्न बाधाओं और परिश्रम के उपरान्त ही धन प्राप्त होगा। अकस्मात् खर्च भी बढ़ेगा। व्यर्थ का विवाद, यात्रा और व्यर्थ चिन्ता रहेगी। मासान्त में कार्य व्यस्तताएँ एवं दौड़-धूप बढ़ेगी। गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे।

धनु—कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में व्यर्थ की आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। निकटतम भाई-बन्धुओं से मनमुटाव पैदा होगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी व्यक्ति में मुलाकात होगी। धार्मिक कार्यों की ओर रुचि बढ़ेगी।

मकर—इस मास मिश्रित फल प्राप्त होंगे। पराक्रम व निज उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि होगी। उच्च-प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्पर्क साधनों से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि और पारिवारिक एवं राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी।

कुम्भ—मासारम्भ से राशि पर राहु का संचार है। जिससे देश-विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी परन्तु व्यवसाय [illegible] रहेगी। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न हो। उत्तरार्द्ध भाग में परिवार में मनमुटाव व बन्धुओं से टकराव के हालात पैदा होंगे। आय से व्यय अधिक होगा।

मीन—धन लाभ मध्यम परन्तु खर्च अधिक होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। मासान्त में आय की अपेक्षा धन का खर्च अधिक, अफसरों से तनाव और सोची हुई योजनाओं में विघ्न उत्पन्न होंगे। धन संचय में रुकावटें रहेंगी।

राशिफल–मई–सन् 2008 ई.

मेष—मासारम्भ में मंगल चतुर्थ भाव में केतु युक्त है। जिससे आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। बनते कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। पारिवारिक सुखों में कमी रहेगी। अत्यन्त कठिनता से निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

वृष—मासारम्भ में अत्यन्त कठिन हालात का सामना रहेगा। कार्यक्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम करने पर भी आय अल्प तथा खर्च अधिक रहेंगे। घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। ता. 20 के बाद बिगड़े काम बनेंगे।

मिथुन—मासारम्भ में किसी श्रेष्ठ बन्धु से मुलाकात होगी। बिगड़े काम बनेंगे। परिवार में कोई मंगल कार्य होगा। उत्तरार्द्ध भाग में धन का अपव्यय बढ़ेगा। बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। पित्त एवं पेट विकार आदि के कारण शरीर कष्ट हो।

कर्क—मासारम्भ से ही मंगल एवं केतु का संचार इसी राशि में होने से आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। व्यवसायिक एवं घरेलू उलझनों के कारण तनाव अधिक रहेंगे। ता. 20 से शुक्र शुभ स्थिति में होने से धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी।

सिंह—पूर्वार्द्ध भाग में सूर्य उच्च स्थिति में होने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे। अकस्मात् धन लाभ के अवसर भी प्राप्त होंगे। मंगल के कारण गृह में कोई मंगल कार्य होगा। उत्तरार्द्ध भाग में धन का अपव्यय व गुप्त परेशानी होगी।

कन्या—राशिस्वामी बुध भाग्यस्थान में होने से पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। विघ्न बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। कुछ बिगड़े हुए काम बनेंगे। परिवार में कोई खुशी का समागम बनेगा। धर्म-कर्म पर खर्च होंगे।

तुला—मासारम्भ ता. 3 से शुक्रास्त होने से बनते कामों में अड़चनें रहेंगी। भाई-बन्धुओं से मन-मुटाव रहे। आय कम व खर्च अधिक होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में संघर्ष के बाद आय के साधनों में सुधार होगा। परन्तु भूमि, वाहन आदि साधनों पर खर्च अधिक रहेंगे।

वृश्चिक—मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल भाग्य स्थान में नीच राशिगत होकर केतु युक्त है। जिससे इस सप्ताह के मध्य आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य में कमी तथा बनते कामों में विघ्न बाधाएँ उत्पन्न रहेंगी।

धनु—मासारम्भ में इस राशि पर गुरु का संचार चल रहा है। अतः उलझनों एवं अड़चनों के बावजूद आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु पंचमेश अष्टम भावस्थ होने से स्वास्थ्य विकार एवं कार्यों मे विघ्न भी पैदा होंगे। मासान्त में अचानक धन लाभ एवं शुभ समाचार मिलेगा।

मकर—विघ्नों के बावजूद पराक्रम एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु पर्याप्त लाभ नहीं होगा। स्त्री व सन्तान की ओर से खुशी प्राप्त होगी। माता-पिता का सहयोग शुभ कार्यों में लाभकारी रहेगा। विदेशी कार्यों में प्रगति के आसार बनेंगे। कोई शुभ समाचार मिलेगा।

कुम्भ—खर्चों की अधिकता रहेगी। मित्रों के सहयोग से किसी समस्या का समाधान होगा। आर्थिक स्थिति को सुधारने के प्रयास तेज करने पड़ेंगे। मासान्त में मनोरंजन एवं भोग-विलास पर खर्च अधिक होंगे।

मीन—मासारम्भ में अकस्मात् धन लाभ एवं भाग्योन्नति के योग हैं। शुभ कार्य पर खर्च होगा। माता-पिता व मित्रों के सहयोग से रुका हुआ कार्य बनने के योग हैं। ता. 4 के पश्चात् व्यापारिक यात्रा भी होगी। मासान्त में खर्चों में अकस्मात् वृद्धि होगी।

राशिफल–जून–सन् 2008 ई.

मेष—ग्रहयोगानुसार इस मास कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मंगल-केतु योग के कारण वाहन से चोटादि लगने का भय है, सावधानी बरतें।

वृष—मासारम्भ में वृष राशि पर शुक्र की शुभ स्थिति होने से दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यापार को बढ़ाने में मित्रों और सम्बन्धियों का सहयोग मिलेगा। धर्म-कर्म में विशेष रुचि होगी। समाज में उच्च प्रतिष्ठितजनों से सम्पर्क होगा। मासान्त में वाहनादि पर खर्च अधिक होंगे।

मिथुन—मासारम्भ में बुध वक्री है। आरम्भ में गत किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। गुरु की दृष्टि होने से वृथा खर्च तथा मानसिक चिन्ता में वृद्धि रहेगी।

कर्क—इस मास में संघर्षमयी परिस्थितियों के बावजूद गुज़ारे योग्य धन की प्राप्ति होगी। मानसिक चिन्ताएँ व फिज़ूलखर्ची बढ़ेगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। व्यापार-नौकरी में तनाव उत्पन्न होगा। उत्तरार्द्ध में स्त्री व सन्तान की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा। परन्तु केतु के कारण मानसिक तनाव रहेगा।

सिंह—मासारम्भ में कोई पारिवारिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। गत मास के बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार होगा। यद्यपि गुज़ारे योग्य आय प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे, परन्तु खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। निकट बन्धुओं के साथ मन-मुटाव होने के योग हैं।

कन्या—इस राशि पर शनि साढ़ेसाती होने से तनाव एवं क्रोध अधिक रहेगा। किन्तु गुरु की शनि पर दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। उच्च प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्बन्ध बढ़ेंगे।

तुला—हालात में सुधार व कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेलजोल होगा। धन का खर्च सवारी आदि साधनों पर होगा। परन्तु शुक्रास्त होने से आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। व्यवसाय में आर्थिक परेशानियाँ उत्पन्न होंगी।

वृश्चिक—आय की स्थिति में कुछ सुधार होगा। निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। परन्तु ता. 21 से मंगल-शनि का योग होने के कारण बनते कामों में अड़चनें पड़ने के संकेत हैं। स्वास्थ्य में भी गड़बड़ रहेगी। अपने भी परायों जैसे व्यवहार करेंगे।

धनु—मासारम्भ में मंगल अष्टम भावस्थ हैं, जिससे स्वभाव में क्रोध एवं तनाव अधिक रहेगा। आर्थिक कारणों से घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। धर्म-कर्म की ओर प्रवृत्ति अधिक रहेगी।

मकर—मासारम्भ से राशि पर मंगल की उच्चदृष्टि पड़ने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी, धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। परन्तु राशि स्वामी शनि अष्टम में होने से दुर्घटना से चोटादि लगने की आशंका है, सावधानी बरतें।

कुम्भ—इस मास मंगल की दृष्टि होने से व्यर्थ की दौड़धूप अधिक रहेगी। आय कम व वृथा खर्च भी बढ़ेंगे। राशिस्वामी शनि सप्तम में शत्रु राशिगत होने से बनते काम बिगड़ेंगे। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। स्वभाव में क्रोध, उत्तेजना बढ़ेगी।

मीन—यह मास शुभ फलदायक रहेगा। पदोन्नति व धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में खुशी के अवसर प्राप्त होंगे। सुख के साधन बढ़ेंगे। मान-प्रतिष्ठा पढ़ेगी। धर्म-कर्म की ओर रुचि रहेगी। मासान्त में मंगल की स्थिति के कारण खर्च में वृद्धि और घरेलू उलझनें रहेंगी।

राशिफल–जुलाई–सन् 2008 ई.

मेष—मास में मंगल-शनि का मेल (पंचम में) होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। आय कम व खर्च अधिक होंगे। स्वास्थ्य भी कुछ नर्म रहे। अपने नज़दीकी लोग भी परायों जैसा बर्ताव करेंगे।

वृष—मासारम्भ में राशि स्वामी शुक्र दूसरे मिथुन राशिगत हैं। ग्रह स्थिति अनुसार स्वास्थ्य कुछ नर्म रहे। स्वभाव में तेज़ी रहेगी। व्यर्थ की भाग-दौड़ अधिक होगी। विरोधी हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होती रहेगी।

मिथुन—ता. 6 से 22 के मध्य बुध मिथुन में संचार करने से शुभ फल मिलेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। परन्तु वाहन आदि साधनों पर खर्च अधिक होगा। मासान्त में शरीर के कुछ अस्वस्थ रहने के संकेत हैं।

कर्क—इस मास में विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने के संकेत मिलते हैं परन्तु आप दूसरों पर विश्वास करके चलेंगे तो काम बिगड़ सकते हैं। कुछ अप्रत्याशित लाभ होंगे परन्तु ता. 16 से भ्रामक धारणाएँ उत्पन्न होंगी। मानसिक तनाव व मन उदासीन रहेगा।

सिंह—मासारम्भ में मंगल-शनि का संचार इस राशि पर है। अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी निर्वाह योग्य धन लाभ रहे। खर्चों की अधिकता रहे। व्यवसाय या सर्विस में कठिन समस्याओं का सामना भी रहेगा। मासान्त में किसी शुभ कार्य पर खर्च होंगे।

कन्या—यह मास व्यवसाय की दृष्टि से शुभ होगा। नई योजना को कार्य रूप देने में अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। सरकारी कार्यों में कुछ विघ्नों के उपरान्त सफलता मिलेगी। मासान्त में घरेलू एवं आर्थिक उलझनों और परेशानियाँ बढ़ेंगी।

तुला—मासारम्भ में शुक्र क्रमशः नवम व दशम भाव में होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की सहायता से बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। नए कार्य की योजना बनेगी। धन लाभ और उच्च व्यक्तियों से सम्पर्क बनेंगे। गत किए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी।

वृश्चिक—इस राशि पर मंगल की दृष्टि होने से क्रोध व अशान्ति बढ़ेगी। भाई-बन्धुओं से वृथा तकरार, धन का अपव्यय, शरीर कष्ट तथा पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी। वाहनादि से चोटादि का भय रहेगा।

धनु—अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में भी निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। खर्च की अधिकता रहेगी। व्यवसाय व सर्विस में उलझनें उत्पन्न होंगी। मासान्त में आर्थिक एवं घरेलू उलझनों के कारण मन संतप्त रहेगा।

मकर—पूर्वार्द्ध में विघ्न/बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। ता. 16 से घरेलू उलझनें व तनाव बढ़ेगा। कलह-क्लेश के कारण गृह में अशान्ति होगी। भाई-बन्धुओं का सहयोग कम होगा। खर्चों में वृद्धि होगी। **'शिव मन्त्रावली'** पुस्तक में से श्रीशिव पंचाक्षरस्तोत्र का पाठ करके विधिपूर्वक शिवलिङ्ग का पूजन करना शुभ एवं कल्याणकारी रहेगा।

कुम्भ—इस राशि पर मंगल की दृष्टि होने से पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। ता. 14 से कठिन हालात के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे। परिवार में मन मुटाव होगा। मासान्त में व्यवसायिक कार्यों में अड़चनों का सामना होगा।

मीन—मासारम्भ में कार्य बनते-बिगड़ते रहेंगे। नई योजना को कार्य रूप देने में विलम्ब होगा। समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। उत्तरार्द्ध में अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। पारिवारिक सहयोग से धनागमन के साधन बढ़ेंगे।

राशिफल—अगस्त—सन् 2008 ई.

मेष—पूर्वार्द्ध भाग में कार्य-व्यवसाय में उलझनें व परेशानियाँ अधिक रहेंगी। खर्च बढ़ेंगे। अत्यधिक दौड़-धूप करने पर भी धन-लाभ अल्प रहेंगे। मास के उत्तरार्द्ध में आकस्मिक धन-लाभ के योग हैं।

वृष—मासारम्भ में ही राशिपति शुक्र चतुर्थ स्थान में शनि युक्त होगा। वृथा दौड़-धूप एवं व्यय अधिक होंगे। घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहे। भूमि, मकान एवं जायदाद सम्बन्धी उलझनों के कारण गुप्त परेशानियाँ होंगी। उत्तरार्द्ध में आय कम एवं आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे।

मिथुन—मासारम्भ में बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ पड़ने के संकेत हैं। स्वास्थ्य कुछ नर्म, आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। निकट बन्धुओं से कुछ मतान्तर पैदा होंगे। मास के उत्तरार्द्ध में हालात कुछ बेहतर होंगे। कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

कर्क—मासारम्भ से सूर्य की स्थिति इस राशि पर होने से अत्यधिक संघर्ष के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मानसिक तनाव एवं चोटादि का भय रहेगा। उत्तरार्द्ध में क्रोध की अधिकता से कार्य बिगड़ने के योग हैं। सावधानी बरतें।

सिंह—कारोबार में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। अत्यन्त कठिनाई से निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। खर्चों की अधिकता से मन परेशान रहेगा। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहेगी। शरीर कुछ अस्वस्थ रहेगा। उत्तरार्द्ध में विदेश सम्बन्धी योजना बनेगी।

कन्या—इस मास मिश्रितफल रहेगा। धन लाभ के साथ-साथ खर्च भी अत्यधिक रहेगा। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण परेशानियाँ बढ़ेंगी। ता. 15 के पश्चात् आकस्मिक धन लाभ होंगे, परन्तु मनोरंजन एवं विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक रहेंगे। देश-विदेश में सम्पर्क सूत्र बढ़ेंगे।

तुला—मासारम्भ में शुक्र लाभस्थान में है। उलझनों के बावजूद लक्ष्य प्राप्ति में सफलता मिलेगी। शुभ मांगलिक कार्यों पर खर्च होगा। आत्मीय-जनों के संसर्ग में महत्त्वकांक्षाएँ फलीभूत होंगी। विदेश सम्बन्धी शुभ सूचना मिलेगी। उत्तरार्द्ध में खर्चों की अधिकता होगी।

वृश्चिक—इस मास मिश्रितफल प्राप्त होगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर धन लाभ अल्प और मानसिक तनाव रहेगा। मासान्त में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। विद्या के क्षेत्र में नये सम्पर्कों से विशेष रुचि पैदा होगी। शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा।

धनु—इस राशि पर गुरु की स्थिति अभी रहेगी। जिससे धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों की ओर रुचि बढ़ेगी। अच्छे लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।

मकर—कार्य व्यवसाय में परिश्रम के पश्चात् लाभ की सम्भावना बढ़ेगी। विलासादि कार्यों पर खर्च अधिक होगा। परिवार में धार्मिक उत्सव एवं शुभ कार्य होंगे। भूमि व वाहनादि का क्रय-विक्रय करने का विचार बनेगा।

कुम्भ—व्यवसाय एवं नौकरी में उन्नति के लिए विशिष्ट व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त करें। विदेशी कार्यों में प्रगति व सफलता के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। धन लाभ में विघ्न उत्पन्न होंगे। परन्तु राशि पर शनि की स्वगृही दृष्टि पड़ने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

मीन—कारोबार मध्यम रहेगा। विघ्न बाधाओं के बावजूद धन की प्राप्ति होगी। विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। घर-परिवार की तरफ से चिन्ता उत्पन्न होगी। कुछ घरेलू परेशानियाँ, मानसिक तनाव होगा। मासान्त में स्थिति में सुधार होगा।

राशिफल—सितम्बर—सन् 2008 ई.

मेष—मासारम्भ से मेष राशि पर गुरु की शुभ एवं मंगल की स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। जिससे आय की स्थिति में सुधार रहेगा। समुचित आय के साधन बनेंगे। किसी प्रियजन से मिलाप होगा। मासान्त में विलास, वाहन आदि कार्यों पर व्यय अधिक होगा।

वृष—मासारम्भ में शुक्र नीच है जिससे व्यवसाय में उतार-चढ़ाव एवं अन्य परेशानियाँ रहेंगी। स्थानपरिवर्तन एवं वृथा भागदौड़ भी होगी। ता. 19 के बाद शुक्र तुला राशि में जाने से बिगड़े कामों में कुछ सुधार होगा। सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

मिथुन—मासारम्भ में बुध उच्चराशि में संचार करने से अप्रत्याशित लाभ की खुशी तो प्राप्त होगी पर व्यय भी अधिक होगा। विशिष्ट व्यक्तियों और समृद्ध मित्रों के सहयोग से अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में धर्म-कर्म में रुचि, शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।

कर्क—मासारम्भ में कार्य-व्यस्तताएँ अधिक रहेंगी, परन्तु संघर्ष के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 16 के पश्चात् कोई बिगड़ा हुआ काम बनेगा। कार्य-व्यवसाय में लाभ व पद उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु शनि साढ़सति के कारण मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें भी रहेंगी।

सिंह—मासारम्भ में सिंह राशि पर शनि व सूर्य का संचार है। जिससे कार्य-व्यवसाय में अत्यन्त संघर्षपूर्ण व कठिन हालात बनेंगे। आय के स्रोत सीमित रहें, परन्तु खर्चों में अधिकता रहेगी। मासान्त में धन का नुकसान होगा।

कन्या—परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। कारोबार में कई उतार-चढ़ाव व आर्थिक परेशानियाँ रहेंगी। स्थान परिवर्तन के भी योग हैं। मासान्त में आर्थिक क्षेत्र में उन्नति के योग हैं। किसी उच्चाधिकारी के साथ सम्पर्क बनेंगे।

तुला—मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र नीच राशि में होने से व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़धूप एवं खर्च अधिक रहेगा। अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन लाभ अधिक नहीं हो पाएगा। ता. 19 से शुक्र तुला में ही होने से धन लाभ के चांस बनेंगे। बिगड़े कामों में सुधार होगा।

वृश्चिक—इस मास मिश्रित फल प्राप्त होगा। नौकरी व व्यापार में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु पारिवारिक कारणों से लाभ कम होगा। भाई बन्धु से तनाव और परिवार में उलझनें बढ़ेंगी।

धनु—यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु विरोधियों के द्वारा अड़चनों के कारण विशेष लाभ में कमी होगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात लाभकारी रहेगी। इस राशि पर मंगल की दृष्टि पड़ने से आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे।

मकर—किसी मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। निर्वाह योग्य धन राशि के साधन बने रहेंगे। परन्तु शनि की ढैय्या की कारण आर्थिक परेशानियां तथा पारिवारिक व व्यवसायिक उलझनें भी होंगी। वाद-विवाद से बचें।

कुम्भ—मासारम्भ में इस राशि पर सूर्य व शनि की दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप कार्य व्यवसाय में विघ्न व उलझनें अधिक रहेंगी। मानसिक तनाव व उत्तेजना भी बढ़ेगी। परन्तु उत्तरार्द्ध में निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। धर्म-कर्म की ओर प्रवृत्ति भी रहेगी।

मीन—कुछ सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। परन्तु मंगल की दृष्टि होने से धन का अधिक व्यय, मनोरंजन आदि कार्यों पर खर्च होगा। उत्तरार्द्ध में किसी विशिष्ट व्यक्ति के सम्पर्क से समाधान मिलेगा। देश-विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी।

राशिफल–अक्तूबर–सन् 2008 ई.

मेष—राशिस्वामी मंगल की मेष राशि पर स्वगृही दृष्टि पड़ने से गत् रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। विदेशी सम्बन्धों से लाभ के चांस बनेंगे। उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। मास के द्वितीय भाग में वाहनादि पर खर्च होंगे।

वृष—मासारम्भ में कुछ शुभ समाचार मिलेंगे। धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। परन्तु खर्चों की अधिकता से मानसिक तनाव होगा। ऐशो-आराम की चीजों पर धन का व्यय होगा। उत्तरार्द्ध में व्यर्थ की यात्रा होगी। इस राशि की स्त्रियों के लिए फल सामान्यत: शुभ होगा।

मिथुन—मासारम्भ में राशिस्वामी बुध उच्चराशि में होने से आय के साधनों में सुधार होगा। किसी प्रियजन से मुलाकात होगी। स्त्री व सन्तान की ओर से शुभ समाचार प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध भाग में घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण अशान्ति होगी। खर्च भी अधिक रहेंगे।

कर्क—मासारम्भ में आय कम और खर्च अधिक होगा। अकस्मात् विशिष्ट-जनों से सम्पर्क बढ़ेगा और वाहनादि सुखों पर धन व्यय होगा। ता. 20 के बाद व्यर्थ की भागदौड़, स्वभाव में तेज़ी और सांझेदारी के कार्यों में हानि के योग हैं।

सिंह—ता. 16 से राशि स्वामी सूर्य नीच राशि (तुला) में होगा, फलस्वरूप व्यवसाय में अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। ता. 19 के बाद भूमि, मकान एवं वाहन सम्बन्धी क्रय-विक्रय करने की योजना बनेगी।

कन्या—आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाओं का सामना रहेगा। यात्रा में चोटादि का भय रहेगा। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के कुछ साधन बनते रहेंगे। परन्तु खर्चों की मात्रा अधिक होगी।

तुला—पूर्वार्द्ध भाग में शुक्र स्वराशिगत है, बिगड़े कार्यों में सफलता मिलेगी। स्त्री सम्बन्धी सुखों में वृद्धि तथा व्यवसाय में भी धनागम के साधन बढ़ेंगे। गृह में कोई शुभ कार्य सम्पन्न होगा। विद्या में सफलता, जमीन-जायदाद सम्बन्धी कार्य में लाभ की सम्भावना होगी। उत्तरार्द्ध भाग में स्वास्थ्य नर्म एवं धन का अपव्यय रहेगा।

वृश्चिक—मासारम्भ में राशि स्वामी द्वादश भाव में होने से वृथा दौड़-धूप अधिक रहेगी। आय अल्प, परन्तु मनोरंजन आदि कार्यों पर सवारी आदि सुख-साधनों पर खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य में अस्थिरता होगी। मासान्त में कोई खुशी का समाचार प्राप्त होगा।

धनु—सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी परन्तु अधिकांश समय वृथा कार्यों में व्यतीत होगा। ता. 3, 4 को किसी प्रियबन्धु से व्यर्थ का तनाव उत्पन्न हो। उत्तरार्द्ध भाग में विदेशी सम्पर्क से लाभ होंगे।

मकर—इस राशि पर मंगल की उच्चदृष्टि रहेगी। जिससे कठिन एव संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बढ़ेगा। नए मित्रों के साथ सम्पर्क भी बनेंगे।

कुम्भ—अत्यन्त कठिनाइयों के बावजूद गुज़ारे योग्य धन के साधन मिलते रहेंगे। दीर्घ लम्बी यात्रा की योजना बनेगी। किसी प्रिय बन्धु से मुलाकात होगी। अचानक खर्च बढ़ेंगे। घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। कार्तिक संक्रान्ति को कार्तिक माहात्म्य का पाठ व दान आदि करना शुभ होगा।

मीन—कारोबार मध्यम एवं धन लाभ साधारण रहेगा। रोज़गार के लिए दौड़-धूप अधिक होगी। किसी प्रियजन की सहायता से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। पदोन्नति एवं मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

राशिफल–नवम्बर–सन् 2008 ई.

मेष—मासारम्भ में मेष राशि पर मंगल व गुरु दोनों योगकारक ग्रहों की दृष्टियाँ पड़ने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। ता. 8 से मंगल अष्टम में संचार करने से बनते कामों में विघ्न/बाधाएँ व खर्चों में वृद्धि होगी।

वृष—मासारम्भ में इस राशि पर शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहेगी। जिससे अकस्मात् धन लाभ के चांस मिलेंगे। कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। ता. 7 से शुक्र अष्टम स्थान में जाने से बनते कामों में विघ्न पैदा होंगे। आय कम और खर्च अधिक रहेगा।

मिथुन—मासारम्भ में राशि स्वामी बुध पंचम शुभ स्थान में होने से अत्यधिक परिश्रम के बाद धन लाभ और सुख साधनों में वृद्धि होगी। धन का दुरुपयोग भी होगा। व्यर्थ की भागदौड़ और धार्मिक कार्यों पर खर्च होगी। उत्तरार्द्ध में व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें।

कर्क—मासारम्भ में व्यर्थ की भागदौड़ अधिक और परिवार में कुछ मनमुटाव रहेगा। उत्तरार्द्ध में किसी मित्र की सहायता से रुके हुए कार्य बनेंगे। धन लाभ और परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे।

सिंह—इस राशि पर शनि की साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव रहेगा, जिससे बनते कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। किसी से धोखा मिल सकता है। खर्चों की अधिकता से घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा। शरीर कष्टमय रहेगा।

कन्या—राशिस्वामी बुध द्वितीय स्थान पर संचार करने से व्यापार-कारोबार में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मेल-जोल और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 12-13 को पारिवारिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। धन सम्बन्धी परेशानियाँ उत्पन्न होंगी।

तुला—पूर्वार्द्ध में सूर्य इस राशि पर नीचावस्था में होगा जिससे व्यर्थ की भागदौड़ और खर्च अधिक होगा। स्वास्थ्य में खराबी और खर्च बहुत अधिक रहेंगे। कार्य-व्यवसाय में संघर्ष और परिश्रम करने पर ही निर्वाह योग्य धन प्राप्त होगा। उत्तरार्द्ध में बिगड़े कामों में सुधार होगा।

वृश्चिक—मासारम्भ में राशिस्वामी मंगल द्वादश भाव में होने से आय कम तथा खर्च अधिक रहेंगे। वृथा दौड़धूप भी बढ़ेगी। ता. 8 से मंगल इसी राशि में संचार करेगा। जिससे आय के साधनों में वृद्धि तथा कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा।

धनु—मासारम्भ में गुरु की शुभ स्थिति होने से इस मास में कुछ बिगड़े काम बनेंगे। सुख के साधनों में वृद्धि होगी। कुछ उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे। मासान्त में घरेलू कलह के कारण मन विक्षिप्त रहेगा। परन्तु निर्वाह योग्य आय साधन बनते रहेंगे।

मकर—मासारम्भ से ही राशिस्वामी शनि अष्टम स्थान में होगा। अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। यद्यपि धन प्राप्ति के अवसर मिलते रहेंगे परन्तु खर्च की अधिकता तथा विरोधियों के कारण मन में अशान्ति रहेगी।

कुम्भ—मासारम्भ में आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। किसी प्रिय बन्धु से मिलाप होगा। अधिकांश समय उल्लासपूर्ण कामों में व्यतीत होगा। उत्तरार्द्ध भाग में गुज़ारे योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। परन्तु कार्य-व्यवसाय में बाधाएँ अधिक रहेंगी।

मीन—अचानक धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे और नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु व्यक्तिगत कारणों से उचित लाभ प्राप्त नहीं होगा। आय कम और खर्च की अधिकता रहेगी। ता. 15 के बाद प्रियजन से मुलाकात होगी। धर्म-कर्म में भी रुचि रहेगी।

राशिफल–दिसम्बर–सन् 2008 ई.

मेष—मंगल की अशुभ स्थिति के कारण मास के पूर्वार्द्ध भाग में आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। कार्य-व्यवसाय में वृथा दौड़-धूप अधिक तथा बनते कामों में अड़चनें होंगी। उत्तरार्द्ध में निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे, परन्तु मनोरंजनादि कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।

वृष—किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से नौकरी व व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। मनोरंजन कार्यों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 20 के पश्चात् मित्रों से मेलजोल और शुभ समाचार मिलेंगे। परन्तु शनि की ढैय्या आलस्य में वृद्धि, व्यर्थ का तनाव रहेगा। सावधानी बरतें।

मिथुन—इस मास मिश्रित फल प्राप्त होगा। नौकरी व व्यापार में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु पारिवारिक कारणों से लाभ कम होगा। भाई-बन्धु से तनाव और परिवार में उलझनें बढ़ेंगी। ता. 20 के बाद लेन-देन करते समय व्यर्थ की परेशानी रहे।

कर्क—मासारम्भ से अकस्मात् किसी पारिवारिक परेशानी का सामना होगा। परन्तु ता. 9 से गुरु की इस राशि पर शुभ दृष्टि होने से कुछ रुके हुए कामों में सुधार होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु शनि की साढ़ेसती के कारण मानसिक तनाव रहेगा।

सिंह—उलझनों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि होगी। आय के साधन बढ़ेंगे। निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। स्त्री व सन्तान की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा। विदेशी मित्रों से समागम होगा। मासान्त में अधिकांश समय मनोरंजक कार्यों एवं वृथा खर्चों में व्यतीत होगा।

कन्या—अधिकांशतः धन मनोरंजन कार्यों पर खर्च होगा। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। घर-परिवार की तरफ से अकस्मात् खुशी का समाचार मिलेगा। वस्त्र लाभ, वाहन आदि सुख मिलेगा। किसी प्रियजन की तरफ से तोहफा मिलने की सम्भावना होगी।

तुला—कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता के योग हैं। किसी उच्च प्रतिष्ठित मित्र के सहयोग से बिगड़ा कार्य बनेगा। धर्म-कर्म की ओर रुचि बढ़ेगी। परन्तु शुक्र राहुयुक्त होने के कारण मानसिक दबाव भी रहेगा। अधिकांश समय मनोरंजन एवं वृथा कार्यों में व्यतीत होगा।

वृश्चिक—निर्वाह योग्य धन लाभ संघर्ष के पश्चात् ही प्राप्त होंगे। मांगलिक कार्यों पर धन व्यय अधिक होगा। परिवारिक सुख एवं मनोरंजन में वृद्धि होगी। कुछ बिगड़े कार्यों में सफलता मिलेगी। मासान्त में वृथा भागदौड़ एवं खर्च अधिक रहेंगे। शिव-उपासना लाभप्रद होगी।

धनु—पूर्वार्द्ध भाग में कार्य व्यवसाय के लिए दौड़ धूप अधिक रहेगी। अत्यधिक परिश्रम करने पर धन लाभ अल्प होगा। घरेलू उलझनें एवं आर्थिक परेशानियाँ अधिक रहेंगी। उत्तरार्द्ध भाग में कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे।

मकर—इस मास में राहु के कारण व्यवसाय में संघर्ष व भागदौड़ अधिक होगी। व्यर्थ चिन्ता और बनते कार्यों में विलम्ब होने के योग हैं। उत्तरार्द्ध में परिवार में खुशी का समाचार प्राप्त होगा। विदेश से पत्राचार भी होने के योग हैं। सवारी आदि पर खर्च अधिक होगा।

कुम्भ—अत्यधिक संघर्ष के बावजूद कार्यों में सफलता और विजयी होगी। धन और सुख साधनों में आंशिक वृद्धि होगी। मासान्त में मित्रों की तरफ से तोहफे मिलेंगे। विदेशी मित्रों व सम्बन्धियों से मिलाप होगा। भोग-विलास की वस्तुओं पर अधिक खर्च होगा।

मीन—पूर्वार्द्ध भाग विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। मासान्त में बनते कामों में विघ्न रहेंगे। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि होगी।

वि. संवत् २०६५ में सम्वत्सर, राजा-मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्री गणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्- चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवी दयालुं स्व प्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुख सम्पत्ति हेतवे। **प्लव** नामक नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे त्रित्रिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३३) वर्ष प्रवेशे पं० पन्नालाल अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, स्वपुत्रौ सहिताहं कूर्वे पंचांग दिवाकरम्॥

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,१०९ के अन्तर्गते, श्रीविक्रमी संवत् २०६५, कलि (कल्कि) संवत् ५१०९, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२४४, सप्तर्षि संवत् ५०८४, श्रीबुद्ध संवत् २६३१/३२, श्रीमहावीर निर्वाण संवत् २५३३/३४, शक संवत् १९३०-३१, हिजरी सन् १४२९-३०, इंग्लिश सन् २००८-०९ ई., खालसा संवत् ३१०, नानकशाही सम्वत् ५४०, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

प्लव नामक सम्वत्सर का फल

बार्हस्पत्यमान ३५वाँ **प्लव नाम का नया सम्वत् २०६५, चैत्रशुक्ल प्रतिपदा, ६ अप्रैल, सं० २००८ ई०, रविवार से प्रारम्भ होगा।** (देखें पृष्ठ—) शुभ संकल्प एवं धार्मिक अनुष्ठान आदि कार्यों में प्लव नामक सम्वत्सर का प्रयोग प्रशस्त रहेगा। शास्त्रों में इसका फल इस प्रकार से वर्णित है—

प्लवाब्दे निखिलाधात्रीवृष्टिभिः प्लाविता भवेत्।
रोगाकुलात्वीतिभीतिः सम्पूर्णवत्सरे फलम्॥

अर्थात् जिस वर्ष **प्लव नामक सम्वत्** का आगमन हो, उस वर्ष पृथ्वी पर वर्षा बहुत हो, अधिकांश लोग विचित्र प्रकार के रोगों से दुःखी हों। लोग विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक प्रकोपों; जैसे टिड्डीदल, विषाक्त कीटाणुओं, अल्पवृष्टि, अनावृष्टि, अतिवृष्टि, भूस्खलन, अग्निकाण्ड, बाढ़, भूकम्प एवं दुर्घटनाओं आदि आपदाओं के कारण भयभीत एवं दुःखी होवें। कहीं चौपायों को पीड़ा एवं कृषि की हानि के कारण अनाज की कमी तथा दूध, जल आदि पेय वस्तुओं की कमी का सामना हो।

नारद संहितानुसार **प्लव नामक** संवत्सर आने पर राजा (प्रशासक) वर्ग विशेष तौर पर शोभायमान एवं लाभान्वित होते हैं। प्रजा के भी विशेष वर्गों में नित्य नए उत्सव या पर्व होते हैं। पृथ्वी पर सुख के साधनों में वृद्धि होती है—

दीप्यन्ते सततं भूपाः प्लवाब्देप्लवगा जनाः।
राजते पृथिवी सर्वा सततं विविधोत्सवैः॥ (नारद संहिता)

❑ रोहिणी का वास सन्धि पर ❑

खण्डवृष्टिः तदा सर्वधान्याप्तयः—यदि रोहिणी का वास सन्धि पर होगा जिससे देश में खण्ड अर्थात् आसमान वर्षा रहेगी, कुछ प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा के कारण कहीं बाढ़, भूस्खलन, कृषि आदि की हानि हो और कुछ प्रदेशों में अल्पवर्षा के कारण फसलों एवं अनाज में कमी रहे। गेहूँ, धान्यादि के मूल्यों में तेजी हो। कुछ प्रदेशों में खण्ड वर्षा के बावजूद गुज़ारे योग्य कृषि के साधन उपलब्ध होंगे।

समय (सम्वत्) का वास—सर्वधान्यं महर्घं, स्यात् वणिकवेश्मनि संस्थिते॥ वैश्य के घर में होगा, जिससे सम्वत् के दौरान धन का प्रसार अधिक रहेगा। महंगाई बढ़ेगी, व्यापार में स्वार्थपरता एवं धन-लोलुपता बढ़ेगी। क्रय-विक्रय में लगे व्यापारी लोग विशेषतः लाभान्वित होंगे। अमीर और ग़रीब के मध्य आर्थिक दूरियाँ और बढ़ेंगी। सर्व प्रकार के खाद्यान्न और दैनिक जीवनोपयोगी **वस्तुओं में तेजी,** सामान्य वर्ग में असन्तोष बढ़ेगा।

समय (सम्वत्) का वाहन—अश्व होने से साल में असमान (खण्ड) वर्षा रहेगी। अर्थात् कहीं बहुत अधिक तो कहीं अत्यल्प वर्षा रहे। अनेक प्रदेशों में कहीं बाढ़, भूस्खलन, कृषि हानि आदि प्राकृतिक उत्पाद हों। राजनीति के क्षेत्रों में भी उथल-पुथल एवं अनिश्चितताएं रहें। अधिकांश लोग बाह्य आकर्षणों में आसक्त होंगे।

१. सम्वत् के राजा सूर्य का फल—

सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गौषु जनेषु पीडा।
स्वल्पं सुधान्यं फलं अल्पवृक्षाश्चौराग्नि बाधानिधनं नृपाणाम्॥

संवत् का राजा सूर्य हो, तो उस वर्ष देश के कुछ भागों में उपयोगी वर्षा की कमी रहे। गायों, भैसों आदि में दूध की कमी रहे। सामान्य लोगों में विग्रह, कलह-क्लेश, दुःख एवं कष्टादि अधिक हों। वृक्षों में फल, फूल एवं मौसमी फल कम लगें। धान्य, ईख आदि की फसल कम हो। चोरी, डकैती, लूटमार, रेल यान, वाहन, अग्निकाण्ड आदि की वारदातें अधिक होंगी। जातीय एवं साम्प्रदायिक उपद्रव अधिक घटित हों। किसी राजकीय नेता का आकस्मिक निधन हो।

स्थानभेद से राजा चन्द्र का फल—अक्षांश भेद से सूर्योदय में अन्तर होने के कारण उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम भारत को छोड़कर शेष भारत में राजा चन्द्र (स्पष्टता के लिए देखें पृष्ठ 72, 73) होगा।

चन्द्रे नृपे मंगल शोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
[illegible] नृपाणां प्रशाम्यति व्याधि जरानराणाम्॥

वर्ष का राजा चन्द्रमा होने से वर्षभर लोगों में शुभ, मंगल कार्य अधिक होंगे। वर्षा अधिक तथा धान्यादि की फसल अच्छी होगी। प्रजा और राजनेताओं (शासकवर्ग) में सुख-साधनों के प्रसार में वृद्धि होगी तथा परस्पर सद्भावना एवं विश्वास बढ़ेगा। कुछ असाध्य रोगों सम्बन्धी नवीन अनुसंधान होंगे तथा उनके निवारण (उपाये) विकसित होंगे। नए राजाओं का उदय अर्थात् शासक-वर्ग एवं राजनेताओं का प्रभुत्व बढ़ेगा। अनाज, धान्य, मौसमी फलों, चावल की अच्छी पैदावार होगी। स्त्रियों का प्रभाव क्षेत्र बढ़ेगा।

२. मन्त्री सूर्य का फल—

नृपभयं गदतोऽपि हि तस्करात् प्रचुर धान्यधनादि महीतले।
रसचयं हि समर्धतमं तदा रवि रमात्यपदं हि समागतः॥

जिस वर्ष सूर्य को मन्त्री पद प्राप्त हो, उस वर्ष राजाओं को भय अर्थात् प्रशासकों में परस्पर विरोध एवं टकराव बढ़े। (केन्द्र व राज्य सरकारों में मतभेद रहेंगे) पृथ्वी पर धन-धान्य आदि सुख साधनों का प्रसार अधिक बढ़े, परन्तु राजाओं (प्रशासन), चोरों-लुटेरों एवं रोगों का आधिक्य भी रहे। पेयजल, दूध, तैल, ईख, फल, सब्जियाँ इत्यादि रसदार वस्तुओं की कमी एवं उनमें समर्घता (तेजी) हो। अन्य जनोपयोगी वस्तुओं के भावों में भी तेजी हो।

राजा और मन्त्री एक ही ग्रह सूर्य

ध्यान रहे, इस वर्ष राजा और मन्त्री के दोनों पद सूर्य के पास हैं। जिस वर्ष राजा का पद और मन्त्री का पद एक ही ग्रह के पास हो, तो उस वर्ष विभिन्न देशों के राजनेता, निरंकुश, स्वार्थपूर्ण एवं मनमाना आचरण करेंगे। अग्निकाण्ड, भूकम्प, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप तथा साम्प्रदायिक हिंसक एवं जातीय उपद्रव अधिक होंगे। कहीं वर्षा में कमी और ऊष्णता (गर्मी) ज्यादा रहे। लोगों में क्रोध और आवेश के कारण हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। सत्तारूढ़ राजनेताओं एवं विपक्षी नेताओं के मध्य टकराव व खींचातानी अधिक हो। अनाज, फलों, सब्जियों व धानादि की पैदावार कम हो। चोरी, डकैती, लूटमार, अग्निकाण्ड एवं लोगों में क्लिष्ट रोग, तनाव एवं मनोरोग अधिक हों। **अनाज में तेजी के कारण व्यापारी लोग अच्छा मुनाफा उठाएँ।**

स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीडा चौराग्नि-शंका च भयं नृपाणाम्॥

३. सस्येश बुध का फल—

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदा प्रथम सस्यपतौ सति बोधने॥

सस्येश (ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी) बुध हो, तो उस वर्ष बादलों से वर्षा खूब अच्छी हो, देश में सुख-समृद्धि बढ़े, आतंक एवं उपद्रव की घटनाओं में अपेक्षाकृत कमी हो। ब्राह्मण लोग वेद-श्रुति पाठ, यज्ञादि धर्म कार्यों में प्रवृत्त होने लगेंगे। गेहूँ, चने, बाजरा आदि ग्रीष्मकालीन फसलें अच्छी हों।

४. धान्येश चन्द्र का फल—

चन्द्रे धान्याधिपे जाते प्रजावृद्धिः प्रजायते।
गोधूमाः सर्षपाश्चैव गोपुक्षीरं तदावहु॥

अर्थात् धान्य का स्वामी चन्द्रमा हो, तो उस वर्ष जनसंख्या में विशेष वृद्धि होती है। शीतकालीन फसलें जैसे धान्य, चावल, ईख, (गन्ना), गोदूध, कपास आदि वस्तुओं की पैदावार में वृद्धि होगी।

५. मेघेश शनि का फल—

रविसुते जलदस्यपतौ भवेद् विरल वृष्टिवती वसुधा तदा।
मनसि तापकरो नृपतिः सदा विविध रोगरता जनता मता॥

मेघेश (वर्षा का स्वामी) शनि हो, तो पृथ्वी पर विरली वर्षा हो—अर्थात् कहीं अल्प वर्षा हो, और कहीं अति वृष्टि के कारण बाढ़ादि से जन, धन व कृषि की हानि हो। लोग कई प्रकार के रोगों से पीड़ित रहें। प्रशासक एवं नेता लोग मन में क्षोभ एवं सन्ताप करें।

६. रसेश गुरु का फल—

यदि गुरू रसपो जनसौख्यदः कमलवन्ति सरांसि तृणानि च।
जनपदाद्विजपूजनतत्परा गजसुवाजि रथोष्ट्रयुता नृपाः॥

यदि गुरु रसाधिपति हो, तो वर्ष में भौतिक एवं शारीरिक सुखों की वृद्धि हो। घास, तृण, फल-फूलदार वृक्षों की पैदावार अच्छी हो। जनसाधारण विद्वान् ब्राह्मणों की सेवा-सत्कार में तत्पर हों। राजा अर्थात् समाज का नेतृत्व करने वाले नेता लोग हाथी, घोड़े, वाहनादि सुख-साधनों से सम्पन्न हों।

७. नीरसेश मंगल का फल—

नीरसेशोयदा भौमः प्रवाल रक्त वाससाम्।
रक्त चन्दन ताम्राणां अर्ध-वृद्धि र्दिनेदिने॥

धातुओं (नीरसेश) का स्वामी मंगल होने से माणिक्य, मूँगा, पुखराज आदि रत्न, लाल वस्त्र, लाल चन्दन, सोना, पीतल, तांबा, लाख आदि लाल वर्ण की वस्तुओं के मूल्यों में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होगी।

८. फलेश शनि का फल—

यदि शनिः फलपः फलहा भवेत् जनित पुष्पगणस्य दमः सदा।
हिम भयं वर तस्कर जन्तुभीः जनपदो गदराशि महाकुलः॥

फलों का स्वामी शनि हो, तो विभिन्न प्रकार के फलों की कृषि को हानि हो, पुष्पादि के वृक्षों पर भी फूलादि कम लगें। पर्वतीय प्रदेशों पर कहीं असमय हिमपात (बर्फबारी) से हानि हो। चोरी, ठगी, लूटमार, बेईमानी की घटनाएँ अधिक घटित हों। पेचीदा रोगों के कारण अधिकांश लोग व्याकुल रहें।

९. धनेश मंगल का फल—

असम मौल्य करोधरणीसुतः शरदि तापकरस्तुष धान्यहृत्।
सहसिमासि भवेद्विगुणंतदानरपतिः जनशोक विधायकः॥

धनाधिपति मंगल हो, तो व्यापारिक वस्तुओं के मूल्यों में विशेष उतार-चढ़ाव हों। अर्थात् व्यापार में अस्थिरता रहे। असमय वर्षा के कारण गेहूँ, जौं, चने, धान्य आदि की फसलों को हानि पहुँचे। पहले से संग्रह की गई व्यापारिक वस्तुओं को मार्गशीर्ष मास में विक्रय करने से दोगुणा लाभ हो। अधिकांश राजनेता प्रजा में दुःखों का कारण होवें।

१०. दुर्गेश (सेनापति) शनि का फल—

रविसुतेगढपालिनि विग्रहे सकलदेशगताश्चलिता जनाः।
विविधवैरि विशेषित नागराः कृषि धनं शलभैर्मुषितं भुवि॥

सेनापति (दुर्गेश) शनि हो, तो अनेक देशों में आन्तरिक दंगे, फिसाद एवं युद्धभय से आतकिंत लोगों को अन्य स्थानों को पलायन करना पड़े। लोगों में जातीय एवं साम्प्रदायिक झगड़े-फिसाद एवं टकराव की घटनाएँ हों। कहीं चूहों, विषाक्त कीटाणुओं, टिड्डियों, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं से भारी हानि हों।

❑ नवमेघों में काल नामक मेघ का फल ❑

रोगतो विकलता व पुष्पतास्यन्मिथः कलहताक्षमाभृताम्।
काल नाम जलदोदयो यदानैव वर्षति जलं वृषा तदा॥

अर्थात् काल नामक मेघ हो, तो सामान्यतः अच्छे लोग रोग, पीड़ा आदि शारीरिक एवं आर्थिक कष्टों से पीड़ित एवं व्याकुल रहें। प्रशासकों में परस्पर विरोध एवं टकराव के हालात बनें। उपयोगी वर्षा में कमी रहे।

द्वादश नागों में वृष नाम के नाग का फल—

सस्यादिकाल्पत्वं सुतराम ईतितो भयम्॥

वृष नामक नाग राजा होने से वर्ष में अनाजादि की फसलें कम हों। कीट, पतंगों, कीटाणुओं, टिड्डी-दल, विषाक्त वातावरण आदि प्राकृतिक [illegible]

शनि की दृष्टि—गत संवत् २०६४ में 16 जुलाई, 2007 ई० से सिंह राशि में संचार कर रहा है। संवत् २०६५ में शनि वर्षभर सिंह राशि में ही संचार करेगा। इस राशि में संचार के दौरान शनि वृष, तुला व कुम्भ राशियों पर विशेष दृष्टियां रखेगा तथा कर्क, सिंह व कन्या राशि वाले जातक व राष्ट्रों पर शनि की साढ़ेसति का प्रभाव होगा। उपरोक्त राशियों पर दृष्टियों के फलस्वरूप शनि का भारत एवं विश्व के दक्षिण-पश्चिम भागों पर विशेष दृष्टिपात रहेगा। सिंह राशि में संचरण काल के समय वृष, तुला व कुम्भ राशि वाले प्रान्तों एवं देशों पर दृष्टिपात के समय विशेष उतार-चढ़ाव, मानसिक उलझनें तथा आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा तथा इनसे सम्बन्धित प्रान्तों विशेषकर दिल्ली, काश्मीर, प्रान्तों में सत्तारूढ़ केन्द्रीय सरकारों के लिए अग्निपरीक्षा का समय होगा। राजनैतिक उथल-पुथल, सत्ता-परिवर्तन, आतंकवादी, विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के प्रबल संकेत हैं। दक्षिणी-पूर्वी प्रदेशों में बाढ़, समुद्री तूफ़ान, भूस्खलन, महामारी, भूकम्प, यान-दुर्घटना, अग्निकाण्ड, सड़क दुर्घटनाएँ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी कृषि, धन एवं जनहानि होने की सम्भावनाएँ होंगी।

जल आदि चार स्तम्भों का फल—संवत् २०६५

(१) जल स्तम्भ—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क मात्र 56.5% प्रतिशत हुआ है। फलस्वरूप आगामी वर्ष कुछ प्रदेशों में मध्यम से कुछ अधिक स्तर पर वर्षा होगी। मध्य एवं पूर्वी क्षेत्रों में जैसे बिहार, उड़ीसा, असम, प. बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि में समुचित वर्षा होने के संकेत हैं। कुछ प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी होगी। कहीं बाढ़ से क्षति तो कहीं वर्षा, पेयजल एवं अनाज की कमी के कारण संकट का सामना होगा। भूगत जलस्तर में कुछ बेहतरी होगी।

(२) तृण स्तम्भ—वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी का सम्पर्क 41% प्रतिशत हुआ है। फलस्वरूप घास, तृण, बांस, पुष्प, जड़ी-बूटियों, पौधे एवं वनस्पतियों की पैदावार गतवर्ष की अपेक्षा अच्छी होगी। पशुचारा घास आदि का उत्पादन कुछ बेहतर होगा। परन्तु दूध, पनीर, मक्खनादि पदार्थ महंगे होंगे।

(३) वायु-स्तम्भ—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क 71% प्रतिशत है, फलस्वरूप वायु वेग, तेज आन्धियाँ व तूफानों से खड़ी-फसलों व जन व धनादि सम्पदा को हानि पहुँचेगी। कुछ क्षेत्रों में वायु का दबाव बढ़ेगा।

(४) अन्न स्तम्भ—आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क 81.1% प्रतिशत है। फलस्वरूप विपरीत जलवायु के बावजूद कुछ प्रदेशों में गेहूँ, चने, चावल, मक्का, ईख, धान्यादि की पैदावार अच्छी होगी। पूर्वसंग्रह करके आषाढ़-श्रावण में विक्रय [illegible] रहेंगे।

● वर्षादि के विश्वमान ●

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा १ से २० अंकों के मध्य जितने अधिक (२० अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०६५ में धान्य के विश्वे ११ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का उत्पादन मध्यमस्तरीय होगा।

वर्षा ७, धान्य ११, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु ११, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह १३, क्षुधा १५, तृषा १३, निद्रा ९, आलस्य ५, उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दंभ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ९, उग्रता ११, पाप ९, पुण्य १३, व्याधि ११, व्याधिनाश ७, आचार ५, अनाचार ९, मृत्यु ५, जन्म १३, देश-उपद्रव १, देश-स्वास्थ्य ५, चोरभय ११, चोरनाश ३, अग्नि १७, अग्निशांत ५, उद्भिज ११, जरायुज ३, अण्डज ९, स्वेदज १५, टिड्डी ५, तोता ११, मूषक १५, सोना ११, तांबा ९, स्वचक्र ७, परचक्र ९, वृष्टि ११, अनावृष्टि १९॥

गुर्रा फल विचार (सन् 2008-09 ई.)

इस्लामी मतानुसार वर्ष कुं.

४ | २ | ५ श. के. | ३ मं. | १ | ६ | १२ | ९ | ७ | सू. गु. | ११ रा. | १० | ८ शु. | चं. बु.

हिजरी सन् 1429

गत संवत् २०६४ में पौष शुक्ल द्वितीया, गुरुवार, तदनुसार 10 जनवरी, सन् 2008 ई. को 1 मुहर्रम (यकम) हिजरी सन् 1429 प्रारम्भ होगा। गुरुवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से इस्लामी मतानुसार बादशाह साल गुरु (बृहस्पति) होगा। 1 मुहर्रम से एक दिन पूर्व चन्द्रदर्शन वाले दिन 9 जनवरी, सन् 2008 ई., बुधवार को सूर्यास्त के समय 17 घं. 39 मिं. पर मिथुन लग्न में मुस्लिम मतानुसार नववर्ष का उदय होगा।

मुस्लिम राष्ट्रों की इस नववर्ष कुंडली में वर्ष का बादशाह गुरु (बृहस्पति) सप्तम भाव में सूर्य युक्त होकर मंगल के साथ समसप्तक योग बना रहा है। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान, ईराक, ईरान, सूडान, सऊदी अरब आदि कट्टरवादी मुस्लिम देशों को अत्यन्त गम्भीर राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। पाक, अफ़गानिस्तान, ईराक आदि कुछ कट्टरपंथी देशों में अनेक स्थलों पर विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। ये देश स्वयं आतंकवाद की आग में झुलसने लगेंगे। इन देशों में हिंसक आतंकवादी गतिविधियों में विशेष वृद्धि होगी। भारतादि पड़ोसी देशों के साथ युद्ध का भी भय है। मुशर्रफ सरकार लोकतांत्रिक ढाँचे की स्थापना में विलम्ब करेगी। इन देशों में साम्प्रदायिक दंगे, फिसाद एवं विस्फोटक घटनाएँ अधिक होने के योग हैं। पाकादि इस्लामी देशों के लिए आगामी वर्ष अनिष्टकर होगा।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली

4 के. | 2 | 5 श. | 3 | 1 | 6 | 12 | 9 | 11 | 7 | सू. मं. | 8 | गु.10 चं. बु. रा. | शु.

हिजरी सन् 1430

संवत् २०६५ वि. में पौष शुक्ल तृतीया, मंगलवार तदनुसार 30 दिसम्बर, सन् 2008 ई. को 1 मुहर्रम (यकम) को हिजरी सन् 1430 प्रारम्भ होगा। मंगलवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ इस्लामी नववर्ष कुं. होने से सन् 2009 में वर्ष का बादशाह मंगल (मरीख) होगा। फलस्वरूप दिसं., 08 से मुस्लिम देशों में अग्निकाण्ड, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक होंगी। कहीं प्रत्याशित रूप से सत्ता-परिवर्तन के भी योग हैं। प्रजातान्त्रिक गतिविधियों के बावजूद जनरल मुशर्रफ की पक्षपातपूर्ण नीतियों के विरुद्ध कुछ विरोधी गुट उग्र प्रदर्शन, हिंसक एवं विस्फोटक कार्यवाहियां करेंगे। गर्मी-खुश्की व त्वचा के रोग अधिक होंगे। गुरु-शनि के मध्य षडाष्टक योग होने से पाक आदि बहु-मुस्लिम राष्ट्र में वर्तमान मुशर्रफ सरकार को जबरदस्त राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा।

वि. संवत् 2065 में लाभ-हानि चक्र

(विंशोतरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा अंक में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएँ सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचे तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लाटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च होगा। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा। मानसिक परेशानियां भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	14	8	14	8	11	14	8	14	11	5	5	11
हानि	11	5	2	14	11	2	5	11	2	5	5	2

--सूर्य आर्द्रा प्रवेश फल--संवत् २०६५---

वि. संवत् २०६५ में सूर्यदेव आषाढ़ कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, शनिवार तदनुसार 21 जून, 2008 ई. को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, ऐंद्र योग एवं मकर राशिस्थ चन्द्रकालीन रात्रि ९ घं. 43 मिं. (21/43 भा. स्टैं. टा.) पर मकर लग्न कालीन आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली
21-06-2008 ई.

१ (लग्न), १० चं. रा., ११, १२, २ बु., ३ सू. शु., ४ के., ५ मं. श., ६, ७, ८, ९ गु.

सूर्यदेव का आर्द्रा प्रवेश पृथ्वी तत्त्व प्रधान लग्न एवं राशि (मकर) में हुआ है। लग्नेश शनि अष्टम भावस्थ शत्रुराशिगत एवं मंगल के साथ है। यद्यपि इन पर गुरु की शुभ दृष्टि है। जल तत्त्व प्रधान ग्रह शुक्र छठे भाव सूर्य के साथ अस्तगत है। फलस्वरूप पर्याप्त वर्षा होने पर भी कई स्थलों पर अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा में कमी रहेगी। जल स्तम्भ भी मध्यम स्तरीय 56% है। चन्द्रमा भी राहु आक्रान्त होने से कहीं अत्यधिक वर्षा से कृषि की हानि तथा कहीं कम उपयोगी वर्षा की कमी से सूखे के हालात बनेंगे। शुक्र एवं शनि पर गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से यद्यपि उत्पादन में वृद्धि परन्तु गेहूँ, गन्ना, मक्का आदि फसलों की पर्याप्त आकांक्षित पैदावार नहीं हो सकेगी। फलस्वरूप मूल्यों में वृद्धि होगी।

तृतीया तिथि को आर्द्रा प्रवेश होने से ईतिभीति तथा चौरभय बने। शनिवार एवं उत्तराषाढ़ा नक्षत्र कालीन प्रवेश होने से लोगों के स्वास्थ्य की हानि, विचित्र प्रकार के रोगों में वृद्धि तथा विचारशीलता में भी कमी रहे। लोग निजी स्वार्थों में अधिक प्रवृत्त हों।

शनैश्चरस्य वारेचेद्रविरादांगतोयदि।
कृशतातर्हि लोकानांनि तांतमंदबुद्धिता॥

आर्द्रा प्रवेश ऐंद्र योग में होने से कुछ क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा भी होने के योग हैं। कृषि उत्पादन में लाभदायक वृद्धि होने के योग हैं।

ऐंद्राभिधानयोगे .... त्रिलोचनस्यनक्षत्रंतदानीं जलवर्षणम्॥

—आर्षमान द्वारा रक्षा फल विचार—

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले) एवं समृद्धि का प्रतीक माना जाता है—

(१) प्रथम आर्ष—गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का स्पर्श लगभग 22 प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र 50 प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष—श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र 46 प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष—कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र केवल 4.5 प्रतिशत है।

फल—इस वर्ष रक्षा के दो दुर्ग मध्यम नली तथा दो दुर्ग अल्पबली है। फलस्वरूप सुरक्षा, समृद्धि, राजनैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष उलझन एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीय, आर्थिक एवं रक्षा के क्षेत्र में प्रगति में बाधाएं रहेंगी। कहीं भयंकर विस्फोट, राज्य-परिवर्तन एवं युद्धादि से अशान्ति का वातावरण बने।

सोमवती एवं भौमवती अमावस्या का माहात्म्य

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। **स्कन्द पुराण** के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान् शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है—

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते।
तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्॥

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्नान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है—

सोमवारे स्वमावस्या तत्रैव बहुपुण्यदा। विप्राणां भोजनं देयं तत्र पुण्यफलेप्सभिः॥

पुरुषार्थ-चिन्तामणि के अनुसार तो अमावस्या यदि सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर** योग कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहण में किए हुए स्नान, दान-पुण्य आदि से भी सौ गुणा अधिक माना गया है।

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्॥

सोमवती अमावस के पर्व पर हरिद्वार, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, वाराणसी, गया जी, पुष्कर, श्रीअमृतसर आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जपादि अनुष्ठान का विशेष माहात्म्य कहा गया है।

सिक्ख धर्म के अनुसार भी अमृतसर (श्री हरिमन्दिर साहिब), आनन्दपुर साहिब, कीरतपुर साहिब आदि तीर्थों पर भी अमावस को स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य होता है।

सोमवती अमावस्या के योग में, यदि चन्द्रमा अश्विनी, कृतिका, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, विशाखा, मघा, उ.फा., मूला, उ.षा., श्रवण या उ.भा.—इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में संचरित हो, तो ऐसे योग में तैयार की (जड़ी-बूटियों से निर्मित) गई औषधि अनेक प्रकार के कायिक एवं मानसिक रोगों में लाभकारी होती है। इसके अतिरिक्त सोमवती अमावस आदि विशिष्ट योग में पितृ-दोष की शान्ति, धन/सम्पदा सम्बन्धी परेशानियाँ, लड़के या लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान कष्ट आदि बाधाएं एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मशुद्धि, स्नानदान, जप पाठ आदि की दृष्टि से सोमवती अमावस का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन व्रत धारण करके अपने इष्टदेव एवं भगवान् विष्णु का पूजन, चन्द्र तथा **पीपल वृक्ष** की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, दुग्ध-युक्त शुद्ध जल से सींचन एवं फूल-फलों, मिष्ठान्न, क्षीर, धूप-दीप आदि द्रव्यों से पूजन करके 108 बार अथवा यथाशक्ति प्रदक्षिणा करके ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष महात्म्य होता है।

—मंगलवारी (भौमवासरी) अमावस्या का माहात्म्य—

सोमवती अमावस्या की भान्ति मंगलवारी अमावस का भी मन्त्र, यन्त्र एवं तन्त्र आदि साधनां में विशेष महत्त्व होता है। इसमें स्नान, दान, जपादि से एक सहस्र गोदान का फल होता है—

अमावस्यां भवेद्वारों यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्णवी स्नानमात्रेण गोसहस्रदानफलं लभेत्॥

इस वर्ष (2008 ई.) 28 अक्तू. को भौमवासरी (अमावस) दीपावली होने से यन्त्र, तंत्र साधना के लिए इसका विशेष महत्त्व बढ़ जाएगा।

ग्रहों के आधार पर आगामी वर्ष की प्रमुख भविष्यवाणियाँ संवत् २०६५ (सन् 2008-09 ई.)

- ☞ नया 'प्लव' नामक सम्वत् होने से उच्च पद प्रतिष्ठित लोग ही अधिकांशतः सत्ता, सम्पत्ति एवं वाहनादि सुख-साधनों से सम्पन्न हों। साधारण लोग क्लिष्ट प्रकार के रोगों एवं आर्थिक परेशानियों के कारण दुःखी होंगे।
- ☞ सम्वत् का राजा सूर्य तथा मन्त्री भी सूर्य ही होने से समाज में क्रोध एवं आवेश के कारण हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। दिल्ली तथा इससे (देखें पृष्ठ 72) पूर्व स्थित प्रदेशों में राजा चन्द्र होने से राजनीतिक अस्थिरता रहे।
- ☞ राजनेताओं में परस्पर विरोध, टकराव व खींचातानी अधिक रहे। सरकारी तन्त्र में अस्थिरता के कारण लोगों में असन्तोष एवं संशय के भाव रहेंगे।
- ☞ मध्यावधि चुनावों की घोषणा सरकार द्वारा किसी भी समय पर हो सकती है। यू.पी.ए. के घटक दलों में आपसी समन्वय का अभाव रहेगा तथा परमाणु करार मुद्दे पर लेफ्ट व कांग्रेस के सम्बन्ध विच्छेद किसी भी समय सम्भव।
- ☞ ग्रहयोगानुसार ईरान, ईराक, पाकिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देश विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण बने रहेंगे। कहीं नए समीकरण बनेंगे।
- ☞ गुजरात में अनेक आन्तरिक एवं कांग्रेसी विरोध के बावजूद भाजपा विजयी होगी। परन्तु आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा का ग्राफ अधिक ऊपर नहीं जा पाएगा। तथा कई नए गठबन्धन एवं समीकरण बनेंगे।
- ☞ हि.प्र., राजस्थान, कर्नाटक आदि कुछ प्रदेशों में सत्ता-परिवर्तन की ही प्रबल सम्भावनाएं हैं। 29 अग. से 10 अक्तू. के मध्य कालसर्प योग का प्रभाव पड़ने से भारत सहित पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश आदि देशों में राजनीतिक संकट, संविधान और सरकार के बीच टकराव पैदा होंगे। कहीं उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित हों।
- ☞ **पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, बांग्लादेश आदि पड़ोसी देशों में राजनीतिक अस्थिरता, जनांदोलन, अग्निकाण्ड एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी।**
- ☞ **13 फरवरी से 13 मार्च के मध्य सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग होने से प्रधाननेता के लिए अनिष्टकारी होगा। राजनीतिक उथल-पुथल एवं परिवर्तन के संकेत हैं।**
- ☞ **28 जनवरी से 13 मार्च (2009 ई.) के मध्य मकर राशि पर चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योगों के कारण भारत की केन्द्रीय सत्ता के लिए कठिन अग्नि परीक्षा का काल होगा। राजनीतिक पटल पर विशेष उलटफेर देखने को मिलेंगे।**

ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल की साकार कहानी है। मनुष्य के संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण (वर्तमान) कर्मों एवं उनके शुभाशुभत्व का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य के भूत-भविष्य सम्बन्धी शुभाशुभ घटनाएँ, सुख-दुःख, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, मान-अपमान, भाग्योदय के कालादि का ज्ञान भी इसी शास्त्र द्वारा किया जा सकता है। जातक के जन्म समय सौर-मण्डल एवं जन्मकुण्डली में जिस प्रकार के ग्रहों की स्थिति होती है, उन्हीं के अनुरूप मनुष्य (जीव) का बाह्य एवं अभ्यान्तरिक जीवन प्रभावित होता रहता है—

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः। सृष्टि रक्षण-संहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः॥ बृह.

प्रकृति के त्रिगुणात्मक गुणों की भान्ति ग्रहों में भी सत्त्व, रज एवं तमादि गुणों की न्यूनाधिकता होती है। गुरु, चन्द्रादि सत्त्वगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक के हृदय में करुणा, दया, परोपकारिता, उदारता, सत्यनिष्ठता आदि धार्मिक रूचियों की बहुलता होती है, जबकि शनि, मंगल, राहु, केतु आदि पाप ग्रहों के प्रभाव से प्राणी में तामसिक प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, मनुष्य के अन्तःकरण की सूक्ष्म प्रवृत्तियों के अनुसार भी ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति मन, वचन व कर्म से किसी की हिंसा नहीं करता है, धर्म मर्यादानुसार धन का अर्जन करता है। दानपूर्वक शास्त्र नियमों का पालन करता है—ऐसे व्यक्ति पर ग्रह कुछ अनिष्ट नहीं करते। अर्थात् अपना अनुग्रह बनाए रखते हैं—

'अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जित धनस्य च। सदा नियमरथस्य, सदा सानुग्रहाः॥'

सभी ग्रह मनुष्य को अपने शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्रदान करते हैं। इस प्रकार ज्योतिष ग्रह-नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ विशेष शास्त्रीय सिद्धान्त देता है

जिनके द्वारा हम अपने पूर्व एवं इस लोक के कर्मों के प्रतिफल को जानकर अपने जीवन को उच्चतर स्थिति की ओर ले जा सकते हैं।

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **''पंचांगदिवाकर'', 'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू—हिन्दी—पंजाबी) एवं तिथ पत्रिका (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०६५ (2008-09 ई.) में **गौरवशाली 132 वर्ष** हो जाएंगें। इस पंचांग समूह के प्रवर्तक एवं संस्थापक हमारे पूज्य पितामह विश्व विख्यात **मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी** (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं विश्वव्यापी स्तर पर ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हुई—वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से भी अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष के क्षेत्र में **हमारी पंचांग, जन्त्री** एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्रकाशनों की निरन्तर अग्रसर ख्याति को देखकर कुछ दुष्ट प्रकृति के धन लोलुप एवं लालची प्रकाशक हमारे टाईटल से मिलता-जुलता टाईटल—नाम रखकर विषय-सामग्री को तोड़-मरोड़ कर छापते हैं। इस प्रकार लोगों को गुमराह व धोखा देने की कुचेष्टा करते रहे हैं। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक **पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारी नव प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग'** (संवत् २००१ से २०६० तक) खरीदते समय प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए., पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल.एल.बी.) व पंकज शर्मा, जालन्धर के नाम अवश्य पढ़ लिया करें।

गतर्षीय पंचांगदिवाकर में चामत्कारिक भविष्यवाणियां

ईश्वर की कृपा से हमारी गतवर्षों की पंचांगों एवं जन्त्रियों से उल्लिखित **अनेकशः भविष्यवाणियां** ठीक निकलती आ रही हैं। **उदाहरणस्वरूप** जैसे—भारत का स्वतन्त्र होना, (सं. 1947 ई.) बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, कांग्रेस (ई) की पराजय, पुनः सत्ता में आना, ईरान-ईराक युद्ध (२०३९), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४१), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (संवत् २०४८), सन् १९९८ में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि आगे संवत् २०५७ से २०६४ तक की कुछ प्रमुख भविष्यवाणियां ही उद्धृत हैं, जो ईश्वर कृपावश चामत्कारिक रूप से सत्य एवं सही निकली हैं। **उदाहरणार्थ—**

संवत् २०५७ के पंचांग में—**पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलट तथा आपात् स्थिति का लगना एवं शासन परिवर्तन, छत्रभंग, उपद्रव, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना** (पृष्ठ 51 —कालम I व II)

सं. २०५८ के पंचांगदिवाकर पृष्ठ 56 (कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन से धनु राशि वाले देशों में विस्फोटक घटनाएं ... में दुखद त्रासदी घटी। २०५९ में पृष्ठ ५६ (कालम I) में पढ़ें—**''अफ़गानिस्तान में नया राजनैतिकग्रुप उभर कर सामने आएगा तथा तालिबान अमरीकी युद्ध शक्ति के सामने अधिक देर तक टिक नहीं पाएँगे।''** पृष्ठ 60 (कालम I) पर पंजाब के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें—**''आगामी विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ बादल सरकार को काफ़ी कम सीटें तथा कांग्रेस पार्टी का मुख्य पार्टी के रूप में उभरकर आना।''** अमेरिका व ईराक युद्ध होना पृष्ठ 58-I.

संवत् २०६० में **ईराक में सत्ता परिवर्तन** के योग के बारे में स्पष्टतः पढ़ें पृष्ठ 63।

सम्वत् २०६१ की पंचांगदिवाकर में स्पष्टतः पढ़ें—**आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गाँधी तथा कांग्रेस पार्टी भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेंगी।** पृष्ठ 68 का. I **''चुनावों में कुछ प्रदेशों में भाजपा की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुँचेगी। उन्हें आशा के विपरीत कम सीटें मिलेंगी।''** पृष्ठ 67 कालम I. राजस्थान के संदर्भ में पृष्ठ 68 पर पढ़ें। चुनावों में कांग्रेस को हार का सामना रहेगा।

संवत् २०६२ (2005-06) की पंचांग में ''पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना (पृष्ठ 56 का. II. पृष्ठ 60-I) **हरियाणा** की प्रान्तीय चौटाला सरकार के वर्चस्व को गहरी ठेस पहुँचना (पृष्ठ 59 का. II) **''हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग''—अस्थिरता के बावजूद मनमोहन सरकार का अस्तित्व 2007 तक अवश्य बना रहेगा—पृष्ठ 60 का. I)**

संवत् 2063 (2006-07) की पंचांग में मुस्लिम राष्ट्रों के कारण डीज़ल-पैट्रोल के मूल्यों में अत्यधिक तेज़ी के कारण मुद्रा-स्फीति दर में वृद्धि होगी। (पृष्ठ 53), 14 अप्रैल से 11 जुलाई के मध्य **खप्पर** योग बनने से महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, आदि प्रदेशों में विषम वर्षा, बाढ़ एवं प्राकृतिक आपदाओं से जन व धन हानि के योग हैं (पृष्ठ 53), पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन की प्रबल संभावना (पृष्ठ 53) **7 फरवरी, 2007 ई. तक यू. पी. ए. सरकार के वर्चस्व को कोई खतरा नहीं** (पृष्ठ 53) भाजपा नेतृत्व में भी परिवर्तन की प्रबल संभावना है (पृष्ठ 53), **24 मई से 12 जुलाई के मध्य मंगल-शनि योग के कारण** काश्मीर, महाराष्ट्र, उ. प्र. आदि प्रदेशों में उपद्रव, अग्निकाण्ड, हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं (जैसा कि मुम्बई में 11 जुलाई को भयानक बम विस्फोट हुए) पृ. 58 का. I)

गतवर्ष संवत् २०६४ (2007-08 ई.) के (पृष्ठ 59 का. II) में आप स्पष्ट पढ़ सकते हैं—'पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात अत्यन्त विक्षुब्ध रहेंगे। 29 जुला. से 15 सितम्बर तक की अवधि पाक सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण व अग्निपरीक्षा के होंगे।' जैसा कि मुशर्रफ सरकार को प्रधान न्यायाधीश व नवाज शरीफ के विरोध का सामना करना पड़ा।

पृष्ठ 56 पर मुख्य बाक्स की अन्तिम पंक्ति पर स्पष्टत: पढ़ें—''**उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब आदि प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।**'' नतीजे आपके सामने ही हैं। पृष्ठ 56 में ही सातवीं पंक्ति पर '........ राजा (प्रधानमन्त्री) की शक्ति का ह्रास होगा। उनमें निर्णयात्मक शक्ति का अभाव रहेगा।'' जैसा कि परमाणु संधि एवं रामसेतु मुद्दे पर हुआ।

पृष्ठ 59 कालम II पर पर पढ़ें—''गुरु की शुभ दृष्टियां पड़ने से लक्षित होता है कि भारत, चीन, पाक, अमेरिका आदि देशों में नेतृत्व परिवर्तन की सम्भावना नहीं होगी।'' पृष्ठ 60 कालम I में पाकिस्तान शीर्षक के अन्तर्गत अन्तिम पंक्ति स्पष्ट पढ़ें—'बेनज़ीर भुट्टो तथा नवाज़ शरीफ मिलकर पाकिस्तान की फौजी हकूमत के लिए चुनौती उत्पन्न करेंगे।' पृष्ठ 62 कालम I—'30 जुला. से 12 अग. के मध्य तेरह दिन का पक्ष होने से कश्मीर, गुजरात, उ.प्र. आदि में विस्फोटक घटनाएं, बाढ़ादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन, धन, कृषि आदि की क्षति होने के संकेत हैं।''

पृष्ठ 62 पर ही कालम I में—''26 अक्तू. से 22 जन., 08 ई. तक खप्पर योग होने से कहीं राजनीतिक अस्थिरता, उपद्रव के कारण लोगों में गहन असन्तोष व्याप्त रहेगा।'' पृष्ठ 63 कालम II उ.प्र. शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें—'नेतृत्व परिवर्तन के प्रबल योग हैं। जैसाकि **समाजवादी पार्टी के साथ** हुआ। पृष्ठ 61 कालम II पर देखें'—सरकारी तन्त्र के लोगों में अधिकाधिक धन-संग्रह, नैतिक व चारित्रिक मूल्यों में गिरावट, दिशाहीन आर्थिक प्रगति व खर्च इत्यादि।

सं. २०६५ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

विक्रमी संवत् २०६५ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दश अधिकारों में से सात (७) अधिकार उग्र (क्रूर) ग्रहों को तथा केवल तीन (३) अधिकार सौम्य (शुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। सात अधिकारों में से दो (२) मुख्य अधिकार (राजा और मन्त्री के) पद तेजस्वी किन्तु **क्रूर ग्रह सूर्य** को, धनेश और नीरसेश के अधिकार पराक्रमी किन्तु **क्रूर ग्रह मंगल** को मिले हैं। वर्षा (मेघ), फलों एवं सेना के अधिकार **तमोगुणी ग्रह शनि** को प्राप्त हुए हैं। कृषि व धान्य के अधिकार सौम्य परन्तु परस्पर विरोधी ग्रह क्रमश: बुध एवं चन्द्रमा को तथा रसों का अधिकार गुरू को मिला है। **आकाशी कौंसिल** में क्रूर ग्रहों का बाहुल्य होने से आगामी वर्ष विश्व विशेषकर (भारत, पाकिस्तान व अन्य एशियाई देशों) का राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध, अनिश्चित एवं अशान्त रहेगा।

राजा और मन्त्रित्व के दोनों पद एक ही ग्रह सूर्य के पास होने से समाज में क्रोध एवं आवेश के कारण हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। राजनीतिक क्षेत्रों में अस्थिरता रहे। भ्रष्टाचार, चोरी, लूटमार, अपहरण, तोड़फोड़ एवं साम्प्रदायिक दंगे-फिसाद अधिक हों। राजनेताओं में परस्पर विरोध व टकराव व खींचातानी अधिक रहे। **स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोग-पीड़ा-चौरागिन शंका च भयं नृपाणाम्॥** कोश (धनु) और धातुओं का स्वामी उग्र-ग्रह मंगल होने से आर्थिक क्षेत्रों में अस्थिरता रहे। अमीरों और गरीबों के मध्य असमानता का विस्तार और अधिक बढ़ेगा। राजनेताओं का मनमाना-आचरण प्रजा के अधिकांश दुखों का कारण बने। सोना, चाँदी, पीतल आदि धातुओं के मूल्यों में और वृद्धि हो। वर्षा, फलों और सेना का **स्वामी शनि** होने से विषम एवं अनुपयोगी वर्षा होने से कहीं अत्यधिक वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप एवं कहीं अल्प वर्षा के कारण कृषि, धान्य आदि की कमी रहे। फलों की पैदावार में भी कमी रहे। सेना का पद भी शनि के पास होने से शनि से प्रभावित देशों में आन्तरिक दंगे एवं लोगों में साम्प्रदायिक झगड़े-फिसाद, तोड़फोड़ व टकराव अधिक हों। कृषि का स्वामी बुध एवं धान्य स्वामी चन्द्रमा होने से गेहूँ, चना, चावल, ईख, कपास आदि वस्तुओं की पैदावार अच्छी हो। **जनसंख्या में भी विशेष** वृद्धि होगी। रसेश गुरु के कारण धार्मिक उत्सवों के प्रचार अधिक हों। **प्लव** नामक नया सम्वत्सर होने से उच्च पद-प्रतिष्ठित लोग ही अधिकांशत: सत्ता सम्पत्ति एवं वाहनादि सुख-साधनों के सम्पन्न हों। साधारण लोग क्लिष्ट प्रकार के रोगों एवं आर्थिक परेशानियों के कारण दुखी हों। उदर विकार, श्वास, मधुमेह, हृदयरोग, चमड़ी रोग एवं मानसिक रोगों में वृद्धि हो। दैनिक उपभोग की वस्तुओं जैसे दूध, पेयजल, बिजली, कोयला, लोहा, सोना, चाँदी, तैल, पैट्रोल, डीज़ल, चावल, गेहूँ, दालें, सब्ज़ी के मूल्य अत्यधिक तेज होंगे।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यफल सं. २०६५

नववर्ष प्रवेश कुं. ७/५८
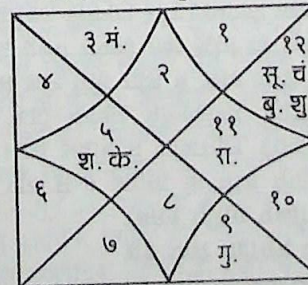
जगत् लग्न कुं. ३०/५८ घटयादि
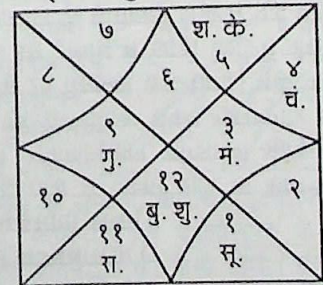
वि. सम्वत् २०६५ का नववर्ष प्रवेश 6 अप्रैल (प्रविष्टे २४ चैत्र), रविवार, चैत्र अमावस की समाप्ति पर प्रात: 9 बजकर 25 मिनट पर रेवती नक्षत्र कालीन वृष (स्थिर) लग्न में प्रविष्ट होगा। वर्ष लग्न का स्वामी शुक्र उच्च राशिस्थ होकर एकादशभाव में सूर्य, चन्द्र, बुधादि ग्रहों के साथ चतुर्ग्रही योग बना रहा है। नवमभाव (योजना और विकास) में मकर राशि उदित है। जो कि भारत की प्रभाव लग्न राशि भी है। इस राशि का स्वामी चतुर्थ भाव में शत्रु राशि (सिंह) में और शत्रु ग्रह (केतु) के साथ संयुक्त होकर लग्न भाव को मित्र दृष्टि से देख रहा है। इस ग्रह योगानुसार यह संकेत मिलते हैं कि विश्व के अनेक

विकासशील एवं विकसित देशों के मध्य कुछ नए राजनीतिक समीकरण बनेंगे। वृष राशि ईरान की भी प्रभाव राशि है। ग्रह योगानुसार ईरान, इराक, पाकिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देश विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण बने रहेंगे। वर्ष कुण्डली में मिथुन (अमरीका की प्रभावराशि) पर मंगल की स्थिति होने से राष्ट्रपति बुश की स्वार्थपूर्ण कूटनीतियों के कारण विश्व के बहुत से देश अमरीका के प्रभावक्षेत्र से मुक्त होने के प्रयास में रहेंगे। पाकिस्तान तथा भारत में भी अमरीका की भेदभावपूर्ण नीतियों के विरुद्ध जनव्यापी आन्दोलन तेज़ होंगे। वर्ष कुं. में पड़े ग्रहों के अनुसार मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, कुम्भ व मीन राशि के राष्ट्र विशेष प्रभावित होंगे।

जगत् लग्न की कुण्डली के अनुसार 13 अप्रैल, रविवार, चैत्र शुक्लाष्टमी को जगत् लग्न (वर्षेश) ३०/५८ वर्षेष्ट—अर्थात् सायं 6 बजकर 29 मिनट पर कन्या लग्न में प्रवेश होगा। लग्नेश बुध सप्तम भाव में नीच राशिगत होकर उच्चस्थ शुक्र के साथ है। त्रिषडायपति मंगल दशमभाव में पड़कर लग्न राशि को शत्रु दृष्टि से देख रहा है। ग्रह स्थिति के अनुसार विश्व के अनेक देशों का (विशेषकर) दक्षिण एशियाई कुछ राष्ट्रों जैसे पाकिस्तान, बांग्ला-देश, बर्मा, नेपाल, श्रीलंका, भारत आदि में राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध, अशान्त एवं तनावपूर्ण रहेगा। मंगल पर यद्यपि गुरु की शुभ दृष्टि पड़ने से अमरीका सहित विश्व के प्रमुख देश विश्व-शान्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे, परन्तु उन सबसे प्रयत्न मात्र छलावा सिद्ध होंगे। आन्तरिक तौर पर लगभग सभी प्रमुख देश जैसे अमरीका, रूस, फ्रांस, चीन, इंग्लैण्ड, ईरान, भारत, पाकिस्तान, जर्मनी आदि देश अपनी परमाणु एवं ऊर्जा शक्ति की आढ़ में अत्यधुनिक संहारक हथियारों के संग्रह में संलिप्त रहेंगे। विश्व राजनीति में कुछ नए देशों के मध्य समीकरण बनेंगे।

ध्यान रहे, जगत् लग्न में भारत की प्रभाव राशि मकर पर मंगल की उच्च दृष्टि पड़ रही है, जिससे विश्व राजनीति में भारत की प्रतिष्ठा एवं वर्चस्व में वृद्धि होगी। इसके विपरीत पाकिस्तान की प्रभाव राशि भी कन्या है। इसका राशि स्वामी (नेतृत्व) नीच राशि में है तथा इस राशि पर मंगल की शत्रु एवं क्रूर दृष्टि पड़ रही है, फलस्वरूप पाकिस्तान की वर्तमान मुशर्रफ सरकार के लिए आगामी वर्ष अत्यन्त संकटमय एवं चुनौतियों से भरा होगा। मुशर्रफ हकूमत की तानाशाही नीतियों के कारण पाकिस्तान में सिन्ध, बिलोचिस्तान एवं कुछ अन्य प्रदेशों में अग्निकाण्ड, विरोधी दलों तथा मुजाहिदीन सम्प्रदायों द्वारा दंगे फिसाद, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत मिलते हैं।

2008 ई. में ग्रहगोचर का विश्व पर प्रभाव

वर्ष के आरम्भ में ही 19 जनवरी (2008 ई.) से 12 फर. के मध्य **गुरु-शुक्र** के मध्य अशुभ योग धनु राशि पर बना हुआ है, उस पर उग्र एवं अग्निग्रह मंगल की वक्र दृष्टि रहेगी, जिससे विश्व के कुछ मुख्य देशों (विशेषकर एशिया के) जैसे ईराक, बंगलादेश, बर्मा, पाकिस्तान, ईरान, श्रीलंका, नेपाल आदि में अग्निकाण्ड, राजनैतिक टकराव, साम्प्रदायिक झगड़े-फिसाद होंगे। कहीं युद्धादि की स्थिति भी बने। पश्चिमी भागों में उपद्रव एवं विस्फोट आदि अधिक हों। कहीं कृषि, धन की हानि एवं प्राकृतिक प्रकोपों से सामान्य लोगों की हानि हो—

गुरू-शुक्रौ यदैकस्थौ नरं युद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टि जगत्यां नात्र संशयः॥

सम्वत् के आरम्भ की वर्षकुण्डली में सूर्य-शनि के मध्य षडाष्टक योग तथा वैशाख मास (21 अप्रैल से 20 मई) होने से कहीं अग्निभय, कहीं सत्ता परिवर्तन (छत्रभंग) और हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। कुछ राष्ट्रों के मध्य टकराव एवं युद्ध भय रहेगा। किसी प्रमुख राष्ट्रनेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं—

यत्र मासे महीसूने जायन्ते पञ्चवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत्॥

21 जून से 9 अगस्त के मध्य मंगल सिंह राशि में आकर शनि के साथ सम्बन्ध बनाएगा। इस अवधि में पाकिस्तान, ईराक, ईरान, अफ़गानिस्तान, बांग्लादेश आदि मुस्लिम देशों में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड, युद्धोन्माद एवं राजनीतिक संकट गहराएगा। ता. 17 अगस्त से शनि सिंह राशि में अस्त होगा, जो कि 20 सितम्बर तक रहेगा। शुक्र पहले ही जुलाई के प्रथम सप्ताह तक अस्त रह चुका है। इस अवधि में खाड़ी देशों में जैसे ईराक और अमेरिका, लैबनान और इसरायल तथा पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रों में युद्ध एवं हिंसा के समाचार मिलेंगे। कहीं छत्रभंग के भी योग हैं।

शुक्रसौर्योर्द्वयोरस्तमेकराशौ यदा भवेत्।
अन्नपीडा महायुद्धं देशे-देशे च विग्रहाः॥

16 अगस्त से 15 सितम्बर के बीच सिंह राशि पर ही सूर्य, बुध, शुक्र, शनि आदि चार ग्रहों का योग होने से कहीं बाढ़, दुर्भिक्ष, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन एवं कृषि की हानि होगी तथा पाक में कहीं हिंसक व विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं—

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रूधिरेण जलेन वा॥

आगे **आश्विन मास** (सिंत.-अक्तू.) में पुनः पाँच मंगलवारों का होना, कालसर्प योग तथा पौष मास (13 दिसं. से 11 जन.) में पाँच शनिवार एवं पाँच रविवारों का होने से पाकिस्तान, भारत सहित दक्षिण एशिया के कुछ देशों में छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), साम्प्रदायिक एवं जातीय दंगे-फिसाद, उपद्रव, अग्निकाण्ड एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं। विश्व में कहीं क्लिष्ट रोगों का प्रकोप व युद्धभय बनता है।

उपरोक्त प्रतिकूल ग्रहों के प्रभावस्वरूप अनेक बार विश्व-शान्ति का सन्तुलन आन्दोलित होता लक्षित होगा, परन्तु वर्ष प्रवेश तथा जगत् लग्न कुण्डलियों में सिंहराशिस्थ शनि पर गुरू की शुभ दृष्टि पड़ने से बाह्य तौर पर विश्व के लगभग सभी समुदाय के लोग देश-विदेशों में जाकर अपनी-अपनी सभ्यता और संस्कृतियों का आदान-प्रदान करने में प्रयत्नशील रहेंगे। साईंस एवं टैक्नालोजी में ज़बरदस्त विश्वव्यापी स्तर उन्नति के साथ वैश्विक भाईचारा एवं [illegible] होंगे।

विश्व के कुछ अन्य देश

अमेरिका (America)—जगत् लग्न कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि पर मंगल स्थित होने से वर्तमान सत्तारूढ़ बुश सरकार की दोषपूर्ण विदेश नीतियों के कारण अमेरिका की साख को विश्वस्तर पर कुप्रभाव पड़ेगा। ईराक, ईरान, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान आदि मुस्लिम देशों से सम्बन्धित नीतियाँ विफल होती दिखाई देंगी। भारत के साथ 'परमाणु सन्धि' के इकरार (अनुबन्ध) पर भी प्रश्न चिह्न बने रहेंगे। पाकिस्तान के साथ अमेरिका के राजनैतिक सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे। राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में अपने प्रभुत्व का प्रसार करने के लिए विश्व के कुछ अन्य विकासशील देशों के साथ राजनैतिक एवं व्यवसायिक अनुबन्ध करेगा। परमाणु ऊर्जा एवं अन्तरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय अनुसन्धान एवं उन्नति करेगा। भारत के साथ राजनीतिक सम्बन्ध यथावत् बने रहेंगे।

पाकिस्तान (Pakistan)—जगत् लग्न कुण्डली में इसकी प्रभाव राशि कन्या का ही लग्न उदित है, जिससे विश्व राजनीतिक क्षेत्र में यह देश विशेष रूप से केन्द्रीभूत रहेगा। जगत् कुण्डली में कन्या राशि का स्वामी ग्रह नीचस्थ तथा इस राशि पर मंगल की शत्रु दृष्टि पड़ रही है। ग्रहों के प्रभावस्वरूप पाकिस्तान के मौजूदा सत्तारूढ़ नेतृत्व राष्ट्रपति मुशर्रफ को अपनी तानाशाही नीतियों के कारण कठिन चुनौतियों का सामना रहेगा। परवेश मुशर्रफ की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को भी गहरा धक्का लगेगा। वर्ष के लगभग पूर्वार्द्ध भाग में, जबकि शनि वक्री (2 मई तक) रहेगा। पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात अत्यन्त कशमकशपूर्ण होंगे। मुशर्रफ विरोधी दलों द्वारा उपद्रव, जातीय दंगे, जनांदोलन, अग्निकाण्ड व हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। पाकिस्तान का राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक वातावरण विक्षुब्ध, अशान्त एवं चिन्तनीय रहेगा। विपक्ष की लगभग सभी पार्टियाँ मौजूदा तानाशाही हकूमत के विरुद्ध एकजुट होकर आवाज़ बुलन्द करेंगी। लोकतान्त्रिक प्रणाली से सरकार का गठन सन्देहास्पद रहेगा। बेनज़ीर भुट्टो का राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ के साथ राजनैतिक गठजोड़ अधिक देर तक नहीं चलेगा।

वि. संवत् २०६५ में ग्रहस्थिति और भारत का घटनाक्रम

स्वतन्त्र भारत के 61वें वर्ष (15 अगस्त, 2007 ई०) में भारत कन्या लग्नकालीन प्रविष्ट हो चुका है। वर्षलग्नाधिपति बुध यद्यपि अस्तंगत है। एकादशभाव में सूर्य के साथ बुधादित्य योग बना हुआ है। पंचमेश शनि बारहवें भाव में शुक्र, चन्द्र एवं केतु के साथ **चतुर्ग्रही योग** बन रहा है। ग्रहस्थिति के अनुसार वर्ष के लगभग पूर्वार्ध भाग में भारत के व्यापारिक क्षेत्रों में तथा विदेशी मुद्रा-भण्डार में विशेष वृद्धि होगी। विभिन्न विकास योजनाओं के अन्तर्गत भारत की उल्लेखनीय उन्नति का सूत्रपात होगा। वर्ष के उत्तर भाग में (विशेषकर अक्तूबर 07) के बाद यू.पी.ए. (U.P.A.) सरकार के घटक दल (बाएँ बाजू) वर्तमान सरकार के लिए चुनौतिपूर्ण हालात पैदा करेंगे। स्वतन्त्र भारत की कुण्डली के द्वितीय भाव (कोषेश) का स्वामी शुक्र बारहवें भाव में चन्द्र, केतु व शनि के साथ होने के संकेत मिलते हैं कि

कु. स्वतन्त्र भारत
15 अग., 1947, रात्रि 12 बजे

स्वतन्त्र भारत का 61वाँ वर्ष
15 अग., 2007-08 ई. 9/09 AM

गणतंत्र दिवस का 59वाँ वर्ष
26 जन., 2008 ई. 59 वर्ष

केन्द्रीय सरकार की अधिकांश विकास योजनाओं के लाभ सामान्य लोगों में नहीं पहुँच पाएँगे। कुछ विशिष्ट वर्ग एवं उच्चपदासीन लोग ही बृहद् विकास योजनाओं का लाभ उठाएँगे।

कुं स्वतन्त्र भारत 62वाँ वर्ष
15 अग. 2008 ई.

59वें गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2008 ई०) की कुण्डली में भी मकर लग्न (जोकि भारत की प्रभावित राशि है) उदित हुआ है। दूसरे (धनभाव) में राहु तथा बारहवें भाव में शुक्र शत्रुराशि होकर मंगल द्वारा दृष्ट होने से पापगृह सदृश फलप्रद हुआ है, जिससे कर्तृरि योग बना है। जिसके प्रभावस्वरूप भारत की पश्चिमी एवं उत्तरपूर्वी सीमाओं पर विदेशी शत्रुओं द्वारा हिंसक एवं आतंकवादी गतिविधियों का कुचक्र, अन्तर्देश में जातीय एवं साम्प्रदायिक टकराव, भ्रष्टाचार, बेईमानी, राजनीतिक पार्टियों में विरोध एवं टकराव, विद्युत में कमी व औद्योगिक इकाईयों में कमी, बिगड़ती कानून और व्यवस्था, बेरोज़गारी, जनसंख्या की समस्या, चारित्रिक मूल्यों का ह्रास, दिशाहीन आर्थिक प्रगति और अन्धा-धुन्ध खर्च, स्वार्थपरता एवं धनलोलुपता के कारण अधिकांश राजनैतिक नेताओं में देशभक्ति के प्रति प्रतिबद्धता की कमी रहेगी। राजनैतिक अस्थिरताओं के बावजूद भारत दूरसंचार उद्योग, अन्तरिक्ष विज्ञान क्षेत्र, कम्पयूटर्ज़, स्टील एवं वस्त्र उद्योग आदि क्षेत्रों में तथा विदेशी व्यापार के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति करेगा।

—संवत् २०६५ में ग्रहगोचर और भारत का घटनाक्रम—

वर्ष के आरम्भ में (जनवरी 2008 से) ही क्रूर ग्रह शनि **सिंह राशि में वक्री है** तथा बृहस्पति (गुरु) धनु राशि में **अतिचार गति से संचार** कर रहा है। जिससे देश के कुछ भागों की अनाज की कमी एवं मूल्यों में अत्यधिक तेजी हो, कहीं दुर्भिक्ष का भय अथवा विलिष्ट रोगों का भय एवं कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) हों—

यदि क्रूरग्रह वक्री हि अतिचारी सौम्यकः।
पीडा-व्याधि-भयं तत्र दुर्भिक्ष राज्य विग्रहम्॥

पौष मास (24 दिसं. से 22 जन.) में **पाँच मंगलवार** होने से किसी प्रधान नेता का पद रिक्त हो। छत्रभंग के भी संकेत हैं।

प्रारम्भ में ही (14 जन. से 12 फर.) **षडाष्टक योग** तथा **गुरु-शुक्र** का योग अग्नि राशि धनु में बना हुआ है। जिससे कुछ प्रदेशों में राजनैतिक तनाव एवं टकराव, साम्प्रदायिक दंगे-फिसाद, उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ आदि घटित होने के योग हैं।

13 फर. से 13 मार्च के मध्य **सूर्य-राहु** का योग होगा तथा **सूर्य-शनि** के मध्य **समसप्तक** योग बनेगा। यह योग भी प्रधान नेता के लिए अनिष्टकारी होगा। राजनीतिक उथल-पुथल एवं परिवर्तन के संकेत हैं। **चैत्र मास** (22 मार्च से 20 अप्रै.) में **पाँच शनि** एवं पाँच **रविवार** होने से समाज में विचित्र प्रकार के रोग, उपद्रव, जातीय एवं साम्प्रदायिक दंगे व हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। अनाजादि आवश्यक वस्तुओं में महँगाई विशेष अधिक होगी।

शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्।
महार्घं जायते धान्यं रोगशोकाकुला पृथिवी॥

चान्द्र **वैशाख मास** (21 अप्रै. से 20 मई) में पाँच मंगलवार होने से कहीं छत्रभङ्ग (शासन परिवर्तन), उपद्रव, युद्धभय एवं कहीं हिंसक घटनाएँ घटित होती हैं। इसकाल में किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी संयोग होते हैं—

यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभङ्गस्तदा भवेत्॥

वैशाख संक्रान्ति भी रविवार को होने से मूल्यों में आशातीत वृद्धि, सामान्य लोगों में असंतोष तथा राजनेताओं में विरोध व टकराव पैदा करती है।

21 जून से 9 अग. के मध्य **शनि-मंगल** का योग सिंह राशि में रहेगा। जिससे उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, श्रीलंका, बिहार, उड़ीसा, असम, बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में अनाज की कमी एवं कहीं युद्ध भय अथवा उपद्रव, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोप एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी—

यदा सौरिभौमे सुरराज मन्त्री भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे पूर्वस्यां चक्षुधाभयं शस्त्रं करोति॥

कालसर्प योग—29 अग. से 12 सितं. के बीच कालसर्प योग बनने से राजनीतिक गतिविरोध, राजनैतिक एवं सामाजिक हालात अस्थिर एवं विक्षुब्ध होंगे।

इस अवधि में उपरोक्त प्रदेशों में कहीं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक हानि के योग हैं। **आश्विन मास** (16 सितं. से 14 अक्तू.) में पुनः **पांच मंगलवार** तथा **25 सितं. से 10 अक्तू.** के मध्य **कालसर्प योग** होने से कहीं हिंसा एवं विस्फोट की घटनाएँ, जातीय उपद्रव एवं टकराव हों सीमाओं पर आतंकवादी घटनाएं अधिक घटित हों।

आश्विन संक्रान्ति (16 सितं.) मंगलवार को होने से किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या निधन होने के संकेत हैं।

पौष मास (दिसं.-जनवरी 09) में ५ शनि और ५ रविवार होने से आवश्यक वस्तुओं का मूल्यों में अत्यधिक तेजी होने से लोगों में गहन असंतोष फैलेगा। कहीं प्राकृतिक प्रकोप उपद्रव, हिंसा एवं छत्रभंग होने के योग होंगे। आगे **माघ मास** (11 जन. से 9 फर. 2009) में पुनः ५ रविवार होने से कहीं प्राकृतिक प्रकोप, उपद्रव एवं अप्रत्याशित घटनाएं घटित होने के संकेत हैं।

28 जनवरी से 13 मार्च (2009 ई.) के मध्य मकर राशि पर चतुर्ग्रही एवं पंचग्रही योगों के कारण भारत की केन्द्रिय सत्ता के लिए कठिन अग्नि परीक्षा का काल होगा। कहीं राजनैतिक गतिरोध एवं असमजंस के हालात बनेंगे। इस अवधि में राजनीतिक क्षेत्र में विशेष उलटफेर देखने को मिलेंगे।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

हिमाचल प्रदेश—प्रभावराशि मीनं तथा नाम राशि कर्क है। 59वें वर्ष के गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2008 ई.) की कुण्डली में राशिस्वामी गुरु द्वादशभावगत स्वराशि धनु में शुक्र युक्त तथा मंगल द्वारा दृष्ट है। आगामी वर्ष विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को अपेक्षाकृत कम सीटें प्राप्त होंगी। प्रदेश में भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा, परन्तु दोनों मुख्य पार्टियों में कांटे की टक्कर रहेगी। यद्यपि वर्तमान श्रीवीरभद्र सरकार द्वारा प्रदेश के विभिन्न क्षत्रों में विकासोन्मुखी एवं उपयोगी योजनाएँ प्रस्तावित की जाएंगी—औद्योगिक, पर्यटन, बिजली-क्षेत्र, कृषि, बागवानी, परिवहन एवं सड़क क्षेत्र सम्बन्धी विकास के लिए विशेष प्रयास किए जाएंगे। साधारण वर्ग के लोगों को प्रदेशव्यापी योजनाओं का समुचित लाभ नहीं पहुँच पाएगा। फलस्वरूप सत्तारूढ़ दल को अपनी प्रतिष्ठा एवं वोट प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। अन्यथा भाजपा शक्तिशाली पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी।

पंजाब—इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कन्या है। गणतन्त्र दिवस कुण्डली तथा नववर्ष प्रवेश कुण्डली में स्थित ग्रहों के अनुसार वर्तमान गठबन्धन बादल सरकार को विशेष राजनैतिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा।

ध्यान रहे, पंजाब शीर्षक के सन्दर्भ में ही गतवर्षीय सं. २०६४ के पंचांग के पृष्ठ 62–63 कालम II, I पर हमारी भविष्योक्ति (प्रभु–कृपावश) अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई है कि ''वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में सत्तारूढ़ (कांग्रेस) सरकार के लिए विशेष चुनौतियों से भरा होगा तथा विपक्ष के बीच आरोप–प्रत्यारोपों के कारण परस्पर टकराव एवं विरोध बढेंगे। कई स्थलों पर हिंसक घटनाएँ होने की आशंका रहेगी।'' अन्य च–''टैक्स वृद्धि आदि की समस्याओं के कारण वर्तमान कांग्रेस सरकार की प्रतिष्ठा एवं साख को गहरी ठेस पहुँचेगी। *आगामी सम्भावित विधानसभा चुनावों में स्पष्ट बहुमत मिलना संदिग्ध होगा।''*

आगामी वर्ष बादल सरकार प्रदेश में विदेशी निवेश, कृषि, दूरसंचार, रिटेल सेक्टर, औद्योगिक आदि विकास के लिए यथासम्भव प्रयास करेगी, परन्तु टैक्सों में वृद्धि, बिजली तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, महँगाई तथा ग्रामीण क्षेत्रों की तुष्टिकरण नीति के कारण शहरी प्रजा तथा छोटे व्यापारियों में गहन असन्तोष एवं आक्रोश रहेगा। आगामी **लोकसभा** चुनावों में सत्तारूढ़ अकाली-भाजपा गठबन्धन सरकार को काफी हानि होगी। तथा सत्ता सरकार की लोकप्रियता में कमी होने के योग हैं।

हरियाणा—प्रभाव राशि कर्क तथा नामराशि मिथुन है। हरियाणा के कुछ क्षेत्रों में वर्षेश (राजा) सूर्य तथा कुछ क्षेत्रों में चन्द्रमा होगा। (देखें पृष्ठ....) कर्क राशि पर साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार के समक्ष अनेक चुनौतियां होंगी। विभिन्न योजनाओं का लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। अन्य पार्टियों के नेता अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाएंगे। साधारण लोगों तथा किसानों के विरोध स्वरूप आगामी लोकसभा चुनावों में प्रदेश कांग्रेस सरकार को आपेक्षित सफलता नहीं मिल पाएगी। क्षेत्रीय गठबन्धन पार्टियों को लाभ पहुँचेगा।

जम्मू-काश्मीर—नाम राशि मकर तथा प्रभाव राशि तुला है। 59वें वर्ष की गणतन्त्र दिवस की कुण्डली में इसकी नाम राशि (मकर) का लग्न ही उदित है। राशिस्वामी शनि का शत्रु (सिंह) राशिगत (अष्टमस्थ) संचार तथा प्रभावराशि स्वामी शुक्र का द्वादश भावगत संचार अशुभ घटनाओं की ओर संकेत कर रहे हैं। सत्तारूढ़ सरकार विस्थापित कश्मीरी पण्डितों के पुनर्वास के सम्बन्ध में अभी उदासीनता की प्रवृत्ति रखेगी। यद्यपि काश्मीर आदि में पर्यटन, सेब, कृषि उद्योगों, विद्युत्, यातायात व रोज़गार के क्षेत्रों को विशेष बढ़ावा व प्रगति करने में प्रयासरत रहेगी, परन्तु छिटपुट आतंकवादी गतिविधियों, घटनाओं के कारण प्रदेश के विकास कार्यक्रमों को हानि पहुँचेगी। पाक प्रेरित आतंकवादी संगठन घाटी में अपनी विध्वंसक कार्यवाहियां करके विश्व का ध्यान काश्मीर की ओर करने की कुचेष्टा करते रहेंगे। फलस्वरूप प्रान्तीय सरकार को आर्थिक व सामाजिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा। आगामी चुनावों में नैशनल फ्रंट गठबन्धन का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा।

राजस्थान—प्रभावराशि कर्क है। 62वें वर्ष की स्वतन्त्र भारत की कुं. में अष्टमस्थ हो जाने तथा केतु के संचार के कारण सत्तारूढ़ भाजपा को कठिन एवं विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। साधारण जनता तक विकास का प्रभाव नगण्य रहेगा। लोगों में महँगाई एवं सरकारी नीतियों के विरुद्ध असंतोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी। कांग्रेस की स्थिति इस प्रदेश में सुदृढ़ होगी।

दिल्ली—नई गणतन्त्र दिवस कुं. (26 जन., 2008 ई.) में इसकी प्रभाव राशि मकर राशि का लग्न ही उदित हुआ है। सू., बु. एवं मुंथा की स्थिति शुभ नहीं है। राज्य में सड़क, परिवहन, विद्युत, पेयजल, पर्यटन, खेलों आदि सम्बन्धी अनेक विकासकारी योजनाएँ बनाई जाएंगी, परन्तु उनका लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। परन्तु भ्रष्टाचार, आरक्षण, महँगाई, विद्युत् एवं पेयजल की कमी, सीलिंग आदि समस्याओं को आंशिक रूप से हल करने के बावजूद सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के लिए प्रतिष्ठा एवं वर्चस्व को बनाए रखना कठिन होगा। भाजपा का प्रभाव बढ़ेगा।

उत्तर प्रदेश—प्रभावराशि धनु तथा नाम राशि वृष है। प्रभावराशि पर 9 दिसं. तक गुरु का संचार शुभ संकेत है। ध्यान रहे, गतवर्ष इसी कालम में पृष्ठ 63 पर समाजवादी पार्टी की हार के सम्बन्ध में स्पष्ट पढ़ें—**''विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ समाजवादी पार्टी को कम सीटें प्राप्त होंगी। नेतृत्व परिवर्तन के प्रबल योग हैं।''**

आगामी वर्ष सम्भावित लोकसभा चुनावों में भी बसपा, कांग्रेस तथा भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। सत्तारूढ़ बसपा सरकार नई क्रान्तिकारी एवं प्रगतिपद योजनाएं कार्यान्वित करेगी। कुछ राजनीतिज्ञों को राजनैतिक प्रतिशोध की भावना एवं षड्यन्त्रों का सामना करना पड़ेगा।

● कांग्रेस गठित यू॰ पी॰ ए॰ सरकार का भविष्य ●

कुं. वर्तमान प्रधानमन्त्री
डॉ. मनमोहन सिंह
26 सितं., 1932, 2-00 PM

यू.पी.ए. सरकार द्वारा
शपथकालीन कुण्डली
22 मई, 2004 ई., 17-42 PM
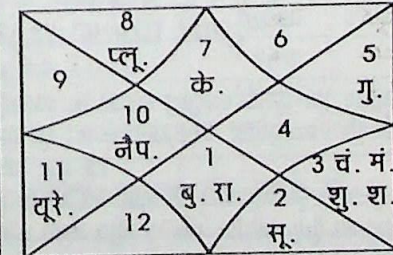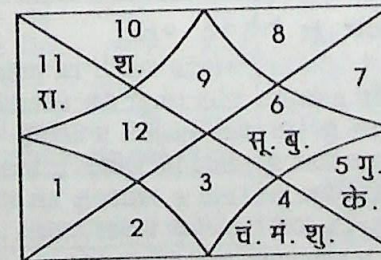
[यू. पी. ए. सरकार संकट में]

वर्तमान यू.पी.ए. (U.P.A.) गठबन्धन मनमोहन सरकार 22 मई, 2004 ई॰, शनिवार को आर्द्रा नक्षत्र एवं शूल योग के समय तुला लग्न में शपथ ग्रहण की थी। शपथकालीन कुण्डली में चर लग्न उदित था। लग्नभाव में केतु तथा सप्तमभाव में बुध-राहु का अशुभ योग पड़ा है। शपथ ग्रहण काल में भद्रा एवं शूल आदि अशुभ योगों एवं आर्द्रा (राहु के) नक्षत्र में होने से कांग्रेस की गठबन्धन सरकार पर अस्थिरता के बादल मंडराते रहेंगे।

वर्तमान प्रधानमन्त्री डा॰ मनमोहन सिंह की जन्म कुण्डली में पड़े ग्रहों के अनुसार उनको 7 फरवरी 2007 ई॰ से राहु की महादशा के मध्यान्तर में केतु की अन्तर्दशा चल रही है, जो कि **25 फरवरी, 2008 ई॰ तक रहेगी।** इस दशा-अन्तर्दशा में प्रायः अशुभ फल प्रकट होते हैं। इस अवधि में सहयोगियों से विरोध, कलह-क्लेश, शरीर कष्ट तथा मित्र भी परायों जैसा व्यवहार करने लगते हैं। परन्तु ध्यान रहे, प्रधानमन्त्री जी की नवांश कुण्डली

नवांश कुं. प्रधानमन्त्री

में राहु-केतु की स्थिति शुभ होने से उनकी दशान्तर्दशा में उतना अधिक अनिष्ट फल नहीं होता। इसके अतिरिक्त नवांश में उच्च- सत्ता का स्वामी सूर्य भी उच्चस्थ हो गया है। गोचरवश आजकल उनके जन्म लग्न-धनु का स्वामी गुरु द्वादश भाव (वृश्चिक) में संचार कर रहा है, जो कि 21 नवम्बर, 2007 ई० तक ज्येष्ठा नक्षत्र एवं द्वादश भाव में ही संचारित रहेगा। 22 नवम्बर के बाद उनके जन्म लग्न में ही स्वराशिगत होकर संचार करेगा। 25 फर. 2008 ई. के पश्चात् डा० मनमोहन सिंह जी को राहु मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा आगामी 3 वर्ष के लिए व्याप्त रहेगी। उनकी कुण्डली में शुक्र अष्टमस्थ होकर नीच एवं पापग्रह मंगल से पीड़ित है। अतएवं फरवरी 2008 के पश्चात् भी लगभग तीन मास तक राजनीतिक परिस्थितियाँ अस्थिर बनी रहेंगी। परन्तु लग्न भाव पर गुरू का स्वग्रही संचार होने से पार्टी में पुनः उच्च पद प्राप्ति के प्रबल योग हैं।

सम्वत् २०६५ में कांग्रेस पार्टी का भविष्य

(चुनौतियों से भरा अग्नि परीक्षा का वर्ष)

कुण्डली कांग्रेस पार्टी

कांग्रेस पार्टी की यथोपलब्ध कुण्डली में भी धनु लग्न ही उदित हैं। नव्य गणतन्त्र कुण्डली में धनु राशि द्वादश में पड़ रही है। कुण्डली के पंचम भाव (प्रशासन एवं योजना) में शनि नीचराशिगत होकर सामान्य प्रजा के प्रतिनिधि चन्द्रमा के साथ है। इन पर गुरू व शुक्र दोनों विरुद्ध ग्रहों की शुभाशुभ दृष्टियाँ पड़ रही हैं। जिसके कारण कांग्रेस सरकार द्वारा निर्मित अधिकांश विकास योजनाएँ अपने सहयोगी वामपंथी दलों के कारण ही विलम्ब एवं अवरोध का कारण बनेंगी। स्वार्थपरता एवं लाल फीताशाही के कारण सामान्य लोगों को उनका पूर्ण लाभ नहीं मिल पाएगा। वर्तमान काल में गोचरवश लग्नेश गुरु चन्द्रमा से अष्टमस्थ होने से विकास योजनाओं में अनुमान से खर्च अधिक होंगे। भ्रष्टाचार एवं स्वार्थपरता के कारण सामान्य प्रजा महँगाई के कुचक्र में पिसती जाएगी। सामान्य लोगों में क्षोभ, व्याकुलता एवं अशान्ति रहेगी। **श्रीराम सेतु** योजना के मुद्दे पर कांग्रेस की लोकप्रियता को गहरा धक्का पहुँचेगा।

वर्ष (२००७ ई०) के उत्तरार्ध में लोकसभा के मध्यावधि चुनावों की आहट होने के कारण कांग्रेस पार्टी लोक लुभावन की विभिन्न **योजनाओं की उद्घोषणाएँ** करेंगी। इस संदर्भ में **ग्रामीण रोज़गार गारण्टी** की योजना को देशभर में लागू करने की घोषणा पहले ही कर चुकी है।

कांग्रेस पार्टी में नवशक्ति एवं उत्साह पैदा करने के लिए अनेक पग व्यापक स्तर पर उठाए जाएंगे। इस संदर्भ में सितम्बर 2007 के अन्तिम सप्ताह में भूतपूर्व स्वर्गीय प्रधानमन्त्री के सुपुत्र राहुल गाँधी को कांग्रेस पार्टी का महासचिव भी नियुक्त किया गया है। ता. 19 जून, 1970 को (यथोपलब्ध सूचनानुसार) मिथुन लग्न में जन्में श्री राहुल की कुण्डली में राशिस्वामी मंगल एवं पराक्रमेश सूर्य दोनों ग्रहों का लग्न भाव में होने से जातक स्वाभिमानी, साहसी, स्फूर्तिवान एवं तेजस्वी नेता के रूप में उभर कर आए हैं। राजकीय मामलों का स्वामी गुरु आजकल उनकी राशि (वृश्चिक) पर संचार कर रहा है तथा द्वितीय भाव में कर्क राशि पर उच्च दृष्टिपात कर रहा है। आगामी वर्षों में राजनीति क्षेत्र में विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त करेगा। ऐसे योग हैं।

कुं. श्रीराहुल गाँधी
19-06-1970

गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी, 2008 ई०) की कुण्डली जिसमें **मकर लग्न** उदित है। लग्न भाव में चर राशि की मुंथा शीघ्र एवं आश्चर्यजनक प्रभावोत्पादक होती है। मुंथेश शनि का अष्टम भाव में केतु युक्त होने से कांग्रेस **यू. पी. ए.** सरकार की घटक वामपंथी पार्टियों द्वारा अमरीकी परमाणु करार के मुद्दे पर गतिरोध बनाए रखने से वर्ष के आरम्भ में ही **कांग्रेस गठबन्धन सरकार** टूटने के कगार पर रहेगी। तथा फरवरी-मार्च में ही मध्यावधि चुनावों की सम्भावना के प्रबल योग हैं। क्योंकि (15 जन. से 12 फर. 2009 ई.) के बीच **मकर राशि** पर सूर्य-राहु का योग, तदनन्तर (28 जन. से 12 फर. के मध्य) इसी राशि पर सूर्य, मंगल, राहु आदि का चतुर्ग्रही बनने से केन्द्रीय सरकार में परिवर्तन एवं विघटन के प्रबल योग पाए जाते हैं।

दैवयोग से मध्यावधि चुनाव टल भी जावें तो भी देश में राजनीतिक अनिश्चितताओं का वातावरण बना रहेगा। प्रमुख पार्टियों में अर्न्तकलह के कारण विभिन्न प्रान्तों की क्षेत्रीय पार्टियों की महत्तता बढ़ेगी।

-सं० २०६५ में भारतीय जनता पार्टी-

भाजपा की स्थापन कुण्डली में मिथुन लग्न उदित है। लग्नेश बुध भाग्य स्थान में केतु युक्त होकर गुरू, मंगल, शनि आदि ग्रहों की मिश्रित शुभाशुभ दृष्टियों से प्रभावित हो रहा है। चन्द्रमा षष्ठ स्थान में यद्यपि नीचराशिगत है, परन्तु उस पर मंगल की स्वक्षेत्री शुभ दृष्टि पड़ रही है। ग्रह स्थिति के अनुसार भाजपा पार्टी के लिए आगामी वर्ष कठिन चुनौतियों एवं विषम परिस्थितियों से भरा वर्ष होगा। **श्रीराम सेतु एवं हिन्दुत्व** के मुद्दे पर कुछ प्रदेशों में भारतीय जनता पार्टी की प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता में वृद्धि होगी, जबकि कुछ प्रदेशों जैसे राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात आदि प्रदेशों में गत चुनावों की अपेक्षाकृत कम सीटें प्राप्त होंगी, जबकि हिमाचल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, कर्नाटक आदि प्रदेशों में गतवर्षों की अपेक्षा बेहतर स्थिति रहेगी। देश के राजनीतिक पटल पर भाजपा और राजग गठबन्धन पुनः उभरने लगेंगे। आगे प्रभु इच्छा प्रबल है। वस्तुतः सर्वज्ञ भविष्यज्ञाता तो स्वयं ईश्वर ही हैं।

लेख लिपिबद्धम्
भाद्र शुक्ल पूर्णिमा
तदनुसार, 26 सितम्बर (१० आश्विन प्रविष्टे)
बुधवार, सं. 2007 ई.

शुभ चिन्तक
पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी
गणितकर्त्ता पंचांग दिवाकर, जालन्धर।

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एव उदयास्त घण्टे-मिन्टों में (सन् 2008-09 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	24/07	16 सितं.	कन्या	17/22
13 फर.	कुम्भ	13/05	16 अक्तू.	तुला	29/21
14 मार्च	मीन	9/57	15 नवं.	वृश्चिक	29/09
13 अप्रै.	मेष	18/29	15 दिसं.	धनु	19/46
14 मई	वृष	15/24	14 जन.(09)	मकर	6/27
14 जून	मिथुन	22/02	12 फर.	कुम्भ	19/24
16 जुला.	कर्क	8/57	14 मार्च	मीन	16/16
16 अग.	सिंह	17/24			

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मिथुन में)

28 अप्रै.	कर्क	14/45	7 नवं.	वृश्चिक	26/45
21 जून	सिंह	16/57	19 दिसं.	धनु	11/32
9 अग.	कन्या	26/52	27 जन. (09)	मकर	26/26
25 सितं.	तुला	11/00	7 मार्च	कुम्भ	16/31

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

15 अप्रै.	मेष	5/49	31 अक्तू.	तुला	26/46
29 अप्रै.	वृष	17/44	19 नवं.	वृश्चिक	17/46
26 मई	वक्री	21/20	8 दिसं.	धनु	19/29
19 जून	मार्गी	20/02	28 दिसं.	मकर	5/52
6 जुला.	मिथुन	18/54	11 जन. (09)	वक्री	22/08
23 जुला.	कर्क	20/50	26 जन.	व. धनु	21/17
7 अग.	सिंह	11/22	1 फर.	मार्गी	12/48
24 अग.	कन्या	27/36	7 फर.	मकर	21/44
24 सितं.	वक्री	12/39	4 मार्च	कुम्भ	27/39
15 अक्तू.	मार्गी	25/38	22 मार्च	मीन	21/34

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में धनु में)

9 मई	वक्री	17/41	9 दिसं.	मकर	23/42
8 सितं.	मार्गी	9/44			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

1 अप्रै.	मीन	14/00	7 जुला.	कर्क	26/36
25 अप्रै.	मेष	21/41	1 अग.	सिंह	12/18
20 मई	वृष	6/45	25 अग.	कन्या	22/27
13 जून	मिथुन	16/40	19 सितं.	तुला	10/15

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
13 अक्तू	वृश्चिक	25/00
7 नवं.	धनु	20/35
2 दिसं.	मकर	25/44
29 दिसं.	कुम्भ	6/25
27 जन. (09)	मीन	12/01
6 मार्च	वक्री	22/45

शनि राशि प्रवेश

(संवतारम्भ से सिंह में)

3 मई	मार्गी	8/36
31 दिसं.	वक्री	23/37

संवत् के अन्त तक सिंह राशि में वक्री रहेगा।

राहु

(संवतारम्भ से कुम्भ में)

30 अप्रै.	मकर	9/30

केतु

(संवतारम्भ से सिंह में)

30 अप्रै.	कर्क	9/30

यूरेनस

27 जून	वक्री	5/36
27 नवं.	मार्गी	21/42
6 अप्रै.(09)	मीन	23/41

नैपच्यून

24 अप्रै.	कुम्भ	18/58
26 मई	वक्री	21/44
28 जून	व. मकर	14/08
3 नवं.	मार्गी	12/08
13 फर.(09)	कुम्भ	26/33

प्लूटो

सम्पूर्ण संवत धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

सम्पूर्ण संवत् में मार्गी अवस्था में संचार करेगा।

बुध

26 मई	वक्री	21/20
19 जून	मार्गी	20/02
24 सितं.	वक्री	12/39
15 अक्तू.	मार्गी	25/38
11 जन.(09)	वक्री	22/08
1 फर.	मार्गी	12/48

गुरु

(संवतारम्भ में वक्री)

9 मई	वक्री	17/41
8 सितं.	मार्गी	9/44

शुक्र

6 मार्च(09)	वक्री	22/45

संवतान्त तक वक्री रहेगा।

शनि

(संवतारम्भ में वक्री)

3 मई	मार्गी	8/36
31 दिसं.	वक्री	23/37

संवत् के अन्त तक वक्री रहेगा।

यूरेनस

27 जून	वक्री	5/36
27 नवं.	मार्गी	21/42

नैपच्यून

26 मई	वक्री	21/44
28 नवं.	मार्गी	12/08

प्लूटो

2 अप्रै.	वक्री	14/46
9 सितं.	मार्गी	8/44
4 अप्रै. (09)	वक्री	23/01

ग्रहों का उदय-अस्त

मंगल

8 अक्तू. पश्चिSस्त	19/10
7 फर.(09) पूर्वोदय	21/15

बुध

8 जन. पश्चिमोदय	24/15
31 जन. पश्चिSस्त	19/05
12 फर. पूर्वोदय	22/37
3 अप्रै. पूर्वSस्त	11/29
28 अप्रै. पश्चि. उदय	5/54
30 मई व पश्चिSस्त	7/45
16 जून व पूर्वोदय	9/25
17 जुला. पूर्वSस्त	27/15
11 अग. पश्चि.उदय	23/20
1 अक्तू. व. पश्चिSस्त	4/05
13 अक्तू. व. पूर्वोदय	11/20
4 नवं. पूर्वSस्त	5/50
19 दिसं. पश्चि.उदय	9/32

14 जन. व. पश्चिSस्त	24/30
26 जन. व. पूर्वोदय	9/54
17 मार्च पूर्वSस्त	3/40

गुरु

(वर्षारम्भ में अस्त)

6 जन. पूर्व उदय	5/45
11 जन.(09) अस्त	24/10
9 फर.(09) उदय	28/32

शुक्र

3 मई पूर्वSस्त	23/50
12 जुला. पश्चि.उदय	4/31
24 मार्च(09)पश्चि.अस्त	7/28
30 मार्च पूर्वोदय	27/15

शनि

17 अग. पश्चिSस्त	9/54
21 सितं. पूर्वोदय	24/48

-शुक्र उदय-अस्त के बारे में-

पाठकों की सूचनार्थ निवेदन है कि गतवर्ष की पंचांगदिवाकर (पृष्ठ-139) पर हमने शुक्रास्त लगभग 27 अप्रैल था शुक्रोदय लगभग 6 जुलाई, 2008 ई. को लिखा गया था। परन्तु सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति के आधार पर सटीक शुद्ध तारीखें (30 एवं 31° अक्षांश पर) शुक्रास्त 3 मई को तथा शुक्रोदय (पश्चिम) तारीख 12 जुलाई (प्रातः 4-31) को होगी। ---संपादक

ॐ नमः शिवाय गुरवे शम्भवे परमात्मने।
सर्वात्मकाय साम्बाय सर्वेशाय नमो नमः॥
नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०६५ वि.

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
31 मार्च	रेवती (1)	5/13
3 अप्रै.	रेव. (2)	
6 अप्रै.	रेव. (3)	
10 अप्रै.	रेव. (4)	
13 अप्रै.	अश्वि. 1 मेष	18/29
17 अप्रै.	अश्वि (2)	
20 अप्रै.	अश्वि (3)	
23 अप्रै.	अश्वि (4)	
27 अप्रै.	भरणी (1)	10/25
30 अप्रै.	भरणी (2)	
4 मई	भरणी (3)	
7 मई	भरणी (4)	
11 मई	कृति. (1)	4/31
14 मई	कृति. (2) वृष	15/24
17 मई	कृति. (3)	
21 मई	कृति. (4)	
24 मई	रोहिणी (1)	24/50
28 मई	रोहिणी (2)	
31 मई	रोहिणी (3)	
4 जून	रोहिणी (4)	
7 जून	मृगशिर (1)	22/38
11 जून	मृगशिर (2)	
14 जून	मृग. (3)मिथु.	22/02
18 जून	मृगशिर (4)	
21 जून	आर्द्रा (1)	21/43
25 जून	आर्द्रा (2)	
28 जून	आर्द्रा (3)	
2 जुला.	आर्द्रा (4)	
5 जुला.	पुर्न. (1)	21/15
9 जुला.	पुर्न. (2)	
12 जुला.	पुर्न. (3)	
16 जुला.	पुर्न.(4)कर्क	8/57
19 जुला.	पुष्य (1)	20/50
23 जुला.	पुष्य (2)	

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
26 जुला.	पुष्य (3)	
30 जुला.	पुष्य (4)	
2 अग.	आश्ले. (1)	19/43
6 अग.	आश्ले. (2)	
9 अग.	आश्ले. (3)	
13 अग.	आश्ले. (4)	
16 अग.	मघा(1)सिंह	17/24
20 अग.	मघा (2)	
23 अग.	मघा (3)	
26 अग.	मघा (4)	
30 अग.	पू.फा. (1)	13/23
2 सितं.	पू.फा. (2)	
6 सितं.	पू.फा. (3)	
9 सितं.	पू.फा. (4)	
13 सितं.	उ.फा. (1)	7/14
16 सितं.	उ.फा.(2)कं.	17/22
20 सितं.	उ.फा. (3)	
23 सितं.	उ.फा. (4)	
26 सितं.	हस्त (1)	22/47
30 सितं.	हस्त (2)	
3 अक्तू.	हस्त (3)	
6 अक्तू.	हस्त (4)	
10 अक्तू.	चित्रा (1)	11/43
13 अक्तू.	चित्रा (2)	
17 अक्तू.	चित्रा(3) तुला	5/21
20 अक्तू.	चित्रा (4)	
23 अक्तू.	स्वा. (1)	22/18
27 अक्तू.	स्वा. (2)	
30 अक्तू.	स्वा. (3)	
2 नवं.	स्वा. (4)	
6 नवं.	विशाखा (1)	6/22
9 नवं.	विशाखा (2)	
12 नवं.	विशाखा (3)	

2008-09 ई.	नक्षत्र	चरण
16 नवं.	विशा (4)वृश्चि	5/09
19 नवं.	अनु. (1)	12/29
22 नवं.	अनु. (2)	
25 नवं.	अनु. (3)	
29 नवं.	अनु. (4)	
2 दिसं.	ज्येष्ठा (1)	16/42
5 दिसं.	ज्येष्ठा (2)	
9 नवं.	ज्येष्ठा (3)	
12 नवं.	ज्येष्ठा (4)	
15 दिसं.	मूला(1) धनु	19/46
18 दिसं.	मूल (2)	
22 दिसं.	मूल (3)	
25 दिसं.	मूल (4)	
28 दिसं.	पू.षा.(1)	21/56
1 जन. (09)	पू.षा. (2)	
4 जन.	पू.षा. (3)	
7 जन.	पू.षा. (4)	
10 जन.	उ.षा. (1)	23/54
14 जन.	उ.षा. (2)मक.	6/27
17 जन.	उ.षा. (3)	
20 जन.	उ.षा. (4)	
23 जन.	श्रव. (1)	26/12
27 जन.	श्रवण (2)	
30 जन.	श्रवण (3)	
2 फर.	श्रवण (4)	
6 फर.	धनि. (1)	5/17
9 फर.	धनि.(2)	
12 फर.	धनि. (3)कुंभ	19/24
15 फर.	धनि. (4)	
19 फर.	शत. (1)	9/51
22 फर.	शत. (2)	
25 फर.	शत. (3)	
1 मार्च	शत. (4)	

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
4 मार्च	पू.भा. (1)	16/05
7 मार्च	पू.भा. (2)	
11 मार्च	पू.भा. (3)	
14 मार्च	पूभा (4) मीने	16/16
17 मार्च	उ.भा. (1)	24/37
20 मार्च	उ.भा. (2)	
24 मार्च	उ.भा. (3)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवत् के आरंभ में आर्द्रा 4 में)

तिथि	नक्षत्र	चरण
8 अप्रै.	पुर्न (1)	8/22
15 अप्रै.	पुर्न (2)	
21 अप्रै.	पुर्न (3)	
28 अप्रै.	पुर्न.(4)कर्क	14/45
4 मई	पुष्य (1)	24/15
11 मई	पुष्य (2)	
17 मई	पुष्य (3)	
23 मई	पुष्य (4)	
29 मई	आश्ले. (1)	11/18
4 जून	आश्ले. (2)	
10 जून	आश्ले. (3)	5/01
15 जून	आश्ले. (4)	
21 जून	मघा (1) सिंह	16/57
27 जून	मघा (2)	
2 जुला.	मघा (3)	
8 जुला.	मघा (4)	
13 जुला.	पू.फा. (1)	26/11
19 जुला.	पू.फा. (2)	
24 जुला.	पू.फा. (3)	
30 जुला.	पू.फा. (4)	
4 अग.	उ.फा. (1)	19/02
9 अग.	उफा(2) कन्या	26/52
15 अग.	उ.फा. (3)	
20 अग.	उ.फा. (4)	
25 अग.	हस्त (1)	21/13

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
30 अग.	हस्त (2)	
5 सितं.	हस्त (3)	
10 सितं.	हस्त (4)	
15 सितं.	चित्रा (1)	9/39
20 सितं.	चित्रा (2)	
25 सितं.	चित्रा 3 तुला	11/00
30 सितं.	चित्रा (4)	
5 अक्तू.	स्वा. (1)	9/06
10 अक्तू.	स्वा. (2)	
15 अक्तू.	स्वा. (3)	
19 अक्तू.	स्वा. (4)	
24 अक्तू.	विशा. (1)	20/12
29 अक्तू.	विशा. (2)	
3 नवं.	विशा. (3)	
7 नवं.	विशा. 4 बृश्चि.	26/45
12 नवं.	अनु. (1)	19/35
17 नवं.	अनु. (2)	
21 नवं.	अनु. (3)	
26 नवं.	अनु. (4)	
1 दिसं.	ज्ये. (1)	8/20
5 दिसं.	ज्ये. (2)	
10 दिसं.	ज्ये. (3)	
14 दिसं.	ज्ये. (4)	
19 दिसं.	मूल.(1)धनु	11/32
23 दिसं.	मूल. (2)	
28 दिसं.	मूल. (3)	
1 जन. (09)	मूल (4)	
5 जन.	पू.षा. (1)	30/22
10 जन.	पू.षा. (2)	
14 जन.	पू.षा. (3)	
19 जन.	पू.षा. (4)	
24 जन.	उ.षा. (1)	18/21
27 जन.	उषा 2 मक.	26/26
1 फर.	उ.षा. (3)	

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
5 फर.	उ.षा. (4)	
9 फर.	श्रव. (1)	24/59
14 फर.	श्रव. (2)	
18 फर.	श्रव. (3)	
22 फर.	श्रव. (4)	
26 फर.	धनि. (1)	27/54
3 मार्च	धनि. (2)	
7 मार्च	धनि. 3 कुंभ	16/31
11 मार्च	धनि. (4)	
15 मार्च	शत. (1)	28/55
20 मार्च	शत. (2)	
24 मार्च	शत. (3)	
28 मार्च	शत. (4)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

तिथि	नक्षत्र	चरण
1 अप्रै.	उ.भा. (1)	11/11
3 अप्रै.	उ.भा. (2)	
4 अप्रै.	उ.भा. (3)	
7 अप्रै.	उ.भा. (4)	
8 अप्रै.	रेव. (1)	15/13
10 अप्रै.	रेव. (2)	
11 अप्रै.	रेव. (3)	
13 अप्रै.	रेव. (4)	
15 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	5/49
16 अप्रै.	अश्वि. (2)	
18 अप्रै.	अश्वि. (3)	
19 अप्रै.	अश्वि. (4)	
21 अप्रै.	भर. (1)	13/13
22 अप्रै.	भर. (2)	
24 अप्रै.	भर. (3)	
26 अप्रै.	भर. (4)	
27 अप्रै.	कृति. (1)	24/19
29 अप्रै.	कृति 2 वृष	17/44
1 मई	कृति. (3)	
3 मई	कृति. (4)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
5 मई	रोहि. (1)	11/22
7 मई	रोहि. (2)	
9 मई	रोहि. (3)	
12 मई	रोहि. (4)	
16 मई	मृग. (1)	12/59
22 मई	मृग. (2)	
26 मई	वक्री	21/20
31 मई	मृग. (1)	
7 जून	रोहि. (4)	18/01
14 जून	रोहि. (3)	13/08
19 जून	मार्गी	20/02
24 जून	रोहि. (4)	
30 जून	मृग. (1)	9/25
3 जुला.	मृग. (2)	
6 जुला.	मृग. 3 मिथुन	18/54
9 जुला.	मृग. (4)	
11 जुला.	आर्द्रा (1)	11/39
13 जुला.	आर्द्रा (2)	
15 जुला.	आर्द्रा (3)	
17 जुला.	आर्द्रा (4)	
18 जुला.	पुर्न (1)	23/17
20 जुला.	पुर्न (2)	
22 जुला.	पुर्न (3)	
23 जुला.	पुर्न 4 कर्क	20/50
25 जुला.	पुष्य (1)	10/49
26 जुला.	पुष्य (2)	
28 जुला.	पुष्य (3)	
30 जुला.	पुष्य (4)	
31 जुला.	आश्ले (1)	19/02
2 अग.	आश्ले. (2)	
4 अग.	आश्ले. (3)	
5 अग.	आश्ले. (4)	
7 अग.	मघा 1 सिंह	11/22
9 अग.	मघा (2)	5/35
10 अग.	मघा (3)	

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
12 अग.	मघा (4)	
14 अग.	पू.फा. (1)	18/47
16 अग.	पू.फा. (2)	
18 अग.	पू.फा. (3)	
20 अग.	पू.फा. (4)	
22 अग.	उ.फा. (1)	22/39
24 अग.	उ.फा. 2 कं.	27/36
27 अग.	उ.फा. (3)	
29 अग.	उ.फा. (4)	
1 सितं.	हस्त (1)	7/27
3 सितं.	हस्त (2)	
6 सितं.	हस्त (3)	
9 सितं.	हस्त (4)	
13 सितं.	चित्रा (1)	7/41
17 सितं.	चित्रा (2)	
24 सितं.	वक्री	12/39
30 सितं.	चित्रा (1)	
3 अक्तू.	हस्त (4)	28/21
6 अक्तू.	हस्त (3)	
9 अक्तू.	हस्त (2)	
15 अक्तू.	मार्गी	25/38
21 अक्तू.	हस्त (3)	
24 अक्तू.	हस्त (4)	27/31
27 अक्तू.	चित्रा (1)	15/39
29 अक्तू.	चित्रा (2)	
31 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	26/46
3 नवं.	चित्रा (4)	5/23
5 नवं.	स्वा. (1)	7/10
7 नवं.	स्वा. (2)	
9 नवं.	स्वा. (3)	
11 नवं.	स्वा. (4)	
13 नवं.	विशा. (1)	12/21
15 नवं.	विशा. (2)	
17 नवं.	विशा. (3)	

2008-09 ई.	नक्षत्र	चरण
19 नवं.	विशा. 4 वृश्चि.	17/46
21 नवं.	अनु. (1)	20/02
23 नवं.	अनु. (2)	
25 नवं.	अनु. (3)	
28 नवं.	अनु. (4)	
30 नवं.	ज्ये. (1)	7/01
2 दिसं.	ज्ये. (2)	
4 दिसं.	ज्ये. (3)	
6 दिसं.	ज्ये. (4)	
8 दिसं.	मूल (1) धनु	19/29
10 दिसं.	मूल. (2)	
12 दिसं.	मूल. (3)	
15 दिसं.	मूल. (4)	
17 दिसं.	पू.षा. (1)	7/57
19 दिसं.	पू.षा. (2)	
21 दिसं.	पू.षा. (3)	
23 दिसं.	पू.षा. (4)	
25 दिसं.	उ.षा. (1)	23/37
28 दिसं.	उषा 2 मकर	5/52
30 दिसं.	उ.षा. (3)	
1 जन. (09)	उ.षा. (4)	
4 जन.	श्रव. (1)	27/00
9 जन.	श्रव. (2)	
11 जन.	वक्री	22/08
13 जन.	श्रव. (1)	
18 जन.	उ.षा. (4)	5/52
20 जन.	उ.षा. (3)	
23 जन.	उ.षा. (2)	
26 जन.	उ.षा.(1) धनु	21/17
1 फर.	मार्गी	12/48
7 फर.	उ.षा.(2) मक.	21/44
11 फर.	उ.षा. (3)	
15 फर.	उ.षा. (4)	
18 फर.	श्रव. (1)	11/13
21 फर.	श्रव. (2)	

बुध नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
23 फर.	श्रव. (3)	
26 फर.	श्रव. (4)	
28 फर.	धनि. (1)	15/07
2 मार्च	धनि. (2)	
4 मार्च	धनि 3 कुंभ	27/39
7 मार्च	धनि. (4)	
9 मार्च	शत. (1)	10/15
11 मार्च	शत. (2)	
13 मार्च	शत. (3)	
15 मार्च	शत. (4)	
17 मार्च	पू.भा. (1)	9/09
19 मार्च	पू.भा. (2)	
20 मार्च	पू.भा. (3)	
22 मार्च	पूभा 4 मीन	21/34
24 मार्च	उ.भा. (1)	15/57
26 मार्च	उ.भा. (2)	

गुरु नक्षत्र प्रवेश

दिनांक	नक्षत्र	चरण
5 अप्रै.	उ.षा. (1)	26/15
9 मई	वक्री	17/41
12 जून	पू.षा. (4)	13/39
10 जुला.	पू.षा. (3)	18/54
8 अग.	पू.षा. (2)	18/20
8 सितं.	मार्गी	9/44
8 अक्तू.	पू.षा. (3)	21/44
4 नवं.	पू.षा. (4)	8/04
23 नवं.	उ.षा. (1)	11/14
9 दिसं.	उ.षा. 2 मक.	23/42
24 दिसं.	उ.षा. (3)	28/37
8 जन.(09)	उ.षा. (4)	16/30
22 जन.	श्रव. (1)	20/22
5 फर.	श्रव. (2)	22/59
20 फर.	श्रव. (3)	7/07
6 मार्च	श्रव. (4)	28/14
22 मार्च	धनि. (1)	25/41

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
1 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	14/00
4 अप्रै.	उ.भा. (1)	6/46
6 अप्रै.	उ.भा. (2)	
9 अप्रै.	उ.भा. (3)	
12 अप्रै.	उ.भा. (4)	
14 अप्रै.	रेव. (1)	26/03
17 अप्रै.	रेव. (2)	
20 अप्रै.	रेव. (3)	
23 अप्रै.	रेव. (4)	
25 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	21/41
28 अप्रै.	अश्वि. (2)	
1 मई	अश्वि. (3)	
3 मई	अश्वि. (4)	
6 मई	भर. (1)	17/34
9 मई	भर. (2)	
11 मई	भर. (3)	
14 मई	भर. (4)	
17 मई	कृति. (1)	13/40
20 मई	कृति. 2 वृष	6/45
22 मई	कृति. (3)	
25 मई	कृति. (4)	
28 मई	रोहि. (1)	10/01
30 मई	रोहि. (2)	
2 जून	रहि. (3)	
5 जून	रोहि. (4)	
8 जून	मृग. (1)	6/25
10 जून	मृग. (2)	
13 जून	मृग. 3 मिथु.	16/40
16 जून	मृग. (4)	
18 जून	आर्द्रा (1)	26/55
21 जून	आर्द्रा (2)	
24 जून	आर्द्रा (3)	
27 जून	आर्द्रा (4)	
29 जून	पुर्न (1)	23/21
2 जुला.	पुर्न. (2)	
5 जुला.	पुर्न. (3)	

2008 ई.	नक्षत्र	चरण
7 जुला.	पुर्न 4 कर्के	26/36
10 जुला.	पुष्य (1)	19/41
13 जुला.	पुष्य (2)	
16 जुला.	पुष्य (3)	5/50
18 जुला.	पुष्य (4)	
21 जुला.	आश्ले. (1)	16/00
24 जुला.	आश्ले. (2)	
27 जुला.	आश्ले. (3)	
1 अग.	मघा 1 (सिंहे)	12/18
4 अग.	मघा (2)	
6 अग.	मघा (3)	
9 अग.	मघा (4)	
12 अग.	पू.फा. (1)	8/39
14 अग.	पू.फा. (2)	
17 अग.	पू.फा. (3)	
20 अग.	पू.फा. (4)	
23 अग.	उ.फा. (1)	5/16
25 अग.	उ.फा.(2)कं.	22/27
28 अग.	उ.फा. (3)	
31 अग.	उ.फा. (4)	
2 सितं.	हस्ते (1)	26/07
5 सितं.	हस्ते (2)	
8 सितं.	हस्त (3)	
11 सितं.	हस्त (4)	
13 सितं.	चित्रा (1)	23/23
16 सितं.	चित्रा (2)	
19 सितं.	चित्रा(3) तुले	10/15
22 सितं.	चित्रा (4)	
24 सितं.	स्वा. (1)	21/14
27 सितं.	स्वा. (2)	
30 सितं.	स्वा. (3)	
3 अक्तू.	स्वा. (4)	
5 अक्तू.	विशा. (1)	19/39
8 अक्तू.	विशा. (2)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2008-09 ई.	नक्षत्र	चरण
11 अक्तू.	विशा. (3)	
13 अक्तू.	विशा.(4)वृश्चि	25/00
16 अक्तू.	अनु. (1)	18/54
19 अक्तू.	अनु. (2)	
22 अक्तू.	अनु. (3)	
24 अक्तू.	अनु. (4)	
27 अक्तू.	ज्ये. (1)	19/08
30 अक्तू.	ज्ये. (2)	
2 नवं.	ज्ये. (3)	
4 नवं.	ज्ये. (4)	
7 नवं.	मूले (1) धनु.	20/35
10 नवं.	मूले (2)	
13 नवं.	मूले (3)	
16 नवं.	मूले (4)	
18 नवं.	पू.षा. (1)	23/52
21 नवं.	पू.षा. (2)	
24 नवं.	पू.षा. (3)	
27 नवं.	पू.षा. (4)	
30 नवं.	उ.षा. (1)	5/44
2 दिसं.	उषा. (2) मक.	25/44
5 दिसं.	उ.षा. (3)	
8 दिसं.	उ.षा. (4)	
11 दिसं.	श्रवण (1)	15/26
14 दिसं.	श्रवण (2)	
17 दिसं.	श्रवण (3)	
20 दिसं.	श्रवण (4)	
23 दिसं.	धनि. (1)	7/17
26 दिसं.	धनि. (2)	
29 दिसं.	धनि. (3) कुं.	6/25
1 जन.(09)	धनि. (4)	
4 जन.	शत. (1)	8/34
7 जन.	शत. (2)	
10 जन.	शत. (3)	
13 जन.	शत. (4)	

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2009 ई.	नक्षत्र	चरण
16 जन.	पू.भा. (1)	26/35
20 जन.	पू.भा. (2)	
23 जन.	पू.भा. (3)	
27 जन.	पूभा (4) मीने	12/01
31 जन.	उ.भा. (1)	5/37
4 फर.	उ.भा. (2)	
8 फर.	उ.भा. (3)	
13 फर.	उ.भा. (4)	2/39
18 फर.	रेवती (1)	14/45
26 फर.	रेव. (2)	
6 मार्च	शुक्र वक्री	22/45
15 मार्च	रेव. (1) व	7/03
22 मार्च	उ.भा. (व)	11/08

शनि नक्षत्र प्रवेश
(सिंह राशि में)

10 मार्च	मघा (3)	16/02
3 मई	मार्गी	8/36
24 जून	मघा (4)	24/00
28 जुला.	पू.फा. (1)	12/42
25 अग.	पू.फा. (2)	4/58
20 सितं.	पू.फा. (3)	18/50
19 अक्तू.	पू.फा. (4)	7/47
26 नवं.	उ.फा. (1)	18/10
31 दिसं.	वक्री	23/37
5 फर.(09)	पू.फा.(4)	17/41
22 मार्च	पू.फा. (3)	21/42

राहु नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से कुम्भ में)

27 फर.	धनि. (3)	11/59
30 अप्रै.	धनि. 2 मक.	9/30
2 जुला.	धनि. (1)	7/22
3 सितं.	श्रव. (4)	5/08
4 नवं.	श्रव. (3)	26/45
6 जन.(09)	श्रव. (2)	24/23
10 मार्च	श्रव. (1)	22/0[illegible]

केतु नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ में सिंह में)

27 फर.	मघा (1)	11/59
30 अप्रै.	अश्ले. 4 कर्क	9/30
2 जुला.	अश्ले. (3)	7/22
3 सितं.	अश्ले. (2)	5/08
4 नवं.	अश्ले. (1)	26/45
6 जन.(09)	पुष्य (4)	24/23
10 मार्च	पुष्य (3)	22/08

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से कुम्भ में)

14 फर.	पू.भा. (2)	6/42
14 अप्रै.	पू.भा. (3)	14/20
27 जून	वक्री	5/36
13 सितं.	पू.भा. (2)	13/28
27 नवं.	मार्गी	21/42
5 फर.(09)	पू.भा.(3)	23/20
6 अप्रै.	पू.भा.(4) मीने	23/41

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से मकर में)

12 जन.	धनि. (2)	23/22
24 अप्रै.	धनि.(3) कुं.	18/58
27 मई	वक्री	21/44
28 जून	पुन. मकर में	14/08
3 नवं.	मार्गी	12/08
13 फर. 09	धनि.(3)कुं.	26/33

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश
(वर्षारम्भ से धनु में)

17 फर.	मूल. (3)	24/15
2 अप्रै.	वक्री	14/46
17 मई	मूले (2)	4/10
9 सितं.	मार्गी	8/44
14 दिसं.	मूल (3)	23/20
[illegible]	वक्री	23/01

ग्रहों की अंश-कलात्मक युतियां
(सन् 2008-09 ई.)

1 फर. ⇒ गुरु-शुक्र (धनु)
17 फर. ⇒ सूर्य-राहु (कुम्भ)
26 फर. ⇒ बुध-शुक्र (मकर)
10 मार्च ⇒ शुक्र-राहु (कुम्भ)
12 मार्च ⇒ बुध-राहु (कुम्भ)
24 मार्च ⇒ बुध-शुक्र (कुम्भ)
9 जून ⇒ सूर्य-शुक्र (वृष)
17 जून ⇒ मंग-केतु (कर्क)
10 जुला. ⇒ मंग-शनि (सिंह)
11 अग. ⇒ सूर्य-केतु (कर्क)
4 सितं. ⇒ सूर्य-शनि (सिंह)
5 दिसं. ⇒ सूर्य-मंग. (वृश्चिक)
20 जन. 09 ⇒ सूर्य-बुध (मकर)
24 जन. 09 ⇒ सूर्य-गुरु (मकर)
29 जन. ⇒ सूर्य-राहु (मकर)
11 फर. ⇒ गुरु-राहु (मकर)
15 फर. ⇒ मंग.-राहु (मकर)
17 फर. ⇒ मंग.-गुरु (मकर)

✷ समसप्तक योग (2008-09 ई.) ✷

- मंग-गुरु ⇒ 1 जन. से 27 अप्रै.
- मंग.-शुक्र ⇒ 19 जन. से 11 फर.
- सूर्य-शनि ⇒ 13 फर. से 13 मार्च
- सूर्य-गुरु ⇒ 14 जून से 15 जुला.

✷ षडाष्टक योग ✷

सूर्य-शनि ⇒ 14 जन. से 12 फर.

✦ चतुर्ग्रही योग ✦

16 अग. से 24 अग. ⇒ सू + बु. + शु. + श. (सिंह)
16 सितं. से 19 सितं. ⇒ सू + मं. + बु. + शु. (कन्या)
28 जन. (09) से 12 फर ⇒ सू + मं. + गु. + रा. (मकर)
13 फर. (09) से 4 मार्च ⇒ मं. + बु. + गु. + रा. (मक.)

☆ पंचग्रही योग ☆

8 फर. (09) से 12 फर. ⇒
सू + मं. + बु. + गु. + रा. (मक.)

ग्रहों के द्विग्रही योग

शनि-केतु ⇒ 1 जन. से 29 अप्रै. (सिंह)
सूर्य-गुरु ⇒ 1 जन. से 13 जन. (धनु)
सूर्य-बुध ⇒ 14 जन. से 12 फर. (मकर)
गुरु-शुक्र ⇒ 19 जन. से 11 फर. (धनु)
सूर्य-राहु ⇒ 13 फर. से 13 मार्च (कुम्भ)
बुध-शुक्र ⇒ 13 फर. से 7 मार्च (मकर)
शुक्र-राहु ⇒ 8 मार्च से 31 मार्च (कुम्भ)
बुध-शुक्र ⇒ 10 मार्च से 29 मार्च (कुम्भ)
मंगल-केतु ⇒ 30 अप्रै. से 21 जून (कर्क)
बुध-शुक्र ⇒ 1 अप्रै. से 15 अप्रै. (मीन)
सूर्य-बुध ⇒ 15 अप्रै. से 28 अप्रै. (मेष)
सूर्य-शुक्र ⇒ 25 अप्रै. से 13 मई (मेष)
सूर्य-शुक्र ⇒ 20 मई से 7 जुलाई
मंग.-शनि ⇒ 21 जून से 9 अग. (सिंहे)
सूर्य-शुक्र ⇒ 16 जुला. से 31 जुला. (कर्के)
सूर्य-केतु ⇒ 16 जुला. से 15 अग. (कर्क)
शुक्र-शनि ⇒ 1 अग. से 25 अग. (सिंह)
बुध-शनि ⇒ 7 अग. से 24 अग. (सिंह)
सूर्य-शनि ⇒ 16 अग. से 15 सितं. (सिंह)
मंगल-बुध ⇒ 25 अग. से 25 सितं. (कन्या)
बुध-शुक्र ⇒ 25 अग. से 18 सितं. (कन्या)
मंगल-शुक्र ⇒ 26 अग. से 19 सितं. (कन्या)
सूर्य-मंग. ⇒ 16 सितं. से 25 सितं. (कन्या)
मंग.-शुक्र ⇒ 26 सितं. से 13 अक्तू. (तुला)
सूर्य-मंग. ⇒ 17 अक्तू. से 7 नवं. (तुला)
मंग.-बुध ⇒ 19 नवं. से 8 दिसं. (वृश्चिक)
गुरु-शुक्र ⇒ 7 नवं. से 2 दिसं. (धनु)
मंग.-बुध ⇒ 9 दिसं. से 28 दिसं. (धनु)
शुक्र-राहु ⇒ 3 दिसं. से 28 दिसं. (मकर)
गुरु-शुक्र ⇒ 9 दिसं. से 29 दिसं. (मकर)
गुरु-राहु ⇒ 9 दिसं. से 27 मार्च (मकर)
मंग.-राहु ⇒ 28 जन. से 7 मार्च (2009)
सूर्य-राहु ⇒ 15 जन. से 12 फर. (मकर)
मंग.-राहु ⇒ 28 जन. से 7 मार्च (मकर)
बुध-राहु ⇒ 8 फर. से 4 मार्च (मकर)

प्रमुख व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि. संवत् २०६५

चैत्र नवरात्र एवं नव सम्वत् का शुभारम्भ

6 अप्रैल, 2008 ई. रविवार को ही शास्त्र सम्मत

गत सम्वत् की भान्ति सम्वत् २०६५ में भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय हुआ है, क्योंकि **6 अप्रैल, 2008 ई.** की प्रातः 9-25 पर चैत्र अमावस की समाप्ति हुई है, तथा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रातः 9/25 से ही प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय (6/13 घं. मिं.) से पूर्व ही (6/09 घं.मिं.) पर समाप्त हो गई है, जिस कारण चैत्र प्रतिपदा का क्षय हुआ माना जाएगा। इस स्थिति में चैत्र वासन्त नवरात्र का आरम्भ अमा. विद्धा प्रतिपदा, **6 अप्रैल (2008 ई.) रविवार** से ही तथा **प्लव नामक** नए विक्रमी सम्वत् २०६५ का भी शुभारम्भ होगा। मत की पुष्टि में विभिन्न शास्त्रकारों ने अपने-अपने अभिमत व्यक्त किए हैं—

निर्णयसिन्धु के अनुसार यदि चैत्र शु. प्रतिपदा सूर्योदय कालिक न मिले और अगले दिन प्रतिपदा का अभाव हो, उस स्थिति में पूर्वा अर्थात् दर्श (अमावस) युक्ता प्रतिपदा को ही चैत्र नवरात्र आरम्भ करने चाहिएँ—

''परदिने प्रतिपदोऽत्यन्तासत्त्वे दर्शयुता पूर्वैव ग्राह्या॥'' —निर्णयसिन्धु

वृद्ध वसिष्ठ एवं तिथि चिन्तामणि के अनुसार भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा यद्यपि उदय कालिक ही लेनी चाहिए, परन्तु क्षय हो जाने के कारण यदि प्रतिपदा सूर्योदय कालिक प्राप्त न होवे, तो फिर अमावस्या युक्ता प्रतिपदा में ही नव-सम्वत्सर और चैत्र नवरात्र के शुभ कर्त्तव्य-घटस्थापन, कलश-पूजन, सम्वत्सर पूजन, श्रीदुर्गा पूजादि कृत्य करने चाहिएं—

''चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत्सराम्भः तत्रौदयिकी ग्राह्या।
यत्र क्षयवशादमा युक्तैव लम्यते, न द्वितीया युता, तत्र
अमा विद्धायामपि प्रतिपदि कलश स्थापनादि कार्यम्॥'' —तिथि चिन्तामणि

ध्यान रहे, भारत के उत्तर-पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वीय क्षेत्रों (नगरों) में जहाँ पर सूर्योदय प्रातः 6 बजकर 9 मिनट से पहिले होगा, वहाँ पर उदय कालिक प्रतिपदा कुछ पलों के लिए अवश्य स्थानीय सूर्योदय को स्पर्श करेगी। उस स्थिति में भी चैत्र नवरात्र तथा विक्रमी सम्वत् का प्रारम्भ 6 अप्रैल रविवार से ही माना जाएगा। क्योंकि मात्र कुछ पलों में ही सम्वत्सर पूजन, घटस्थापन, कलश पूजन, श्री दुर्गादि पूजा व अन्य नवरात्र सम्बन्धी कृत्यों का सम्पादन नहीं हो सकता। इस सम्बन्ध में शास्त्रकारों ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं, ''प्रतिपदा में नवरात्र का आरम्भ सूर्योदय के पश्चात् तीन मुहूर्त्त में प्रतिपदा हो, और जो 3 मुहूर्त्त न मिले, तो दो मुहूर्त्त प्रतिपदा, तो उसमें नवरात्र करना, किसी ग्रंथाकार ने तो मुहूर्त्त मात्र (2 घड़ी) भी प्रतिपदा सू.उ. के बाद होने पर नवरात्र करने को कहा है, **और जो सूर्योदय के समय एक मुहूर्त्त (2 घड़ी) से भी न्यून (कम) हो अथवा सूर्योदय के समय जिसका स्पर्श न हो, तो ऐसी स्थिति में प्रतिपदा (नवरात्रादि) दर्शयुता (अमावस युक्ता) ही ग्रहण करनी चाहिए।''** (धर्मसिन्धु)

''स च नवरात्रारंभः सूर्योदयोत्तरं त्रिमुहूर्त्त व्यापिन्यां प्रतिपदि कार्यः॥ तदऽभावे द्विमुहूर्त्त व्यापिन्यामपि॥ क्वचित् मुहूर्त्तमात्र व्यापिन्यामाप्युक्तः॥'' ....मुहूर्त्त न्यूनव्याप्तौ सूर्योदय सूर्योदयास्पर्शे वा दर्शयुताऽपि ग्राह्या॥ (धर्मसिन्धुः)

धर्मसिन्धु में ही अन्यत्र अपराह्न व्यापिनी प्रतिपदा को ही ग्राह्य एवं श्रेयस्कर माना गया है—

शुक्ल प्रतिपत्पूजा व्रतादौ अपराह्नव्याप्ति सत्त्वे पूर्वविद्धा ग्राह्या। (धर्मसिन्धु)

स्कन्दपुराण में भी चैत्र प्रतिपदा सम्मुखी (अपराह्न व्यापिनी) तिथि को ही शुभ एवं ग्राह्य माना गया है—

''प्रतिपत्सम्मुखी कार्या या भवेदापराह्निकी (स्कन्द)''

चैत्र (वासन्त) नवरात्र में तैलमर्दन, स्नान, सम्वत्सर पूजन, कलश पूजन, स्थापन, सवत्सर फलश्रवण, श्रीदुर्गा पूजन दान आदि कृत्य चैत्र प्रतिपदा में ही करणीय होते हैं। सम्भवतः इसी कारण शास्त्रकारों ने चैत्र नवरात्र की प्रतिपदा तिथि में (उपरोक्त विवेचनानुसार) कम से कम एक मुहूर्त्त अर्थात् (2 घड़ी = 48 मिनट) की विद्यमानता अनिवार्य बतलाई है। **निर्णयसिन्धुकार** ने भी युग्म तिथियों में प्रतिपदा से युक्त अमावस आदि तिथियों के योग को युग्म योग कहा है जो कि महाफल देता है—

प्रतिपद्यप्यमावास्यातिथ्योः युग्मं महाफलम्॥ निर्णयसिन्धु

इन युग्म तिथियों में भी जो तिथि कर्म के समय तक जिस दिन रहे, वही कर्मकाल व्यापिनी तिथि ग्रहण करनी चाहिए—

कर्मणो यस्य यः कालस्तत् कालव्यापिनी तिथिः।
तस्य कर्माणि कुर्वीत, ह्रास वृद्धी न कारणम्॥

'देवीपुराण' में श्रीदुर्गा पूजादि में अमायुक्ता प्रतिपदा को विशेष प्रशस्त नहीं माना है, परन्तु वहाँ भी प्रतिपदा के सम्बन्ध में यह आवश्यक निर्देश है कि द्वितीया युक्ता प्रतिपदा भी सूर्योदय के बाद कम-से-कम एक मुहूर्त्त (2 घड़ी) अवश्य होनी चाहिए—

''अमायुक्ता न कर्त्तव्या प्रतिपद चाण्डिकार्चने।
मुहूर्त्तमात्रा कर्त्तव्या द्वितीयादि गुणान्विता।'' (देवी पुराण)

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सदूर उत्तर-पूर्वी भारत के कुछ प्रदेशों (अरुणांचल, आसाम, मिज़ोरम, त्रिपुरा, मणिपुर, नागालैण्ड) में जहाँ सूर्योदय प्रतिपदा 6 घं. 9 मिंट से 1 (एक) मुहूर्त्त (48 मिनट) से पहले अर्थात् प्रातः 5/21 से पहले होगा, केवल वहाँ पर ही चैत्र नवरात्रा सम्वत् का आरम्भ 7 अप्रैल, सोमवार को होगा। शेष समस्त भारत में तो वासन्त नवरात्र का आरम्भ 6 अप्रैल रविवार, 2008 ई. से ही होगा। तैलऽभ्यङ्ग, सम्वत्सर पूजन, संवत् फल श्रवण, कलश पूजन स्थापन, सर्वदेव ध्वजारोहण एवं श्री दुर्गापूजनादि प्रातः 9/25 के बाद वृष लग्न एवं अभिजित् (दुपै. 11/36 से 12/24 के मध्य) मुहूर्त्तों में प्रशस्त होंगे। (एक मुहूर्त्त स्थानीय दिनमान का १५वाँ भाग होता है।)

7 अप्रैल, 2007 ई. को क,ख, रेखा के बायीं ओर पड़ने वाले नगरों में सू.उ 5-21 के बाद होगा। अतएव नवरात्रे 6 अप्रैल से ही प्रारम्भ होंगे।

स्पष्टता के लिए ऊपर दिए गए मानचित्र (नक्शा) देखें। यहाँ 'क-ख' रेखा से दायीं ओर पड़ने वाले नगरों में 7 अप्रै. को चैत्र नवरात्रे आरम्भ होंगे जबकि बायीं ओर पड़ने वाले नगरों में (लगभग सम्पूर्ण उत्तर-भारत) 6 अप्रैल को ही नवरात्रे आरम्भ करने प्रशस्त होंगे अर्थात् जहाँ-जहाँ सूर्योदय प्रात: 5-21 से पहले होगा, वहाँ प्रतिपदा का मान 2 घड़ी से अधिक होने के कारण चैत्र नवरात्रे 7 अप्रैल से प्रारम्भ होंगे जबकि लगभग उत्तर-पश्चिमी भाग में जहाँ सूर्योदय 5-21 के बाद होगा, वहाँ सूर्योदय से प्रतिपदा का मान 2 घड़ी (1 मुहूर्त्त) से कम होने के कारण चैत्र (वासन्त) नवरात्रे 6 अप्रैल को ही आरम्भ होंगे।

(१) समस्त कार्यों में सिद्धि के लिए—

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥ अध्याय ११,

(२) सब प्रकार के अरिष्ट की शान्ति के लिए—

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥९॥

(३) क्लिष्ट रोग की शान्ति हेतु—

रोगानशेषानपंहसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलान् अभीष्टान्॥

–वर्ष का राजा (वर्षेश) सूर्य–

'ज्योतिर्निबन्ध' के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के सूर्योदय समय में जो वार होता है, उसी वार से सम्बन्धित ग्रह वर्षेश या वर्ष का राजा होता है। यदि दोनों दिन सूर्योदय में प्रतिपदा हो, अथवा दोनों दिन में न होय, तो भी प्रथम प्रतिपदा का दिन ही राजा होता है—

''चैत्रे सित प्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेशः।
उदय द्वितये पूर्वोनोदय युगलेऽपि पूर्वः स्यात्॥''

इसके अतिरिक्त चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय होने की स्थिति में अमावस युक्ता प्रतिपदा वाले दिन (मध्याह्न काल में व्याप्त होने वाली प्रतिपदा को) जो वार होगा वही वर्षेश, अर्थात् वर्ष का राजा होता है—

''दर्शप्रतिपत्सन्धौ चैत्रादौ यो भवेत् वारः।
सोऽब्दपतिः विज्ञेयः प्रतिपदि मध्याह्नकाले यः॥'' (रत्नावाली)

सम्वत् २०६५ में, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय हुआ है, चैत्र अमावस 6 अप्रैल, रविवार को प्रात: 9/25 तक है, तदुपरान्त चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि जो मध्याह्न व्यापिनी होते हुए, दूसरे दिन की प्रात: 6/09 तक व्याप्त है। रविवासरी प्रतिपदा आगामी सूर्योदय (6/13 घं.मिं.) से पहले ही समाप्त हो जाने से चैत्र प्रतिपदा का क्षय: हुआ माना जायेगा। **उपरोक्त शास्त्र वचनों के आधार पर मध्याह्नकालीन अमा. युक्ता प्रतिपदा वाले वार (रविवार) का स्वामी ग्रह सूर्य ही** वि. सम्वत् २०६५ का राजा (वर्षेश) होगा।

निर्णयसिन्धु, गर्गाचार्य, मकरन्द आदि विद्वानों ने पूर्वविद्धा मध्याह्न कालिक प्रतिपदा वाले वार को ही वर्षेश (वर्ष का राजा) स्वीकार किया है, यथा—

अमा प्रतिपदोः सन्धिमध्याण्हात्पूर्वतो यदि।
तदा तद्दिनपो राजा परतश्चेत् परो भवेत्॥ (गर्गाचार्य)

इस प्रकार शास्त्रमतानुसार भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र जिनमें अधिकतर पंजाब, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के भागों में **वर्षेश (वर्ष के राजा सूर्यदेव)** होंगे। कुछ लोग सूर्योदय कालिक प्रतिपदा में वर्षेश का निर्णय स्वीकारते हैं।

बहुभिः कीर्तितो राजा रवेरूदयकालिकः॥

कुछ प्रदेशों एवं नगरों में वर्ष का राजा चन्द्र

जिन प्रदेशों एवं नगरों में 7 अप्रैल, 2008 ई. की प्रातः का सूर्योदय प्रतिपदा समाप्तिकाल 6 घं. 09.2 मिं. से पहले घटित होगा, वहाँ पर सोमवार को उदयकालिक चैत्र शुक्ल प्रतिपदा होने की स्थिति में वर्षेश (वर्ष का राजा) चन्द्रमा होगा।

आगे हम भारत के प्रमुख नगरों का 7 अप्रैल का सूर्योदय दे रहे हैं। जिससे आप स्वयं ... निर्णय कर सकते हैं।

किन-किन नगरों में राजा सूर्य या चन्द्र होगा ?

(7 अप्रैल, 2008 ई. भारत के प्रमुख नगरों का सूर्योदय) (जहाँ सूर्य-उदय 6 घं. 9.2 मिं. के बाद होगा, वहाँ राजा सूर्य तथा जहाँ 6 घं. 9.2 मिं. से पहले होगा, वहाँ राजा चन्द्रमा होगा)

नगर	सूर्योदय घं. मिं./सैं.	राजा सूर्य/चंद्र
अमृतसर	6 16	सूर्य
अम्बाला	6 9.0	चन्द्र
अगरतला	5 16	चन्द्र
अखनूर	6 16	सूर्य
अलवर (रा.)	6 11	सूर्य
अम्ब (हि.प्र.)	6 11	सूर्य
अर्की (हि.प्र.)	6 8	चन्द्र
अल्मोड़ा (उत्त.)	5 58	चन्द्र
अनन्तनाग (का.)	6 14	सूर्य
अयोध्या	5 49	चन्द्र
अबोहर	6 19	सूर्य
आगरा	6 7	चन्द्र
इलाहाबाद	5 52	चन्द्र
इन्दौरा (हि.प्र.)	6 12	सूर्य
ऊना (हि.प्र.)	6 11	सूर्य
उदयपुर (रा.)	6 25	सूर्य
ऊधमपुर (का.)	6 15	सूर्य
उज्जैन	6 17	सूर्य
ऋषिकेश	6 2	चन्द्र
कठुआ (का.)	6 14	सूर्य
करनाल	6 8.7	चन्द्र
कलकत्ता	5 27	चन्द्र
कपूरथला	6 14	सूर्य
काँगड़ा	6 11	सूर्य
कानपुर	5 59	चन्द्र
कालका	6 8	चन्द्र
कुल्लू	6 7	चन्द्र
कोहिमा (नागा.)	5 3	चन्द्र
कुराली	6 10	सूर्य
कोटकपूरा	6 18	सूर्य
कादियां (पं.)	6 14	सूर्य
करसोग	6 7	चन्द्र
किन्नौर (हि.प्र.)	6 3	चन्द्र
कंडाघाट	6 7	चन्द्र
कुमारसेन	6 6	चन्द्र
किश्तवाड़	6 12	सूर्य

नगर	सूर्योदय घं. मिं./सैं.	राजा सूर्य/चंद्र
कुरुक्षेत्र	6 9.7	सूर्य
करतारपुर	6 14	सूर्य
कूचबिहार (बं.)	5 21	चन्द्र
कैथल	6 10	सूर्य
कोटा (रा.)	6 17	सूर्य
खन्ना (पं.)	6 11	सूर्य
खरड़	6 9.2	सूर्य
गिलगित (का.)	6 15	सूर्य
गुरदासपुर	6 13	सूर्य
गुड़गाँव	6 8.8	चन्द्र
गोराया (पं.)	6 13	सूर्य
गंगानगर	6 22	सूर्य
गुवाहाटी	5 12	चन्द्र
गढ़शंकर	6 11	सूर्य
गाज़ियाबाद	6 8	चन्द्र
गोवा (पंजिम)	6 30	सूर्य
चम्बा	6 10	सूर्य
चण्डीगढ़	6 8.9	चन्द्र
छिन्दवाड़ा	6 6	चन्द्र
जालन्धर	6 13	सूर्य
जम्मू	6 15	सूर्य
जयपुर	6 16	सूर्य
जीन्द (हरि.)	6 12	सूर्य
जामनगर (गु.)	6 41	सूर्य
जोगिन्द्रनगर	6 8.3	चन्द्र
जोधपुर (रा.)	6 27	सूर्य
जबलपुर	6 1	चन्द्र
जलगांव (म.)	6 19	सूर्य
जैतों (पं.)	6 17	सूर्य
जीरा (पं.)	6 16	सूर्य
जगाधरी	6 8	चन्द्र
ज्वालामुखी	6 11	सूर्य
जाखल	6 13	सूर्य
झांसी	6 6	चन्द्र
टांडा उड़मुड़	6 13	सूर्य
टोहाना	6 13	सूर्य

नगर	सूर्योदय घं. मिं./सैं.	राजा सूर्य/चंद्र
टोंक (राज.)	6 16	सूर्य
डोडा (का.)	6 13	सूर्य
डलहौज़ी (हि.प्र.)	6 11	सूर्य
तरनतारन	6 16	सूर्य
थानेसर (हरि.)	6 8.6	चन्द्र
दिल्ली	6 8.8	चन्द्र
देहरादून	6 5	सूर्य
दसूहा	6 13	सूर्य
दीनानगर	6 14	सूर्य
दतारपुर	6 13	सूर्य
दार्जिलिंग	5 26	चन्द्र
दुर्ग (छ.ग.)	5 56	चन्द्र
द्वारिका	6 46	सूर्य
धर्मशाला	6 10	सूर्य
धूरी	6 14	सूर्य
नवलगढ़	6 17	सूर्य
नकोदर (पं.)	6 14	सूर्य
नूरमहल	6 14	सूर्य
नरवाना (हरि)	6 11	सूर्य
नासिक (महा)	6 27	सूर्य
नागपुर (महा)	6 6	चन्द्र
नारनौल (ह.)	6 13	सूर्य
नंगल (पं.)	6 10	सूर्य
नवांशहर	6 11	सूर्य
नाभा	6 12	सूर्य
नाहन (हि.प्र.)	6 7	चन्द्र
नालागढ़ (हि.प्र.)	6 10	सूर्य
नैनीताल (उ.)	6 0	चन्द्र
पठानकोट	6 13	सूर्य
पटियाला	6 11	सूर्य
पट्टी	6 16	सूर्य
पंचकूला	6 8	चन्द्र
पानीपत	6 9.2	सूर्य
पिहोवा (ह.)	6 11	सूर्य
पिथौरागढ़	5 56	चन्द्र
पिंजौर	6 8	चन्द्र

नगर	सूर्योदय घं. मिं./सैं.	राजा सूर्य/चंद्र
पुँछ (का.)	6 17	सूर्य
पटना (बि.)	5 39	चन्द्र
पीलीभीत	5 59	चन्द्र
पालमपुर (हि.प्र.)	6 9.3	सूर्य
प्रतापगढ़	5 51	चन्द्र
पाली (राज.)	6 25	सूर्य
पुरुलिया (बं.)	5 35	चन्द्र
पन्ना (म.प्र.)	5 59	चन्द्र
पिलानी (रा.)	6 16	सूर्य
पुष्कर	6 21	सूर्य
फैज़ाबाद	5 51	चन्द्र
फगवाड़ा	6 13	सूर्य
फरीदकोट	6 16	सूर्य
फाज़िल्का	6 20	सूर्य
फिरोज़पुर	6 17	सूर्य
फिल्लौर	6 13	सूर्य
फरीदाबाद	6 8	चन्द्र
फतेहाबाद	6 14	सूर्य
बटाला	6 15	सूर्य
बंगा	6 12	सूर्य
बलाचौर	6 11	सूर्य
बक्सर (उ.प्र.)	5 43	चन्द्र
बड़ौदा (गु.)	6 28	सूर्य
बरनाला	6 15	सूर्य
बिजनौर(उ.प्र.)	6 5	चन्द्र
बुलन्दशहर	6 6	चन्द्र
बरेली (उ.प्र.)	6 0	चन्द्र
बल्लभगढ़	6 8.8	चन्द्र
बहादुरगढ़	6 10	सूर्य
बीकानेर (रा.)	6 25	सूर्य
बांसवाड़ा (रा.)	6 22	सूर्य
बागपत (उ.प्र.)	6 8.3	चन्द्र
बैजनाथ (हि.प्र.)	6 9.0	चन्द्र
बस्तर (म.प्र.)	5 56	चन्द्र
बैंगलौर	6 16	सूर्य
भटिण्डा	6 17	सूर्य
भिवानी	6 12	सूर्य
भुवनेश्वर	5 39	चन्द्र

नगर	सूर्योदय घं. मिं./सैं.	राजा सूर्य/चंद्र
भोपाल	6 10	सूर्य
मलेरकोटला	6 13	सूर्य
मानसा	6 15	सूर्य
मोगा (पं.)	6 15	सूर्य
मोहाली	6 9.0	चन्द्र
मार्तण्ड (का.)	6 13	सूर्य
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	6 13	सूर्य
मेरठ	6 7	चन्द्र
मिर्ज़ापुर	5 50	चन्द्र
मुरादाबाद	5 32	चन्द्र
मसूरी	6 5	चन्द्र
मथुरा	6 8	चन्द्र
मुजफ्फरनगर	6 7	चन्द्र
मुक्तसर	6 19	सूर्य
मन्दसौर (म.प्र.)	6 20	सूर्य
मण्डी (हि.प्र.)	6 8	चन्द्र
मनीकरण	6 7	चन्द्र
मनाली	6 7	चन्द्र
मद्रास (चै.)	6 5	चन्द्र
मुम्बई	6 31	सूर्य
यमुनानगर	6 8	चन्द्र
रामपुरबुशै. (हि.)	6 6	चन्द्र
रोहड़ू (हि.प्र.)	6 5	चन्द्र
रोपड़	6 10	सूर्य
राजपुरा	6 11	सूर्य
रायकोट (पं.)	6 14	सूर्य
रोहतक	6 11	सूर्य
रिवाड़ी	6 11	सूर्य
रामबन	6 14	सूर्य
रियासी	6 15	सूर्य
रतलाम	6 20	सूर्य
रायसेन (म.प्र.)	6 9.9	सूर्य
राजौरी	6 18	सूर्य
रायपुर (छत्ती.)	5 56	चन्द्र
राँची (झा.)	5 40	चन्द्र
रुड़की (उ.)	6 5	चन्द्र
लुधियाना	6 12	सूर्य
लखनऊ	5 55	चन्द्र
लखीमपुर	5 55	चन्द्र

नगर	सूर्योदय घं. मिं./सैं.	राजा सूर्य/चंद्र
लाडवा (हरि.)	6 9.0	चन्द्र
वाराणसी	5 48	चन्द्र
विशाखापट्टनम	5 50	चन्द्र
शिमला	6 8	चन्द्र
शाहबाद	6 8.7	चन्द्र
शोलापुर (महा.)	6 19	सूर्य
शिलांग (मेघा)	5 11	चन्द्र
श्रीनगर	6 15	सूर्य
संगरूर	6 13	सूर्य
सुल्तानपुरलोधी	6 15	सूर्य
समाना (पं.)	6 12	सूर्य
समराला	6 11	सूर्य
सुनाम	6 14	सूर्य
सुन्दरनगर(हि.प्र.)	6 8	चन्द्र
सोलन (हि.प्र.)	6 7	चन्द्र
सुजानपुर टिहरा	6 10	सूर्य
सरकाघाट	6 10	सूर्य
सिरसा	6 16	सूर्य
सोनीपत	6 9.2	चन्द्र
सूरतगढ़ (राज.)	6 22	सूर्य
सूरत (गुज.)	6 31	सूर्य
सीकर	6 17	सूर्य
सागर (म.प्र.)	6 6	चन्द्र
साम्भर (रा.)	6 18	सूर्य
सहारनपुर	6 7	चन्द्र
सीतापुर(उ.प्र.)	5 55	चन्द्र
होशियारपुर (पं.)	6 12	सूर्य
हमीरपुर (हि.प्र.)	6 9.3	सूर्य
झांसी (हरि.)	6 14	सूर्य
हिसार	6 15	सूर्य
हरिद्वार	6 4	चन्द्र
हल्द्वानी(उ.प्र.)	6 0	चन्द्र
हाथरस	6 6	चन्द्र
हनुमानगढ़ (रा.)	6 20	सूर्य
हैदराबाद	6 11	सूर्य
होशंगाबाद(म.प्र.)	6 10	सूर्य

श्रीरामनवमी व्रतादौ—[13-14 अप्रैल, सं. 2008 ई.]

यह व्रत निष्काम भावना से रखकर आजीवन किया जाये तो उसका अनन्त कोटि फल होता है। यदि किसी निमित्त या कामना से किया जाए, तो यथेष्ट फल मिलता है। **शास्त्रानुसार** श्रीरामनवमी (जयन्ती) पुनर्वसु नक्षत्र युक्ता और मध्याह्न युक्ता ही व्रत, जप, पूजनादि की दृष्टि से शुभ मानी जाती है। इस वर्ष 13 अप्रैल, रविवार को अष्टमी विद्धा नवमी मध्याह्न युक्ता तो है, परन्तु पुनर्वसु का दोनों दिन (13-14 अप्रैल) को अभाव है। कुछ आचार्य अष्टमी विद्धा मध्याह्न व्यापिनी, पुनर्वसु नक्षत्र होने पर भी उसे त्याज्य मानते हुए परले दिन कम-से-कम तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी) होने पर **उस नवमी को सबके लिए व्रतादि में ग्राह्य मानते हैं—**

केचित् तु अष्टमी विद्धां मध्याह्नव्यापिनी पुनर्वसुयुतामपि त्यक्त्वा परेद्युः हूर्तापि नवमी सर्वैरपि उपोष्या॥ (धर्मसिंधु)

आगे स्पष्टीकरण करते हुए कहा गया है कि शुद्ध नवमी न मिलने की स्थिति में, स्मार्त्तमत वालों को अष्टमी विद्धा नवमी में उपवास करने का परमार्श दिया है, तथा वैष्णवों को तीन मुहूर्त्त से युक्त परली में ही व्रत-दान आदि करने की सम्मति प्रदान की है—

स्मार्तैः अष्टमी विद्धा–उपोष्या वैष्णवैः मुहूर्त्तत्रययुता परे वा उपोष्या शुद्धाया नवम्या अलाभे ......॥ (धर्मसिन्धु)

प्रस्तुत वर्ष 13 अप्रैल, रविवार को प्रातः 11.26 के बाद अपराह्न व्यापिनी नवमी स्मार्तो के लिए तथा **14 अप्रैल, सोमवार** को 3 मुहूर्त्त (6 घड़ी) से अधिक काल-व्याप्ति नवमी भी सबको (सर्वैरपि), विशेषकर वैष्णवों के लिए ग्राह्य एवं प्रशस्त रहेगी।

अक्षया तृतीया (7 मई, 2008 ई०, बुधवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया अर्थात् अक्षया तृतीया बड़ी पवित्र और महान फल देने वाली है। यह **पूर्वाह्न** एवं मध्याह्न व्यापिनी ग्रहण करनी चाहिए। **सा पूर्वाह्न-व्यापिनी ग्राह्या** (निर्णय सिंधु)। यह तृतीया यदि दोनों दिन पूर्वाह्न को व्याप्त करे, तो शास्त्रनिर्णय अनुसार दूसरे दिन तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी) से अधिक काल में व्याप्ति हो, तो परली चतुर्थी युक्ता तृतीया ग्रहण करनी चाहिए, यदि तीन मुहूर्त्त से कम हो, तो पहले दिन वाली मध्याह्न युक्ता तृतीया ही ग्रहण करनी चाहिए—

''द्वेधा विभक्त–दिन–पूर्वार्द्धैक देश व्यापिनी दिनद्वये चेत्
त्रिमुहूर्त्ताधिक व्याप्ति सत्त्वे परा, त्रिमुहूर्त्त न्यूनत्वे पूर्वा॥ (धर्मसिन्धु)

प्रस्तुत वर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया 7 और 8 मई-दोनों दिन पूर्वाह्न को पड़ रही है, परन्तु 8 मई को तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी) से कम है। अतएव शास्त्र वचनानुसार 7 मई, बुधवार, 2008 ई० को पूर्वाह्न एवं **मध्याह्न** व्यापिनी अक्षय तीज व्रत, जप, दान, पुण्य आदि हेतु प्रशस्त होगी। इस दिन रोहिणी नक्षत्र युक्त और बुधवार का समावेश होने से और भी अधिक **पुण्यप्रदायक** होगी, उक्तं च—

इयं (वैशाख शुक्ल तृतीया) रोहिणी बुध योगे महापुण्यप्रदा—(धर्मसिन्धु)

> इस सम्बन्ध में भड्डरी की एक कहावत प्रसिद्ध है—कि ''वैशाख की अक्षय-तृतीया को यदि रोहिणी न हो, पौष की अमावस को मूल न हो, रक्षाबन्धन के दिन श्रवण और कार्तिक की पूर्णिमा को कृत्तिका न हो, तो पृथ्वी पर दुष्टों का बल बढ़ेगा। ऋतुओं का व्यतिक्रम (उलट-पुलट) होगा और धानादि की फसल भी कम होगी।''

श्रीपरशुराम जयन्ती—ता. 7 मई, बुधवार 2008 ई० को ही तृतीया प्रदोष व्यापिनी एवं प्रथम प्रहर युता होने से इसी दिन (दिन 7 मई) को ही मनाना शास्त्रसम्मत होगा।

—गंगा दशहरा हरिद्वार—

(12 जून, 2008 ई० गुरूवार)

ब्रह्मपुराणानुसार ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि को हस्त नक्षत्र कालीन श्रीगङ्गा जी का (अथवा उनका ध्यान करते हुए) स्नान, अन्न, वस्त्रादि का दान, जप-तप, उपासना और उपवास किया जाए, तो दस प्रकार के पाप (तीन प्रकार के कायिक, चार प्रकार के वाचिक और 3 प्रकार के मानसिक) दूर होते हैं—

ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्त संयुता। हरते दश पापानि तस्मात् दशहरा स्मृता॥ (हेमाद्रिः)

गंगा दशहरा में दश योग प्रशस्त होते हैं।—ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, बुधवार, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनन्द योग, वृष का सूर्य और कन्या का चन्द्रमा। शास्त्र नियमानुसार जिस दिन दशमी में हस्त नक्षत्र, व्यतीपात आदि १० योग पूर्वाह्न में उस दिन दशहरा व्रत अर्थात् जिस दशमी तिथि में दसों में से अधिक योग मिलें, उसी तिथि को व्रतादि में ग्रहण करना चाहिए—

तेन यस्मिन्दिने कतिपय योगवती दशमी पूर्वाह्णे लभ्यते तत्र दशहरा व्रतं कार्यम्। दिनद्वये पूर्वाह्णे तत्सत्त्वे यत्र बहूनां योगः सा ग्राह्या॥ (धर्मसिन्धुः)

प्रस्तुत वर्ष ज्येष्ठ शुक्ला दशमी अर्थात् 12 जून, गुरुवार, 2008 ई० को प्रातः 10 बजे के बाद ज्येष्ठ मास, दशमी तिथि, शुक्ल पक्ष, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, वृष का सूर्य और कन्या का चन्द्र—ये आठ तत्त्व विद्यमान हैं। जबकि **उदित दशमी** (13 जून) को दो योग कम अर्थात् **हस्त** और **व्यतीपात** का अभाव है। अतएवं 12 जून वीरवार को ही श्रीगंगा स्नान, जप, तप, दानादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। ता. 13 जून, शुक्रवार को स्नान, जप, दानादि का माहात्म्य अपेक्षाकृत कम होगा। —पंचांगकर्त्ता

—श्रावण पूर्णिमा को श्रावण उपाकर्मादि का निषेध—

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को वेदपारायण शुभ कृत्यारम्भ को उपाकर्म कहते हैं। गृह्य सूत्रों के आधार पर परिपाटी है कि प्रत्येक प्रमुख उत्तम यज्ञ- याग आदि के समय ऋषि पूजन तथा पुराने यज्ञोपवीत को उतार कर नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। श्रावणी विशेषकर ब्राह्मणों अथवा गुरु-शिष्य परम्परा का पर्व है। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र पितृऋण, देवऋण और ऋषिऋण आदि कर्त्तव्यों का बोध कराते हैं। प्राचीन समय में यह कर्म गुरु अपने शिष्यों

के साथ किया करते थे। इस उपाकर्म में सर्वप्रथम देव-ऋषि, पितृ एवं तीर्थों की प्रार्थना के अनन्तर वर्षभर के जाने-अनजाने में हुए पापों के निराकरण हेतु प्रायश्चित रूप में 'हेमाद्रि स्नान' संकल्प करके दशविध स्नान करने का विधान है। इसके अनन्तर ऋषिपूजन, सूर्योपस्थान, यज्ञोपवीत पूजन और फिर नवीन यज्ञोपवीत (मन्त्रपूर्वक) धारण करने का विधान है। श्रावणी पर्व से ही गुरु निर्देशानुसार ऋक्, यजु, साम एवं अथर्ववेदों का स्वाध्याय प्रारम्भ करने का प्रचलन रहा है।

शास्त्र वचनानुसार श्रावण पूर्णिमा के दिन यदि सूर्य संक्रान्ति या ग्रहण का स्पर्श हो जाए, तो उस स्थिति में **श्रावण शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि एवं हस्त नक्षत्र में श्रावणी उपाकर्मादि करने का विधान है** यथा—

ग्रहण संक्रान्ति योगश्च उपाकर्म सम्बन्धिनि-अहोरात्रे भविष्यन्मध्यरात्रात् पूर्वमतीतमध्यरात्रात् ऊर्ध्वं चेति यामाष्टके विद्यमान श्रवण नक्षत्र पूर्णिमादि तिथि अस्पृष्टोऽपि उपाकर्म दूषकः ....॥ (धर्मसिन्धु)

अर्थात् ग्रहण एवं संक्रान्ति का योग उपाकर्म सम्बन्धी अहोरात्र में और आगे आने वाले अहोरात्र से पीछे तक विद्यमान हो, चाहे वह श्रवण नक्षत्र पूर्णिमा आदि तिथि में न भी हो, तो भी (वह ग्रहणे-संक्रान्ति आदि का सूतक) उपाकर्मादि को दूषित करता है।

इस प्रकार की स्थिति में श्रावण शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि या हस्त नक्षत्र में उपाकर्म करने का विधान है—

सर्वशाखिनां गृह्योक्त मुख्यकालत्वेन निर्णीते दिने ग्रहणस्य संक्रान्तेर्वा सत्त्वे संक्रान्तिरहिताः हस्त- पंचम्यादयो ग्राह्याः॥'' (धर्मसिन्धुः)

इस वर्ष **श्रावण शुक्ल** पक्ष में 16 अगस्त **पूर्णिमा** के दिन **श्रवण** नक्षत्र तो विद्यमान है, परन्तु इस दिन मध्य रात्रि से **पहले भाद्रपद संक्रान्ति** का तथा अर्द्ध-रात्रि उपरान्त **खण्ड चन्द्रग्रहण** का समावेश हुआ है। अतएव उपरोक्त शास्त्र वचनों के अनुसार ऋग्वेदियों को श्रा. शुक्ल पंचमी तिथि **(6 अगस्त, 2008 ई.) को हस्त नक्षत्र** के समय ही श्रावणी उपाकर्म कृत्य करने प्रशस्त होंगे।

अथर्ववेदिनां उपाकर्म—अथर्ववेदियों का तो उपाकर्म श्रावण अथवा भाद्रपद की पूर्णिमा को किया जाता है—

अथर्ववेदिनां तु श्रावण्यां भाद्रपदगतायां वा पौर्णमास्यां उपाकर्म।।(धर्मसिन्धु)

तदनुसार आगामी वर्ष 15 सितं. को अथर्ववेदियों का उपाकर्म प्रशस्त होगा।

सामवेदियों को भाद्रपद का शुक्लपक्ष एवं हस्त नक्षत्र (अपराह्न व्या.) में उपाकर्म मुख्य काल है। आगामी वर्ष 2 सितम्बर, मंगलवार को हस्त नक्षत्र अपराह्न व्यापनी विद्यमान है। तदनुसार सामवेदियों के लिए उपाकर्म 2 सितम्बर प्रशस्त होगा।

● रक्षा बन्धन (16 अग. शनिवार, 2008 ई.) ●

श्रावण पूर्णिमा के दिन भद्रारहित काल में रक्षा बन्धन पर्व मनाने की परम्परा है। **रक्षा-बन्धन** के विषय में संक्रान्ति दिन एवं ग्रहणपूर्व काल का विचार नहीं किया जाता है। इस सम्बन्ध में शास्त्र के स्पष्ट निर्देश हैं—

रक्षाबन्धनं-इदं ग्रहणसंक्रान्ति दिनेऽपि कर्त्तव्यम्। (धर्मसिन्धु)

रक्षा-मन्त्रः—निम्नलिखित मंत्र पढ़कर रक्षासूत्र बांधना चाहिए।

''येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥''

उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार रक्षाबन्धन पर्व श्रावण पूर्णिमा, 16 अगस्त, शनिवार को ही मनाना शास्त्र सम्मत होगा। यद्यपि भद्राकाल में रक्षाबन्धन करना शुभ नहीं माना जाता है, परन्तु शास्त्रवचनानुसार आवश्यक परिस्थितिवश भद्रा को मुख छोड़कर शेषभाग में विशेषकर (भद्रापुच्छ) काल में रक्षाबन्धन कार्य करना शुभ होगा। यथा—

कार्येत्वावश्यके विष्टेःमुखमात्रं परित्यजेत्। ...पुच्छे ध्रुवो जयः॥ (मुहूर्त-प्रकाश)

उपरोक्त वचनानुसार स्पष्ट है कि 16 **अगस्त शनिवार** को भद्रा प्रातः सूर्योदय से लेकर दुपैहर 2 बजकर 33 मिनट तक रहेगी। इसमें भी **भद्रामुख काल दुपै. 11 बजकर 30 मिंट से 13 बजकर 33 मिंट तक रहेगा।** जबकि **भद्रापुच्छ काल प्रातः 10.16 से लेकर 11 बजकर 30 मिंट तक ग्राह्य होगा।** शास्त्र मतानुसार 16 अगस्त शनिवार को रक्षाबन्धन हेतु दुपै. 2.33 के पश्चात् भद्रोपरांत का समय श्रेष्ठ होगा। प्रातः 10.16 से 11.30 बजे तक का समय भद्रापुच्छकाल होने से ग्राह्य होगा, परन्तु अपेक्षाकृत कम श्रेष्ठ होगा। **आवश्यक परिस्थितिवश भद्रा मुख काल (दुपै. 11.30 से 13.33 तक) को त्यागकर भद्रापुच्छकाल अथवा अन्येतर समय पर विघ्नेश्वर** भगवान श्रीगणेश का स्मरण करते हुए रक्षाबन्धन के पावन पर्व का सम्पादन करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त ध्यान रहे, श्रावण पूर्णिमा (16 अगस्त) के दिन चन्द्रमा मकर राशि का होने से भद्रा का वास **पाताल** में होने से 'भद्रा मुख काल' को छोड़कर शेष काल (दुपै. 11.30 से पहले और दुपै. 13 घं. 33 मिं. के बाद) का समय रक्षा सूत्र बांधने की दृष्टि से शुभ एवं ग्राह्य माना जाएगा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (23-24 अगस्त 2008 ई.)

गत कुछ वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी भगवान्श्रीकृष्ण जन्म से सम्बन्धित अष्टमी-तिथियों के बारे में मतान्तर रहेगा। परम्परया इस व्रत के विषय में दो मत हैं। स्मार्त लोग (सामान्य गृहस्थी) अर्धरात्रि का स्पर्श होने पर सप्तमीयुता अष्टमी में व्रत/उपवास करते हैं। क्योंकि इनके अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार अर्धरात्रि के समय (रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशि में चन्द्रोदय होने पर) **अष्टमी** तिथि में हुआ था। जबकि वैष्णव मतावलम्बी अर्धरात्रि अष्टमी की उपेक्षा करके नवमी विद्धा अष्टमी में व्रतादि करने में विश्वास रखते हैं—

स्मार्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, निष्काम वनरथेविधवाभिः वैष्णवैश्च परै वा पोष्या॥
वैष्णवास्तु अर्द्धरात्रिव्यापिनीमपि रोहिणी युतामपि सप्तमी
विद्धां अष्टमीं परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या॥ (धर्मसिन्धु)

अधिकांश शास्त्रकारों ने अर्धरात्रि अष्टमी में ही व्रत, पूजन एवं उत्सव मनाने की पुष्टि की है। श्रीमद्भागवत, श्रीविष्णु पुराण, वायु पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य आदि पुराण भी तो अर्द्धरात्रि युक्ता अष्टमी में ही श्री भगवान् के जन्म की पुष्टि करते हैं—

''गतेऽर्धरात्रसमये सुप्ते सर्वजने निशि॥ भाद्रेमास्य-सिते पक्षेऽष्टम्यां ब्रह्मर्क्षसंयुजि॥ सर्वग्रहशुभे काले-प्रसन्नहृदयाशये आविरासं निजेनैव रूपेण हि अवनीपते॥ (भविष्य पु.)

आधुनिक टीकाकार धर्मसिन्धु का भी यही अभिमत है—

कृष्ण जन्माष्टमी निशीथ व्यापिनी ग्राह्या। पूर्वदिन एव निशीथ योगे पूर्वा॥

इस प्रकार सिद्धान्तरूप में तत्काल व्यापिनी (अर्द्धरात्रि रहने वाली) तिथि अधिक शास्त्र-सम्मत एवं मान्य रहेगी। कुछ आचार्य तो केवल अष्टमी तिथि को ही जन्माष्टमी का निर्णय मानते हैं। रोहिणी से युक्त होने से तो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ''जयन्ती'' संज्ञक कहलाती है।

''कृष्णाष्टम्यां भवेद्यत्र कलैका रोहिणी यदि।
जयन्ती नाम सा प्रोक्ता उपोष्या सा प्रयत्नतः। अग्निपुराण

ध्यान रहे, भगवान श्री कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा-वृन्दावन में तो वर्षों की परम्परानुसार भगवान् श्रीकृष्ण की जन्माष्टमी के जन्मोत्सव सूर्य उदयकालिक एवं नवमी विद्धा श्री कृष्ण अष्टमी मनाने की परम्परा है, जबकि उत्तरी भारत में लगभग सभी प्रान्तों में सैंकड़ों वर्षों से अर्द्धरात्रि एवं चन्द्रोदयव्यापिनी जन्माष्टमी में व्रतादि ग्रहण करने की परम्परा है।

इस वर्ष **23 अगस्त, 2008 ई.**, शनिवार को सायं 6.26 के बाद अर्द्धरात्रि एवं कृतिका नक्षत्र व वृष में चन्द्रोदय (22.52 घं. मिं.) कालीन **श्री कृष्ण जन्माष्टमी** के व्रत-उत्सवादि का माहात्म्य होगा। जबकि 24 अग. रविवार को अष्टमी सायं 4 बजकर, 12 मिनट तक होगी तथा रोहिणी नक्षत्र की अर्द्धरात्रि में व्याप्ति नवमी तिथि में होगी।

दूर्वाष्टमी व्रत (24 अगस्त, रविवार)

यह व्रत भाद्र. शुक्लाष्टमी के दिन धन-सम्पदा, दाम्पत्य सुख एवं वंश वृद्धि के लिए किया जाता है। शास्त्रानुसार यदि भा.शु० अष्टमी से पूर्व ही अगस्त्य तारा उदित हो चुका हो, तो उस स्थिति में यह व्रत भाद्र. कृष्णाष्टमी को करना चाहिए॥ (धर्मसिंधु)

सम्वत् २०६५ में भाद्र. शुक्लाष्टमी से पूर्व ही (4 सितम्बर, पंचमी) को अगस्त्य का उदय हो गया है। इस कारण शास्त्र नियम अनुसार भाद्रकृष्णाष्टमी, 24 अगस्त, 2008 ई. रविवार के दिन दूर्वाष्टमी का व्रतादि होगा।

श्रीराधा अष्टमी व्रत (7 सितम्बर, रविवार)

श्रीकृष्ण-शक्ति स्वरूपा श्री राधा जी का प्राकट्य, वृष भानु के यहाँ यज्ञभूमि से भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को मध्याह्नकाल में अभिजित मुहूर्त्त और अनुराधा नक्षत्र के योग में हुआ—

भाद्रे मासि सिते पक्षे अष्टमी या तिथिःभवेत्।
अस्यां दिनार्द्धेऽभिजिते नक्षत्रे चानुराधिके॥ (भविष्यपुराण)

सम्वत् २०६५ में भाद्रशुक्लाष्टमी मध्याह्नयोग से 7 सितम्बर सन् 2008 ई०, रविवार को शुभ योग बनता है। इस दिन अनुराधा नक्षत्र भी होने से राधाष्टमी का व्रत अत्यन्त प्रशस्त होगा।

प्रतिपदा तथा द्वितीया तिथि के श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष में किए जाने वाले प्रायः सभी श्राद्ध कर्म **पार्वणश्राद्ध** कहलाते हैं। पार्वणश्राद्ध के कर्मकाल के सम्बन्ध में याज्ञवल्क्य ऋषि का निर्देश है कि पूर्वाह्न काल में देव सम्बन्धी कार्य, एकोद्दिष्ट मध्याह्न में, पार्वण श्राद्ध अपराह्न में तथा नित्य एवं नैमित्तिक वृद्धि कार्य प्रातःकाल में करने चाहिएं—

पूर्वाह्णे दैविक श्राद्धमपराह्णे तु पार्वणम्।
एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातः वृद्धि निमित्तकम्।

प्रस्तुत वर्ष आश्विन कृष्ण प्रतिपदा की समाप्ति **16 सितंबर** को मध्याह्न में ही १७ घड़ी/२५ पल अर्थात् 1 बजकर 14 मिनट तक होने से इस दिन अपराह्न में प्रतिपदा का अभाव होगा क्योंकि इस दिन अपराह्न काल दुपै. 1.37 से शुरू होती है। इस कारण 15 सितम्बर, सोमवार को पूर्णिमा युता प्रतिपदा (जो कि दुपैहर 2.44 से सायं 4 बजकर 04 मिनट तक) अपराह्न व्यापिनी रहेगी, इसमें **प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध** होगा।

द्वितीया तिथि का श्राद्ध 16 सितम्बर, मंगलवार 2008 ई० दुपैहर 1 बजकर 37 मिनट से सायं 4 बजकर 04 मिनट के मध्य अपराह्न काल में आयोजित करना शास्त्र सम्मत होगा।

सर्वपितृ श्राद्ध (28 सितम्बर, रविवार) एवं सोमवती अमावस्यापर्व (29 सितं. सोमवार)

आश्विन कृष्ण पक्ष की अमावस तिथि में सभी पितरों के निमित्त सर्वपितृ श्राद्ध करने का विधान है। श्राद्ध कर्म पितृ पक्ष एवं सर्वपितृ अमावस में अपने दिवंगत पूर्वजों एवं ऋषियों के ऋणों से मुक्ति पाने का शास्त्र-सम्मत उपाय है। सर्वपितृ श्राद्ध में भी अन्य पार्वण श्राद्ध की तिथियों की भान्ति अपराह्न व्यापिनी अमावस तिथि को ग्रहण करने की शास्त्राज्ञा दी है।

अपराह्णे तु कर्त्तव्यं श्राद्धं पितृपरायणैः।
सर्वान् कामानवाप्नोति स्वर्गेचानन्तमश्नुत्ते॥

प्रस्तुत वर्ष आश्विन अमावस्या (अपराह्न व्यापिनी) दो दिन **28 सितम्बर, रविवार** तथा **29 सितम्बर, सोमवार** को पड़ रही है।

28 सितम्बर, रविवार को अमावस दुपैहर 1 बजकर 50 मिनट से प्रारम्भ होकर अपराह्न कालीन 3 बजकर 52 मिनट तक रहेगी। इसके पश्चात् अमावस सायं एवं सम्पूर्ण रात्रि को व्याप्त होती हुई आगामी दिन 29 सितं., सोमवार को दुपै. 1 बजकर 42 मिनट तक रहेगी। इस दिन अपराह्न दुपै. 1.26 से प्रारम्भ होकर केवल मात्र 16 मिनट तक (13/42) के अल्पकाल तक ही व्याप्त रहेगा। इतने अल्पकाल में पूजन, पितृ तर्पण, ब्राह्मण भोजन आदि कृत्य सम्भव नहीं। ज्योतिर्निबन्ध के अनुसार अमावस की अपराह्न व्याप्ति. युग्म तिथियों होने की स्थिति में जिस दिन अमावस काल में अपराह्न की व्याप्ति अधिक रहेगी, उसी दिन सर्वपितृ श्राद्ध शास्त्र सम्मत एवं मान्य होगा।

अपराह्न द्वये चामा यदि स्यात् तत्रयाऽधिका।
सा ग्राह्या यदि तुल्या स्यादग्रे वृद्धौ परा स्मृता॥ (ज्योतिनिर्बंध)

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सितम्बर की **28 तारीख, रविवार** को चतुर्दशी युक्ता अमावस्या का अपराह्न के साथ सम्पर्क (दुपै. 1/50 से दुपै. 3.52 तक) 2 घण्टे 02 मिनट तक रहेगा। सूर्यास्तकालीन भी अमावस्या तिथि ही होगी। जबकि 29 सितं. को अमावस्या और अपराह्न मात्र 16 मिनट तक रहेगा। अतएव 28 ता. रविवार को दुपै. (1.50) के बाद सर्वपितृ श्राद्ध शास्त्रसम्मत एवं मान्य होगा।

29 सितम्बर, सोमवार को अमावस्या यद्यपि दुपै. 1.42 तक ही व्याप्त रहेगी, परन्तु इस दिन **सोमवती अमावस** एवं गजच्छाया योग होने से तथा मध्याह्न काल में तीर्थ स्नान, पूजन, [illegible] विशेष पुण्य लाभ रहेगा।

करवाचौथ के दिन मुख्य नगरों का चन्द्र-उदय

(17 अक्तूबर, शुक्रवार, 2008 ई.)

पंचांगदिवाकर के पाठक सम्पूर्ण भारत में हैं। ग्रह-स्पष्ट तथा पक्ष वाले पृष्ठों पर केवल जालन्धर के चन्द्रोदयास्त दिए रहते हैं। 'पंचांगदिवाकर' के पाठकों के लिए भारत के प्रमुख नगरों के करवा-चौथ (17 अक्तू.) वाले दिन का चन्द्रोदय दे रहे हैं।

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.
अमृतसर	19 35
अम्बाला	19 33
अर्की (हि.प्र.)	19 29
अहमदाबाद(गु.)	20 6
अगरतला	18 50
आगरा	19 36
अबोहर (पं.)	19 43
इलाहाबाद	19 25
इटावा (उ.प्र.)	19 32
इन्दौर (म.प्र.)	19 55
अखनूर (का.)	19 32
उज्जैन	19 54
ऊधमपुर (का.)	19 31
ऊना (हि.प्र.)	19 30
कठुआ (का.)	19 32
कपूरथला	19 34
करतारपुर	19 34
कलकत्ता	19 5
काँगड़ा	19 29
कालका (हरि.)	19 29
किश्तवाड़ (का.)	19 28
कुराली	19 31
कुरुक्षेत्र (हरि.)	19 34
कुल्लू (हि.प्र.)	19 26
कैथल (हरि.)	19 35
कोटखाई (हि.प्र.)	19 28
खन्ना (पं.)	19 33
गाज़ियाबाद	19 34

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.
गुड़गांव (हरि.)	19 37
गुरदासपुर	19 33
गुवाहाटी	18 44
चण्डीगढ़	19 31
चम्बा (हि.प्र.)	19 28
चमौली (उत्तरां.)	19 23
चेन्नई	19 59
जम्मू	19 31
जयपुर	19 45
जीन्द (हरि.)	19 38
जोधपुर	19 58
जगाधरी (हरि.)	19 32
टोहाना (हरि.)	19 37
डोडा (का.)	19 30
डलहौज़ी (हि.प्र.)	19 30
दार्जिलिंग (नं)	18 56
दिल्ली	19 35
देहरादून	19 29
दुर्ग (छत्ती.)	19 39
दीनानगर (पं.)	19 33
धर्मशाला (हि.प्र.)	19 29
धूरी (पं.)	19 36
नागपुर (महा.)	19 46
नाभा (पं.)	19 36
नाहन (हि.प्र.)	19 31
नारनौल (हरि.)	19 40
नालागढ़ (हि.प्र.)	19 33
नैनीताल (उ.)	19 25
नवांशहर (पं.)	19 33

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.
नंगल (पं.)	19 32
पठानकोट	19 32
पटियाला	19 35
पंचकूला (हरि.)	19 30
पानीपत	19 35
पिंहोवा (हरि.)	19 34
पटना	19 10
पालमपुर (हि.प्र.)	19 29
पुँछ (का.)	19 32
फगवाड़ा	19 35
फरीदकोट	19 38
फिरोज़पुर	19 39
फाज़िल्का	19 43
फरीदाबाद	19 36
बटाला	19 34
बरेली (उ.प्र.)	19 28
बैंगलोर	20 11
बिलासपुर(हि.प्र.)	19 31
भटिण्डा	19 41
भुवनेश्वर	19 23
भिवानी (हरि.)	19 39
मण्डी (हि.प्र.)	19 27
मलेरकोटला	19 35
मुम्बई	20 15
मुगलसराय(उ.प्र.)	19 21
मेरठ	19 32
मोगा (पं.)	19 37

नगर	चंद्रोदय घं. मिं.
मुक्तसर	19 41
मोहाली	19 31
रामपुरबुशैहर	19 26
रायपुर (छत्ती.)	19 37
रिवाड़ी (हरि.)	19 38
रोपड़ (पं.)	19 32
रोहतक	19 37
लखनऊ	19 24
लुधियाना	19 34
लाडवा (हरि.)	19 33
वाराणसी	19 21
शिमला	19 29
श्रीनगर	19 30
संगरूर	19 37
सहारनपुर	19 31
सोलन (हि.प्र.)	19 29
सुनाम (पं.)	19 38
सोनीपत	19 36
सरकाघाट(हि.प्र.)	19 30
सुन्दरनगर	19 28
हमीरपुर (हि.प्र.)	19 30
हरिद्वार	19 28
हैदराबाद	19 57
होशियारपुर	19 32
हिसार	19 40
हाथरस	19 34
हनुमानगढ़	19 44
हांसी (हरि.)	19 40

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) का शुभ मुहूर्त्त

(28 अक्तूबर, मंगलवार, 2008)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक कृष्ण अमावस में प्रदोष काल एवं अर्धरात्रि व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकस्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निदां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ता: सर्वकल्याणरूपिणी॥ —ज्योतिर्निबन्ध

लक्ष्मी पूजन, दीपदानादि के लिए प्रदोषकाल ही विशेषतया प्रशस्त माना गया है—**कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निशावर्धके।**
तस्यां सम्पूज्येत् देवीं भोगमोक्षं प्रदायिनीम्॥ (भविष्य पुराण)

दीपावली की शाम (प्रदोषकाल) में स्नान उपरान्त स्वच्छ वस्त्राभूषण धारण करके धर्मस्थल पर मन्त्रपूर्वक दीपदान करके अपने निवास स्थान पर श्रीगणेश सहित महालक्ष्मी, कुबेर, महाकाली पूजन आदि करके अल्पाहार करना चाहिए। तदुपरान्त यथोपल्बध प्रदोष, निशीथ आदि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र जप, यन्त्र सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिए। दीपावली पूजन के पश्चात् गृह में चौमुखा दीपक रात्रिभर प्रज्ज्वलित रहना सौभाग्य एवं लक्ष्मी वृद्धि का द्योतक माना जाता है।

प्रस्तुत वर्ष 28 अक्तूबर, 2008 ई., मंगलवार को दीपावली चित्रा, स्वाती नक्षत्र, प्रीति योग कालीन प्रदोष काल एवं अर्द्धरात्रि व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषत: प्रशस्त एवं श्लाघ्य रहेगी। मंगलवार की दीपावली मन्त्र जाप, सिद्धि एवं तांत्रिक प्रयोगों के लिए विशेष रूप से ग्राह्य मानी गई है।

अमावास्यां भवेद्वारो यदा भूमि सुतस्य वै।
जाह्णवी स्नान मात्रेण गोसहस्रफलं लभेत्॥ (निर्णयसिन्धु)

अमावस्या में यदि मंगलवार हो, तो गंगा में स्नान करने से एक हज़ार गोदान का फल प्राप्त करता है।

श्रीमहालक्ष्मी पूजन, मन्त्र-जाप, पाठ, तन्त्रादि साधना के लिए प्रदोष, निशीथ, महानिशीथ काल व साधना काल अनुष्ठानानुसार अलग-अलग महत्त्व रखते हैं। लक्ष्मी पूजन का सही मुहूर्त्त मालूम न होने से कई बार पूजन का फल पूर्ण नहीं मिल पाता। किस शहर में कब लक्ष्मी पूजा का शुभ समय रहेगा, इसकी विस्तृत जानकारी दे रहे हैं—

● **प्रदोष काल**—28 अक्तूबर को जालन्धर में सूर्यास्त से लेकर 2 घण्टे 36 मिं. पर्यन्त प्रदोष काल रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान के अनुसार इसका काल निर्धारण करें—देखें पृष्ठ ....) जालन्धर में प्रदोषकाल सायं 5 घं. 40 मिं. (17/40) से रात्रि 8 बजकर 16 मिनट (20/16) तक रहेगा।

सायं 6 घं. 38 मिं. तक मेष लग्न, तदुपरान्त 6 घं. 39 मिं. से रात्रि 8 घं. 33 मिं. तक वृष लग्न विशेषत: प्रशस्त रहेगा। इसी समय 19 घं. 19 मिं. से 20 घं. 56 मिं. तक रात्रि की लाभ की चौघड़ियां भी रहेंगी।

प्रदोष काल में, वृष लग्न, स्वाती नक्षत्र, तुला का चन्द्र एवं प्रीति नामक शुभ योग तथा लाभ को चौघड़ियां रहेंगी।

अतएव 19 घं. 19 मिं. से 20 घं. 33 मिं. के मध्य लक्ष्मी पूजन प्रारम्भ कर लेना चाहिए। इस योग में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी पूजन व गणेश पूजन, कुबेर पूजन, बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह स्थलों पर दीप प्रज्वलित करना, ब्राह्मणों तथा अपने आश्रितों को भेंट, मिष्ठान्नादि बांटना शुभ होता है।

28 अक्तू. को चौघड़ियां मुहूर्त्त

दिन की चौघड़ियां (घं. मिं.)		रात्रि की चौघड़ियां (घं. मिं.)	
रोग	6:43 से 8:05 तक	काल	17:40 से 19:18 तक
उद्वेग	8:06 से 9:27 तक	लाभ	19.19 से 20:56 तक
चर	9.28 से 10:49 तक	उद्वेग	20.57 से 22:34 तक
लाभ	10.49 से 12:11 तक	शुभ	22.35 से 24:12 तक
अमृत	12.12 से 13:33 तक	अमृत	24.13 से 25:50 तक
काल	13.34 से 14:55 तक	चर	25-51 से 27:28 तक
शुभ	14.56 से 16:17 तक	रोग	27.29 से 29:06 तक
रोग	16.18 से 17:39 तक	काल	29.07 से 30:44 तक

नोट-(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ, ग्राह्य चौघड़िया हैं।

(2) 25 बजे का अर्थ अर्द्ध रात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ अगले प्रातः 6 बजे से है।

अपने स्थानीय नगर में चौघड़ियां मुहूर्त्त जानने के लिए देखें पृष्ठ—

● **निशीथ काल**—28 अक्तू., मंगलवार को जालन्धर व समीपवर्ती नगरों में निशीथ काल रात्रि 8 बजकर 17 मिनट से रात्रि 10 बजकर 52 मिनट (22/52) तक रहेगा। इस दौरान 20/33 (घं. मिं.) तक वृष लग्न, फिर 20 घं. 34 मिं. से 22 घं. 47 मिं. तक मिथुन लग्न व्याप्त रहेगा।

20 घं. 56 मिं. तक लाभ की चौघड़िया, तदुपरान्त 22 घं. 35 मिं. से शुभ चौघड़िया प्रारम्भ होने से इस समयावधि में पूजन प्रारम्भ करना शुभ होगा।

इस अवधि में श्रीमहालक्ष्मी पूजन, महाकाली पूजन, लेखनी पूजन, कुबेर आदि देवताओं का पूजन, श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त, पुरुषसूक्त तथा अन्य मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

● **महानिशीथकाल**—रात्रि 10 घं. 52 मिं. से अर्द्धरात्रि 1 घं. 28 मिं. तक महानिशीथ काल रहेगा। इस समयावधि में शुभ एवं अमृत की चौघड़िया भी रहेंगी। इस दौरान रात्रि 22/48 से रात्रि 25/10 तक कर्क लग्न भी प्रशस्त रहेगा। सिंह लग्न यद्यपि स्थिर लग्न होने के कारण शुभ होगा, परन्तु शनि सिंह राशिस्थ संचार के कारण ग्राह्य नहीं होगा। महानिशीथ काल में श्रीमहालक्ष्मी व महाशक्ति काली की उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि क्रियाएँ, विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र अनुष्ठान व यज्ञादि किए जाते हैं।

क्योंकि पंचांगदिवाकर के पाठक सम्पूर्ण भारत में हैं। इसलिए भारत के मुख्य नगरों में महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त काल दे रहे हैं।

दीपावली पूजा एवं मन्त्र साधना हेतु शुभ मुहूर्त्त - 28 अक्तूबर, मंगलवार

नगर	वृष लग्न (प्रदोष व्याप्त)	कर्क लग्न (महानिशीथ काल व्याप्त)
अमृतसर (पं.)	18-40 से 20-35	22-49 से 25-12
अम्बाला (हरि.)	18-34 से 20-28	22-43 से 25-04
अजमेर (राज.)	18-50 से 20-45	23-00 से 25-20
अबोहर (पं.)	18-44 से 20-38	22-53 से 25-16
अलवर (राज.)	18-40 से 20-36	22-50 से 25-10
आगरा (उ.प्र.)	18-34 से 20-31	22-45 से 25-04
ऊना (हि.प्र.)	18-36 से 20-30	22-45 से 25-07
उदयपुर (रा.)	18-58 से 20-54	23-08 से 25-25
उज्जैन (म.प्र.)	18-52 से 20-49	23-01 से 25-18
करनाल (हरि.)	18-34 से 20-28	22-43 से 25-05
कलकत्ता	18-01 से 20-01	22-12 से 24-30
कपूरथला (पं.)	18-39 से 20-34	22-48 से 25-10
कानपुर	18-27 से 20-23	22-37 से 24-56
कांगड़ा (हि.प्र.)	18-34 से 20-28	22-43 से 25-05
कुरुक्षेत्र	18-35 से 20-30	22-45 से 25-06
कुल्लू (हि.प्र.)	18-31 से 20-26	22-41 से 25-04
कठुआ	18-36 से 20-31	22-45 से 25-09
खन्ना (पं.)	18-36 से 20-30	22-44 से 25-08
गुरदासपुर	18-37 से 20-32	22-46 से 25-10
गुड़गांव	18-37 से 20-32	22-46 से 25-07
गाजियाबाद	18-36 से 20-32	22-46 से 25-08
गंगानगर	18-44 से 20-39	22-53 से 25-17
ग्वालियर (रा.)	18-36 से 20-34	22-47 से 25-05
चण्डीगढ़	18-34 से 20-28	22-43 से 25-04
चेन्नई (मद्रास)	18-48 से 20-51	23-03 से 25-11
चम्बा (हि.प्र.)	18-32 से 20-27	22-41 से 25-05
जम्मू	18-37 से 20-32	22-46 से 25-10
जयपुर	18-45 से 20-41	22-54 से 25-13
जोधपुर	18-57 से 20-54	23-07 से 23-25
जैसलमेर	19-04 से 21-01	23-14 से 25-33
जीन्द (हरि.)	18-38 से 20-35	22-48 से 25-09
झांसी	18-36 से 20-34	22-47 से 25-04
दिल्ली	18-36 से 20-32	22-46 से 25-06
देहरादून (उत्त.)	18-28 से 20-23	22-38 से 25-00
दुर्ग (छत्तीस)	18-32 से 20-33	22-45 से 25-00
धर्मशाला (हि.प्र.)	18-33 से 20-28	22-41 से 25-05
नाहन (हि.प्र.)	18-32 से 20-27	22-41 से 25-05
नंगल (पं.)	18-35 से 20-30	22-44 से 25-06
नागपुर (म.)	18-41 से 20-40	22-52 से 25-06
नाभा (पं.)	18-36 से 20-31	22-45 से 25-08
नैनीताल	18-25 से 20-22	22-35 से 24-56
नादौन (हि.प्र.)	18-35 से 20-30	22-44 से 25-06
पटियाला	18-35 से 20-30	22-44 से 25-06
पानीपत	18-32 से 20-27	22-41 से 25-04
पुँछ	18-37 से 20-31	22-46 से 25-11
प्रयाग	18-22 से 20-19	22-32 से 24-50
पटना	18-04 से 20-02	22-19 से 24-34
पालमपुर (हि.प्र.)	18-32 से 20-27	22-41 से 25-05
फरीदकोट (पं.)	18-41 से 20-37	22-51 से 25-13
फाज़िल्का	18-43 से 20-38	22-53 से 25-16
फिरोजपुर	18-42 से 20-37	22-52 से 25-14
फगवाड़ा	18-37 से 20-32	22-46 से 25-09
फरीदाबाद (हरि.)	18-35 से 20-31	22-45 से 25-07
वाराणसी	18-18 से 20-17	22-31 से 24-47
बटाला (पं.)	18-39 से 20-34	22-48 से 25-12
बिलासपुर(हि.प्र.)	18-33 से 20-28	22-42 से 25-06
बरेली (उ.प्र.)	18-27 से 20-23	22-36 से 24-57
बैंगलोर	18-59 से 21-02	23-14 से 25-23
बुलन्दशहर	18-33 से 20-28	22-42 से 25-03
बड़ौदा	19-04 से 21-03	23-16 से 25-33
बरनाला	18-37 से 20-32	22-45 से 25-09
भटिण्डा	18-41 से 20-36	22-50 से 25-13
भरतपुर	18-36 से 20-33	22-47 से 25-05
भुवनेश्वर (उड़ी)	18-15 से 20-15	22-27 से 24-42
भोपाल (म.प्र.)	18-44 से 20-43	22-55 से 25-12
मण्डी (हि.प्र.)	18-31 से 20-26	22-40 से 25-03
मथुरा	18-36 से 20-33	22-46 से 25-06
मलेरकोटला	18-37 से 20-32	22-46 से 25-09
मेरठ	18-32 से 20-30	22-43 से 25-03
मुरादाबाद	18-30 से 20-26	22-40 से 25-02
मुम्बई	19-09 से 21-10	23-22 से 25-35
रोपड़	18-34 से 20-30	22-44 से 25-06
रोहतक	18-37 से 20-34	22-48 से 25-08
लुधियाना	18-36 से 20-31	22-46 से 25-08
लखनऊ	18-14 से 20-21	22-35 से 24-54
शिमला	18-32 से 20-28	22-41 से 25-04
श्रीनगर	18-35 से 20-30	22-44 से 25-09
सोलन (हि.प्र.)	18-32 से 20-28	22-41 से 25-04
सोनीपत	18-36 से 20-31	22-45 से 25-08
सहारनपुर	18-32 से 20-27	22-42 से 25-03
सुन्दरनगर	18-32 से 20-27	22-41 से 25-05
हरिद्वार	18-30 से 20-26	22-40 से 25-01
हैदराबाद	18-49 से 20-49	23-02 से 25-14
हमीरपुर (हि.प्र.)	18-33 से 20-28	22-43 से 25-06
हिसार	18-40 से 20-37	22-50 से 25-11
[illegible]	[illegible]	[illegible]

वि. संवत् २०६५, चैत्र शुक्ल पक्ष शाकः १९३० — सन् 2008 ई. (ता. 7 अप्रैल से 20 अप्रैल तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्व में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर होगा। सायं मंग. याम्योत्तरवृत्त के पास पश्चिम की ओर हटा होगा तथा शनि पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	चैत्र शाके	रवि मु.	अप्रैल	चैत्र प्रवि.	चंद्रराशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
००.००	१	रवि	५९	४८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	6	०	००	प्रतिपदा का क्षय **चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ,** नव संवत्सर २०६५ प्रारम्भ, **A**	००	०	०	०	६	१४	०	०
३१.२५	२	चंद्र	५१	१८	अश्वि	३०	५०	वैधृ विष्क	२ ५२	५० ५५	बा	२५	१८	१८	२९	7	२५	मेष	**चन्द्रदर्शन मु. १५,**	११	२३	३६	२७	६	१३	१८	४७
३१.२८	३	मंग	४२	५०	भर	२४	१५	प्रीति	४३	८	तै	१७	४	१९	रवि	8	२६	वृ. ३७/३८	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, मंगल पुर्न. में ५/२५, बुध रेव. में **B**	११	२४	३५	२५	६	१२	१८	४७
३१.३५	४	बुध	३४	४८	कृति	१७	५८	आयु	३३	४३	व	८	४९	२०	२	9	२७	वृष	भ. ८/४९ से ३४/४८ तक	११	२५	३४	२१	६	११	१८	४९
३१.४०	५	गुरु	२७	३५	रोहि	१२	२८	सौभा	२४	५८	बव	१	१२	२१	३	10	२८	मि. ४०/३	श्री (लक्ष्मी) पंचमी	११	२६	३३	१४	६	९	१८	४९
३१.४३	६	शुक्र	२१	३०	मृग	७	५५	शोभ	१७	८	तै	२१	३०	२२	४	11	२९	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत	११	२७	३२	०५	६	८	१८	५०
३१.४८	७	शनि	१६	४०	आर्द्रा	४	३८	अति	१०	२०	व	१६	४०	२३	५	12	३०	क. ४८/५	भ. १६/४० से ४५/०० तक,	११	२८	३०	५४	६	७	१८	५१
३१.५३	८	रवि	१३	२०	पुर्न	२	४८	सुक	४	४३	ब	१३	२०	२४	६	13	वैश	कर्क	**सूर्य अश्वि (१) मेष में ३०/५८, वैशाख संक्रान्ति,** श्रीदुर्गाष्टमी **C**	११	२९	२९	४१	६	६	१८	५१
३१.५८	९	चंद्र	११	२५	पुष्य	२	२३	धृति शूल	० ५६	१५ ५३	कौ	११	२५	२५	७	14	२	कर्क	**श्रीरामनवमी वैष्णव, बुध अश्वि १ मेष में ५९/२०,** शुक्र रेवती में **D**	०	००	२८	२७	६	५	१८	५२
३२.०३	१०	मंग	१०	५५	श्ले.	३	२३	गंड	५४	३८	ग	१०	५५	२६	८	15	३	सिं. ३/२३	भ. ४१/२० से, गण्डमूलादि	०	०१	२७	०८	६	४	१८	५३
३२.०५	११	बुध	११	४५	मघा	५	४०	वृद्धि	५३	१५	वि	११	४५	२७	९	16	४	सिंह	भ. ११/४५ तक, **कामदा एकादशी व्रत,** गण्डमूल 8/19 घं.मिं. तक	०	०२	२५	४८	६	३	१८	५४
३२.१३	१२	गुरु	१३	४३	पूफा	९	५	ध्रुव	५२	४५	बा	१३	४३	२८	१०	17	५	क. २५/५	प्रदोष व्रत	०	०३	२४	२४	६	१	१८	५४
३२.२०	१३	शुक्र	१६	३८	उफा.	१३	२८	व्या.	५२	५३	तै	१६	३८	२९	११	18	६	कन्या	**श्रीमहावीर जयन्ती,** अनंग त्रयोदशी	०	०४	२२	५९	६	०	१८	५६
३२.२५	१४	शनि	२०	२३	हस्त	१८	३८	हर्ष	५३	३८	व	२०	२३	३०	१२	19	७	तु. ५१/२८	भ. २०/२३ से ५२/३८ तक, सूर्य सायन वृष में ४०/५५, ग्रीष्म ऋतु **E**	०	०५	२१	३३	५	५९	१८	५७
३२.२७	१५	रवि	२४	५५	चित्रा	२४	३३	वज्र	५४	५५	ब	२४	५५	३१	१३	20	८	तुला	**चैत्र पूर्णिमा** स्नानदान, वैशाख स्नान प्रारम्भ, श्रीहनुमान् जयंती **F**	०	०६	२०	०४	५	५८	१८	५७

A घटस्थापन (अभिजित मुहूर्त्त प्रशस्त) (देखें पृष्ठ 71), पंचक समाप्त ३६/१५, **B** २२/३३ रवि-उल्सानी (मु.) प्रारम्भ **C** भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, मेला वैशाखी, बाहूफोर्ट (जम्मू), संक्रां. मुहूर्ति ३०, **श्रीरामनवमी स्मार्त्त मध्याह्न योगे** (देखें पृष्ठ 74), अन्नपूर्णा पूजा, स. सि. यो. **D** ४९/५५, नवरात्र समाप्त, **E** प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत **F** (दक्षिण भारत), अगस्त्य अस्त

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 13 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	२	११	८	११	४	१०	४
२९	२	२२	२५	२७	१४	८	०	०
२८	२१	१९	५०	१८	२२	३	५४	५४
१३	३८	९	३३	२८	३७	२७	३५	३५
58 48	807 17	28 58	123 20	4 43	74 1	2 1	3 11	3 11
रेव ४	पुर्न ४	पुर्न १	रेव ३	उषा १	उभा ४	मघा ३	धनि ३	मघा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२ सू. बु. शु.; ११ रा.; १०; ९ गु.; ८; ७; ६; ५ श. के.; ४ चं.; ३ मं.; २; १

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	२	०	८	११	४	१०	४
६	१	२५	१०	२७	२३	७	०	०
१८	२८	४५	३१	४७	०	५१	३२	३२
५६	५५	०	३३	५६	२९	२१	२०	२०
58 33	724 36	29 57	127 29	3 31	73 57	1 20	3 11	3 11
अश्वि २	चित्रा ३	पुर्न २	अश्वि ४	उषा १	रेव २	मघा ३	धनि ३	मघा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१ सू. बु.; १२ शु.; ११ रा.; १०; ९ गु.; ८; ७ चं.; ६; ५ श. के.; ४; ३ मं.; २

चैत्र शुक्ल पक्षफल—

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा (6 अप्रैल, रविवार) से **प्लव नामक** नया विक्रमी सम्वत्सर २०६५ प्रारम्भ होगा। गतवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी चैत्र शु० प्रतिपदा का क्षय होने से अमा. युक्त प्रतिपदा के दिन ही वासन्त नवरात्र का शुभारम्भ होगा (देखें पृष्ठ 71) ता. 6 की प्रातः 9.25 तक अमावस्या है, उसके पश्चात्-वृष लग्न या अभिजित मुहूर्त में सम्वत्सर पूजन, घटस्थापन, ताम्र या मिट्टी के पात्र में जौं, गेहूं आदि के बीज बोना, ॐकार सहित श्रीगणेश, विष्णु, शिव, श्री दुर्गा आदि **पंचदेवों** की पूजा-अर्चना करनी चाहिए। नवसम्वत् का राजा सूर्य तथा मन्त्री भी सूर्य है, जब राजा और मन्त्री के पद एक ही ग्रह के पास हों, तो समाज में आवेश एवं क्रोध के कारण हिंसक घटनाएं अधिक हों। राजनीतिक क्षेत्रों में अस्थिरता रहे, लोगों में चोरी, लूटमार, अपहरण, अग्निकाण्ड एवं राजनेताओं में परस्पर टकराव अधिक हों—**स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीड़ा, चौराग्नि भयं विग्रह-नृपाणाम् ॥** ब्राह्मण से संवत्-राजादि के फलश्रवण के बाद श्री दुर्गा-माता के समकक्ष प्रतिपदा से नवमी तक घी की मन्त्रपूर्वक ज्योत जगाकर नित्य श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ करना कल्याणकारी रहता है। पूजनोपरान्त ब्राह्मण को भोजन तथा यथाशक्ति पंचांगादि धर्म-ग्रन्थ, फल, वस्त्र, मिष्ठान्न आदि का दान करना शुभ होता है। **नवरात्रों** में नीम के कोमल पत्तों एवं कपोलों का चूर्ण बनाकर उचित मात्रा में सेंधा नमक, काली मिर्चे, हींग, जीरा, अजवायन, मिश्री (या शक्कर) सभी वस्तुएं पीसकर भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर त्वचा विकार, कुष्ट आदि रक्त विकारों का भय नहीं रहता। **वैशाख संक्रान्ति** (13 अप्रैल) रविवार को पड़ने से नेताओं में परस्पर विग्रह, छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन), राजनीतिक अस्थिरता हो। **धान्य अनाजादि के मूल्यों** में तेज़ी हो। प्रजा में दुःख व अशान्ति फैले। **वैशाख मास** में पांच शनि **एवं पांच रविवार** होने से विशिष्ट नेता के सत्ता परिवर्तन के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, वैशाख कृष्ण पक्ष शाकः १९३० | **तारीखें** | **सन् 2008 ई. (ता. 21 अप्रैल से 5 मई तक)** | **भा. स्टैं. टा. जालन्धर**

सूर्य उत्तरायणे, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्रपूर्व में तथा गुरु याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। 28 अप्रै. से सायं बुध पश्चिम में उदित होगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर हटा तथा श. पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	वैशा. शक	रवि मं.	अप्रैल	वैशाख	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.३३	१	चंद्र	३०	५	स्वा	३१	५	सिद्धि	५६	४०	कौ	३०	५	वैश.	१४	21	९	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रा., शक वैशाख प्रारम्भ, बुध भर. में १८/१०,	०	०७	१८	३५	५	५७	१८	५८
३२.३८	२	मंग	३५	४८	विशा	३८	१०	व्य.	५८	४८	तै	२	५७	२	१५	22	१०	वृ. २१/२०		०	०८	१७	०२	५	५६	१८	५९
३२.४०	३	बुध	४१	५३	अनु	४५	३३	वरी	६०	०	व	८	५१	३	१६	23	११	वृश्चिक	भ. ८/५१ से ४१/५३ तक, स. सि. योग:	०	०९	१५	२७	५	५५	१८	५९
३२.४५	४	गुरु	४८	३	ज्ये.	५३	३	वरी	१	१३	ब	१४	५८	४	१७	24	१२	ध. ५३/३	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/55 (जालन्धर), गण्डमूलादि R	०	१०	१३	५२	५	५४	१९	०
३२.५०	५	शुक्र	५३	५८	मूल	६०	०	परि	३	३३	कौ	२१	१	५	१८	25	१३	धनु	**शुक्र अश्वि. १ मेष में ३९/३०,** गण्डमूल विचार	०	११	१२	१५	५	५३	१९	१
३२.५३	६	शनि	५९	१०	मूल	०	१८	शिव	५	३८	ग	२६	३४	६	१९	26	१४	धनु	गण्डमूल 5/59 घं.मिं. तक, **शुक्र अस्त 3 मई**	०	१२	१०	३६	५	५२	१९	१
३२.५८	७	रवि	६०	००	पू.षा.	६	४८	सिद्ध	७	८	वि	३१	१३	७	२०	27	१५	म. २३/१५	सूर्य भरणी में ११/२५, बुध कृतिका में ४६/१०,	०	१३	०८	५५	५	५१	१९	२
३३.०३	७	चंद्र	३	१५	उषा	१२	८	साध्य	७	४३	ब	३	१५	८	२१	28	१६	मकर	**मंगल कर्क में २२/१८,** बुध पश्चिम में उदय ०/१०, स. सि. यो.	०	१४	०७	१३	५	५०	१९	३
३३.०५	८	मंग	५	४३	श्रव	१५	५०	शुभ	७	०	कौ	५	४३	९	२२	29	१७	कुं. ४६/५८	**पंचक प्रारम्भ** ४६/५८, **बुध वृष में २९/४८,**	०	१५	०५	२९	५	४९	१९	३
३३.१०	९	बुध	६	१३	धनि	१७	३८	शुक्ल	४	४८	ग	६	१३	१०	२३	30	१८	कुम्भ	भ. ३५/२३ से, **राहु** धनि २ **मकर, केतु,** आश्ले. ४ **कर्क में ९/१५,D**	०	१६	०३	४४	५	४८	१९	४
३३.१३	१०	गुरु	४	३३	शत	१७	१८	ब्रह्म/ऐन्द्र	०/५५	५३/२०	वि	४	३३	११	२४	मई	१९	कुम्भ	भ. ४/३३ तक, मई प्रारम्भ,	०	१७	०१	४७	५	४८	१९	५
३३.१५	११	शुक्र	०	५३	पू.भा.	१५	०	वैधृ	४८	१३	बा	०	५३	१२	२५	2	२०	मी. ०/४८	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** श्रीवल्लभाचार्य जयंती, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी	०	१८	००	०९	५	४७	१९	५
अवम	१२	शुक्र	५५	१३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३.२०	१३	शनि	४७	५८	उभा	१०	५३	विष्क	३९	४३	ग	२१	३६	१३	२६	3	२१	मीन	भ. ४७/५८ से, **शनि मार्गी** ७/०५, शनि प्रदोष व्रत, **शुक्र पूर्व में अस्त+**	०	१८	५८	२०	५	४६	१९	६
३३.२५	१४	रवि	३९	२८	रेव/अश्वि	५/५८	१०/२०	प्रीति	३०	१०	वि	१३	४३	१४	२७	4	२२	मे. ५/१०	भ. १३/४३ तक, पंचक समाप्त ५/१०, मंगल पुष्य में ४६/१५, A	०	१९	५६	१८	५	४५	१९	७
३३.२८	३०	चंद्र	३०	१०	भर.	५०	५३	आयु	१९	५०	च	४	४९	१५	२८	5	२३	मेष	**सोमवती अमावस,** देवपितृकार्येषु, बुध रोहि में १४/०५, सोमवती B	०	२०	५४	३५	५	४४	१९	७

R नैपच्यून कुम्भ में ३२/४०, D शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ४५/०५, A गंडमूल, मास शिवरात्रि व्रत, स. सि. यो. B अमावस्यायां तीर्थेषु स्नानदान, जपादि माहात्म्य॥ + ४५/१०

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	३	०	८	०	४	१०	४
१५	१९	०	२९	२८	४	७	०	०
४	४८	१९	२	१३	५	४३	३	३
४३	५६	१	०	७	४८	१०	४३	४३
58 / 18	770 / 10	31 / 2	113 / 44	1 / 53	73 / 54	0 / 29	3 / 11	3 / 11
भर ९	श्रव ३	पुन ४	कृति १	उषा ९	अश्वि २	मघा ३	धनि ३	मघा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	३	१	८	०	४	९	३
२०	१३	३	९	२८	११	७	२९	२९
५४	३५	२६	३६	२१	२९	४२	४४	४४
४	५९	५४	५२	३७	६	२६	३९	३९
58 / 7	914 / 20	31 / 42	93 / 37	0 / 46	73 / 52	0 / 15	3 / 11	3 / 11
भर ३	भर १	पुष्य १	कृति ४	उषा १	अश्वि ४	मघा ३	धनि २	श्ले. ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

वैशाख कृष्ण पक्षफल—

वैशाख मास में (वैशाख पूर्णिमा तक) किसी तीर्थ स्थान नदी में अथवा अपने निवास स्थान पर ही तीर्थजल मिश्रित शुद्ध जल से स्नान करके तुलसीदल सहित भगवान विष्णु की नित्य प्रति पूजा करके वैशाख माहात्म्य, विष्णु सहस्रणाम एवं पाप प्रशमन आदि स्तोत्रों का नियमित पाठ करके **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** मन्त्र का पाठ करना चाहिए। मासान्ते ब्राह्मणों को भोजन करवाकर यथाशक्ति मिष्ठान्न, फल-वस्त्रादि का दान करने से सुख-शान्ति एवं आरोग्य में वृद्धि होती है। **ग्रह संचार**—वै. कृ. पंचमी तिथि, शुक्रवार को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। जिससे गेहूं, जौं, चना, धान्यादि अनाज तथा घृत, सोना, चान्दी में विशेष तेजी हो। गुड़, शक्कर, बारदाना आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो—**दैत्यगुरु यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशुपीड़ा॥** त्रयोदशी से शुक्र इसी राशि में अस्त होने से सर्वप्रकार के अनाजों एवं गाय, भैंस आदि चौपायों में तेजीकारक होगा। ता. 28 अप्रैल से **मंगल कर्क राशि** में आने से व्यापारिक वस्तुओं में तेजी होगी। ता. 30 से राहु मकर राशि में तथा केतु भी कर्क राशि में मंगल के साथ आने से राजनीतिक क्षेत्रों में उथल-पुथल (परिवर्तन) के संकेत करते हैं। वैशाख में **पांच मंगलवार** आने से राजनेताओं में विग्रह, छत्रभंग एवं मंहगाई, उपद्रव, दंगे-फिसाद आदि के कारण प्रजा में असंतोष पैदा हो। किसी प्रमुख राजनेता की मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं। **आकाश लक्षण**—पक्ष में मंगल आगे व सूर्य पीछे संचार करने से रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, **वैशाख शुक्ल पक्ष** शाके: १९३०														तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेश घटी पल	सन् 2008 ई. (ता. 6 मई से 20 मई तक) सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु					भा.स्टै.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	वैशाख शक	रवि मु.	मई	वैशाख		**ग्रह दर्शन**—सायं बुध पश्चिम क्षितिज के पास, मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर तथा श. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा। सायं गुरु पश्चिम कपाल में होगा। शुक्र अभी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३.३५	१	मंग	२०	३५	कृति	४३	२३	सौभा/शोभ	१/५८	१३/३०	ब	२०	३५	१६	२९	6	२४	वृ. ४/५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र भरणी में २९/४०, स. सि. यो.	०	२१	५२	४०	५	४२	१९	८
३३.३८	२	बुध	११	८	रोहि	३६	१०	अति	४८	१८	कौ	११	८	१७	जन	7	२५	वृष	**अक्षया तृतीया,** श्रीपरशुराम जयन्ती, शिवाजी जयंती, टैगोर जयंती, **A**	०	२२	५०	४५	५	४१	१९	८
३३.४०	३	गुरु	२	१३	मृग	२९	४५	सुक	३८	४८	ग	२	१३	१८	२	8	२६	मि. २/५०	भ. २८/१५ से ५४/१८ तक,	०	२३	४८	४९	५	४१	१९	९
००.००	४	गुरु	५४	१८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३.४३	५	शुक्र	४७	४८	आर्द्रा	२४	३३	धृति	३०	२३	ब	२१	३	१९	३	9	२७	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती, गुरु वक्री ३०/००**	०	२४	४६	४९	५	४१	१९	१०
३३.४८	६	शनि	४२	५८	पुर्न	२०	५५	शूल	२३	१८	कौ	१५	२३	२०	४	10	२८	क. ६/४३	सूर्य कृतिका में ५७/०८, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती	०	२५	४४	४७	५	४०	१९	११
३३.५०	७	रवि	३९	५५	पुष्य	११	५	गंड	१७	३८	गर	११	२७	२१	५	11	२९	कर्क	भ. ३९/५५ से, **श्रीगंगा जयन्ती**, स. सि. यो.	०	२६	४२	४३	५	३९	१९	११
३३.५३	८	चंद्र	३८	४३	श्ले.	११	०	वृद्धि	१३	२५	वि	९	१९	२२	६	12	३०	सिं. १९/०	भ. ९/१९ तक, गण्डमूल विचार	०	२७	४०	४०	५	३९	१९	१२
३३.५८	९	मंग	३९	१५	मघा	२०	४३	ध्रुव	१०	४०	बा	८	५९	२३	७	13	३१	सिंह	श्रीसीता नवमी, **श्रीबगुलामुखी जयंती**, गण्डमूल 13/55 घं. मिं. तक	०	२८	३८	३३	५	३८	१९	१३
३४.००	१०	बुध	४१	१८	पूफा	२३	५८	व्या.	९	१३	तै	१०	१७	२४	८	14	ज्ये	क. ४०/००	**सूर्य वृष में २४/२८, ज्येष्ठ संक्रान्ति,** ३० मुहू., पुण्यकाल सं. प्रातः **B**	०	२९	३६	२४	५	३७	१९	१३
३४.०५	११	गुरु	४४	३८	उफा	२८	३३	हर्ष	८	५०	व	१२	५८	२५	९	15	२	कन्या	भ. १२/५८ से ४४/३८ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**	१	००	३४	१५	५	३६	१९	१४
३४.०८	१२	शुक्र	४८	५८	हस्त	३४	१०	वज्र	९	२३	बव	१६	४८	२६	१०	16	३	कन्या	बुध मृग. में १८/३०,	१	०१	३२	०३	५	३५	१९	१४
३४.१३	१३	शनि	५४	०	चित्रा	४०	३०	सिद्धि	१०	३५	कौ	२१	२९	२७	११	17	४	तु. ७/२०	शुक्र कृतिका में २०/१५, **शनि प्रदोष व्रत**	१	०२	२९	४९	५	३४	१९	१५
३४.१५	१४	रवि	५९	३०	स्वा.	४७	२०	व्य.	१२	१५	गर	२६	४५	२८	१२	18	५	तुला	भ. ५९/३० से, **श्रीनृसिंह जयन्ती**	१	०३	२७	३३	५	३४	१९	१६
३४.२०	१५	चंद्र	६०	०	विशा	५४	३५	वरी	१४	२०	वि	३२	२८	२९	१३	19	६	वृ. ३७/४५	भ. ३२/२८ तक, **वैशाख पूर्णिमा व्रत,** श्रीबुद्ध जयन्ती, कूर्म **C**	१	०४	२५	१८	५	३३	१९	१७
३४.२३	१५	मंग	५	२३	अनु	६०	०	परि	१६	३३	बव	५	२३	३०	१४	20	७	वृश्चिक	वैशाख पूर्णिमा स्नानदानादि, **शुक्र वृष में ३/००**, सूर्य सायन मिथुन **D**	१	०५	२३	०२	५	३३	१९	१८

A जमादिउल्लावल (मु.) प्रारम्भ, अक्षयातीज बुधवारे रोहिणी युता (देखे पृष्ठ 74), स. सि. यो. **B** ८/२८ बाद (9 बजे से प्रारंभ) **C** जयन्ती, वैशाख स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत **D** में ३९/५५,

चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	३	१	८	०	४	९	३
२७	२५	७	१९	२८	२०	७	२९	२९
४०	४४	१०	९	२२	५	४६	२२	२२
२१	१३	४९	३२	५६	५७	२६	२३	२३
57 55	785 30	32 21	65 24	0 35	73 48	1 0	3 10	3 10
कृति १	श्ले. ३	पुष्य २	रोहि ३	उषा १	भर ३	मघा ३	धनि २	श्ले ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१: सू. शु. · २: बु. · ३ · ४: चं. मं. के. · ५: श. · ६ · ७ · ८ · ९: गु. · १० रा. · ११ · १२

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	३	१	८	०	४	९	३
५	४	११	२५	२८	२९	७	२८	२८
२२	२३	३२	४८	१३	५६	५७	५६	५६
५५	७	५	४७	७	१०	१६	५७	५७
57 42	712 33	32 58	29 17	2 4	73 45	1 49	3 10	3 10
कृति ३	अनु १	पुष्य ३	मृग १	उषा १	कृति १	मघा ३	धनि २	श्ले ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१: शु. · २: सू. बु. · ३ · ४: मं. के. · ५: श. · ६ · ७ · ८: चं. · ९: गु. · १०: रा. · ११ · १२

वैशाख शुक्ल पक्षफल—

अक्षय तृतीया व्रत और श्रीपरशुराम जयन्ती पूर्वाह्न एवं प्रदोष व्यापिनी होने से 7 मई को ग्राह्य होगी। इस दिन बुधवार और रोहिणी नक्षत्र होने से यह तिथि विशेष पुण्यप्रद होगी। इस तिथि की गणना युगादि तिथियों में होती है, त्रेतायुग का प्रारम्भ इसी तिथि से हुआ था। अक्षय तृतीया को दिए गए दान और किए गए स्नान, जप, तप, हवन आदि कर्मों का शुभ और अनन्त फल होता है। गंगा जयन्ती (11 मई) के दिन रविपुष्य योग होने से हरिद्वार, प्रयाग, काशी आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जपादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। श्रीबगुलामुखी जयन्ती (13 मई) शक्तिरूपा माता बगुलामुखी की पूजार्चना करने से ऋण, रोग एवं शत्रु आदि का भय नहीं होता।

ज्येष्ठ संक्रान्ति (14 मई, बुधवार) को 30 मुहूर्त्ति होगी। इस संक्रान्ति का पुण्यकाल प्रातः 9 बजे से प्रारम्भ होगा। **राशिफल**—वृष, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुम्भ-राशियों के लिए इस संक्रान्ति का फल लाभप्रदायक रहेगा। **व्यापारिक रूख**—वृष राशि पर सूर्य-बुध का मेल होगा, उन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। जिससे गेहूँ, चना, ज्वार, धान्यादि चावल, वनस्पति, तैल, तथा सोना, चान्दी, ताम्बा आदि में सप्ताहान्त तक तेजी का रूख रहेगा। ता. 20 मई को शुक्र वृष राशि में आने से अनाज एवं सोना, चान्दी के भावों में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। रूई व कपास में मन्दी का रूख बनेगा। 14 ता. से सूर्य पर शनि की विशेष दृष्टि पड़ने से केन्द्रीय सरकार के मन्त्री-मण्डल में उलट-फेर एवं परिवर्तन के संकेत हैं।

आकाश-लक्षण—इस पक्ष के उत्तरार्ध भाग में गर्म हवाओं के कारण उत्तर भारत के अनेक क्षेत्रों में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा।

शकुन—वै. शु. तृतीया या पंचमी को बादल चाल बने अथवा बूंदा-बांदी हो, तो सर्व प्रकार के अनाज भाद्रपद में तेज होंगे। क्रय करके स्टाक करना लाभप्रदायक होगा।

वि. संवत् २०६५, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९३० — सन् 2008 ई. (ता. 21 मई से 3 जून तक)

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन– 30 मई को बुध पश्चिम में अस्त होगा। सायं मं. पश्चिम कपाल में तथा श. याम्योत्तरवृत्त में होगा। प्रातः गुरु पश्चिम में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	तारीखें: गते	जमा. मुं.	मई	प्र. हि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.२५	१	बुध	११	२३	अनु	१	५८	शिव	१८	५५	कौ	११	२३	३१	१५	21	८	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 6/19 घं.मिं. बाद से,	१	६	२०	४२	५	३२	१९	१८
३४.२८	२	गुरु	१७	२०	ज्ये	९	२०	सिद्ध	२१	१३	गर	१७	२०	ज्ये	१६	22	९	भ. ९/२०	भ. ५०/१३ से, नारद जयन्ती, वीणादान, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	१	७	१८	२०	५	३२	१९	१९
३४.३०	३	शुक्र	२३	८	मूल	१६	३३	साध्य	२३	२५	वि	२३	८	२	१७	23	१०	धनु	भ. २३/०८ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/28 (जालं.), गं.मू.	१	८	१६	००	५	३१	१९	१९
३४.३३	४	शनि	२८	१८	पू.षा.	२३	१५	शुभ	२५	८	बा	२८	१८	३	१८	24	११	म. ३९/५०	सूर्य रोहि. में ४८/१८,	१	९	१३	३७	५	३१	१९	२०
३४.३५	५	रवि	३२	४३	उषा	२९	१३	शुक्ल	२६	१५	कौ	०	३१	४	१९	25	१२	मकर		१	१०	११	१४	५	३०	१९	२०
३४.३८	६	चंद्र	३५	४८	श्रव	३५	१५	ब्रह्म	२६	२३	गर	४	१६	५	२०	26	१३	मकर	भ. ३५/४८ से, **बुध वक्री ३९/३५**, स. सि. यो.	१	११	०८	४९	५	३०	१९	२१
३४.४३	७	मंग	३७	२०	धनि	३७	१०	ऐंद्र	२५	२३	वि	६	३४	६	२१	27	१४	कुं. ५/४५	भ. ६/३४ तक, **पंचक प्रारम्भ ५/४५**, नैपच्यून वक्री ४०/३८	१	१२	०६	२५	५	२९	१९	२२
३४.४५	८	बुध	३७	०	शत	३८	३३	वैधृ	२३	५५	बा	७	१०	७	२२	28	१५	कुम्भ	शुक्र रोहिणी में ११/२०,	१	१३	०३	५९	५	२९	१९	२३
३४.४५	९	गुरु	३४	४०	पूभा	३८	०	विष्क	१८	५५	तै	५	५०	८	२३	29	१६	मी. २३/१८	मंगल आश्लेषा में १४/३३,	१	१४	०१	३३	५	२९	१९	२३
३४.४८	१०	शुक्र	३०	२३	उभा	३५	२८	प्रीति	१३	१८	व	२	३२	९	२४	30	१७	मीन	भ. २/३२ से ३०/२३ तक, वक्री बुध पश्चिम में अस्त ५/४०	१	१४	५९	३३	५	२९	१९	२४
३४.५०	११	शनि	२४	२०	रेव	३१	१३	आयु/सौभा	६/५७	१०/४०	बा	२४	२०	१०	२५	31	१८	मे. ३१/१३	**पंचक समाप्त ३१/१३, अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली (A)**	१	१५	५६	३५	५	२८	१९	२४
३४.५०	१२	रवि	१६	४३	अश्वि	२५	२५	शोभ	४८	५	तै	१६	४३	११	२६	जून	१९	मेष	प्रदोष व्रत, जून प्रारम्भ, वट सावित्री व्रतादि प्रारम्भ, स.सि.यो., गं.मू.	१	१६	५४	०७	५	२८	१९	२४
३४.५३	१३	चंद्र	७	५३	भर	१८	३०	अति	३७	४३	व	७	५३	१२	२७	2	२०	वृ. ३१/३८	भ. ७/५३ से ३३/०८ तक, मास शिवरात्रि व्रत	१	१७	५१	३६	५	२८	१९	२५
००.००	१४	चंद्र	५८	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	००	०	०	०	०	०	०
३४.५५	३०	मंग	४८	३५	कृति	१०	५८	सुक	२७	०	च	२३	२८	१३	२८	3	२१	वृष	**भावुका अमावस**, वटसावित्री व्रत (राज.), **शनैश्चर जयन्ती (B)**	१	१८	४९	०५	५	२७	१९	२५

(A) एकादशी (पं.), गंडमूलादि विचार **(B)** भौमवती अमावस स्नानदान, जपादि देवपितृ आदि कार्येषु, स. सि. यो.

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	३	१	८	१	४	९	३
१३	११	१५	२७	२७	९	८	२८	२८
४	३५	५८	२९	५१	४६	१४	३१	३१
१	२६	१५	३७	३३	६	३४	३१	३१
57/34	790/57	33/37	8/14	3/30	73/44	2/36	3/11	3/11
रोहि १	शत २	पुष्य ४	मृग २	उषा १	कृति ४	मघा ३	धनि २	श्ले ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

- १: —
- २: सू. बु. शु.
- ३: —
- ४: मं. के.
- ५: श.
- ६: —
- ७: —
- ८: —
- ९: गु.
- १०: रा.
- ११: चं.
- १२: —

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	३	१	८	१	४	९	३
१८	७	१९	२५	२७	१७	८	२८	२८
४९	१४	२१	४२	२८	८	३१	१२	१२
१२	४	१	४०	०	३१	३६	२७	२७
57/29	918/21	34/2	28/49	4/30	73/44	3/10	3/11	3/11
रोहि ३	कृति ४	श्ले. १	मृग १	उषा १	रोहि ३	मघा ३	धनि २	श्ले ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

- १: —
- २: सू. चं. बु शु.
- ३: —
- ४: मं. के.
- ५: श.
- ६: —
- ७: —
- ८: —
- ९: गु.
- १०: रा.
- ११: —
- १२: —

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल—

ज्येष्ठ मास में स्नान, जप, ध्यानादि के पश्चात् वस्त्र, अन्न, मौसमी फल, जलापूरित-घट आदि का दान सुपात्र व्यक्ति को करना अत्यन्त कल्याणकारी होता है। इस पक्ष में अपरा एकादशी, भद्रकाली एका.-(31 मई) को विधिपूर्वक व्रत, जप दानादि करने से अनेक प्रकार के ज्ञात अथवा अज्ञानतावश किए गए पापों का क्षय होता है। **वट सावित्री व्रत**, स्त्रियां त्र्योदशी से अमावस तक वटवृक्ष का पूजन करके तीन दिवसीय व्रतानुष्ठान करती हैं। वट के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु तथा ऊपरी भाग में देवाधि देव शिव प्रतिष्ठित रहते हैं। यह व्रत स्त्रियों के वैधव्यादि दोषों की निवृत्ति में एवं पति-पुत्रादि सुख-सौभाग्य की प्राप्ति में विशेष प्रशस्त माना जाता है। **भावुका अमावस** मंगलवार को होने से श्रीगङ्गा आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जप देवपूजन एवं पितृतर्पण ब्राह्मण भोजनादि कृत्यों का विशेष माहात्म्य होगा—**अमावस्या भवेद् वारो यदा भूमिसुतस्य वै। जाहण्वी स्नाने गोसहस्त्रदान–समफलं लभेत्।** ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा का प्रारम्भ बुधवार के दिन होने से आगामी दिनों कहीं अति-वर्षा अथवा अनावृष्टि से फसलों को हानि रहे तथा सामान्य लोगों को अनेक प्रकार की विचित्र व्याधियों से पीड़ा हो। **ज्येष्ठप्रतिपदाकृष्णा–भौमार्कबुधवासरा। एवं भवेद्यदायोगो कृषिहानि लोकानां व्याधि पीडनम्॥** चतुर्थी शनिवार को सूर्य रोहिणी में आने से गेहूँ, चना, चावल, मैदा, चीनी, सरसों, एरण्ड, तिल, तैल, अलसी, सोयाबीन तेज भाव होंगे। ता. 26 से बुध वृष में वक्री होने से गुड़, चीनी, शक्कर, सोना, दुग्ध पदार्थ, पशुचारा व अनाज तेज होंगे। ता. 21 को मंगलवारी अमावस्या गेहूँ, धान्यादि अनाज, खल-बिनौला, घास आदि पशुचारा सब्जियां तेज भाव रहेंगी, परन्तु अलसी व चान्दी में घटा-बढ़ी के बाद तेजी होगी। **शकुन**—ज्येष्ठकृष्ण ८ को दक्षिण की वायु चले तो, चावल, तिल, तैल आदि का संग्रह करके 4 महीनों में दोगुना लाभ हो।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में उत्तरी भारत में कहीं तेज हवाएं व गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा।

वि. संवत् २०६५, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाके: १९३० — जून 2008 ई. (4 जून से 18 जून तक) — भा.स्टें.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	ज्ये. शक	जमा. मु.	जून	आषाढ़ प्र.	चन्द्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—सायं मंगल पश्चिम कपाल में तथा उससे ऊपर शनि होगा। प्रातः गुरु पश्चिम में तथा 16 जून से बुध को पूर्व में देखा जा सकेगा।	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
३४.५८	१	बुध	३८	५८	रोहि मृग	३ ५५	१५ ५०	धृति	१६	१३	किं	१३	४७	१४	२९	4	२२	मि.२९/२८	करवीर व्रत, श्री गंगा स्नान प्रारम्भ, स. सि. यो.	१	१९	४६	३४	५	२७	१९	२६
३५.००	२	गुरु	२९	५७	आर्द्रा	४९	१५	शूल गंड	५ ५६	५० १०	बा	४	२८	१५	३०	5	२३	मिथुन	**चन्द्रदर्शन**, मु. १५,	१	२०	४४	०२	५	२७	१९	२७
३५.००	३	शुक्र	२२	५	पुर्न	४३	५५	वृद्धि	४७	३५	गर	२२	५	१६	जम	6	२४	क. ३०/८	भ. ४८/५३ से, **रम्भा तृतीया व्रत**, प्रताप जयन्ती (राज.), १ A	१	२१	४१	२९	५	२७	१९	२७
३५.००	४	शनि	१५	३८	पुष्य	४०	१३	ध्रुव	४०	२३	वि	१५	३८	१७	२	7	२५	कर्क	भ. १५/३८ तक, सूर्य मृग. में ४२/५८, वक्री बुध रोहि (४) में ३१/२५,	१	२२	३८	५४	५	२७	१९	२७
३५.०३	५	रवि	१०	५८	श्ले.	३८	१८	व्या.	३४	४०	बा	१०	५८	१८	३	8	२६	सिं.३८/१८	शुक्र मृग. में २/२५, गण्डमूल विचार	१	२३	३६	१६	५	२७	१९	२८
३५.०४	६	चंद्र	८	१३	मघा	३८	२३	हर्ष	३०	३३	तै	८	१३	१९	४	9	२७	सिंह	गण्डमूल 20/48 घं.मिं. तक,	१	२४	३३	४०	५	२७	१९	२८
३५.०५	७	मंग	७	२७	पूफा	४०	२५	वज्र	२८	३	व	७	२७	२०	५	10	२८	क. ५६/१०	भ. ७/२७ से ३८/०३ तक,	१	२५	३१	०२	५	२६	१९	२८
३५.०८	८	बुध	८	३८	उफा	४४	८	सिद्धि	२६	५५	व	८	३८	२१	६	11	२९	कन्या	**श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)	१	२६	२८	२३	५	२६	१९	२९
३५.०८	९	गुरु	११	२५	हस्त	४९	२०	व्य.	२७	५	कौ	११	२५	२२	७	12	३०	कन्या	**गंगा दशहरा पर्व (हरिद्वार)** हस्त योगे प्रातः 10/00 बाद (देखें पृष्ठ 74), वक्री गुरु B	१	२७	२५	४४	५	२६	१९	२९
३५.१०	१०	शुक्र	१५	३३	चित्रा	५५	३५	वरी	२८	१०	गर	१५	३३	२३	८	13	३१	तु.२२/२०	भ. ४८/०८ से प्रा., गंगा-दशहरा स्नानादि, **शुक्र मिथुन में २८/०५**,	१	२८	२३	०३	५	२६	१९	३०
३५.१०	११	शनि	२०	४०	स्वा	६०	०	परि	२९	५८	वि	२०	४०	२४	९	14	आ.	तुला	भ. २०/४० तक, **निर्जला एकादशी व्रत, सूर्य मिथुन में ४१/३०**, C	१	२९	२०	२२	५	२६	१९	३०
३५.१०	१२	रवि	२६	२०	स्वा	२	३५	शिव	३२	८	बा	२६	२०	२५	१०	15	२	वृ. ५३/३	**प्रदोष व्रत**, चम्पक द्वादशी	२	००	१७	३९	५	२६	१९	३०
३५.१०	१३	चंद्र	३२	१८	विशा	९	५३	सिद्ध	३४	३०	तै	३२	१८	२६	११	16	३	वृश्चिक	वट सावित्री व्रतारम्भ, वक्री बुध पूर्व से उदय ९/५८, स. सि. यो.	२	०१	१४	५६	५	२६	१९	३०
३५.१३	१४	मंग	३८	१३	अनु	१७	१८	साध्य	३६	५३	गर	५	१६	२७	१२	17	४	वृश्चिक	भ. ३८/१३ से, गण्डमूल 12/21 घं.मिं. से प्रा.,	२	०२	१२	१२	५	२६	१९	३१
३५.१३	१५	बुध	४३	५८	ज्ये.	२४	३३	शुभ	३९	५	वि	११	६	२८	१३	18	५	ध.२४/३३	भ. ११/६ तक, **ज्येष्ठ पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत**, शुक्र आर्द्रा में D	२	०३	०९	२८	५	२६	१९	३१

A जमादि-उल्सानी (मुस्लिम) प्रा. **B** पू.पा. (4) २०/३३, **C** आषाढ़ संक्रान्ति, १५ मु., पुण्यकाल संक्रां. मध्याह्न बाद, स.सि.यो. **D** ५३/४३, **सन्त कबीर जयंती**, श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल विचार

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	५	३	१	८	१	४	९	३
२६	०	२३	२१	२६	२६	८	२७	२७
२८	५०	५५	२६	४७	५८	५९	४७	४७
३३	२०	१०	५८	४०	२०	२९	१	१
57 21	747 52	34 33	29 18	5 42	73 43	3 52	3 11	3 11
मृग १	उफा २	श्ले. ३	रोहि ४	उषा १	मृग २	मघा ३	धनि २	श्ले ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

भाव	राशि	ग्रह
1	२	सू. बु. शु.
2	३	
3	४	मं. के.
4	५	श.
5	६	चं.
6	७	
7	८	
8	९	गु.
9	१०	रा.
10	११	
11	१२	
12	१	

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	३	१	८	२	४	९	३
३	२५	२७	१९	२६	५	९	२७	२७
९	९	५८	५	५	३४	२८	४७	४७
३८	४५	१५	५२	१०	१७	२२	१	१
57 14	715 34	34 57	4 58	6 32	73 42	4 27	3 11	3 11
मृग ३	ज्ये. ३	श्ले. ४	रोहि ३	पूषा ४	मृग ४	मघा ३	धनि २	श्ले ४
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू. शु.
2	२	बु.
3	१	
4	१२	
5	११	
6	१०	रा.
7	९	गु.
8	८	चं.
9	७	
10	६	
11	५	श.
12	४	के. मं.

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल—

आपद ग्रस्त स्त्रियों को करवीर व्रत शीघ्र फल देता है। ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को **रम्भा तीज** (6 जून) का विधिपूर्वक व्रत रखने से स्त्रियों को विवाह, सन्तति एवं सौभाग्य आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **खीर भवानी** (11 जून) का भव्य मेला ज्ये. शु. अष्टमी जम्मू-कश्मीर में मनाया जाता है। (12) जून को प्रातः 10 बजे के बाद दशमी तिथि, हस्त नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, वृषस्थ रवि एवं कन्या का चन्द्र-यह अधिकतर योग होने से 12 जून को **गंगा दशहरा** गंगापूजन, स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। ता. 14 को **निर्जला एकादशी** का व्रत आयु, आरोग्यवृद्धि एवं पुण्य लाभ की दृष्टि से विशेष प्रशस्त माना गया है। व्यासजी के अनुसार एक वर्ष की पच्चीस एकादशी न की जा सके तो केवल निर्जला एकादशी का व्रत करने से ही पुण्य लाभ हो जाता है। अमावस्या की भान्ति पूर्णिमा को भी वट सावित्री का व्रत वैधव्यादि दोष निवारण हेतु किया जाता है।

आषाढ़ संक्रान्ति—ता. 14 जून को **आषाढ़ संक्रान्ति** शनिवार को १५ मुहूर्त्ति होने से सर्व प्रकार के अनाज, धान्य, चावल, चने, तिल, तैल आदि पदार्थ तेज भाव होंगे। पृथ्वी पर राजाओं के मध्य टकराव तथा लोगों में भी परस्पर विग्रह एवं विरोध अधिक रहे। लोगों में क्लिष्ट रोगों का प्रसार अधिक हो—**सौरेश्चवारे रवि संक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वीसरोगा—नृपतेः प्रजासुभेन्महायुद्ध भयंतदानीम्॥ राशिफल**—मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, एवं कुम्भ राशि के जातकों के लिए इस संक्रान्ति का फल लाभ-प्रदायक होगा। **आकाश लक्षण**—पक्षारम्भ में ही मंगल सूर्य से आगे संचार कर रहा है, जिससे भारत के पूर्व-पश्चिमी भागों में रुक-रुक कर वर्षा होगी।

वि. संवत् २०६५, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाकः १९३०

सन् 2008 ई. (ता. 19 जून से 13 जुलाई तक)
सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं मं.-श. पश्चिमी कपाल में परस्पर-आसन्न, प्रातः बुध पूर्व में तथा गुरु पश्चिम में दिखाई देगा। शुक्र अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	रा.शक	जमा.सु.	जून	आषा.प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.१३	१	गुरु	४९	१३	मूल	३१	२५	शुक्ल	४०	५८	बा	१६	३६	२९	१४	19	६	धनु	बुध मार्गी ३६/२८, गण्डमूल 18/01 घं. मिं. तक,	२	४	०६	४५	५	२७	१९	३१
३५.१३	२	शुक्र	५३	५८	पूषा	३७	५०	ब्रह्म	४२	२५	तै	२१	३६	३०	१५	20	७	म.५४/२०		२	५	०४	००	५	२७	१९	३२
३५.१३	३	शनि	५७	५५	उषा	४३	३३	ऐंद्र	४३	२०	व	२५	५७	३१	१६	21	८	मकर	भ. २५/५७ से ५७/५५ तक, **मंगल मघा १ सिंह में २८/४५, सूर्य A**	२	६	०१	१४	५	२७	१९	३२
३५.१३	४	रवि	६०	०	श्रव	४८	२३	वैधृ	४३	३३	बव	२९	२५	आ.	१७	22	९	मकर	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/21 (जालंधर), शक आषाढ़ प्रारंभ	२	६	५८	२८	५	२७	१९	३२
३५.१२	४	चंद्र	०	५५	धनि	५२	३	विष्क	४२	५०	बा	०	५५	२	१८	23	१०	कुं.२०/१८	**पंचक प्रारम्भ २०/१८** (13/35 घं.मिं.)	२	७	५५	४१	५	२८	१९	३२
३५.११	५	मंग	२	३८	शत	५४	१८	प्रीति	४१	३	तै	२	३८	३	१९	24	११	कुम्भ	शनि मघा (४) में ४६/२०	२	८	५२	५६	५	२८	१९	३२
३५.१०	६	बुध	३	०	पूभा	५५	५	आयु	३८	३	व	३	०	४	२०	25	१२	मी. ४०/०	भ. ३/०० से ३२/२० तक,	२	९	५०	०९	५	२९	१९	३२
३५.१०	७	गुरु	१	४३	उभा	५४	१०	सौभा	३३	४३	बव	१	४३	५	२१	26	१३	मीन		२	१०	४७	२५	५	२९	१९	३३
००.००	८	गुरु	५८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.१०	९	शुक्र	५४	१५	रेव	५१	४०	शोभ	२८	३	तै	२६	३२	६	२२	27	१४	मे.५१/४०	**पंचक समाप्त ५१/४०,** गण्डमूल विचार, यूरेनस वक्री ०/१८	२	११	४४	३९	५	२९	१९	३३
३५.१०	१०	शनि	४८	१३	अश्वि	४७	४०	अति	२१	८	व	२१	१४	७	२३	28	१५	मेष	भ. २१/१४ से ४८/१३ तक, गण्डमूल 24/33 घं.मिं. तक, वक्री नैपच्यून B	२	१२	४१	५२	५	२९	१९	३३
३५.१०	११	रवि	४०	५५	भर	४२	२३	सुक	१३	३	बव	१३	१९	८	२४	29	१६	वृ.५५/५३	**योगिनी एकादशी व्रत,** शुक्र पुर्न. में ४४/४०	२	१३	३९	०५	५	२९	१९	३३
३५.०९	१२	चंद्र	३२	५५	कृति	३६	५	धृति शूल	३ ५४	५५ १३	कौ	६	५५	९	२५	30	१७	वृष	**सोम प्रदोष व्रत,** बुध मृग (१) में ९/४८,	२	१४	३६	२०	५	३०	१९	३३
३५.०८	१३	मंग	२३	४३	रोहि	२९	१५	गंड	४४	८	व	२३	४३	१०	२६	जुल	१८	मि.५५/४५	भ. २३/४३ से ४९/१० तक, मास-शिवरात्रि व्रत, जुलाई प्रारम्भ	२	१५	३३	३४	५	३०	१९	३३
३५.०७	१४	बुध	१४	३८	मृग	२२	१८	वृद्धि	३४	०	श	१४	३८	११	२७	2	१९	मिथुन	राहु धनि. (१) केतु आश्ले. (३) में ४/४०, पितृकार्येषु स्नानदान C	२	१६	३०	४९	५	३०	१९	३३
३५.०५	३०	गुरु	५	४५	आर्द्रा	१५	३३	ध्रुव	२४	१३	ना	५	४५	१२	२८	3	२०	क. ५६/०	**अमावस** स्नान, दानादि, स. सि. यो. 11/44 से	२	१७	२८	०३	५	३१	१९	३३

A आर्द्रा में ४०/४०, सूर्य सायन कर्क में ०/०८, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ, **B** मकर में २१/३८ **C** अमावस, स. सि. यो.

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	४	१	८	२	४	९	३
१०	४	२	२०	२५	१५	१०	२६	२६
४७	२६	३९	३५	१०	२३	६	५९	५९
२७	५९	२६	२९	१०	५९	६	२०	२०
57 14	813 45	35 24	32 13	7 16	73 43	5 3	3 11	3 11
आर्द्रा २	उभा ०	मघा ०	रोहि ४	पूषा ४	आर्द्रा ३	मघा ४	धनि २	श्ले. ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. सप्तमी, प्रातः 5.30

४ के.; ३ सू. शु.; २ बु.; १; १२ चं.; ११; १० रा.; ९ गु.; ८; ७; ६; ५ मं. श.

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	४	१	८	२	४	९	३
१७	१६	६	२५	२४	२४	१०	२६	२६
२८	७	४८	५५	१८	०	४२	५९	५९
१	४	२५	४२	६	१०	५५	२०	२०
57 13	891 37	35 48	63 13	7 37	73 45	5 32	3 10	3 10
आर्द्रा ४	आर्द्रा ३	मघा ३	मृग ०	पूषा ४	पुर्न २	मघा ४	धनि २	श्ले ४
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

४ के.; ३ सू. चं. शु.; २ बु.; १; २; ११; १० रा.; ९ गु.; ८; ७; ६; ५ मं. श.

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल—

आषाढ़ मास में **भगवान् विष्णु** की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति लक्ष्मी सहित विष्णु पूजा एवं मन्त्र के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति छाता, जूते, आंवले, आम, खरबूजे, घड़ा (पात्र), वस्त्र, मिष्ठान्न का दान करना तथा स्वयं भी एक समय भोजन करने से विशेष पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। **स्वास्थ्य**—आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। **व्यापारिक रूख**—पक्षारम्भ में बुध वृष राशि में मार्गी हुआ है, जिससे रूई, सूत, अलसी, शक्कर व चान्दी में मंदी का रुझान बनेगा। तृतीया (21 जून) को सूर्य आर्द्रा में प्रविष्ट होने से गेहूं, चना, चावल, चान्दी, अरण्डी, अलसी, रूई, कपास, चान्दी में तेजी हो, सुवर्ण में घटाबढ़ी हो। परन्तु तृतीया को मंगल सिंह राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा जिससे सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा, स्टील आदि धातुएं तथा गुड़, शक्कर, चीनी, गेहूं, लाल मिर्च, पटसन, लाख, खल-बिनौले आदि लाल वर्ण की वस्तुएं तेज भाव होंगी—**यदा सिंह राशिगतो भौमः कांचन रूप्यताम्रकम्। आरक्त सर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवन्ति हि॥** आषाढ़ मास में पांच बृहस्पतिवार होने से देश के पश्चिमी भागों-जैसे कश्मीर, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात प्रदेशों में कहीं उपद्रव, हिंसा, आतंक आदि की विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं—**यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्धं च जायते॥**

आकाश लक्षण—इस पक्ष में असम, बंगाल, त्रिपुरा, महाराष्ट्र, केरल, बिहार आदि में मानसून की वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाके: १९३० — सन् 2008 ई. (ता. 4 जुलाई से 18 जुलाई तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु — भा.स्टें.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं मंग. और शनि को पश्चिम में एक-दूसरे के काफी समीप और गुरु को पूर्व में देखा जा सकेगा। 12 जुला. से शुक्र भी पश्चिम में दिखेगा। प्रातः बुध पूर्व में दृश्य ; 17 जुला. से बुध अस्त होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आषा. शके	जमा. मु.	जुलाई	आषाढ़ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	विवरण	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
००.००	१	गुरु	५७	३३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	3	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.०४	२	शुक्र	५०	२३	पुर्न	९	३५	व्या	१५	५	बा	२३	५८	१३	२९	4	२१	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, रथ यात्रा श्रीजगन्नाथ (पुरी),	२	१८	२५	१६	५	३१	१९	३३
३५.०३	३	शनि	४४	३५	पुष्य	४	४५	हर्ष	६	५३	तै	१७	२९	१४	रज्ज	5	२२	कर्क	सूर्य पुर्न. में ३९/१८, रज्जब (मुस्लि) मास प्रारम्भ	२	१९	२२	३२	५	३२	१९	३३
३५.०२	४	रवि	४०	३३	आश्ले. मघा	१ ५९	२५ ५३	वज्र सिद्धि	० ५४	३ ३३	व	१२	३४	१५	२	6	२३	सिं. १/२५	भ. १२/३४ से ४०/३३ तक, **बुध मिथुन में ३३/२५,** गण्डमूल	२	२०	१९	४८	५	३२	१९	३३
३५.००	५	चंद्र	३८	२०	पूफा	६०	०	व्य.	५०	३८	बव	९	२७	१६	३	7	२४	सिंह	**शुक्र कर्क में ५२/३८,**	२	२१	१७	०३	५	३३	१९	३३
३४.५६	६	मंग	३८	८	पूफा	०	८	वरी	४८	१५	कौ	८	१४	१७	४	8	२५	क. १५/३३	स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी	२	२२	१४	१५	५	३४	१९	३२
३४.५५	७	बुध	३९	४८	उफा	२	२५	परि	४७	२३	ग	८	५८	१८	५	9	२६	कन्या	भ. ३९/४८ से, विवस्वत सप्तमी	२	२३	११	२८	५	३४	१९	३२
३४.५३	८	गुरु	४३	८	हस्त	६	२५	शिव	४७	४३	वि	११	२८	१९	६	10	२७	तु. ३९/३	भ. ११/२८ तक, वक्री गुरु पू.षा. ३ में ३३/१८, शुक्र पुष्य में **(A)**	२	२४	०८	४१	५	३५	१९	३२
३४.५२	९	शुक्र	४७	४५	चित्रा	११	५८	सिद्ध	४९	५	बा	१५	२७	२०	७	11	२८	तुला	बुध आर्द्रा में १५/१०, भढली नवमी, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)	२	२५	०५	५६	५	३५	१९	३२
३४.४८	१०	शनि	५३	१५	स्वा	१८	३०	साध्य	५१	५	तै	२०	३०	२१	८	12	२९	तुला	**शुक्र पश्चिम में उदय 4/31 घं.मिं.,** सर्वार्थ सिद्ध योग:	२	२६	०३	०९	५	३६	१९	३१
३४.४५	११	रवि	५९	८	विशा	२५	४३	शुभ	५३	२५	व	२६	१२	२२	९	13	३०	वृ. ८/५३	भ. २६/१२ से ५९/०८ तक, **देवशयनी एकादशी व्रत,** चातुर्मास्य **B**	२	२७	००	२३	५	३७	१९	३१
३४.४५	१२	चंद्र	६०	०	अनु	३३	८	शुक्ल	५५	४८	बव	३२	४	२३	१०	14	३१	वृश्चिक	शुक्र बाल्य समाप्त 28/31 घं.मिं.	२	२७	५७	३९	५	३७	१९	३१
३४.४०	१२	मंग	५	०	ज्ये.	४०	१८	ब्रह्म	५७	५३	बा	५	०	२४	११	15	३२	ध. ४०/१८	**भौम प्रदोष व्रत,** गण्डमूलादि **B** व्रत, नियमादि प्रा., मंगल पू.फा. में ५१/२५,	२	२८	५४	५१	५	३८	१९	३०
३४.४०	१३	बुध	१०	३५	मूल	४७	३	ऐंद्र	५९	३३	तै	१०	३५	२५	१२	16	श्रा.	धनु	**सूर्य कर्क में ८/१८, श्रावण संक्रान्ति,** ३० मु., पुण्यकाल संक्रां. **C**	२	२९	५२	०४	५	३८	१९	३०
३४.३५	१४	गुरु	१५	२८	पू.षा.	५३	०	वैधृ	६०	०	व	१५	२८	२६	१३	17	२	धनु	भ. १५/२८ से ४७/३३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, **(D)**	३	००	४९	१९	५	३९	१९	२९
३४.३५	१५	शुक्र	१९	३५	उषा	५८	१०	वैधृ	०	३८	बव	१९	३५	२७	१४	18	३	म. ९/२३	आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, बुध पुर्न. में ४४/०५	३	०१	४६	३२	५	३९	१९	२९

शुक्र उदय 11 जुला.

(A) ३५/१५, श्रीदुर्गाष्टमी, **C** सूर्योदय से मध्याह्न तक, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ **(D)** बुध पूर्व में अस्त ५४/००, वायु परीक्षा, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर)

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	४	२	८	३	४	९	३
२४	२१	११	४	२३	२	११	२६	२६
८	५८	०	४४	२४	३६	२२	१४	१४
३२	९	५	१८	१७	१७	५६	४९	४९
57 12	794 38	36 9	91 22	7 44	73 45	5 57	3 31	3 11
पुनं २	हस्त ४	मघा ४	मृग ४	पूषा ४	पुनं ४	मघा ४	धनि ०	श्ले. ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

- ३: सू. बु.
- ४: के. शु.
- ५: मं. श.
- ६: चं.
- ७
- ८
- ९: गु.
- १०: रा.
- ११
- १२
- १
- २

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	४	२	८	३	४	९	३
१	२८	१५	१८	२२	१२	१२	२५	२५
४६	१	५०	३३	२३	२६	१२	४९	४९
१३	२	४२	४	५	२७	५	२३	२३
57 14	737 23	36 33	117 19	7 30	73 45	6 23	3 11	3 11
पुनं ४	उषा १	पूफा १	आर्द्रा ४	पूषा ३	पुष्य ३	मघा ४	धनि ०	श्ले ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

- ४: सू. शु. के.
- ५: श. मं.
- ३: बु.
- ६
- ७
- ८
- ९: चं. गु.
- १०: रा.
- ११
- १२
- १
- २

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की द्वितीया तिथि (4 जुलाई) शुक्रवार को भगवान् श्री जगन्नाथ की रथ यात्रा का भव्य उत्सव पुरी (उड़ीसा) में तथा देश के अन्य भागों में बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाया जाता है। **देवशयनी एकादशी** (13 जुलाई) से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी पर्यन्त धर्मपरायण तपस्वी लोग चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करेंगे। ता. 16 जुला. को श्रावण संक्रान्ति बुधवार को 30 मुहूर्त्ति है। **गुरु पूर्णिमा** (18 जुलाई) को भगवान् विष्णु एवं ऋषि वेदव्यास की पूजार्चना करके अपने इष्ट गुरु के प्रति आस्था रखते हुए यथाशक्ति धन, मन, तनादि द्वारा सेवा करनी चाहिए। 5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, रूई, कपास, खल-बिनौले, तिल-मूंगफली, अलसी, सरसों, उड़द मोंठ, गुड़, चीनी आदि के भाव तेज होंगे। ता. 10 जुला. को शुक्र पुष्य में आने से गेहूं, चावल, चना, धान्य, रूई में तेजी का वातावरण बनेगा। ता. 14 से मंगल पुष्य नक्षत्र में आने से तेल, तिल, सरसों, अलसी, मूंगफली व वनस्पति, घृतादि तेज भाव होंगे। ता. 16 को सूर्य कर्क राशि में जाकर केतु, शुक्र आदि के साथ मेल करेगा। रूई, सन, सूत, गुड़, चीनी, शक्कर, तिल, तैल, सरसों सोना, चान्दी में तेजी होगी। गेहूं, चना, धान्यादि की मार्कीट में विशेष उतार चढ़ाव न होंगे। **राशिफल—**मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन व कुम्भ राशि के जातकों को इस संक्रान्ति का फल लाभदायक होगा। ता. 17 की प्रातः से **बुध पूर्व में अस्त** होने से गेहूं, चावल, चने-सर्व प्रकार के अनाजों में तेज़ी होगी। **आकाश लक्षण—**पक्ष में भारत के/पूर्वी तथा उत्तर पश्चिमी राज्यों-जैसे केरल, महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, असम, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा आदि में कहीं बहुत अधिक वर्षा से बाढ़ तथा कहीं अल्प वर्षा रहेगी। **आषाढ़ शुक्ल** पंचमी को गर्जन सहित यदि वर्षा हो, इन्द्रधनुष भी दीखे, तो गेहूँ, चावल का संग्रह करने से कार्तिक में अच्छा मुनाफा प्राप्त हो।

वि. संवत् २०६५, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९३०														तारीखें				चंद्रराशि प्रवेश घटी पल	सन् 2008 ई. (ता. 19 जुलाई से 1 अगस्त तक) सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	जुमा. रज.	रवि मु.	जुलाई	श्रावण प्र.		ग्रह दर्शन—सायं शुक्र पश्चिम कपाल में तथा मं., श. पश्चिम क्षितिज के ऊपर होंगे। इस समय गुरु पूर्व में होगा।	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.३३	१	शनि	२२	४५	श्रव	६०	०	विष्क	०	५८	कौ	२२	४५	२८	१५	19	४	मकर	सूर्य पुष्य में ३७/५५, चान्द्र श्रावण मासारम्भ, स. सि. यो.	३	०२	४३	४८	५	४०	१९	२९
३४.३०	२	रवि	२४	५५	श्रव	२	१८	प्रीति आयु	० ५९	३५ २३	गर	२४	५५	२९	१६	20	५	कुं. ३४/०	भ. ५५/२८ से, **पंचक प्रारम्भ ३४/००,** अशून्य शयन व्रत	३	०३	४१	०४	५	४०	१९	२८
३४.२८	३	चंद्र	२५	५५	धनि	५	२३	सौभा	५७	१३	वि	२५	५५	३०	१७	21	६	कुम्भ	भ. २५/५५ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/25 (जालंधर), **A**	३	०४	३८	२०	५	४१	१९	२८
३४.२७	४	मंग	२५	५३	शत	७	२८	शोभ	५४	१३	बा	२५	५३	३१	१८	22	७	मी.५३/१३	सूर्य सायन सिंह में 16/25 घं. मिं.	३	०५	३५	३७	५	४१	१९	२८
३४.२३	५	बुध	२४	३५	पूभा	८	१८	अति	५०	१०	तै	२४	३५	श्रा.	१९	23	८	मीन	नाग पंचमी (राज. व बंगाल), **बुध कर्क में ३७/५०,** शक श्रावण प्रा.	३	०६	३२	५६	५	४२	१९	२७
३४.२०	६	गुरु	२२	८	उभा	८	०	सुक	४५	१३	व	२२	८	२	२०	24	९	मीन	भ. २२/०८ से ५०/२० तक, स. सि. यो. 8/54 से प्रारम्भ	३	०७	३०	१३	५	४२	१९	२६
३४.१५	७	शुक्र	१८	२८	रेव	६	३०	धृति	३९	१८	बव	१८	२८	३	२१	25	१०	मे. ६/३०	**पंचक समाप्त ६/३०,** बुध पुष्य में १२/४५, गंडमूल	३	०८	२७	३३	५	४३	१९	२५
३४.१३	८	शनि	१३	४०	अश्वि	३	५३	शूल	३२	२८	कौ	१३	४०	४	२२	26	११	मेष	गण्डमूल 7/16 घं.मिं. तक,	३	०९	२४	५२	५	४३	१९	२४
३४.१०	९	रवि	७	५३	भर कृति	० ५५	१३ ४३	गंड	२४	५३	गर	७	५३	५	२३	27	१२	वृ.१४/१०	भ. ३४/३५ से,	३	१०	२२	१४	५	४४	१९	२४
३४.०५	१०	चंद्र	१	१३	रोहि	५०	३०	वृद्धि	१६	३५	वि	१	१३	६	२४	28	१३	वृष	भ. १/१३ तक, कामिका एकादशी व्रत स्मार्त, शनि पू.फा. में १७/२३ **B**	३	११	१९	३८	५	४५	१९	२३
००.००	११	चंद्र	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.०३	१२	मंग	४६	२५	मृग	४४	५८	ध्रुव व्या.	७ ५९	५३ ००	कौ	२०	१८	७	२५	29	१४	मि.१७/४५	**कामिका एकादशी व्रत वैष्णव,**	३	१२	१७	०२	५	४६	१९	२३
३४.००	१३	बुध	३८	५०	आर्द्रा	३९	२५	हर्ष	५०	८	गर	१२	३८	८	२६	30	१५	मिथुन	भ. ३८/५० से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत	३	१३	१४	२५	५	४६	१९	२२
३३.५५	१४	गुरु	३१	२५	पुर्न	३४	५	वज्र	४१	३५	वि	५	८	९	२७	31	१६	क.२०/२३	भ. ५/०८ तक, बुध आश्ले. में ३३/०८, स. सि. यो.	३	१४	११	५१	५	४७	१९	२१
३३.५३	३०	शुक्र	२४	५०	पुष्य	२९	३०	सिद्धि	३३	३५	ना	२४	५०	१०	२८	अग	१७	कर्क	**हरियाली अमावस, खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (देखें पृष्ठ 10), **शुक्र (C)**	३	१५	०९	१५	५	४७	१९	२०

A शुक्र आश्लेषा में २५/४८, स्वर्णगौरी व्रत **B** स. सि. योग: **(C)** मघा (१) सिंह में १६/१८, अगस्त प्रारम्भ, तिलक पुण्य तिथि

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	४	३	८	३	४	९	३
९	१२	२०	४	२१	२२	१३	२५	२५
२४	१७	४४	५८	२४	१६	४	२३	२३
२१	४५	२९	४४	४८	२९	२५	५७	५७
57 20	851 0	36 57	127 1	6 57	73 46	6 45	3 11	3 11
पुष्य २	आश्ले ४	पूफा ३	पुष्य १	पूषा ३	श्ले. २	मघा ४	धनि १	श्ले. ३
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	०	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

४ सू. बु. शु. के. | ५ श. मं. | ३ | २ | ६ | ७ | ९ चं. | ८ | १० रा. | १२ | ९ गु. | ११

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 1 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	३	८	३	४	९	३
१५	९	२४	१७	२०	२९	१३	२५	२५
८	२५	२६	३४	४४	३९	४५	४	४
३५	२७	५८	१	३३	५	२८	५३	५३
57 26	859 26	37 16	122 59	6 20	73 46	6 58	3 11	3 11
पुष्य ४	पुष्य २	पूफा ४	श्ले. १	पूषा ३	श्ले. ४	पूफा १	धनि १	श्ले. ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

४ सू.चं.बु. शु. के. | ५ श. मं. | ३ | २ | ६ | ७ | ९ | ८ | १० रा. | १२ | ९ गु. | ११

श्रावण कृष्ण पक्षफल—

पक्ष की द्वितीया तिथि को अशून्यशयन व्रत रखने से स्त्रियों एवं पुरुषों में दाम्पत्य सुख की वृद्धि होती है। श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को भगवान शिव-पार्वती की प्रीति के लिए व्रत रखकर शिवजी की बिल्पपत्र, दूध, दहीं, चावल, पुष्प, गंगाजल सहित पूजा करने से मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति होती है। श्रावण मास के ही प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजनादि करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **कामिका एकादशी** का व्रत रखकर मंजरी सहित तुलसीदल से भगवान कृष्ण की पूजा करनी चाहिए। घी का दीपक प्रज्वलित रखें तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान करने से सुखैश्वर्य साधनों की प्राप्ति होती है। **हरियाली अमावस्या** (1 अगस्त) को तीर्थस्थान पर गंगा नदी पर जाकर स्नान दान, जपादि करवाकर पितरों को तर्पण करने का माहात्म्य होता है। इसी दिन खण्ड सूर्यग्रहण लगने से स्नान, दान, तर्पणादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। पक्ष के आरम्भ में प्रतिपदा को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आने से गेहूं, जौं, चावल, गुड़, चीनी, शक्कर आदि के भाव एक सप्ताह में तेज होंगे। सोना, चांदी, पीतल में भी तेजी हो। ता. 25 से रूई व चांदी के भावों में घटा-बढ़ी होगी। ता. 1 अग. को शुक्र सिंह राशि में प्रविष्ट होकर मंगल-शनि के साथ सम्बन्ध करेगा। अनाज, धान्य, गुड़, तैल, सोना, ताम्बा, चान्दी, चौपाय, लाल वर्ण की वस्तुएं तेज भाव होंगी—**यदा दैत्य गुरु सिंहे-हेम रक्तश्चतुष्पदः। धान्यानि महर्घाणियावन्ति हि दिनानि च॥**

श्रावणमास में पांच शनिवार होने से सर्वप्रकार के अनाज, दालें एवं खाद्य तैलों में तेजी होगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध व टकराव हो। कहीं उपद्रव, झगड़े, फिंसाद एवं जनांदोलन तथा छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) के योग हैं—**यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिता पृथिवी-छत्र भङ्गस्तदा॥**

आकाश लक्षण—इस पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में व्यापक एवं रूक-रूक कर वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, श्रावण शुक्ल पक्ष शाकः १९३० — सन् 2008 ई. (ता. 2 अगस्त से 16 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु — भा.स्ट.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	श्राव. शक	रज़िब मु.	अगस्त	श्रावण प्र.	चंद्रराशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—सायं शुक्र-शनि साथ-साथ पश्चिम क्षितिज की ओर जाते दिखाई देंगे। इनके ऊपर मंगल होगा। इस समय गुरु पूर्व में होगा। 11 अग. से बुध भी पश्चिम में दिखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३.५०	१	शनि	१९	५	श्ले.	२५	५०	व्य.	२६	२५	बव	१९	५	११	२९	2	१८	सिं.२५/५०	**ग्रहणऽपर दिवस**, सूर्य आश्ले. में ३४/४८, **मेला छिन्नमस्तिका (A)**	३	१६	६	४४	५	४८	१९	१९
३३.४५	२	रवि	१४	३८	मघा	२३	३०	वरी	२०	२०	कौ	१४	३८	१२	३०	3	१९	सिंह	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,	३	१७	४	१३	५	४९	१९	१९
३३.४३	३	चंद्र	११	४५	पूफा	२२	४८	परि	१५	३३	गर	११	४५	१३	शव	4	२०	क.३७/५३	भ. ४१/१३ से, मंगल उ.फा. में ३३/०३, मधुस्रवा, हरियाली-सिंघारा **B**	३	१८	१	४०	५	४९	१९	१८
३३.४०	४	मंग	१०	३५	उफा	२४	४५	शिव	१२	५	वि	१०	३५	१४	२	5	२१	कन्या	भ. १०/३५ तक,	३	१८	५९	१०	५	५०	१९	१८
३३.३८	५	बुध	११	१५	हस्त	२६	३०	सिद्ध	१०	८	बा	११	१५	१५	३	6	२२	तु.५८/३०	**नाग पंचमी**, श्रीकल्कि जयन्ती, श्रावणी उपाकर्म (देखें पृष्ठ 74) **C**	३	१९	५६	३९	५	५०	१९	१७
३३.३३	६	गुरु	१३	३५	चित्रा	३०	५३	साध्य	९	३०	तै	१३	३५	१६	४	7	२३	तुला	**बुध मघा १ सिंह में १३/४८,**	३	२०	५४	१२	५	५१	१९	१६
३३.२८	७	शुक्र	१७	३०	स्वा	३६	४०	शुभ	७	३५	व	१७	३०	१७	५	8	२४	तुला	भ. १७/३० से ५०/०३ तक, गो. तुलसीदास जयन्ती, वक्री गुरु पू.षा. **(D)**	३	२१	५१	४५	५	५२	१९	१५
३३.२५	८	शनि	२२	३५	विशा	४३	३०	शुक्ल	११	३८	बव	२२	३५	१८	६	9	२५	वृ.२६/४३	**श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी**-चामुण्डादेवी-कांगड़ा, **मंगल कन्याE**	३	२२	४९	१७	५	५२	१९	१४
३३.२०	९	रवि	२८	२०	अनु	५०	४५	ब्रह्म	१३	४३	कौ	२८	२०	१९	७	10	२६	वृश्चिक		३	२३	४६	५२	५	५३	१९	१३
३३.१५	१०	चंद्र	३४	१५	ज्ये.	५८	०	ऐंद्र	१६	०	तै	१	१८	२०	८	11	२७	ध. ५८/०	गण्डमूल विचार, बुध पश्चिम में उदय ४३/३५,	३	२४	४४	२७	५	५४	१९	१२
३३.१२	११	मंग	३९	५३	मूल	६०	०	वैधृ	१८	१०	व	७	४	२१	९	12	२८	धनु	भ. ७/०४ से ३९/५३ तक, **पवित्रा एकादशी व्रत**, शुक्र पू.फा. में **F**	३	२५	४२	००	५	५४	१९	११
३३.०७	१२	बुध	४४	४०	मूल	४	४५	विष्क	१९	४८	बव	१२	१७	२२	१०	13	२९	धनु	गण्डमूल 7/49 घं.मिं. तक	३	२६	३९	३५	५	५५	१९	१०
३३.०२	१३	गुरु	४८	२५	पूषा	१०	४३	प्रीति	२०	४५	कौ	१६	३३	२३	११	14	३०	म. २७/०	प्रदोष व्रत, बुध पू.फा. में ३२/१०	३	२७	३७	११	५	५५	१९	८
३२.५७	१४	शुक्र	५०	५५	उषा	१५	३०	आयु	२०	४३	गर	१९	४०	२४	१२	15	३१	मकर	भ. ५०/५५ से, **भारत स्वतन्त्रता दिवस**, स. सि. यो. 12/08 से प्रा.	३	२८	३४	५१	५	५६	१९	७
३२.५३	१५	शनि	५२	५	श्रव	१९	०	सौभा	१९	४०	वि	२१	३०	२५	१३	16	भा.	कुं.५०/१८	भ. २१/३० तक, **श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन** (देखें पृष्ठ 75), **G**	३	२९	३२	३२	५	५७	१९	६

(A) (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ **B** तीज, दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी, शब्बान मु. प्रारम्भ, **C** स. सि. यो. **(D)** (२) में ३१/१०, **E** में ५२/३० **F** ६/५३, गण्डमूल विचार **G भाद्रपद संक्रान्ति**, मु. ३०, सूर्य मघा १ सिंह में २८/३८, पुण्यकाल प्रातः 11/00 से, पंचक प्रारम्भ ५०/१८, **खण्डग्रास चन्द्रग्रहण** (देखें पृष्ठ 12), श्रीअमरनाथ गुफा दर्शन, **गायत्री जयन्ती**

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	४	४	८	४	४	९	३
२२	२४	२९	३	१९	९	१४	२४	२४
४८	२९	२६	१९	५७	२९	४२	३६	३६
२४	३१	२८	३९	२७	७	९	१६	१६
57 32	716 16	37 39	111 36	5 16	73 44	7 13	3 11	3 11
श्ले. २	विशा २	उफा १	मघा १	पूषा २	मघा ३	पूफा १	धनि १	श्ले. ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

शु. ५ बु. मं. श.
४ सू. के.
३
६
२
७ चं.
९
८
१० रा.
१२
९ गु.
११

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	५	४	८	४	४	९	३
२९	१९	३	१५	१९	१८	१५	२४	२४
३१	५	५१	४९	२३	५	३३	१७	१७
२७	३	४	०	४७	६	१०	११	११
57 39	765 13	38 0	101 5	4 10	73 41	7 23	3 11	3 11
श्ले. ४	श्रव. ३	उफा ३	पूफा १	पूषा २	पूफा २	पूफा १	धनि १	श्ले. ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

श. ५ शु. बु.
४ सू. के.
३
६ मं.
२
७
९
८
१० चं. रा.
१२
९ गु.
११

श्रावण शुक्ल पक्षफल—

श्रा. शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी तक (ता. 2 अग. से 9 अग.) माता चिन्तपूर्णी (छिन्नमस्तिका) और चामुण्डादेवी (कांगड़ा) में भक्तों द्वारा अखण्ड लंगर एवं मेलों का आयोजन किया जाता है। इस पक्ष की हरियाली तीज के दिन सुहागिन स्त्रियां अपने पीहर लौटकर, हाथों में मेंहदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग पंचमी** (6 अगस्त) को अपने गृहद्वार का दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनकी दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प, अक्षत लड्डुओं आदि से मन्त्रपूर्वक पूजा करने से सर्पों का भय नहीं रहता। पवित्रा एकादशी (12 अग.) पुत्र सन्तान सुख प्राप्ति के लिए किया जाता है।

श्रावण पूर्णिमा को भाई बहिन के पवित्र सम्बन्धों का बोधक "रक्षाबन्धन (राखी) पर्व भाइयों को रक्षासूत्र बान्धकर मनाया जाता है। यद्यपि राखी भद्रा रहित काल में बान्धनी चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थिति वश भद्रा **मुखकाल** (जो कि दुपैहर 11.30 से 1 बजकर 33 मिनट तक रहेगा) को छोड़कर भद्रापुच्छ (जो कि लगभग 10.16 से लेकर 11.29 तक होगा) इस काल में रक्षाबन्धन करना प्रशस्त होगा) **ध्यान रहे, श्रावण पूर्णिमा** के दिन भाद्रपद संक्रान्ति होना, तथा रात्रि को खण्ड चन्द्रग्रहण घटित हो रहे हैं-शास्त्रानुसार रक्षा बन्धन में संक्रान्ति और ग्रहण दोनों का निषेध नहीं माना जाता। यथा **"रक्षाबन्धनं, इदं ग्रहण संक्रान्ति दिनेऽपि .... कर्त्तव्यम्॥** (धर्मसिन्धुः) भद्रा भी मकर राशि एवं पातालगत होने से विशेष दोषकारक नहीं मानी जाती। भाद्रपद संक्रान्ति को सू. बु. शु. एवं शनि-चार ग्रहों का योग होना तथा शनि की अतिचार गति होने से कहीं छत्रभंग एवं कहीं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि, धन व सम्पदा की हानि के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिम एवं मध्यवर्ती क्षेत्रों में व्यापक वर्षा के योग हैं।"

वि. संवत् २०६५, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९३०

सन् 2008 ई. (ता. 17 अगस्त से 30 अगस्त तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा-शरद् ऋतु — भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन- 17 अग. से शनि पश्चिम में अस्त होगा। सायं पश्चिम क्षितिज में मंग., बुध, शुक्र एक-दूसरे के काफी समीप होंगे तथा गुरु पूर्व कपाल में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	राष्ट्र.	इस्ला. मु.	अगस्त	भाद्र. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.५०	१	रवि	५२	०	धनि	२१	१८	शोभ	१७	४०	बा	२२	३	२६	१४	17	२	कुम्भ	ग्रहणऽपरे दिन, शनि पश्चिम में अस्त ९/५३	४	०	३०	११	५	५७	१९	५
३२.४५	२	चंद्र	५०	४३	शत	२२	२०	अति	१४	३८	तै	२१	२२	२७	१५	18	३	कुम्भ		४	१	२७	५४	५	५८	१९	४
३२.४३	३	मंग	४८	२३	पूभा	२२	१८	सुक	१०	४३	व	१९	३३	२८	१६	19	४	मी. ७/२५	भ. १९/३३ से ४८/२३ तक, कज्जली तीज,	४	२	२५	३७	५	५८	१९	३
३२.३७	४	बुध	४५	५	उभा	२१	१५	धृति	५	५५	बव	१६	४४	२९	१७	20	५	मीन	**श्रीगणेश संकष्ट (बहुला) चतुर्थी व्रत,** चं.उ. रात्रि 20/56 (जालन्धर)	४	३	२३	२१	५	५९	१९	२
३२.३५	५	गुरु	४१	१३	रेव	१९	२३	शूल/गंड	०/५४	२८/२३	कौ	१३	९	३०	१८	21	६	मे.१९/२३	**पंचक समाप्त १९/२३,** स. सि. योग:	४	४	२१	०६	५	५९	१९	१
३२.३३	६	शुक्र	३६	१८	अश्वि	१६	४५	वृद्धि	४७	४५	गर	८	४६	३१	१९	22	७	मेष	भ. ३६/१८ से, **चन्दन षष्ठी,** चन्द्रोदय 22/08 (जालंधर), हल **(A)**	४	५	१८	५५	६	०	१९	१
३२.२८	७	शनि	३१	३	भर	१३	३५	ध्रुव	४०	४३	वि	३	४१	भा.	२०	23	८	वृ.२७/४५	भ. ३/४१ तक, शीतला सप्तमी, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** स्मार्त **(B)**	४	६	१६	४६	६	१	१९	०
३२.२३	८	रवि	२५	२५	कृति	१०	०	व्या	३३	२५	कौ	२५	२५	२	२१	24	९	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** वैष्णव, बुध कन्या में ५३/५५, शनि **(C)**	४	७	१४	३८	६	२	१८	५९
३२.१८	९	चंद्र	१९	३२	रोहि	६	१०	हर्ष	२५	५८	गर	१९	३२	३	२२	25	१०	मि.३४/१०	भ. ४६/३५ से, **गुग्गा नवमी,** मंगल हस्त में ३७/५८, **शुक्र कन्या D**	४	८	१२	३०	६	२	१८	५७
३२.१३	१०	मंग	१३	३५	मृग/आर्द्रा	२/५८	८/१०	वज्र	१८	२०	वि	१३	३५	४	२३	26	११	मिथुन	भ. १३/३५ तक,	४	९	१०	२६	६	३	१८	५६
३२.०८	११	बुध	७	३८	पुर्न	५४	२०	सिद्धि	१०	५०	बा	७	३८	५	२४	27	१२	क.४०/१५	अजा एकादशी व्रत, वत्स द्वादशी (पूजा)	४	१०	०८	२३	६	४	१८	५५
३२.०५	१२	गुरु	१	५८	पुष्य	५०	५८	व्य./वरी.	३/५६	३३/३५	तै	१	५८	६	२५	28	१३	कर्क	भ. ५६/४५ से, प्रदोष व्रत, कैलाश यात्रा प्रारम्भ, स. सि. यो.	४	११	०६	२१	६	४	१८	५४
अवम	१३	गुरु	५६	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	००	००	००	०	०	०	०
३२.००	१४	शुक्र	५२	८	श्ले.	४८	१३	परि	५०	१०	वि	२४	२७	७	२६	29	१४	सिं.४८/१३	भ. २४/२७ तक, मास शिवरात्रि व्रत, अघोरा चतुर्दशी, गण्डमूल	४	१२	०४	२२	६	५	१८	५३
३१.५५	३०	शनि	४८	२८	मघा	४६	२०	शिव	४४	२८	च	२०	१८	८	२७	30	१५	सिंह	**कुशाग्रहणी शनैश्चरी अमावस, 'ॐ हूँ फट् स्वाहा' इह मंत्रेण E**	४	१३	०२	२२	६	५	१८	५१

(A) षष्ठी, सूर्य सायन कन्या में ४३//५०, शरद् ऋतु प्रारम्भ, बुध उफा में ४१/३८ **(B)** चन्द्रोदय रात्रि 22/52 (जालन्धर) (देखें पृष्ठ 75), शक भाद्रपद प्रारम्भ, शुक्र उ.फा. में (5/16 घं.मिं.) **(C)** पू.फा. (२) में ५७/२०, श्रीदूर्वाष्टमी वत, गोकुलाष्टमी, चन्द्रोदय 23/45 (जालंधर) **D** में ४१/०३, स. सि. योग: **E** कुशोत्पाटनम्, सूर्य पू.फा. में १८/१५, पिठोरी अमावस, शक्ति पूजा

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 24 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	५	४	८	४	४	९	३
७	७	८	२८	१८	२७	१६	२३	२३
१३	१९	५६	३७	५५	५४	३२	५१	५१
२१	८	२५	२९	११	२३	४०	४५	४५
57/52	854/10	38/24	89/40	2/47	73/38	7/30	3/11	3/11
मघा ३	कृति ४	उफा ४	उफा १	पूषा २	उफा १	पूफा १	धनि १	श्ले. ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30

- ६ मं.
- ५ सू. बु. शु. श.
- ४ के.
- ३
- २ चं.
- १
- १२
- ११
- १० रा.
- ९ गु.
- ८
- ७

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 30 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	५	८	५	४	९	३
१३	२	१२	७	१८	५	१७	२३	२३
०	२३	४७	१३	४१	१६	१७	३२	३२
५८	३७	३७	४१	१५	५	४९	४०	४०
58/3	822/52	38/43	80/49	1/41	73/36	7/33	3/11	3/11
मघा ४	मघा १	हस्त १	उफा ४	पूषा २	उफा ३	पूफा २	धनि १	श्ले. ३
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5.30

- ६ शु. बु. मं.
- ५ सू. चं. श.
- ४ के.
- ३
- २
- १
- १२
- ११
- १० रा.
- ९ गु.
- ८
- ७

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल-

इस पक्ष में श्रीगणेश बहुला चौथ-(20 अग.) तथा **चन्दन षष्ठी** (22 अग.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से कष्टों की निवृत्ति तथा गृहस्थ सुख, सौभाग्य-सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी** व्रत सप्तमी विद्धा अष्टमी स्मार्त्तानुसार अर्द्धरात्रि, कृतिका नक्षत्र युक्त एवं वृष के चन्द्रमा का योग 23 अग. के दिन शुभ होगा। जबकि 24 अग., रविवार को अष्टमी व रोहिणी का योग सायं 4 बजकर 12 मिनट तक रहेगा। वैष्णव मतानुसार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी इसी दिन ग्राह्य होगी। **गोकुलाष्टमी** पर्व भी इसी दिन होगा। *गुग्गा नवमी* (25 अग.) को शिव मन्दिरों में शिवपूजन एवं विशेषत: नागपूजा करने का विधान है। **पुत्रव्रत**-भा. कृ सप्तमी को व्रत रखकर भगवान विष्णु का पूजन करें, दूसरे दिन **''ॐ कलीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा''** मंत्र की तिलों की 108 आहुतियां देकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं बिल्वफल एवं षड्रस सहित भोजन करें। इस प्रकार प्रत्येक कृष्ण सप्तमी का व्रत करके, वर्षान्त में गोदान संकल्पपूर्वक करें। ता. 30 अग. को शनिवारी अमावस्या देव एवं पितृ तर्पण करके मन्त्रपूर्वक कुशोत्पाटन करना चाहिए। भाद्रपद मास में **पांच रविवार** होने से अगस्त के उत्तरार्ध एवं सिंत: के पूर्वार्द्ध में अनाज की कीमतों में तेजी, कहीं छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) होने के संकेत मिलते हैं।

वि. संवत् २०६५, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाके: १९३० — सन् 2008 ई. (31 अगस्त से 15 सितंबर तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं पश्चिम में मंग., बुध, शुक्र एक-दूसरे के काफी समीप होंगे तथा गुरु पूर्व में दृश्य होगा। शनि अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	भाद्र शक (तारीखें)	शाबा मु.	अगस्त	भाद्र प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	व्रत-पर्व	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३१.५०	१	रवि	४५	५३	पूफा	४५	३३	सिद्ध	३९	३८	किं	१७	११	९	२८	31	१६	सिंह	भाद्र-शुक्ल पक्षारम्भः, मौन व्रत	४	१४	००	२८	६	६	१८	५०
३१.४५	२	चंद्र	४४	४०	उफा	४६	३	साध्य	३५	५३	बा	१५	५३	१०	२९	सितं	१७	क. ०/३०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध हस्त में ३/२०, सितम्बर प्रारम्भ	४	१४	५८	३४	६	७	१८	४९
३१.४०	३	मंग	४४	५५	हस्त	४८	३	शुभ	३३	१५	तै	१४	४८	११	रम	2	१८	कन्या	**हरितालिका तृतीया**, गौरी तीज, शुक्र हस्त में ४९/५८, राहु श्रव **A**	४	१५	५६	४१	६	८	१८	४८
३१.३७	४	बुध	४६	४८	चित्रा	५१	३५	शुक्ल	३१	५५	व	१५	५२	१२	२	3	१९	तु.१९/३८	भ.१५/५२ से ४६/४८ तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, कलंक चतुर्थी **B**	४	१६	५४	५१	६	९	१८	४७
३१.३०	५	गुरु	५०	१३	स्वा	५६	३८	ब्रह्म	३१	४५	बव	१८	३१	१३	३	4	२०	तुला	**ऋषि पंचमी व्रत**, अगस्त्य-उदय, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)	४	१७	५३	००	६	९	१८	४५
३१.२८	६	शुक्र	५४	५३	विशा	६०	०	ऐंद्र	३२	४०	कौ	२२	३३	१४	४	5	२१	वृ.४६/१०	**सूर्य षष्ठी व्रत**, ललिता षष्ठी व्रत,	४	१८	५१	१३	६	१०	१८	४४
३१.२३	७	शनि	६०	०	विशा	२	४८	वैधृ	३४	२०	गर	२७	४१	१५	५	6	२२	वृश्चिक	**मुक्ताभरण**-सन्तान सप्तमी व्रत,	४	१९	४९	२७	६	११	१८	४३
३१.१८	७	रवि	०	२८	अनु	९	५३	विष्क	३६	३५	व	०	२८	१६	६	7	२३	वृश्चिक	भ. ०/२८ से ३३/३० तक, **श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, श्रीराधाष्टमी**	४	२०	४७	३९	६	११	१८	४२
३१.१५	८	चंद्र	६	२८	ज्ये	१७	१५	प्रीति	३८	५०	बव	६	२८	१७	७	8	२४	ध.१७/१५	दधीची जयन्ती, **गुरु मार्गी ८/५०,**	४	२१	४५	५५	६	१२	१८	४१
३१.१०	९	मंग	१२	२३	मूल	२४	२३	आयु	४०	४५	कौ	१२	२३	१८	८	9	२५	धनु	**श्रीचन्द्र नवमी** (उदासीन सम्प्रदाय), श्रीभागवत सप्ताह प्रारम्भ	४	२२	४४	११	६	१२	१८	४०
३१.०७	१०	बुध	१७	३०	पूषा	३०	४३	सौभा	४१	५८	गर	१७	३०	१९	९	10	२६	म. ४७/८	भ. ४९/३० से प्रारम्भ,	४	२३	४२	३२	६	१३	१८	३८
३१.००	११	गुरु	२१	२८	उषा	३५	५०	शोभ	४२	८	वि	२१	२८	२०	१०	11	२७	मकर	भ. २१/२८ तक, **पदमा एकादशी व्रत** सर्वेषाम्	४	२४	४०	५१	६	१३	१८	३७
३०.५५	१२	शुक्र	२३	५३	श्रव	३९	२५	अति	४१	३	बा	२३	५३	२१	११	12	२८	मकर	प्रदोष व्रत, **वामन जयन्ती,** श्रवण द्वादशी, स. सि. योगः	४	२५	३९	११	६	१३	१८	३५
३०.५०	१३	शनि	२४	३५	धनि	४१	२०	सुक	३८	३८	तै	२४	३५	२२	१२	13	२९	कुं.१०/३३	**पंचक प्रारम्भ १०/३३,** सूर्य उ.फा. में २/३०, बुध चित्रा में ३/३८ **C**	४	२६	३७	३५	६	१४	१८	३४
३०.४५	१४	रवि	२३	३८	शत	४१	३८	धृति	३४	५५	व	२३	३८	२३	१३	14	३०	कुम्भ	भ. २३/३८ से ५२/२५ तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, **मेला सोढल D**	४	२७	३६	०३	६	१५	१८	३३
३०.४३	१५	चंद्र	२१	१३	पूभा	४०	३३	शूल	३०	३	बव	२१	१३	२४	१४	15	३१	मी.२५/५५	**भाद्रपद पूर्णिमा,** प्रौष्ठपदी, महालय श्राद्धारम्भ, मंगल चित्रा **E**	४	२८	३४	२९	६	१५	१८	३२

A (४), केतु आश्ले. (२) में ५७/३०, रमज़ान (मुस्लि) मास प्रारम्भ, सामवेदि उपाकर्म **B** (पत्थर ४), चन्द्रदर्शन निषेध [(चन्द्रास्त रात्रि 20/34 (जालंधर)] **C** शुक्र चित्रा में ४२/५३ **D** (जालन्धर), कदली व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत **E** में ८/३०, अथर्ववेदि उपाकर्म, पूर्णिमा का श्राद्ध दुपै. 1/37 से प्रा., प्रतिपदा का श्राद्ध दुपै. 2/44 उपरांत (देखें पृष्ठ 76)

चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	५	८	५	४	९	३
२१	२६	१८	१८	१८	१६	१८	२३	२३
४४	१४	३७	१९	३३	१८	२५	४	४
१४	४४	५४	११	७	३	५१	४	४
58 16	713 7	39 10	64 12	0 3	73 29	7 33	3 11	3 11
पूफा 3	ज्ये 3	हस्त 3	हस्त 3	पूषा 2	हस्त 2	पूफा 2	श्रव 4	आश्ले 2
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

- ५: सू. श.
- ४: के.
- ३
- २
- १
- १२
- ११
- १०: रा.
- ९: गु.
- ८: चं.
- ७
- ६: शु. बु. मं.

चंद्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	५	८	५	४	९	३
२८	२३	२३	२४	१८	२४	१९	२२	२२
३२	४२	१३	५४	३७	५२	१८	४१	४१
३९	७	१०	०	३३	७	३३	४८	४८
58 28	820 5	39 31	44 14	1 24	73 23	7 29	3 11	3 11
उफा 1	पूभा 2	हस्त 4	चित्रा 1	पूषा 2	चित्रा 1	पूफा 2	श्रव 4	आश्ले 2
०	०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

- ५: सू. श.
- ४: के.
- ३
- २
- १
- १२
- ११: चं.
- १०: रा.
- ९: गु.
- ८
- ७
- ६: शु. बु. मं.

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की तृतीया को **सौभाग्यवती** स्त्रियों को अखण्ड सुहाग की कामना से **हरितालिका तीज** (2 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक करना चाहिए। श्रीगणेश चतुर्थी 3 सितं. **(पत्थर चौथ)** का व्रत रखकर श्रीगणेश जी को मीठे पूओं व लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए इस दिन सायं को **चन्द्रदर्शन** करना निषेध माना जाता है। **अनन्त चतुर्दशी** 14 सितं. को विधिवत् **भगवान् विष्णु** की पूजा करने का विधान है। इसी दिन **जालन्धर में मेला बाबा सोढल का** भव्य आयोजन होता है। 15 सितं. को भाद्र, पूर्णिमा है। पूर्णिमा तिथि का श्राद्ध इसी दिन होगा। **मुक्ताभरण** (सन्तान सप्तमी 6 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक रखने से मनोवांछित सन्तान की प्राप्ति होती है। **महालक्ष्मी (7 सित. का व्रत)** चन्द्रोदय अष्टमी से प्रारंभ करके आश्विन कृ. अष्टमी तक करने की प्रक्रिया है। धन-धान्य पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। **पदमा एकादशी** (11 सितं.) का व्रत विधिपूर्वक करने से साधक की सभी प्रकार के अभीष्टों की पूर्ति होती है। वामन जयन्ती (12 सितं.) को भगवान्-विष्णु की वामन अवतार के रूप में प्रतिष्ठा एवं पूजा की जाती है। इसी अवतार में भगवान ने असुरराज बली का उद्धार किया था। ता. 4/5 सितंबर को सूर्य व शनि के मध्य सिंह राशि में अंश कलात्मक युति होने से केन्द्रीय नेतृत्व के लिए किसी कठिन चुनौती का सामना होगा। परन्तु उन पर **गुरू की दृष्टि** पड़ने से कठिन समस्या को सफलतापूर्वक सुलझा पाएंगे। व्यापारिक क्षेत्र में गेहूं,चावल, मैदा, उड़द, मूंग, चना, घी, बादाम, गुड़, घी शक्कर व चांदी में तेजी का रूझान बनेगा। **भाद्रपद** में पांच रविवार होने से प्रजा में क्लिष्ट रोग-उत्पत्ति, उपद्रव, तनाव, जातीय एवं हिंसक घटनाएं अधिक होंगी। प्रमुख नेता के लिए कठिन समय होगा।

आकाश लक्षण—भारत में उत्तर-पश्चिम भागों (हि. प्र. जम्मू कश्मीर पंजाब आदि) में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक: १९३०

सन् 2008 ई. (ता. 16 सितम्बर से 29 सितम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतु

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन– सायं बुध पश्चिम कपाल में तथा उनसे ऊपर मंग. एवं शुक्र होंगे। इसी समय गुरु याम्योत्तरवृत्त में होगा। 21 सितं. से शनि पूर्व में उदय होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें: भाद्र.	तारीखें: राष्ट्रीय मा.	तारीखें: सितंबर	तारीखें: आश्वि. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल
३०.३८	१	मंग	१७	२५	उभा	३८	१३	गंड	२४	८	कौ	१७	२५	२५	१५	16	आ	मीन
३०.३३	२	बुध	१२	४०	रेव	३५	३	वृद्धि	१७	२८	गर	१२	४०	२६	१६	17	२	मे. ३५/३
३०.२८	३	गुरु	७	८	अश्वि	३१	१०	ध्रुव	१०	१०	वि	७	८	२७	१७	18	३	मेष
३०.२५	४	शुक्र	१	१५	भर	२७	५	व्या. हर्ष	२ ५४	३५ ५०	बा	१	१५	२८	१८	19	४	वृ. ४१/३
अवम	५	शुक्र	५५	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३०.१८	६	शनि	४९	८	कृति	२२	५५	वज्र	४७	१०	गर	२२	९	२९	१९	20	५	वृष
३०.१३	७	रवि	४३	२५	रोहि	१८	५५	सिद्धि	३९	४०	वि	१६	१७	३०	२०	21	६	मि. ४७/३
३०.०५	८	चंद्र	३८	३	मृग	१५	१५	व्य.	३२	३०	बा	१०	४४	३१	२१	22	७	मिथुन
३०.००	९	मंग	३३	१०	आर्द्रा	१२	०	वरी	२५	४३	तै	५	३७	आ	२२	23	८	क.५४/५८
२९.५५	१०	बुध	२८	५०	पुर्न	९	२०	परि	१९	२०	व	१	०	२	२३	24	९	कर्क
२९.५३	११	गुरु	२५	१३	पुष्य	७	१५	शिव	१३	३३	बा	२५	१३	३	२४	25	१०	कर्क
२९.५०	१२	शुक्र	२४	१३	श्ले.	५	५३	सिद्ध	८	१५	तै	२४	१३	४	२५	26	११	सिं. ५/५३
२९.४५	१३	शनि	१९	५८	मघा	५	१०	साध्य शुभ	३ ५९	३० ३०	व	१९	५८	५	२६	27	१२	सिंह
२९.४३	१४	रवि	१८	४०	पूफा	५	१८	शुक्ल	५६	१३	श	१८	४०	६	२७	28	१३	क.२०/३०
२९.३५	३०	चंद्र	१८	१८	उफा	६	२३	ब्रह्म	५३	४५	ना	१८	१८	७	२८	29	१४	कन्या

तिथि	विवरण	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
१	सूर्य कन्या में २७/४५, **आश्विन संक्रान्ति**, मु. ४५, पुण्यकाल संक्रां. **A**	४	२९	३२	५९	६	१६	१८	३१
२	भ. ३९/५५ से, पंचक समाप्त ३५/०३, तृतीया का श्राद्ध	५	००	३१	२८	६	१६	१८	२९
३	भ. ७/०८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय 20/08 (जालं.), **B**	५	०१	३०	०३	६	१७	१८	२८
४	**शुक्र तुला में ९/५५,** पंचमी का श्राद्ध, **भरणी श्राद्ध**	५	०२	२८	३६	६	१७	१८	२७
५	पंचमी तिथि क्षय °° °° °°	०	०	०	०	०	०	०	०
६	भ. ४९/०८ से, **षष्ठी का श्राद्ध,** शनि पू.फा. (३) में ३१/२०	५	०३	२७	१४	६	१८	१८	२५
७	भ. १६/१७ तक, **सप्तमी का श्राद्ध,** शनि पूर्व से उदय ४६/१५	५	०४	२५	५४	६	१८	१८	२३
८	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,** जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी का श्राद्ध **C**	५	०५	२४	३७	६	१९	१८	२१
९	मातृ नवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, शक आश्विन प्रारम्भ	५	०६	२३	२१	६	२०	१८	२०
१०	भ. १/०० से २८/५० तक, **दशमी का श्राद्ध, बुध वक्री १५/४५, D**	५	०७	२२	०८	६	२१	१८	१९
११	**इन्दिरा एकादशी व्रत, मंगल तुला में ११/३८,** एकादशी का श्राद्ध	५	०८	२०	५५	६	२१	१८	१८
१२	**प्रदोष व्रत,** सूर्य हस्त में ४१/०५, सन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, **E**	५	०९	१९	४४	६	२१	१८	१७
१३	भ. १९/५८ से ४९/२० तक, श्राद्ध त्रयोदशी, गजच्छाया योग प्रातः **F**	५	१०	१८	३८	६	२२	१८	१६
१४	**सर्वपितृ श्राद्ध** 13/50 घं.मिं. उपरान्त (देखें पृष्ठ 76)	५	११	१७	३२	६	२२	१८	१५
३०	**सोमवती अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध** (13/42 तक, आवश्यके) मेला**G**	५	१२	१६	३०	६	२३	१८	१३

A प्रातः 10/58 बाद, द्वितीया का श्राद्ध दुपै. 13/37 के बाद (देखें पृष्ठ 76) **B** चतुर्थी का श्राद्ध, **C** सूर्य सायन तुला में ३७/२०, दक्षिण गोल प्रारम्भ, स.सि.यो. **D** शुक्र स्वाती में ३७/१३ **E** गजच्छाया योग 22/47 घं.मिं. से प्रारम्भ, गण्डमूल **F** 8/26, तक, शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृत का श्राद्ध, मास शिवरात्रि व्रत, **G** फाल्गु. व कपालमोचन (कुरुक्षेत्र), मातामह (नाना) का श्राद्ध, गजच्छाया योग 8/56 बाद

चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	५	५	८	६	४	९	३
५	२	२७	२८	१८	३	२०	२२	२२
२२	३५	५०	३४	५१	२५	१०	१९	१९
३५	२६	५७	२८	१७	२६	४१	३३	३३
58/43	846/49	39/54	11/21	2/43	73/17	7/22	3/11	3/11
उफा ३	मृग ३	चित्रा २	चित्रा २	पूषा २	चित्रा ४	पूफा ३	श्रव ४	श्ले. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

६ सू. मं. बु. | ७ शु. | ५ श. | ८ | ४ के. | ९ गु. | ३ चं. | १० रा. | १२ | २ | ११ | १

चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 सितम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	६	५	८	६	४	९	३
१२	८	२	२७	१९	११	२१	२१	२१
१४	८	३१	३२	१४	५८	१	५७	५७
२०	२७	२५	५९	५	६	५२	१७	१७
58/58	773/51	40/17	37/46	3/59	73/11	7/13	3/11	3/11
हस्त १	उफा ४	चित्रा ३	चित्रा २	पूषा २	स्वा. २	पूफा ३	श्रव. ४	श्ले. २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

६ सू. चं. बु. | ७ शु. मं. | ५ श. | ८ | ४ के. | ९ गु. | ३ | १० रा. | १२ | २ | ११ | १

आश्विन कृष्ण पक्षफल–

आश्विन कृष्ण पक्ष में अपने पितरों के निमित्त किए जाने वाले प्रायः सभी श्राद्ध कर्म, पार्वण श्राद्ध कहलाते हैं। श्राद्धों में अपने दिवंगत पूर्वजों की मृत्यु की तिथ्यानुसार तिल, जौं, चावल, कुशा, गंगाजल सहित तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन, दानादि व गोग्रास देने से पितर संतृप्त रहते हैं तथा श्राद्धकर्त्ता को आयु, सन्तान, धन, ज्ञान, स्वर्ग-मोक्षादि सुखों की प्राप्ति होती है–''**आयुः प्रजां धनं विद्यां. स्वर्गं मोक्षं सुखानि च प्रयच्छन्ति नृणां पितृ पूजनात्॥**'' जो कोई व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्ध नहीं करता, वह पाप का भागी होकर दुःखों से पीड़ित रहता है। दिवंगत की निधन तिथि का ज्ञान न होने पर अमावस को श्राद्धादि कर्म करने चाहिएं। इसी पक्ष की अष्टमी तिथि को जीवित्पुत्रिका (**श्री महालक्ष्मी**) व्रत सौभाग्यवती स्त्रियां पुत्र सुख की कामना से करती हैं। ता. 27 सितं. को प्रातः 8-26 तक गजच्छाया योग होने से इस काल में स्नान, अमावस्या काल में दान एवं पितरि तर्पण करने से महान् पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। ता. 28 सितं-रविवार को अमावस्या काल में दुपैहर 1 बजकर 50 से दुपै. 3.52 मिनट तक **अपराह्नकाल** व्याप्त होने से पार्वण एवं **सर्वपितृ श्राद्ध** के लिए यह काल विशेष रूप से ग्राह्य होगा। ता. 29 **सितं. सोमवार को दुपैहर** 1 बजकर 42 मिंट तक **अमावस्या** होने से **एकोदिदष्ट श्राद्ध** के लिए 11 बजकर 06 मिंट से दुपै. 1/29 तक **मध्याह्नकाल** विशेष रूप से ग्राह्य रहेगा। दुपैहर 1/26 से 1/42 तक अपराह्न काल मात्र 16 मिनट के लिए अमावस में उपलब्ध होगा। यद्यपि **सोमवती अमावस्या** काल में स्नान, दान, जप, ब्राह्मण भोजन एवं अन्नदान, देवपूजन एवं पितृतर्पण तीर्थस्थान आदि कृत्यों के लिए विशेष उत्तम माना जाता है। इस दिन कुरुक्षेत्र में मेला फाल्गु एवं **कपालमोचन** भी आयोजित किया जाता है। प्रतिपदा, मंगलवार को आश्विन संक्रान्ति होने से राजनेताओं में परस्पर विरोध व टकराव पैदा हो, किसी प्रमुख लीडर के अपदस्थ या आकस्मिक निधन के संकेत हैं। **भौमस्यवारे यदि संक्रमश्च करोति–पृथ्व्यामसुखं महर्घता।**

आकाश लक्षण–पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर पश्चिमी भागों में खण्ड वर्षा होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६५, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाक: १९३०

सन् 2008 ई. (ता. 15 अक्तूबर से 28 अक्तूबर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं शुक्र पश्चिम क्षितिज से ऊपर और गुरु पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः बुध पूर्व क्षितिजासन्न और उससे ऊपर शनि दिखाई देग। मंगल अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	आश्विन रा.	शव्वाल मु.	अक्तूबर	आश्विन प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८.१८	१	बुध	४०	३०	अश्वि	५१	८	हर्ष	२९	४३	बा	१४	०	२३	१४	15	३०	मेष	बुध मार्गी ४७/४०	५	२८	४	०६	६	३४	१७	५३
२८.१३	२	गुरु	३२	५५	भर	४५	२३	वज्र	२०	४०	तै	६	४३	२४	१५	16	का.	वृ.५८/५३	भ. ५९/०५ से, सूर्य तुला में ५६/५५, **कार्तिक संक्रान्ति**, मु. ३०, **(A)**	५	२९	३	३५	६	३५	१७	५२
२८.१०	३	शुक्र	२५	१३	कृति	३९	३५	सिद्धि	११	२८	वि	२५	१३	२५	१६	17	२	वृष	भ. २५/१३ तक, **करक चतुर्थी** (व्रत करवा चौथ), चं.उ. रात्रि **(B)**	६	०	३	०५	६	३५	१७	५१
२८.०५	४	शनि	१७	३८	रोहि	३४	३	व्य/वरी	२/५३	१८/३०	बा	१७	३८	२६	१७	18	३	वृष	सर्वार्थ सिद्ध योग:	६	१	२	४०	६	३६	१७	५०
२८.००	५	रवि	१०	३५	मृग	२९	५	परि	४५	१८	तै	१०	३५	२७	१८	19	४	मि. १/२८	स्कन्द षष्ठी, शनि पू.फा. (४) में २/५५,	६	२	२	१७	६	३७	१७	४९
२७.५८	६	चंद्र	४	२५	आर्द्रा	२५	५	शिव	३७	५०	व	४	२५	२८	१९	20	५	मिथुन	भ. ४/२५ से ३१/५० तक,	६	३	१	५३	६	३७	१७	४८
००.००	७	चंद्र	५९	१३	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२७.५३	८	मंग	५५	३	पुर्न	२२	३	सिद्ध	३१	१३	बा	२७	८	२९	२०	21	६	क. ७/४०	**अहोई अष्टमी व्रत**, राधाष्टमी	६	४	१	३५	६	३८	१७	४७
२७.४८	९	बुध	५२	०	पुष्य	२०	५	साध्य	२५	२८	तै	२३	३२	३०	२१	22	७	कर्क	गण्डमूल 14/41 घं. मिं. बाद,	६	५	१	१९	६	३९	१७	४६
२७.४३	१०	गुरु	५०	०	श्ले.	१९	१३	शुभ	२०	३५	व	२१	०	का	२२	23	८	सिं.१९/१३	भ. २१/०० से ५०/०० तक, सूर्य स्वाती में ३९/०५, सूर्य सायन **C**	६	६	१	०६	६	४०	१७	४५
२७.४०	११	शुक्र	४९	८	मघा	१९	२५	शुक्ल	१६	३५	बव	१९	३४	२	२३	24	९	सिंह	**रमा एकादशी व्रत**, मंगल विशा. में ३३/५०, कौमुदि महोत्सव प्रा.	६	७	०	५१	६	४०	१७	४४
२७.३५	१२	शनि	४९	१०	पूफा	२०	३५	ब्रह्म	१३	२०	कौ	१९	९	३	२४	25	१०	क. ३६/०	गोवत्स द्वादशी	६	८	०	४१	६	४१	१७	४३
२७.३०	१३	रवि	५०	१०	उफा	२२	३८	ऐंद्र	१०	५०	गर	१९	४०	४	२५	26	११	कन्या	भ. ५०/१० से, प्रदोष व्रत, **धन त्रयोदशी**, धनवन्तरी जयन्ती, यम **(D)**	६	९	०	३४	६	४२	१७	४२
२७.२५	१४	चंद्र	५२	५	हस्त	२५	३८	वैधृ	९	३	वि	२१	८	५	२६	27	१२	तु.५७/३०	भ. २१/०८ तक, नरक चतुर्दशी, **श्रीहनुमान जयन्ती**, बुध चित्रा **E**	६	१०	०	२९	६	४३	१७	४१
२७.२३	३०	मंग	५५	३	चित्रा	२९	३५	विष्क	८	०	च	२३	३४	६	२७	28	१३	तुला	**भौमवासरी कार्तिक अमावस, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन F**	६	११	०	२३	६	४३	१७	४०

(A) पुण्यकाल संक्रां. अगले दिन मध्याह्न तक, शुक्र अनु. में ३०/४८ **(B)** 19/36 (जालन्धर) (देखें पृष्ठ 77) **C** वृश्चिक में 6/39 घं.मिं., हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, गंडमूल, शक कार्तिक प्रारम्भ **(D)** तर्पण, दीपदान, स. सि. यो. **E** में २२/२०, शुक्र ज्येष्ठा में ३१/०३, यम तर्पण, मास शिवरात्रि व्रत **F** श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), काली पूजा, कुबेर पूजा (देखें पृष्ठ 77, 78)

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	२	६	५	८	७	४	९	३
३	२७	१७	१५	२१	८	२३	२०	२०
५८	३३	२९	५१	२०	४३	३२	४७	४७
४७	१	५७	३९	३७	६	१३	२०	२०
59 40	832 51	41 28	53 53	7 33	72 41	6 17	3 11	3 11
चित्रा ४	पुर्न ३	स्वा. ४	हस्त २	पूषा ३	अनु २	पूफा ४	श्रव ४	श्ले. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

८ शु. | ७ सू. मं. | ६ बु. | ९ गु. | ५ श. | १० रा. | ४ के. | ११ | १ | ३ चं. | १२ | २

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	५	८	७	४	९	३
१०	२९	२२	२४	२२	१७	२४	२०	२०
५७	५३	२१	८	१६	११	१५	२५	२५
२१	३३	२४	४६	२९	२०	२१	५	५
59 56	745 36	41 52	87 20	8 33	72 30	5 56	3 11	3 11
स्वा २	चित्रा २	विशा १	चित्रा १	पूषा ३	ज्ये. १	पूफा ४	श्रव ४	श्ले. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

८ शु. | ७ सू. मं. | ६ बु. चं. | ९ गु. | ५ श. | १० रा. | ४ के. | ११ | १ | ३ | १२ | २

कार्तिक कृष्ण पक्षफल—

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी (17 अक्तू.) को **करवा चौथ** का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। सायं श्रीगणेश पूजन करके चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (21 अक्तू.) का व्रत, पूजन भी सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। **रमा एकादशी** (24 अक्तू.) का व्रत करने से धन-सम्पदा की वृद्धि एवं पापों का क्षय होता है। धन-त्र्योदशी (26 अक्तू.) तो नवीन बर्तन का क्रय करना तथा अनाज एवं औषधि का दान करना शुभ होता है। कार्तिक संक्रान्ति गुरूवार को 30 मुहूर्त्ति है। प्रवेशकाल लगभग ५७ घड़ी होने से संक्रान्ति को स्नान, दान, जपादि का पुण्यकाल आगामी दिन (17 अक्तू. शुक्रवार) को मध्याह्न तक रहेगा। कार्तिक संक्रान्ति के समय मेष का चन्द्रमा होने से गेहूँ, धान्य, चावल, मैदा आदि सर्व प्रकार के अनाज, दालें, घी, तिल, तैल, मूंगफली आदि स्निग्ध पदार्थ ऊनी वस्त्र, खल-बिनौले आदि का संग्रह करके दूसरे महीने में बेचने से अच्छे लाभ की सम्भावना होगी। **कार्तिक अमावस्या** मंगलवारी होने से रूई, कपास, चांदी व अलसी में घटाबढ़ी होगी, परन्तु तिल, तैल, घी, दूध, सोना, किशमिश, मेवाजात एवं सर्व प्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। कहीं छत्रभंग, उपद्रव, राजनेताओं में विग्रह, उत्पात का भय हो। सामान्यत: **मंगलवार की दीवाली** शुभ नहीं मानी जाती, सामान्य एवं मध्यम स्तरीय व्यापारियों के लिए परेशानीकारक होती है। जबकि उच्चस्तरीय कृषकों के लिए लाभप्रदायक होगी यथा—**"मंगलवारी पड़े दिवारी, हँसे किसान रोवे व्योपारी॥"** 28 अक्तू. मंगलवार को **श्रीमहालक्ष्मी** का पूजन व **दीपमाला** का शुभ पर्व है। इस रात्रि को किए गए जप, तप, मन्त्र, अनुष्ठानादि करने का विशेष महत्त्व होता है। यद्यपि मंगलवारी अमावस यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र आदि साधनों के लिए विशेष प्रशस्त मानी जाती है। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में पंजाब, हिमाचल, कश्मीर, असम, म. प्र., हरियाणा, उ. प्र. के उत्तरी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं।

सन् 2008 ई. (ता. 29 अक्तूबर से 13 नवम्बर तक) भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०६५, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाक: १९३० | सन् 2008 ई. (ता. 29 अक्तूबर से 13 नवम्बर तक)

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	कार्ति. प्र.	शव्वा मु.	अक्टूबर	कार्ति. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—सायं शुक्र पश्चिम कपाल में, उससे ऊपर गुरु दृश्य होगा। 3 नवं. से बुध पूर्व में अस्त होगा। प्रातः शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पूर्व की ओर दिखाई देगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२७.१८	१	बुध	५८	५८	स्वा	३४	२५	प्रीति	७	४३	किं	२७	१	७	२८	29	१४	तुला	**अन्नकूट-गोवर्धन** पूजा, बली पूजा, विश्वकर्मा पूजा (पंजाब)	६	१२	०	२२	६	४४	१७	३९
२७.१३	२	गुरु	६०	००	विशा	४०	१५	आयु	८	८	बा	३१	२३	८	२९	30	१५	वृ.२३/४०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, **भ्रातृ दूज**, यम द्वितीया, श्रीविश्वकर्मा जयंती **A**	६	१३	०	२२	६	४५	१७	३८
२७.०८	२	शुक्र	३	४८	अनु	४६	५५	सौभा	९	१८	कौ	३	४८	९	जि	31	१६	वृश्चिक	**बुध तुला में ५०/००,** जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	६	१४	०	२५	६	४६	१७	३७
२७.०३	३	शनि	९	३२	ज्ये	५४	१८	शोभ	११	८	गर	९	३२	१०	२	नवं	१७	ध.५४/१८	भ. ४२/४५ से, दूर्वा गणपति व्रत, नवंबर प्रारम्भ, गण्डमूल	६	१५	०	२९	६	४७	१७	३६
२७.००	४	रवि	१६	०	मूल	६०	०	अति	१३	२५	वि	१६	०	११	३	2	१८	धनु	भ. १६/०० तक, गण्डमूल, स. सि. योग:	६	१६	०	३३	६	४७	१७	३५
२६.५८	५	चंद्र	२२	४०	मूल	२	३	सुक	१५	५३	बा	२२	४०	१२	४	3	१९	धनु	ज्ञान पंचमी, जया पंचमी, बुध पूर्व में अस्त ५७/३५, नैपच्यून मार्गी	६	१७	०	४१	६	४८	१७	३५
२६.५३	६	मंग	२९	३	पूषा	९	४०	धृति	१८	१०	तै	२९	३	१३	५	4	२०	म.२६/३०	**सूर्य षष्ठी व्रत,** गुरु पू.षा.(४) में ३/०८, राहु श्रव (३) केतु आश्ले **B**	६	१८	०	५०	६	४९	१७	३४
२६.४८	७	बुध	३४	३३	उषा	१६	४०	शूल	१९	५५	गर	१	४८	१४	६	5	२१	मकर	भ. ३४/३३ से, सूर्य विशाखा में ५८/५०, बुध स्वा. में ०/५०	६	१९	१	०१	६	५०	१७	३३
२६.४५	८	गुरु	३८	४०	श्रव	२२	२८	गंड	२०	४०	वि	६	३७	१५	७	6	२२	कुं.५४/४५	भ. ६/३७ तक, **पंचक प्रारम्भ ५४/४५,** गोपाष्टमी	६	२०	१	११	६	५०	१७	३२
२६.४३	९	शुक्र	४०	५०	धनि	२६	३०	वृद्धि	२०	५	बा	९	४५	१६	८	7	२३	कुम्भ	**मंगल वृश्चिक में ४९/४५, शुक्र मूला १, धनु में ३४/२०, C**	६	२१	१	२५	६	५१	१७	३२
२६.३८	१०	शनि	४०	५३	शत	२८	३०	ध्रुव	१७	५०	तै	१०	५२	१७	९	8	२४	कुम्भ		६	२२	१	४१	६	५२	१७	३१
२६.३५	११	रवि	३८	४३	पूभा	२८	२३	व्या	१३	५५	व	९	४८	१८	१०	9	२५	मी.१३/३८	भ. ९/४८ से ३८/४३ तक, **देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत,** भीष्म **(D)**	६	२३	१	५५	६	५२	१७	३०
२६.३०	१२	चंद्र	३४	२५	उभा	२६	१०	हर्ष	८	१८	व	६	३४	१९	११	10	२६	मीन	**तुलसी विवाह**	६	२४	२	११	६	५३	१७	२९
२६.३०	१३	मंग	२८	१८	रेव	२२	३	वज्र सिद्धि	१ ५३	३ २८	कौ	१	२२	२०	१२	11	२७	मे. २२/३	**पंचक समाप्त २२/०३,** भौम प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी	६	२५	२	३१	६	५३	१७	२९
२६.२५	१४	बुध	२०	४५	अश्वि	१६	२८	व्य.	४२	५३	व	२०	४५	२१	१३	12	२८	मेष	भ. २०/४५ से ४६/०३ तक, मंगल अनु. में ३१/४३, श्रीसत्यनारायण **E**	६	२६	२	५३	६	५४	१७	२८
२६.२३	१५	गुरु	१२	१३	भर	९	५२	वरी	३२	३८	बव	१२	१३	२२	१४	13	२९	वृ. २३/५	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, भीष्मपंचक समाप्त (F)**	६	२७	३	१४	६	५५	१७	२८

A यमुना स्नान **B** (१) में ४९/५०, **C** अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत **(D)** पंचक प्रारम्भ, चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त **E** व्रत, त्रिपुरोत्सव, पुष्कर यात्रा प्रारम्भ **(F)** बुध विशाखा में १३/३५, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्कर, कार्तिक स्नान समाप्त, दीपदान

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	६	६	८	७	४	९	३
१९	१८	२८	८	२३	२८	२५	११	११
५७	४	४०	१०	३७	२	६	५६	५६
५१	१६	६	२४	५९	३३	२३	२८	२८
60 12	739 47	42 20	97 22	9 41	72 11	5 19	3 11	3 11
स्वा ४	श्रव ३	विशा ३	स्वा १	पूषा ४	ज्ये ४	पूफा ४	श्रव ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

भाव	ग्रह
८	शु.
७	सू. मं. बु.
६	
५	श.
४	के.
३	
२	
१	
१२	
११	
१०	चं. रा.
९	गु.

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 13 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	७	६	८	८	४	९	३
२६	२३	३	१९	२४	६	२५	११	११
५९	१८	३७	३२	४८	२६	४२	३४	३४
४४	४७	३६	२१	६	४२	७	१२	१२
60 22	906 38	43 3	97 0	10 28	71 49	4 48	3 11	3 11
विशा ३	भर ३	अनु १	स्वा ४	पूषा ४	मूल २	पूफा ४	श्रव ३	पुष्य १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

भाव	ग्रह
८	मं.
७	सू. बु.
६	
५	श.
४	के.
३	
२	
१	चं.
१२	
११	
१०	रा.
९	गु. शु.

कार्तिक शुक्ल पक्षफल—

प्रतिपदा (29 अक्तू.) अन्नकूट को श्रीकृष्ण भगवान् के निमित्त छप्पन योग, अर्थात् अनेक प्रकार के पकवान (मिष्ठान्न सहित) तैयार करके भोग लगाते हैं, इसी दिन गौ के गोबर से गोवर्धन बनाकर श्रीकृष्ण की पूजार्चना की जाती है। ता. 30 अक्तू. द्वितीया को भातृ दूज का पवित्र पर्व होगा। मध्याह्न व्यापिनी द्वितीया गुरूवार को होने के कारण इसी दिन यह पर्व मनाना शास्त्र सम्मत होगा। ता. 31 को द्वितीया तिथि प्रातः मात्र 8.17 बजे तक ही रहेगी। **भीष्म पंचक** ता. 9 नवं. से आरम्भ होकर 13 नवं. तक रहेंगे। कुछ विद्वानों के अनुसार भीष्मपंचकों में विवाह, मुण्डन, गृहप्रवेश आदि शुभ कृत्यों का निषेध है, जबकि प्राच्य सिद्धान्त शास्त्रों में शुभकार्यों के शास्त्र-वचन (निर्देश) के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट शास्त्र-वचन (निषेध) नहीं मिलता। कार्तिक मास में पाँच गुरूवार तथा 4 नवं. तक कालसर्प योग होने से देश के पश्चिमी प्रदेशों अथवा पश्चिमी देशों में कहीं उपद्रव, राजनीतिक टकराव अथवा युद्ध जैसे हालात बनेंगे। **यत्र मासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमी देशे खड्ग युद्धं च जायते॥** कहीं छत्रभंग की भी सम्भावना हो। ता. 7 नवम्बर को शुक्र धनु राशि में तथा मंगल बृश्चिक में आने से सब प्रकार के धान्य, अनाजादि महँगे होंगे। घी, दूध, तिल, तैल, मूंगफली, खल-बिनौले आदि स्निग्ध पदार्थ तेजभाव होंगे। राजनेताओं में परस्पर क्रोध, तनाव, उत्तेजना, विरोध एवं टकराव बढ़ेगा—**यदा बृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां विग्रह कोपमादिशेत्॥** पाँच बुधवार होने से रसयुक्त (रसवाली) फलादि वस्तुओं के उत्पादन में कमी हो। का. पूर्णिमा गुरुवार और भरणी नक्षत्र युक्त होने से पीले वर्ण वाली वस्तुओं के भावों में तेजी रहे।

वि. संवत् २०६५, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष					शाक: १९३०									तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	सन् 2008 ई. (ता. 14 नवम्बर से 27 नवम्बर तक) सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	कार्ति. प्र.	जिल्हा मु.	नवंबर	कार्ति. प्र.		ग्रह दर्शन—सायं गुरु, शुक्र एक-दूसरे कुछ आस-पास पश्चिमी कपाल में दिखाई देंगे। प्रातः शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा। मं., बु. अभी अस्त हैं।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२६.१८	१	शुक्र	३	८	कृति/रोहि	२/५५	४०/३०	परि	२२	५	कौ	३	८	२३	१५	14	३०	वृष	नेहरू जयन्ती (बाल दिवस), मृग छोड़ी स्नान प्रारम्भ	६	२८	३	४१	६	५६	१७	२७
००.००	२	शुक्र	५४	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२६.१३	३	शनि	४५	१५	मृग	४८	३८	शिव	११	३५	व	१९	३९	२४	१६	15	मा.	मि.२१/५८	भ. १९/३८ से ४५/१५ तक, **सूर्य वृश्चिक** में ५५/२८, **मार्गशीर्ष (A)**	६	२९	४	१०	६	५८	१७	२७
२६.०८	४	रवि	३७	२०	आर्द्रा	४२	३८	सिद्ध/साध्य	१/५२	३५/२३	बव	११	१८	२५	१७	16	२	मिथुन	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/31 (जालन्धर),	७	०	४	३८	६	५९	१७	२६
२६.०३	५	चंद्र	३०	३३	पुर्न	३७	४८	शुभ	४४	८	कौ	३	५७	२६	१८	17	३	क.२३/५३		७	१	५	०८	७	०	१७	२५
२६.००	६	मंग	२५	८	पुष्य	३४	२३	शुक्ल	३७	०	व	२५	८	२७	१९	18	४	कर्क	भ. २५/०८ से ५३/१३ तक, शुक्र पू.षा. में ४२/०८	७	२	५	४०	७	१	१७	२५
२५.५५	७	बुध	२१	१५	श्ले.	३२	२८	ब्रह्म	३१	१०	बव	२१	१५	२८	२०	19	५	सिं.३२/२८	सूर्य अनु. में १३/३८, **बुध वृश्चिक में २६/५०,** कालभैरवाष्टमी	७	३	६	१६	७	२	१७	२४
२५.५३	८	गुरु	१९	०	मघा	३२	५	ऐंद्र	२६	३३	कौ	१९	०	२९	२१	20	६	सिंह		७	४	६	५२	७	३	१७	२४
२५.५१	९	शुक्र	१८	१८	पूफा	३३	१५	वैधृ	२३	१०	गर	१८	१८	३०	२२	21	७	कं.४८/४८	भ. ४८/४० से, सूर्य सायन धनु में ५२/५८, बुध अनु. में ३२/२८	७	५	७	२६	७	३	१७	२४
२५.४८	१०	शनि	१८	५८	उफा	३५	४३	विष्क	२०	५०	वि	१८	५८	मा	२३	22	८	कन्या	भ. १८/५८ तक, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	७	६	८	०५	७	४	१७	२३
२५.४५	११	रवि	२०	५५	हस्त	३९	२०	प्रीति	१९	२८	बा	२०	५५	२	२४	23	९	कन्या	**उत्पन्ना एकादशी व्रत,** गुरु उ.षा. (१) में १०/२३, **सत्या साईं (B)**	७	७	८	४६	७	५	१७	२३
२५.४३	१२	चंद्र	२३	५५	चित्रा	४३	५५	आयु	१८	५३	तै	२३	५५	३	२५	24	१०	तु.११/३०		७	८	९	२८	७	६	१७	२३
२५.४०	१३	मंग	२७	५३	स्वा	४९	२३	सौभा	१९	३	व	२७	५३	४	२६	25	११	तुला	भ. २७/५३ से, **भौम प्रदोष व्रत,** मास शिवरात्रि व्रत	७	९	१०	१२	७	७	१७	२३
२५.३८	१४	बुध	३२	४०	विशा	५५	३५	शोभ	१९	५०	वि	०	१७	५	२७	26	१२	वृ.३८/५८	भ. ०/१७ तक, शनि उ.फा. (१) में २७/३५, मेला पुरमण्डल, देविका**C**	७	१०	११	००	७	८	१७	२३
२५.३३	३०	गुरु	३८	१०	अनु	६०	०	अति	२१	८	च	५	२५	६	२८	27	१३	वृश्चिक	**अमावस** स्नानदान, तर्पणादि, मेला पुरमण्डल (जम्मू), स. सि. यो.**(D)**	७	११	११	४७	७	९	१७	२२

(A) संक्रान्ति, मु. १५, पुण्यकाल संक्रान्ति अगले दिन मध्याह्न तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत **(B)** बाबा जयन्ती, स. सि. यो. **C** स्नान, श्रीबालाजी जयन्ती **(D)** यूरेनस मार्गी ३६/२३

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	७	७	८	८	४	९	३
४	५	८	०	२६	१४	२६	१९	१९
२	२०	३७	४६	३	४८	१४	११	११
५८	२४	४५	५०	२९	१३	२	५६	५६
60/34	796/10	43/6	95/29	11/10	71/25	4/13	3/11	3/11
अनु १	मूला २	अनु २	विशा ४	पूषा ४	पूषा १	पूफा ४	श्रव ३	श्ले. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

९ शु. गु.; १० रा.; ८ सू. मं. बु.; ७; ६; ५ चं. श.; ११; १२; २; ४ के.; १; ३

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	७	८	८	४	९	३
११	३	१३	११	२७	२३	२६	१८	१८
७	२३	४०	५१	२३	६	४१	४९	४९
३६	५८	३६	२२	३६	४६	४५	४०	४०
60/46	718/1	43/29	94/20	11/48	70/55	3/35	3/11	3/11
अनु ३	अनु १	अनु ४	अनु ३	उषा १	पूषा ३	उफा १	श्रव ३	श्ले. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

९ शु. गु.; १० रा.; ८ सू. चं. मं. बु.; ७; ६; ५ श.; ११; १२; २; ४ के.; १; ३

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की अष्टमी (19 नवं.) को **शिव मन्दिर** में जाकर श्रीमहाकाल **भैरव** के रूप में **भगवान् शंकर** की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। **उत्पन्ना एका.** (23 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की प्राप्ति होती है, इसी दिन सत्य श्री साईं बाबा की जयन्ती सारे भारतवर्ष में श्रद्धालुओं द्वारा बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाई जाती है। त्रयोदशी से अमावस्या (25 से 27 नवं.) तक जम्मू के निकट **मेला पुरमण्डल** तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। ता. 15 नवं. को **मार्गशीर्ष** संक्रान्ति **शनिवार** को होने तथा ता. 18 से कालसर्प योग घटित होने से सब प्रकार के धान्य (चावल), अनाज आदि तेज भाव होंगे। लोगों में क्लिष्ट रोगों, शोक एवं कष्टों की अधिकता रहे। राजनेताओं में परस्पर टकराव, विग्रह एवं विरोध अधिक रहे। कहीं उपद्रव, जनांदोलन व हिंसा की घटनाएँ एवं युद्ध का भय हो—**सौरेश्चवारे रवि संक्रमश्चेत् दुर्भिक्षमायाति चा सर्वधान्यम्। पृथ्वी सरोगानृपतेः प्रजा सुभवेन्महायुद्धभयं तदानीम्॥''** मार्गशीर्ष संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ति शनिवार को होने से गेहूँ, चावल, चने, खल-बिनौले, मूंगफली, तिल, तैल, घृत, किशमिश, मेवाजात, ऊनी वस्त्र, रूई, सोना, चांदी व ताम्रादि धातुएं तेज भाव होंगी। **वृश्चिक संक्रान्ति**—मेष, मिथुन, कन्या, तुला, बृश्चिक, धनु व कुम्भ राशि वालों को व्यापार में लाभप्रद रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्ध भाग में पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल व उत्तरी भारत में बूंदाबांदी व खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**—मार्ग. एकादशी को रविवार होने से रूई, कपास, चावल, कनक का स्टाक किया जाए, तो आगे वैशाख में लाभ होगा।

सन् 2008 ई. (ता. 28 नवम्बर से 12 दिसम्बर तक) भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०६५, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाकः १९३०

सन् 2008 ई. (ता. 28 नवम्बर से 12 दिसम्बर तक)
सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु

भा. स्टैं. टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मार्ग. शुक्ल	जिल्हिज्जा मु.	नवम्बर	मार्ग. प्र.	चंद्रराशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—सायं गुरु, शुक्र पश्चिमी कपाल में तथा प्रातः शनि पूर्व कपाल में होगा। मं., बु. अभी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.३०	१	शुक्र	४४	१५	अनु	२	२३	सुक	२२	५५	किं	११	१३	७	२९	28	१४	वृश्चिक	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः, गण्डमूल 8/07 से प्रारम्भ	७	१२	१२	३६	७	१०	१७	२२
२५.२९	२	शनि	५०	५०	ज्ये	९	४८	धृति	२५	८	बा	१७	३३	८	३०	29	१५	ध. ९/४८	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, बुध ज्ये. में ५९/३८, शुक्र उ.षा. में ५६/२५,	७	१३	१३	२४	७	१०	१७	२२
२५.२८	३	रवि	५७	३३	मूल	१७	३०	शूल	२७	३०	तै	२४	१२	९	जि	30	१६	धनु	जिल्हेज (मुस्लि.) प्रारम्भ, गण्डमूल 14/11 (घं.मिं.) तक, स.सि.यो.	७	१४	१४	१४	७	११	१७	२२
२५.२५	४	चंद्र	६०	०	पूषा	२५	१३	गंड	२९	५०	व	३०	४९	१०	२	दिसं	१७	म.४२/१०	भ. ३०/५० से, मंगल ज्येष्ठा में २/५०, दिसम्बर प्रारम्भ	७	१५	१५	०६	७	१२	१७	२२
२५.२३	४	मंग	४	५	उषा	३२	४०	वृद्धि	३२	०	वि	४	५	११	३	2	१८	मकर	भ. ४/०५ तक, सूर्य ज्ये. में २३/४३, **शुक्र मकर में ४६/१८**	७	१६	१५	५८	७	१३	१७	२२
२५.२२	५	बुध	१०	५	श्रव	३९	२३	ध्रुव	३३	३३	बा	१०	५	१२	४	3	१९	मकर	श्रीराम विवाहोत्सव, नाग पूजा	७	१७	१६	५०	७	१४	१७	२२
२५.२०	६	गुरु	१४	५८	धनि	४४	४८	व्या	३४	५	तै	१४	५८	१३	५	4	२०	कुं.१२/१५	**पंचक प्रारम्भ १२/१५, स्कन्द षष्ठी,** चम्पा षष्ठी	७	१८	१७	४५	७	१४	१७	२२
२५.१८	७	शुक्र	१८	१५	शत	४८	३३	हर्ष	३३	२०	व	१८	१५	१४	६	5	२१	कुम्भ	भ. १८/१५ से ४८/५८ तक, मित्र सप्तमी	७	१९	१८	३८	७	१५	१७	२२
२५.१५	८	शनि	१९	३५	पूभा	५०	१५	वज्र	३१	५	बव	१९	३५	१५	७	6	२२	मीं. ३५/०	श्रीदुर्गाष्टमी	७	२०	१९	३४	७	१६	१७	२२
२५.१३	९	रवि	१८	४८	उभा	४९	५०	सिद्धि	२७	८	कौ	१८	४८	१६	८	7	२३	मीन	नन्दा नवमी, स. सि. योगः	७	२१	२०	३२	७	१७	१७	२२
२५.११	१०	चंद्र	१५	४८	रेव	४७	२३	व्य.	२१	२८	गर	१५	४८	१७	९	8	२४	मे.४७/२३	भ. ४३/१८ से, **बुध मूला १ धनु में ३०/२८, पंचक समाप्त ४७/२३**	७	२२	२१	२९	७	१८	१७	२२
२५.१०	११	मंग	१०	४५	अश्वि	४३	३	वरी	१४	१३	वि	१०	४५	१८	१०	9	२५	मेष	भ. १०/४५ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयन्ती, गुरु मकरA**	७	२३	२२	२८	७	१८	१७	२२
२५.०९	१२	बुध	३	५८	भर	३७	५	परि/शिव	५/५५	३३/४५	बा	३	५८	१९	११	10	२६	वृ.५०/२५	प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	७	२४	२३	२८	७	१९	१७	२२
००.००	१३	बुध	५५	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.०८	१४	गुरु	४६	३५	कृति	३०	५	सिद्ध	४५	८	गर	२१	१०	२०	१२	11	२७	वृष	भ. ४६/३५ से, शुक्र श्रवण में २०/१५, पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत	७	२५	२४	२८	७	२०	१७	२३
२५.०६	१५	शुक्र	३६	५५	रोहि	२२	२३	साध्य	३४	८	वि	११	४५	२१	१३	12	२८	मि.४८/२८	भ. ११/४५ तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा,** श्रीदत्तात्रेय जयन्ती, त्रिपुरभैरव **B**	७	२६	२५	२९	७	२१	१७	२३

A में ४१/००, स. सि. योगः **B** जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	७	८	९	४	९	३
२०	२१	२०	२५	२९	३	२७	१८	१८
१५	३०	१३	५७	१२	४२	१०	२१	२१
८	४४	४७	३८	४२	०	३७	३	३
60 55	779 43	43 55	93 51	12 40	70 5	2 43	3 11	3 11
ज्ये. २	पूभा १	ज्ये. २	ज्ये. ३	उषा १	उषा ३	उफा १	श्रव ३	श्ले. ०
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

९ गु. | ८ सू. मं. बु. | ७ | रा. १० शु. | ६ | ११ चं. | ५ श. | १२ | २ | ४ के. | १ | ३

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	७	८	९	९	४	९	३
२६	१६	२४	५	०	१०	२७	१८	१८
२०	२६	३८	२०	२८	४०	२५	१	१
४७	४३	७	५७	४०	४१	२२	५९	५९
60 59	919 12	44 14	93 56	12 53	69 20	2 6	3 11	3 11
ज्ये. ३	रोहि २	ज्ये. ३	मूल २	उषा २	श्रव १	उफा १	श्रव ३	श्ले. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

९ बु. | ८ सू. मं. | ७ | रा. १० गु. शु. | ६ | ११ | ५ श. | १२ | २ चं. | ४ के. | १ | ३

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की षष्ठी तिथि को स्वामी कार्तिक जी तारक को मारकर अभिषिक्त हुए थे। इसमें स्नान, दान और व्रत करने से पुण्य होता है। **मोक्षदा एकादशी व्रत**—दशमी को मध्याह्न में जौं और मूंग की रोटी-दालादि सादा एकभुक्त भोजन करके एकादशी को प्रातः स्नान, संकल्पादि करके उपवास रखें। प्रातः श्रीकृष्ण भगवान का पूजन करके द्वादशी को एकभुक्त भोजन करे। यह एकादशी मोह का क्षय करने वाली है। इसी कारण **इसका नाम मोक्षदा है।** इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को श्री गीता का उपदेश किया था। अतएव उस दिन गीता, श्री कृष्ण, व्यास आदि की पूजा करके गीता का पाठ, ध्यान व चिन्तन करना चाहिए तथा गीता-जयन्ती का उत्सव, व्याख्यान, प्रचार आदि करने चाहिएं। श्रीगीता का पाठ करने से मानसिक व कायिक पापों का क्षय होता है। मार्ग. पूर्णिमा (12 दिस.) को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार भगवान श्रीदत्तात्रेय की बाल रूप में पूजा की जाती है। **मार्गशीर्ष मास** में पाँच शुक्रवार पड़ने से आगामी महीनों में सुभिक्ष अर्थात् अच्छी फसल होने के संकेत हैं। प्रजा में सुख-साधनों की तथा जनसंख्या में विशेष वृद्धि होने के योग हैं। स्त्रियों की लोकप्रियता बढ़ेगी—**शुक्रस्य पञ्चवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥ प्रजावृद्धिस्तु भार्गवे॥** मार्ग-पूर्णिमा को शुक्रवार और रोहिणी नक्षत्र होने से प्रजा में भोग-विलास की प्रवृत्तियों में वृद्धि होगी।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों के पहाड़ी एवं उत्तरीय क्षेत्रों में शीत लहरें एवं खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, पौष कृष्ण पक्ष शाक: १९३० तारीखें

सन् 2008 ई. (ता. 13 दिसं. से 27 दिसम्बर तक) — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य दक्षिणायन, उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मा. क्र.	हिज. मु.	दिसम्बर	मा. प्र.	चंद्रराशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन– 19 दिसं. से बुध पश्चिम में उदय होगा, सायं गुरु पश्चिमी क्षितिज के पास और शुक्र पश्चिम कपाल में होगा। प्रातः श. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
२५.०४	१	शनि	२७	१८	मृग	१४	३५	शुभ	२३	५	बा	२	७	२२	१४	13	२९	मिथुन	**पौष कृष्ण पक्षारम्भ:**	७	२७	२६	२८	७	२१	१७	२३
२५.०३	२	रवि	१८	५	आर्द्रा	७	५	शुक्ल	१२	२३	गर	१८	५	२३	१५	14	३०	क. ४७/०	भ. ४३/५५ से,	७	२८	२७	३०	७	२२	१७	२३
२५.०३	३	चंद्र	९	४५	पुन पुष्य	० ५४	२५ ५८	ब्रह्म ऐंद्र	२ ५३	२३ २३	वि	९	४५	२४	१६	15	पौ.	कर्क	भ. ९/४५ तक, **सूर्य मूल १ धनु में ३१/००, पौष संक्रान्ति, (A)**	७	२९	२८	३४	७	२२	१७	२४
२५.०३	४	मंग	२	४०	श्ले.	५०	५८	वैधृ	४५	३३	बा	२	४०	२५	१७	16	२	सिं.५०/५८	गण्डमूल विचार, स. सि. योग:	८	००	२९	३५	७	२३	१७	२४
००.००	५	मंग	५७	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	पंचमी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.०२	६	बुध	५३	३०	मघा	४८	४३	विष्क	३९	१०	गर	२५	२२	२६	१८	17	३	सिंह	भ. ५३/३० से, बुध पू.षा. में १/००, गण्डमूल रात्रि 26/52 घं.मिं. तक	८	०१	३०	३९	७	२३	१७	२४
२५.०२	७	गुरु	५१	४०	पूफा	४८	१८	प्रीति	२९	१५	वि	२२	३५	२७	१९	18	४	सिंह	भ. २२/३५ तक,	८	०२	३१	४३	७	२४	१७	२५
२५.०२	८	शुक्र	५१	४५	उफा	४९	४५	आयु	३०	५०	बा	२१	४३	२८	२०	19	५	कं. ३/३०	**मंगल मूल १ धनु में १०/२०,** बुध पश्चिम में उदय ५/२०, **(B)**	८	०३	३२	५१	७	२४	१७	२६
२५.०१	९	शनि	५३	३०	हस्त	५२	५०	सौभा	२८	४५	तै	२२	३८	२९	२१	20	६	कन्या	**(B)** रूक्मणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	८	०४	३३	५८	७	२५	१७	२६
२५.००	१०	रवि	५६	४८	चित्रा	५७	२३	शोभ	२७	५३	व	२५	९	३०	२२	21	७	तु.२४/५५	भ. २५/०९ से ५६/४८ तक, सूर्य सायन मकर में २५/२५, सायन **(C)**	८	०५	३५	०४	७	२६	१७	२६
२५.००	११	चंद्र	६०	०	स्वा	६०	०	अति	२८	५	बव	२९	४	पौ	२३	22	८	तुला	शुक्र धनि. में ५९/३८, शक पौष प्रारम्भ	८	०६	३६	१४	७	२६	१७	२७
२५.०१	११	मंग	१	२०	स्वा	३	५	सुक	२९	५	बा	१	२०	२	२४	23	९	वृ.५२/५८	**सफला एकादशी व्रत** (स.)	८	०७	३७	२०	७	२७	१७	२७
२५.०२	१२	बुध	६	४८	विशा	९	४३	धृति	३०	४०	तै	६	४८	३	२५	24	१०	वृश्चिक	**प्रदोष व्रत,** गुरु उ.षा. (३) में ५२/५५, स. सि. यो. 11/20 बाद	८	०८	३८	२९	७	२७	१७	२८
२५.०२	१३	गुरु	१२	५५	अनु	१६	५३	शूल	३२	४०	व	१२	५५	४	२६	25	११	वृश्चिक	भ. १२/५५ से ४६/१० तक, बुध उ.षा. में ४०/२५, **क्रिसमिस दिवस,D**	८	०९	३९	३७	७	२७	१७	२८
२५.०३	१४	शुक्र	११	२५	ज्ये.	२४	२८	गंड	३४	५५	श	११	२५	५	२७	26	१२	ध.२४/२८	गण्डमूल विचार	८	१०	४०	४९	७	२७	१७	२९
२५.०३	३०	शनि	२६	३	मूल	३२	५	वृद्धि	३७	१०	ना	२६	३	६	२८	27	१३	धनु	**शनिवारी पौष अमावस** स्नान, दान, तर्पणादि, **बुध मकर में ५६/००**	८	११	४१	५९	७	२८	१७	२९

(A) मु. ३०, पुण्यकाल संक्रां. मध्याह्न बाद, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/34 (जालन्धर), स.सि.यो. **(C)** उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (जैन), **D** मास शिवरात्रि व्रत

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	४	७	८	९	९	४	९	३
३	२८	२९	१६	२	१८	२७	१७	१७
२७	११	४८	१७	०	४२	३७	३९	३९
५९	४०	४७	४६	५	५६	५०	४३	४३
61 5	778 54	44 35	93 23	13 16	68 17	1 22	3 11	3 11
मूल २	उफा ०	ज्ये. ४	पूषा ०	उषा २	श्रव ३	उफा ०	श्रव ३	श्ले. ०
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

रा. १० शु. गु.
९ सू. बु.
८ मं.
११
७
१२
६
१
३
५ चं. श.
२
४ के.

शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	८	९	९	४	९	३
११	६	५	२८	३	२७	२७	१७	१७
३७	२	४६	३१	४७	४४	४५	१४	१४
०	५४	४८	२	३९	९	३५	१७	१७
61 10	709 22	44 58	87 38	13 38	66 46	0 28	3 11	3 11
मूल ४	मूल २	मूल २	उषा १	उषा ३	धनि २	उफा १	श्रव ३	श्ले. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

रा. १० शु. गु.
९ सू. चं. मं. बु.
८
११
७
१२
६
१
३
५ श.
२
४ के.

पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूँ, धान्यादि, अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, मौसमी फल दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। पौष संक्रान्ति (15 दिसं.) सोमवार को 30 मुहूर्त्ति पर होगी। इस संक्रान्ति के स्नान, दान, जपादि का माहात्म्य मध्याह्न (दुपैहर) बाद से प्रारम्भ होगा। सोमवार की संक्रान्ति होने से मूंगा, मोती, धान्य की पैदावार अच्छी होगी। धन का प्रसार भी अधिक होगा तथा सुख एवं ऐश्वर्य के साधन बढ़ेंगे। **सफला एकादशी** (23 दिसं.) को सूर्योदय कालिक है। इस दिन भगवान् नारायण की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। विशेषकर नारियल, फल, सुपारी, नींबू, अनार, आँवला, लौंग एवं आम्र फलों से श्री हरि की पूजा करनी चाहिए। ता. 25 दिसम्बर (गुरूवार) को क्रिश्चियन का प्रसिद्ध पर्व **बड़ा दिन** (क्रिसमिस डे) सारे विश्व में बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। इस पक्ष की अष्टमी को मंगल धनु राशि में आने से द्रव्य, कन्दमूल, पशुचारा, चौपाय, लकड़ी, रूई, कपास, सूती वस्त्र, सोना, चांदी, पीतल, लौहधातु, कलपुर्जे, तैल, पैट्रोल, गैस आदि तेज होंगे। **धनु राशिगते भौमे मूल घी, द्रव्य तृणानि च। काष्ठं च घृतं कार्पासं महर्घं च चतुष्पदाम्॥** पौष मास में पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार होने से प्रजा में क्लिष्ट रोगों की बहुलता, उपद्रव, तनाव, युद्धभय व हिंसक घटनाएँ घटित हों। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में विशेष तेजी हो। कहीं छत्रभंग होने का भय हो। **पाँच शनीचर, पाँचरवि पांच मंगर जो होय। छत्र टूटि धरनी फटै, अन्ना मँहगा होय॥** ता. 27 को अमावस्या के दिन शनिवार होने से समाज में अधिकांश लोगों में आवश्यक वस्तुओं की कमी, शारीरिक व मानसिक कष्ट तथा पिता-पुत्रों एवं नज़दीकी नातेदारों में भी प्यार और व्यवहार की कमी होगी। **दुर्भिक्षं रौखं घोरं महादुखं महद्भयम्। पराङ्मुखाः पितुपुत्राः व्यसनं शनिवासरे॥ आकाश लक्षण**–उत्तरार्ध भाग में तेज शीतल हवाओं के साथ-साथ कहीं खण्ड वर्षा एवं ओलावृष्टि के योग हैं।

सन् 2008-09 ई. (ता. 28 दिसं. से 11 जन. (09) तक) भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०६५, पौष शुक्ल पक्ष | शाकः १९३० | सन् 2008-09 ई. (ता. 28 दिसं. से 11 जन. (09) तक) | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

ग्रह दर्शन—सायं बुध एवं गुरु पश्चिम में परस्पर काफी नजदीक तथा इनके ऊपर शुक्र दिखाई देगा। प्रातः शनि पश्चिम कपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	पौष शक	हिजरी मु.	दिसंबर	पौष प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.०३	१	रवि	३२	३३	पूषा	४४	३८	ध्रुव	३९	२०	बव	३२	३३	७	२९	28	१४	म.५६/२८	सूर्य पू.षा. में ३६/०८, **शुक्र कुम्भ में ५७/२०,**	८	१२	४३	१२	७	२९	१७	३०
२५.०५	२	चंद्र	३८	५०	उषा	४६	५३	व्या.	४१	२०	बा	५	४२	८	३०	29	१५	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,	८	१३	४४	२१	७	२९	१७	३१
२५.०५	३	मंग	४४	३०	श्रव	५३	३५	हर्ष	४२	५३	तै	११	४०	९	मु	30	१६	मकर	मोहर्रम (मुस्लिम), हिजरी सन् 1430 प्रारम्भ, गौरी पूजन	८	१४	४५	३२	७	२९	१७	३१
२५.०६	४	बुध	४९	१८	धनि	५९	२०	वज्र	४३	४३	व	१६	५४	१०	२	31	१७	कुं.२६/३३	भ. १६/५४ से ४९/१८ तक, **शनि वक्री** ४०/१८, **पंचक प्रारम्भ** २६/३३	८	१५	४६	४५	७	३०	१७	३२
२५.०८	५	गुरु	५२	५३	शत	६०	०	सिद्धि	४३	४३	बव	२१	६	११	३	जन	१८	कुम्भ	जनवरी, सन् 2009 ई. प्रारम्भ	८	१६	४७	५७	७	३०	१७	३३
२५.१०	६	शुक्र	५५	०	शत	६	२८	व्य.	४२	३८	कौ	२३	५७	१२	४	2	१९	मी.५१/२८	**गुरु अस्त 11 जन.**	८	१७	४९	१०	७	३०	१७	३४
२५.११	७	शनि	५५	२३	पूभा	७	५	वरी	४०	१५	गर	२५	१२	१३	५	3	२०	मीन	भ. ५५/२३ से प्रा., मार्तण्ड सप्तमी	८	१८	५०	२०	७	३०	१७	३४
२५.१३	८	रवि	५३	५३	उभा	८	३०	परि	३६	२५	वि	२४	३८	१४	६	4	२१	मीन	भ. २४/३८ तक, बुध श्रवण में ४८/४५, शुक्र शत में २/४०, **(A)**	८	१९	५१	३०	७	३०	१७	३५
२५.१५	९	चंद्र	५०	३०	रेव	८	८	शिव	३१	८	बा	२२	१२	१५	७	5	२२	मे. ८/८	**पंचक समाप्त** ८/०८, मंगल पू.षा. में ५७/१०, गंडमूलादि, **(B)**	८	२०	५२	३९	७	३०	१७	३६
२५.१७	१०	मंग	४५	२३	अश्वि	५	५५	सिद्ध	२४	२५	तै	१७	५७	१६	८	6	२३	मेष	गण्डमूल प्रात: 9/52 घं.मिं. तक, राहु श्रव (२) केतु पुष्य (४) में **C**	८	२१	५३	४८	७	३०	१७	३७
२५.१८	११	बुध	३८	३८	भर / कृति	२ / ५६	० / ४०	साध्य	१६	२३	व	१२	१	१७	९	7	२४	वृ.१५/४८	भ. १२/०१ से ३८/३८ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत,** स.सि.यो. 8/19 से,	८	२२	५४	५७	७	३१	१७	३८
२५.२०	१२	गुरु	३०	४५	रोहि	५०	१५	शुभ / शुक्ल	७ / ५७	१३ / १८	बव	४	४२	१८	१०	8	२५	वृष	गुरु उ.षा. (४) में २२/२८, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ ४१/३८	८	२३	५६	०५	७	३१	१७	३९
२५.२१	१३	शुक्र	२२	०	मृग	३८	८	ब्रह्म	४६	४५	तै	२२	०	१९	११	9	२६	मि.१६/४५	प्रदोष व्रत	८	२४	५७	१३	७	३१	१७	३९
२५.२३	१४	शनि	१२	४८	आर्द्रा	३५	४३	ऐंद्र	३६	३	व	१२	४८	२०	१२	10	२७	मिथुन	भ. १२/४८ से ३८/१० तक, सूर्य उ.षा. में ४०/५८, श्रीसत्यानारायण **(D)**	८	२५	५८	२०	७	३१	१७	४०
२५.२५	१५	रवि	३	३५	पुर्न	२८	३०	वैधृ	२५	३०	बव	३	३५	२१	१३	11	२८	क.१५/१५	**पौष पूर्णिमा,** माघस्नान प्रारम्भ, **बुध वक्री** ३६/३३, गुरु **(E)**	८	२६	५९	२६	७	३१	१७	४१

(A) श्रीदुर्गाष्टमी, स. सि. योग: **(B)** गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती (ना. शा.) **C** ४२/१०, स. सि. यो. **(D)** व्रत, शाकम्भरी जयन्ती, **(E)** पश्चिम में अस्त ४१/३८

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	८	९	९	१०	४	९	३
१९	१३	११	९	५	६	२७	१६	१६
४६	४२	४७	४	३७	३१	४६	४८	४८
२२	४	४४	११	४८	४३	१५	५१	५१
61 9	799 45	45 18	62 9	13 54	64 46	0 25	3 11	3 11
पूषा २	उषा ४	मूल ४	उषा ४	उषा ३	धनि ४	उफा १	श्रव ३	श्ले. ०
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१० रा. गु. बु.; ९ सू. मं.; ८; ११ शु.; १२ चं.; ७; ६; १; ३; ५ श.; २; ४ के.

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	८	९	९	१०	४	९	३
२६	२४	१७	१३	७	१३	२७	१६	१६
५४	५२	५	४३	१५	५८	४१	२६	२६
१८	२०	४२	२६	४०	२९	३	३६	३६
61 8	905 41	45 35	2 12	14 4	61 27	1 11	3 11	3 11
उषा १	पुर्न २	पूषा २	श्रव २	उषा ४	शत ३	उफा १	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१० रा. गु. बु.; ९ सू. मं.; ८; ११ शु.; १२; ७; ६; १; ३ चं.; ५ श.; २; ४ के.

पौष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की सप्तमी (मार्तण्ड सप्तमी) को भगवान सूर्य का व्रत, पूजन करके गोदान करनी चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक पक्ष की सप्तमी को व्रत, पूजन करने से आरोग्य व तेज की वृद्धि होती है। ता. 4 को श्रीदुर्गाष्टमी का पर्व श्रीदुर्गा मन्दिर एवं मनसा देवी के मन्दिरों में मनाया जाता है। ता. 5 जन. को गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती समस्त भारत में बड़ी श्रद्धा से मनाई जाती है। ता. 7 जन. को **पुत्रदा एकादशी** का विधिवत् व्रत रख कर, जप, हवन, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पत्ति को मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा** (11 जन.) से हरिद्वार, प्रयाग, कुरूक्षेत्र आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही श्रीगंगा जल सहित) शुद्ध जल से स्नान, जप, ध्यान, दान आदि का विशेष माहात्म्य होता है। पक्ष के आरम्भ में रविवार को शुक्र कुम्भ राशि में आने से सर्वप्रकार के अनाज तेजभाव होंगे। पृथ्वी पर सुख-साधनों में विस्तार होगा—**घटमीनगते शुक्रेदुर्भिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशयः॥** इसी पक्ष की चतुर्थी तिथि (31 दिसं.) **शनि सिंह राशि में वक्री** होगा। गुरू पहले से मकर राशि में अतिचारी गति से संचरणशील है। इसके फलस्वरूप गेहूँ, चने, धान्य, चावल, खाद्य तेल, मूँगफली, घृत, खल-बिनौले, चीनी, गुड़-शक्कर तेज भाव होंगे। लोगों में क्लिष्ट रोग भय, असन्तोष, व्याकुलता, पीड़ा एवं कहीं दुर्भिक्ष, छत्र-भंग (सत्ता-परिवर्तन) होने का भय रहे—**यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि, अतिचारी सौम्यकः। पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्॥**

आकाश लक्षण—पक्ष में पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा आदि प्रदेशों के उत्तरी क्षेत्रों में खण्डवर्षा एवं ओलावृष्टि के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, माघ कृष्ण पक्ष शाकः १९३०

सन् 2009 ई. (ता. 12 जनवरी से 26 जनवरी तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	पौष राष्ट्र. (तारीखें)	मुहर्र. मु.	जनवरी	पौष प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन– 12 जन. को गुरु पश्चिम में तथा 14 जन. को बुध पश्चिम में लुप्त हो जाएगा। मंग. भी अभी अस्त है। सायं शुक्र तथा प्रातः शनि पश्चिम में दिखाई देगा। ता. 26 से बुध पूर्व से उदय	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
००.००	१	रवि	५४	४८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	11	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.२८	२	चंद्र	४६	४८	पुष्य	२१	५५	विष्क	१५	२५	तै	२०	४८	२२	१४	12	२९	कर्क	**लोहड़ी पर्व (पंजाबादि),** जन्मदिन स्वा. विवेकानन्द जी	८	२८	०	३४	७	३१	१७	४२
२५.३२	३	मंग	४०	३	श्ले.	१६	२०	प्रीति आयु	६ ५८	१० ३	व	१३	२६	२३	१५	13	मा.	सिं.१६/२०	भ. १३/२६ से ४०/०३ तक, सूर्य मकर में ५७/२०, **माघ संक्रान्ति, (A)**	८	२९	१	४१	७	३१	१७	४३
२५.३३	४	बुध	३४	५५	मघा	१२	१५	सौभा	५१	१५	बव	७	२९	२४	१६	14	२	सिंह	**श्रीगणेश संकट चौथ व्रत,** चन्द्रोदय 21/35 (जालंधर), वक्री **(B)**	९	०	२	४४	७	३०	१७	४३
२५.३५	५	गुरु	३१	३३	पूफा	९	४८	शोभ	४५	५५	कौ	३	१४	२५	१७	15	३	कं.२४/२८	**(B)** बुध पश्चिम में अस्त ४२/३०	९	१	३	५०	७	३०	१७	४४
२५.३८	६	शुक्र	३०	१३	उफा	९	१५	अति	४२	१३	गर	०	५३	२६	१८	16	४	कन्या	भ. ३०/१३ से, शुक्र पू.भा. में ४७/४३,	९	२	४	५६	७	३०	१७	४५
२५.४०	७	शनि	३०	५०	हस्त	१०	४०	सुक	४०	०	वि	०	३२	२७	१८	17	५	तु. ४२/८	भ. ०/३२ तक, स्वामी विवेकानन्द जयंती (मतान्तरे)	९	३	६	०२	७	३०	१७	४६
२५.४३	८	रवि	३३	२५	चित्रा	१४	०	धृति	३९	१५	बा	२	८	२८	२०	18	६	तुला	वक्री बुध उ.षा. (४) में 5/52 घं.मिं.	९	४	७	०४	७	३०	१७	४७
२५.५०	९	चंद्र	३७	४३	स्वा.	११	३	शूल	३९	४५	तै	५	३४	२९	२१	19	७	तुला	सूर्य सायन कुम्भ में ५१/४३,	९	५	८	०९	७	२९	१७	४९
२५.५३	१०	मंग	४३	१०	विशा	२५	२०	गंड	४१	८	व	१०	२७	३०	२२	20	८	वृ. ८/४०	भ. १०/२७ से ४३/१० तक,	९	६	९	१४	७	२९	१७	५०
२५.५५	११	बुध	४९	३०	अनु	३२	३५	वृद्धि	४३	१०	बव	१६	२०	मा	२३	21	९	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत,** शक माघ प्रारम्भ, स. सि. योगः	९	७	१०	१८	७	२९	१७	५१
२६.०३	१२	गुरु	५६	१५	ज्ये.	४०	१८	ध्रुव	४५	३५	कौ	२२	५३	२	२४	22	१०	ध.४०/१८	तिल द्वादशी, गुरु श्रव. (१) में ३२/१५,	९	८	११	१९	७	२८	१७	५३
२६.०३	१३	शुक्र	६०	०	मूल	४८	३	व्या.	४७	५५	गर	२९	३५	३	२५	23	११	धनु	प्रदोष व्रत, सूर्य श्रवण में ४६/५०, नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती	९	९	१२	२३	७	२८	१७	५३
२६.०५	१३	शनि	२	५५	पू.षा.	५५	२८	हर्ष	५०	५	व	२	५५	४	२६	24	१२	धनु	भ. २/५५ से ३६/०५, मंगल उ.षा. में २७/१३, मास शिवरात्रि व्रत **(C)**	९	१०	१३	२५	७	२८	१७	५४
२६.०८	१४	रवि	९	१५	उ.षा.	६०	०	वज्र	५१	५०	श	९	१५	५	२७	25	१३	म.१२/१८	सर्वार्थ सिद्ध योगः **(C)** मेरू त्रयोदशी	९	११	१४	२५	७	२७	१७	५४
२६.१०	३०	चंद्र	१४	५५	उ.षा.	२	२५	सिद्धि	५२	५८	ना	१४	५५	६	२८	26	१४	मकर	**सोमवती मौनी अमावस,** वक्री बुध धनु में ३४/३५, वक्री बुध पूर्व से **(D)**	९	१२	१५	२७	७	२७	१७	५५

(A) मु. ३०, पुण्यकाल संक्रां. अगले दिन मध्याह्न तक, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, स.सि.यो. **(D)** उदय ६/०८, कंकण सूर्यग्रहण (देखें पृष्ठ 15), **भारत गणतन्त्र दिवस,** स.सि.यो.

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	८	९	९	१०	४	९	६
४	२	२२	१०	८	२१	२७	१६	१६
२	४२	२५	१	५४	७	३०	४	४
२	३२	३९	५	२९	२०	३७	२०	२०
61 5	744 30	45 52	70 1	14 10	59 35	1 54	3 11	3 11
उषा ३	चित्रा ३	पूषा ३	श्रव ०	उषा ४	पूभा १	उफा ०	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

११ शु. | १० सू. बु. गु. रा. | ९ मं. | १२ | ८ | १ | ७ चं. | २ | ४ के. | ६ | ३ | ५ श.

चंद्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	९	९	१०	४	९	३
१२	८	२८	०	१०	२८	२७	१५	१५
१०	३२	३३	३२	४८	४९	१२	३८	३८
३०	३४	३५	३९	०	४६	३६	५५	५५
61 1	724 8	46 9	49 39	14 11	55 18	2 41	3 11	3 11
श्रव ०	उषा ४	उषा ०	उषा २	श्रव १	पूभा ३	उफा १	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	अ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

११ शु. | १० सू.चं.बु. गु. रा. | ९ मं. | १२ | ८ | १ | ७ | २ | ४ के. | ६ | ३ | ५ श.

माघ कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष के आरम्भ में संक्रान्ति से पूर्व लोहड़ी का त्यौहार (12 जन.) अग्नि की पूजा के रूप में उत्तरी भारत में विशेषकर पंजाब, हि.प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर आदि प्रदेशों में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति** (13 जन.) को गंगाजल आदि पवित्र तीर्थ जलों में स्नान-उपरान्त भगवान् विष्णु सहित पंचदेव पूजन, पुरुष सूक्त, सूर्याष्टक स्तोत्र, सूर्य द्वादश नाम, अर्घ्य, देव स्तुति, पितृ तर्पण तथा तिल सहित सामग्री द्वारा हवन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन, वस्त्र, फल आदि का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **मकर संक्रान्ति** के विशेष स्नान दान, पाठ आदि का पुण्यकाल आगामी दिन अर्थात् 14 जन. बुधवार को मध्याह्न तक रहेगा। इसी दिन (14 जन.) श्रीगणेश संकट चौथ का व्रत रखकर प्रातः स्नान आदि के उपरान्त श्रीगणेश पूजन करके **'गं गणपतये नमः'** बीज मन्त्र एवं संकटनाशक गणेश स्तोत्र आदि का पाठ करना चाहिए। रात्रि को भगवान् का तिल निर्मित लड्डुओं का भोग लगाकर चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् प्रसाद रूप में भोजन आदि ग्रहण करना चाहिए। संकष्ट चतुर्थी व्रत से सभी तरह के कष्टों से निवृत्ति होती है। **षट्तिला एकादशी** (21 जन.) को व्रत रखकर तिल युक्त जल से स्नान करे। फिर श्री कृष्ण के **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः'** १०८ बार या यथाशक्ति पाठ करें। फिर तिल युक्त सामग्री द्वारा हवन करें एवं बर्फी, लड्डुओं आदि का भोग लगाकर स्वयं ग्रहण करने से पापों का नाश होता है। ता. 26 जन. को **मौनी अमावस** को स्नान, दान, जप एवं ध्यान आदि मौन होकर करने चाहिए। इस दिन **सोमवती अमावस्या** होने से तीर्थों पर स्नान, जप, दान आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा। **माघ संक्रान्ति का राशिफल**--यह संक्रान्ति मेष, वृष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक एवं कुम्भ राशि के जातकों के लिए लाभदायक होगी॥ **माघ संक्रान्ति** मंगलवार को होने से देश में रोग-शोक किंवा दुखद घटनाएँ अधिक हों। **सामान्य जनोपयोगी** वस्तुओं के भाव तेज होंगे। खल-बिनौले, पशुचारा एवं चौपाय महँगे होंगे--माघ में पाँच रविवार होने से कहीं उपद्रव, छत्रभङ्ग एवं हिंसक घटनाओं का भय रहेगा। **आकाश लक्षण**--इस पक्ष में शीत हवाओं के साथ खंड वर्षा के संकेत हैं॥

सन् 2009 ई. (ता. 27 जनवरी से 9 फरवरी तक) भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०६५, माघ शुक्ल पक्ष शाक: १९३०

सन् 2009 ई. (ता. 27 जनवरी से 9 फरवरी तक) — सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः शनि पश्चिमी क्षितिज की ओर होगा। बुध पूर्व में तथा 7 फर. से मंग. भी पूर्व में दिखाई देगा। सायं शुक्र पश्चिम में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	माघ शक	मुस्लि. मु.	जनवरी	माघ प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.१०	१	मंग	१९	४८	श्रव	८	३५	व्य.	५३	२८	बव	१९	४८	७	२९	27	१५	कुं.४१/१८	**चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल मकर ४७/२८, शुक्र मीन में ११/२५, A**	९	१३	१६	२८	७	२७	१७	५५
२६.१५	२	बुध	२३	४०	धनि	१३	५३	वरी	५३	१३	कौ	२३	४०	८	स.	28	१६	कुम्भ	सफर (मुस्लि.) प्रारम्भ, बाबा लाल जयन्ती	९	१४	१७	२५	७	२६	१७	५६
२६.१८	३	गुरु	२६	२८	शत	१८	५	परि	५२	३	गर	२६	२८	९	२	29	१७	कुम्भ	भ. ५७/१५ से, गौरी तृतीया व्रत	९	१५	१८	२३	७	२६	१७	५७
२६.२३	४	शुक्र	२८	५	पूभा	२१	१३	शिव	५०	०	वि	२८	५	१०	३	30	१८	मी. ५/३३	भ. २८/०५ तक, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी**, शुक्र उ.भा. में ५५/३०, **B**	९	१६	१९	१९	७	२५	१७	५८
२६.२८	५	शनि	२८	२५	उभा	२३	८	सिद्ध	४६	५५	बा	२८	२५	११	४	31	१९	मीन	**बसन्त पंचमी,** श्री ५, सरस्वती जयन्ती	९	१७	२०	१६	७	२४	१७	५९
२६.३०	६	रवि	२७	२३	रेव	२३	४३	साध्य	४२	४८	तै	२७	२३	१२	५	फर	२०	मे.२३/४३	**पंचक समाप्त** २३/४३, **बुध मार्गी १३/३०,** फरवरी मास प्रारम्भ	९	१८	२१	०८	७	२४	१८	०
२६.३३	७	चंद्र	२५	०	अश्वि	२३	०	शुभ	३७	३५	व	२५	०	१३	६	2	२१	मेष	भ. २५/०० से ५३/१० तक, **रथ-आरोग्य** सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत, **C**	९	१९	२२	०२	७	२४	१८	१
२६.३६	८	मंग	२१	२०	भर	२१	०	शुक्ल	३१	२३	बव	२१	२०	१४	७	3	२२	वृ.३५/१८	भीष्माष्टमी **C** अचला सप्तमी, श्रीमाधावाचार्य जयन्ती, भानु सप्तमी	९	२०	२२	५२	७	२३	१८	१
२६.३८	९	बुध	१६	२३	कृति	१७	४५	ब्रह्म	२४	१०	कौ	१६	२३	१५	८	4	२३	वृष		९	२१	२३	४३	७	२३	१८	२
२६.४३	१०	गुरु	१०	२०	रोहि	१३	२८	ऐंद्र	१६	१०	गर	१०	२०	१६	९	5	२४	मि.४०/५८	भ. ३६/५३ से, सूर्य धनि. में ५४/४८, गुरु श्रव (२) में ३९/०३, **D**	९	२२	२४	३०	७	२२	१८	३
२६.४८	११	शुक्र	३	२५	मृग	८	१८	वैधृ विष्क	७ ५८	२५ ८	वि	३	२५	१७	१०	6	२५	मिथुन	भ. ३/२५ तक, **जया एकादशी व्रत,** भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी	९	२३	२५	१६	७	२१	१८	४
००.००	१२	शुक्र	५५	५०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२६.५३	१३	शनि	४८	५८	आर्द्रा पुन	२ ५६	३० २५	प्रीति	४८	४०	कौ	२२	२४	११	११	7	२६	क.४२/५५	शनि प्रदोष व्रत, **बुध मकर में ३६/००,** मंगल पूर्व से उदय ३४/४८,	९	२४	२६	००	७	२०	१८	५
२६.५८	१४	रवि	४०	५	पुष्य	५०	२३	आयु	३९	१०	गर	१४	३२	१२	१२	8	२७	कर्क	भ. ४०/०५ से प्रा., स. सि. योग:	९	२५	२६	४३	७	१९	१८	६
२७.०३	१५	चंद्र	३२	३३	श्ले.	४४	५०	सौभा	२९	५८	वि	६	१९	१३	१३	9	२८	सिं.४४/५०	भ. ६/१९ तक, **माघ पूर्णिमा** स्नान, दानादि, मंगल श्रव. में ४४/१३, **E**	९	२६	२७	२३	७	१८	१८	७

A पंचक प्रारम्भ ४१/१८, **B वरद् चौथ,** कुन्द चतुर्थी (चन्द्रास्त 21/54, जालंधर) **D** वक्री शनि पू.फा. (४) में २५/४८ **E** श्रीगुरु रविदास जयंती, गुरु पूर्व से उदय ५३/०५, श्रीसत्यनारायण व्रत

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 3 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	९	८	९	११	४	९	३
२०	२०	४	२७	१२	५	२६	१५	१५
१८	४३	४३	५६	४१	५३	४८	१३	१३
५	५	३६	११	२६	६	३७	२९	२९
60 51	838 24	46 22	15 38	14 8	49 29	3 23	3 11	3 11
श्रव ४	भर ३	उषा ३	उषा १	श्रव १	उभा १	उफा १	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30 — १० सू. मं. गु. रा.; ११; ९ बु.; १२ शु.; ८; १ चं.; ७; २; ४ के.; ६; ३; ५ श.

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	९	९	९	११	४	९	३
२६	१७	९	०	१४	१०	२६	१४	१४
२२	५५	२२	५४	६	३६	२७	५४	५४
५१	५४	१४	३२	१	२४	१४	२३	२३
60 43	879 55	46 31	46 22	14 2	43 46	3 49	3 11	3 11
धनि ०	श्ले. १	उषा ४	उषा २	श्रव २	उभा ३	पूफा ४	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30 — १० सू.मं.बु. गु. रा; ११; ९; १२ शु.; ८; १; ७; २; ४ चं. के.; ६; ३; ५ श.

माघ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में **तिल चतुर्थी को श्रीगणेश** जी का व्रत एवं पूजन, तिल, फल व गुड़, लड्डुओं सहित करने का विधान है। **बसन्त पंचमी** (31 जन.) को भगवान् श्रीविष्णु व सरस्वती की धूप, दीप, नैवेद्य व गुलाल के साथ पूजा करनी चाहिए तथा पीले एवं मीठे चावलों का भोग लगाने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** (2 फर.) को सूर्य भगवान् को मन्त्रपूर्वक अर्घ्य प्रदान तथा षोडशोपचार सहित पूजन करने से वर्षभर स्वास्थ्य एवं आरोग्यता बनी रहती है। यह व्रत सर्वारिष्ट निवारक है। **माघ पूर्णिमा** को गंगा आदि तीर्थ पर स्नान, जप, दानादि करने का विशेष माहात्म्य होता है। **व्यापारिक रुख**—मंगलवार को चन्द्रदर्शन होने से सोना, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। इसी दिन (27 जन.) मंगल मकर राशि में आकर सूर्य, गुरु, बुध, राहु आदि ग्रहों के साथ मेल करेगा। जिससे घी, तैल, गुड़, रसदार पदार्थ, शेयर बाज़ार और लोहे की मशीनरी, कल-पूर्जे तेज़ भाव होंगे। धान्य, चावल आदि का उत्पादन अच्छा रहे। प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्रजा में दुःख, पीड़ा एवं अशान्ति रहे—**मकरे च स्थिते भौमे तैल महर्घता सुभिक्ष सर्वधान्यानां लोकानां दुखपीडनम्॥** माघ में पाँच रविवार तथा मकर राशि पर चारग्रही एवं पंचग्रही योग बनने से देश में कहीं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन एवं कृषि की हानि तथा उपद्रव, आतंकवादी घटनाएं, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन) आदि आकस्मिक घटनाएँ घटित हों—**एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वारुधिरेण जलेन वा॥** इस पक्ष में गुरू अभी पश्चिम में अस्त है जिससे इस पक्ष में भी विवाह मुण्डन, गृह प्रवेश आदि कार्यों का निषेध रहेगा। **आकाश लक्षण**—भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में तेज शीत हवाओं के साथ-साथ खण्ड वर्षा के योग हैं।

शकुन—माघ शु. ५ को बूंदा-बांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे।

वि. संवत् २०६५, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक: १९३०

सन् 2009 ई. (10 फरवरी से 25 फरवरी तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर-वसन्त ऋतु

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	माघ शक	मकर सं.	फरवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	ग्रह दर्शन—प्रातः मं., बु., गु. पूर्व में तथा शनि पश्चिम में दिखाई देगा। सायं शुक्र पश्चिम में दिखाई देगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२७.०५	१	मंग	२५	४५	मघा	४०	३	शोभ	२१	२०	कौ	२५	४५	२१	१४	10	२९	सिंह	गण्डमूल 23/19 घं.मिं. तक, **गुरु पूर्व से उदय** (4/32 घं.मिं.)	९	२७	२८	०६	७	१८	१८	८
२७.०७	२	बुध	२०	५	पूफा	३६	३०	अति	१३	३५	गर	२०	५	२२	१५	11	३०	कं.५०/४८	भ. ४७/५८ से प्रारम्भ:	९	२८	२८	४४	७	१७	१८	८
२७.१३	३	गुरु	१५	५०	उफा	३४	२८	सुक	७	०	वि	१५	५०	२३	१६	12	फा.	कन्या	भ. १५/५० तक, **सूर्य कुम्भ में ३०/२०, फाल्गुन संक्रान्ति, मु. ४५ A**	९	२९	२९	२३	७	१६	१८	९
२७.१८	४	शुक्र	१३	२०	हस्त	३४	१३	धृति शूल	१ ५७	४५ ५८	बा	१३	२०	२४	१७	13	२	कन्या	नैपच्यून कुम्भ में ४८/१५,	१०	०	२९	५८	७	१५	१८	१०
२७.२३	५	शनि	१२	४८	चित्रा	३५	५०	गंड	५५	४५	तै	१२	४८	२५	१८	14	३	तु. ४/४८		१०	१	३०	३४	७	१४	१८	११
२७.२८	६	रवि	१४	१३	स्वा	३९	२५	वृद्धि	५५	३	व	१४	१३	२६	१९	15	४	तुला	भ. १४/१३ से ४६/०३ तक,	१०	२	३१	०८	७	१३	१८	१२
२७.३३	७	चंद्र	१७	३३	विशा	४४	४३	ध्रुव	५५	३८	बव	१७	३३	२७	२०	16	५	वृ.२८/१५		१०	३	३१	४१	७	१२	१८	१३
२७.३८	८	मंग	२२	२८	अनु	५१	२०	व्या	५७	१३	कौ	२२	२८	२८	२१	17	६	वृश्चिक	जानकी अष्टमी व्रत	१०	४	३२	१२	७	११	१८	१४
२७.४३	९	बुध	२८	३३	ज्ये	५८	५०	हर्ष	५९	२८	गर	२८	३३	२९	२२	18	७	ध.५८/५०	सूर्य सायन मीन में २७/४५, बुध श्रवण में १०/०८, शुक्र रेवती में **B**	१०	५	३२	४३	७	१०	१८	१५
२७.४८	१०	गुरु	३५	१३	मूल	६०	०	वज्र	६०	०	व	१	५३	३०	२३	19	८	धनु	भ. १/५३ से ३५/१३ तक, सूर्य शत. में ६/४५, गण्डमूल विचार, **C**	१०	६	३३	१२	७	९	१८	१६
२७.५३	११	शुक्र	४१	५३	मूल	६	४३	वज्र	१	५८	बव	८	३३	फा.	२४	20	९	धनु	**विजया एकादशी व्रत**, शक फाल्गुन प्रा., गुरु श्रव (३) में 7/07 घं. मिं.	१०	७	३३	४०	७	८	१८	१७
२७.५५	१२	शनि	४८	०	पूषा	१४	१८	सिद्धि	४	२०	कौ	१४	५७	२	२५	21	१०	म. ३१/५		१०	८	३४	०६	७	७	१८	१७
२८.००	१३	रवि	५३	१५	उषा	२१	१०	व्य.	६	१०	गर	२०	३८	३	२६	22	११	मकर	भ. ५३/१५ से, प्रदोष व्रत, मेला महाशिवरात्रि (काश्मीर) प्रा., स.सि.यो.	१०	९	३४	३१	७	६	१८	१८
२८.०५	१४	चंद्र	५७	१८	श्रव	२७	३	वरी	७	१५	वि	२५	१७	४	२७	23	१२	कुं.५९/३०	भ. २५/१८ तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, पंचक प्रारम्भ** ५९/३०, स.सि.यो.	१०	१०	३४	५४	७	५	१८	१९
२८.०८	३०	मंग	६०	०	धनि	३१	४३	परि	७	२५	च	२८	४२	५	२८	24	१३	कुम्भ	**भौमवती अमावस (देव-पितृकार्येषु)**	१०	११	३५	१७	७	४	१८	१९
२८.१३	३०	बुध	०	५	शत	३५	८	शिव	६	३५	ना	०	५	६	२९	25	१४	कुम्भ	**अमावस्या** (देवादि कार्येषु)	१०	१२	३५	३७	७	३	१८	२०

गुरु उदय 10 फर.

A पुण्यकाल संक्रान्ति मध्याह्न बाद, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय 21/22 (जालन्धर), गुरु बाल्य समाप्त ५३/१० **B** १८/५८, वसन्त ऋतु प्रारम्भ **C** स्वामी दयानन्द जयन्ती

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	९	९	९	११	४	९	३
४	५	१५	८	१५	१५	२५	१४	१४
२७	३४	३५	३४	५७	५३	५४	२८	२८
५८	५८	८	६	३९	३५	५७	५८	५८
60 33	718 20	46 43	68 59	13 50	33 48	4 18	3 11	3 11
धनि ४	अनु ९	श्रव २	उषा ४	श्रव २	उभा ४	पूफा ४	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२ शु.; गु. १० बु. मं. रा.; ११ सू.; १; ९; २; ८ चं.; ३; ५ श.; ७; ४ के.; ६

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	९	९	९	११	४	९	३
१२	११	२१	१८	१७	१९	२५	१४	१४
३१	४५	४९	३५	४७	३९	१९	३	३
४४	४८	२५	२५	२२	४१	२२	३२	३२
60 21	762 51	46 51	82 4	13 33	20 25	4 37	3 11	3 11
शत २	शत २	श्रव ४	श्रव ३	श्रव ३	रेव १	पूफा ४	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

१२ शु.; गु. १० बु. मं. रा.; ११ सू. चं.; १; ९; २; ८; ३; ५ श.; ७; ४ के.; ६

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल—

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी (23 फरवरी) को **श्रीमहाशिवरात्रि का** सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर, व्रत धारण कर रात्रि में **भगवान् शिव-शंकर** की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवकथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। फाल्गुण संक्रान्ति (12 फर.) गुरूवार को ४५ मुहूर्त्ति है। संक्रान्ति के स्नानदानादि का पुण्यकाल मध्याह्न (दुपै.) बाद से प्रारम्भ होगा। यह संक्रान्ति मेष, वृष, कन्या, तुला, धनु एवं मीन राशि वाले जातकों के लिए लाभदायक रहेगी। गुरूवार की संक्रान्ति होने से धान्य, अनाजादि के मूल्यों में समानता रहे, अर्थात् मूल्यों में विशेष उतार-चढ़ाव नहीं होंगे। पृथ्वी में धर्मकर्म के आचरण अधिक होने से प्रजा में सुख-साधन बढ़ेंगे। **गुरोश्चवारे यदि संक्रमश्चेत्समानवस्तूनि भवंति नित्यशः। पृथ्वी सदानंदति धर्मकर्मणाभवेच्चभूमिः प्रचुरान्नपूर्णा॥** परन्तु इसके साथ ही फाल्गुन मास में पांच मंगलवार होने से समाज में महंगाई, असंतोष, उपद्रव, अग्निकांड एवं हिंसक घटनाएँ अधिक रहें। मतान्तर से फाल्गुन मास में **पांच मंगलवार** शुभ माने गए हैं। **आषाढ़े कार्त्तिके मासे फाल्गुनेपिचदैवतः। जायते पंचभौमक्षपंचमासास्तदा शुभाः॥** ता. 24 फर. को मंगलवारी अमावस होने से राजनीतिक पार्टियों में परस्पर टकराव, विग्रह, कहीं छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), उत्पाद, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ एवं जन-धन-सम्पदादि की क्षति हो, अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ें—**राज्यभ्रंशोराजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे॥ आकाश लक्षण**—पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में वायु वेग अधिक रहेगा। कहीं हल्की बूंदा-बांदी की संभावना है। **शकुन**—इस पक्ष की षष्ठी तिथि रविवार को स्वाती नक्षत्र में बूंदा-बांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत हैं।

वि. संवत् २०६५, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाक: १९३० तारीखें चंद्र राशि सन् 2009 ई. (ता. 28 फरवरी से 11 मार्च तक) भा.स्टैं.टा.

वि. संवत् २०६५, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाकः १९३०														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	सन् 2009 ई. (ता. 26 फरवरी से 11 मार्च तक) सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु	भा. स्टै. टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	फाल्गु.	सफर मु.	फरवरी	फाल्गुन		ग्रह दर्शन—प्रातः मं., बु. एवं गु. पूर्व क्षितिजासन्न होंगे। सायं शुक्र पश्चिम में तथा शनि पूर्व क्षितिज पर उदय होता हुआ दिखाई देगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८.१८	१	गुरु	१	३३	पूभा	३७	२०	सिद्ध	४	४८	बव	१	३३	७	३०	26	१५	मी.२१/५३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल धनिष्ठा में ५२/१०	१०	१३	३५	५६	७	२	१८	२१
२८.२३	२	शुक्र	१	४५	उभा	३८	२३	माध्य/शुभ	२/५८	३/२३	कौ	१	४५	८	रवि	27	१६	मीन	श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती, शिवाजी जयंती, रवि उल्लावल A	१०	१४	३६	१२	७	१	१८	२२
२८.२७	३	शनि	०	५०	रेव	३८	२५	शुक्ल	५३	५८	गर	०	५०	९	२	28	१७	मे.३८/२५	भ. २९/५० से ५८/५० तक, **पंचक समाप्त ३८/२५,** बुध धनिष्ठा B	१०	१५	३६	२६	७	०	१८	२३
अवम	४	शनि	५८	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२८.३३	५	रवि	५६	५	अश्वि	३७	३५	ब्रह्म	४८	५३	बव	२७	२८	१०	३	मा	१८	मेष	याज्ञवल्क्य जयन्ती, गण्डमूल 22/00 घं.मिं. तक, मार्च, 2009 ई. C	१०	१६	३६	३८	६	५८	१८	२३
२८.३८	६	चंद्र	५२	३०	भर	३५	५५	ऐंद्र	४३	८	कौ	२४	१८	११	४	2	१९	वृ.५०/२३		१०	१७	३६	४८	६	५७	१८	२४
२८.४३	७	मंग	४८	१३	कृति	३३	३३	वैधृ	३६	५०	गर	२०	२२	१२	५	3	२०	वृष	भ. ४८/१३ से प्रारम्भ, स. सि. योग:	१०	१८	३६	५८	६	५६	१८	२५
२८.४५	८	बुध	४३	२०	रोहि	३०	३५	विष्क	३०	३	वि	१५	४७	१३	६	4	२१	मि.५८/५३	भ. १५/४८ तक, **होलाष्टक प्रारम्भ,** अन्नपूर्णा अष्टमी, सूर्य पू. भा. D	१०	१९	३७	०४	६	५५	१८	२५
२८.५०	९	गुरु	३७	५८	मृग	२७	३	प्रीति	२२	५०	बा	१०	३९	१४	७	5	२२	मिथुन		१०	२०	३७	०९	६	५४	१८	२६
२८.५८	१०	शुक्र	३२	१०	आर्द्रा	२३	८	आयु	१५	१८	तै	५	४	१५	८	6	२३	मिथुन	भ. ५९/०८ से, गुरु श्रव (४) में ५३/२३, **शुक्र वक्री ३९/४०**	१०	२१	३७	१०	६	५३	१८	२७
२९.००	११	शनि	२६	८	पुर्न	१८	५५	सौभा/शोभ	७/५९	२८/३०	वि	२६	८	१६	९	7	२४	क. ५/००	भ. २६/०८ तक, **मंगल कुम्भ में २४/०८, आमलकी एकादशी व्रत**	१०	२२	३७	१०	६	५२	१८	२७
२९.०५	१२	रवि	२०	०	पुष्य	१४	३८	अति	५१	३८	बा	२०	०	१७	१०	8	२५	कर्क	**गोविन्द द्वादशी,** प्रदोष व्रत, गण्डमूल 12/41 घं.मिं. से, स.सि.यो.	१०	२३	३७	०९	६	५०	१८	२८
२९.१०	१३	चंद्र	१३	५८	श्ले.	१०	२५	सुक	४३	५५	तै	१३	५८	१८	११	9	२६	सिं.१०/२५	बुध शत. में ८/३५, गण्डमूल विचार	१०	२४	३७	०५	६	४९	१८	२९
२९.१३	१४	मंग	८	२०	मघा	६	३३	धृति	३६	४३	व	८	२०	१९	१२	10	२७	सिंह	भ. ८/२० से ३५/५० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, **होलिका दहन E**	१०	२५	३७	००	६	४८	१८	२९
२९.१८	१५	बुध	३	२३	पूफा	३	२०	शूल	३०	१०	बव	३	२३	२०	१३	11	२८	कं.१७/४३	फाल्गुन पूर्णिमा स्नानादि, **होली पर्व,** होलाष्टक समाप्त, वसन्तोत्सव F	१०	२६	३६	५१	६	४७	१८	३०

A (मुस्लि.) मास प्रारम्भ B में २०/१८, C प्रारम्भ, स. सि. यो. D में २२/५५, बुध कुम्भ में ५१/५०, स.सि.यो. E (भद्रा के बाद), राहु श्रव (१) केतु पुष्य (३) में २८/२०, F प्रारम्भ, धुलैण्डी

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	९	९	९	११	४	९	३
१९	१५	२७	२८	१९	२१	२४	१३	१३
३३	२०	१७	३६	२१	१९	४६	४१	४१
३२	१८	३८	१९	१३	९	३३	१७	१७
60 7	845 51	46 56	90 38	13 13	5 22	4 46	3 11	3 11
शत ४	रोहि २	धनि २	धनि २	श्रव ३	रेव २	पूफा ४	श्रव २	पुष्य ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१२ शु. | ११ सू. | १० गु. बु. मं. रा. | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ श. | ४ के. | ३ | २ चं. | १

बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	१०	१०	९	११	४	९	३
२६	२५	२	९	२०	२१	२४	१३	१३
३३	८	४६	३४	५२	५	१३	१९	१९
३९	१४	१५	३८	३२	१३	६	१	१
59 53	832 42	46 58	98 37	12 49	11 59	4 46	3 11	3 11
पूभा २	पूफा ४	धनि ३	शत १	श्रव ४	रेव २	पूफा ४	श्रव १	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30

१२ शु. | ११ सू. मं. बु. | १० रा. गु. | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ चं. श. | ४ के. | ३ | २ | १

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल—

फाल्गुन शुक्लाष्टमी (4 मार्च) से **होलाष्टक प्रारम्भ** होंगे। इन दिनों गृह प्रवेश, मुण्डन आदि शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध माना जाता है। **आमलकी एकादशी** (7 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक उपासना करने का विधान है। आँवलों का दान तथा स्वयं भी आँवलों सहित भोजन करने का विशेष माहात्म्य होता है। 10 मार्च सायं काल में भद्रा रहित काल में होलिका दहन करना चाहिए। भद्रा रात्रि 9/08 तक रहेगी। ता. 11 मार्च को होली का त्यौहार समस्त भारत में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। **व्यापारिक रुख**—ता. 6 मार्च को **शुक्र मीन राशि में वक्री** हो रहा है। जिससे गेहूँ, धान्य, घी, तैल, रूई, अलसी व सोना, चाँदी में तेज़ी होगी—**यदा दैत्य गुरुश्चैव राशि वक्रं चरिष्यति। धान्यार्धं च क्षयं कुर्यात् धृतं तैल महर्धता॥** ता. 7 मार्च को मंगल कुम्भ राशि में सूर्य, बुध के साथ मेल करेगा। फलस्वरूप विभिन्न देश हथियारों के सम्बन्ध स्वतन्त्र होने में सफल होंगे। सर्वप्रकार के अनाज, धान्य, चावल आदि तेज़ भाव होंगे—**भूसुते कुम्भ राशिस्थे सर्वधान्य महर्घता। एवं प्रजायतेहिऽर्घं लोकमध्ये तु निर्भयम्॥** पक्ष के उत्तरार्ध भाग में सूर्य, मंगल का शनि के साथ सम-सप्तक दृष्टि सम्बन्ध होने से उ.प्र., मध्य प्रदेश, बिहार, असम तथा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर भाग में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक तनाव एवं विस्फोटक व हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं—**यदा सौरि भौमे सुरराजमन्त्री–भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा। अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति॥**

आकाश लक्षण—इस पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर-पश्चिम भागों तथा पहाड़ी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ कहीं खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०६५, चैत्र कृष्ण पक्ष, शाकः १९३०

सन् 2009 ई. (ता. 12 मार्च से 26 मार्च तक)

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण-उत्तर गोल, वसन्त ऋतु — भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

ग्रह दर्शन—सायं शनि को पूर्व में देखें। 24 मार्च से शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। प्रातः मं., बु. पूर्व में तथा इनके काफी ऊपर गुरु होगा। 16 मार्च से बुध लुप्त होगा।

दिनमान घटी.पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	फाल्गु. कृ.	शक मु.	मार्च	फाल्गु. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घटी पल	व्रत, पर्व आदि	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	स्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
००.००	१	बुध	५९	२३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	11	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ०० ००	००	०	०	०	०	०	०	०
२९.२३	२	गुरु	५६	४५	उफा	१	१३	गंड	२४	४३	तै	२८	४	२१	१४	12	२९	कन्या	सन्त तुकाराम जयन्ती, होला मेला (आनन्दपुर व पांओटा साहिब)	१०	२७	३६	३९	६	४५	१८	३०
२९.२८	३	शुक्र	५५	४०	हस्त	०	१८	वृद्धि	२०	५	व	२६	१३	२२	१५	13	३०	तु.३०/२३	भ. २६/१५ से ५५/४० तक,	१०	२८	३६	२८	६	४४	१८	३१
२९.३०	४	शनि	५६	२०	चित्रा	०	५५	ध्रुव	१६	५३	ब	२६	०	२३	१६	14	चैत्र	तुला	सूर्य मीन में २३/५३, **चैत्र संक्रान्ति**, मु. १५, पुण्यकाल सं. प्रातः **(A)**	१०	२९	३६	१५	६	४३	१८	३१
२९.३५	५	रवि	५८	५०	स्वा	३	२०	व्या	१५	८	कौ	२७	३५	२४	१७	15	२	वृ.५१/१३	मंगल शत. में ५५/३५, श्रीरंग पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ)	११	०	३५	५७	६	४१	१८	३१
२९.४०	६	चंद्र	६०	०	विशा	७	२५	हर्ष	१४	५३	गर	३०	५७	२५	१८	16	३	वृश्चिक	एकनाथ षष्ठी, बुध पूर्व में अस्त ५२/३०, स. सि. यो. 9/38 से,	११	१	३५	४१	६	४०	१८	३२
२९.४५	६	मंग	३	३	अनु	१३	८	वज्र	१५	३३	व	३	३	२६	१९	17	४	वृश्चिक	भ. ३/०३ से ३५/४८ तक, सूर्य उ.भा. में ४४/५५, गण्डमूल प्रातः **(B)**	११	२	३५	२१	६	३९	१८	३३
२९.४८	७	बुध	८	३३	ज्ये	२०	३	सिद्धि	१७	२०	बव	८	३३	२७	२०	18	५	ध. २०/३	गण्डमूल विचार, शीतला सप्तमी	११	३	३४	५९	६	३८	१८	३३
२९.५३	८	गुरु	१४	५५	मूल	२७	४०	व्य	१९	४३	कौ	१४	५५	२८	२१	19	६	धनु	शीतलाष्टमी व्रत, गण्डमूल 17/41 घं.मिं. तक	११	४	३४	३६	६	३७	१८	३४
२९.५७	९	शुक्र	२१	३०	पूषा	३५	२३	वरी	२२	१३	गर	२१	३०	२९	२२	20	७	म.५२/१५	भ. ५४/३३ से, सूर्य सायन मेष में २६/३५, **महाविषुव दिवस**, उत्तर **C**	११	५	३४	१०	६	३६	१८	३४
३०.००	१०	शनि	२७	३८	उषा	४२	३५	परि	२४	२३	वि	२७	३८	३०	२३	21	८	मकर	भ. २७/३८ तक, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ २/१३	११	६	३३	४७	६	३५	१८	३५
३०.०५	११	रवि	३२	४५	श्रव	४८	४०	शिव	२५	४८	बव	०	१२	चैत्र	२४	22	९	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत, बुध मीन में ३७/३०,** शक चैत्र व **D**	११	७	३३	२०	६	३४	१८	३६
३०.१०	१२	चंद्र	३६	३०	धनि	५३	२५	सिद्ध	२६	१३	कौ	४	३८	२	२५	23	१०	कुं.२१/१८	**पंचक प्रारम्भ २१/१८,** वारुणी योग 27/54 से अगले दिन तक	११	८	३२	४८	६	३२	१८	३७
३०.१७	१३	मंग	३८	३५	शत	५६	३०	साध्य	२५	२३	गर	७	३३	३	२६	24	११	कुम्भ	भौम प्रदोष व्रत, भ. ३८/३५ से, वारुणी योग 21/56 तक, बुध उ.भा.**E**	११	९	३२	१७	६	३१	१८	३८
३०.२५	१४	बुध	३९	०	पूभा	५८	०	शुभ	२३	१८	वि	८	४८	४	२७	25	१२	मी.४२/४८	भ. ८/५० तक, मेला पिहोवातीर्थ (हरियाणा), मे. पृथूदक	११	१०	३१	४३	६	२९	१८	३९
३०.२७	३०	गुरु	३७	५०	उभा	५८	३	शुक्ल	१९	५३	च	८	२५	५	२८	26	१३	मीन	**चैत्र अमावस** (देव, पितृ आदि कार्येषु), विक्रमी संवत् २०६५ पूर्ण	११	११	३१	०८	६	२८	१८	३९

(A) 9/52 बाद, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/08 (जालन्धर), श्रीभगवान्नारायण जयन्ती, स.सि.यो. **(B)** 11/54 से, बुध पू.भा. में ६/१५, **C** गोलार्द्ध प्रारम्भ **D** शाकः सन् 1931 प्रारम्भ, गुरु धनि (१) में ४७/४५, वक्री शुक्र उ.भा. (४) में ११/१०, वक्री शनि पू.फा. (३) में ३७/५० **E** में २३/३५, शुक्र पश्चिम में अस्त २/२३, मास शिवरात्रि व्रत

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	१०	९	११	४	९	३
४	७	९	२३	२२	१८	२३	१२	१२
३१	२०	२	१६	३३	२२	३५	५३	५३
५२	२१	६	३५	१४	४५	१७	३५	३५
59 39	708 47	46 59	108 12	12 17	29 57	4 38	3 11	3 11
उभा ०	मूल ३	शत ०	पूभा ०	श्रव ४	रेव ०	पूफा ४	श्रव ०	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30

१ — १२ सू. शु. — ११ बु. मं. — १० गु. रा. — ९ चं. — ८ — ७ — ६ — ५ श. — ४ के. — ३ — २

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१०	११	९	११	४	९	३
११	३	१४	६	२३	१४	२३	१२	१२
२८	१४	३०	२०	५७	२४	३	३१	३१
४५	०	५९	२३	३७	१३	३१	२०	२०
59 26	800 2	46 58	116 57	11 44	37 34	4 23	3 11	3 11
उभा ३	पूभा ४	शत ३	उभा ०	धनि ९	उभा ४	पूफा ३	श्रव ९	पुष्य ३
०	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30

१ — १२ सू. चं. बु. शु. — ११ मं. — १० गु. रा. — ९ — ८ — ७ — ६ — ५ श. — ४ के. — ३ — २

चैत्र कृष्ण पक्षफल—

ता. 12 मार्च को होला-मेला का उत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। इसी दिन कई स्थलों पर ध्वजारोहण भी किया जाता है। 14 मार्च शनिवार को चैत्र संक्रान्ति 15 मुहूर्त्ति है, इसके स्नान, दान आदि का पुण्यकाल प्रातः 9/52 से प्रारम्भ होगा। इसी दिन **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत विधिपूर्वक रखने से अनिष्ट ग्रहों सम्बन्धी कष्टों से निवृत्ति होती है। इसी पक्ष में 20 मार्च **महाविषुव दिवस** (जब दिन-रात समान होते हैं) को यन्त्र, तन्त्र एवं मन्त्रादि अनुष्ठान के लिए विशेष प्रशस्त दिन माना जाता है। **एकादशी** (22 मार्च) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 23 मार्च 27/54 से **वारूणी पर्व** (स्नान, दान जपादि हेतु विशेष मुहूर्त्त) 24 मार्च 21/56 तक होगा। **व्यापारिक रुख**—ता. 11 मार्च बुधवार को प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। जिससे रूई, कपास के भाव घटकर तीन दिनों में तेजी होगी। घी में भी मन्दी का माहौल बने। चाँदी में तेजी बनेगी। ता. 14 मार्च को **चैत्र संक्रान्ति** शनिवार को 15 मुहूर्त्ति है। सर्व प्रकार के अनाज (गेहूँ, चने, धान्य, चावल) खल-बिनौले, पशुचारा, चौपाय तेज भाव होंगे। **शनिवार संक्रान्ति** का फल भी अशुभ ही लिखा गया है—**सौरेश्च वारे रवि संक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथिवीसरोगानृपतेः प्रजासुभवेन्महायुद्धभयं तदानीम्॥** **आकाश लक्षण**—इस पक्ष में तेज हवाओं के साथ कहीं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०६४-६५ ... महीने का विश्वादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन 2008 ई.

वि. संवत् 2064-65, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	10	मंग	17	58	श्रव	27	29	सिद्ध	24	14	मकर	भ. 17/58 तक, **शुक्र मीन में 14/00,** बुध उभा. में 11/11	1	6/24	18/45	6/16	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
	2	11	बुध	17	42	धनि	27	34	साध्य	22	46	कुं.15/37	**पंचक प्रारम्भ 15/37, पापमोचनी एकादशी व्रत,** प्लूटो वक्री 14/46	2	6/23	18/45	6/15	18/36	6/15	18/37	6/35	18/49
	3	12	गुरु	16	38	शत	26	52	शुभ	20	39	कुम्भ	**प्रदोष व्रत,** वारुणी योग 16/38 से 26/52 तक, **बुध पूर्व** में अस्त 11/29	3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/14	18/38	6/34	18/49
	4	13	शुक्र	14	49	पू.भा.	25	28	शुक्ल	17	57	मी.19/52	भ. 14/49 से 25/36 तक, शुक्र उ.भा. में 6/46	4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/13	18/39	6/34	18/49
	5	14	शनि	12	22	उ.भा.	23	31	ब्रह्म	14	46	मीन	गुरु उ.षा. 1 में 26/15, अमावस (पितृतर्पणादि) मेला पिहोवातीर्थ (हरि.)	5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	30/	रवि	9	25	रेव	21	08	ऐंद्र	11	11	मे.21/08	**चैत्र** अमावस (9/25 तक), वि. संवत् 2065 शुरु, **चैत्र (वासन्त) नवरात्रे A**	6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/10	18/40	6/32	18/49
चैत्र शुक्ल पक्ष	6	1	रवि	30	09	—	—	—	—	—	—	—	प्रतिपदा तिथि का क्षय, **वासन्त नवरात्र व प्लव नामक वि. सम्वत् (B)**	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	7	2	चंद्र	26	44	अश्वि	18	33	वैधृ / विष्क	7 / 27	21 / 23	मेष	चन्द्रदर्शन (15 मुहूर्ति)	7	6/16	18/50	6/09	18/39	6/09	18/41	6/31	18/49
	8	3	मंग	23	20	भर	15	54	प्रीति	23	27	वृ.21/15	गणगौरी तृतीया, **श्रीमत्स्य जयंती,** मंगल पुर्न. में 8/22, बुध रेवती में 15/13	8	6/15	18/51	6/08	18/39	6/08	18/42	6/30	18/50
	9	4	बुध	20	06	कृति	13	22	आयु	19	40	वृष	भद्रा 9/43 से 20/06 तक	9	6/14	18/52	6/07	18/40	6/07	18/42	6/30	18/50
	10	5	गुरु	17	11	रोहि	11	08	सौभा	16	08	मि.22/10	**श्री (लक्ष्मी) पंचमी**	10	6/12	18/52	6/06	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
	11	6	शुक्र	14	44	मृग	9	18	शोभ	12	59	मिथुन	**स्कन्द षष्ठी व्रत**	11	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
	12	7	शनि	12	47	आर्द्रा	7	58	अति	10	15	क.25/21	भ. 12/47 से 24/07 तक	12	6/10	18/54	6/03	18/41	6/03	18/45	6/28	18/51
	13	8	रवि	11	26	पुर्न	7	13	सुक	7	59	कर्क	सूर्य अश्वि. (1) **मेष में 18/29, वैशाख संक्रांति, श्रीदुर्गाष्टमी, C**	13	6/08	18/54	6/02	18/42	6/02	18/45	6/27	18/51
	14	9	चंद्र	10	39	पुष्य	7	02	धृति / शूल	6 / 28	11 / 50	कर्क	श्रीरामनवमी वैष्णव, दुर्गा ९, **बुध** अश्वि (1) **मेष में** 29/49, शुक्र रेव. में **D**	14	6/07	18/55	6/01	18/43	6/01	18/46	6/26	18/51
	15	10	मंग	10	26	आश्ले	7	25	गंड	27	55	सिं. 7/25	भ. 22/36 से प्रा., गण्डमूलादि, बुध मेष में 5/49	15	6/06	18/56	6/00	18/43	6/00	18/46	6/25	18/52
	16	11	बुध	10	45	मघा	8	19	वृद्धि	27	21	सिंह	भ. 10/45 तक, **कामदा एकादशी व्रत,** गंडमूल 8/19 तक	16	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
	17	12	गुरु	11	30	पू.फा.	9	39	ध्रुव	27	07	क.16/03	**प्रदोष व्रत**	17	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
	18	13	शुक्र	12	39	उ.फा.	11	23	व्या.	27	09	कन्या	**श्रीमहावीर जयन्ती,** शिव पूजनम्, अनंग त्रयोदशी (जैन)	18	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
	19	14	शनि	14	08	हस्त	13	26	हर्ष	27	26	तु.26/34	भ. 14/08 से 27/02 तक, सूर्य सायन वृष में 22/21, ग्रीष्म ऋतु **E**	19	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
	20	15	रवि	15	56	चित्रा	15	47	वज्र	27	56	तुला	**चैत्र पूर्णिमा,** चित्रायुक्ताशुभा, स्नानदान, वैशाख स्नान प्रारम्भ, श्रीहनुमान **F**	20	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
वैशाख कृष्ण पक्ष	21	1	चंद्र	17	59	स्वा.	18	23	सिद्धि	28	37	तुला	**वैशाख कृष्ण पक्ष** प्रारम्भ, शक वैशाख प्रारम्भ, बुध भर. में 13/13	21	5/59	19/00	5/54	18/46	5/53	18/50	6/21	18/53
	22	2	मंग	20	15	विशा	21	12	व्य.	29	27	वृ.14/28	—— —— —— ——	22	5/58	19/00	5/53	18/47	5/52	18/51	6/20	18/54
	23	3	बुध	22	40	अनु	24	08	वरी	पूरा	दिन	वृश्चिक	भद्रा 9/28 से 22/40 तक,	23	5/57	19/01	5/52	18/48	5/51	18/52	6/19	18/54
	24	4	गुरु	25	07	ज्ये.	27	07	वरी	6	23	ध.27/07	श्रीगणेश चतुर्थी व्रतं, चन्द्रोदय 22/25 (जालन्धर), गण्डमूल, नैपच्यून कुम्भ में 18/58	24	5/55	19/02	5/51	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
	25	5	शुक्र	27	28	मूल	पूरा	दिन	परि	7	18	धनु	**शुक्र अश्वि (1) मेष में** 21/41, गण्डमूलादि	25	5/54	19/02	5/50	18/49	5/49	18/53	6/18	18/54
	26	6	शनि	29	32	मूल	5	59	शिव	8	07	धनु	गंडमूल 5/59 तक	26	5/53	19/03	5/49	18/49	5/48	18/54	6/17	18/55
	27	7	रवि	पूरा	दिन	पू.षा.	8	34	सिद्ध	8	42	म.15/09	सूर्य भरणी में 10/25, बुध कृतिका में 24/19	27	5/52	19/04	5/48	18/50	5/47	18/54	6/17	18/55
	28	7	चंद्र	7	08	उ.षा.	10	41	साध्य	8	55	मकर	मंगल कर्क में 14/45, बुध पश्चिम में उदय 5/54	28	5/51	19/05	5/47	18/50	5/46	18/55	6/16	18/56
	29	8	मंग	8	06	श्रव	12	09	शुभ	8	37	कुं.24/36	**पंचक प्रारम्भ 24/36,** बुध वृष में 17/44,	29	5/50	19/06	5/47	18/51	5/45	18/55	6/16	18/56
	30	9	बुध	8	17	धनि	12	51	शुक्ल	7	43	कुम्भ	भ. 19/57, राहु धनि 2 **मकर;** केतु आश्ले (4) **कर्क में 9/30 (G)**	30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/44	18/56	6/15	18/56

A प्रारम्भ, घटस्थापन (अभिजित मुहूर्त्त प्रशस्त) देखें पृष्ठ 71), पंचक समाप्त 21/08 **(B) 2065 शुरू–6 अप्रैल रविवार** **C** अशोकाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, मेला वैशाखी, बाहुफोर्ट (जम्मू), **श्रीरामनवमी व्रत** (स्मार्त्त) (देखें पृष्ठ 74) **D** 26/03, नवरात्र समाप्त, डॉ० अम्बेदकर जयंती **E** प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत **F** जयन्ती (दक्षिण भारत), अगस्त्य अस्त **(G)** शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 23/50

वि. संवत् 2065, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
वैशाख कृष्ण	1	10	गुरु	7	37	शत	12	43	ब्रह्म ऐंद्र	6 27	09 56	कुम्भ	भ. 7/37 तक, मई 2008 ई. प्रारंभ	1	5/48	19/08	5/45	18/52	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	11/	शुक्र	6	08	पू.भा.	11	47	वैधृ	25	04	मी.6/06	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयंती, **त्रिस्पर्शा महाद्वादशी**	2	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
	—	12	शुक्र	27	52	—	—	—	—	—	—	——	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	3	13	शनि	24	57	उ.भा.	10	07	विष्क	21	39	मीन	भद्रा 24/57 से, शनि प्रदोष व्रत, **शनि मार्गी 8/36, शुक्र पूर्व में अस्त 23/50**	3	5/46	19/09	5/43	18/53	5/41	18/58	6/14	18/57
	4	14	रवि	21	32	रेव अश्वि	7 29	49 05	प्रीति	17	49	मे. 7/49	भ. 11/15 तक, **पंचक समाप्त 7/49,** मंगल पुष्य में 24/15, गंडमूल,**A**	4	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
	5	30	चंद्र	17	48	भर.	26	05	आयु	13	40	मेष	**सोमवती अमावस,** देवपितृकार्येषु, बुध रोहि. में 11/22	5	5/44	19/10	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/58
वैशाख शुक्ल पक्ष	6	वै.शु.	मंग	13	56	कृति	23	03	सौभा शोभ	9 29	23 06	वृ. 7/20	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रा., चन्द्रदर्शन, शुक्र भर. में 17/34	6	5/43	19/11	5/41	18/55	5/39	19/00	6/12	18/58
	7	2	बुध	10	08	रोहि	20	09	अति	25	00	वृष	**श्रीपरशुराम जयंती, अक्षय तृतीया,** टैगोर जयन्ती, शिवाजी **(B)**	7	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
	8	3/	गुरु	6	34	मृग	17	35	सुक	21	12	मि. 6/49	भ. 16/59 से 27/24 तक,	8	5/42	19/12	5/39	18/56	5/37	19/01	6/12	18/59
	—	4	गुरु	27	24	—	—	—	—	—	—	——	चतुर्थी तिथि क्षय ०० ०० **शुक्र अस्त 3 मई**	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	9	5	शुक्र	24	48	आर्द्रा	15	30	धृति	17	50	मिथुन	आद्य **गुरू शंकराचार्य जयंती,** गुरु वक्री 17/41	9	5/41	19/13	5/39	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
	10	6	शनि	22	51	पुर्न	14	02	शूल	14	59	क. 8/21	श्रीरामानुजाचार्य जयंती, सूर्य कृतिका में 28/31	10	5/41	19/14	5/38	18/57	5/36	19/03	6/11	18/59
	11	7	रवि	21	37	पुष्य	13	17	गंड	12	42	कर्क	भ. 21/37 से, **श्री गंगा जयन्ती**	11	5/40	19/15	5/37	18/58	5/35	19/03	6/10	19/01
	12	8	चंद्र	21	08	आश्ले	13	15	वृद्धि	11	01	सिं.13/15	भ. 9/22 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी,** गण्डमूलादि	12	5/39	19/16	5/37	18/59	5/34	19/04	6/10	19/01
	13	9	मंग	21	20	मघा	13	55	ध्रुव	9	54	सिंह	**सीता नवमी, श्रीबगुलामुखी जयंती,** गंडमूलादि 13/55 तक	13	5/39	19/17	5/36	18/59	5/34	19/05	6/09	19/01
	14	10	बुध	22	08	पू.फा.	15	12	व्या.	9	18	क.21/37	**सूर्य वृष में 15/24, ज्येष्ठ संक्रांति,**३० मुहू., पुण्यकाल संक्रां. प्रात: **(C)**	14	5/38	19/17	5/35	19/00	5/33	19/05	6/09	19/02
	15	11	गुरु	23	27	उ.फा.	17	01	हर्ष	9	08	कन्या	भ. 10/48 से 23/27 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**	15	5/37	19/18	5/35	19/00	5/32	19/06	6/09	19/02
	16	12	शुक्र	25	10	हस्त	19	15	वज्र	9	20	कन्या	बुध मृगशिर में 12/59	16	5/36	19/18	5/34	19/01	5/32	19/07	6/09	19/02
	17	13	शनि	27	10	चित्रा	21	46	सिद्धि	9	48	तु. 8/30	**शनि प्रदोष व्रत,** शुक्र कृतिका में 13/40	17	5/36	19/11	5/34	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
	18	14	रवि	29	22	स्वा.	24	30	व्य.	10	28	तुला	भ. 29/22 से, **श्रीनृसिंह जयन्ती**	18	5/35	19/20	5/33	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
	19	15	चंद्र	पूरा	दि.	विशा	27	23	वरी	11	17	वृ.20/39	भ. 18/32 तक, **व्रत वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयन्ती, (D)**	19	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
	20	15	मंग	7	42	अनु	पूरा	दिन	परि	12	10	वृश्चिक	**वैशाख पूर्णिमा** स्नानदानादि, **शुक्र वृष में 6/45,** सूर्य सायन मिथुने 21/31	20	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	21	1	बुध	10	05	अनु	6	19	शिव	13	06	वृश्चिक	**ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष** प्रा., गंडमूल 6/19 बाद	21	5/33	19/22	5/32	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
	22	2	गुरु	12	28	ज्ये.	9	16	सिद्ध	14	01	ध. 9/16	भ. 25/37 से, नारद जयन्ती, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	22	5/33	19/23	5/31	19/05	5/28	19/11	6/07	19/04
	23	3	शुक्र	14	46	मूल	12	08	साध्य	14	53	धनु	भ. 14/46 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,** चन्द्रोदय 22/28(जालंधर),गंडमूल	23	5/32	19/24	5/31	19/05	5/28	19/11	6/06	19/05
	24	4	शनि	16	50	पू.षा.	14	49	शुभ	15	34	म.21/27	सूर्य रोहिणी में 24/50	24	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	25	5	रवि	18	35	उ.षा.	17	11	शुक्ल	16	00	मकर		25	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	26	6	चंद्र	19	49	श्रव	19	04	ब्रह्म	16	03	मकर	भद्रा 19/49 से. **बुध वक्री 21/20**	26	5/30	19/25	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	27	7	मंग	20	25	धनि	20	21	ऐंद्र	15	38	कुं. 7/47	भ. 8/07 तक, **पंचक प्रारम्भ 7/47,** नैपच्यून वक्री 21/44	27	5/30	19/26	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	28	8	बुध	20	17	शत	20	54	वैधृ	14	39	कुम्भ	शुक्र रोहिणी में 10/01,	28	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
	29	9	गुरु	19	21	पू.भा.	20	41	विष्क	13	03	मी.14/48	मंगल आश्लेषा में 11/18	29	5/29	19/27	5/29	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
	30	10	शुक्र	17	38	उ.भा.	19	40	प्रीति	10	48	मीन	भ. 6/30 से 17/38 तक, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 7/45,	30	5/29	19/28	5/28	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
	31	11	शनि	15	12	रेव	17	57	आयु सौभा	7 28	56 32	मे.17/57	**पंचक समाप्त 17/57, अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी (पं.)**	31	5/29	19/28	5/28	19/09	5/25	19/16	6/05	19/08

A मास शिवरात्रि व्रत **B** जयन्ती (देखें पृष्ठ 74), जमादिउल्लावल (मुस्लि.) प्रारम्भ **C** 9/00 के बाद. **D** वैशाख स्नान समाप्त, श्रीसत्यनारायण व्रत

वि. संवत् 2065, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

वि. संवत् 2065, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.
ज्ये. कृष्ण	1	12	रवि	12	09	अश्वि	15	38	शोभ	24	42	मेष
	2	13/	चंद्र	8	37	भर	12	52	अति	20	33	वृ.18/07
	—	14	चंद्र	28	48	——	—	—	—	—	—	——
	3	30	मंग	24	53	कृति	9	50	सुक	16	15	वृष
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	4	1	बुध	21	02	रोहि / मृग	6 / 27	45 / 47	धृति	11	56	मि.17/14
	5	2	गुरु	17	26	आर्द्रा	25	09	शूल / गंड	7 / 27	47 / 55	मिथुन
	6	3	शुक्र	14	17	पुर्न	23	01	वृद्धि	24	29	क.17/30
	7	4	शनि	11	42	पुष्य	21	32	ध्रुव	21	36	कर्क
	8	5	रवि	9	50	आश्ले	20	46	व्या.	19	19	सिं.20/46
	9	6	चंद्र	8	44	मघा	20	48	हर्ष	17	40	सिंह
	10	7	मंग	8	25	पू.फा.	21	36	वज्र	16	39	क.27/54
	11	8	बुध	8	53	उ.फा.	23	05	सिद्धि	16	12	कन्या
	12	9	गुरु	10	00	हस्त	25	10	व्य.	16	16	कन्या
	13	10	शुक्र	11	39	चित्रा	27	40	वरी	16	42	तु.14/22
	14	11	शनि	13	42	स्वा.	पू.	दि.	परि	17	25	तुला
	15	12	रवि	15	58	स्वा.	6	28	शिव	18	17	वृ.26/39
	16	13	चंद्र	18	21	विशा	9	23	सिद्ध	19	14	वृश्चिक
	17	14	मंग	20	43	अनु	12	21	साध्य	20	11	वृश्चिक
	18	15	बुध	23	01	ज्ये.	15	15	शुभ	21	04	ध.15/15
	19	1	गुरु	25	08	मूल	18	01	शुक्ल	21	50	धनु
	20	2	शुक्र	27	02	पू.षा.	20	35	ब्रह्म	22	25	म.27/11
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	21	3	शनि	28	37	उ.षा.	22	52	ऐंद्र	22	47	मकर
	22	4	रवि	पू.	दि.	श्रव	24	48	वैधृ	22	52	मकर
	23	4	चंद्र	5	49	धनि	26	16	विष्क	22	35	कुं.13/35
	24	5	मंग	6	31	शत	27	11	प्रीति	21	53	कुम्भ
	25	6	बुध	6	40	पू.भा.	27	30	आयु	20	41	मी.21/29
	26	7/	गुरु	6	10	उ.भा.	27	09	सौभा	18	58	मीन
	—	8	गुरु	29	00	——	—	—	—	—	—	——
	27	9	शुक्र	27	11	रेव	26	09	शोभ	16	42	मे.26/09
	28	10	शनि	24	46	अश्वि	24	33	अति	13	56	मेष
	29	11	रवि	21	51	भर	22	26	सुक	10	42	वृ.27/50
	30	12	चंद्र	18	32	कृति	19	56	धृति / शूल	7 / 27	04 / 11	वृष

तारीख	भद्रा, पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टाईम]	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रत नियम प्रारंभ, गण्डमूल 15/38 तक	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08
2	भद्रा 8/37 से 18/43 तक, मास शिवरात्रि व्रत	5/28	19/29	5/28	19/10	5/24	19/16	6/05	19/09
—	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—
3	भावुका अमावस, वटसावित्री व्रत(राज.), **शनैश्चर जयंती,** भौमवती अमावस	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
4	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, **श्रीगंगा स्नान प्रारंभ**	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
5	चन्द्रदर्शन (मु. 15)	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
6	भ. 25/00 से, प्रताप जयन्ती, रम्भा तृतीया व्रत, जमादिउल्सानी (मु.) प्रारंभ	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
7	भ. 11/42 तक, सूर्य मृगशिर में 22/38, वक्री बुध रोहि. में 18/01	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/10
8	शुक्र मृगशिर में 6/25 गण्डमूलादि	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/11
9	गण्डमूल 20/48 तक,	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
10	भ. 8/25 से 20/39 तक	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
11	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, **मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)**	5/26	19/34	5/27	19/14	5/23	19/21	6/05	19/11
12	**गंगा दशहरा पर्व (हरिद्वार)** हस्तयोगे 10/00 बाद, वक्री गुरु पू.षा. (4)**A**	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
13	भ. 24/41 से, गंगा दशहरा स्नानादि, शुक्र मिथुन में 16/40	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
14	भ. 13/42 तक, निर्जला एका. व्रत, आषाढ़ संक्रांति, **सूर्य मिथुन में 22/02B**	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
15	प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
16	वट सावित्री व्रतारम्भः (पूर्णिमा पक्षे), वक्री बुध पूर्व से उदय 9/25	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/13
17	भद्रा 20/43 से प्रारंभ, गण्डमूल 12/21 से प्रारम्भ	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
18	भ. 9/52 तक, ज्येष्ठ पूर्णिमा, **कबीर जयंती,** वट सावित्री व्रत, शुक्र **C**	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
19	आषाढ़ कृष्ण पक्ष, गण्डमूलादि, बुध मार्गी 20/02	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
20		5/27	19/37	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/14
21	भ. 15/50 से 28/37 तक, **मंगल मघा १ सिंह में** 16/57, सूर्य **D**	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
22	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/21 (जालन्धर), शक आषाढ़ प्रारम्भ	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/07	19/14
23	**पंचक प्रारम्भः 13/35,**	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
24	शनि मघा (4) में 24/00	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
25	भ. 6/40 से 18/25 तक	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
26		5/29	19/38	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
—	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—
27	**पंचक समाप्त 26/09,** गण्डमूल विचार, यूरेनस वक्री 5/36	5/30	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
28	भ. 13/59 से 24/46 तक, गण्डमूल 24/33 तक, वक्री नैपच्यून मकर में 14/08	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
29	योगिनी एकादशी व्रत, शुक्र पुर्न. में 23/21	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/08	19/16
30	सोम प्रदोष व्रतम्, बुध मृग. में 9/25,	5/31	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

A में 13/39 **B** 15 मु., पुण्यकाल संक्रां. मध्याह्न बाद **C** आर्द्रा में 26/55, श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूलादि **D** दक्षिणायन में, सूर्य आर्द्रा में 21/43, सूर्य सायन कर्क में 5/29, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षाऋतु प्रारम्भ

वि. संवत् 2065, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.]
आ. कृ.	1	13	मंग	14	59	रोहि	17	12	गंड	23	09	मि.27/48	भद्रा 14/59 से 25/10 तक, मास शिवरात्रि व्रत, जुलाई प्रारम्भ
	2	14	बुध	11	21	मृग	14	25	वृद्धि	19	06	मिथुन	राहु धनि (1), केतु आश्ले. (3) में 7/22, अमावस (पितृ कार्यों के लिए)
	3	30/	गुरु	7	49	आर्द्रा	11	44	ध्रुव	15	12	क.27/55	अमावस स्नानदानादि
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	—	1	गुरु	28	32	— —	—	—	— —	—	—	— —	आषा. शुक्ल प्रतिपदा का क्षय
	4	2	शुक्र	25	40	पुनर्व	9	21	व्या.	11	33	कर्क	रथयात्रा (श्रीजन्नाथ पुरी), चन्द्रदर्शन
	5	3	शनि	23	22	पुष्य	7	26	हर्ष	8	17	कर्क	सूर्य पुनर्वसु में 21/15
	6	4	रवि	21	45	अश्ले. मघा	6 29	06 29	वज्र सिद्धि	5 27	33 21	सिं. 6/06	भ. 10/34 से 21/45 तक, बुध मिथुन में 18/54, गण्डमूल
	7	5	चंद्र	20	53	पू.फा.	पू.	दि.	व्य.	25	48	सिंह	शुक्र कर्क राशि में 26/36
	8	6	मंग	20	49	पू.फा.	5	37	वरी	24	52	कं.11/47	स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी
	9	7	बुध	21	29	उ.फा.	6	32	परि	24	31	कन्या	विवस्वत सप्तमी, भ. 21/29 से प्रारंभ
	10	8	गुरु	22	50	हस्त	8	09	शिव	24	40	तु.21/12	भ. 10/10 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, परशुराम अष्टमी, वक्री गुरु पू.षा. A
	11	9	शुक्र	24	41	चित्रा	10	22	सिद्ध	25	13	तुला	भढली नवमी, बुध आर्द्रा में 11/39, शुक्र पश्चिम में उदय 28/31
	12	10	शनि	26	54	स्वा.	13	00	साध्य	26	02	तुला	
	13	11	रवि	29	16	विशा	15	54	शुभ	26	59	वृ. 9/10	भ. 16/05 से 29/16 तक, **देवशयनी एकादशी व्रत,** चातुर्मास्य व्रतादि B
	14	12	चंद्र	पू.	दि.	अनु	18	52	शुक्ल	27	56	वृश्चिक	शुक्र बाल्य समाप्त 28/31
	15	12	मंग	7	38	ज्ये.	21	45	ब्रह्म	28	47	ध.21/45	भौम प्रदोष व्रत, गण्डमूलादि
	16	13	बुध	9	52	मूल	24	27	ऐंद्र	29	27	धनु	**सूर्य कर्क में 8/57, श्रावण संक्रांति,** ३० मु. निरयण दक्षिणायन शुरु,(C)
	17	14	गुरु	11	50	पू.षा.	26	51	वैधृ	पू.	दि.	धनु	भ.11/50 से 24/40 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, बुध पूर्व में अस्त (D)
	18	15	शुक्र	13	29	उ.षा.	28	55	वैधृ	5	54	म. 9/24	आषाढ़ी पूर्णिमा, **गुरु पूर्णिमा,** व्यास पूजा, बुध पुनर्व में 23/17, श्रावण E
श्रावण कृष्ण पक्ष	19	1	शनि	14	46	श्रव	पू.	दि.	विष्क	6	03	मकर	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रा., सूर्य पुष्य में 20/50
	20	2	रवि	15	38	श्रव	6	35	प्रीति आयु	5 29	54 25	कुं.19/16	भ. 27/51 से, **पंचक प्रारम्भ 19/16**
	21	3	चंद्र	16	03	धनि	7	50	सौभा	28	34	कुम्भ	भ. 16/03 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/25 (जालन्धर) (F)
	22	4	मंग	16	02	शत	8	40	शोभ	27	22	मी.26/58	सूर्य सायन सिंह में 16/25
	23	5	बुध	15	32	पू.भा.	9	01	अति	25	46	मीन	नाग पंचमी (राज. व बंगाल), **बुध कर्क में 20/50**
	24	6	गुरु	14	33	उ.भा.	8	54	सुक	23	47	मीन	भ. 14/33 से 25/50 तक
	25	7	शुक्र	13	06	रेव	8	19	धृति	21	26	मे. 8/19	**पंचक समाप्त 8/19,** बुध पुष्य में 10/49, गंडमूल
	26	8	शनि	11	11	अश्वि भर	7 5	16 49	शूल	18	42	मेष	गंडमूल 7/16 तक,
	27	9	रवि	8	53	कृति	28	01	गंड	15	41	वृ.11/24	भ. 19/34 से प्रा.
	28	10/	चंद्र	6	14	रोहि	25	57	वृद्धि	12	23	वृष	भ. 6/14 तक, कामिका एकादशी व्रत स्मार्त, शनि पू.फा. (1) में 12/42
	—	11	चंद्र	27	21	— —	—	—	—	—	—	— —	एकादशी तिथि का क्षय
	29	12	मंग	24	20	मृग	23	45	ध्रुव व्या.	8 29	55 22	मि.12/52	**कामिका एकादशी व्रत वैष्णव**
	30	13	बुध	21	18	आर्द्रा	21	32	हर्ष	25	49	मिथुन	भ. 21/18 से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत
	31	14	गुरु	18	23	पुनर्व	19	25	वज्र	22	25	क.13/56	भ. 7/51 तक, बुध आश्लेषा में 19/02,

शुक्र उदय 11 जुलाई

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
2	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
3	5/32	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
—	—	—	—	—	—	—	—	—
4	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
5	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
6	5/33	19/38	5/33	19/18	5/29	19/25	6/11	19/16
7	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
8	5/34	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/12	19/16
9	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
10	5/35	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
11	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
12	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
13	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/16
14	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/14	19/16
15	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/16
16	5/38	19/36	5/37	19/16	5/34	19/22	6/14	19/16
17	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
18	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/21	6/15	19/15
19	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/15
20	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
21	5/41	19/34	5/40	19/14	5/37	19/20	6/16	19/14
22	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
23	5/42	19/33	5/41	19/13	5/38	19/19	6/16	19/13
24	5/43	19/32	5/42	19/13	5/39	19/19	6/17	19/13
25	5/44	19/32	5/42	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
26	5/45	19/31	5/43	19/12	5/40	19/17	6/17	19/12
27	5/45	19/30	5/43	19/11	5/41	19/17	6/18	19/12
28	5/46	19/30	5/44	19/11	5/41	19/16	6/18	19/12
—	—	—	—	—	—	—	—	—
29	5/47	19/29	5/44	19/10	5/42	19/15	6/18	19/11
30	5/47	19/27	5/45	19/10	5/43	19/15	6/19	19/11
31	5/48	19/27	5/46	19/09	5/43	19/14	6/19	19/10

A (3) में 18/54, शुक्र पुष्य में 19/41, **B** नियम प्रा., मंगल पू.फा. में 26/11 **(C)** पुण्यकाल संक्रांति 15/21 तक, गंडमूल **D** 27/15, कोकिला व्रत, वायु परीक्षा, शिवशयनोत्सव, मेला ज्वालामुखी (का.) **(E)** के सोमवारों में शिव पूजन करना विशेष प्रशस्त है, अशून्यशयन व्रत **(F)** शुक्र आश्लेषा में 16/00.

वि. संवत् 2065, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

वि. संवत् 2065, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचाग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा,पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टाईम]	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
	1	30	शुक्र	15	43	पुष्य	17	35	सिद्धि	19	13	कर्क	हरियाली अमावस, **खण्डग्रास सूर्यग्रहण** (देखें पृष्ठ 10), शुक्र मघा (1)**0**	1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
श्रावण शुक्ल पक्ष	2	1	शनि	13	26	आश्ले	16	08	व्य.	16	22	सिं.16/08	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, ग्रहणऽपर दिन, सूर्य आश्लेषा में 19/43, **A**	2	5/49	19/25	5/47	19/08	5/44	19/12	6/20	19/09
	3	2	रवि	11	40	मघा	15	13	वरी	13	57	सिंह	चन्द्रदर्शन	3	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
	4	3	चंद्र	10	31	पू.फा.	14	56	परि	12	02	कं.20/58	मधुस्रवा-हरियाली तीज, भ. 22/18 से, मंगल उ.फा. में 19/02 **B**	4	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
	5	4	मंग	10	04	उ.फा.	15	20	शिव	10	40	कन्या	भद्रा 10/04 तक,	5	5/51	19/23	5/48	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
	6	5	बुध	10	20	हस्त	16	26	सिद्ध	9	53	तु.29/14	**नागपंचमी व्रत,** श्रीकल्कि जयन्ती, **श्रावणी उपाकर्म** (देखें पृष्ठ 74)	6	5/52	19/22	5/49	19/05	5/47	19/09	6/21	19/07
	7	6	गुरु	11	17	चित्रा	18	12	साध्य	9	39	तुला	बुध मघा (1) सिंह में 11/22,	7	5/52	19/21	5/49	19/04	5/47	19/08	6/22	19/07
	8	7	शुक्र	12	52	स्वा	20	32	शुभ	9	54	तुला	भ. 12/52 से 25/53 तक, गो. तुलसीदास जयंती, वक्री गुरु पू.षा. **C**	8	5/53	19/20	5/50	19/03	5/48	19/07	6/22	19/06
	9	8	शनि	14	54	विशा	23	16	शुक्ल	10	31	वृ.16/33	श्रीदुर्गाष्टमी, **मेला चिन्तपूर्णी**-चामुण्डा-कांगड़ा, मंगल कन्या में 26/52	9	5/53	19/19	5/51	19/02	5/49	19/06	6/22	19/05
	10	9	रवि	17	13	अनु	26	11	ब्रह्म	11	22	वृश्चिक		10	5/54	19/18	5/51	19/01	5/49	19/05	6/22	19/05
	11	10	चंद्र	19	36	ज्ये.	29	06	ऐंद्र	12	18	ध.29/06	गण्डमूल विचार, बुध पश्चिम में उदय 23/20,	11	5/55	19/17	5/52	19/01	5/50	19/04	6/22	19/04
	12	11	मंग	21	51	मूल	पू.	दि.	वैधृ	13	10	धनु	भ. 8/44 से 21/51 तक, **पवित्रा एकादशी व्रत,** शुक्र पू.फा. में 8/39 **D**	12	5/56	19/16	5/52	19/00	5/51	19/03	6/23	19/03
	13	12	बुध	23	47	मूल	7	49	विष्क	13	50	धनु	गण्डमूलादि 7/49 तक	13	5/57	19/15	5/53	18/59	5/51	19/02	6/23	19/03
	14	13	गुरु	25	17	पू.षा.	10	12	प्रीति	14	13	म.16/43	प्रदोष व्रत, बुध पू.फा. में 18/47,	14	5/57	19/13	5/53	18/58	5/52	19/02	6/23	19/02
	15	14	शुक्र	26	18	उ.षा.	12	08	आयु	14	13	मकर	भ. 26/18 से प्रा., भारत स्वतन्त्रता दिवस	15	5/58	19/12	5/54	18/57	5/52	19/01	6/23	19/02
	16	15	शनि	26	47	श्रव	13	33	सौभा	13	49	कुं.26/04	भ. 14/33 तक, **श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन** (देखें पृष्ठ 75), **भाद्रपद E**	16	5/59	19/11	5/54	18/56	5/53	19/00	6/24	19/01
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	17	1	रवि	26	45	धनि	14	28	शोभ	13	01	कुम्भ	भाद्र. कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, ग्रहणऽपरे दिन, शनि पश्चिम में अस्त 9/54	17	5/59	19/10	5/55	18/55	5/54	18/59	6/24	19/01
	18	2	चंद्र	26	15	शत	14	54	अति	11	49	कुम्भ		18	6/00	19/09	5/55	18/54	5/54	18/58	6/24	19/00
	19	3	मंग	25	19	पू.भा.	14	53	सुक	10	15	मी. 8/56	भ. 13/47 से 25/19 तक, कज्जली तीज	19	6/00	19/08	5/56	18/53	5/55	18/56	6/24	19/00
	20	4	बुध	24	01	उ.भा.	14	29	धृति	8	21	मीन	**श्रीगणेश संकष्ट (बहुला) चतुर्थी व्रत,** चं. उ. 20/56 (जालन्धर)	20	6/01	19/06	5/56	18/52	5/55	18/55	6/24	19/00
	21	5	गुरु	22	28	रेव	13	44	शूल गंड	6 27	10 44	मे.13/44	पंचक समाप्त 13/44	21	6/01	19/05	5/57	18/51	5/56	18/54	6/25	18/59
	22	6	शुक्र	20	31	अश्वि	12	42	वृद्धि	25	06	मेष	भ. 20/31 से, चन्दन षष्ठी, चन्द्रोदय 22/08 (जालंधर), हल षष्ठी, **F**	22	6/02	19/04	5/58	18/50	5/56	18/53	6/25	18/58
	23	7	शनि	18	26	भर	11	27	ध्रुव	22	18	वृ.17/07	भ. 7/29 तक, शीतला सप्तमी, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** स्मार्त (देखें पृष्ठ 75)	23	6/02	19/03	5/58	18/49	5/57	18/52	6/25	18/57
	24	8	रवि	16	12	कृति	10	02	व्या.	19	24	वृष	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत** वैष्णव, बुध कन्या में 27/36, शनि पू.फा. **G**	24	6/03	19/02	5/59	18/48	5/58	18/51	6/25	18/56
	25	9	चंद्र	13	51	रोहि	8	30	हर्ष	16	25	मि.19/42	भ.24/40 से, गुग्गानवमी, शुक्र कन्या में 22/27, मंगल हस्त में 21/13	25	6/04	19/01	5/59	18/47	5/58	18/50	6/26	18/55
	26	10	मंग	11	29	मृग आर्द्रा	6 29	54 19	वज्र	13	23	मिथुन	भ. 11/29 तक	26	6/04	19/00	6/00	18/46	5/59	18/49	6/26	18/54
	27	11	बुध	9	07	पुर्न	27	48	सिद्धि	10	24	क.22/10	अजा एकादशी व्रत, वत्स द्वादशी	27	6/05	18/59	6/00	18/45	5/59	18/47	6/26	18/53
	28	12/	गुरु	6	51	पुष्य	26	27	व्य वरी	7 28	29 42	कर्क	भ. 28/46 से प्रा., प्रदोष व्रत, कैलाश यात्रा प्रारम्भ	28	6/06	18/57	6/01	18/44	6/00	18/46	6/27	18/52
	—	13	गुरु	28	46	— —	—		—	—	—	— —	त्रयोदशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	29	14	शुक्र	26	56	आश्ले	25	22	परि	26	09	सिं.25/22	भ. 15/51 तक, मास शिवरात्रि व्रत, गण्डमूलादि	29	6/07	18/55	6/01	18/43	6/01	18/45	6/27	18/51
	30	30	शनि	25	28	मघा	24	37	शिव	23	52	सिंह	**कुशाग्रहणी पिठौरी अमावस, शनिवारी अमावस,** सूर्य पू.फा. में 13/23, गं.मू.	30	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
	31	1	रवि	24	27	पू.फा.	24	19	सिद्ध	21	57	सिंह	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ	31	6/08	18/53	6/02	18/41	6/02	18/43	6/28	18/49

0 सिंह में 12/18, अगस्त प्रारम्भ **A** मेला श्रीचिन्तपूर्णी, चामुण्डा-कांगड़ादि प्रारम्भ **B** दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी, सिंघारा तीज, शब्वान मु. मास प्रारम्भ **C** (२) में 18/20 **D** गण्डमूल विचार **E** संक्रान्ति, सूर्य मघा (1) सिंह में 17/24, पुण्यकाल सं. प्रातः 11/00 से, पंचकारम्भ 26/04, खण्डग्रास चन्द्रग्रहण (देखें पृष्ठ 12), श्रीअमरनाथ गुफा दर्शन, गायत्री जयन्ती **F** सूर्य सायन कन्या में 23/32, शरद् ऋतु प्रारम्भ, बुध उ.फा. में 22/39, शुक्र उ.फा. में 29/16 **G** (2) में 28/58

वि. संवत् 2065, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टाईम)
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	1	2	चंद्र	23	59	उ.फा.	24	32	साध्य	20	28	क. 6/19	चन्द्रदर्शन, बुध हस्त में 7/27
	2	3	मंग	24	06	हस्त	25	21	शुभ	19	26	कन्या	हरितालिका तृतीया (गौरी तीज), 1 रमज़ान (मु.) मास प्रारम्भ, शुक्र 0
	3	4	बुध	24	52	चित्रा	26	47	शुक्ल	18	55	तु.14/00	भ. 12/29 से 24/52 तक, **सिद्धि विनायक व्रत**, कलंक चतुर्थी, **पत्थर A**
	4	5	गुरु	26	14	स्वा	28	48	ब्रह्म	18	51	तुला	ऋषि पंचमी व्रत, अगस्त्य-उदय, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)
	5	6	शुक्र	28	07	विशा	पूरा	दिन	ऐंद्र	19	14	वृ.24/38	**सूर्य षष्ठी व्रत**, ललिता षष्ठी व्रत
	6	7	शनि	पूरा	दिन	विशा	7	18	वैधृ	19	55	वृश्चिक	मुक्ताभरण सप्तमी, **सन्तान सप्तमी व्रत**
	7	7	रवि	6	22	अनु	10	08	विष्क	20	49	वृश्चिक	भ. 6/22 से 19/35 तक, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारंभ, श्रीराधाष्टमी
	8	8	चंद्र	8	47	ज्ये.	13	06	प्रीति	21	44	ध.13/06	दधीची जयन्ती, गुरु मार्गी 9/44,
	9	9	मंग	11	09	मूल	15	57	आयु	22	30	धनु	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय)
	10	10	बुध	13	13	पू.षा.	18	30	सौभा	23	00	म.25/04	भ. 26/01 से प्रारम्भ
	11	11	गुरु	14	48	उ.षा.	20	33	शोभ	23	04	मकर	भ. 14/48 तक, पद्मा एकादशी व्रत
	12	12	शुक्र	15	46	श्रव	21	59	अति	22	38	मकर	प्रदोष व्रत, वामन जयन्ती
	13	13	शनि	16	04	धनि	22	46	सुक	21	41	कुं.10/27	**पंचक प्रारंभ 10/27**, सूर्य उ.फा. में 13/23, बुध चित्रा में 7/41, शुक्र B
	14	14	रवि	15	42	शत	22	54	धृति	20	13	कुम्भ	भ. 15/42 से 27/13 तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, **मेला बाबा सोढल जालन्धर (C)**
	15	पूर्णि	चंद्र	14	44	पू.भा.	22	28	शूल	18	16	मी.16/37	भाद्रपद पूर्णिमा, प्रौष्ठपदी **महालय श्राद्धारम्भ**, मंगल चित्रा में 9/39 (D)
आश्विन कृष्ण पक्ष	16	प्र	मंग	13	14	उ.भा.	21	33	गंड	15	55	मीन	**सूर्य कन्या में 17/22**, आश्विन संक्रांति, पुण्यकाल प्रातः 10/58 से, (E)
	17	2	बुध	11	20	रेव	20	17	वृद्धि	13	15	मे.20/17	भ. 22/14 से, **पंचक समाप्त 20/17**, तृतीया का श्राद्ध
	18	3	गुरु	9	08	अश्वि	18	45	ध्रुव	10	21	मेष	भ. 9/08 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/08 (जाल.), चतुर्थी श्राद्ध
	19	4	शुक्र	6	47	भर	17	07	व्या / हर्ष	7 / 28	19 / 13	वृ.22/42	**शुक्र तुला में 10/15, पंचमी का श्राद्ध**
	—	5	शुक्र	28	21	—	—	—	—	—	—	——	पंचमी तिथि का क्षय
	20	6	शनि	25	57	कृति	15	28	वज्र	25	10	वृष	भ. 25/57 से, **षष्ठी का श्राद्ध**, शनि पू.फा. (3) में 18/50
	21	7	रवि	23	40	रोहि	13	52	सिद्धि	22	10	मि.25/07	भ. 12/49 तक, **सप्तमी का श्राद्ध**, शनि पूर्व से उदय 24/48
	22	8	चंद्र	21	32	मृग	12	25	व्य.	19	19	मिथुन	श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, जीवित्पुत्रिका **अष्टमी श्राद्ध**, सूर्य सायन (F)
	23	9	मंग	19	36	आर्द्रा	11	08	वरी	16	37	क.28/19	मातृनवमी, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, **नवमी का श्राद्ध**
	24	10	बुध	17	53	पुर्न	10	05	परि	14	05	कर्क	भ. 6/45 से 17/53 तक, श्राद्ध दशमी, **बुध वक्री 12/39, शुक्र (G)**
	25	11	गुरु	16	26	पुष्य	9	15	शिव	11	46	कर्क	इन्दिरा एकादशी व्रत, **एकादशी का श्राद्ध**, मंगल तुला में 11/00
	26	12	शुक्र	15	14	आश्ले	8	42	सिद्ध	9	39	सिं. 8/42	प्रदोष व्रत, सन्यासीनां श्राद्ध, सूर्य हस्त में 22/47, द्वादशी का श्राद्ध H
	27	13	शनि	14	21	मघा	8	26	साध्य / शुभ	7 / 30	46 / 10	सिंह	भ. 14/21 से 26/06 तक, श्राद्ध त्रयोदशी, गजछाया योग 8/26 तक (I)
	28	14	रवि	13	50	पू.फा.	8	29	शुक्ल	28	51	क.14/34	**सर्वपितृ श्राद्ध** 13/50 बाद (देखें पृष्ठ 76)
	29	अमा	चंद्र	13	42	उ.फा.	8	56	ब्रह्म	27	53	कन्या	**सोमवती अमावस**, सर्वपितृ श्राद्ध (13/42 तक) आवश्यके, मेला फाल्गु J
	30	1	मंग	14	03	हस्त	9	49	ऐंद्र	27	18	तु.22/26	शारदीय नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 28/05

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	6/08	18/52	6/03	18/39	6/02	18/42	6/29	18/48
2	6/09	18/51	6/03	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
3	6/10	18/50	6/04	18/36	6/03	18/40	6/29	18/46
4	6/11	18/49	6/04	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
5	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
6	6/12	18/47	6/05	18/33	6/05	18/35	6/29	18/44
7	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
8	6/13	18/43	6/06	18/31	6/06	18/33	6/30	18/43
9	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
10	6/14	18/40	6/07	18/28	6/07	18/30	6/30	18/41
11	6/15	18/38	6/07	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
12	6/16	18/37	6/08	18/26	6/08	18/28	6/30	18/40
13	6/16	18/37	6/08	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
14	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
15	6/17	18/35	6/09	18/22	6/10	18/24	6/30	18/37
16	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
17	6/18	18/31	6/10	18/20	6/11	18/22	6/31	18/35
18	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
19	6/20	18/28	6/11	18/17	6/12	18/19	6/31	18/34
—	—	—	—	—	—	—	—	—
20	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
21	6/22	18/26	6/12	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
22	6/22	18/25	6/13	18/14	6/14	18/15	6/32	18/31
23	6/23	18/24	6/13	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
24	6/24	18/23	6/14	18/12	6/15	18/13	6/32	18/29
25	6/24	18/21	6/14	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
26	6/25	18/20	6/15	18/09	6/16	18/10	6/33	18/27
27	6/25	18/18	6/15	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
28	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
29	6/26	18/15	6/16	18/06	6/18	18/06	6/33	18/24
30	6/27	18/14	6/17	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

0 हस्त में 26/07, सामवेदि उपाकर्म, राहु श्रव. (4), केतु आश्ले (2) में 29/08 **A** चौथ, चन्द्रदर्शन निषेधः, चन्द्रास्त रात्रि 20/34 (जालंधर), **B** चित्रा में 23/23 **(C)** कदली व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत **(D)** प्रतिपदा का श्राद्ध दुपै. 2/44 से 4/04 (देखें पृष्ठ 76), अथर्ववेदि उपाकर्म **(E)** द्वितीय का श्राद्ध 13/37 से 16/04 तक (देखें पृष्ठ 76) **(F)** तुला में 21/15, दक्षिण गोल प्रारम्भ **(G)** स्वाती में 21/14 **(H)** गजच्छाया योग 22/47 से प्रारंभ, गंडमूल, **(I)** शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध **(J)** व कपालमोचन (कुरुक्षेत्र)

वि. संवत् 2065, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा,पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टाईम]	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
आश्विन शुक्ल पक्ष	1	2	बुध	14	53	चित्रा	11	11	वैधृ	27	07	तुला	चन्द्रदर्शनम्	1	6/28	18/12	6/17	18/03	6/19	18/04	6/34	18/23
	2	3	गुरु	16	14	स्वा	13	03	विष्क	27	19	तुला	भ. 29/09 से, 1 शव्वाल (मुस्लि.) प्रारम्भ, **महात्मा गान्धी जयंती**	2	6/28	18/10	6/18	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
	3	4	शुक्र	18	05	विशा	15	23	प्रीति	27	52	वृ. 8/46	भ. 18/05 तक, वक्री बुध हस्त में 28/21,	3	6/29	18/09	6/18	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
	4	5	शनि	20	20	अनु	18	07	आयु	28	40	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत, गण्डमूल 18/07 से	4	6/30	18/08	6/19	17/59	6/21	18/00	6/34	18/21
	5	6	रवि	22	50	ज्ये.	21	06	सौभा	29	37	ध.21/06	मंगल स्वाती में 9/06, शुक्र विशाखा में 19/39	5	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
	6	7	चंद्र	25	22	मूल	24	08	शोभ	पू.	दि.	धनु	भ. 25/22 से, सरस्वती आवाहनं	6	6/31	18/06	6/20	17/57	6/22	17/58	6/35	18/19
	7	8	मंग	27	42	पू.षा.	26	58	शोभ	6	33	धनु	भ. 14/32 तक, महाष्टमी, **श्रीदुर्गाष्टमी**, भद्रकाली जयंती, सरस्वती पूजन	7	6/31	18/05	6/21	17/56	6/23	17/56	6/35	18/19
	8	9	बुध	29	34	उ.षा.	29	23	अति	7	17	म. 9/37	बलिदान दिवस, शस्त्रादि पूजा, मंगल पश्चिम में अस्त 19/10, गुरु **A**	8	6/32	18/04	6/21	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
	9	10	गुरु	पूरा	दि.	श्रव	पू.	दि.	सुक	7	39	मकर	**विजयादशमी (दशहरा)**, अपराजिता पूजन,	9	6/33	18/03	6/22	17/54	6/24	17/54	6/35	18/17
	10	10	शुक्र	6	47	श्रव	7	11	धृति	7	30	कुं.19/48	भ. 19/01 से, पंचक प्रा. 19/48, सूर्य चित्रा में 11/43, सरस्वती विसर्जन	10	6/33	18/01	6/22	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
	11	11	शनि	7	15	धनि	8	13	शूल गंड	6 29	46 24	कुम्भ	भ. 7/15 तक, पापांकुशा एकादशी व्रत, भरत मिलाप	11	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
	12	12	रवि	6	53	शत	8	29	वृद्धि	27	24	मी.26/10	प्रदोष व्रत	12	6/35	17/59	6/24	17/50	6/26	17/51	6/36	18/14
	—	13	रवि	29	45	— —	—	—	—	—	—	— —	त्रयोदिशी का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	13	14	चंद्र	27	55	पू.भा.	7	58	ध्रुव	24	51	मीन	भ. 27/55 से, **शुक्र वृश्चिक में 25/00**, वक्री बुध पूर्व से उदय 11/20	13	6/36	17/57	6/24	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
	14	पूर्ण	मंग	25	33	उ.भा. रेव	6 29	48 05	व्या.	21	50	मे.29/05	भ. 14/44 तक, **पंचक समाप्त 29/05, शरद् पूर्णिमा**, महर्षि वाल्मीकि **B**	14	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
कार्तिक कृष्ण पक्ष	15	1	बुध	22	46	अश्वि	27	01	हर्ष	18	27	मेष	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रा., **बुध मार्गी 25/38**	15	6/38	17/54	6/25	17/47	6/28	17/47	6/37	18/12
	16	2	गुरु	19	45	भर	24	44	वज्र	14	51	वृ. 30/8	भ. 30/13 से, सूर्य तुला में 29/21, कार्तिक संक्रान्ति, 30 मु., पुण्यकाल **C**	16	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
	17	3	शुक्र	16	40	कृति	22	25	सिद्धि	11	10	वृष	भ. 16/40 तक, **करक चतुर्थी (व्रत करवा चौथ)**, चं. उ. रात्रि 19/35 **D**	17	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
	18	4	शनि	13	39	रोहि	20	13	व्य. वरी	7 28	31 00	वृष		18	6/40	17/51	6/27	17/44	6/30	17/44	6/38	18/09
	19	5	रवि	10	51	मृग	18	15	परि	24	44	मि. 7/12	स्कन्द षष्ठी, शनि पू.फा. (4) में 7/47	19	6/41	17/50	6/28	17/43	6/31	17/43	6/38	18/08
	20	6	चंद्र	8	23	आर्द्रा	16	39	शिव	21	45	मिथुन	भ. 8/23 से 19/21 तक	20	6/41	17/49	6/28	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
	—	7	चंद्र	30	18	—	—	—	—	—	—	— —	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	21	8	मंग	28	39	पुर्न	15	27	सिद्ध	19	07	क. 9/42	**अहोई अष्टमी व्रत**, राधाष्टमी	21	6/42	17/48	6/29	17/41	6/32	17/41	6/39	18/06
	22	9	बुध	27	27	पुष्य	14	41	साध्य	16	50	कर्क	गंडमूल 14/41 बाद,	22	6/43	17/47	6/30	17/40	6/33	17/40	6/39	18/06
	23	10	गुरु	26	40	आश्ले	14	21	शुभ	14	54	सिं.14/21	भ. 15/04 से 26/40 तक, शक कार्तिक प्रा., सूर्य स्वाती में 22/18 **E**	23	6/43	17/46	6/30	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
	24	11	शुक्र	26	19	मघा	14	26	शुक्ल	13	18	सिंह	रमा एकादशी व्रत, कौमुदि महोत्सव प्रा., मंगल विशाखा में 20/12	24	6/44	17/45	6/31	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
	25	12	शनि	26	21	पू.फा.	14	55	ब्रह्म	12	01	कं.21/05	गोवत्स द्वादशी	25	6/45	17/44	6/32	17/37	6/35	17/37	6/40	18/04
	26	13	रवि	26	46	उ.फा.	15	45	ऐंद्र	11	02	कन्या	भ. 26/46 से, प्रदोष व्रत, धन त्र्योदशी, धनवन्तरी जयंती,यम तर्पण, दीपदान	26	6/46	17/43	6/32	17/37	6/36	17/36	6/41	18/04
	27	14	चंद्र	27	33	हस्त	16	58	वैधृ	10	20	तु.29/43	भ. 15/10 तक, नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमान जयन्ती, बुध चित्रा में 15/39,**F**	27	6/47	17/42	6/33	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
	28	अमा	मंग	28	44	चित्रा	18	33	विष्क	9	55	तुला	भौमवासरी कार्तिक अमावस, **दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन**, काली **G**	28	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
	29	का.शु.	बुध	30	19	स्वा.	20	30	प्रीति	9	49	तुला	कार्तिक शुक्ल पक्ष, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बली पूजा, विश्वकर्मा पूजा (पंजाब)	29	6/49	17/39	6/34	17/34	6/38	17/33	6/42	18/03
	30	2	गुरु	पूरा	दि.	विशा	22	51	आयु	10	00	वृ.16/13	चन्द्रदर्शन, **भ्रातृ दूज**—यम द्वितीया, विश्वकर्मा जयन्ती	30	6/50	17/38	6/35	17/34	6/39	17/32	6/42	18/03
	31	2	शुक्र	8	17	अनु	25	32	सौभा	10	29	वृश्चिक	**बुध तुला में 26/46**, जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	31	6/51	17/38	6/36	17/33	6/40	17/31	6/43	18/02

A पू.षा. (3) में 21/44, महानवमी, नवरात्रे समाप्त **B** जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोजागर व्रत **C** संक्रां. अगले दिन मध्याह्न तक, शुक्र अनु. में 18/54 **D** (जालन्धर) (देखें पृष्ठ 77)
E सूर्य सायन वृश्चिक में 6/39, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, गण्डमूलादि **F** शुक्र ज्ये. में 19/08, यम तर्पण, मास शिवरात्रि व्रत **G** पूजा, कुबेर पूजा (देखें पृष्ठ 77, 78), श्रीमहावीर निर्वाण

वि. संवत् 2065, नवंबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा,पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टाईम]
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1	3	शनि	10	36	ज्ये.	28	30	शोभ	11	14	ध.28/30	भ. 23/53 से, दूर्वा गणपति व्रत, गंडमूलादि
	2	4	रवि	13	11	मूल	पू.	दि.	अति	12	09	धनु	भ. 13/11 तक, गण्डमूलादि
	3	5	चंद्र	15	52	मूल	7	37	सुक	13	09	धनु	ज्ञान पंचमी, जया पंचमी, बुध पूर्व में अस्त 29/50, नैपच्यून मार्गी 12/08
	4	6	मंग	18	26	पू.षा.	10	41	धृति	14	05	म.17/25	सूर्य षष्ठी व्रत, गुरु पू.षा. (4) में 8/04, राहु श्रव (3), केतु आश्ले (1) में A
	5	7	बुध	20	39	उ.षा.	13	30	शूल	14	48	मकर	भ. 20/39 से प्रा., बुध स्वाती में 7/10,
	6	8	गुरु	22	18	श्रव	15	49	गंड	15	06	कुं.28/44	भ. 9/29 तक, **पंचक प्रारम्भ 28/44,** गोपाष्टमी, सूर्य विशाखा में 6/22
	7	9	शुक्र	23	11	धनि	17	27	वृद्धि	14	53	कुम्भ	**मंगल वृश्चिक में 26/45, शुक्र मूल (1) धनु में 20/35,** अक्षय नवमी, Z
	8	10	शनि	23	13	शत	18	16	ध्रुव	14	00	कुम्भ	
	9	11	रवि	22	21	पू.भा.	18	13	व्या.	12	26	मी.12/19	भ. 10/47 से 22/21 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी, भीष्मपंचक प्रारम्भ B
	10	12	चंद्र	20	38	उ.भा.	17	20	हर्ष	10	11	मीन	**तुलसी विवाह**
	11	13	मंग	18	12	रेव	15	42	वज्र / सिद्धि	7 / 27	18 / 52	मे.15/42	**पंचक समाप्त 15/42,** भौम प्रदोष व्रत, वैकुण्ठ चतुर्दशी
	12	14	बुध	15	12	अश्वि	13	29	व्य.	24	03	मेष	भ. 15/12 से 25/30 तक, मंगल अनु. में 19/35, श्रीसत्यनारायण C
	13	15	गुरु	11	47	भर	10	51	वरी	19	57	वृ.16/09	**कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयंती,** भीष्मपंचक समाप्त, बुध विशा. D
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	14	1/	शुक्र	8	11	कृति / रोह.	8 / 29	00 / 08	परि	15	46	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष, नेहरू जयन्ती (बाल दिवस),
	—	2	शुक्र	28	33	—	—	—	—	—	—	——	द्वितीया तिथि क्षय ०० ०० ००
	15	3	शनि	25	04	मृग	26	25	शिव	11	36	मि.15/45	भ. 14/49 से 25/04 तक, सूर्य वृश्चिक में 29/09, **मार्गशीर्ष संक्रान्ति,** E
	16	4	रवि	21	55	आर्द्रा	24	02	सिद्ध / साध्य	7 / 27	37 / 56	मिथुन	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20/31 (जालन्धर)
	17	5	चंद्र	19	13	पुर्न	22	07	शुभ	24	39	क.16/33	शहीदी दिन लाला लाजपतराय
	18	6	मंग	17	04	पुष्य	20	46	शुक्ल	21	49	कर्क	भ. 17/04 से 28/18 तक, शुक्र पू.षा. में 23/52
	19	7	बुध	15	32	आश्ले	20	01	ब्रह्म	19	30	सिं.20/01	कालभैरवाष्टमी, सूर्य अनु. में 12/29, **बुध वृश्चिक में 17/46**
	20	8	गुरु	14	39	मघा	19	53	ऐंद्र	17	40	सिंह	
	21	9	शुक्र	14	22	पू.फा.	20	21	वैधृ	16	19	कं.26/34	भ. 26/31 से, सूर्य सायन धनु में 28/14, बुध अनु. में 20/02
	22	10	शनि	14	39	उ.फा.	21	21	विष्क	15	24	कन्या	भ. 14/39 तक, शक मार्गशीर्ष: प्रारम्भ
	23	11	रवि	15	27	हस्त	22	49	प्रीति	14	52	कन्या	उत्पन्ना एकादशी व्रत, गुरु उ.षा. (1) में 11/14, सत्य साईं बाबा जयंती
	24	12	चंद्र	16	40	चित्रा	24	40	आयु	14	39	तु.11/42	
	25	13	मंग	18	16	स्वा	26	52	सौभा	14	44	तुला	भ. 18/16 से प्रा., भौम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत
	26	14	बुध	20	12	विशा	29	22	शोभ	15	04	वृ.22/43	भ. 7/14 तक, मे. पुरमंडल, श्रीबालाजी जयंती, शनि उ.फा. (1) में 18/10
	27	30	गुरु	22	25	अनु	पू.	दि.	अति	15	36	वृश्चिक	अमावस (देवपितृ कार्येषु), यूरेनस मार्गी 21/42
	28	नू	शुक्र	24	52	अनु	8	07	सुक	16	20	वृश्चिक	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ
	29	2	शनि	27	30	ज्ये.	11	05	धृति	17	13	ध.11/05	चन्द्रदर्शन, शुक्र उ.षा. में 29/44, बुध ज्ये. में 31/01
	30	3	रवि	30	12	मूल	14	11	शूल	18	11	धनु	जिल्हेज (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 14/11 तक

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	6/51	17/35	6/37	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
2	6/52	17/34	6/37	17/34	6/41	17/30	6/44	18/01
3	6/53	17/33	6/38	17/33	6/42	17/29	6/44	18/01
4	6/54	17/32	6/39	17/32	6/43	17/28	6/45	18/00
5	6/54	17/31	6/39	17/31	6/44	17/27	6/45	18/00
6	6/55	17/30	6/40	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
7	6/56	17/30	6/41	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
8	6/57	17/29	6/42	17/29	6/46	17/25	6/46	17/58
9	6/58	17/28	6/43	17/28	6/47	17/24	6/47	17/58
10	6/59	17/28	6/43	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
11	7/00	17/27	6/44	17/27	6/49	17/23	6/48	17/57
12	7/01	17/26	6/45	17/26	6/50	17/22	6/49	17/57
13	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
14	7/03	17/26	6/46	17/25	6/51	17/21	6/50	17/56
—	—	—	—	—	—	—	—	—
15	7/04	17/25	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
16	7/05	17/25	6/48	17/24	6/53	17/20	6/51	17/56
17	7/06	17/24	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/55
18	7/07	17/23	6/50	17/23	6/55	17/19	6/52	17/55
19	7/08	17/23	6/50	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
20	7/09	17/23	6/51	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
21	7/10	17/22	6/52	17/22	6/57	17/18	6/54	17/55
22	7/11	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
23	7/12	17/22	6/54	17/21	6/59	17/18	6/55	17/55
24	7/13	17/21	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
25	7/14	17/21	6/55	17/21	7/01	17/17	6/56	17/55
26	7/15	17/21	6/56	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
27	7/16	17/20	6/57	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
28	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
29	7/17	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/58	17/55
30	7/18	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/59	17/55

A 26/45 Z कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत B चातुर्मास्य व्रतादि नियम समाप्त C व्रत, त्रिपुरोत्सव, पुष्कर यात्रा प्रारम्भ D में 12/21, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), कार्तिक स्नान समाप्त, दीपदान

E पुण्यकाल संक्रान्ति अगले दिन मध्याह्न तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत

वि. संवत् 2065, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

वि. संवत् 2065, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2008 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टाईम]	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1	4	चंद्र	पू.	दि.	पू.षा.	17	18	गंड	19	09	म.24/04	भ. 19/32 से प्रा., मंगल ज्येष्ठा में 8/20	1	7/19	17/20	7/00	17/20	7/06	17/16	6/59	17/56
	2	4	मंग	8	51	उ.षा.	20	17	वृद्धि	20	01	मकर	भ. 8/51 तक, **शुक्र मकर में 25/44**, सूर्य ज्येष्ठा में 16/42	2	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
	3	5	बुध	11	15	श्रव	22	58	ध्रुव	20	38	मकर		3	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	4	6	गुरु	13	13	धनि	25	09	व्या.	20	52	कुं.12/08	चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी, **पंचक प्रारम्भ 12/08**	4	7/21	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	5	7	शुक्र	14	33	शत	26	40	हर्ष	20	35	कुम्भ	भ. 14/33 से 26/50 तक, मित्र सप्तमी	5	7/22	17/20	7/03	17/20	7/09	17/16	7/02	17/57
	6	8	शनि	15	06	पू.भा.	27	22	वज्र	19	42	मी.21/16	श्रीदुर्गाष्टमी	6	7/23	17/20	7/04	17/20	7/10	17/16	7/03	17/57
	7	9	रवि	14	48	उ.भा.	27	13	सिद्धि	18	08	मीन	नन्दा नवमी	7	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
	8	10	चंद्र	13	37	रेव	26	15	व्य.	15	53	मे.26/15	भ. 24/37 से, **पंचक समाप्त 26/15**, बुध मूल (1) धनु में 19/29	8	7/24	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/04	17/57
	9	11	मंग	11	36	अश्वि	24	31	वरी	12	59	मेष	भ. 11/36 तक, **मोक्षदा एकादशी, श्रीगीता जयंती, गुरू मकर राशि में 23/42**	9	7/25	17/20	7/06	17/21	7/12	17/17	7/05	17/58
	10	12/	बुध	8	54	भर	22	09	परि / शिव	9 / 29	32 / 37	वृ.27/29	प्रदोष व्रत, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	10	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	—	13	बुध	29	37	—	—	—	—	—	—	——	त्रयोदशी तिथि का क्षय oo oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	11	14	गुरु	25	58	कृति	19	22	सिद्ध	25	23	वृष	भ. 25/58 से, शुक्र श्रवण में 15/26, पिशाचमोचन श्राद्ध	11	7/27	17/21	7/07	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
	12	15	शुक्र	22	07	रोहि	16	18	साध्य	21	00	मि.26/44	भ. 12/03 तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, श्रीदत्तात्रेय जयंती, त्रिपुरभैरव जयंती A	12	7/28	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/07	17/59
पौष कृष्ण पक्ष	13	1	शनि	18	16	मृग	13	11	शुभ	16	35	मिथुन	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	13	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/18	7/07	17/59
	14	2	रवि	14	36	आर्द्रा	10	12	शुक्ल	12	19	क.26/10	भ. 24/56 से प्रारम्भ	14	7/29	17/22	7/09	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	15	3	चंद्र	11	16	पुर्न / पुष्य	7 / 29	32 / 21	ब्रह्म / ऐंद्र	8 / 28	19 / 43	कर्क	भ. 11/16 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, **सूर्य मूले (1) धनु में 19/46, पौष B**	15	7/30	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	16	4/	मंग	8	27	आश्ले	27	46	वैधृ	25	36	सिं.27/46	गण्डमूलादि विचार	16	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
	—	5	मंग	30	16	—	—	—	—	—	—	——	पंचमी तिथि क्षय oo oo oo	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	17	6	बुध	28	47	मघा	26	52	विष्क	23	03	सिंह	भ. 28/47 से प्रा., गण्डमूल 26/52 तक, बुध पू.षा. में 7/57	17	7/31	17/23	7/11	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
	18	7	गुरु	28	04	पू.फा.	26	43	प्रीति	21	06	सिंह	भ. 16/26 तक	18	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/20	7/10	18/01
	19	8	शुक्र	28	06	उ.फा.	27	18	आयु	19	44	कं. 8/48	**मंगल मूले 1 धनु में 11/32, बुध पश्चिम में उदय 9/32, रुक्मणी C**	19	7/32	17/23	7/12	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	20	9	शनि	28	49	हस्त	28	33	सौभा	18	55	कन्या		20	7/32	17/23	7/13	17/24	7/19	17/20	7/11	18/02
	21	10	रवि	30	09	चित्रा	30	23	शोभ	18	35	तु.17/24	भ. 17/29 से 30/09 तक, सूर्य सायन मकर में 17/34, उत्तरायण प्रा. D	21	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
	22	11	चंद्र	पू.	दि.	स्वा.	पू.	दि.	अति	18	40	तुला	शक पौष प्रारम्भ, शुक्र धनिष्ठा में 31/17	22	7/33	17/24	7/14	17/25	7/20	17/21	7/12	18/03
	23	11	मंग	7	59	स्वा.	8	41	सुक	19	05	वृ.28/38	सफला एकादशी व्रत	23	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
	24	12	बुध	10	10	विशा	11	20	धृति	19	43	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, गुरु उ.षा. (3) में 28/37	24	7/34	17/26	7/15	17/26	7/21	17/23	7/13	18/04
	25	13	गुरु	12	37	अनु	14	12	शूल	20	31	वृश्चिक	भ. 12/37 से 25/55 तक, **क्रिसमिस दिवस** (क्रि.), बुध उ.षा. में 23/37	25	7/35	17/26	7/15	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
	26	14	शुक्र	15	13	ज्ये.	17	14	गंड	21	25	ध.17/14	गण्डमूल विचार	26	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
	27	30	शनि	17	53	मूल	20	18	वृद्धि	22	20	धनु	**शनिवारी पौष अमावस स्नानदानादि**, बुध मकर में 29/52	27	7/36	17/27	7/16	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
पौष शुक्ल	28	[illegible]	रवि	20	30	पू.षा.	23	20	ध्रुव	23	13	म.30/04	पौष शुक्ल पक्ष, सूर्य पू.षा. में 21/56	28	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
	29	2	चंद्र	23	01	उ.षा.	26	14	व्या.	24	01	मकर	चन्द्रदर्शन, **शुक्र कुम्भ में 6/25**	29	7/36	17/29	7/17	17/29	7/23	17/26	7/15	18/06
	30	3	मंग	25	17	श्रव	28	55	हर्ष	24	38	मकर	**मोहर्रम (मुस्लि.)** हिजरी सन् 1430 शुरू, गौरी पूजन	30	7/37	17/30	7/17	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
	31	4	बुध	27	13	धनि	31	14	वज्र	24	59	कुं.18/07	भ. 14/15 से 27/13 तक, **पंचक प्रारम्भ 18/07, शनि वक्री 23/37**	31	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

A श्रीसत्यनारायण व्रत **B** संक्रान्ति, 30 मुहूर्त्ति, पुण्यकाल संक्रां. मध्याह्न बाद, चन्द्रोदय 20/34 (जालन्धर), **C** अष्टमी, अष्टका श्राद्ध **D** शिशिर ऋतु प्रारम्भ, पार्श्वनाथ जयंती (जैन)

वि. संवत् 2065, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2009 ई.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टाईम]
पौष शुक्ल पक्ष	1	5	गुरु	28	39	शत	पू.	दि.	सिद्धि	24	59	कुम्भ	जनवरी, सन् 2009 ई. प्रारम्भ:
	2	6	शुक्र	29	30	शत	9	05	व्य.	24	33	मी.28/05	
	3	7	शनि	29	39	पू.भा.	10	20	वरी	23	36	मीन	भ. 29/39 से प्रा., गुरु गोबिन्द सिंह जयंती (प्राचीन मतेन)
	4	8	रवि	29	03	उ.भा.	10	54	परि	22	04	मीन	भ.17/21 तक, बुध श्रवण में 27/00, श्रीदुर्गाष्टमी, शुक्र शत. में 8/34
	5	9	चंद्र	27	42	रेव	10	45	शिव	19	57	मे.10/45	पंचक समाप्त 10/45, श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं. (ना.), मंगल पू.षा. में 30/22
	6	10	मंग	25	39	अश्वि	9	52	सिद्ध	17	16	मेष	गण्डमूल 9/52 तक, राहु श्रव. (2), केतु पुष्य (4) में 24/23
	7	11	बुध	22	58	भर कृति	8 30	19 11	साध्य	14	04	वृ.13/50	भ. 12/19 से 22/58 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**
	8	12	गुरु	19	49	रोहि	27	37	शुभ शुक्ल	10 30	24 26	वृष	गुरु उ.षा. (4) में 16/30, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 24/10
	9	13	शुक्र	16	19	मृग	24	46	ब्रह्म	26	13	मि.14/13	प्रदोष व्रत
	10	14	शनि	12	38	आर्द्रा	21	48	ऐंद्र	21	56	मिथुन	भ.12/38 से 22/47 तक, सूर्य उ.षा. में 23/54, श्रीसत्यनारायण व्रत, शाकम्भरी जयंती
	11	15/	रवि	8	57	पुर्न	18	55	वैधृ	17	43	क.13/37	पौष पूर्णिमा, माघ स्नान प्रा., **बुध वक्री 22/08**, गुरु पश्चिम में अस्त **A**
माघ कृष्ण पक्ष	—	1	रवि	29	26	—	—	—	—	—	—	——	प्रतिपदा तिथि का क्षय °° °° °°
	12	2	चंद्र	26	14	पुष्य	16	17	विष्क	13	41	कर्क	**लोहड़ी पर्व** (पंजाबादि), जन्मदिन स्वामी विवेकानंद
	13	3	मंग	23	32	आश्ले	14	03	प्रीति आयु	9 30	59 44	सिं.14/03	भ. 12/53 से 23/32 तक, **सूर्य मकर में** 30/27, **माघ संक्रांति,** पुण्य **B**
	14	4	बुध	21	28	मघा	12	24	सौभा	28	00	सिंह	**श्रीगणेश संकट चौथ व्रत** (चन्द्रोदय 21/35, जालन्धर) वक्री बुध पश्चिम **C**
	15	5	गुरु	20	07	पू.फा.	11	25	शोभ	25	52	कं.17/17	
	16	6	शुक्र	19	35	उ.फा.	11	12	अति	24	23	कन्या	भ. 19/35 से प्रा., शुक्र पू.भा. में 26/35
	17	7	शनि	19	50	हस्त	11	46	सुक	23	30	तु.24/21	भ. 7/43 तक, स्वा. विवेकानन्द जयंती (मतान्तरे)
	18	8	रवि	20	52	चित्रा	13	06	धृति	23	12	तुला	वक्री बुध उ.षा. (4) में 5/52
	19	9	चंद्र	22	34	स्वा.	15	06	शूल	23	23	तुला	सूर्य सायन कुम्भ में 28/10
	20	10	मंग	24	45	विशा	17	37	गंड	23	56	वृ.10/57	भ. 11/39 से 24/45 तक
	21	11	बुध	27	17	अनु	20	31	वृद्धि	24	45	वृश्चिक	षट्तिला एकादशी व्रत, शक माघ प्रारम्भ
	22	12	गुरु	29	58	ज्ये.	23	35	ध्रुव	25	42	ध.23/35	तिल द्वादशी, गुरु श्रव. (1) में 20/22,
	23	13	शुक्र	पू.	दि.	मूल	26	41	व्या.	26	38	धनु	प्रदोष व्रत, सूर्य श्रवण में 26/12, गण्डमूल, नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती
	24	13	शनि	8	38	पू.षा.	29	39	हर्ष	27	30	धनु	भ. 8/38 से 21/54 तक, मासशिवरात्रि व्रत, मेरू त्र्यो., मंगल उ.षा. **(E)**
	25	14	रवि	11	09	उ.षा.	पू.	दि.	वज्र	28	11	म.12/22	
	26	30	चंद्र	13	25	उ.षा.	8	25	सिद्धि	28	38	मकर	**सोमवती मौनी अमावस,** वक्री बुध धनु में 21/17, **भारत गणतंत्र (F)**
माघ शुक्ल	27	1	मंग	15	22	श्रव	10	53	व्य.	28	50	कुं.23/58	चन्द्रदर्शन, माघ शुक्ल पक्ष, **पंचक प्रारम्भ 23/58,** मंगल मकर में **(G)**
	28	2	बुध	16	54	धनि	12	59	वरी	28	43	कुम्भ	सफर 1 मुस्लिम प्रारम्भ, बाबा लाल जयन्ती
	29	3	गुरु	18	01	शत	14	40	परि	28	15	कुम्भ	भ. 30/20 से, गौरी तृतीया व्रत
	30	4	शुक्र	18	39	पू.भा.	15	54	शिव	27	25	मी. 9/38	भ. 18/39 तक, **श्रीगणेश तिल चतुर्थी,** वरद ४, शुक्र उ.भा. में 29/37**(H)**
	31	5	शनि	18	46	उ.भा.	16	39	सिद्ध	26	10	मीन	**बसन्त पंचमी,** श्री ५, **सरस्वती जयन्ती**

गुरु अस्त 11 जनवरी

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	7/37	17/29	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
2	7/37	17/30	7/18	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
3	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
4	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
5	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
6	7/38	17/33	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
7	7/38	17/34	7/19	17/35	7/25	17/32	7/17	18/12
8	7/38	17/36	7/19	17/36	7/25	17/33	7/17	18/12
9	7/39	17/37	7/19	17/37	7/25	17/34	7/17	18/13
10	7/39	17/38	7/19	17/38	7/25	17/35	7/18	18/14
11	7/39	17/38	7/20	17/38	7/25	17/36	7/18	18/14
—	—	—	—	—	—	—	—	—
12	7/38	17/39	7/20	17/39	7/25	17/36	7/18	18/15
13	7/38	17/39	7/19	17/40	7/25	17/37	7/19	18/16
14	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
15	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
16	7/37	17/43	7/19	17/42	7/25	17/40	7/19	18/18
17	7/37	17/43	7/19	17/43	7/24	17/41	7/19	18/18
18	7/37	17/44	7/19	17/44	7/24	17/42	7/19	18/19
19	7/36	17/45	7/18	17/45	7/24	17/43	7/19	18/20
20	7/36	17/46	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
21	7/36	17/47	7/18	17/47	7/24	17/44	7/19	18/21
22	7/35	17/48	7/18	17/47	7/23	17/45	7/19	18/22
23	7/35	17/49	7/17	17/48	7/23	17/46	7/19	18/22
24	7/35	17/50	7/17	17/49	7/23	17/47	7/19	18/23
25	7/35	17/51	7/17	17/50	7/22	17/48	7/19	18/23
26	7/34	17/52	7/16	17/51	7/22	17/49	7/18	18/24
27	7/33	17/53	7/16	17/52	7/21	17/50	7/18	18/24
28	7/32	17/54	7/16	17/52	7/21	17/51	7/18	18/25
29	7/32	17/55	7/15	17/53	7/20	17/52	7/18	18/25
30	7/31	17/56	7/15	17/54	7/20	17/53	7/18	18/26
31	7/31	17/57	7/14	17/55	7/19	17/54	7/18	18/27

A 24/10, माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ **(B)** संक्रान्ति अगले दिन मध्याह्न तक, निरयण उत्तरायण प्रारंभ **(C)** में अस्त 24/30 **(D)** गण्डमूल विचार, नेताजी सुभाषचन्द्र जयन्ती **(E)** में 18/21
(F) दिवस, वक्री बुध पूर्व से उदय 9/54, कंकण सूर्यग्रहण (देखें पृष्ठ 15) **(G)** 26/26 शुक्र मीन में 12/01 **(H)** चन्द्रास्त 21/54 (जालन्धर)

वि. संवत् 2065, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2009 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टाईम]	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मि.	जम्मू सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	मुम्बई सूर्योदय घं. मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मि.
माघ शुक्ल पक्ष	1	6	रवि	18 21	रेव	16 53	साध्य	24 31	मे.16/53	पंचक समाप्त 16/53, **बुध मार्गी 12/48**	1	7/30	17/57	7/14	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	7	चंद्र	17 24	अश्वि	16 36	शुभ	22 26	मेष	भ. 17/24 से 28/40 तक, रथ-भानु-आरोग्य सप्तमी, अचला सप्तमी, **A**	2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	8	मंग	15 55	भर	15 47	शुक्ल	19 56	वृ.21/30	भीष्माष्टमी	3	7/29	17/58	7/12	17/57	7/17	17/56	7/17	18/29
	4	9	बुध	13 56	कृति	14 29	ब्रह्म	17 03	वृष		4	7/28	17/59	7/12	17/58	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	10	गुरु	11 30	रोहि	12 45	ऐंद्र	13 50	मि.23/45	भ. 22/07 से, सूर्य धनि. में 29/17, गुरु श्रव (2) में 22/59 **B**	5	7/28	18/00	7/11	17/59	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	11/	शुक्र	8 43	मृग	10 40	वैधृ / विष्क	10/30 19/36	मिथुन	भ. 8/43 तक, जया एकादशी व्रत, भीष्म द्वादशी, तिल द्वादशी	6	7/27	18/02	7/11	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	—	12	शुक्र	29 41	—	— —	—	— —	— —	द्वादशी तिथि क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—
	7	13	शनि	26 31	आर्द्रा / पुन	8/29 20/54	प्रीति	26 48	क.24/30	शनि प्रदोष व्रत, **बुध मकर में 21/44**, मंगल पूर्व से उदय 21/15 **(C)**	7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
	8	14	रवि	23 21	पुष्य	27 28	आयु	22 59	कर्क	भ. 23/21 से प्रारम्भ	8	7/25	18/04	7/09	18/01	7/14	18/00	7/15	18/31
	9	15	चंद्र	20 19	आश्ले	25 14	सौभा	19 17	सिं.25/14	भ. 9/50 तक, **माघ पूर्णिमा**, स्नान दानादि, **गुरु रविदास जयंती (D)**	9	7/24	18/05	7/09	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	10	1	मंग	17 36	मघा	23 19	शोभ	15 50	सिंह	फाल्गुन कृष्ण पक्ष: प्रारम्भ, गंडमूलादि — **गुरु उदय 9 फरवरी**	10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	11	2	बुध	15 19	पू.फा.	21 53	अति	12 43	कं.27/36	भ. 26/28 से प्रारम्भ,	11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
	12	3	गुरु	13 36	उ.फा.	21 03	सुक	10 04	कन्या	भ. 13/36 तक, सूर्य कुम्भ में 19/24, **फाल्गुन संक्रान्ति (E)**	12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/11	18/04	7/13	18/33
	13	4	शुक्र	12 35	हस्त	20 56	धृति / शूल	7/30 57/26	कन्या	नेपच्यून	13	7/21	18/08	7/05	18/05	7/10	18/04	7/12	18/34
	14	5	शनि	12 21	चित्रा	21 34	गंड	29 32	तु. 9/09		14	7/20	18/09	7/05	18/06	7/09	18/05	7/12	18/34
	15	6	रवि	12 54	स्वा.	22 59	वृद्धि	29 14	तुला	भ. 12/54 से 25/34 तक	15	7/19	18/09	7/04	18/07	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	7	चंद्र	14 13	विशा	25 05	ध्रुव	29 27	वृ.18/30		16	7/18	18/10	7/03	18/08	7/07	18/07	7/11	18/35
	17	8	मंग	16 10	अनु.	27 43	व्या.	30 04	वृश्चिक	जानकी जयंती,	17	7/17	18/11	7/02	18/08	7/06	18/08	7/10	18/36
	18	9	बुध	18 35	ज्ये.	30 42	हर्ष	30 57	ध.30/42	सूर्य सायन मीन में 18/16, बुध श्रवण में 11/13, शुक्र रेवती में **(F)**	18	7/16	18/12	7/01	18/09	7/05	18/09	7/09	18/36
	19	10	गुरु	21 14	मूल	पू. दि.	वज्र	पू. दि.	धनु	भ. 7/55 से 21/14 तक, सूर्य शत. में 9/51, गंडमूलादि, स्वामी **(G)**	19	7/15	18/13	7/00	18/10	7/04	18/09	7/09	18/37
	20	11	शुक्र	23 53	मूल	9 49	वज्र	7 55	धनु	विजया एकादशी व्रत, शक फाल्गुन प्रारम्भ, गुरु श्रव. (3) में 7/07	20	7/14	18/14	6/59	18/11	7/03	18/10	7/08	18/37
	21	12	शनि	26 19	पू.षा.	12 50	सिद्धि	8 51	म.19/33		21	7/13	18/15	6/59	18/11	7/02	18/11	7/08	18/37
	22	13	रवि	28 24	उ.षा.	15 34	व्य.	9 34	मकर	भ. 28/24 से प्रा., प्रदोष व्रत	22	7/12	18/16	6/58	18/12	7/01	18/12	7/07	18/38
	23	14	चंद्र	30 00	श्रव	17 54	वरी	9 59	कुं.30/53	भ. 17/12 तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, पंचक प्रारम्भ 30/53**	23	7/11	18/17	6/57	18/13	7/00	18/13	7/06	18/38
	24	30	मंग	पूरा दि.	धनि	19 45	परि	10 02	कुम्भ	भौमवती अमावस्या	24	7/10	18/17	6/56	18/13	6/59	18/14	7/06	18/38
	25	30	बुध	7 05	शत	21 06	शिव	9 41	कुम्भ	अमावस्या देवादि कार्येषु	25	7/09	18/18	6/55	18/14	6/58	18/15	7/05	18/39
फाल्गु. शु.	26	प्रशु	गुरु	7 39	पू.भा.	21 58	सिद्ध	8 57	मी.15/47	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मंगल धनिष्ठा में 27/54	26	7/07	18/19	6/54	18/15	6/57	18/15	7/04	18/39
	27	2	शुक्र	7 43	उ.भा.	22 22	साध्य / शुभ	7/30 50/22	मीन	परमहंस श्रीरामकृष्ण जयन्ती, शिवाजी जयन्ती, रवि-उल्लावल (मु.) मास प्रा.	27	7/06	18/20	6/53	18/15	6/56	18/16	7/03	18/39
	28	3/	शनि	7 20	रेव	22 22	शुक्ल	28 35	मे.22/22	भ. 18/56 से 30/32 तक, **पंचक समाप्त 22/22**, बुध धनि. में 15/07	28	7/05	18/20	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39
	—	4	शनि	30 32	—	— —	—	— —	— —	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	—	—	—	—	—	—	—	—	—

A पुत्र सप्तमी व्रत, श्रीमाध्वाचार्य जयंती **B** वक्री शनि पू.फा. (4) में 17/41 **C** मेला जैसलमेर (राज.) प्रारम्भ **D** मंगल श्रवण में 24/59, गुरु पूर्व से उदय 29/32, श्रीसत्यनारायण व्रत **E** 45 मुहू., पुण्यकाल सं. 13/00 बाद, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21/22 (जालन्धर), गुरु बाल्य समाप्त 28/32 **F** 14/45, वसन्त ऋतु प्रारम्भ **G** दयानन्द जयन्ती

वि. संवत् 2065, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में, (भा. स्टैं. टा.) सन् 2009 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचकारम्भ/समा. सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.]
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	5	रवि	29	24	अश्वि	22	00	ब्रह्म	26	31	मेष	याज्ञवल्क्य जयंती, गण्डमूलादि, मार्च सन् 2009 ई. प्रारम्भ
	2	6	चंद्र	27	57	भर	21	19	ऐंद्र	24	12	वृ.27/06	
	3	7	मंग	26	13	कृति	20	21	वैधृ	21	40	वृष	भ. 26/13 से प्रारम्भ
	4	8	बुध	24	15	रोहि	19	09	विष्क	18	56	वृष	भ.13/14 तक, होलाष्टक प्रारम्भ, सूर्य पू.भा. में 16/05, बुध कुंभ में 27/39 **A**
	5	9	गुरु	22	05	मृग	17	43	प्रीति	16	02	मि. 6/28	
	6	10	शुक्र	19	45	आर्द्रा	16	08	आयु	13	00	मिथुन	भ. 30/32 से प्रा., गुरु श्रव. (4) में 28/14, **शुक्र वक्री 22/45**
	7	11	शनि	17	19	पुर्न	14	26	सौभा शोभ	9 30	51 40	क. 8/52	भ. 17/19 तक, आमलकी एकादशी व्रत, **मंगल कुंभ में 16/31**
	8	12	रवि	14	50	पुष्य	12	41	अति	27	29	कर्क	प्रदोष व्रत, गण्डमूल 12/41 से प्रा., गोविन्द द्वादशी
	9	13	चंद्र	12	24	आश्ले	10	59	सुक	24	23	सिं.10/59	बुध शतभिषा 10/15, गण्डमूलादि
	10	14	मंग	10	08	मघा	9	25	धृति	21	29	सिंह	भ. 10/8 से 21/08 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिका दहन रात्रि **B**
	11	15/	बुध	8	08	पू.फा.	8	07	शूल	18	51	कं.13/52	फाल्गुणी पूर्णिमा, **होली पर्व**, चैतन्य महाप्रभु जयं., होलाष्टक समाप्त **Z**
चैत्र कृष्ण पक्ष	—	चैकृ	बुध	30	32	—	—	—	—	—	—	— —	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ०० ००
	12	2	गुरु	29	27	उ.फा.	7	14	गंड	16	34	कन्या	सन्त तुकाराम जयन्ती, होला मेला (श्रीआनन्दपुर साहिब)
	13	3	शुक्र	29	00	हस्त	6	51	वृद्धि	14	46	तु.18/53	भ. 17/14 से 29/00 तक
	14	4	शनि	29	15	चित्रा	7	05	ध्रुव	13	28	तुला	**सूर्य मीन में 16/16, चैत्र संक्रांति,** पुण्यकाल संक्रां. प्रात: 9/52 के **(C)**
	15	5	रवि	30	13	स्वा.	8	01	व्या.	12	44	वृ.27/10	मंगल शत. में 28/55, मेला नवचण्डी (मेरठ), श्रीरंग पंचमी
	16	6	चंद्र	पू.	दि.	विशा	9	38	हर्ष	12	33	वृश्चिक	बुध पूर्व में अस्त 27/40
	17	6	मंग	7	52	अनु	11	54	वज्र	12	52	वृश्चिक	भ. 7/52 से 20/58 तक, सूर्य उभा. में 24/37, बुध पू.भा. में 9/09, **D**
	18	7	बुध	10	03	ज्ये.	14	39	सिद्धि	13	34	ध.14/39	गण्डमूलादि, शीतला सप्तमी
	19	8	गुरु	12	35	मूल	17	41	व्य.	14	30	धनु	शीतलाष्टमी व्रत, गण्डमूल
	20	9	शुक्र	15	12	पू.षा.	20	45	वरी	15	29	म.27/30	भ. 28/25 से, सूर्य सायन मेष में 17/14, महाविषुव दिवस, उत्तर **E**
	21	10	शनि	17	38	उ.षा.	23	37	परि	16	20	मकर	भ. 17/38 तक
	22	11	रवि	19	40	श्रव	26	02	शिव	16	53	मकर	पापमोचनी एकादशी व्र., बुध मीन में 21/34, शाक: चैत्र, सं. 1931 प्रारम्भ **F**
	23	12	चंद्र	21	08	धनि	27	54	सिद्ध	17	01	कुं.15/03	**पंचक प्रारम्भ 15/03,** वारूणी योग 27/54 से अगले दिन तक
	24	13	मंग	21	57	शत	29	07	साध्य	16	40	कुम्भ	भौम प्रदोष व्रत, भ. 21/57 से, वारूणी योग 21/56 तक, बुध **G**
	25	14	बुध	22	05	पू.भा.	29	41	शुभ	15	48	मी.23/36	भ. 10/01 तक, मेला पृथुदक पिहोवा (कु.)
	26	30	गुरु	21	36	उ.भा.	29	41	शुक्ल	14	25	मीन	चैत्र अमावस देवपितृ आदि कार्येषु, **विक्रमी संवत् 2065 पूर्ण**

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
1	7/03	18/22	6/51	18/17	6/54	18/17	7/02	18/40
2	7/02	18/23	6/50	18/17	6/53	18/17	7/01	18/40
3	7/01	18/24	6/49	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
4	7/00	18/25	6/48	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/19	7/00	18/42
6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/47	18/21	6/58	18/42
8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/46	18/21	6/57	18/43
9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/45	18/22	6/56	18/43
10	6/52	18/31	6/41	18/22	6/43	18/23	6/55	18/44
11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/23	6/54	18/44
—	—	—	—	—	—	—	—	—
12	6/49	18/32	6/39	18/24	6/41	18/24	6/53	18/44
13	6/48	18/33	6/38	18/24	6/40	18/25	6/53	18/44
14	6/47	18/33	6/37	18/25	6/39	18/25	6/52	18/44
15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45
21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/30	18/30	6/46	18/45
22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/29	18/30	6/45	18/46
23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/25	18/32	6/44	18/47
26	6/33	18/41	6/22	18/31	6/24	18/33	6/43	18/47

A अन्नपूर्णा अष्टमी **B** भद्रा के बाद, राहु श्रवण (1), केतु पुष्य (3) में 22/08 **Z** वसन्तोत्सव, धुलैण्डी, चैत्र कृष्ण पक्ष परारम्भ **C** बाद, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 22/08 (जालन्धर) **D** गं.मू. 11/54 से **E** गोलार्द्ध प्रारम्भ **F** गुरु धनि. (1) में 25/40, वक्री शुक्र उ.भा. (4) में 11/08, शनि पू.फा. (3) में 21/42 **G** उ.भा. में 15/57,

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2065 (सन् 2008-09 ई.)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अप्रै. 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1 अप्रैल	श्रवण	2	38	8	51	15	03	21	16
2 अप्रैल	धनि.	3	39	9	33	15	37	21	35
3 अप्रैल	शत.	3	34	9	25	15	15	21	03
4 अप्रैल	पू.भा.	2	52	8	32	14	12	19	52
5 अप्रैल	उ.भा.	1	28	6	59	12	29	18	01
5/6 अप्रैल	रेव.	23	31	4	55	10	20	15	44
6/7 अप्रैल	अश्वि.	21	08	2	29	7	51	13	12
7/8 अप्रैल	भर.	18	33	23	53	5	13	10	33
8/9 अप्रैल	कृति	15	54	21	15	2	37	8	00
9/10 अप्रैल	रोहि.	13	22	18	48	00	16	5	42
10/11 अप्रै.	मृग.	11	08	16	40	22	10	3	45
11/12 अप्रै.	आर्द्रा	9	18	14	58	20	38	2	18
12/13 अप्रै.	पुर्न	7	58	13	46	19	34	1	21
13/14 अप्रै.	पुष्य	7	13	13	10	19	07	1	05
14/15 अप्रै.	श्ले.	7	02	13	08	19	14	1	20
15/16 अप्रै.	मघा	7	25	13	38	19	52	2	06
16/17 अप्रै.	पू.फा.	8	19	14	39	20	59	3	19
17/18 अप्रै.	उ.फा.	9	39	16	03	22	30	4	56
18/19 अप्रै.	हस्त	11	23	17	54	00	25	6	55
19/20 अप्रै.	चित्रा	13	26	20	01	2	34	9	11
20/21 अप्रै.	स्वा.	15	47	22	26	5	05	11	44
21/22 अप्रै.	विशा.	18	23	1	05	7	47	14	28
22/23 अप्रै.	अनु.	21	12	3	56	10	44	17	24
24 अप्रैल	ज्ये.	0	08	6	53	13	37	20	22
25 अप्रैल	मूला	3	07	9	50	16	33	23	16
26/27 अप्रै.	पू.षा.	5	59	12	38	19	17	1	55
27/28 अप्रै.	उ.षा.	8	34	15	09	21	39	4	10
28/29 अप्रै.	श्रवण	10	41	17	03	23	25	5	47
29/30 अप्रै.	धनि.	12	09	18	21	24	36	6	42
30/1 मई	शत.	12	51	18	49	24	47	6	45

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
मई 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 मई	पू.भा.	12	43	18	30	0	19	6	06
2/3 मई	उ.भा.	11	47	17	22	22	57	4	32
3/4 मई	रेव.	10	07	15	32	20	58	2	23
4 मई	अश्वि.	7	49	13	08	18	27	23	46
5 मई	भरणी	5	05	10	20	15	35	20	50
6 मई	कृति.	2	05	7	20	12	34	17	49
6/7 मई	रोहिणी	23	03	4	20	9	36	14	53
7/8 मई	मृग.	20	09	1	30	6	49	12	13
8/9 मई	आर्द्रा	17	35	23	04	4	33	10	01
9/10 मई	पुनर्वसु	15	30	21	06	2	43	8	21
10/11 मई	पुष्य	14	02	19	51	1	40	7	28
11/12 मई	आश्ले.	13	17	19	16	1	16	7	15
12/13 मई	मघा	13	15	19	25	1	35	7	45
13/14 मई	पू.फा.	13	55	20	14	2	33	8	53
14/15 मई	उ.फा.	15	12	21	37	4	05	10	33
15/16 मई	हस्त	17	01	23	35	6	08	12	42
16/17 मई	चित्रा	19	15	1	53	8	30	15	08
17/18 मई	स्वाती	21	46	4	27	11	08	17	49
19 मई	विशा.	00	30	7	13	13	56	20	39
20 मई	अनु.	03	23	10	07	16	51	23	35
21/22 मई	ज्ये.	6	19	13	03	19	47	2	32
22/23 मई	मूल	9	16	15	59	22	42	5	25
23/24 मई	पू.षा.	12	08	18	48	1	28	8	09
24/25 मई	उ.षा.	14	49	21	27	4	02	10	36
25/26 मई	श्रवण	17	11	23	39	6	07	12	36
26/27 मई	धनि.	19	04	1	24	7	47	14	06
27/28 मई	शत.	20	21	2	29	8	37	14	45
28/29 मई	पू.भा.	20	54	2	51	8	47	14	48
29/30 मई	उ.भा.	20	41	2	26	8	11	13	56
30/31 मई	रेवती	19	40	1	14	6	48	12	22
31/1 जून	अश्वि.	17	57	23	22	4	47	10	12

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जून 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 जून	भर.	15	38	20	56	2	15	7	33
2/3 जून	कृति	12	52	18	07	23	21	4	36
3/4 जून	रोहि	9	50	15	04	20	17	1	31
4/5 जून	मृग	6	45	12	00	17	14	22	30
5/6 जून	आर्द्रा	3	47	9	07	14	28	19	48
6 जून	पुर्न	1	09	6	37	12	03	17	30
6/7 जून	पुष्य	23	01	4	39	10	16	15	54
7/8 जून	आश्ले.	21	32	3	20	9	09	14	57
8/9 जून	मघा	20	46	2	47	8	47	14	48
9/10 जून	पू.फा.	20	48	3	00	9	12	15	24
10/11 जून	उ.फा.	21	36	3	54	10	19	16	42
11/12 जून	हस्त	23	05	5	36	12	08	18	39
13/14 जून	चित्रा	1	10	7	47	14	22	21	02
14/15 जून	स्वा.	3	40	10	22	17	04	23	46
15/16 जून	विशा	6	28	13	12	19	55	2	39
16/17 जून	अनु.	9	23	16	07	22	52	5	36
17/18 जून	ज्ये.	12	21	19	05	1	48	8	32
18/19 जून	मूल	15	15	21	56	4	38	11	19
19/20 जून	पू.षा.	18	01	0	39	7	18	13	57
20/21 जून	उ.षा.	20	35	3	11	9	45	16	18
21/23 जून	श्रव.	22	52	5	21	11	50	18	19
23/24 जून	धनि.	0	48	7	11	13	35	19	55
24/25 जून	शत.	2	16	8	30	14	44	20	57
25/26 जून	पू.भा.	3	11	9	17	15	22	21	29
26/27 जून	उ.भा.	3	30	9	25	15	19	21	14
27/28 जून	रेव.	3	09	8	54	14	39	20	24
28/29 जून	अश्वि.	2	09	7	45	13	21	18	57
29 जून	भर.	0	33	6	01	11	30	16	58
29/30 जून	कृति	22	26	3	50	9	12	14	33
30/1 जुला.	रोहि.	19	56	1	15	6	34	11	53

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

जुलाई 2008	नक्षत्र	1 घं.	1 मिं.	2 घं.	2 मिं.	3 घं.	3 मिं.	4 घं.	4 मिं.
1/2 जुलाई	मृग	17	12	22	30	3	48	9	08
2/3 जुलाई	आर्द्रा	14	25	19	45	1	04	6	24
3/4 जुलाई	पुर्न	11	44	17	08	22	32	3	55
4/5 जुलाई	पुष्य	9	21	14	52	20	24	1	55
5/6 जुलाई	अश्ले	7	26	13	06	18	46	0	26
6/7 जुलाई	मघा	6	06	11	57	17	47	23	38
7/8 जुलाई	पू.फा.	5	29	11	31	17	33	23	35
8/9 जुलाई	उ.फा.	5	37	11	47	18	02	0	18
9/10 जुलाई	हस्त	6	32	12	56	19	21	1	45
10/11 जुला.	चित्रा	8	09	14	40	21	12	27	48
11/12 जुला.	स्वा.	10	22	17	01	23	41	6	21
12/13 जुला.	विशा.	13	00	19	43	2	27	9	10
13/14 जुला.	अनु.	15	54	22	38	5	23	12	08
14/15 जुला.	ज्ये.	18	52	1	35	8	19	15	02
15/17 जुला.	मूल	21	45	4	25	11	06	17	47
17/18 जुला.	पू.षा.	0	27	7	03	13	39	20	15
18/19 जुला.	उ.षा.	2	51	9	24	15	54	22	24
19/20 जुला.	श्रव.	4	55	11	20	17	45	0	10
20/21 जुला.	धनि.	6	35	12	55	19	16	1	33
21/22 जुला.	शत.	7	50	14	02	20	15	2	28
22/23 जुला.	पू.भा.	8	40	14	45	20	52	2	58
23/24 जुला.	उ.भा.	9	01	14	59	20	58	2	56
24/25 जुला.	रेव	8	54	14	45	20	37	2	28
25/26 जुला.	अश्वि.	8	19	14	03	19	48	1	32
26/27 जुला.	भर.	7	16	12	54	18	33	0	11
27/28 जुला.	कृति	5	49	11	24	16	56	22	29
28/29 जुला.	रोहि.	4	01	9	30	14	59	20	28
29 जुलाई	मृग.	1	57	7	24	12	52	18	18
29/30 जुला.	आर्द्रा	23	45	5	12	10	38	16	08
30/31 जुला.	पुर्न	21	32	3	00	8	29	13	56
31/1 अग.	पुष्य	19	25	0	57	6	30	12	03

अग. 2008	नक्षत्र	1 घं.	1 मिं.	2 घं.	2 मिं.	3 घं.	3 मिं.	4 घं.	4 मिं.
1/2 अग.	आश्ले.	17	35	23	13	4	52	10	30
2/3 अग.	मघा	16	08	21	54	3	41	9	27
3/4 अग.	पू.फा.	15	13	21	09	3	04	9	00
4/5 अग.	उ.फा.	14	56	20	58	3	06	9	14
5/6 अग.	हस्त	15	20	21	36	3	53	10	09
6/7 अग.	चित्रा	16	26	22	50	5	14	11	43
7/8 अग.	स्वा.	18	12	0	47	7	22	13	57
8/9 अग.	विशा.	20	32	3	13	9	53	16	33
9/11 अग.	अनु.	23	16	6	00	12	43	19	27
11/12 अग.	ज्ये.	2	11	8	55	15	38	22	22
12/13 अग.	मूल	5	06	11	47	18	27	1	08
13/14 अग.	पू.षा.	7	49	14	25	21	00	3	36
14/15 अग.	उ.षा.	10	12	16	43	23	10	5	39
15/16 अग.	श्रव.	12	08	18	29	0	51	7	12
16/17 अग.	धनि.	13	33	19	49	2	04	8	16
17/18 अग.	शत.	14	28	20	34	2	41	8	47
18/19 अग.	पू.भा.	14	54	20	54	2	55	8	56
19/20 अग.	उ.भा.	14	53	20	47	2	41	8	35
20/21 अग.	रेव.	14	29	20	18	2	06	7	55
21/22 अग.	अश्वि.	13	44	19	28	1	13	6	58
22/23 अग.	भर.	12	42	18	23	0	05	5	46
23/24 अग.	कृति.	11	27	17	07	22	44	4	23
24/25 अग.	रोहि.	10	02	15	39	21	16	2	53
25/26 अग.	मृग.	8	30	14	06	19	42	1	18
26/27 अग.	आर्द्रा	6	54	12	30	18	07	23	43
27/28 अग.	पुर्न	5	19	10	56	16	34	22	10
28/29 अग.	पुष्य	3	48	9	28	15	07	20	47
29/30 अग.	आश्ले.	2	27	8	11	13	54	19	38
30/31 अग.	मघा	1	22	7	11	12	59	18	48
31/1 सितं.	पू.फा.	0	37	6	32	12	28	18	24

सितं. 2008	नक्षत्र	1 घं.	1 मिं.	2 घं.	2 मिं.	3 घं.	3 मिं.	4 घं.	4 मिं.
1/2 सितं.	उफा.	0	09	6	19	12	24	18	28
2/3 सितं.	हस्त	0	32	6	44	12	57	19	09
3/4 सितं.	चित्रा	1	21	7	40	14	00	20	24
4/5 सितं.	स्वा.	2	47	9	17	15	47	22	18
5/6 सितं.	विशा.	4	48	11	24	18	01	0	38
6/7 सितं.	अनु.	7	18	14	00	20	43	3	26
7/8 सितं.	ज्ये.	10	08	16	52	23	37	6	22
8/9 सितं.	मूल	13	06	19	49	2	31	9	14
9/10 सितं.	पू.षा.	15	57	22	35	5	14	11	52
10/11 सितं.	उ.षा.	18	30	1	04	7	33	14	03
11/12 सितं.	श्रव	20	33	2	54	9	16	15	37
12/13 सितं.	धनि	21	59	4	14	10	27	16	36
13/14 सितं.	शत	22	46	4	48	10	50	16	52
14/15 सितं.	पू.भा.	22	54	4	48	10	42	16	37
15/16 सितं.	उ.भा.	22	28	4	14	10	01	15	47
16/17 सितं.	रेव	21	33	3	14	8	55	14	36
17/18 सितं.	अश्वि.	20	17	1	54	7	31	13	08
18/19 सितं.	भर	18	45	0	20	5	56	11	31
19/20 सितं.	कृति	17	07	22	42	4	18	9	53
20/21 सितं.	रोहि	15	28	21	04	2	40	8	16
21/22 सितं.	मृग	13	52	19	29	1	07	6	46
22/23 सितं.	आर्द्रा	12	25	18	06	23	46	5	27
23/24 सितं.	पुर्न	11	08	16	52	22	37	4	19
24/25 सितं.	पुष्य	10	05	15	52	21	40	3	27
25/26 सितं.	अश्ले	9	15	15	07	20	59	2	50
26/27 सितं.	मघा	8	42	14	38	20	34	2	30
27/28 सितं.	पू.फा.	8	26	14	27	20	27	2	28
28/29 सितं.	उ.फा.	8	29	14	34	20	41	2	49
29/30 सितं.	हस्त	8	56	15	09	21	23	3	36
30/1 अक्.	चित्रा	9	49	16	07	22	26	4	49

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
अक्तू. 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 अक्तू.	स्वा.	11	11	17	39	0	07	6	35
2/3 अक्तू.	विशा.	13	03	19	38	2	12	8	46
3/4 अक्तू.	अनु.	15	23	22	04	4	45	11	26
4/5 अक्तू.	ज्ये.	18	07	0	52	7	36	14	21
5/7 अक्तू.	मूल	21	06	3	51	10	37	17	22
7/8 अक्तू.	पू.षा.	00	08	6	50	13	33	20	15
8/9 अक्तू.	उ.षा.	2	58	9	37	16	13	22	48
9/10 अक्तू.	श्रव	5	23	11	50	18	17	0	44
10/11 अक्तू.	धनि	7	11	13	28	19	48	1	59
11/12 अक्तू.	शत	8	13	14	17	20	21	2	25
12/13 अक्तू.	पू.भा.	8	29	14	22	20	16	2	10
13/14 अक्तू.	उ.भा.	7	58	13	40	19	23	1	05
14/15 अक्तू.	रेव	6	48	12	22	17	57	23	31
15/16 अक्तू.	अश्वि.	5	05	10	34	16	03	21	32
16/17 अक्तू.	भर.	3	01	8	27	13	52	19	18
17 अक्तू.	कृति	0	44	6	08	11	35	17	00
17/18 अक्तू.	रोहि	22	25	3	52	9	19	14	46
18/19 अक्तू.	मृग.	20	13	1	43	7	12	12	44
19/20 अक्तू.	आर्द्रा	18	15	23	51	5	27	11	03
20/21 अक्तू.	पुर्न	16	39	22	20	4	01	9	42
21/22 अक्तू.	पुष्य	15	27	21	15	3	04	8	52
22/23 अक्तू.	श्ले.	14	41	20	36	2	31	8	26
23/24 अक्तू.	मघा	14	21	20	22	2	24	8	25
24/25 अक्तू.	पू.फा.	14	26	20	33	2	41	8	48
25/26 अक्तू.	उ.फा.	14	55	21	05	3	19	9	32
26/27 अक्तू.	हस्त	15	45	22	03	4	22	10	40
27/28 अक्तू.	चित्रा	16	58	23	21	5	43	12	08
28/29 अक्तू.	स्वा.	18	33	1	02	7	32	14	01
29/30 अक्तू.	विशा.	20	30	3	04	9	40	16	13
30/1 नवं.	अनु.	22	51	5	31	12	12	18	52

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
नवं. 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 नवं.	ज्ये.	1	32	8	16	15	01	21	45
2/3 नवं.	मूल	4	30	11	17	18	03	0	50
3/4 नवं.	पू.षा.	7	37	14	23	21	10	3	56
4/5 नवं.	उ.षा.	10	41	17	25	0	08	6	49
5/6 नवं.	श्रव.	13	30	20	05	2	39	9	14
6/7 नवं.	धनि.	15	49	22	15	4	44	11	04
7/8 नवं.	शत.	17	27	23	39	5	52	12	04
8/9 नवं.	पू.भा.	18	16	0	16	6	18	12	19
9/10 नवं.	उ.भा.	18	13	23	59	5	46	11	33
10/11 नवं.	रेव.	17	20	22	55	4	31	10	06
11/12 नवं.	अश्वि.	15	42	21	09	2	35	8	02
12/13 नवं.	भर.	13	29	18	49	0	10	5	30
13/14 नवं.	कृति.	10	51	16	09	21	26	2	43
14/15 नवं.	रोहि.	8	00	13	17	18	34	23	51
15/16 नवं.	मृग.	5	08	10	26	15	45	21	05
16/17 नवं.	आर्द्रा	2	25	7	49	13	14	18	38
17 नवं.	पुर्न.	0	02	5	32	11	03	16	33
17/18 नवं.	पुष्य	22	07	3	47	9	26	15	06
18/19 नवं.	अश्ले.	20	46	2	35	8	23	14	12
19/20 नवं.	मघा	20	01	1	59	7	57	13	55
20/21 नवं.	पू.फा.	19	53	2	00	8	07	14	14
21/22 नवं.	उ.फा.	20	21	2	34	8	50	15	05
22/23 नवं.	हस्त	21	21	3	43	10	05	16	27
23/25 नवं.	चित्रा	22	49	5	16	11	42	18	12
25/26 नवं.	स्वा.	0	40	7	13	13	46	20	19
26/27 नवं.	विशा.	2	52	9	29	16	07	22	43
27/28 नवं.	अनु.	5	22	12	03	18	45	1	26
28/29 नवं.	ज्ये.	8	07	14	51	21	36	4	20
29/30 नवं.	मूल	11	05	17	51	0	38	7	24
30/1 दिसं.	पू.षा.	14	11	20	58	3	44	10	31

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
दिसं. 2008	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 दिसं.	उ.षा.	17	18	0	04	6	47	13	32
2/3 दिसं.	श्रव.	20	17	2	57	9	38	16	18
3/5 दिसं.	धनि.	22	58	5	34	12	08	18	38
5/6 दिसं.	शत	1	09	7	32	13	54	20	17
6/7 दिसं.	पू.भा.	2	40	8	51	15	03	21	16
7/8 दिसं.	उ.भा.	3	22	9	20	15	17	21	15
8/9 दिसं.	रेव.	3	13	8	58	14	44	20	29
9/10 दिसं.	अश्वि.	2	15	7	49	13	23	18	57
10 दिसं.	भर.	0	31	5	55	11	20	16	44
10/11 दिसं.	कृति.	22	09	3	29	8	47	14	05
11/12 दिसं.	रोह.	19	22	0	36	5	50	11	04
12/13 दिसं.	मृग.	16	18	21	31	2	44	7	58
13/14 दिसं.	आर्द्रा	13	11	18	26	23	42	4	57
14/15 दिसं.	पुर्न	10	12	15	31	20	50	2	10
15/16 दिसं.	पुष्य	7	32	12	59	18	27	23	54
16/17 दिसं.	अश्ले.	5	21	10	57	16	34	22	10
17/18 दिसं.	मघा	3	46	9	32	15	19	21	05
18/19 दिसं.	पू.फा.	2	52	8	50	14	47	20	45
19/20 दिसं.	उ.फा.	2	43	8	48	14	58	21	07
20/21 दिसं.	हस्त	3	18	9	37	15	55	22	14
21/22 दिसं.	चित्रा	4	33	10	58	17	24	23	53
22/23 दिसं.	स्वा.	6	23	12	57	19	32	2	06
23/24 दिसं.	विशा.	8	41	15	21	22	00	4	38
24/25 दिसं.	अनु.	11	20	18	03	0	46	7	29
25/26 दिसं.	ज्ये.	14	12	20	57	3	43	10	28
26/27 दिसं.	मूल	17	14	0	00	6	46	13	32
27/28 दिसं.	पू.षा.	20	18	3	03	9	49	16	34
28/30 दिसं.	उ.षा.	23	20	6	04	12	47	19	30
30/31 दिसं.	श्रव.	2	14	8	54	15	35	22	15
31/1 जन.09	धनि.	4	55	11	31	18	07	0	40

चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
जन. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 जन.	शत.	7	14	13	42	20	09	2	37
2/3 जन.	पू.भा.	9	05	15	25	21	44	4	05
3/4 जन.	उ.भा.	10	20	16	28	22	37	4	45
4/5 जन.	रेव.	10	54	16	52	22	49	4	47
5/6 जन.	अश्वि.	10	45	16	32	22	18	4	05
6/7 जन.	भर.	9	52	15	29	21	05	2	42
7/8 जन.	कृति.	8	19	13	50	19	16	0	44
8/9 जन.	रोहि.	6	11	11	32	16	54	22	15
9/10 जन.	मृग.	3	37	8	54	14	13	19	29
10 जन.	आर्द्रा	0	46	6	01	11	17	16	32
10/11 जन.	पुर्न	21	48	3	05	8	21	13	37
11/12 जन.	पुष्य	18	55	0	30	6	06	11	41
12/13 जन.	श्ले.	16	17	21	43	3	10	8	36
13/14 जन.	मघा.	14	03	19	38	1	14	6	49
14/15 जन.	पू.फा.	12	24	18	09	23	55	5	40
15/16 जन.	उ.फा.	11	25	17	17	23	16	5	14
16/17 जन.	हस्त	11	12	17	20	23	29	5	37
17/18 जन.	चित्रा	11	46	18	04	0	21	6	44
18/19 जन.	स्वा.	13	06	19	36	2	06	8	36
19/20 जन.	विशा.	15	06	21	44	4	20	10	57
20/21 जन.	अनु.	17	37	0	20	7	04	13	47
21/22 जन.	ज्ये.	20	31	3	17	10	03	16	49
22/24 जन.	मूल	23	35	6	21	13	08	19	54
24/25 जन.	पू.षा.	2	41	9	25	16	10	22	54
25/26 जन.	उ.षा.	5	39	12	22	19	03	1	43
26/27 जन.	श्रव.	8	25	15	02	21	39	4	16
27/28 जन.	धनि.	10	53	17	25	23	58	6	28
28/29 जन.	शत.	12	59	19	24	1	50	8	15
29/30 जन.	पू.भा.	14	40	20	59	3	18	9	38
30/31 जन.	उ.भा.	15	54	22	05	4	17	10	28
31/1 फर.	रेव.	16	39	22	42	4	46	10	49

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
फर. 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 फर.	अश्वि.	16	53	22	49	4	44	10	40
2/3 फर.	भर.	16	36	22	24	4	11	9	59
3/4 फर.	कृति.	15	47	21	30	3	09	8	49
4/5 फर.	रोह.	14	29	20	03	1	37	7	11
5/6 फर.	मृग.	12	45	18	15	23	45	5	12
6/7 फर.	आर्द्रा	10	40	16	05	21	30	2	55
7/8 फर.	पुर्न	8	20	13	43	19	07	0	30
8/9 फर.	पुष्य	5	54	11	17	16	41	22	04
9/10 फर.	अश्ले.	3	28	8	54	14	21	19	47
10 फर.	मघा	1	14	6	45	12	17	17	48
10/11 फर.	पू.फा.	23	19	4	57	10	36	16	14
11/12 फर.	उ.फा.	21	53	3	36	9	26	15	14
12/13 फर.	हस्त	21	03	3	01	9	00	14	58
13/14 फर.	चित्रा	20	56	3	02	9	09	15	22
14/15 फर.	स्वा.	21	34	3	55	10	17	16	38
15/17 फर.	विशा.	22	59	5	29	12	00	18	30
17/18 फर.	अनु.	1	05	7	44	14	24	21	03
18/19 फर.	ज्ये.	3	43	10	28	17	13	23	57
19/20 फर.	मूल	6	42	13	29	20	15	3	02
20/21 फर.	पू.षा.	9	49	16	34	23	20	6	05
21/22 फर.	उ.षा.	12	50	19	33	2	13	8	54
22/23 फर.	श्रव.	15	34	22	09	4	44	11	19
23/24 फर.	धनि.	17	54	0	24	6	53	13	17
24/25 फर.	शत.	19	45	2	05	8	26	14	46
25/26 फर.	पू.भा.	21	06	3	20	9	33	15	47
26/27 फर.	उ.भा.	21	58	4	04	10	10	16	16
27/28 फर.	रेव.	22	22	4	22	10	22	16	22
28/1 मार्च	अश्वि.	22	22	4	15	10	10	16	05

चन्द्र नक्षत्र चरण		1		2		3		4	
मार्च 2009	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 मार्च	भर.	22	00	3	50	9	39	12	29
2/3 मार्च	कृति.	21	19	3	06	8	51	14	36
3/4 मार्च	रोह.	20	21	2	03	7	45	13	27
4/5 मार्च	मृग.	19	09	0	48	6	28	12	06
5/6 मार्च	आर्द्रा	17	43	23	19	4	56	10	32
6/7 मार्च	पुर्न	16	08	21	42	3	17	8	52
7/8 मार्च	पुष्य	14	26	20	00	1	33	7	07
8/9 मार्च	अश्ले.	12	41	18	15	23	50	5	24
9/10 मार्च	मघा	10	59	16	35	22	12	3	48
10/11 मार्च	पू.फा.	9	25	15	05	20	46	2	26
11/12 मार्च	उ.फा.	8	07	13	52	19	39	1	26
12/13 मार्च	हस्त	7	14	13	08	19	03	0	57
13/14 मार्च	चित्रा	6	51	12	52	18	53	0	59
14/15 मार्च	स्वा.	7	05	13	19	19	33	1	47
15/16 मार्च	विशा.	8	01	14	23	20	48	3	10
16/17 मार्च	अनु.	9	38	16	12	22	46	5	20
17/18 मार्च	ज्ये.	11	54	18	35	1	17	7	58
18/19 मार्च	मूल	14	39	21	24	4	10	10	55
19/20 मार्च	पू.षा.	17	41	0	27	7	13	13	59
20/21 मार्च	उ.षा.	20	45	3	30	10	11	16	54
21/23 मार्च	श्रव.	23	37	6	13	12	50	19	26
23/24 मार्च	धनि.	2	02	8	32	15	03	21	28
24/25 मार्च	शत.	3	54	10	12	16	31	22	49
25/26 मार्च	पू.भा.	5	07	11	16	17	26	23	36
26/27 मार्च	उ.भा.	5	41	—	—	—	—	—	—

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं—मान लीजिए, आपको **5 अप्रैल, 2008 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **5 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट 11.21.36.36 राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (6) अप्रै. में से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59'.05") प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18'.26) हुई, इसको **5 अप्रैल प्रातः सूर्य स्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11.21.55.02) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिषी तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.	क. वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टै. टा.) वि. संवत् 2065 (सन् 2008-09 ई.)

नोट-अपने इष्ट समय के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी का अवलोकन करें। *(1 अप्रै. से 3 मई तक)* 1 अप्रैल, 2007 ई. को अयनांश 23°/58'/30"

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अप्रैल
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
अप्रै.	11 17 39 58	9 11 31 12	2 16 44 36	11 2 54 39	8 26 9 09	10 29 33 47	4 8 35 10	10 1 32 44	+4 36	-20 43	3 14	13 52	अप्रै.
2	11 18 39 10	9 24 25 51	2 17 11 27	11 4 41 34	8 26 15 47	11 0 47 53	4 8 32 02	10 1 29 34	+4 59	-16 02	3 50	14 54	2
3	11 19 38 21	10 7 45 41	2 17 38 30	11 6 29 54	8 26 22 16	11 2 1 59	4 8 28 59	10 1 26 23	+5 22	-10 27	4 22	15 57	3
4	11 20 37 29	10 21 32 24	2 18 5 45	11 8 19 38	8 26 28 37	11 3 16 05	4 8 26 1	10 1 23 12	+5 45	- 4 12	4 53	17 2	4
5	11 21 36 36	11 5 45 13	2 18 33 11	11 10 10 47	8 26 34 47	11 4 30 11	4 8 23 08	10 1 20 01	+6 08	+2 27	5 25	18 08	5
6	11 22 35 41	11 20 20 32	2 19 00 49	11 12 03 22	8 26 40 49	11 5 44 16	4 8 20 21	10 1 16 50	+6 31	+9 07	5 57	19 17	6
7	11 23 34 43	0 5 11 59	2 19 28 38	11 13 57 23	8 26 46 41	11 6 58 21	4 8 17 39	10 1 13 40	+6 53	+15 25	6 35	20 30	7
8	11 24 33 44	0 20 10 44	2 19 56 37	11 15 52 48	8 26 52 23	11 8 12 25	4 8 15 03	10 1 10 29	+7 16	+20 50	7 15	21 44	8
9	11 25 32 43	1 5 7 44	2 20 24 47	11 17 49 38	8 26 57 56	11 9 26 28	4 8 12 32	10 1 07 18	+7 38	+24 55	8 03	22 56	9
10	11 26 31 39	1 19 54 22	2 20 53 8	11 19 47 53	8 27 03 19	11 10 40 31	4 8 10 07	10 1 04 07	+8 01	+27 17	9 00	24 03	10
11	11 27 30 32	2 4 24 19	2 21 21 39	11 21 47 29	8 27 08 32	11 11 54 35	4 8 07 48	10 1 00 56	+8 23	+27 45	10 03	— —	11
12	11 28 29 23	2 18 33 46	2 21 50 19	11 23 48 23	8 27 13 35	11 13 08 36	4 8 05 35	10 0 57 46	8 45	+26 21	11 09	1 02	12
13	11 29 28 13	3 2 21 38	2 22 19 9	11 25 50 33	8 27 18 28	11 14 22 37	4 8 03 27	10 0 54 35	9 06	+23 13	12 16	1 52	13
14	0 00 27 1	3 15 48 55	2 22 48 7	11 27 53 53	8 27 23 11	11 15 36 38	4 8 01 26	10 0 51 24	9 28	+19 11	13 22	2 33	14
15	0 1 25 45	3 28 57 34	2 23 17 15	11 29 58 19	8 27 27 44	11 16 50 38	4 7 59 30	10 0 48 13	9 50	+14 18	14 25	3 09	15
16	0 2 24 27	4 11 50 21	2 23 46 31	0 2 3 42	8 27 32 07	11 18 04 37	4 7 57 40	10 0 45 03	10 11	+8 35	15 23	3 39	16
17	0 3 23 8	4 24 29 49	2 24 15 56	0 4 9 54	8 27 36 20	11 19 18 36	4 7 55 56	10 0 41 52	10 32	+2 47	16 21	4 07	17
18	0 4 21 46	5 6 58 1	2 24 45 29	0 6 16 45	8 27 40 22	11 20 32 34	4 7 54 18	10 0 38 41	10 53	- 3 2	17 17	4 35	18
19	0 5 20 22	5 19 17 31	2 25 15 10	0 8 24 03	8 27 44 14	11 21 46 32	4 7 52 47	10 0 35 30	11 14	- 8 40	18 13	5 01	19
20	0 6 18 56	6 1 28 55	2 25 45 0	0 10 31 33	8 27 47 56	11 23 00 29	4 7 51 21	10 0 32 20	11 34	-13 54	19 10	5 30	20
21	0 7 17 29	6 13 33 31	2 26 14 57	0 12 39 02	8 27 51 27	11 24 14 26	4 7 50 01	10 0 29 09	11 55	-18 33	20 08	6 00	21
22	0 8 15 59	6 25 32 30	2 26 45 2	0 14 46 12	8 27 54 47	11 25 28 23	4 7 48 48	10 0 25 58	12 15	22 25	21 05	6 34	22
23	0 9 14 27	7 7 27 5	2 27 15 14	0 16 52 46	8 27 57 56	11 26 42 19	4 7 47 41	10 0 22 47	12 35	25 20	22 01	7 13	23
24	0 10 12 54	7 19 19 4	2 27 45 34	0 18 58 26	8 28 0 55	11 27 56 14	4 7 46 40	10 0 19 37	12 55	27 8	22 55	7 58	24
25	0 11 11 19	8 1 10 52	2 28 16 1	0 21 02 51	8 28 3 44	11 29 10 10	4 7 45 45	10 0 16 26	13 15	27 42	23 46	8 46	25
26	0 12 9 43	8 13 05 34	2 28 46 36	0 23 05 42	8 28 6 21	0 0 24 05	4 7 44 57	10 0 13 15	13 34	26 58	— —	9 41	26
27	0 13 8 04	8 25 7 5	2 29 17 17	0 25 06 43	8 28 8 47	0 1 37 59	4 7 44 15	10 0 10 05	13 53	24 59	0 30	10 39	27
28	0 14 6 25	9 7 19 55	2 29 48 6	0 27 05 34	8 28 11 3	0 2 51 54	4 7 43 39	10 0 06 54	14 12	21 49	1 11	11 38	28
29	0 15 4 43	9 19 48 56	3 00 19 1	0 29 02 00	8 28 13 7	0 4 05 48	4 7 43 10	10 0 03 43	14 31	17 36	1 47	12 39	29
30	0 16 3 01	10 2 39 6	3 00 50 3	1 0 55 44	8 28 15 0	0 5 19 42	4 7 42 46	10 0 00 32	14 49	12 28	2 20	13 40	30
मई	0 17 1 16	10 15 54 50	3 1 21 12	1 2 46 33	8 28 16 42	0 6 33 35	4 7 42 30	9 29 57 22	15 08	6 37	2 51	14 43	मई
2	0 17 59 30	10 29 39 7	3 1 52 28	1 4 34 14	8 28 18 13	0 7 47 28	4 7 42 19	9 29 54 11	15 26	- 0 17	3 21	15 46	2
3	0 18 57 44	11 13 52 52	3 2 23 50	1 6 18 37	8 28 19 32	0 9 01 21	4 7 42 15	9 29 51 00	15 43	+ 6 17	3 53	16 53	3

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(4 मई से 8 जून तक)* 1 मई, 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/33" 1 जून को अयनांश 23°/58'/38"

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (4 मई से 8 जून तक) 1 मई, 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/33'' 1 जून को अयनांश 23°/58'/38''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
4	0 19 55 54	11 28 33 48	3 2 55 19	1 07 59 33	8 28 20 40	0 10 15 14	4 7 42 17	9 29 47 49	16 01	+12 43	4 27	18 04	4
5	0 20 54 4	0 13 35 59	3 3 26 54	1 09 36 52	8 28 21 37	0 11 29 06	4 7 42 26	9 29 44 39	16 18	18 34	5 05	19 18	5
6	0 21 52 11	0 28 50 19	3 3 58 36	1 11 10 29	8 28 22 23	0 12 42 58	4 7 42 41	9 29 41 28	16 35	23 19	5 51	20 33	6
7	0 22 50 18	1 14 05 46	3 4 30 23	1 12 40 18	8 28 22 57	0 13 56 49	4 7 43 03	9 29 38 17	16 52	26 26	6 45	21 45	7
8	0 23 48 22	1 29 11 16	3 5 2 17	1 14 06 14	8 28 23 19	0 15 10 40	4 7 43 31	9 29 35 6	17 08	27 37	7 48	22 51	8
9	0 24 46 25	2 13 57 52	3 5 34 16	1 15 28 11	8 28 23 30	0 16 24 30	4 7 44 05	9 29 31 56	17 24	26 47	8 56	23 46	9
10	0 25 44 25	2 28 19 56	3 6 06 22	1 16 46 06	8 28 23 30	0 17 38 20	4 7 44 46	9 29 28 45	17 40	24 10	10 05	— —	10
11	0 26 42 24	3 12 15 10	3 6 38 32	1 17 59 54	8 28 22 19	0 18 52 9	4 7 45 33	9 29 25 34	17 55	20 10	11 13	0 32	11
12	0 27 40 21	3 25 44 13	3 7 10 49	1 19 09 32	8 28 22 56	0 20 05 57	4 7 46 26	9 29 22 23	18 11	15 13	12 18	1 09	12
13	0 28 38 16	4 8 49 43	3 7 43 10	1 20 14 56	8 28 22 21	0 21 19 45	4 7 47 26	9 29 19 13	18 26	9 42	13 18	1 42	13
14	0 29 36 10	4 21 35 18	3 8 15 37	1 21 16 02	8 28 21 36	0 22 33 33	4 7 48 31	9 29 16 2	18 40	+3 56	14 16	2 11	14
15	1 0 34 1	5 4 4 52	3 8 48 9	1 22 12 45	8 28 20 39	0 23 47 20	4 7 49 44	9 29 12 51	18 54	-1 51	15 13	2 38	15
16	1 1 31 51	5 16 22 7	3 9 20 46	1 23 05 04	8 28 19 31	0 25 01 7	4 7 51 02	9 29 9 40	19 08	-7 28	16 08	3 05	16
17	1 2 29 39	5 28 30 16	3 9 53 28	1 23 52 53	8 28 18 12	0 26 14 53	4 7 52 26	9 29 6 30	19 22	-12 44	17 04	3 33	17
18	1 3 27 26	6 10 31 54	3 10 26 14	1 24 36 09	8 28 16 41	0 27 28 39	4 7 53 57	9 29 3 19	19 35	-17 29	18 01	4 02	18
19	1 4 25 11	6 22 28 57	3 10 59 6	1 25 14 48	8 28 15 0	0 28 42 25	4 7 55 34	9 29 0 08	19 48	-21 30	18 58	4 36	19
20	1 5 22 55	7 4 23 7	3 11 32 5	1 25 48 47	8 28 13 7	0 29 56 10	4 7 57 16	9 28 56 57	20 01	-24 38	19 55	5 13	20
21	1 6 20 37	7 16 15 40	3 12 5 3	1 26 18 04	8 28 11 3	1 1 09 55	4 7 59 05	9 28 53 47	20 13	-26 41	20 49	5 55	21
22	1 7 18 18	7 28 8 3	3 12 38 8	1 26 42 34	8 28 08 49	1 2 23 40	4 8 1 0	9 28 50 36	20 25	-27 32	21 42	6 43	22
23	1 8 15 58	8 10 1 59	3 13 11 18	1 27 02 16	8 28 06 23	1 3 37 25	4 8 3 01	9 28 47 25	20 37	-27 6	22 28	7 36	23
24	1 9 13 37	8 21 59 39	3 13 44 33	1 27 17 12	8 28 03 47	1 4 51 09	4 8 5 08	9 28 44 14	20 48	-25 24	23 09	8 33	24
25	1 10 11 14	9 4 4 2	3 14 17 52	1 27 27 19	8 28 0 59	1 6 04 53	4 8 7 21	9 28 41 4	20 59	-22 32	23 46	9 31	25
26	1 11 8 51	9 16 18 41	3 14 51 15	1 27 32 43	8 27 58 1	1 7 18 38	4 8 9 39	9 28 37 53	21 09	-18 37	— —	10 30	26
27	1 12 6 27	9 28 47 40	3 15 24 43	1 27 33 27	8 27 54 52	1 8 32 22	4 8 12 04	9 28 34 42	21 19	-13 50	0 19	11 30	27
28	1 13 4 1	10 11 35 26	3 15 58 15	1 27 29 37	8 27 51 33	1 9 46 06	4 8 14 34	9 28 31 31	21 29	-8 20	0 51	12 29	28
29	1 14 1 35	10 24 46 23	3 16 31 52	1 27 21 23	8 27 48 3	1 10 59 50	4 8 17 10	9 28 28 20	21 39	-2 20	1 19	13 31	29
30	1 14 59 8	11 8 23 58	3 17 5 33	1 27 08 56	8 27 44 23	1 12 13 35	4 8 19 52	9 28 25 10	21 48	+3 58	1 49	14 34	30
31	1 15 56 40	11 22 30 5	3 17 39 18	1 26 52 30	8 27 40 32	1 13 27 19	4 8 22 39	9 28 21 59	21 56	10 17	2 21	15 40	31
जून	1 16 54 12	0 7 3 52	3 18 13 9	1 26 32 25	8 27 36 32	1 14 41 03	4 8 25 33	9 28 18 48	22 05	16 15	2 57	16 51	जून
2	1 17 51 43	0 22 1 8	3 18 47 3	1 26 09 0	8 27 32 21	1 15 54 47	4 8 28 32	9 28 15 38	22 13	21 25	3 38	18 06	2
3	1 18 49 12	1 7 14 4	3 19 21 1	1 25 42 40	8 27 28 0	1 17 8 31	4 8 31 36	9 28 12 27	22 20	25 15	4 27	19 20	3
4	1 19 46 41	1 22 32 25	3 19 55 3	1 25 13 51	8 27 23 30	1 18 22 15	4 8 34 46	9 28 9 16	22 27	27 17	5 26	20 30	4
5	1 20 44 9	2 7 44 44	3 20 29 10	1 24 43 2	8 27 18 50	1 19 35 59	4 8 38 02	9 28 6 05	22 34	27 15	6 34	21 32	5
6	1 21 41 36	2 22 40 45	3 21 3 20	1 24 10 45	8 27 14 0	1 20 49 43	4 8 41 23	9 28 2 55	22 40	25 13	7 45	22 23	6
7	1 22 39 1	3 7 13 4	3 21 37 35	1 23 37 33	8 27 09 2	1 22 3 27	4 8 44 50	9 27 59 44	22 46	21 33	8 57	23 05	7
8	1 23 36 26	3 21 17 41	3 22 11 53	1 23 03 59	8 27 03 54	1 23 17 10	4 8 48 22	9 27 56 33	+22 52	16 43	10 05	23 41	8

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(9 जून से 15 जुला. तक)* 1 मई, 2007 ई. को अयनांश 23°/57′/38″ 1 जुलाई, 2008 ई. को अयनांश 23°/58′/44″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.	
9	1 24 33 50	4 4 53 57	3 22 46 15	1 22 30 40	8 26 58 38	1 24 30 52	4 8 52 0	9 27 53 22	22 57	+11 10	11 09	— —	9
10	1 25 31 12	4 18 3 39	3 23 20 41	1 21 58 08	8 26 53 13	1 25 44 38	4 8 55 41	9 27 50 12	23 1	5 19	12 09	0 12	10
11	1 26 28 33	5 0 50 20	3 23 55 10	1 21 26 58	8 26 47 40	1 26 58 20	4 8 59 29	9 27 47 1	23 06	- 0 34	13 06	0 40	11
12	1 27 25 54	5 13 18 12	3 24 29 43	1 20 57 40	8 26 41 58	1 28 12 03	4 9 03 21	9 27 43 50	23 10	- 6 17	14 03	1 08	12
13	1 28 23 13	5 25 31 40	3 25 4 20	1 20 30 46	8 26 36 08	1 29 25 45	4 9 07 19	9 27 40 39	23 13	-11 40	14 59	1 36	13
14	1 29 20 32	6 7 34 55	3 25 39 00	1 20 06 40	8 26 30 11	2 0 39 28	4 9 11 22	9 27 37 29	23 16	-16 31	15 55	2 04	14
15	2 0 17 49	6 19 31 34	3 26 13 44	1 19 45 49	8 26 24 06	2 1 53 10	4 9 15 30	9 27 34 18	23 19	-20 42	16 53	2 37	15
16	2 1 15 6	7 1 24 42	3 26 48 31	1 19 28 32	8 26 17 54	2 3 6 52	4 9 19 42	9 27 31 7	23 21	-24 1	17 49	3 12	16
17	2 2 12 22	7 13 16 46	3 27 23 21	1 19 15 07	8 26 11 36	2 4 20 35	4 9 24 0	9 27 27 56	23 23	-26 18	18 45	3 53	17
18	2 3 9 38	7 25 9 45	3 27 58 15	1 19 5 52	8 26 05 10	2 5 34 17	4 9 28 22	9 27 24 46	23 25	-27 25	19 37	4 40	18
19	2 4 6 52	8 7 5 19	3 28 33 12	1 19 0 54	8 25 58 38	2 6 47 59	4 9 32 49	9 27 21 35	23 26	-27 16	20 26	5 32	19
20	2 5 4 7	8 19 4 58	3 29 8 13	1 19 0 26	8 25 52 00	2 8 01 42	4 9 37 21	9 27 18 24	23 26	-25 50	21 09	6 27	20
21	2 6 01 21	9 1 10 22	3 29 43 17	1 19 4 32	8 25 45 14	2 9 15 24	4 9 41 58	9 27 15 13	23 26	-23 11	21 46	7 25	21
22	2 6 58 35	9 13 23 31	4 0 18 24	1 19 13 18	8 25 38 24	2 10 29 07	4 9 46 38	9 27 12 03	23 26	-19 28	22 21	8 25	22
23	2 7 55 48	9 25 46 47	4 0 53 34	1 19 26 46	8 25 31 28	2 11 42 49	4 9 51 24	9 27 8 52	23 26	-14 52	22 52	9 23	23
24	2 8 53 1	10 8 23 1	4 1 28 48	1 19 45 00	8 25 24 27	2 12 56 32	4 9 56 14	9 27 5 41	23 25	- 9 33	23 21	10 23	24
25	2 9 50 14	10 21 15 20	4 2 4 5	1 20 07 54	8 25 17 21	2 14 10 15	4 10 1 8	9 27 2 30	23 23	- 3 45	23 50	11 22	25
26	2 10 47 27	11 4 26 59	4 2 39 26	1 20 35 29	8 25 10 10	2 15 23 59	4 10 6 6	9 26 59 20	23 21	+ 2 21	— —	12 22	26
27	2 11 44 41	11 18 00 44	4 3 14 50	1 21 7 42	8 25 02 54	2 16 37 42	4 10 11 9	9 26 56 09	23 19	8 31	0 20	13 26	27
28	2 12 41 54	0 1 58 16	4 3 50 17	1 21 44 32	8 24 55 35	2 17 51 26	4 10 16 17	9 26 52 58	23 16	14 26	0 53	14 33	28
29	2 13 39 7	0 16 19 27	4 4 25 48	1 22 25 55	8 24 48 11	2 19 5 11	4 10 21 28	9 26 49 47	23 13	19 44	1 30	15 44	29
30	2 14 36 20	1 1 1 36	4 5 1 22	1 23 11 47	8 24 40 45	2 20 18 55	4 10 26 44	9 26 46 36	23 10	23 59	2 14	16 56	30
जुला	2 15 33 34	1 15 59 11	4 5 37 00	1 24 02 04	8 24 33 15	2 21 32 40	4 10 32 4	9 26 43 26	23 06	26 43	3 07	18 07	जुला
2	2 16 30 47	2 1 4 6	4 6 12 41	1 24 56 44	8 24 25 42	2 22 46 25	4 10 37 27	9 26 40 15	23 02	27 32	4 10	19 14	2
3	2 17 28 1	2 16 7 4	4 6 48 25	1 25 55 42	8 24 18 06	2 24 00 10	4 10 42 55	9 26 37 04	22 57	26 18	5 20	20 10	3
4	2 18 25 14	3 0 58 41	4 7 24 13	1 26 58 55	8 24 10 29	2 25 13 55	4 10 48 27	9 26 33 54	22 52	23 13	6 32	20 57	4
5	2 19 22 27	3 15 31 9	4 8 00 3	1 28 06 19	8 24 02 49	2 26 27 40	4 10 54 2	9 26 30 43	22 46	18 42	7 44	21 36	5
6	2 20 19 41	3 29 39 19	4 8 35 57	1 29 17 52	8 23 55 08	2 27 41 26	4 10 59 42	9 26 27 32	22 40	13 15	8 52	22 10	6
7	2 21 16 54	4 13 20 52	4 9 11 55	2 00 33 30	8 23 47 26	2 28 55 11	4 11 5 25	9 26 24 21	22 34	7 18	9 56	22 40	7
8	2 22 14 6	4 26 36 7	4 9 47 55	2 01 53 09	8 23 39 43	3 0 08 56	4 11 11 12	9 26 21 11	22 27	1 13	10 56	23 09	8
9	2 23 11 19	5 9 27 21	4 10 23 58	2 03 16 46	8 23 32 00	3 1 22 42	4 11 17 2	9 26 18 0	22 20	- 4 43	11 54	23 37	9
10	2 24 8 32	5 21 58 9	4 11 00 5	2 04 44 18	8 23 24 17	3 2 36 27	4 11 22 56	9 26 14 49	22 13	-10 18	12 51	— —	10
11	2 25 5 44	6 4 12 47	4 11 36 14	2 06 15 40	8 23 16 33	3 3 50 12	4 11 28 53	9 26 11 38	+22 05	-15 23	13 48	0 05	11
12	2 26 2 57	6 16 15 44	4 12 12 26	2 07 50 47	8 23 08 51	3 5 3 57	4 11 34 54	9 26 8 28	+21 57	-19 46	14 46	0 40	12
13	2 27 0 9	6 28 11 22	4 12 48 42	2 09 29 32	8 23 1 09	3 6 17 42	4 11 40 58	9 26 5 17	21 48	-23 20	15 42	1 11	13
14	2 27 57 22	7 10 3 39	4 13 25 0	2 11 11 49	8 22 53 28	3 7 31 28	4 11 47 05	9 26 02 06	21 39	-25 54	16 38	1 51	14

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (16 जुला. से 21 अग. तक) 1 अगस्त, 2008 ई. को अयनांश 23°/58′/50″

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (16 जुला. से 21 अग. तक) 1 अगस्त, 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/50''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	तारीख
जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	जुला
16	2 29 51 47	8 3 51 37	4 14 37 45	2 14 46 24	8 22 38 12	3 9 58 58	4 11 59 29	9 25 55 45	21 20	-27 29	18 23	3 26	16
17	3 0 49 0	8 15 52 37	4 15 14 12	2 16 38 20	8 22 30 37	3 11 12 42	4 12 05 46	9 25 52 34	21 10	-26 21	19 07	4 20	17
18	3 1 46 13	8 28 01 02	4 15 50 42	2 18 33 04	8 22 23 05	3 12 26 27	4 12 12 05	9 25 49 23	21 00	-23 58	19 48	5 18	18
19	3 2 43 27	9 10 18 25	4 16 27 15	2 20 30 23	8 22 15 35	3 13 40 12	4 12 18 28	9 25 46 12	20 49	-20 27	20 23	6 17	19
20	3 3 40 41	9 22 46 5	4 17 3 51	2 22 30 00	8 22 08 08	3 14 53 57	4 12 24 54	9 25 43 2	20 38	-15 59	20 54	7 18	20
21	3 4 37 56	10 5 25 18	4 17 40 30	2 24 31 38	8 22 00 45	3 16 07 42	4 12 31 22	9 25 39 51	20 26	-10 45	21 25	8 18	21
22	3 5 35 11	10 18 17 20	4 18 17 11	2 26 34 57	8 21 53 25	3 17 21 27	4 12 37 53	9 25 36 40	20 15	- 5 00	21 53	9 17	22
23	3 6 32 28	11 1 23 30	4 18 53 56	2 28 39 38	8 21 46 09	3 18 35 13	4 12 44 27	9 25 33 29	20 02	+ 1 3	22 23	10 17	23
24	3 7 29 45	11 14 45 3	4 19 30 44	3 0 45 22	8 21 38 57	3 19 48 58	4 12 51 04	9 25 30 19	19 50	7 10	22 55	11 18	24
25	3 8 27 2	11 28 22 59	4 20 7 35	3 2 51 51	8 21 31 50	3 21 02 43	4 12 57 43	9 25 27 08	19 37	13 5	23 28	12 23	25
26	3 9 24 21	0 12 17 45	4 20 44 29	3 4 58 44	8 21 24 48	3 22 16 29	4 13 04 25	9 25 23 57	19 24	18 27	— —	13 29	26
27	3 10 21 41	0 26 28 45	4 21 21 26	3 7 05 45	8 21 17 51	3 23 30 15	4 13 11 10	9 25 20 46	19 11	22 56	0 09	14 40	27
28	3 11 19 2	1 10 54 2	4 21 58 26	3 9 12 36	8 21 11 00	3 24 44 00	4 13 17 57	9 25 17 36	18 57	26 5	0 57	15 51	28
29	3 12 16 24	1 25 30 1	4 22 35 29	3 11 19 04	8 21 04 13	3 25 57 46	4 13 24 46	9 25 14 25	18 43	27 32	1 54	16 56	29
30	3 13 13 47	2 10 11 31	4 23 12 36	3 13 24 55	8 20 57 34	3 27 11 32	4 13 31 38	9 25 11 14	18 28	27 4	2 59	17 56	30
31	3 14 11 11	2 24 52 14	4 23 49 45	3 15 29 57	8 20 51 00	3 28 25 19	4 13 38 32	9 25 08 3	18 14	24 42	4 09	18 47	31
अग.	3 15 8 35	3 9 25 27	4 24 26 58	3 17 34 01	8 20 44 33	3 29 39 05	4 13 45 28	9 25 4 53	17 59	20 44	5 20	19 29	अग.
2	3 16 6 01	3 23 44 53	4 25 4 14	3 19 37 00	8 20 38 13	4 0 52 51	4 13 52 26	9 25 1 42	17 43	15 36	6 31	20 05	2
3	3 17 3 28	4 7 45 43	4 25 41 33	3 21 38 44	8 20 32 00	4 2 06 37	4 13 59 26	9 24 58 31	17 28	9 44	7 37	20 38	3
4	3 18 0 55	4 21 24 43	4 26 18 54	3 23 39 09	8 20 25 55	4 3 20 22	4 14 06 29	9 24 55 20	17 12	3 33	8 40	21 08	4
5	3 18 58 23	5 4 40 44	4 26 56 19	3 25 38 11	8 20 19 58	4 4 34 08	4 14 13 33	9 24 52 10	16 56	-2 35	9 40	21 36	5
6	3 19 55 52	5 17 34 27	4 27 33 47	3 27 35 47	8 20 14 08	4 5 47 53	4 14 20 39	9 24 48 59	16 39	-8 27	10 39	22 05	6
7	3 20 53 21	6 00 8 8	4 28 11 18	3 29 31 55	8 20 08 26	4 7 01 38	4 14 27 47	9 24 45 48	16 22	-13 49	11 38	22 36	7
8	3 21 50 52	6 12 25 7	4 28 48 51	4 01 26 33	8 20 02 52	4 8 15 23	4 14 34 58	9 24 42 37	16 06	-18 31	12 35	23 09	8
9	3 22 48 24	6 24 29 31	4 29 26 28	4 03 19 39	8 19 57 27	4 9 29 07	4 14 42 09	9 24 39 27	15 48	-22 24	13 33	23 47	9
10	3 23 45 56	7 6 25 47	5 00 4 7	4 05 11 15	8 19 52 11	4 10 42 51	4 14 49 22	9 24 36 16	15 31	-25 17	14 30	— —	10
11	3 24 43 29	7 18 18 28	5 00 41 50	4 07 01 18	8 19 47 04	4 11 56 35	4 14 56 36	9 24 33 05	15 13	-27 4	15 24	0 30	11
12	3 25 41 2	8 00 11 54	5 1 19 35	4 08 49 51	8 19 42 06	4 13 10 18	4 15 03 52	9 24 29 54	14 55	-27 36	16 16	1 17	12
13	3 26 38 36	8 12 10 09	5 1 57 23	4 10 36 53	8 19 37 17	4 14 24 01	4 15 11 10	9 24 26 43	14 37	-26 52	17 03	2 11	13
14	3 27 36 12	8 24 16 40	5 2 35 14	4 12 22 24	8 19 32 37	4 15 37 43	4 15 18 29	9 24 23 33	14 19	-24 51	17 45	3 08	14
15	3 28 33 49	9 06 34 17	5 3 13 08	4 14 06 26	8 19 28 07	4 16 51 25	4 15 25 49	9 24 20 22	+14 00	-21 38	18 22	4 07	15
16	3 29 31 27	9 19 5 3	5 3 51 4	4 15 49 00	8 19 23 47	4 18 05 06	4 15 33 10	9 24 17 11	13 41	-17 23	18 56	5 08	16
17	4 0 29 6	10 1 50 16	5 4 29 4	4 17 30 05	8 19 19 37	4 19 18 47	4 15 40 33	9 24 14 00	13 22	-12 17	19 27	6 09	17
18	4 1 26 46	10 14 50 28	5 5 7 7	4 19 09 43	8 19 15 37	4 20 32 28	4 15 47 57	9 24 10 50	13 03	- 6 34	19 56	7 09	18
19	4 2 24 29	10 28 05 26	5 5 45 12	4 20 47 54	8 19 11 46	4 21 46 08	4 15 55 21	9 24 07 39	12 43	- 0 28	20 26	8 10	19
20	4 3 22 11	11 11 34 18	5 6 23 20	4 22 24 40	8 19 08 06	4 22 59 47	4 16 02 47	9 24 04 28	12 24	+ 5 44	20 56	9 12	20
21	4 4 19 56	11 25 15 48	5 7 1 32	4 23 59 59	8 19 04 37	4 24 13 27	4 16 10 14	9 24 01 17	12 04	11 47	21 29	10 16	21

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (22 अगस्त से 27 सितंबर तक) 1 सितंबर, 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/54''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	अगस्त
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
22	4 5 17 43	0 9 8 21	5 7 39 47	4 25 33 55	8 19 01 18	4 25 27 06	4 16 17 42	9 23 58 07	11 44	+17 19	22 08	11 22	22
23	4 6 15 31	0 23 10 6	5 8 18 04	4 27 06 25	8 18 58 09	4 26 40 44	4 16 25 10	9 23 54 56	11 23	22 00	22 52	12 31	23
24	4 7 13 21	1 7 19 8	5 8 56 25	4 28 37 29	8 18 55 11	4 27 54 23	4 16 32 40	9 23 51 45	11 03	25 27	23 45	13 39	24
25	4 8 11 13	1 21 33 18	5 9 34 49	5 0 07 09	8 18 52 24	4 29 08 01	4 16 40 10	9 23 48 34	10 42	27 19	— —	14 47	25
26	4 9 9 06	2 5 50 8	5 10 13 16	5 1 35 22	8 18 49 48	5 0 21 38	4 16 47 40	9 23 45 23	10 21	27 24	0 47	15 46	26
27	4 10 7 01	2 20 6 53	5 10 51 47	5 3 02 09	8 18 47 23	5 1 35 16	4 16 55 12	9 23 42 13	10 00	25 40	1 53	16 39	27
28	4 11 4 59	3 04 20 23	5 11 30 20	5 4 27 29	8 18 45 09	5 2 48 53	4 17 02 44	9 23 39 02	9 39	22 17	3 03	17 23	28
29	4 12 2 58	3 18 27 9	5 12 8 57	5 5 51 20	8 18 43 06	5 4 02 29	4 17 10 16	9 23 35 51	9 18	17 37	4 12	18 02	29
30	4 13 0 58	4 2 23 37	5 12 47 37	5 7 13 41	8 18 41 15	5 5 16 05	4 17 17 49	9 23 32 40	8 57	12 3	5 20	18 35	30
31	4 13 59 1	4 16 6 29	5 13 26 20	5 8 34 30	8 18 39 34	5 6 29 41	4 17 25 22	9 23 29 29	8 35	6 0	6 24	19 06	31
सितं	4 14 57 5	4 29 33 4	5 14 5 6	5 9 53 43	8 18 38 06	5 7 43 16	4 17 32 56	9 23 26 19	8 13	-0 12	7 25	19 36	सितं
2	4 15 55 10	5 12 41 42	5 14 43 55	5 11 11 20	8 18 36 48	5 8 56 51	4 17 40 29	9 23 23 08	7 51	-6 14	8 25	20 04	2
3	4 16 53 17	5 25 31 54	5 15 22 47	5 12 27 15	8 18 35 43	5 10 10 25	4 17 48 03	9 23 19 57	7 29	-11 52	9 23	20 34	3
4	4 17 51 26	6 8 4 30	5 16 1 42	5 13 41 26	8 18 34 48	5 11 23 57	4 17 55 37	9 23 16 47	7 07	-16 53	10 22	21 07	4
5	4 18 49 36	6 20 21 34	5 16 40 41	5 14 53 48	8 18 34 06	5 12 37 30	4 18 03 10	9 23 13 36	6 45	-21 7	11 21	21 43	5
6	4 19 47 48	7 2 26 15	5 17 19 42	5 16 04 16	8 18 33 34	5 13 51 01	4 18 10 44	9 23 10 25	6 23	-24 23	12 19	22 24	6
7	4 20 46 0	7 14 22 27	5 17 58 47	5 17 12 46	8 18 33 15	5 15 04 32	4 18 18 17	9 23 7 14	6 00	-26 33	13 16	23 10	7
8	4 21 44 14	7 26 14 44	5 18 37 54	5 18 19 11	8 18 33 07	5 16 18 03	4 18 25 51	9 23 4 04	5 38	-27 30	14 08	— —	8
9	4 22 42 30	8 8 7 51	5 19 17 04	5 19 23 23	8 18 33 10	5 17 31 32	4 18 33 24	9 23 0 53	5 15	-27 12	14 56	0 01	9
10	4 23 40 48	8 20 6 41	5 19 56 18	5 20 25 15	8 18 33 25	5 18 45 00	4 18 40 56	9 22 57 42	4 53	-25 37	15 40	0 57	10
11	4 24 39 7	9 2 15 49	5 20 35 34	5 21 24 39	8 18 33 52	5 19 58 27	4 18 48 29	9 22 54 31	4 30	-22 50	16 20	1 55	11
12	4 25 37 27	9 14 39 20	5 21 14 54	5 22 21 25	8 18 34 30	5 21 11 54	4 18 56 01	9 22 51 20	4 07	-18 57	16 54	2 55	12
13	4 26 35 49	9 27 20 27	5 21 54 16	5 23 15 22	8 18 35 20	5 22 25 19	4 19 03 32	9 22 48 10	3 44	-14 8	17 26	3 55	13
14	4 27 34 13	10 10 21 12	5 22 33 41	5 24 06 18	8 18 36 21	5 23 38 44	4 19 11 03	9 22 44 59	3 21	-8 35	17 57	4 56	14
15	4 28 32 39	10 23 42 7	5 23 13 10	5 24 54 00	8 18 37 33	5 24 52 07	4 19 18 33	9 22 41 48	2 58	-2 31	18 26	5 58	15
16	4 29 31 7	11 7 22 12	5 23 52 41	5 25 38 14	8 18 38 57	5 26 05 30	4 19 26 02	9 22 38 37	2 35	+3 47	18 57	7 00	16
17	5 0 29 36	11 21 18 41	5 24 32 16	5 26 18 44	8 18 40 32	5 27 18 51	4 19 33 31	9 22 35 27	+2 12	10 2	19 30	8 04	17
18	5 1 28 08	0 5 27 35	5 25 11 54	5 26 55 13	8 18 42 18	5 28 32 12	4 19 40 59	9 22 32 16	+1 49	15 51	20 08	9 12	18
19	5 2 26 41	0 19 44 11	5 25 51 35	5 27 27 23	8 18 44 16	5 29 45 32	4 19 48 25	9 22 29 05	1 25	20 52	20 51	10 22	19
20	5 3 25 17	1 4 3 42	5 26 31 19	5 27 54 53	8 18 46 25	6 00 58 51	4 19 55 52	9 22 25 54	1 02	24 40	21 42	11 31	20
21	5 4 23 55	1 18 21 50	5 27 11 7	5 28 17 22	8 18 48 45	6 02 12 09	4 20 03 17	9 22 22 43	+0 39	26 56	22 40	12 39	21
22	5 5 22 35	2 2 35 26	5 27 50 57	5 28 34 28	8 18 51 17	6 03 25 26	4 20 10 41	9 22 19 33	+0 15	27 26	23 45	13 41	22
23	5 6 21 18	2 16 42 15	5 28 30 51	5 28 45 49	8 18 54 00	6 04 38 43	4 20 18 03	9 22 16 22	-0 08	26 7	— —	14 35	23
24	5 7 20 3	3 0 41 2	5 29 10 49	5 28 51 00	8 18 56 53	6 05 51 59	4 20 25 25	9 22 13 11	-0 31	23 12	0 53	15 22	24
25	5 8 18 50	3 14 31 2	5 29 50 49	5 28 49 36	8 18 59 58	6 07 05 14	4 20 32 45	9 22 10 00	-0 55	18 57	2 01	16 01	25
26	5 9 17 39	3 28 11 36	6 0 30 53	5 28 41 25	8 19 03 13	6 08 18 28	4 20 40 04	9 22 06 49	-1 18	13 45	3 06	16 35	26
27	5 10 16 30	4 11 42 1	6 1 11 1	5 28 26 03	8 19 06 39	6 09 31 42	4 20 47 21	9 22 03 39	-1 41	7 57	4 10	17 06	27

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (28 सितंबर से ... तक) 1 अक्टू. 2008 ई. को अयनांश 23°/58'/57'' 1 नवं., 2008 ई. को अयनांश 23°/59'/00''

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट [illegible] 57'' 1 नवं., 2008 ई. को अयनांश 23°/59'/00''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	सितंबर
सितं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
28	5 11 15 24	4 25 1 21	6 1 51 11	5 28 03 17	8 19 10 17	6 10 44 54	4 20 54 38	9 22 00 28	-2 05	1 54	5 12	17 35	28
29	5 12 14 20	5 8 8 27	6 2 31 25	5 27 32 59	8 19 14 05	6 11 58 06	4 21 01 52	9 21 57 17	-2 28	-4 8	6 12	18 04	29
30	5 13 13 18	5 21 2 18	6 3 11 42	5 26 55 13	8 19 18 04	6 13 11 17	4 21 09 05	9 21 54 06	-2 52	-9 53	7 10	18 34	30
अक्तू	5 14 12 17	6 3 42 14	6 3 52 03	5 26 10 09	8 19 22 14	6 14 24 27	4 21 16 16	9 21 50 55	-3 15	-15 7	8 10	19 05	अक्तू
2	5 15 11 19	6 16 8 17	6 4 32 26	5 25 18 15	8 19 26 34	6 15 37 36	4 21 23 25	9 21 47 45	-3 38	-19 38	9 08	19 40	2
3	5 16 10 23	6 28 21 28	6 5 12 53	5 24 20 12	8 19 31 05	6 16 50 43	4 21 30 33	9 21 44 34	-4 01	-23 15	10 07	20 19	3
4	5 17 9 28	7 10 23 44	6 5 53 23	5 23 16 58	8 19 35 47	6 18 03 50	4 21 37 38	9 21 41 23	-4 24	-25 48	11 04	21 04	4
5	5 18 8 36	7 22 18 8	6 6 33 56	5 22 09 49	8 19 40 38	6 19 16 55	4 21 44 42	9 21 38 12	-4 48	-27 9	11 58	21 52	5
6	5 19 7 45	8 4 8 28	6 7 14 32	5 21 00 18	8 19 45 40	6 20 30 00	4 21 51 44	9 21 35 02	-5 11	-27 16	12 49	22 46	6
7	5 20 6 55	8 15 59 26	6 7 55 11	5 19 50 08	8 19 50 53	6 21 43 02	4 21 58 43	9 21 31 51	-5 34	-26 7	13 34	23 42	7
8	5 21 6 8	8 27 56 5	6 8 35 54	5 18 41 13	8 19 56 15	6 22 56 04	4 22 05 40	9 21 28 40	-5 57	-23 47	14 15	— —	8
9	5 22 5 23	9 10 3 43	6 9 16 40	5 17 35 29	8 20 01 47	6 24 09 03	4 22 12 35	9 21 25 29	-6 19	-20 20	14 50	0 41	9
10	5 23 4 39	9 22 27 28	6 9 57 29	5 16 34 49	8 20 07 29	6 25 22 02	4 22 19 27	9 21 22 19	-6 42	-15 56	15 24	1 40	10
11	5 24 3 57	10 5 11 56	6 10 38 21	5 15 40 58	8 20 13 21	6 26 34 59	4 22 26 17	9 21 19 08	-7 05	-10 44	15 54	2 40	11
12	5 25 3 17	10 18 20 28	6 11 19 16	5 14 55 25	8 20 19 23	6 27 47 54	4 22 33 05	9 21 15 57	-7 27	-4 55	16 24	3 41	12
13	5 26 2 38	11 1 54 45	6 12 0 14	5 14 19 21	8 20 25 34	6 29 00 48	4 22 39 51	9 21 12 46	-7 50	+1 19	16 55	4 42	13
14	5 27 2 2	11 15 54 3	6 12 41 15	5 13 53 40	8 20 31 55	7 00 13 40	4 22 46 33	9 21 09 36	-8 12	7 38	17 27	5 47	14
15	5 28 1 28	0 0 14 59	6 13 22 20	5 13 38 51	8 20 38 25	7 01 26 31	4 22 53 13	9 21 06 25	-8 34	13 44	18 04	6 53	15
16	5 29 0 55	0 14 51 38	6 14 3 28	5 13 35 08	8 20 45 04	7 02 39 21	4 22 59 50	9 21 03 14	-8 56	19 10	18 46	8 04	16
17	6 00 0 25	0 29 36 23	6 14 44 39	5 13 42 22	8 20 51 53	7 03 52 09	4 23 6 25	9 21 00 03	-9 18	23 30	19 35	9 17	17
18	6 0 59 57	1 14 21 8	6 15 25 53	5 14 00 14	8 20 58 50	7 05 04 55	4 23 12 56	9 20 56 52	-9 40	26 18	20 33	10 27	18
19	6 1 59 32	1 28 58 40	6 16 7 11	5 14 28 13	8 21 05 57	7 06 17 40	4 23 19 25	9 20 53 42	-10 02	27 16	21 37	11 33	19
20	6 2 59 8	2 13 23 37	6 16 48 33	5 15 05 36	8 21 13 12	7 07 30 24	4 23 25 51	9 20 50 31	-10 24	26 22	22 45	12 31	20
21	6 3 58 47	2 27 33 1	6 17 29 57	5 15 51 39	8 21 20 37	7 08 43 06	4 23 32 13	9 20 47 20	-10 45	23 46	23 54	13 21	21
22	6 4 58 27	3 11 25 52	6 18 11 25	5 16 45 32	8 21 28 10	7 09 55 47	4 23 38 33	9 20 44 09	-11 06	19 48	— —	14 01	22
23	6 5 58 11	3 25 2 43	6 18 52 55	5 17 46 25	8 21 35 32	7 11 08 26	4 23 44 50	9 20 40 59	-11 27	14 50	1 00	14 36	23
24	6 6 57 56	4 8 24 55	6 19 34 31	5 18 53 30	8 21 43 42	7 12 21 04	4 23 51 03	9 20 37 48	-11 48	9 16	2 03	15 09	24
25	6 7 57 44	4 21 34 2	6 20 16 9	5 20 06 00	8 21 51 42	7 13 33 40	4 23 57 13	9 20 34 37	-12 09	3 23	3 05	15 37	25
26	6 8 57 34	5 04 31 19	6 20 57 51	5 21 23 07	8 21 59 50	7 14 46 15	4 24 03 19	9 20 31 26	-12 30	-2 33	4 03	16 06	26
27	6 9 57 27	5 17 17 41	6 21 39 36	5 22 44 16	8 22 08 06	7 15 58 48	4 24 9 22	9 20 28 16	-12 50	-8 17	5 02	16 35	27
28	6 10 57 21	5 29 53 33	6 22 21 24	5 24 08 46	8 22 16 29	7 17 11 20	4 24 15 21	9 20 25 05	-13 10	-13 35	5 59	17 05	28
29	6 11 57 17	6 12 19 9	6 23 03 16	5 25 36 06	8 22 25 02	7 18 23 50	4 24 21 17	9 20 21 54	-13 30	-18 16	6 58	17 40	29
30	6 12 57 15	6 24 34 35	6 23 45 11	5 27 05 48	8 22 33 42	7 19 36 18	4 24 27 09	9 20 18 43	-13 50	-22 8	7 57	18 17	30
31	6 13 57 15	7 6 40 36	6 24 27 9	5 28 37 25	8 22 42 30	7 20 48 44	4 24 32 57	9 20 15 33	-14 09	-24 59	8 54	18 59	31
नवं.	6 14 57 17	7 18 38 18	6 25 9 10	6 00 10 36	8 22 51 26	7 22 01 08	4 24 38 41	9 20 12 22	-14 29	-26 41	9 50	19 47	नवं.
2	6 15 57 21	8 0 29 46	6 25 51 15	6 01 45 02	8 23 00 30	7 23 13 29	4 24 44 22	9 20 09 11	-14 48	-27 9	10 41	20 38	2
3	6 16 57 26	8 12 17 55	6 26 33 23	6 03 20 27	8 23 09 41	7 24 25 49	4 24 49 58	9 20 06 00	-15 07	-26 22	11 28	21 33	3

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (4 नवं. से 10 दिसं. तक) 1 दिसंबर, 2008 ई. को अयनांश 23°/59'/06''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	नवंबर
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
4	6 17 57 33	8 24 6 32	6 27 15 34	6 4 56 36	8 23 19 00	7 25 38 06	4 24 55 30	9 20 02 49	-15 25	-24 24	12 10	22 29	4
5	6 18 57 41	9 06 0 16	6 27 57 48	6 6 33 18	8 23 28 26	7 26 50 21	4 25 00 59	9 19 59 38	-15 43	-21 20	12 47	23 28	5
6	6 19 57 51	9 18 4 16	6 28 40 6	6 8 10 24	8 23 37 59	7 28 02 33	4 25 06 23	9 19 56 28	-16 02	-17 20	13 21	— —	6
7	6 20 58 3	10 00 24 3	6 29 22 26	6 9 47 46	8 23 47 40	7 29 14 44	4 25 11 42	9 19 53 17	-16 19	-12 31	13 51	0 26	7
8	6 21 58 16	10 13 04 53	7 0 4 50	6 11 25 16	8 23 57 27	8 0 26 51	4 25 16 58	9 19 50 06	-16 37	- 7 4	14 21	1 24	8
9	6 22 58 30	10 26 11 30	7 0 47 17	6 13 02 49	8 24 07 22	8 1 38 55	4 25 22 09	9 19 46 55	-16 54	- 1 9	14 50	2 24	9
10	6 23 58 46	11 9 47 4	7 1 29 47	6 14 40 22	8 24 17 23	8 2 50 57	4 25 27 15	9 19 43 45	-17 11	- 5 2	15 21	3 25	10
11	6 24 59 4	11 23 52 16	7 2 12 20	6 16 17 50	8 24 27 31	8 4 02 54	4 25 32 17	9 19 40 34	-17 28	11 10	15 56	4 30	11
12	6 25 59 23	0 8 24 49	7 2 54 57	6 17 55 10	8 24 37 45	8 5 14 50	4 25 37 15	9 19 37 23	-17 44	16 54	16 36	5 40	12
13	6 26 59 44	0 23 18 47	7 3 37 36	6 19 32 21	8 24 48 06	8 6 26 42	4 25 42 07	9 19 34 12	-18 00	21 47	17 22	6 53	13
14	6 28 0 6	1 8 25 25	7 4 20 19	6 21 09 21	8 24 58 34	8 7 38 31	4 25 46 55	9 19 31 01	-18 16	25 16	18 18	8 06	14
15	6 29 0 30	1 23 34 13	7 5 3 5	6 22 46 09	8 25 09 08	8 8 50 17	4 25 51 38	9 19 27 50	-18 31	26 58	19 22	9 17	15
16	7 0 0 56	2 08 35 3	7 5 45 55	6 24 22 44	8 25 19 47	8 10 01 58	4 25 56 17	9 19 24 39	-18 46	26 40	20 31	10 20	16
17	7 1 1 23	2 23 19 47	7 6 28 47	6 25 59 05	8 25 30 34	8 11 13 38	4 26 0 51	9 19 21 28	-19 01	24 28	21 42	11 15	17
18	7 2 1 53	3 7 43 13	7 7 11 43	6 27 35 14	8 25 41 26	8 12 25 12	4 26 5 20	9 19 18 17	-19 16	20 43	22 51	12 00	18
19	7 3 2 25	3 21 43 19	7 7 54 43	6 29 11 09	8 25 52 25	8 13 36 44	4 26 9 43	9 19 15 06	-19 30	15 52	23 57	12 38	19
20	7 4 2 58	4 5 20 24	7 8 37 45	7 0 46 50	8 26 03 29	8 14 48 13	4 26 14 02	9 19 11 56	-19 43	10 21	— —	13 11	20
21	7 5 3 32	4 18 36 34	7 9 20 51	7 2 22 19	8 26 14 39	8 15 59 38	4 26 18 15	9 19 08 45	-19 57	4 30	0 59	13 40	21
22	7 6 4 09	5 1 34 38	7 10 4 1	7 3 57 36	8 26 25 55	8 17 10 59	4 26 22 24	9 19 05 34	-20 10	- 1 24	1 58	14 09	22
23	7 7 4 47	5 14 17 34	7 10 47 13	7 5 32 41	9 26 37 16	8 18 22 16	4 26 26 27	9 19 02 23	-20 22	- 7 6	2 56	14 38	23
24	7 8 5 27	5 26 48 0	7 11 30 29	7 7 07 35	8 26 48 43	8 19 33 30	4 26 30 24	9 18 59 13	-20 35	-12 27	3 54	15 07	24
25	7 9 6 08	6 9 8 10	7 12 13 48	7 8 42 20	8 27 00 15	8 20 44 39	4 26 34 17	9 18 56 02	-20 47	-17 13	4 51	15 40	25
26	7 10 6 52	6 21 19 45	7 12 57 11	7 10 16 55	8 27 11 53	8 21 55 45	4 26 38 03	9 18 52 50	-20 58	-21 13	5 50	16 16	26
27	7 11 7 36	7 3 23 58	7 13 40 36	7 11 51 22	8 27 23 36	8 23 06 46	4 26 41 45	9 18 49 40	-21 09	-24 17	6 47	16 56	27
28	7 12 8 22	7 15 21 50	7 14 24 05	7 13 25 42	8 27 35 24	8 24 17 41	4 26 45 20	9 18 46 29	-21 20	-26 15	7 43	17 42	28
29	7 13 9 10	7 27 14 47	7 15 07 37	7 14 59 55	8 27 47 17	8 25 28 32	4 26 48 50	9 18 43 18	-21 30	-27 00	8 36	18 33	29
30	7 14 9 58	8 9 4 5	7 15 51 12	7 16 34 02	8 27 59 16	8 26 39 18	4 26 52 15	9 18 40 07	-21 40	-26 32	9 24	19 27	30
दिसं.	7 15 10 47	8 20 51 54	7 16 34 51	7 18 08 05	8 28 11 18	8 27 50 00	4 26 55 33	9 18 36 57	-21 49	-24 51	10 08	20 22	दिसं.
2	7 16 11 37	9 2 40 59	7 17 18 32	7 19 42 04	8 28 23 26	8 29 00 35	4 26 58 46	9 18 33 46	-21 59	-22 04	10 46	21 20	2
3	7 17 12 29	9 14 34 55	7 18 2 16	7 21 16 00	8 28 35 38	9 0 11 05	4 27 1 53	9 18 30 35	-22 07	-18 20	11 20	22 16	3
4	7 18 13 21	9 26 37 57	7 18 46 3	7 22 49 54	8 28 47 55	9 1 21 30	4 27 4 53	9 18 27 25	-22 15	-13 48	11 50	23 14	4
5	7 19 14 14	10 8 54 52	7 19 29 54	7 24 23 46	8 29 00 16	9 2 31 48	4 27 7 48	9 18 24 14	-22 23	- 8 39	12 20	— —	5
6	7 20 15 8	10 21 30 44	7 20 13 47	7 25 57 38	8 29 12 42	9 3 42 00	4 27 10 37	9 18 21 03	-22 31	- 3 2	12 48	0 12	6
7	7 21 16 3	11 4 30 27	7 20 57 42	7 27 31 29	8 29 25 12	9 4 52 05	4 27 13 20	9 18 17 52	-22 37	+ 2 52	13 18	1 09	7
8	7 22 16 58	11 17 57 59	7 21 41 42	7 29 05 21	8 29 37 45	9 6 02 03	4 27 15 57	9 18 14 42	-22 44	8 50	13 49	2 11	8
9	7 23 17 54	0 1 55 35	7 22 25 44	8 00 39 13	8 29 50 23	9 7 11 54	4 27 18 27	9 18 11 31	-22 50	14 36	14 25	3 16	9
10	7 24 18 51	0 16 22 45	7 23 9 49	8 02 13 07	9 00 03 05	9 8 21 37	4 27 20 52	9 18 08 20	-22 55	19 46	15 08	4 24	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (11 दिसं. (08) से 16 जन. (09) तक) 1 जन., 2009 ई. को अयनांश 23°/59'/12''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टैं. टा.)

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (11 दिसं. (08) से 16 जन. (09) तक) 1 जन. 2009 ई. को अयनांश 23°/59'/12''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	दिनांक
दिसं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
11	7 25 19 49	1 1 15 37	7 23 53 56	8 3 47 01	9 0 15 51	9 9 31 13	4 27 23 10	9 18 5 09	-23 01	+23 52	15 58	5 38	11
12	7 26 20 47	1 16 26 43	7 24 38 7	8 5 20 57	9 0 28 40	9 10 40 41	4 27 25 22	9 18 1 59	-23 05	26 34	16 58	6 50	12
13	7 27 21 46	2 1 45 55	7 25 22 21	8 6 54 53	9 0 41 33	9 11 50 01	4 27 27 28	9 17 58 48	-23 09	26 58	18 07	7 59	13
14	7 28 22 46	2 17 1 58	7 26 6 38	8 8 28 49	9 0 54 30	9 12 59 12	4 27 29 28	9 17 55 37	-23 13	25 29	19 20	9 00	14
15	7 29 23 47	3 2 4 31	7 26 50 58	8 10 02 44	9 1 07 30	9 14 08 15	4 27 31 21	9 17 52 26	-23 16	22 10	20 34	9 50	15
16	8 0 24 48	3 16 45 46	7 27 35 20	8 11 36 38	9 1 20 34	9 15 17 09	4 27 33 08	9 17 49 16	-23 19	17 30	21 43	10 34	16
17	8 1 25 50	4 1 01 13	7 28 19 46	8 13 10 27	9 1 33 40	9 16 25 54	4 27 34 49	9 17 46 05	-23 22	11 57	22 49	11 09	17
18	8 2 26 54	4 14 49 29	7 29 4 15	8 14 44 11	9 1 46 51	9 17 34 30	4 27 36 23	9 17 42 54	-23 24	5 58	23 51	11 41	18
19	8 3 27 59	4 28 11 40	7 29 48 47	8 16 17 46	9 2 00 05	9 18 42 56	4 27 37 50	9 17 39 43	-23 25	- 0 04	— —	12 11	19
20	8 4 29 4	5 11 10 34	8 00 33 22	8 17 51 09	9 2 13 21	9 19 51 13	4 27 39 12	9 17 36 32	-23 26	- 5 56	0 50	12 40	20
21	8 5 30 10	5 23 49 41	8 1 18 00	8 19 24 15	9 2 26 41	9 20 59 19	4 27 40 26	9 17 33 22	-23 26	-11 24	1 48	13 10	21
22	8 6 31 17	6 6 12 56	8 2 02 41	8 20 56 59	9 2 40 03	9 22 07 15	4 27 41 34	9 17 30 11	-23 26	-16 18	2 46	13 41	22
23	8 7 32 23	6 18 23 54	8 2 47 24	8 22 29 18	9 2 53 29	9 23 15 01	4 27 42 36	9 17 27 00	-23 26	-20 28	3 43	14 17	23
24	8 8 33 32	7 00 25 50	8 3 32 11	8 24 00 59	9 3 06 58	9 24 22 36	4 27 43 31	9 17 23 49	-23 25	-23 43	4 42	14 55	24
25	8 09 34 40	7 12 21 32	8 4 17 1	8 25 31 58	9 3 20 29	9 25 29 59	4 27 44 19	9 17 20 38	-23 24	-25 56	5 38	15 39	25
26	8 10 35 50	7 24 13 14	8 5 1 53	8 27 02 04	9 3 34 03	9 26 37 10	4 27 45 00	9 17 17 28	-23 22	-26 57	6 31	16 27	26
27	8 11 37 0	8 06 2 54	8 5 46 48	8 28 31 02	9 3 47 39	9 27 44 09	4 27 45 35	9 17 14 17	-23 19	-26 45	7 22	17 21	27
28	8 12 38 10	8 17 52 16	8 6 31 46	8 29 58 40	9 4 01 17	9 28 50 55	4 27 46 03	9 17 11 06	-23 16	-25 19	8 06	18 17	28
29	8 13 39 19	8 29 43 10	8 7 16 46	9 1 24 40	9 4 14 59	9 29 57 29	4 27 46 25	9 17 07 55	-23 13	-22 46	8 46	19 14	29
30	8 14 40 30	9 11 37 34	8 8 1 49	9 2 48 42	9 4 28 42	10 1 3 48	4 27 46 40	9 17 04 45	-23 09	-19 13	9 21	20 11	30
31	8 15 41 40	9 23 37 54	8 8 46 55	9 4 10 24	9 4 42 27	10 2 9 54	4 27 46 48	9 17 01 34	-23 05	-14 51	9 54	21 08	31
जन.	8 16 42 52	10 5 47 3	8 9 32 04	9 5 29 20	9 4 56 14	10 3 15 44	4 27 46 50	9 16 58 23	-23 01	- 9 50	10 22	22 04	जन.
2	8 17 44 2	10 18 8 16	8 10 17 15	9 6 45 01	9 5 10 04	10 4 21 20	4 27 46 45	9 16 55 12	-22 55	- 4 24	10 50	23 01	2
3	8 18 45 12	11 00 45 26	8 11 2 28	9 7 56 50	9 5 23 55	10 5 26 40	4 27 46 33	9 16 52 02	-22 50	+ 1 20	11 19	23 59	3
4	8 19 46 22	11 13 42 4	8 11 47 44	9 9 04 11	9 5 37 48	10 6 31 43	4 27 46 15	9 16 48 51	-22 44	7 9	11 48	— —	4
5	8 20 47 31	11 27 01 49	8 12 33 2	9 10 06 20	9 5 51 42	10 7 36 29	4 27 45 50	9 16 45 40	-22 37	12 49	12 20	1 00	5
6	8 21 48 40	0 10 47 2	8 13 18 23	9 11 02 30	9 6 05 38	10 8 40 58	4 27 45 18	9 16 42 29	-22 30	18 2	12 58	2 05	6
7	8 22 49 49	0 24 58 40	8 14 3 46	9 11 51 52	9 6 19 36	10 9 45 07	4 27 44 40	9 16 39 19	-22 23	22 26	13 42	3 13	7
8	8 23 50 57	1 9 34 49	8 14 49 11	9 12 33 33	9 6 33 35	10 10 48 58	4 27 43 55	9 16 36 08	-22 15	25 34	14 36	4 24	8
9	8 24 52 5	1 24 31 4	8 15 34 39	9 13 06 36	9 6 47 36	10 11 52 29	4 27 43 04	9 16 32 57	-22 07	27 00	15 40	5 34	9
10	8 25 53 12	2 9 40 3	8 16 20 10	9 13 30 11	9 7 01 37	10 12 55 39	4 27 42 07	9 16 29 46	-21 58	26 28	16 51	6 39	10
11	8 26 54 18	2 24 52 20	8 17 5 42	9 13 43 26	9 7 15 40	10 13 58 29	4 27 41 03	9 16 26 36	-21 49	23 56	18 05	7 36	11
12	8 27 55 26	3 9 58 1	8 17 51 17	9 13 45 38	9 7 29 44	10 15 00 56	4 27 39 52	9 16 23 25	-21 39	19 45	19 19	8 23	12
13	8 28 56 33	3 24 48 6	8 18 36 55	9 13 36 19	9 7 43 50	10 16 03 00	4 27 38 35	9 16 20 14	-21 29	14 22	20 29	9 04	13
14	8 29 57 39	4 9 16 45	8 19 22 35	9 13 15 11	9 7 57 56	10 17 04 42	4 27 37 12	9 16 17 03	-21 19	8 16	21 35	9 38	14
15	9 0 58 45	4 23 17 3	8 20 8 17	9 12 42 22	9 8 12 03	10 18 06 00	4 27 35 43	9 16 13 52	-21 08	2 2	22 37	10 10	15
16	9 1 59 51	5 6 50 55	8 20 54 2	9 11 58 21	9 8 26 11	10 19 06 52	4 27 34 07	9 16 10 42	-20 57	- 4 7	23 38	10 40	16

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(17 जन. से 22 फर. तक) 1 फरवरी, 2009 ई. को अयनांश 23°/59′/17″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जालन्धर (भा. स्टै. टा.) चंद्रोदय	चंद्रास्त	जनवरी
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	घं. मि.	
17	9 3 0 57	5 19 58 25	8 21 39 49	9 11 04 07	9 8 40 19	10 20 07 19	4 27 32 25	9 16 07 31	-20 46	- 9 54	— —	11 10	17
18	9 4 2 2	6 2 42 32	8 22 25 39	9 10 01 05	9 8 54 29	10 21 07 20	4 27 30 37	9 16 04 20	-20 34	-15 5	0 38	11 41	18
19	9 5 3 7	6 15 07 2	8 23 11 31	9 8 51 04	9 9 08 39	10 22 06 55	4 27 28 43	9 16 01 09	-20 21	-19 32	1 36	12 16	19
20	9 6 4 12	6 27 16 13	8 23 57 25	9 7 36 13	9 9 22 49	10 23 06 00	4 27 26 43	9 15 57 59	-20 08	-23 3	2 35	12 53	20
21	9 7 5 16	7 09 14 35	8 24 43 11	9 6 18 55	9 9 37 00	10 24 04 37	4 27 24 36	9 15 54 48	-19 55	-25 33	3 32	13 36	21
22	9 8 6 20	7 21 6 14	8 25 29 20	9 5 01 33	9 9 51 12	10 25 02 44	4 27 22 24	9 15 51 37	-19 42	-26 52	4 27	14 23	22
23	9 9 7 24	8 02 54 51	8 26 15 20	9 3 46 22	9 10 05 24	10 26 00 19	4 27 20 06	9 15 48 26	-19 28	-26 58	5 18	15 15	23
24	9 10 8 26	8 14 43 40	8 27 1 23	9 2 35 26	9 10 19 36	10 26 57 22	4 27 17 42	9 15 45 16	-19 14	-25 51	6 04	16 10	24
25	9 11 9 28	8 26 35 31	8 27 47 28	9 1 30 25	9 10 33 47	10 27 53 51	4 27 15 12	9 15 42 05	-18 59	-23 33	6 46	17 07	25
26	9 12 10 30	9 8 32 34	8 28 33 35	9 0 32 39	9 10 48 00	10 28 49 46	4 27 12 36	9 15 38 55	-18 44	-20 12	7 23	18 05	26
27	9 13 11 31	9 20 36 42	8 29 19 44	8 29 43 00	9 11 02 11	10 29 45 04	4 27 09 55	9 15 35 44	-18 29	-15 59	7 56	19 03	27
28	9 14 12 31	10 02 49 42	9 00 5 54	8 29 02 02	9 11 16 23	11 00 39 44	4 27 07 08	9 15 32 33	-18 13	-11 4	8 26	19 59	28
29	9 15 13 29	10 15 13 08	9 0 52 7	8 28 29 58	9 11 30 35	11 01 33 46	4 27 04 16	9 15 29 22	-17 57	- 5 40	8 54	20 57	29
30	9 16 14 27	10 27 48 35	9 1 38 21	8 28 06 44	9 11 44 46	11 02 27 06	4 27 01 18	9 15 26 12	-17 41	- 0 2	9 22	21 54	30
31	9 17 15 24	11 10 37 37	9 2 24 37	8 27 52 10	9 11 58 57	11 03 19 44	4 26 58 16	9 15 23 01	-17 24	5 50	9 51	22 54	31
फर.	9 18 16 19	11 23 42 2	9 3 10 55	8 27 45 51	9 12 13 07	11 04 11 38	4 26 55 08	9 15 19 50	-17 07	11 29	10 22	23 56	फर.
2	9 19 17 13	0 7 3 27	9 3 57 15	8 27 47 21	9 12 27 17	11 05 02 47	4 26 51 55	9 15 16 39	-16 50	16 44	10 56	— —	2
3	9 20 18 5	0 20 43 05	9 4 43 36	8 27 56 11	9 12 41 26	11 05 53 06	4 26 48 37	9 15 13 29	-16 33	21 17	11 37	1 00	3
4	9 21 18 56	1 4 41 29	9 5 29 58	8 28 11 49	9 12 55 34	11 06 42 35	4 26 45 14	9 15 10 18	-16 15	24 44	12 25	2 08	4
5	9 22 19 46	1 18 58 5	9 6 16 22	8 28 33 45	9 13 09 41	11 07 31 13	4 26 41 47	9 15 07 07	-15 57	26 43	13 22	3 16	5
6	9 23 20 34	2 03 30 37	9 7 02 48	8 29 01 26	9 13 23 48	11 08 18 57	4 26 38 15	9 15 03 56	-15 38	26 57	14 27	4 21	6
7	9 24 21 21	2 18 15 1	9 7 49 15	8 29 34 24	9 13 37 53	11 09 05 46	4 26 34 39	9 15 00 45	-15 20	25 17	15 38	5 20	7
8	9 25 22 07	3 3 5 26	9 8 35 44	9 0 12 15	9 13 51 58	11 09 51 35	4 26 30 58	9 14 57 34	-15 01	21 51	16 52	6 11	8
9	9 26 22 51	3 17 55 54	9 9 22 14	9 0 54 32	9 14 06 01	11 10 36 24	4 26 27 14	9 14 54 23	-14 42	17 0	18 03	6 54	9
10	9 27 23 34	4 02 35 49	9 10 08 45	9 1 40 54	9 14 20 03	11 11 20 10	4 26 23 25	9 14 51 13	-14 23	11 11	19 12	7 31	10
11	9 28 24 15	4 17 01 18	9 10 55 19	9 2 30 56	9 14 34 04	11 12 02 50	4 26 19 32	9 14 48 03	-14 03	4 52	20 18	8 05	11
12	9 29 24 57	5 1 5 48	9 11 41 53	9 3 24 24	9 14 48 04	11 12 44 23	4 26 15 35	9 14 44 52	-13 43	- 1 31	21 22	8 37	12
13	10 0 25 34	5 14 46 08	9 12 28 29	9 4 21 00	9 15 02 02	11 13 24 45	4 26 11 34	9 14 41 41	-13 23	- 7 39	22 22	9 08	13
14	10 1 26 12	5 28 1 14	9 13 15 07	9 5 20 29	9 15 15 59	11 14 03 54	4 26 07 30	9 14 38 30	-13 03	-13 14	23 24	9 40	14
15	10 2 26 49	6 10 52 13	9 14 01 46	9 6 22 37	9 15 29 54	11 14 41 47	4 26 03 22	9 14 35 20	-12 42	-18 5	— —	10 14	15
16	10 3 27 24	6 23 21 49	9 14 48 26	9 7 27 13	9 15 43 47	11 15 18 22	4 25 59 11	9 14 32 09	-12 22	-22 0	0 24	10 50	16
17	10 4 27 58	7 5 34 58	9 15 35 08	9 8 34 06	9 15 57 39	11 15 53 35	4 25 54 57	9 14 28 58	-12 01	-24 52	1 22	11 31	17
18	10 5 28 31	7 17 33 18	9 16 21 51	9 9 43 05	9 16 11 29	11 16 27 23	4 25 50 39	9 14 25 47	-11 40	-26 35	2 19	12 18	18
19	10 6 29 3	7 29 24 37	9 17 08 36	9 10 54 03	9 16 25 17	11 16 59 43	4 25 46 19	9 14 22 37	-11 18	-27 3	3 12	13 08	19
20	10 7 29 33	8 11 12 52	9 17 55 21	9 12 06 53	9 16 39 04	11 17 30 32	4 25 41 56	9 14 19 26	-10 57	-26 17	4 00	14 02	20
21	10 8 30 02	8 23 2 36	9 18 42 08	9 13 21 27	9 16 52 48	11 17 59 46	4 25 37 30	9 14 16 15	-10 35	-24 20	4 43	14 58	21
22	10 9 30 30	9 4 57 40	9 19 28 55	9 14 37 40	[illegible]	[illegible]	[illegible]	9 14 13 04	-10 14	-21 18	5 22	15 56	22

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (23 फर. से 31 मार्च तक)

1 मार्च, 2009 ई. को अयनांश 23°/59'/20''

जालन्धर (भा. स्टैं. टा.)

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	चंद्रोदय	चंद्रास्त	फरवरी
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	घं. मिं.	घं. मिं.	
23	10 10 30 56	9 17 1 41	9 20 15 44	9 15 55 27	9 17 20 10	11 18 53 15	4 25 28 30	9 14 9 54	-9 52	-17 19	5 56	16 53	23
24	10 11 31 21	9 29 17 10	9 21 2 34	9 17 14 43	9 17 33 47	11 19 17 23	4 25 23 57	9 14 6 43	-9 29	-12 34	6 27	17 52	24
25	10 12 31 44	10 11 45 48	9 21 49 25	9 18 35 25	9 17 47 22	11 19 39 41	4 25 19 22	9 14 3 32	-9 07	-7 14	6 57	18 50	25
26	10 13 32 05	10 24 28 39	9 22 36 16	9 19 57 29	9 18 00 55	11 20 00 06	4 25 14 45	9 14 0 21	-8 45	-1 31	7 25	19 47	26
27	10 14 32 24	11 7 25 44	9 23 23 8	9 21 20 52	9 18 14 25	11 20 18 33	4 25 10 06	9 13 57 11	-8 22	+4 21	7 55	20 47	27
28	10 15 32 42	11 20 36 41	9 24 10 1	9 22 45 31	9 18 27 52	11 20 34 59	4 25 5 26	9 13 54 0	-8 00	10 7	8 25	21 49	28
मार्च	10 16 32 58	0 4 0 38	9 24 56 55	9 24 11 25	9 18 41 17	11 20 49 20	4 25 0 44	9 13 50 49	-7 37	15 31	8 58	22 53	मार्च
2	10 17 33 11	0 17 36 34	9 25 43 49	9 25 38 32	9 18 54 39	11 21 1 30	4 24 56 1	9 13 47 38	-7 14	20 15	9 37	24 00	2
3	10 18 33 23	1 1 23 26	9 26 30 43	9 27 6 50	9 19 7 57	11 21 11 28	4 24 51 17	9 13 44 27	-6 51	23 57	10 22	— —	3
4	10 19 33 32	1 15 20 18	9 27 17 38	9 28 36 19	9 19 21 13	11 21 19 09	4 24 46 33	9 13 41 17	-6 28	26 17	11 15	1 07	4
5	10 20 33 39	1 29 26 9	9 28 4 34	10 0 6 57	9 19 34 26	11 21 24 31	4 24 41 47	9 13 38 6	-6 05	26 59	12 15	2 11	5
6	10 21 33 45	2 13 39 41	9 28 51 30	10 1 38 43	9 19 47 35	11 21 27 28	4 24 37 1	9 13 34 55	-5 42	25 55	13 22	3 10	6
7	10 22 33 48	2 27 59 4	9 29 38 26	10 3 11 38	9 20 0 41	11 21 28 0	4 24 32 14	9 13 31 44	-5 19	23 8	14 33	4 03	7
8	10 23 33 49	3 12 21 42	10 0 25 23	10 4 45 40	9 20 13 44	11 21 26 4	4 24 27 27	9 13 28 34	-4 55	18 54	1542	4 47	8
9	10 24 33 48	3 26 43 47	10 1 12 20	10 6 20 51	9 20 26 44	11 21 21 38	4 24 22 40	9 13 25 23	-4 32	13 34	16 51	5 26	9
10	10-25 33 45	4 11 0 59	10 1 59 17	10 7 57 11	9 20 39 39	21 21 14 41	4 24 17 53	9 13 22 12	-4 08	7 33	17 58	6 01	10
11	10 26 33 39	4 25 08 14	10 2 46 15	10 9 34 38	9 20 52 32	11 21 05 13	4 24 13 6	9 13 19 1	-3 45	1 13	19 01	6 33	11
12	10 27 33 32	5 09 0 56	10 3 33 13	10 11 13 15	9 21 5 21	11 20 53 14	4 24 8 20	9 13 15 50	-3 21	-5 2	20 04	7 04	12
13	10 28 33 23	5 22 35 10	10 4 20 11	10 12 53 01	9 21 18 06	11 20 38 45	4 24 3 34	9 13 12 40	-2 58	-10 55	21 07	7 36	13
14	10 29 33 13	6 05 48 35	10 5 07 10	10 14 33 57	9 21 30 47	11 20 21 49	4 23 58 49	9 13 9 29	-2 34	-16 9	22 08	8 09	14
15	11 0 33 0	6 18 40 39	10 5 54 9	10 16 16 04	9 21 43 25	11 20 2 28	4 23 54 4	9 13 6 18	-2 10	-20 31	23 09	8 46	15
16	11 1 32 46	7 1 12 33	10 6 41 8	10 17 59 22	9 21 55 58	11 19 40 48	4 23 49 21	9 13 3 08	-1 47	-23 50	— —	9 26	16
17	11 2 32 29	7 13 27 2	10 7 28 7	10 19 43 53	9 22 8 28	11 19 16 52	4 23 44 38	9 12 59 57	-1 23	-25 58	0 07	10 11	17
18	11 3 32 12	7 25 28 1	10 8 15 6	10 21 29 37	9 22 20 53	11 18 50 49	4 23 39 57	9 12 56 46	-0 59	-26 52	1 02	11 00	18
19	11 4 31 52	8 7 20 21	10 9 02 6	10 23 16 35	9 22 33 14	11 18 22 45	4 23 35 17	9 12 53 35	-0 35	-26 30	1 52	11 52	19
20	11 5 31 31	8 19 9 8	10 9 49 5	10 25 04 47	9 22 45 31	11 17 52 48	4 23 30 39	9 12 50 24	-0 12	-24 57	2 38	12 48	20
21	11 6 31 8	9 00 59 40	10 10 36 5	10 26 54 14	9 22 57 43	11 17 21 10	4 23 26 3	9 12 47 14	+0 12	-22 17	3 19	13 45	21
22	11 7 30 43	9 12 57 11	10 11 23 4	10 28 44 57	9 23 9 51	11 16 47 59	4 23 21 28	9 12 44 03	+0 36	-18 38	3 54	14 42	22
23	11 8 30 16	9 25 6 10	10 12 10 3	11 0 36 55	9 23 21 55	11 16 13 29	4 23 16 55	9 12 40 52	+0 59	-14 10	4 27	15 40	23
24	11 9 29 48	10 7 30 30	10 12 57 2	11 2 30 10	9 23 33 53	11 15 37 52	4 23 12 25	9 12 37 41	+1 23	-9 2	4 57	16 38	24
25	11 10 29 18	10 20 12 39	10 13 44 1	11 4 24 39	9 23 45 48	11 15 1 22	4 23 7 57	9 12 34 31	1 47	-3 26	5 26	17 36	25
26	11 11 28 45	11 3 14 00	10 14 30 59	11 6 20 23	9 23 57 37	11 14 24 13	4 23 3 31	9 12 31 20	2 10	+2 26	5 55	18 36	26
27	11 12 28 11	11 16 34 02	10 15 17 57	11 8 17 20	9 24 9 21	11 13 46 39	4 22 59 8	9 12 28 9	2 34	8 20	6 25	19 38	27
28	11 13 27 35	0 0 10 52	10 16 4 54	11 10 15 27	9 24 21 1	11 12 8 54	4 22 54 47	9 12 24 58	2 57	13 57	6 59	20 43	28
29	11 14 26 56	0 14 1 25	10 16 51 51	11 12 14 43	9 24 32 34	11 12 31 16	4 22 50 30	9 12 21 47	3 21	18 58	7 37	21 50	29
30	11 15 26 15	0 28 1 45	10 17 38 47	11 14 15 4	9 24 44 3	11 11 53 56	4 22 46 16	9 12 18 37	3 44	23 00	8 20	22 59	30
31	11 16 25 33	1 12 8 2	10 18 25 43	11 16 16 24	9 24 55 25	11 11 17 13	4 22 42 5	9 12 15 26	4 07	25 42	9 11	24 04	31

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो का निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे भा. स्टै. टा. वि. २०६५ (2008-09 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
1	10 25 58 12	9 29 28	8 7 10
4	10 26 07 54	9 29 32	8 7 10
7	10 26 17 24	9 29 37	8 7 09
10	10 26 26 42	9 29 42	8 7 09
13	10 26 35 48	9 29 46	8 7 08
16	10 26 44 42	9 29 50	8 7 07
19	10 26 53 24	9 29 53	8 7 05
22	10 27 01 52	9 29 57	8 7 03
25	10 27 10 05	10 0 00	8 7 02
28	10 27 18 00	10 0 03	8 6 59
मई	10 27 25 36	10 0 06	8 6 57
4	10 27 32 53	10 0 08	8 6 54
7	10 27 39 52	10 0 10	8 6 51
10	10 27 46 34	10 0 12	8 6 48
13	10 27 52 54	10 0 14	8 6 45
16	10 27 58 50	10 0 15	8 6 41
19	10 28 4 30	10 0 16	8 6 37
22	10 28 9 47	10 0 16	8 6 34
25	10 28 14 36	10 0 17	8 6 29
28	10 28 19 07	10 0 17	8 6 25
31	10 28 23 12	10 0 16	8 6 21
जून	10 28 24 22	10 0 16	8 6 20
4	10 28 27 56	10 0 15	8 6 15
7	10 28 31 00	10 0 15	8 6 11
10	10 28 33 40	10 0 13	8 6 06
13	10 28 35 50	10 0 12	8 6 02
16	10 28 37 40	10 0 10	8 5 57
19	10 28 39 8	10 0 08	8 5 52
22	10 28 40 5	10 0 06	8 5 48
25	10 28 40 34	10 0 03	8 5 43
28	10 28 40 38	10 0 00	8 5 38
जुला	10 28 40 16	9 29 57	8 5 34
4	10 28 39 28	9 29 54	8 5 29
7	10 28 38 20	9 29 51	8 5 25
10	10 28 36 32	9 29 47	8 5 20

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
13	10 28 34 32	9 29 43	8 5 16
16	10 28 32 4	9 29 39	8 5 12
19	10 28 29 14	9 29 35	8 5 08
22	10 28 25 52	9 29 31	8 5 04
25	10 28 22 16	9 29 26	8 5 00
28	10 28 18 22	9 29 22	8 4 57
31	10 28 13 50	9 29 17	8 4 53
अग.	10 28 12 20	9 29 15	8 4 52
4	10 28 07 34	9 29 11	8 4 49
7	10 28 02 28	9 29 06	8 4 46
10	10 27 57 04	9 29 01	8 4 44
13	10 27 51 20	9 28 56	8 4 41
16	10 27 45 26	9 28 51	8 4 39
19	10 27 39 22	9 28 46	8 4 37
22	10 27 32 50	9 28 41	8 4 35
25	10 27 26 16	9 28 37	8 4 34
28	10 27 19 26	9 28 32	8 4 33
31	10 27 12 32	9 28 27	8 4 32
सितं	10 27 10 22	9 28 25	8 4 32
4	10 27 03 14	9 28 21	8 4 21
7	10 26 56 04	9 28 16	8 4 31
10	10 26 49 00	9 28 12	8 4 31
13	10 26 41 42	9 28 08	8 4 31
16	10 26 34 30	9 28 04	8 4 32
19	10 26 27 20	9 27 00	8 4 33
22	10 26 20 16	9 27 56	8 4 34
25	10 26 13 08	9 27 52	8 4 35
28	10 26 06 20	9 27 49	8 4 37
अक्तू	10 25 59 26	9 27 46	8 4 39
4	10 25 52 50	9 27 43	8 4 41
7	10 25 46 16	9 27 40	8 4 44
10	10 25 40 10	9 27 38	8 4 47
13	10 25 34 04	9 27 36	8 4 50
16	10 25 28 18	9 27 34	8 4 53
19	10 25 22 56	9 27 33	8 4 57

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्तू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
22	10 25 17 40	9 27 31	8 5 01
25	10 25 12 44	9 27 30	8 5 05
28	10 25 8 14	9 27 30	8 5 10
31	10 25 4 10	9 27 29	8 5 14
नवं.	10 25 2 53	9 27 29	8 5 15
4	10 24 59 10	9 27 29	8 5 20
7	10 24 56 0	9 27 29	8 5 25
10	10 24 53 5	9 27 30	8 5 30
13	10 24 50 38	9 27 31	8 5 36
16	10 24 48 37	9 27 32	8 5 41
19	10 24 47 10	9 27 34	8 5 47
22	10 24 46 6	9 27 36	8 5 53
25	10 24 45 18	9 27 38	8 5 59
28	10 24 45 8	9 27 40	8 6 05
दिसं.	10 24 45 26	9 27 43	8 6 11
4	10 24 46 14	9 27 46	8 6 17
7	10 24 47 20	9 27 49	8 6 24
10	10 24 49 04	9 27 53	8 6 30
13	10 24 51 10	9 27 57	8 6 37
16	10 24 53 42	9 28 01	8 6 43
19	10 24 56 46	9 28 05	8 6 50
22	10 25 0 12	9 28 10	8 6 56
25	10 25 4 10	9 28 15	8 7 03
28	10 25 8 42	9 28 20	8 7 10
31	10 25 13 20	9 28 25	8 7 16
2009 जन.	10 25 15 00	9 28 26	8 7 18
4	10 25 20 22	9 28 32	8 7 25
7	10 25 26 04	9 28 38	8 7 31
10	10 25 32 10	9 28 44	8 7 37
13	10 25 38 32	9 28 50	8 7 44
16	10 25 45 20	9 28 56	8 7 50
19	10 25 52 34	9 29 3	8 7 56
22	10 26 0 02	9 29 9	8 8 02
25	10 26 7 50	9 29 15	8 8 08
28	10 26 16 00	9 29 22	8 8 13

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
31	10 26 24 16	9 29 29	8 8 19
फर.	10 26 27 13	9 29 31	8 8 20
4	10 26 35 48	9 29 38	8 8 26
7	10 26 44 52	9 29 44	8 8 31
10	10 26 54 00	9 29 51	8 8 35
13	10 27 03 13	9 29 58	8 8 40
16	10 27 12 49	10 0 05	8 8 44
19	10 27 22 34	10 0 12	8 8 48
22	10 27 32 20	10 0 18	8 8 52
25	10 27 42 18	10 0 25	8 8 56
28	10 27 52 13	10 0 32	8 8 59
मार्च	10 27 55 58	10 0 34	8 9 00
4	10 28 06 00	10 0 41	8 9 03
7	10 28 16 08	10 0 47	8 9 06
10	10 28 26 24	10 0 54	8 9 09
13	10 28 36 43	10 1 00	8 9 11
16	10 28 47 04	10 1 06	8 9 13
19	10 28 57 16	10 1 12	8 9 15
22	10 29 07 30	10 1 18	8 9 16
25	10 29 17 43	10 1 24	8 9 17
28	10 29 27 58	10 1 29	8 9 18
31	10 29 37 48	10 1 34	8 9 18

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त्त–वि. संवत् २०६५ (सं. २००८–०९ ई.)

समय शुद्धि विचार—

➲ **शुक्र-अस्त**–3 मई से 12 जुलाई (प्रातः 4/31) तक शुक्र पूर्व में अस्त रहेगा। अस्त से तीन दिन पूर्व वार्धक्य तथा उदय होने के तीन दिन पश्चात् शुक्र बाल्यत्व दोष रहेगा।

➲ **खण्डग्रास सूर्यग्रहण**–इस वर्ष 1 अगस्त, शुक्रवार को सम्पूर्ण भारत में खण्ड सूर्यग्रहण दिखाई देगा। (देखें पृष्ठ—), अतएव 31 जुलाई से 2 अगस्त तक ग्रहण शूल (वेध) का विचार रहेगा।

➲ **खण्ड-चन्द्रग्रहण**–16 अगस्त, शनिवार को सम्पूर्ण भारत में खण्ड चन्द्रग्रहण दिखाई देगा। इसलिए 15 अगस्त से 17 अगस्त तक भी विवाह मुहूर्त त्याज्य रहेंगे।

➲ **श्राद्ध-काल**–15 सितं. से 29 सितं. तक श्राद्ध रहेंगे।

➲ **भीष्मपंचक**–9 नवं. से 13 नवं. के मध्य भीष्मपंचक रहेंगे। परम्परागत पंजाब, हि. प्र., हरि., जम्मू-कश्मीर में भीष्मपंचक दिनों में विवाहादि शुभ कृत्यों का निषेध माना जाता रहा है। परन्तु वर्तमानकाल में कुछ विद्वान स्पष्ट शास्त्र निर्देश के अभाव में भीष्मपंचकों में शुभ कार्यों का निषेध नहीं मानते।

➲ **मकरस्थ गुरु विचार**–9 दिसं. (रात्रि 11/42) से 1 जनवरी, 2009 ई. के मध्य गुरु नीच नवांश एवं परमनीच स्थिति में होने से इस अवधि में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे। देखें पृष्ठ 135

➲ **पौष मास**–15 दिसं. से 13 जन., 2009 ई. तक पौष मास में विवाहादि शुभ कार्य नहीं किए जाते।

➲ **गुरु अस्त**–11 जन., 2009 ई. से 9 फर., 2009 ई. तक गुरु अस्त रहेंगे। अस्त से 3 दिन पूर्व वार्धक्य दोष तथा उदय के तीन दिन बाद भी गुरु बाल्यत्व दोष रहने से शुभ कार्यों का निषेध रहेगा।

➲ **होलाष्टक**–4 मार्च से 11 मार्च, 2009 ई. के मध्य होलाष्टक व्याप्त रहेंगे॥

➲ **स्पष्टीकरण**–नीचे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)—इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। **मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय** लिया गया है।

विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को बृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को **मीन लग्न** जानें॥

ध्यान रहे, विवाह मुहूर्त्तों में अंग्रेजी तारीख सूर्योदयकालिक हैं। जहाँ मुहूर्त्तकाल (लग्न) रात्रि १२ बजे के बाद तथा सूर्योदय से पहले का हो, वहाँ अंग्रेजी तारीख अगली (अग्रिम) समझनी चाहिए।

◎ वैशाख मासे ◎ (अप्रैल–मई) सन् २००८ ई.

दि. ल. = दिन लग्न––रा. ल. = रात्रि लग्न

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
चैत्र शुक्ल १०, मंग.	15 अप्रै.	३ वैशा.	मघा	सिंह	।ऽसू.ऽश.के.।ऽरा.ऽअ.ऽऽऽ।	दि. ल. २ (गु. दा.), ४ (चं. दा.) रात्रौ लग्नाभाव, शनि–केतु युति दोष परिहारः,–**आवश्यके**
चैत्र शु. १२/१३ गुरु	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.फा.	सिं./कं.	ऽ सू. ।।ऽ शु. ।।।।।।	दि. ल. ४ (मं. दा.), गोधूली, रा. ल. १२ (मीन लग्ने चंद्र सप्तमे दानादि)
चैत्र शुक्ल १३, शुक्र	18 अप्रै.	६ वैशा.	उ.फा.	कन्या	ऽसू. ।।ऽशु. ।।ऽव्या ।।।	दि. ल. २ (गुरु पूज्य दान वा, स्वराशिस्थे गुरु–अष्टम परिहारः), वृष लग्ने व्याघात परिहार
चैत्र शु. १३/१४, शुक्र	18 अप्रै.	६ वैशा.	हस्त	कन्या	।।।।।।ऽ व्या ।।।	दि. ल. ४ (मं. दा.), गोधूलि, रा. ल. १२ (चं. दा.), व्याघात योग परिहारः
चैत्र शुक्ल १४, शनि	19 अप्रै.	७ वैशा.	हस्त	कन्या	।।।।।।ऽ ।।।	दि. ल. २, ४ (मं. दा.), गोधूलि च.
चैत्र शु. १४/१५, शनि	19 अप्रै.	७ वैशा.	चित्रा	कं./तु.	।ऽ ह. ।।ऽ शु ऽ चौ ।ऽ ।	रा. ल. १२ (मीने शु. गु. केन्द्रे, चन्द्राष्टम परिहारः) भद्रा पाताले शुभप्रदा
चैत्र शुक्ल १५, रवि	20 अप्रै.	८ वैशा.	चित्रा	तुला	।ऽ ।।ऽ शु ऽ चौ ऽ व ऽ।।	दि. ल. ४ (मंगल का दान)
चैत्र शुक्ल १५, रवि	20 अप्रै.	८ वैशा.	स्वा.	तुला	।।।।ऽ सू ।ऽ ऽ ।।	रा. ल. १२ (मीने शु. गु. केन्द्रे, चन्द्राष्टम परिहारः)
वैशा. कृष्ण १, चंद्र	21 अप्रै.	९ वैशा.	स्वा.	तुला	।।।।ऽ सू ।ऽ ऽ ।।	दि. ल. ४ (कर्के मंगल का दान)
वैशा. कृष्ण २, मंग.	22 अप्रै.	१० वैशा.	अनु.	वृश्चिक	ऽ श ऽ व्य ।ऽबु ।।ऽ।।।	रा. ल. १२ (मीन लग्ने चंद्रदान) व्यतीपात दोष–मध्याह्न उपरांत परिहारः
वैशा. कृष्ण ३, बुध	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	वृश्चिक	ऽ श ऽ ।ऽ बु ।ऽ ऽ ।।।	दि. ल. २ (चं. दा.), ४ (मं. दा.) भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा, गोधूलि
वैशा. कृष्ण ७, रवि	27 अप्रै.	१५ वैशा.	उ.षा.	मकर	।ऽ सा ऽ गु।ऽ मं।।।।।	दि. ल. ४ (चं., मं. दान), गोधूलि, रा. ल. १२ (मीन)
वैशा. कृष्ण ७, चंद्र	28 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.षा.	मकर	।ऽ सा ऽ गु ।ऽ मं ।।।।	दि. ल. ४ (चं., मं. का दान)

◎ श्रावण मास ◎ (जुलाई— अगस्त)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टें. टा. में)
आषा. शुक्ल१४, गुरु	17 जुला	२ श्राव.	उ.षा.	धनु	I S वै I I S सू I S वै S I I	रा. ल. ३ (चं., गु. ७वें दान व पूजा) प्रातः 10/00 से रात्रि 22/40 तक मृत्युबाण दोष
आषा. पूर्णिमा, शुक्र	18 जुला	३ श्राव.	उ.षा.	मकर	I S I I Sसू S अ S S I I	दि. ल. ६ (मं. श. दान), ७, रा. ल. १२, १, २ (गु. दा.)
श्राव. कृष्ण ५, बुध	23 जुला	८ श्राव.	उ.भा.	मीन	I I I I I I S अ I I S	दि. ल. ६ (चं. दा.), ८, रा. ल. १ (चं. दा.), २-३ (गु. दा.) [रात्रौ दग्धा तिथि परिहारः]
श्राव. कृष्ण ६, गुरु	24 जुला	९ श्राव.	रेव	मीन	I I I I I S रो S I I I	दि. ल. ६ (चं. दा.), ८, रा. ल. २-३ (गु. दा.)
श्राव. कृष्ण ९, रवि	27 जुला	१२ श्राव.	रोहि.	वृष	I I I I I S अ S S I I	रा. ल. ३ (चं. दा.), मिथुन लग्न 28/01 उपरान्त (भद्रा स्वर्गे शुभा)
श्रा. कृष्ण १०/११, चंद्र	28 जुला	१३ श्राव.	रोहि.	वृष	I I I I I S अ S S I I	दि. ल. ६ (श. मं. दा.), ८ (चं. दा.). रा. ल. १२, १, २ (वृषे चं., गु. का परिहार, दानं च)
श्रा. कृष्ण १०/११, चंद्र	28 जुला	१३ श्राव.	मृग	वृष	S शु I I I I I I S I I	रा. ल. २-३ (चं. गु. दान)
श्राव. कृष्ण १२, मंग	29 जुला	१४ श्राव.	मृग	वृ./मिथु.	S शु I I I I I I S I I	दि.ल. ७ (दुपै. 12/52 बाद), (कन्या लग्ने व्याघात दोष), रा. ल. १२, १ [मेष लग्न रात्रि 23/45 तक]
श्राव. शुक्ल २, रवि	3 अग.	१९ श्राव.	मघा	सिंह	! I S शु I Sरा S रो I I I I	दि. ल. ६ (चं. श. दा.), ७, ८ (वृश्चिक लग्न 15/13 तक) वृश्चिक लग्ने परिघ विचार
श्राव. शुक्ल ३, चंद्र	4 अग.	२० श्राव.	उ.फा.	सिं./कं.	I I S मं. I I I I I I I	दि. ल. ८ (14/56 बाद), रा. ल. २, ३ (गु. दा.) मंगल युति परिहार; भद्रा पाताले शुभदा
श्राव शुक्ल ४, मंग	5 अग.	२१ श्राव.	हस्त	कन्या	I I I I I I S S I I	रा. ल. २, ३ (गु. दा.) दिवस लग्ने मृत्युबाण दोष
श्राव. शुक्ल ५, बुध	6 अग.	२२ श्राव.	हस्त	कन्या	I I I I I S अ S S I I	दि. ल. ७ (चं. दा.), ८
श्राव. शुक्ल ५, बुध	6 अग.	२२ श्राव.	चित्रा	कन्या	S मं S I I I S अ I I I S	सायं ल. ९, रा. ल. २-३ (गु. दा.), (मिथुने शुक्र दान)
श्राव शुक्ल ६, गुरु	7 अग.	२३ श्राव.	चित्रा	तुला	S मं S I I I I I I I I	दि. ल. ६, ८ [वृश्चिक लग्न 14/16 तक] [14/17 से 19/31 तक क्रान्तिसाम्य दोषः]
श्राव. शुक्ल ६, गुरु	7 अग.	२३ श्राव.	स्वा.	तुला	I S I I I I S S I I	दि. ल. १ (चं. दा.), ३ (गु. दा.)
श्राव. शुक्ल ७, शुक्र	8 अग.	२४ श्राव.	स्वा.	तुला	I S I I I S नृ S S I I	दि. ल. ६, ८ (चं. दा.), ९ [भद्रा पाताले शुभप्रदा]
श्राव. शुक्ल ८, शनि	9 अग.	२५ श्राव.	अनु.	वृश्चिक	I I I I I I S I I I	रा. ल. १ (चं. दा., ल. रात्रि 23/16 बाद), २-३ (चं., गु. दान)
श्राव. शुक्ल ९, रवि	10 अग.	२६ श्राव.	अनु.	वृश्चिक	I I I I I S चो S I I I	दि. ल. ७-९ (चं. मं. दा.), रा. ल. २-३ (चं., गु. दा.) [मिथुन लग्न रात्रि 26/11 तक]
श्राव. शुक्ल ११, मंग	12 अग.	२८ श्राव.	मूल	धनु	I S वै I I I S रो S I I I	दि. ल. ७ (मं. दा.), ८, रा. ल. ३ (चं. गु. दा.) भद्रा पाताले शुभदा, रात्रौ लग्ने भद्राऽभावः
श्राव. शुक्ल १३, गुरु	14 अग.	३० श्राव.	उ.षा.	धनु	I I I I I I S I I I	दि. ल. ७ (मं. दा.), ८ (15/29 तक) (15/30 से मृत्युबाण दोष व्याप्ति)

◎ भाद्रपद मास ◎ (अगस्त–सितम्बर)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टें. टा. में)
भाद्र. कृष्ण ३, मंग	19 अग.	४ भाद्र.	उ.भा.	मीन	I I I I S मं I I I I I	रा. ल. ३ (गु. दा.), मिथुन लग्न रात्रि (1/19) बजे के बाद
भाद्र. कृष्ण ४, बुध	20 अग.	५ भाद्र.	उ.भा.	मीन	I I I I S मं I I I I I	दि. ल. ८ (लग्न दुपैहर 14/29 तक)
भाद्र. कृष्ण ८, रवि	24 अग.	९ भाद्र.	रोहिणी	वृष	Sरा I I I I Sरो Sव्या S I I	दि. ल. ८ (चं. दा.), रा. ल. २ (चं., गु. दा.), ३ (गु. दान), वृषे गुरू अष्टम परिहारः
भाद्र. कृष्ण ९, चंद्र	25 अग.	१० भाद्र.	मृग.	वृ./मिथु.	I S हर्ष I I I I I S I S	दि. ल. ८ (चं. दा.), रा. ल. २ (गु. दा.) वृष लग्ने गुरु अष्टमे परिहारः
भाद्र. शुक्ल १, रवि	31 अग.	१६ भाद्र.	उ.फा.	सिंह.	I S सा Sशु बु I I I S I I I	रा. ल. ३ (चं., गु. पूज्य व दान), पादेन शुक्र युतऽभावः
भाद्र. शुक्ल २, चंद्र	1 सितं.	१७ भाद्र.	उ.फा.	कन्या	I S सा S शु I I S चो S I I I	दि. ल. ७ (चं. मं. दा.), ८, ९, रा. ल. २ (गु. पूज्य व दान–गुरु अष्टम परिहार)
भाद्र शुक्ल २/३, चंद्र	1 सितं.	१७ भाद्र.	हस्त	कन्या	I I S बु मं I I I S I I I	रा. ल. ३ (गु. दा.) भौम युति परिहार (मंगल, गुरु दान व पूजा)
भाद्र. शुक्ल ३, मंग.	2 सितं.	१८ भाद्र.	हस्त	कन्या	I I S मं बु I I I S I I I	दि. ल. ८ (दुपैहर 13/43 बाद), ९ [कन्यायां चन्द्रे भौम युति परिहारः], गोधूलि, रा. ल. ३ (गु. दा.) [प्रातः 9/28 से 13/42 तक क्रान्तिसाम्य दोष.]

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टें. टा. में)
भाद्र. शुक्ल ३, मंग.	2 सितं.	१८ भाद्र.	चित्रा	कन्या	I I I I I I I I I I	रा. ल. ३ (गु. दा.)
भाद्र शुक्ल ४, बुध	3 सितं.	१९ भाद्र.	चित्रा	कं./तु.	I I I I I S रो I I I I	दि. ल. ७ (चं. मं. दा.), ८, ९ (भद्रा पाताले शुभदा), रा. ल. ३ (गु. दा.)
भाद्र शुक्ल ५, गुरु	4 सितं.	२० भाद्र.	स्वा.	तुला	S मं I I I I I S I I I	दि. ल. ८ (चं. दा.), ९, गोधूलि, रा. ल. ३ (गु. दा.)
भाद्र. शुक्ल ७, शनि	6 सितं.	२२ भाद्र.	अनु.	वृश्चिक	I S I I I I S वै I I I	दि. ल. ९ (चं. दा.), रा. ल. २ (वृषे चं., गु. दान व पूजा), ३ (गु. दा.) (वैधृति दोष परिहार:)
भाद्र शु. ७/८, रवि	7 सितं.	२३ भाद्र.	अनु.	वृश्चिक	I S I I I I S वि I I I	दि. ल. ७ (चं. दा., लग्न 10/08 तक), भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा
भाद्र. शुक्ल ८, चंद्र	8 सितं.	२४ भाद्र.	मूल	धनु	I I I I I S नृ S I I I	दि. ल. ८ (13/06 बाद), रा. ल. २-३ (चं. गु. दा. व पूजा)
भाद्र शुक्ल ९, मंग	9 सितं.	२५ भाद्र.	मूल	धनु	I I I I I I S I I I	दि. ल. ७, ८, ९ (धनु लग्ने चन्द्र दान व पूजा)
भाद्र. शक्ल १०, बुध	10 सितं.	२६ भाद्र.	उ.षा.	धनु	I I I I I S चो S I I I	रा. ल. ३ (गु. दा., मिथुन रात्रि 25/03 तक)
भाद्र शुक्ल ११, गुरु	11 सितं.	२७ भाद्र.	उ.षा.	मकर	I I I I I I S I I I	दि. ल. ७, ८, ९ (भद्रा पातालगते शुभदा)

◎ आश्विन मास ◎ (सितं.—अक्तू.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आश्वि. शुक्ल १, मंग	30 सितं.	१५ आश्वि	चित्रा	कन्या	I I S मं बु I I I I I I I	दि. ल. ८, ९ (भौम युति परिहार), रात्रौ लग्नाभावः
आश्वि. शुक्ल २, बुध	1 अक्तू	१६ आश्वि	स्वा.	तुला	I S वै I I I S चो S वै I I I	दि. ल. ९, रा. ल. ३ (गु. दा.) [लग्ने गुरु दृष्ट्या प्रशस्त, गुरु केन्द्रे वैधृति दोष परिहारः]
आश्वि. शुक्ल ३, गुरु	2 अक्तू	१७ आश्वि	स्वा.	तुला	I S I I I S चो S वि I I I	दि. ल. ८ (चं. दा.), ९ [13/03 तक]
आश्वि. शुक्ल ४, शुक्र	3 अक्तू	१८ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	I I I I I S रो S S I I	रा. ल. ३ (चं. गु. दा.) भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा
आश्वि. शुक्ल ५, शनि	4 अक्तू	१९ आश्वि	अनु.	वृश्चिक	I I I I I S रो S S I I	दि. ल. ९ (चं. दा.)
आश्वि. शुक्ल ६, रवि	5 अक्तू	२० आश्वि	मूल	धनु	I I I I I I I S S I I	रा. ल. ३ (चं. गु. दा.) अर्ध रात्रि 2/23 से मृत्युबाणदोष प्रारम्भ
आश्वि. शुक्ल ७, चंद्र	6 अक्तू	२१ आश्वि	मूल	धनु	I I I I I I I S S I I	रा. ल. ३ (चं. गु. दा.) मिथुन लग्न रात्रि 24/08 तक ग्राह्य
आश्वि. शुक्ल ९, बुध	8 अक्तू	२३ आश्वि	उ.षा.	ध./मक	I I I I I S नृ S I I I	दि. ल. ८ (मं. दा.), ९, रा. ल. ३ (चं. गु. दान व पूजा) चन्द्राष्टमे परिहार-रात्रौ आवश्यके
आश्वि. शुक्ल१४, चंद्र	13 अक्तू	२८ आश्वि	उ.भा.	मीन	I I I S बु I I I I I I	दि. ल. ८ (मं. दा.), ९, गोधूली, रा. ल. ३ (गु. दा.)

◎ कार्तिक मास ◎ (अक्तू.-नवं.) [पर्वतीय प्रदेशों के लिए]

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
कार्ति. कृष्ण ३, शुक्र	17 अक्तू	२ कार्ति.	रोहि.	वृष	I S I I S शु I S व्य S I I	रा. ल. ६ (शुक्र का दान, कन्या लग्न 18 ता. की प्रातः 5/30 तक) प्रातः 5/31 से मृत्युबाण शुरु
कार्ति. कृष्ण ४, शनि	18 अक्तू	३ कार्ति	मृग	वृष	I I I I I S अ I S I I	रा. ल. ६ (शु., श. दा.)
कार्ति. कृष्ण ५, रवि	19 अक्तू	४ कार्ति	मृग	मिथुन	I I I I I S अ I S I I	दि. ल. ८ (चन्द्र अष्टम परिहार दानं च), ९ (चं. दा.)
कार्ति कृष्ण १२, शनि	25 अक्तू	१० कार्ति	उ.फा.	सिं./कं.	I I I I I S रो I S I S	रा. ल. ६ (शु. श. दान), गुरु केन्द्रे, चंद्र लग्ने परिहार
कार्ति शुक्ल २, गुरु	30 अक्तू	१५ कार्ति	अनु.	वृश्चिक	I I I I I I S I I I	रा. ल. ६ (शु., श., चं. दा.)
कार्ति शुक्ल २/३, शुक्र	31 अक्तू	१६ कार्ति	अनु.	वृश्चिक	I I I I I I S I I I	दि. ल. ९ (चं., शु. दा.)
कार्ति शुक्ल ३, शनि	1 नवं.	१७ कार्ति	मूल	धनु	I I I I I S चो S अति S I I	रा. ल. ६ (शनि दान) अतिगंड दोष परिहार, भद्रा पातालगते शुभप्रदा
कार्ति. शुक्ल ४, रवि	2 नवं.	१८ कार्ति	मूल	धनु	I I I I I S रो S अति S I I	दि. ल. ८, ९ (चं. दा.), रा. ल. ६ (शुक्र-शनि दान) धनु लग्ने चन्द्र परिहार
कार्ति. शुक्ल ६, मंग	4 नवं.	२० कार्ति	उ.षा.	मकर	I S I I I I S S I I	दि. ल. ९ (चं. दा.), (ल. 10/41 बाद), रा. ल. ६ (शु. श. का दान)
★कार्ति शुक्ल११, रवि	9 नवं.	२५ कार्ति	उ.भा.	मीन	I S हर्ष I I I S चो I I S	रा. ल. ६ (चं. श. दा.) (भीष्मपंचक विचार)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
★9 से 11 नवम्बर के मध्य भीष्मपंचक रहेंगे। यद्यपि भीष्मपंचकों में विवाह का शास्त्रीय निषेध नहीं मिलता, परन्तु कुछ प्रदेशों में पंचांगकार भीष्मपंचकों में भी विवाह आदि शुभ कृत्यों को ग्राह्य मानते हैं। परन्तु पंजाब, हि.प्र., जम्मू–का., हरियाणा तथा दिल्ली में विवाहादि कार्य परम्परा से त्याज्य माने जाते हैं।–पं. पन्ना लाल ज्यो.						
★कार्ति शुक्ल१२, चंद्र	10 नवं.	२६ कार्ति	उ.भा.	मीन	।ऽ।।।ऽ चो ।।।ऽ	दि. ल. ९ (मं. का दान) (भीष्म पंचक-आवश्यके)
★कार्ति शुक्ल१२, चंद्र	10 नवं.	२६ कार्ति	रेव.	मीन	ऽ सू ।।।।।ऽ व ।।।	रा. ल. ६ (चं., श. दा.) (भीष्मपंचक)
★कार्ति शुक्ल१३, मंग	11 नवं.	२७ कार्ति	रेव.	मीन	ऽ सू ।।।।।ऽ व ।।।	दि. ल. ९ (धनु लग्ने मं. का दान) (भीष्मपंचक-आवश्यके)

◎ मार्गशीर्ष मास ◎ (नवम्बर–दिसम्बर) सन् 2008 ई०

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
मार्ग. कृष्ण ९, शुक्र	21 नवं.	७ मार्ग.	उ.फा.	सिं./कं.	।।।।।ऽ चो ऽ वि ऽ।ऽ	रा. ल. ६ (अर्ध-रात्रि 2/32 तक, चं.,श.दा.), रा. ल. ७ (चं., शु. का दान) तुला लग्ने भद्रा परिहारः
मार्ग. कृष्ण १०, शनि	22 नवं.	८ मार्ग	उ.फा.	कन्या	।।।।।ऽ चो ऽ वि ऽ।ऽ	दि. ल. ९, १२ (चं. दा.) भद्रा पाताले शुभदा॥
मार्ग. कृष्ण १०, शनि	22 नवं.	८ मार्ग.	हस्त	कन्या	।।।।।।ऽऽ।।	रा. ल. ७ (चं. शु. दान)
मार्ग. कृष्ण ११, रवि	23 नवं.	९ मार्ग.	हस्त	कन्या	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ९ (मं. दा.) १२ (चं. दा.)
मार्ग. कृष्ण ११, रवि	23 नवं.	९ मार्ग.	चित्रा	कन्या	।।।।।ऽ रो ।ऽ।।	रा. ल. ७ (चं., शु. दान)
मार्ग. कृष्ण १२, चंद्र	24 नवं.	१० मार्ग	चित्रा	कन्या	।।।।।ऽ रो ।ऽ।।	दि. ल. ९ **(मंगल का दान) रात्रौ क्षीण चन्द्र**
मार्ग. शुक्ल २, शनि	29 नवं.	१५ मार्ग	मूल	धनु	ऽ मं श ।।।।ऽ नृ ऽ।।।	दि. ल. १२, रा. ल. ६ (श. दा.), ७ (कन्या व तुलायां शूल परिहारः
मार्ग. शुक्ल ३, रवि	30 नवं.	१६ मार्ग	मूल	धनु	ऽ मं श ।।।।।ऽ।।।	दि. ल. ९, १२ (मीन ल. दुपै. 14/11 तक), शूल योग परिहार
मार्ग. शुक्ल ४, चंद्र	1 दिसं.	१७ मार्ग.	उ.षा.	ध./मक	।।ऽ गु. शु.।।।ऽ गं.ऽ।।	रा. ल. ६ (श. दा.) रात्रि 26/05 बाद क्रान्तिसाम्य विचार
मार्ग. शुक्ल ४, मंग	2 दिसं.	१८ मार्ग	उ.षा.	मकर	।।ऽ गु शु ।।।ऽऽ।।	दि. ल. ९ (प्रातः 9/24 के बाद) (क्रान्तिसाम्य दोष प्रातः 9/24 तक), १२ (मीन)
मार्ग. शुक्ल ९, रवि	7 दिसं.	२३ मार्ग	उ.भा.	मीन	ऽ गु ।।।ऽ श ।।।ऽ	रा. ल. ६ (चं. श. का दान)
मार्ग. शुक्ल १०, चंद्र	8 दिसं.	२४ मार्ग	अश्वि.	मेष	।।।।।।।।।।	रा. ल. ७ (चं. दा.)
मार्ग. शुक्ल ११, मंग	9 दिसं.	२५ मार्ग	अश्वि.	मेष	।।।।।ऽ चो ।।।।	दि. ल. ९, १२ (धनु व मीन) मीने चन्द्र दान

नोट–9 दिसं. की रात्रि को 23 घं. 42 मिं. से 1 जन. 2009 ई. तक गुरु मकर राशि के परमनीचांश (५°) में संचार करने से इस अवधि में विवाहादि शुभ मुहूर्त्त त्याज्य रहेंगे।

◎ फाल्गुन मास ◎ (फरवरी–मार्च—सन् 2009 ई.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	चंद्रराशि	लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ	शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
फाल्गु कृष्ण ५, शनि	14 फर.	३ फाल्गु	चित्रा	क./तु.	।ऽ गं. ।।।ऽ अ ऽऽ।।	दि. ल. १२ (प्रातः 9/08 तक), १ (चं., मं. दा.)
फाल्गु. कृष्ण ५, शनि	14 फर.	३ फाल्गु	स्वा.	तुला	ऽ बु. ऽ।।।ऽ अ ऽ गं.।।।	रा. ल. ८ (चं. दा.), ९ (धनु लग्ने रा., गु., बु. का दान)
फाल्गु. कृष्ण ६, रवि	15 फर.	४ फाल्गु	स्वा.	तुला	ऽ बु ऽ।।।।।।।।	दि. ल. १ (चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (शु. दान) रात्रि लग्न आवश्यकत्वेन (भद्रापाताले शुभदा)
फाल्गु. कृष्ण ७, चंद्र	16 फर.	५ फाल्गु	अनु.	वृश्चिक	।।।।।ऽ रा ।ऽ।।	रा. ल. ९ (चं. गु. दा.)
फाल्गु. कृष्ण ८, मंग.	17 फर.	६ फाल्गु	अनु.	वृश्चिक	।।।।।। व्या. ऽ।।	दि. ल. १-२ (चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (शु. दा.), ९ (चं. दा. धनु 27/43 तक) (मीने व्याघात दोष)
फाल्गु. कृष्ण १०, गुरु	19 फर.	८ फाल्गु	मूल	धनु	।।।।।।ऽ वज्र ऽ।।	दि. ल. १२, १, गोधूलि, रा. ल. ६ (शु. दा.), ८ (भद्रा 21/44 तक, पाताले शुभदा) वृश्चिके भद्रा–अभाव
फाल्गु. कृष्ण ११, शुक्र	20 फर.	९ फाल्गु	मूल	धनु	।।।।।।ऽ व ऽ।।	दि. ल. १२, १ (मेष लग्न प्रातः 9/45 तक ग्राह्य)
फाल्गु. शुक्ल १, गुरु	26 फर.	१५ फाल्गु	उ.भा.	मीन	।ऽ सा ।।।।ऽ।।।	रा. ल. ८, ९ (गु. दा.)
फाल्गु. शुक्ल २/३, शुक्र	27 फर.	१६ फाल्गु	उ.भा.	मीन	।ऽ।।।ऽ चो ऽ।।।	दि. ल. १ (चं. दा.) २, गोधूलि, रा. ल. ६ (चं., श., शु. के दान)
फाल्गु. शुक्ल ३, शुक्र	27 फर.	१६ फाल्गु	रेव	मीन	ऽ गु।ऽ शु.।।ऽ चो ।।।।	रा. ल. ८, ९ (गुरु का दान)

पक्ष तिथि वार ता. अंग्रे. प्रविष्टे नक्षत्र चंद्रराशि लतादि दश गुण–दोष रेखाएँ शुद्ध विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)

पक्ष	तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	[illegible]	[illegible]	...पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. में)
फाल्गु. शु.	३/४, शनि	28 फर.	१७ फाल्गु	रेव	मीन	S गु । S शु । । । । । । S	दि. ल. १ (चं. दा.), २, रा. ल. ६ (शु. चं. का दा.) भद्रा स्वर्गे शुभप्रदा
फाल्गु. शु.	७, मंग.	3 मार्च	२० फाल्गु	रोहिणी	वृष	। S । । । S S S । ।	रा. ल. ९ (28/05 बाद) चन्द्र षष्ठे परिहार, भद्रा परिहार: (शु. चं. दान) (मृत्युबाण दोष सायं 4/10 से ता. 4 की प्रात: 4/05 तक)
चैत्र कृष्ण	२, गुरु	12 मार्च	२९ फाल्गु	हस्त	कन्या	। S गं । । । S । । । ।	दि. ल. १२ (चं. दा.), २ (गुरु त्रिकोणे प्रशस्त:)

आगामी वर्ष (संवत् २०६६ वि.) में समय शुद्धि–अगले वर्ष सन् 2009 ई. में शुक्र लगभग 24 मार्च से 30 मार्च तक अस्त रहेगा। पुन: लगभग 13 दिसंबर (2009 ई.) से 9 फरवरी, 2010 ई. तक अस्त रहेगा। गुरु लगभग 18 फरवरी (2010 ई.) से अस्त होकर लगभग 20 मार्च (2010 ई.) को पूर्व से उदय होगा। अतएव इन समयावधियों में शुभ मांगलिक कार्य नहीं होंगे। पाठक कृपया ध्यान दें, गुरु-शुक्र का उदयास्त लगभग स्थूलत: दिया गया है। सूक्ष्म गणना उपरान्त एक-दो दिन का अन्तर सम्भव है।—**गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी।**

मकरस्थ गुरू का शुभाशुभ विचार–संवत् २०६५

सम्वत् २०६५ में ता. 9 दिसम्बर, 2008 ई० मंगलवार को गुरू रात्रि 11 बजकर 42 मिनट पर शीघ्रगति से **मकर राशि** अर्थात् अपनी नीच राशि में प्रवेश करेगा। गुरू-शुक्र के अस्तकाल के समय में अथवा सिंहस्थ गुरु के समय विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों के सम्पादन के सम्बन्ध में जो कृत्य निषेध ज्योतिषाचार्यों द्वारा कहे जाते हैं, उसी प्रकार **मकरस्थ गुरु** संचार काल में भी शुभ/मंगल कृत्यों के निषेधादि का विचार किया जाता है। कुछ विद्वान गुरु के वक्री या अतिचार गति काल में भी गुरु के शुभाशुभ का विचार करते हैं, यथा—

अस्ते वर्ज्य सिंहमकरस्थ जीवे वर्ज्यं केचिद् वक्रगे चातिचारे। (मु. चिन्तामणि)

परिहार स्वरूप—

गुरू द्वारा नीचराशि में संचारकालीन शुभ कृत्यों के वर्जन (निषेध) के विषय में विद्वान ज्योतिषाचार्यों में विभिन्न मत-मतान्तर पाए जाते हैं, जैसे **'दैवज्ञ मनोहर'** अनुसार मकरस्थ गुरु में विवाहादि का निषेध का विचार मगध (बिहार का दक्षिणी भाग), गौड़देश (उत्तरी बंगाल), जेहलम, सिन्ध प्रदेश, मुम्बई, केरल आदि प्रदेशों में वर्ज्य है, अन्यत्र नहीं—

मागधे गौडदेशे च सिन्धुदेशे च कौंकणे।
व्रतंचूडा विवाहं च वर्जयेन्मकरे गुरौ॥ (दैवज्ञ मनोहर)

'मुहूर्त्त चिन्तामणि' अनुसार मकरस्थ गुरू रेवा (नर्मदा) जो जबलपुर आदि प्रदेशों से होकर गुज़रती है) उसके पूर्व से पश्चिम में और शोण नदी के उत्तर-दक्षिण प्रदेशों में नीच का गुरु त्याज्य नहीं होता है तथा कोंकण, मागध, दक्षिण भारत के अन्तर्गत रत्नागिरि, कोलाबा, मुम्बई, थाना आदि के भागों में, गौड़ और सिन्ध प्रदेश में शुभ कार्यों हेतु त्याज्य है—

रेवापूर्वे गण्डकी पश्चिमे च शोणस्योदक् दक्षिणे नीच इज्य:।
वर्ज्यो नायं कौंकणे मागधे गौडे सिन्धौ वर्जनीय: शुभेषु॥ (मु. चिन्तामणि)

'वसिष्ठ' ऋषि के मतानुसार **मकर राशिस्थ** गुरु के परम नीचांशों (4 से 5° अंश) के मध्य ही त्याज्य होता है, मकर का शेष भाग शुभ कार्यों में ग्राह्य रहेगा—

नीचराशिगतो जीव: प्रशस्त: सर्वकर्मसु।
नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्माद्देशेषु नीचता॥ (व्यवहार चण्डे०)

'देवीपुराण' के मतानुसार भी मकर राशि के **पाँच अंश** तक विवाह, मुण्डनादि कार्यों में छोड़ कर मकर राशि के शेष भाग में शुभ कार्यों का सम्पादन उचित माना है—

मकरस्थो यदाजीवो वर्जयेत् पञ्चमांशकम्।
शेषेष्वपि च भागेषु विवाह: शोभनो मत:॥ (देवीपुराण)

कुछ आचार्य गुरू के नीच नवांश (9-3°-20') तक के काल को ही शुभ कार्यों में वर्जित मानते हैं।

रा. अ. क. वि.   रा. अ. क. वि.

अत: स्पष्ट है कि गुरु के अपने नीचनवांश (९-००-००-०० से ९-३-२०-०० तक) और परमनीचांश (९-४°-००'-०० से ९-५°-००'-००" तक) **में स्थित काल को ही शुभ कार्यों के अनुष्ठान में वर्जित मानना चाहिए।**

उपरोक्त शास्त्र वचनों के अनुसार सम्वत् २०६५ में गुरु 9 दिसम्बर की रात 11/42 (घं.मिं.) (23/42) पर मकर राशि में प्रवेश करने के पश्चात् 25 दिसम्बर, 2008 ई० तक नीच-नवांश में संचरित रहेगा। तदुपरान्त 1 जनवरी, 2009 ई० तक की अवधि में गुरु (बृहस्पति) परमनीच स्थिति में होने से, इस कालावधि में विवाह, मुण्डन, गृहप्रवेश, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे॥

—पं० पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर।

त्रिबल शुद्धि पर आधारित

वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त संवत् २०६५ वि. (सन् 2008-09 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। विवाह लग्न का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से चयन करें। (किसी विद्वान् पण्डित जी के परामर्शानुसार) उदाहरणार्थ–वृष राशि का लड़का तथा मेष राशि की लडकी का विवाह मुहूर्त्त जुलाई, 2008 ई. में देखना हो तो दोनों की राशियों में जुलाई १८, २३, २४, २७ तारीखों में समानता मिलती है। इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं।

कार्तिक मास के मुहूर्त्त केवल पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। ध्यान रहे, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यतः लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। कन्या की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अतः गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
मेष राशि—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९ २०, २१, २७, २८, **अग.** की १९-२० (चं.दा.), २४, २५, ३१, **सितं.** की १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ५, ६, ८, १३ (चं.दा.) [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, १८, १९, २५, **नवं.** की १, २, ४, ९-१०-११ (चं.दा.)], **सन् 2009 ई. में फर.** की १४, १५, १९, २०, २६-२७-२८ (चं.दा.), **मार्च** की ३, १२ तारीखें ग्रहणीय होंगी।	लड़के को आषाढ़, आश्विन, माघ व फाल्गुन मास **शुभ** तथा वैशाख, ज्येष्ठ, भाद्र. व कार्तिक मासों में सूर्य दान, पूजादि करणीय हैं। श्रावण और मार्ग. त्याज्य हैं। कन्या को संवतारम्भ से 9 दिसं. तक गुरु शुभ तदुपरान्त साधारण रूप से पूज्य रहेगा।	**मेष राशि**—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९ २०, २१, २७, २८, **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ३, ४, ५, ६, ७, ८, १२, १४, १९, २०, २४, २५, ३१, **सितं.** की १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ५, ६, ८, १३ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५, **नवं.** की १, २, ४, ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १९, २०, २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ तारीखें शुभ हैं।
वृष राशि—**जुला.** की १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ४ (20/58 बाद), ५, ६, ७, ८, ९, १०, **सितं.** की ३०, **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ८ (9/37 बाद), १३ [**कार्तिक मासे** अक्तू. की १७, १८, १९, २५ (21/05 बाद), ३०, ३१, नवं. की ४ (17/25 बाद), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१ (26/34 बाद), २२, २३, २४, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८-९ (चं.दा.), **सन् 2009 ई. में फर.** की १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ तारीखें शुभ होंगी।	वर को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास **शुभ** तथा ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, मार्ग. एवं माघ मासों में सूर्य **पूजा** रहेगी। वैशाख एवं भाद्रपद मास **त्याज्य** होंगे। कन्या को 9 दिसं. तक विशेष रूप से पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**वृष राशि**—**अप्रै.** की १७ (16/03 बाद), १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, **जुला.** की १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ४ (20/58 बाद), ५, ६, ७, ८, ९, १०, १९, २०, २४, २५, **सितं.** की १, २, ३, ४, ६, ७, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ८ (9/37 बाद), १३ [**कार्तिक मासे** अक्तू. की १७, १८, १९, २५ (21/05 बाद), ३०, ३१, **नवं.** की ४ (17/25 बाद), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१ (26/34 बाद), २२, २३, २४, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८-९ (चं.दा.), **सन् 2009 ई. में फर.** की १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ तारीखें शुभ होंगी।
मिथुन राशि—**अप्रै.** की १५, १७ (16/03 तक), १९ (26/34 बाद), २०, २१, २२, २३, **जुला.** की १७, २३, २४, २७-२८-२९ (चं.दा.), **अग.** की ३, ४ (20/58 तक), ७, ८, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४-२५ (चं.दा.), ३१, **सितं.** की ३ (14/00 बाद), ४, ६, ७, ८, ९, १० [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७-१८ (चं.दा.), १९, २५ (21/05 तक), ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४ (17/25 तक), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१ (26/34 तक), २९, ३०, **दिसं.** की ७, ८, ९, **सन् 2009 ई.** में **फर.** की १४ (9/09 बाद), १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, **मार्च** की १२ (चं.दा.) तारीखें शुभ होंगी।	वर को वैशाख, भाद्र., मार्गशीर्ष में विवाह **शुभ**, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन में सूर्य **पूज्य**, ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास **त्याज्य** हैं। मिथुन की कन्या को 9 दिसं. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त विशेषतः पूज्य एवं दान प्रयोजनीय रहेगा।	**मिथुन राशि**—**अप्रै.** की १५, १७ (16/03 तक), १९ (26/34 बाद), २०, २१, २२, २३, **जुला.** की १७, २३, २४, २७-२८-२९ (चं.दा.), **अग.** की ३, ४ (20/58 तक), ७, ८, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४-२५ (चं.दा.), ३१, **सितं.** की ३ (14/00 बाद), ४, ६, ७, ८, ९, १०, **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ५, ६, ८ (9/37 तक), १३, [**कार्तिक मासे** अक्तू. की १७-१८ (चं.दा.), १९, २५ (21/05 तक), ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४ (17/25 तक), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१ (26/34 तक), २९, ३०, **दिसं.** की ७, ८, ९, **सन् 2009 ई.** में **फर.** की १४ (9/09 बाद), १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, **मार्च** की ३-१२ (चं.दा.) शुभ होंगी।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
कर्क राशि—अप्रै. की १५, १७, १८, १९ (26/34 तक), २२, २३, २७	कर्क के वर को वैशाख,	**कर्क राशि**—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९ (26/34 तक), २२, २३, २७, २८,

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
कर्क राशि—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९ (26/34 तक), २२, २३, २७, २८. **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ३, ४, ५, ६, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४, २५ (चं.दा.), ३१, **सितं.** की १, २, ३ (14/00 तक), ६, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की ३, ४, ५, ६, ८, १३, **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८, ९ शुभ होंगी।	कर्क के वर को वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन में विवाह **शुभ,** श्रावण, भाद्र., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य **पूजा,** आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। कन्या को 9 दिसं. तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य रहेगा, तदुपरान्त शुभ होगा।	**कर्क राशि**—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९ (26/34 तक), २२, २३, २७, २८, **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ३, ४, ५, ६, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४, २५ (चं.दा.), ३१, **सितं.** की १, २, ३ (14/00 तक), ६, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की ३, ४, ५, ६, ८, १३, [**कार्तिक मासे अक्तू.** की १७, १८, १९ (चं.दा.), २५, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४, ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८, ९, **सन् 2009 ई. में फर.** की १४ (9/09 तक), १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८; मार्च की ३, १२ शुभ रहेंगी।
सिंह राशि—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९, २०, २१, २७, २८, **अग.** की २४, २५, ३१, **सितं.** की १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ५, ६, ८, [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५, **नवं.** की १, २, ४] सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १९, २०, **मार्च** की ३, १२ तारीखें शुभ रहेंगी।	सिंह के वर को ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक व माघ **शुभ,** वैशाख, भाद्र., आश्विन व फाल्गुन में सूर्य **पूजा** तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य होंगे। कन्या को 9 दिसं. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**सिंह राशि**—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९, २०, २१, २७, २८, **जुला.** की १७, १८, २७, २८, २९, **अग.** की ३, ४, ५, ६, ७, ८, १२, १४, २४, २५, ३१, **सितं.** की १, २, ३, ४, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ५, ६, ८ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५, **नवं.** की १, २, ४] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १९, २०, **मार्च** की ३, १२ शुभ होंगी।
कन्या राशि—**जुला.** की १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ३-४ (चं.दा.), ५, ६, ७, ८, ९, १०, **सितं.** की ३०, **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ८ (9/37 बाद), १३, [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५ (चं.दा.), ३०, ३१, **नवं.** की ४ (17/25 बाद), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ शुभ होंगी।	कन्या के वर को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास **शुभ,** ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ में सूर्य **पूजा** तथा वैशाख, भाद्र. त्याज्य होंगे। कन्या को 9 दिसं. तक गुरु विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**कन्या राशि**—**अप्रै.** की १५ (चं.दा.), १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, **जुला.** की १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ३-४ (चं.दा.), ५, ६, ७, ८, ९, १०, १९, २०, २४, २५, ३१ (चं.दा.), **सितं.** की १, २, ३, ४, ६, ७, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ८ (9/37 बाद), १३ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५ (चं.दा.), ३०, ३१, **नवं.** की ४ (17/25 बाद), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६, १७, २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ शुभ होंगी।
तुला राशि—**अप्रै.** की १५, १७-१८-१९ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, **जुला.** की १७, २३, २४, २९ (12/52 बाद), **अग.** की ३, ४-५-६ (चं.दा.), ७, ८, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २५ (19/42 बाद), ३१, सितं. की १-२-३ (चं.दा.), ४, ६, ७, ८, ९, १० [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १९, २५ (चं.दा.), ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४ (17/25 तक), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१-२२-२३-२४ (चं.दा.), २९, ३०, **दिसं.** की ७, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, **मार्च** की १२ (चं.दा.) शुभ होंगी।	तुला राशि के वर को वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्गशीर्ष व फाल्गुन में सूर्य **पूजा,** श्रावण-भादों शुभ तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य होंगे। 9 दिसं. तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक विशेष रूप से पूज्य तथा दान प्रयोजनीय रहेगा।	**तुला राशि**—**अप्रै.** की १५, १७-१८-१९ (चं.दा.), २०, २१, २२, २३, **जुला.** की १७, २३, २४, २९ (12/52 बाद), **अग.** की ३, ४-५-६ (चं.दा.), ७, ८, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २५ (19/42 बाद), ३१, **सितं.** की १-२-३ (चं.दा.), ४, ६, ७, ८, ९, १०, ३० (चं.दा.), **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ५, ६, ८ (9/37 तक), १३ [कार्तिक मासे अक्तू. की १९, २५ (चं.दा.), ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४ (17/25 तक), ९, १०, ११], मार्ग. में **नवं.** की २१-२२-२३-२४ (चं.दा), २९, ३०, **दिसं.** की ७, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, **मार्च** की १२ (चं.दा.) शुभ होंगी।
वृश्चिक राशि—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९-२०-२१ (चं.दा.), २२, २३, २७, २८, **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २७, २८, २९ (12/52 तक), **अग.** की ३, ४, ५, ६, ७-८ (चं.दा.), ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४, २५ (19/42 तक), ३१, **सितं.** की १, २, ३-४ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १-२ (चं.दा.), ३, ४, ५, ६, ८, १३, **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८, ९ शुभ होंगी।	वृश्चिक के वर को वैशाख, भाद्र., आश्विन, माघ शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण, मार्ग. में सूर्य **पूजा** तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को 9 दिसं. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**वृश्चिक राशि**—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९-२०-२१ (चं.दा.), २२, २३, २७, २८, **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २७, २८, २९ (12/52 तक), **अग.** की ३, ४, ५, ६, ७-८ (चं.दा.), ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४, २५ (19/42 तक), ३१, **सितं.** की १, २, ३-४ (चं.दा.), ६, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १-२ (चं.दा.), ३, ४, ५, ६, ८, १३, [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, २५, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४, ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८, ९, सन 2009 ई. में **फर.** की १४-१५ (चं.दा.), १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ शुभ होंगी।

वर (लड़का)	वर-कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	कन्या (लड़की)
धनु राशि—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९, २०, २१, २२-२३ (चं.दा.), २७, २८, **अग.** की २४, २५, ३१, **सितं.** की १, २, ३, ४, ६-७ (चं.दा.), ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ३-४ (चं.दा.), ५, ६, ८ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५, ३०-३१ (चं.दा.), **नवं.** की १, २, ४] सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६-१७ (चं.दा.), १९, २०, **मार्च** की ३, १२ शुभ रहेंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक, फाल्गुन मास शुभ, वैशाख, आषाढ़, भाद्र., माघ में सूर्य पूज्य तथा श्राव. व मार्ग. मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को 9 दिसं. तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ होगा।	**धनु राशि**—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९, २०, २१, २२-२३ (चं.दा.), २७, २८, **जुला.** की १७, १८, २७, २८, २९, **अग.** की ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२, १४, २४, २५, ३१, **सितं.** की १, २, ३, ४, ६-७ (चं.दा.), ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ३-४ (चं.दा.), ५, ६, ८ [कार्तिक मासे अक्तू. की १७, १८, १९, २५, ३०-३१ (चं.दा.), **नवं.** की १, २, ४] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६, १७, १९, २०, **मार्च** की ३, १२ शुभ होंगी।
मकर राशि—**जुला.** की १७ (चं.दा.), १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ४ (20/58 बाद), ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२-१४ (चं.दा.), **सितं.** की ३०, **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ५-६-८ (चं.दा.), १३ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५, ३०, ३१, **नवं.** की १-२-४ (चं.दा.), ९, १०, ११] मार्ग में **नवं.** की २१ (26/34 बाद), २२, २३, २४, २९-३० (चं.दा.), **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८-९ (चं.दा.), सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६, १७, १९-२० (चं.दा.), २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ शुभ रहेंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. मास **शुभ**, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, माघ व फाल्गुन मासों में सूर्य पूजा तथा वैशाख, भाद्र. मास **त्याज्य** होंगे। मकर की कन्या को 9 दिसं. तक गुरु विशेष रूप से पूज्य, तदुपरान्त साधारण पूज्य होगा।	**मकर राशि**—**अप्रै.** की १७ (16/03 बाद), १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, **जुला.** की १७ (चं.दा.), १८, २३, २४, २७, २८, २९, **अग.** की ४ (20/58 बाद), ५, ६, ७, ८, ९, १०, १२-१४ (चं.दा.), १९, २०, २४, २५, **सितं.** की १, २, ३, ४, ६, ७, ८-९-१० (चं.दा.), ११, ३०, **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ५-६-८ (चं.दा.), १३ [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९, २५, ३०, ३१, **नवं.** की १-२-४ (चं.दा.), ९, १०, ११], मार्ग में **नवं.** की २१ (26/34 बाद), २२, २३, २४, २९-३० (चं.दा.), **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८-९ (चं.दा.), सन् 2009 ई. में **फर.** की १४, १५, १६, १७, १९-२० (चं.दा.), २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ शुभ होंगी।
कुम्भ राशि—**अप्रै.** की १५, १७ (16/03 तक), १९ (26/34 बाद), २०, २१, २२, २३, २७-२८ (चं.दा.), **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २९, (12/52 बाद), **अग.** की ३, ४ (20/58 तक), ७, ८, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २५ (19/42 बाद), ३१, **सितं.** की ३ (14/00 बाद), ४, ६, ७, ८, ९, १०, ११ (चं.दा.) [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १९, २५ (21/05 तक), ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४ (चं.दा.), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१ (26/34 तक), २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक)-२ (चं.दा.), ७, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४ (9/09 बाद), १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८ शुभ रहेंगी।	कुम्भ के वर को वैशाख, मार्ग. श्रावण मास **शुभ**, आषाढ़, भाद्र., कार्तिक व फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा रहेगी। ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास **त्याज्य** होंगे। कुम्भ राशि की कन्या को संवतारम्भ से 9 दिसं. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त विशेष रूप से पूज्य रहेगा।	**कुम्भ राशि**—**अप्रै.** की १५, १७ (16/03 तक), १९ (26/34 बाद), २०, २१, २२, २३, २७-२८ (चं.दा.), **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २९ (12/52 बाद), **अग.** की ३, ४ (20/58 तक), ७, ८, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २५ (19/42 बाद), ३१, **सितं.** की ३ (14/00 बाद), ४, ६, ७, ८, ९, १०, ११ (चं.दा.), **अक्तू.** की १, २, ३, ४, ५, ६, ८ (चं.दा.), १३, [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १९, २५ (21/05 तक), ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४ (चं.दा.), ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१ (26/34 तक) २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २ (चं.दा.), ७, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४ (9/09 बाद), १५, १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८ शुभ होंगी।
मीन राशि—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९ (26/34 तक), २२, २३, २७, २८ **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २७, २८, २९ (12/52 तक), **अग.** की ३, ४, ५, ६, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४, २५ (19/42 तक), ३१, **सितं.** की १, २, ३ (14/00 तक), ६, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की ३, ४, ५, ६, ८, १३, **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८, ९ शुभ रहेंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास **शुभ**, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्ग. मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक एवं फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। मीन की कन्या को 9 दिसं. तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**मीन राशि**—**अप्रै.** की १५, १७, १८, १९ (26/34 तक), २२, २३, २७, २८ **जुला.** की १७, १८, २३, २४, २७, २८, २९ (12/52 तक), **अग.** की ३, ४, ५, ६, ९, १०, १२, १४, १९, २०, २४, २५ (19/42 तक), ३१, **सितं.** की १, २, ३ (14/00 तक), ६, ७, ८, ९, १०, ११, ३०, **अक्तू.** की ३, ४, ५, ६, ८, १३, [कार्तिक मासे **अक्तू.** की १७, १८, १९ (चं. दा.), २५, ३०, ३१, **नवं.** की १, २, ४, ९, १०, ११] मार्ग. में **नवं.** की २१, २२, २३, २४, २९, ३०, **दिसं.** की १ (26/04 तक), २, ७, ८, ९, सन् 2009 ई. में **फर.** की १४ (9/09 तक), १६, १७, १९, २०, २६, २७, २८, **मार्च** की ३, १२ शुभ होंगी।

मुण्डनादि अन्य उपयोगी मुहूर्त्त २०६५ वि:

सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ एवं २६वें चन्द्र नक्षत्र पर भी भूमि शयन का विचार किया जाता है। अधिक सूक्ष्मता के लिए आगे दिए

अभिजित मुहूर्त

मुण्डनादि अन्य उपयोगी मुहूर्त्त २०६५ वि.

जन्म या गर्भाधान से १, ३, ५, ७ इत्यादि विषम वर्षों में कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक की जन्म राशि एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य होता है, ज्येष्ठ (बड़े) लड़के के मुण्डन ज्येष्ठ मास में न करें। माता गर्भवती हो, तो पाँच वर्षायु से पूर्व बच्चे के मुण्डन न करें। ब्राह्मणों को रविवार, क्षत्रियों को मंगल एवं वैश्यों को शनिवार में भी ग्राह्य माने गए हैं, **परन्तु उक्त वारादि आवश्यक परिस्थितियों में ही ग्रहण करने चाहिएं।** अपनी कुल परम्परानुसार कुछ **लोग वृद्ध या ज्येष्ठ व्यक्ति के निर्देश पर नवरात्रों में अथवा अक्षया तीज,** बसन्त आदि शुभ पर्वों पर सिद्ध शक्ति पीठों में, देवी (माता) के मन्दिर में अथवा सिद्ध तीर्थ स्थलों पर बिना निश्चित मुहूर्त्त के भी मुण्डन आदि शुभ कर्म कर लेते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १३, शु.	18 अप्रै.	६ वैशा.	हस्त	11/23 के बाद
चै. शु. १५, र.	20 अप्रै.	८ वैशा.	चित्रा	ल. ४ (विप्राणां)
वै. कृ. १, चंद्र	21 अप्रै.	९ वैशा.	स्वा.	ल. ४, अभिजित
वै. कृ. ३, बुध	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	ल. २ (गु. दा.), ४, अभि.
वै. कृ. ४, गुरु	24 अप्रै.	१२ वैशा.	ज्ये.	ल. २ (गु. दा.), ४, अभि.
—सन् 2009 ई. में—				
फा. कृ. ६, रवि	15 फर.	४ फागु.	स्वा.	ल. १, अभि. (विप्राणां) 12/54 पूर्व
फा. शु. ३, शनि	28 फर.	१७ फाल्गु	रेव.	१, २ (वैश्यानां केवल)
चै. कृ. २, गुरु	12 मार्च	२९ फाल्गु	हस्त	ल. १२ (चं. दा.), २, अभि.
(आवश्यक परिस्थितिवश शारदीय नवरात्रों में शुभ, ग्रहणीय दिन)				
आश्वि.शु. ३, गु.	2 अक्तू	१७ आश्वि	स्वा.	ल. ८ (चं. दा.), ९, अभि.
आश्वि.शु. ५, श.	4 अक्तू	१९ आश्वि	अनु.	ल. ९ (चं. दा.), अभि.
आश्वि.शु. ६, र.	5 अक्तू	२० आश्वि	ज्ये.	ल. ९ (चं. दा.), अभिजित
आश्वि.शु. ७, चं.	6 अक्तू	२१ आश्वि	मूल	ल. ८, अभिजित
आश्वि.शु. ९, बु.	8 अक्तू	२३ आश्वि	उ.षा.	ल. ८, ९, अभिजित

गृहारम्भ एवं नींवादि मुहूर्त्त—सं. २०६५

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्त्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्त्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। गृहारम्भ में १, ५, ७, ९ आदि प्रविष्टों में भूमि-शयन (सुप्त भूमि) का भी विचार किया जाता है। एक अन्य मतानुसार सूर्य नक्षत्र से ५, ७, ९, १२, १९ एवं २६वें चन्द्र नक्षत्र पर भी भूमि शयन का विचार किया जाता है। अधिक सूक्ष्मता के लिए आगे दिए गए सूर्यभात् वृष चक्र का भी प्रयोग कर सकते हैं। लैंटर (छत) डालना और स्तम्भ आरोहणादि काल में पंचक नक्षत्रों का भी अवश्य विचार करना चाहिए॥

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १३, शु.	18 अप्रै.	६ वैशा.	उफा/ह.	ल. २, ४, अभिजित
वै. कृ. ३, बुध	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	२ (चं. गु. दा.), ४, अभि.
वै. कृ. ७, चंद्र	28 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.षा.	२-३ (गु. दा.), अभि.
आषा. १५, शु.	18 जुला	३ श्राव.	उ.षा.	६, अभिजित
श्रा. कृ. ३, चंद्र	21 जुला	६ श्राव.	शत.	ल. ७, अभिजित
श्रा. कृ. ५, बुध	23 जुला	८ श्राव.	उ.भा.	9/01 के बाद, ६ (चं. दा.), अभिजित
श्रा.कृ.१०/११, चं.	28 जुला	१३ श्राव.	रोहि.	ल. ६, ८, अभिजित
श्राव शु. ५, बुध	6 अग.	२२ श्राव.	हस्त	ल. ७, ८, अभिजित
श्रा. शु. ६, गुरु	7 अग.	२३ श्राव.	चित्रा	ल. ६, ८, अभिजित
श्रा. शु. ७, शुक्र	8 अग.	२४ श्राव.	स्वा.	ल. ६, ८, अभिजित
श्रा. शु. १३, गु.	14 अग.	३० श्राव.	उ.षा.	ल. ७, अभिजित
भाद्र कृ. २, चंद्र	18 अग.	३ भाद्र.	शत	ल. ७, ८, अभिजित
भा. कृ. ११, बु.	27 अग.	१२ भाद्र.	पुर्न	ल. ७, ९ (चं. दा.), अभि.
भा. शु. २, चंद्र	1 सितं.	१७ भाद्र.	उ.फा.	ल. ७, ८, अभिजित
भा. शु. ५, गुरु	4 सितं.	२० भाद्र.	स्वा.	ल. ८, अभिजित
भा. शु. ७, शनि	6 सितं.	२२ भाद्र	अनु.	ल. ७, अभिजित
भा. शु. १०, बुध	10 सितं.	२६ भाद्र.	पू.षा.	ल. ७, ८, अभिजित
भा. शु. ११, गु.	11 सितं.	२७ भाद्र.	उ.षा.	ल. ७, ८, अभिजित
कार्ति.शु. २, शु	31 अक्तू	१६ कार्ति.	अनु.	ल. ९, अभिजित
का. शु. १२, चं.	10 नवं.	२६ कार्ति.	उ.भा.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ५, चं.	17 नवं.	३ मार्ग.	पुर्न.	ल. ९ (चं. दा.), अभिजित
मा. कृ. १०, श.	22 नवं.	८ मार्ग.	उ.फा.	ल. ९, १२ (चं. दा.)
मा. कृ. १२, चं.	24 नवं.	१० मार्ग.	चित्रा	ल. ९, अभिजित

(9 दिसं. से 1 जन. (2009 ई.) तक गुरु अपने नीच नवांश एवं परमनीचांश में होगा—देखें पृष्ठ—)

—सन् 2009 ईसवी में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फागु.कृ. ५, शनि	14 फर.	३ फागु.	चित्रा	ल १२, १, अभिजित
फागु.कृ. १२, श.	21 फर.	१० फागु.	उ.षा.	दुपै. 12/50 के बाद
फा. शु. २, शु.	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा	ल. १, २, अभिजित
चैत्र कृ. २, गु.	12 मार्च	२९ फागु.	उफा/ह.	ल. १२, २, अभिजित

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार **अभिजित मुहूर्त्त** काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है—

दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः।
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण—मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त संवत् २०६५

नवीन गृह प्रवेश में किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पूर्वतः सुनिश्चित किए गए मुहूर्त्त दिवस पर किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा **वास्तु शान्ति,** नवग्रह-पूजन शान्ति, स्वस्ती वाचन एवं पंचदेव पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को यथाशक्ति भोजन-दानादि एवं कन्यापूजन पूर्वक सवत्सा गाय, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए। सिद्धान्तानुसार भूमिशयन प्रविष्टों का विचार गृह निर्माण मुहूर्त्तों में ही करना चाहिए। कुछ ग्रंथकारों ने नव्य गृह प्रवेश में रविवार तथा मार्गशीर्ष मास को भी ग्राह्य माना है। अतः आवश्यक परिस्थितिवश मार्गशीर्ष मास भी ग्राह्य किया जा सकता है।

'गृह प्रवेश में कलश वास्तु चक्र'

नव गृह प्रवेश सम्बन्धी मुहूर्त्तों में और अधिक सूक्ष्मता प्राप्ति के लिए कलश-वास्तु चक्र का प्रयोग किया जाता है। किसी काल्पनिक कलश को आठ विभागों में बाँट लें। मुहूर्त्त काल में सूर्याधीष्ठित नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (मुहूर्त्त वाला नक्षत्र) तक यथाक्रम नक्षत्र रखें। घट चित्र रेखांकित
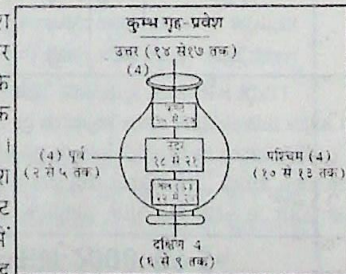
किया गया है। सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र १ (समान) होने पर मुख पर स्थापित करें। सूर्य के नक्षत्र से आगे गिनने पर दो से पाँच अर्थात् आगे के चार नक्षत्र पूर्व दिशा में रखें, इसी प्रकार ६ से ९ तक चार नक्षत्र कलश के दक्षिण में रखें, फिर दस से तेरह तक चार नक्षत्र पश्चिम में रखें, फिर १४ से १७ तक चार नक्षत्र उत्तर में रखें तथा १८ से २१ तक चार नक्षत्र कलश के उदर में रखें, फिर २२ से २४ तक तीन नक्षत्र कलश के तल में रखें तथा शेष २५ से २७ तीन नक्षत्र कलश के कण्ठ में रखें। इसके बाद गृह प्रवेश का फल निम्न प्रकार जानें—

गृह-प्रवेश में नक्षत्र फल	फल
१. यदि मुख का नक्षत्र ही प्रवेश नक्षत्र हो	अग्नि से भय होता है।
२. पूर्व के चार नक्षत्रों में भवन	उजाड़ होने का भय होता है।
३. दक्षिण के चार नक्षत्रों में	धन लाभ होता है।
४. पश्चिम के चार नक्षत्रों में	धन-वैभव प्राप्त होता है।
५. उत्तर के चार नक्षत्रों में	कलह-क्लेश रहता है।
६. उदर के चार नक्षत्रों में	विनाश का भय रहता है।
७. तल के तीन नक्षत्रों में	स्थिरता (स्थायी वास) आती है।
८. कण्ठ के तीन नक्षत्रों में	गृहस्वामी की चिरायु हो।

नवीन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०६५

चैत्र शु. १२, गु.	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.फा.	ल. ४, अभिजित
चै. शु. १३, शु.	18 अप्रै.	६ वैशा.	उफा/ह.	ल. २, ४, अभिजित
वैशा. कृ. १, चंद्रे	21 अप्रै.	९ वैशा.	स्वा.	ल. ४, अभिजित
वैशा. कृ. ३, बुधे	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	ल. २ (चं.गु.दा.), ४, अभि.
वैशा. कृ. ७, चंद्रे	28 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.षा.	ल. ३, अभिजित

नवरात्र मुहूर्त्त (आवश्यके)

आश्वि शु. २, बु.	1 अक्तू.	१६ आश्वि	स्वा.	मु. 11/12 बाद, वृश्चि., अभि. बै.
आ. शु. ३, गुरु	2 अक्तू.	१७ आश्वि	स्वा.	ल. ८, अभि., आवश्यके
आ. शु. ५, शनि	4 अक्तू.	१९ आश्वि	अनु.	ल. अभि., ९ (चं. दा.)
कार्ति शु. २, शु.	31 अक्तू.	१६ कार्ति.	अनु.	ल. ९ (चं. दा.), अभि., आ.
मार्ग. कृ. ५, चंद्रे	17 नवं.	३ मार्ग.	पुर्न.	ल. ९ (चं. दा.), अभि.
मार्ग. कृ.१०, श.	22 नवं.	८ मार्ग.	उ.फा.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ.१२, चं.	24 नवं.	१० मार्ग.	चित्रा	ल. ९, अभिजित

फाल्गुन मासे (सन् 2009 ई.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा. कृ. ५, शनि	14 फर.	३ फागु.	चित्रा	ल. १२, १, अभिजित (मीन ल. 9/08 तक)
फा. कृ. १२, श.	21 फर.	१० फागु.	उ.षा.	मुहूर्त्त 12/50 बाद
फा. शु. २, शु.	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १२, २, अभि.
चैत्र कृ. २, गु.	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभिजित

पुरातन गृह प्रवेश मुहूर्त्त—सन् 2008-09 ई.

पुराने गृह में प्रवेश के मुहूर्त्तों के लिए ऊपर लिखे नवीन गृह के मुहूर्त्तों को ही ग्रहण करना चाहिए। **उपरोक्त मुहूर्त्तों के अलावा निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्रहणीय होंगे।** पुराने गृह प्रवेश के मुहूर्त्तों में श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक, मार्गशीर्ष आदि मास, रिक्ता तिथि, गुरू-शुक्रादि के वार्धक्य/बाल्यत्वादि काल भी ग्राह्य होते हैं। यद्यपि नवग्रह शान्ति, स्वास्तीवाचन, कलश पूजनादि आपेक्षित हैं, परन्तु वास्तु शान्ति, कलश चक्र स्थापनादि आवश्यक नहीं।

आ. शु. १५, शु.	18 जुला.	३ श्राव.	उ.षा.	ल. ६, अभिजित
श्रा. कृ. ३, चंद्रे	21 जुला.	६ श्राव.	शत	ल. ७, अभिजित
श्रा. कृ. ५, बुध	23 जुला.	८ श्राव.	उ.भा.	ल. ६, अभि. (चं. दा.)
श्रा. कृ. ६, गुरु	24 जुला.	९ श्राव.	रेव.	ल. ६ (चं. दा.), अभि.
श्रा. कृ. ७, शुक्र	25 जुला.	१० श्राव.	रेव.	मुहूर्त्त प्रात: 8/19 तक
श्रा.कृ.१०/११, चं.	28 जुला.	१३ श्राव.	रोह.	ल. ६, ८, अभिजित
श्राव शु. ५, बुधे	6 अग.	२२ श्राव.	हस्त	ल. ७, ८, अभिजित
श्राव शु. ६, गु.	7 अग.	२३ श्राव	चित्रा	ल. ६, ८, अभिजित
श्राव शु. ७, शु.	8 अग.	२४ श्राव.	स्वा.	ल. ६, ८, अभिजित
श्रा.शु.९/१०, र.	10 अग.	२६ श्राव.	अनु.	ल. ७, ९ (17/13 बाद)
श्रा. शु. १३, गु.	14 अग.	३० श्राव.	उ.षा.	ल. ७, अभिजित
भा. कृ. २, चंद्रे	18 अग.	३ भादों	शत.	ल. ७, ८, अभिजित
भा. कृ. १०, चंद्रे	25 अग.	१० भादों	मृग.	ल. ८ (13/51 बाद)
भा. कृ. ११, बुध	27 अग.	१२ भादों	पुर्न	ल. ७, ९ (चं. दा.)
भा. शु. १, चंद्रे	1 सितं.	१७ भादों	उ.फा.	ल. ७, ८, अभिजित
भा. शु. ५, गुरू	4 सितं.	२० भादों	स्वा.	ल. ८, ८, अभिजित
भा. शु. ७, शनि	6 सितं.	२२ भादों	अनु.	ल. ७, अभिजित
भा. शु. ११, गु.	11 सितं.	२७ भादों	उ.षा.	ल. ७, ८, अभिजित
का. कृ. १२, गु.	25 अक्तू.	१० कार्ति	उ.फा.	मु. 14/55 बाद, ल. १२
का. शु. २, शु.	31 अक्तू.	१६ कार्ति	अनु.	ल. ९, अभिजित
का. शु. १०, श.	8 नवं.	२४ कार्ति	शत.	ल. ८, ९, अभिजित
का. शु. १२, चं.	10 नवं.	२६ कार्ति.	उ.भा.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. शु. ७, शु.	5 दिसं.	२१ मार्ग	शत.	ल. ९, अभिजित

—सन् 2009 ई. में—

फागु कृ. ५, शु.	13 फर.	२ फागु.	हस्त	मु. 12/35 बाद, ल. २

पुरातन गृह-प्रवेश मुहूर्त्त हेतु उपरोक्त मुहूर्त्तों के अतिरिक्त नवीन गृह-प्रवेश के मुहूर्त्तों को भी ग्रहण करें। —शुभाकांक्षी पं. पन्ना लाल ज्यो.

विपणि, व्यवसाय, दुकान, फैक्टरी आदि के मुहूर्त्त–सन् 2008-09 ई०

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव पूजा, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश स्थापन एवं कन्या पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। कार्तिक मास में सूर्य की पूजा, दान आदि करना शुभ होगा।

चैत्र शु. १२, गु.	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.फा.	ल. ४, अभिजित
चै. शु. १३, शु.	18 अप्रै.	६ वैशा.	उफा/ह.	ल. २, ४, अभिजित
चै. शु. १५, रवि	20 अप्रै.	८ वैशा.	चित्रा	ल. ४, अभिजित
वैशा कृ. १, चंद्रे	21 अप्रै.	९ वैशा.	स्वा.	ल. ४, अभिजित
वै. कृ. ३, बुधे	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	ल. २, ४, अभिजित
वै कृ. ७, रवि	27 अप्रै.	१५ वैशा	उ.षा.	मु. ८/३४ के बाद
वै. कृ. ७, चंद्रे	28 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.षा.	ल. ३, अभिजित
आ. शु. ११, रवि	13 जुला	३० आषा.	अनु.	मु. 15/54 बाद, भद्रा स्वर्गे
आ. शु. १५, शु.	18 जुला	३ श्राव.	उ.षा.	ल. ६, अभिजित
श्रा. कृ. ५, बुध	23 जुला	८ श्राव.	उ.भा.	ल. ६, अभिजित
श्रा. कृ. ६, गुरु	24 जुला	९ श्राव.	रेवती	ल. ६, अभिजित
श्रा. कृ. ७, शु.	25 जुला	१० श्राव.	रेवती	मु. प्रात: 8/19 तक
श्रा. कृ. १०, चं.	28 जुला	१३ श्राव.	रोह.	ल. ६, ८
श्रा. शु. ५, बुध	6 अग.	२२ श्राव.	हस्त	ल. ७, ८, अभिजित
श्रा. शु. ६, गु.	7 अग.	२३ श्राव.	चित्रा	ल. ६, ८, अभिजित
श्रा. शु. ७, शुक्र	8 अग.	२४ श्राव.	स्वा.	ल. ६, ८, अभिजित
श्रा.शु.९/१०, र.	10 अग.	२६ श्राव.	अनु.	ल. ७, ९ (17/13 बाद शुभ)
श्रा. शु. १३, गु.	14 अग.	३० श्राव.	उ.षा.	ल. 10/12 बाद, ७, अभि.
भा. कृ. ८, रवि	24 अग.	९ भादों	रोह.	मु. 10/02 बाद, ७, ८, अभि.
भा. कृ. १०, चं.	25 अग.	१० भादों	मृग	मु. 13/51 बाद, ल. ८
भा. कृ. ११, बु.	27 अग.	१२ भादों	पुर्न.	ल. ७, ९ (चं. दा.)
भा. शु. २, चं.	1 सितं.	१७ भादों	उ.फा.	ल. ७, ८, ९
भा. शु. ५, गु.	4 सितं.	२० भादों	स्वा.	ल. ८, ९
भा. शु. ७, शनि	6 सितं.	२२ भादों	अनु.	मु. 7/18 बाद, ल. ७, अभि.
भा.शु.७/८, रवि	7 सितं.	२३ भादों	अनु.	ल. ७ (10/08 तक)
भा. शु. ११, गु.	11 सितं.	२७ भादों	उ.षा.	ल. ७, ८, ९
आ. शु. २, बुध	1 अक्तू.	१६ आश्वि	स्वा.	मु. 11/12 बाद, आवश्यके
आ. शु. ३, गु.	2 अक्तू.	१७ आश्वि	स्वा.	ल. ८, अभिजित, आवश्यके
का. कृ. ५, रवि	19 अक्तू.	४ कार्ति.	मृग.	ल. ८, ९ (चं. दा.)
का. कृ. १२, श.	25 अक्तू.	१० कार्ति.	उ.फा.	मु. 14/55 बाद, ल. १२

विपणि मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)

—सन् 2009 ईसवी में—

नामकरण संस्कार मुहूर्त्त २०६५

(अन्न प्राशन मुहूर्त्त में भी ग्राह्य)

विपणि मुहूर्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मि.)
कार्ति. शु.२, शु.	31 अक्तू	१६ कार्ति.	अनु.	ल. ९ (चं. दा.)
का. शु. १२, चं.	10 नवं.	२६ कार्ति.	उ.भा.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ५, चं.	17 नवं.	३ मार्ग.	पुर्न.	ल. ९, अभिजित
मा. कृ. १०, श.	22 नवं.	८ मार्ग.	उ.फा.	ल. ९, १२ (चं. दा.)
मा. कृ. ११,रवि	23 नवं.	९ मार्ग.	हस्त	ल. ९, १२ (चं. दा.)
मा. कृ. १२, चं.	24 नवं.	१० मार्ग.	चित्रा	ल. ९, अभिजित
मा. शु. १०,रवि	7 दिसं.	२३ मार्ग.	उ.भा.	मु. 14/48 उपरांत, आवश्यके
मार्ग. १५, शु.	12 दिसं.	२८ मार्ग.	रोह.	ल. मीन, अभिजित
पौष कृ. १,शनि	13 दिसं.	२९ मार्ग.	मृग.	ल. ९, १२, अभिजित
—सन् 2009 ई. में—				
फा. कृ. ५,शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	मु. 12/35 उप., ल. २
फा. कृ. ५,शनि	14 फर.	३ फागु.	चित्रा	ल. १२ (9/08 या.), १, अ.
फा. कृ. ६, रवि	15 फर.	४ फागु.	स्वा.	ल. १ (चं. दा.), अभि.
फा. कृ. १२,श.	21 फर.	१० फागु.	उ.षा.	मु. 12/50 उप.
फा.शु.२/३, शु.	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २ अभिजित
फा. शु. ३, शनि	28 फर.	१७ फागु.	रेव.	मु. 10/38 से 12/32 तक
चै. कृ. २, गुरू	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २ अभिजित

यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार मुहूर्त २०६५

यज्ञोपवति को व्रत-बन्ध भी कहते हैं। यह संस्कार भारतीय जीवन पद्धति में उत्तरदायित्व का बोध कराने वाला पुण्य प्रतीक है। विशेष संस्कार या अनुष्ठान आदि के अवसर पर (उसमें भाग लेने वालों को यज्ञोपवीत बदलवा देना चाहिए। चैत्र और वैशा. में (बसन्त) में ब्राह्मण का, ग्रीष्म में क्षत्रिय का और शरद् ऋतु में वैश्य को यज्ञोपवीत धारण करना श्रेष्ठ होता है। निम्न मन्त्रपूर्वक नवीन यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयँ प्रतिमुन्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

आगे संवत् २०६५ में आने वाले कुछ विशेष मुहूर्त दिए जा रहे हैं—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण
चैत्र कृ. २, रवि	23 मार्च	१० चैत्र	चित्रा	ल. २, अभिजित
चै. कृ. ३, चंद्रे	24 मार्च	११ चैत्र	चि.स्वा.	ल. १ (चं. दा.), अभिजित
चै. कृ. ५, बुध	26 मार्च	१३ चैत्र	अनु.	मुहूर्त 14/15 उप.
चै. शु. २, चंद्रे	7 अप्रै.	२५ चैत्र	अश्वि	ल. २, अभिजित
चै. शु. ५, गुरौ	10 अप्रै.	२८ चैत्र	रोह.	ल. १, २, अभिजित
चै. शु. ६, शुक्र	11 अप्रै.	२९ चैत्र	मृ/आ.	ल. १, २, अभिजित
चै. शु. १२, गुरू	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.फा.	ल. ४, अभिजित
वैशा कृ. १, चंद्र	21 अप्रै.	९ वैशा.	स्वा.	ल. ४, अभिजित
वैशा कृ. ३, बुध	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	ल. २, ४, अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण (घं. मि.)
—सन् 2009 इसवी में—				
फा. कृ. ५, शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	मु. 12/35 बाद, ल. २
फा.शु.१/२, गु.	26 फर.	१५ फागु.	पू.भा.	ल. १२, २, अभिजित
फा.शु.२/३, शु.	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित
चैत्र कृ. २, गुरु	12 मार्च	२९ फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभिजित
चैत्र कृ. ५, रवि	15 मार्च	२ चैत्र	स्वा.	मुहूर्त 8/01 तक

मुहूर्त द्विरागमन (मुकलावा) २०६५

विवाह उपरान्त पिता के गृह में आकर दूसरी बार पुनः पति के गृह में जाने को द्विरागमन (मुकलावा) कहते हैं। विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—अर्थात् शुक्र जिस दिशा (पूर्व या पश्चिम) में उदित होता हो, उस दिशा में शुक्र सम्मुख तथा उससे दाहिनी ओर की दिशा दक्षिणस्थ मानी जाती है। मुकलावा के आगे लिखे मुहूर्त विवाहोपरांत १६ दिन के पश्चात् ही विशेषतः ग्राह्य होंगे। आजकल कुछ पंचाँगकार परिस्थितिवश एवं उपायस्वरूप रवि एवं शनिवार भी ग्रहण करने लगे हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त विवरण
चैत्र शु. १२, गु.	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.फा.	ल. ४, अभिजित
चैत्र शु. १३, शु.	18 अप्रै.	६ वैशा.	उ./ह.	ल. २, ४, अभिजित
वैशा कृ. १, चंद्र	21 अप्रै.	९ वैशा.	स्वा.	ल. ४, अभिजित
वैशा कृ. ३, बुध	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	ल. ४, अभिजित
वैशा कृ. ७, रवि	27 अप्रै.	१५ वैशा.	उ.षा.	8/34 के बाद, आवश्यके
वैशा कृ. ७, चंद्रे	28 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.षा.	ल. ३, अभिजित
मार्ग कृ. ५, चंद्रे	17 नवं.	३ मार्ग	पुर्न.	ल. ९, अभिजित
मार्ग कृ.११,रवि	23 नवं.	९ मार्ग.	हस्त	ल. ९, अभिजित (आवश्यके)
मार्ग कृ. १२,चं.	24 नवं.	१० मार्ग.	चित्रा	ल. ९, अभिजित
मार्ग शु. ९, रवि	7 दिसं.	२३ मार्ग.	उ.भा.	ल. ९, अभि., आवश्यके
मार्ग शु.१५,शुक्रे	12 दिसं.	२८ मार्ग.	रोह.	ल. १२, अभिजित
—सन् 2009 ई. में—				
फा. कृ. रवि	15 फर.	४ फागु.	स्वा.	अभिजित (आवश्यके)
फा. कृ. गुरु	19 फर.	८ फागु.	मूल	ल. १२, अभिजित
फा. कृ. शुक्रे	20 फर.	९ फागु.	मूल	ल. १२, अभिजित
फा. शु. २, शुक्रे	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभिजित
चै. कृ. २, गुरु	12 मार्च	२९ फागु.	उ.फा.	ल. १२, अभिजित

नामकरण संस्कार मुहूर्त २०६५

(अन्न प्राशन मुहूर्त में भी ग्राह्य)

अपनी कुल परम्परा अनुसार सूतक समाप्ति के पश्चात् जन्मदिन से १०, ११, १२, १३, १६, १९ या २२वें या ४१वें तथा विपणि में दिए गए शुभ मुहूर्तों में नामकरण संस्कार करना चाहिए। मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व के विकास में उसकी प्रसिद्ध नाम राशि का विशेष महत्त्व होता है। व्यापार, व्यवहार, सर्विस, संकल्पपूर्वक दान दीक्षा-मंत्र-सिद्धि आदि कार्यों में नाम की ही प्रधानता रहती है। नामकरण संस्कार अपने कुल के वृद्ध व्यक्ति, महात्मा, गुरु, पण्डित, ज्योतिषी, पिता या कुल पुरोहित जी से परामर्श के अनुसार अथवा जन्म-नक्षत्र के चरणाक्षर से प्रारम्भ होने वाले अक्षर से युक्त किसी महान् पुरुष, कुलदेवता, ईश्वर या देववाचक, मंगल/कल्याणार्थक तथा कानों को मधुर लगने वाले अक्षर वाला नाम रखना चाहिए। यदि जन्म नक्षत्र/राशि पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो लग्न, लग्नेश या भाग्येश ग्रह से सम्बन्धित राशि वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाला नाम रखना चाहिए। उस दिन किसी ब्राह्मण द्वारा स्वास्ती वाचन, पंचदेव एवं नवग्रह पूजनादि करवा कर **ब्राह्मण** का भोजन, वस्त्र, फल दक्षिणा आदि द्वारा सत्कार करना चाहिए।

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती।

शुभ लग्न—(इ) १, ४, ७, १०।

विशेष—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

संसद् में शपथ ग्रह के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

वि. संवत् २०६५ में सर्वदेव प्रतिष्ठा (मूर्त्ति स्थापना) मुहूर्त्त

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कुआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्री) विशेषतया प्रशस्त है।

श्री दुर्गा माता, श्री महालक्ष्मी, सरस्वती, गौरी एवं काली माता की भी प्रतिष्ठा में दक्षिणायण (गुर्वास्तादि रहित) मास में नवरात्रे, अष्टमी/नवमी तिथि, मूल नक्षत्र, दीवाली एवं बसन्त पंचमी, नवरात्रे विशेष शुभ माने जाते हैं।

श्री हनुमान जी की मूर्त्ति स्थापना में चैत्र शु. पूर्णिमा, कार्तिक कृष्ण चौदश, मंगल, रविवार एवं आर्द्रा नक्षत्र विशेष शुभ माने जाते हैं। आगे दिए गए मुहूर्त्त भगवान् विष्णु, राम, शिव-शक्ति माता, श्री गणेश, हनुमान आदि देवों के लिए शुभ एवं ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १२. गु.	17 अप्रै.	५ वैशा.	उ.फा.	ल. कर्क, अभिजित, (श्री विष्णु-लक्ष्मी, श्रीकृष्ण-राधा)
चै. शु. १३, शु.	18 अप्रै.	६ वैशा.	उफा	ल. २, ४, अभि., शिव-पार्वती
चै. शु. १४,शनि	19 अप्रै.	७ वैशा.	हस्त	ल. २. ४, अभि., भगवान शिव
चैत्र १५, रवि	20 अप्रै.	८ वैशा.	चित्रा	ल. ४, अभि. भग-नारायण, विष्णु
वैशा कृ. १, चंद्रे	21 अप्रै.	९ वैशा.	स्वा.	ल. ४, अभि. ब्रह्म, अग्नि, सूर्य
वैशा कृ. ३,बुध	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	ल. २, ४, अभि. गौरी, श्रीदुर्गा
...शा कृ. ७,रवि	27 अप्रै.	१५ वैशा.	उ.षा.	मु. प्रातः 8/34 के बाद, सूर्यदेव
...शा कृ. ७, चंद्र	28 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.षा.	ल. ३, अभि., शिव (प्रातः7/08 उप.)

—सन् 2009 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
...गु. कृ. ५,श.	14 फर.	३ फागु.	चित्रा	ल. १२ (9/08 तक), १, अभि.
... कृ. ६, रवि	15 फर.	४ फागु.	स्वा.	ल. १, अभि. (दुपै. 12/53 तक) भ.पू.
... कृ. ८, मंग	17 फर.	६ फागु.	अनु.	ल. १२, अभि. शिवजी, हनुमान जी
... कृ. १२.श.	21 फर.	१० फागु.	उ.षा.	मु. 12/50 उपरांत
...ा.शु.२/३, शु.	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	ल. १, २, अभि., गौरी, श्रीदुर्गा
...त्र कृ. २, गुरु	12 मार्च	२० फागु.	हस्त	ल. १२, २, अभिजित

श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त—2008-09 ई.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
वैशा. कृ. ४, गु.	24 अप्रै.	१२ वैशा.	ज्येष्ठा	ल. २ (चं. दा.), ३, अभि.
श्रा.कृ. ३/४, चं.	21 जुला	६ श्राव	ध./श.	ल. ७, अभिजित
भाद्र.कृ. ४, बुध	20 अग.	५ भाद्र.	उ.भा.	ल. ८, अभिजित
भा. शु. ४, बुध	3 सितं.	१९ भाद्र.	चित्रा	मु. 12/29 से पूर्व, ल. ७
मार्ग. कृ. ४,रवि	16 नवं.	२ मार्ग.	आर्द्रा	ल. ९ (चं. दा.), अभि.
पौ. कृ. ४, मंग	16 दिसं.	२ पौष	आश्ले	मु. 8/27 तक

—सन् 2009 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
माघ कृ. ४, बुध	14 जन.	२ माघ	पू.फा.	14/24 बाद
फा. कृ. ४, शुक्र	13 फर.	२ फागु.	हस्त	दुपैहर 12/35 तक

श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (सन् 2008-09 ई.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
चैत्र शु. ८, रवि	13 अप्रै.	१ वैशा.	पुर्न	ल. १, २, अभिजित
चैत्र शु. ९, चंद्र	14 अप्रै.	२ वैशा.	पुष्य	12/27 तक
वै. कृ. ३, बुध	23 अप्रै.	११ वैशा.	अनु.	9/27 तक
वै. कृ. ७/८, चं.	28 अप्रै.	१६ वैशा.	उ.षा.	ल. ३, अभिजित
श्राव.शु.९, रवि	10 अग.	२६ श्राव.	अनु.	ल. ७, ९, अभिजित
भाद्र.शु. ९, मं.	9 सितं.	२५ भाद्र.	मूल	ल. ७, ८, अभिजित
कार्ति.कृ. ५,रवि	19 अक्तू	४ कार्ति.	मृग	ल. ८, अभिजित
मार्ग. कृ. ११,र.	23 नवं.	९ मार्ग.	हस्त	ल. ९, अभिजित

—सन् 2009 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
फा. कृ. १०, गु.	19 फर.	८ फागु.	मूल	ल. १२, १, अभिजित

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त—2008-09 ई.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
चैत्र शु. ६, शुक्र	11 अप्रै.	२९ चैत्र	मृ/आ.	ल. १, २ (9/43 बाद), अभि.
वै. कृ. ७, चंद्र	28 अप्रै.	२८ वैशा.	अभि.	ल. ३, अभिजित
श्रा. कृ. १२, मं	29 जुला	१४ श्राव	मृग.	ल. ६, अभिजित
श्रा. कृ. १३, बु.	30 जुला	१५ श्राव	आर्द्रा	ल. ६, अभिजित
श्रा. शु. ११, मं.	12 अग.	२८ श्राव	मूल	ल. ७, ८, अभिजित

—सन् 2009 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
फा. कृ. १४,चं.	23 फर.	१२ फागु.	श्रव.	ल. १२, २, अभिजित
फा. शु. ३, शनि	28 फर.	१७ फागु.	रेव.	ल. १, २, अभिजित

श्री हनुमान प्रतिष्ठा के लिए 20 अप्रैल, 2008 ई., रविवार तथा 27 अक्तूबर, सोमवार मुहूर्त्त ग्राह्य होंगे।

प्रदोष व्रतम्

यह व्रत शिवजी की प्रसन्नता और प्रभुत्व की प्राप्ति के लिए किया जाता है। वैसे तो सभी प्रदोष व्रत अत्यन्त कल्याणप्रद होते हैं, परन्तु **शनि प्रदोष व्रत** सन्तान प्राप्ति के लिए, **भौम प्रदोष** ऋणमोचन के लिए, मनः शान्ति एवं सुरक्षा के लिए **सोम प्रदोष व्रत** तथा आरोग्य प्राप्ति एवं आयु वृद्धि के लिए **अर्क (रवि)** प्रदोष व्रत विशेष अधिक फलदायी होता है। व्रती को चाहिए कि व्रत वाले दिन सूर्यास्त के समय पुनः स्नान करके शिव पूजन एवं कथा करें और तत्पश्चात् **''भवाय भवनाशाय, महादेवाय धीमते। रूद्राय नीलकण्ठाय शर्वाय शशि मौलिने उग्रयोग्राघनाशाय भीमाय भय हारिणे ईशानाय नमस्तुभ्यं पशूनां पतये नमः॥''** से प्रार्थना करके भोजन करें॥

विवाहादि शुभ कार्यों में अशुद्ध मुहूर्त्त-संवत् २०६५ वि.

विवाहादि शुभ कार्यों में अशुद्ध मुहूर्त—संवत् २०६५ वि.

नीचे वि. संवत् २०६५ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षतः कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। अति आवश्यक परिस्थितीवश यदि निम्न मुहूर्त्तों में से कोई विवाह आदि शुभ कार्य करना हो, तो विवाह नक्षत्र व योग स्वामी एवं देवता की विशिष्ट संख्या में संकल्पपूर्वक पूजा-पाठ व दानादि करके शुभ कार्य सम्पादित करने चाहिएँ॥

(निवेदक—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी॥)

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
16 अप्रैल	बुध	मघा	शनि-केतु युति, भद्रा व्याप्ति
24 अप्रैल	गुरु	मूल	मंगल का वेध
25 अप्रैल	शुक्र	मूल	मंगल का वेध
26 अप्रैल	शनि	मूल	मंगल का वेध
28 अप्रैल	चंद्र	श्रवण	शनि-केतु वेध
29 अप्रैल	मंगल	श्रवण	शनि-केतु वेध
29 अप्रैल	मंगल	धनि.	राहु की युति
30 अप्रैल	बुध	धनि.	राहु की युति
2 मई	शुक्र	उ.भा.	शुक्र वार्धक्य
3 मई	शनि	उ.भा.	शुक्रास्त, त्रयो.
12 जुलाई तक शुक्रास्त			
13 जुला.	रवि	अनु.	शुक्र बालत्व
14 जुला.	चंद्र	अनु.	मृत्युबाण
18 जुला.	शुक्र	श्रवण	शनि का वेध
19 जुला.	शनि	श्रवण	शनि का वेध
20 जुला.	रवि	धनि.	राहुयुति, केतु वेध
21 जुला.	चंद्र	धनि.	राहुयुति, केतु वेध
24 जुला.	गुरु	उ.भा.	लग्नाभाव
25 जुला.	शुक्र	रेवती	लग्नाभाव, नक्षत्रान्त
25 जुला.	शुक्र	अश्वि	भौम वेध
26 जुला.	शनि	अश्वि	भौमवेध, शूल योग
2 अग.	शनि	मघा	ग्रहणऽपरे दिन
5 अग.	मंग.	हस्त	दिने मृत्युबाण दोष
11 अग.	चंद्र	मूल	लग्नाभाव:
13 अग.	बुध	मूल	लग्नाभाव:
14 अग.	गुरु	उ.षा.	15-30 उप. मृ. बाण

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
15 अग.	शुक्र	उ.षा.	मासान्त, ग्रहणपूर्व दिन
16 अग.	शनि	श्रवण	संक्रान्ति, ग्रहण
17 अग.	रवि	धनि.	ग्रहणऽपर दिन
20 अग.	बुध	रेव	भौम वेध, भुजंगपात
21 अग.	गुरु	रेव	भौम वेध, भुजंगपात
21 अग.	गुरु	अश्वि	शनि का वेध
22 अग.	शुक्र	अश्वि	शनि का वेध
25 अग.	चन्द्र	रोह.	लग्नाभाव:
26 अग.	मंग.	मृग	नक्षत्रान्त
3 सितं.	बुध	स्वा.	लग्नऽभाव
11 सितं.	गुरु	श्रव.	राहु की युति
12 सितं.	शुक्र	श्रव.	राहु की युति
12 सितं.	शुक्र	धनि.	केतु का वेध
13 सितं.	शनि	धनि.	केतु का वेध
15 सितं.	चन्द्र	पू.भा.	महाल्या श्राद्ध प्रा.
15 सितं. से 29 सितं. तक श्राद्ध			
30 सितं.	मंगल	हस्त	लग्नऽभाव
1 अक्तू.	बुध	चित्रा	भौम यु., लग्नाभाव
6 अक्तू.	चन्द्र	मूल	दिन लग्ने मृत्युबाण
7 अक्तू.	मंगल	उ.षा.	अति., लग्नाभाव
8 अक्तू.	बुध	श्रवण	लग्नाभाव
9 अक्तू.	गुरु	श्रवण	राहु-युति
10 अक्तू.	शुक्र	श्रवण	राहु-युति, नक्षत्रान्त
10 अक्तू.	शुक्र	धनि.	केतु-वेध, शूलयोग (भुजंगपात)

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
11 अक्तू.	शनि	धनि	केतु वेध, शूल योग
14 अक्तू.	मंगल	रेव	भद्रा, लग्नाभाव
15 अक्तू.	बुध	अश्वि	मृत्युबाण, शनि वेध
18 अक्तू.	शनि	रोह.	मृत्युबाण दोष
23 अक्तू.	गुरु	मघा	राहु का वेध
24 अक्तू.	शुक्र	मघा	राहु का वेध
26 अक्तू.	रवि	उ.फा.	कृष्ण त्रयोदशी
27 अक्तू.	चन्द्र	हस्त	मृत्युबाण दोष
29 अक्तू.	बुध	स्वाती	सूर्य की युति
3 नवं.	चन्द्र	मूल	नक्षत्रान्त, लग्नाभाव
5 नवं.	बुध	उ.षा.	मृत्युबाण, भुजंगपात
5 नवं.	बुध	श्रवण	राहु-युति
6 नवं.	गुरु	श्रवण	राहु-युति
6 नवं.	गुरु	धनि.	केतु का वेध
7 नवं.	शुक्र	धनि.	केतु का वेध
11 नवं.	मंगल	अश्वि	शनि का वेध
12 नवं.	बुध	अश्वि	शनि का वेध
14 नवं.	शुक्र	रोह.	मासान्त
15 नवं.	शनि	मृग.	संक्रान्ति, भद्रा
19 नवं.	बुध	मघा	राहु का वेध
20 नवं.	गुरु	मघा	राहु का वेध
24 नवं.	चंद्र	चि./स्वा	कृष्ण त्रयोदशी
28 नवं.	शुक्र	अनु	लग्नाभाव, सू. मं युति
2 दिसं.	मंग.	श्रवण	राहु की युति
3 दिसं.	बुध	श्रवण	राहु की युति

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
3 दिसं.	बुध	धनि.	केतु का वेध
4 दिसं.	गुरु	धनि.	केतु का वेध
6 दिसं.	शनि	उ.भा.	लग्नऽभाव
7 दिसं.	रवि	रेवती	शनि का वेध
8 दिसं.	चन्द्र	रेवती	शनि का वेध

9 दिसं. की रात्रि 11-42 से 1 जनवरी 2009 ई. तक गुरु परमनीचांश स्थिति में होने से इस कालावधि में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित रहेंगे। (देखें पृष्ठ 135)

15 दिसं. चंद्रवार से पौष संक्रान्ति

11 जनवरी से 9 फर. 09 तक गुर्वस्त

सन् 2009 ईसवी में

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
12 फर.	गुरु	उ.फा.	फागु. संक्रान्ति
13 फर.	शुक्र	हस्त	भुजंगपात
13 फर.	शुक्र	चित्रा	मृत्युबाण दोष
21 फर.	शनि	उ.षा.	मृत्युबाण दोष
22 फर.	रवि	उ.षा.	कृष्ण त्रयो., व्यती.
1 मार्च	रवि	अश्वि	शनि का वेध
3 मार्च	मंग.	रोह.	मृत्युबाण दोष
4 मार्च	बुध	रोह.	होलाष्टक
13 मार्च	शुक्र	चित्रा	सूर्य वेध, मासांत

14 मार्च से चैत्र मासारम्भः

नक्षत्र श्रृंखला में पुष्य नक्षत्र की महिमा

कर्क राशि के अन्तर्गत आने वाले तीनों नक्षत्रों-पुनर्वसु, पुष्य एवं आश्लेषा में से पुष्य नक्षत्र सर्वाधिक दैदीप्यमान एवं महत्त्वपूर्ण नक्षत्र माना जाता है। **काल-पुरुष** के शरीरांगों में इसकी स्थिति मुख पर मानी गई है। **पुष्य नक्षत्र** के अन्तर्गत तीन मुख्य ताराओं की संख्या मानी जाती है जो कि **डैल्टा, गामा** और थीटा हैं। इनमें से डैल्टा तारा पुष्य नक्षत्र का **योगतारा** है। इसका आकार बाणाकृति, आकाश के मध्य में स्थिति तथा पुरुष-लिंग माना जाता है। **पाराशरी** मतानुसार पुष्य नक्षत्र का स्वामी ग्रह शनि माना गया है तथा पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक को **शनि की** ही विशोंतरी दशा प्रारम्भ होती है, परन्तु पुष्य नक्षत्र का देवता बृहस्पति (गुरु) माना गया है। इसी कारण महूर्त्तों में गुरु-पुष्य योगों को विशेष शुभ एवं लाभकारी योगों में माना जाता है।

प्राचीन वैदिक साहित्य में पुष्य नक्षत्र को विभिन्न नामों से अभिहित किया गया है। **ऋग्वेद** में पुष्य को **तिष्य** भी कहा गया है, जिसका अर्थ शुभ-एवं **मांगलिक** होता है। कालान्तर में ब्राह्मण ग्रंथों और पुराणों में भी अनेक स्थानों में पुष्य नक्षत्र की प्रतिष्ठा का वर्णन मिलता है। **श्री वालमीकि** रामायण, महाभारत व पुराणों में पुष्य नक्षत्र की प्रशंसा का उल्लेख मिलता है। इस प्रसंग में महाकवि श्री भट्टि कहते हैं कि सर्वार्थ-सिद्धिप्रद पुष्य नक्षत्र के समान ही विख्यात योगसिद्धा, उस शबरी के पास, लक्ष्मण के साथ प्रभु श्री राम जा पहुँचे—**सिध्यतारामिव ख्यातां शबरीमापतुर्वने॥ (भट्टिकाव्य)**

'पाणिनि' के समय में भी पुष्य नक्षत्र अत्यन्त शुभ एवं सिद्धप्रद माना जाता था—

"पुष्य सिद्धयौ नक्षत्रे॥-" सिध्यन्ति अस्मिन् सर्वाणि कार्याणि इति सिध्यः, पुष्यश्च॥ पाणि॰॥ ३। १।१६

श्री शिवपुराण (रूद्रसंहिता) में जहां भगवान् शंकर की विभूतियों का वर्णन आया है। इसमें देवता लोग भगवान् शिव से कहते हैं क आप यज्ञों में **अश्वमेघ, युगों में सत्युग, नक्षत्रों में** पुष्य एवं तिथियों में अमावस्या हैं (अमावस्या तिथि-शिव जी को अभिप्रेत है)—

(क्रतूनामश्वमेघोऽसि युगानां प्रथमो कृतयुशः।
पुष्यस्त्वं सर्वधिष्ण्यानाममावस्या तिथिष्वसि॥) (शिव पुराण)

विद्या और धार्मिक कृत्यों के स्वामी गुरु (बृहस्पति) की उत्पत्ति भी पुष्य नक्षत्र से हुई, मानी जाती है—

"ब्रहस्पतिः प्रथमं जायमानः तिष्यं नक्षत्रं अभिसं बभूव" — **तैतरीय ब्राह्मण)**

नारद संहिता, बृहज्जातक, मानसागरी आदि ज्योतिष ग्रंथों में भी पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक / जातिका को धर्म निष्ठ, सुन्दराकृति, बुद्धिमान, लोकप्रिय, स्त्री / पति, संतान, और धनादि सुखों से सम्पन्न एवं सुखी माना है—

देव-धर्म-धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः। पुष्ये च जायते लोकः शान्तात्मा सुभगः सुखी॥

मुहूर्त्त ज्योतिष के अनेक ग्रंथों में तो पुष्य नक्षत्र को तिथि, चन्द्रादि ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने में सर्व प्रकार से सक्षम एवं सिद्ध माना गया है। जैसे सिंह अन्य सभी चौपायों को भयान्वित कर देता है, वैसे ही **पुष्य नक्षत्र** अन्य ग्रह दोषों की अशुभ स्थिति को शान्त कर देता है—

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुङ्ग नाम्॥
चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरे वा सिद्धयन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये॥"
(ज्योतिर्निबन्ध)

पुष्य नक्षत्र रविवार, सोमवार, मंगलवार, गुरूवार आदि के संयोग से विशेष फल प्रदायक योग भी प्रकट करता है। जैसे, **गुरूवार** के दिन पुष्य नक्षत्र व्याप्त हो, तो यह **गुरुपुष्य योग** विशेषतः सिद्धि (सफलता) देने वाला योग बनता है—

गुरौ पुष्यसमायोगे सिद्धयोगः प्रकीर्तितः॥

गुरु-पुष्य योग में धर्म-कार्यारम्भ करना, मन्त्र जाप, एवं अनुष्ठान करना, गुरु आदि श्रेष्ठ व्यक्ति से मंत्र दीक्षा या उच्च-विद्या ग्रहण करना, व्यापार या अनुबन्ध करना, विदेश-गमन करना शुभ एवं श्रेयकर माना जाता है।

रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र व्याप्त रहे तो **रविपुष्य** योग बनता है। **रविपुष्य** ज्योतिष के श्रेष्ठतम योगों में गिना जाता है। इसमें जड़ी-बूटी तोड़ना, औषध तैयार करना एवं रोग विशेष के लिए औषधी ग्रहण करना शुभ एवं लाभदायक होता है। इसके अतिरिक्त मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि तैयार करने के लिए भी यह योग विशेष प्रशस्त माना जाता है।

मंगलवार और पुष्य के संयोग से **प्रशस्त** योग माना जाता है। इसके अतिरिक्त **सर्वार्थ-सिद्ध योगों** एवं **अमृतसिद्ध** योगों में **पुष्य** नक्षत्र का समावेश आवश्यक माना गया है।

पुष्य नक्षत्र में प्रायः सभी शान्ति-पोष्टिक, स्तम्भन-उच्चाटन, सौभाग्य एवं वशीकरण प्रयोग सिद्ध होते हैं—ऐसा तन्त्र ग्रंथों में उल्लेख मिलता है। **तंत्र ग्रंथानुसार** पुष्य नक्षत्र में वनगोभी तथा अपामार्ग (चिच्चिड़ा) की जड़ उखाड़कर मस्तक पर धारण करने से सभी तरह के वाद-विवाद (मुकद्दमे आदि) में विजय प्राप्त होती है। इसी नक्षत्र में श्वेत विकीरण (कटैया) की जड़ उखाड़कर रविवार को दाहिनी भुजा पर बान्धने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। **रविपुष्य** में ही निम्न मंत्र को 21 बार जपकर फिर मुँह धो लेने से, पुनः उसपर किसी को क्रोध नहीं आता—

मंत्र—ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्वक्रोधोपशमनी स्वाहा। इत्यादि अनेक तन्त्र प्रयोगों का वर्णन मिलता है।

पुष्य नक्षत्र में किए गए श्राद्ध से पितरों की भी अक्षय तृप्ति होती है-कर्मकर्त्ता को धन-पुत्र आदि की प्राप्ति होती है—

"पौष्यद्वये पुष्यचतुष्टये च श्राद्ध प्रदाता बहुपुत्रवान् स्यात" (नारद संहिता)

रवि पुष्य योग में बेल या पीपल की जड़ दाहिनी भुजा ...

शिव-मन्त्रावली

रवि पुष्य योग में बेल या पीपल की जड़ दाहिनी भुजा में मंत्र पूर्वक बांधने से सूर्यजनित दोष शान्त होते हैं। पीपल वृक्ष की उत्पत्ति भी पुष्य नक्षत्र में हुई मानी जाती है।

गुरु पुष्य योग में अनार की जड़ को केशर का तिलक करके गुरू गायत्री मंत्र पढ़ते हुए दाहिनी भुजा में बांधने से बृहस्पति जन्य दोष शान्त हो जाते हैं। जिन कन्याओं का विवाह न हो रहा हो, अथवा विवाह में विलम्ब हो रहा हो, वे **रवि पुष्य** अथवा **गुरु पुष्ययोग** में व्रतारम्भ एवं अनार की जड़ बांधकर मनोवांछित फल प्राप्त कर सकती हैं॥

आश्चर्य है, मुहूर्तों में इतना उपयोगी एवं मंगलकारी नक्षत्र होनें पर भी **पुष्य नक्षत्र** को विवाह नक्षत्रों में शामिल नहीं किया गया। इस सम्बन्ध में पुराणों में आख्यान मिलता है कि ब्रह्मा जी ने अपनी पुत्री सती 'शारदा' का विवाह गुरूवार पुष्य नक्षत्र में ही करने का निश्चय किया था। परन्तु शिव-पार्वती के विवाह के अवसर अपनी पुत्री के अपरिमित, सौन्दर्य पर कामासक्त हो जाने पर भगवान शिव ने ब्रह्मा जी को शाप दे दिया। स्वयं **पार्वती** ने भी इस मुहूर्त्त के पुष्य नक्षत्र को भी विवाह जैसे मंगलकार्य में निषिद्ध घोषित कर दिया। **सम्भवतः** इसी कारण विवाह कार्य को छोड़कर शुभ कार्यों में पुष्य नक्षत्र की श्रेष्ठता को स्वीकार किया जाता है

यात्रा प्रतिष्ठा सीमन्त व्रतबन्ध प्रवेशनम्।
करग्रहं विना सर्वकर्म देवेज्यभे शुभम्॥ (नारदसंहिता)

कलियुग में 'शिव' नाम का महत्त्व

कलियुग 'शिव' नाम का महत्त्व सब नामों से बढ़कर है। जैसा कि कूर्मपुराण में कहा गया है कि सतयुग में परमात्मा का सिमरण ब्रह्म के रूप में, त्रेता युग में भगवान् आदित्य, द्वापर युग में श्री भगवान् विष्णु तथा कलियुग में भगवान् शिव के रूप में विशेष तौर पर प्रतिष्ठित होते हैं—

ब्रह्माकृत युगे देवः त्रेतायां भगवान् रविः।
द्वापरे दैवतं विष्णु कलौ देवो महेश्वरः॥ (कर्मपुराण)

महर्षि पतंजलि के अनुसार भगवान् के नाम और रूप दोनों को मिलाकर जप करना चाहिए, अर्थात् नाम के साथ नामी के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए, और उसमें स्वयं को तन्मय कर देना चाहिए—

"तस्य वाचकः प्रणवः। तज्जपस्तर्थभावनम्।
ततः प्रत्यक् चेतनधिगमोऽप्यन्तराया भावश्च॥"

भगवान् शिव के नाम कीर्तन से सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। नाम के यथार्थ माहात्म्य को समझकर प्रेम व श्रद्धापूर्वक जप करने से '**ॐ नमः शिवाय**' मन्त्र का पाठ यथेष्ठ संख्या में करता है, उसका मुख देखने मात्र से तीर्थ-दर्शन का फल प्राप्त होता है। इस मन्त्र से सब सिद्धियाँ सुलभ हो जाती हैं। सकाम व निष्काम-दोनों प्रकार के साधकों के लिए यह शिव मन्त्र फल प्रदायक है। जैसा कि पूर्वतः यह बात स्पष्ट की गई थी कि भगवान् शिव सम्बन्धी अथवा कोई भी दैवी मन्त्र विनियोग, अंगन्यास पूर्वक करने से शीघ्र फलप्रदायक होते हैं। इसके लिए साधकों को 'शिव मन्त्रावली' पुस्तक का अवश्य अध्ययन करना चाहिए।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, योग–नक्षत्रों आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्य विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योतिर्निबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, लग्न स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। सातवें चन्द्र और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

(चक्र) — विवाह सभी पाप ग्रह; × ×; चंद्र; शनि; शुक्र; × ×; राहु; मंगल; × ×; सभी ग्रह [चं.-गु.] (परिहार); × ×; लग्नेश शुक्र, चंद्र; चं. मं. लग्नेश शुभ ग्रह

''त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥''

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। '**पंचांगदिवाकर**' में लगाए गए लग्न मुहूर्त्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें मंगल, २, ३, ११वें चंद्रमा, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं— **लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।**
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवीं राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्। जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी** ग्रह समान हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी, केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्त्तृरि दोष—लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्त्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्यु तुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—''कर्किगोरस्थः पूर्णो विधुस्त्तनौ''

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तण्ड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **''चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।''**

'**मुहूर्त्तगणपति**' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। —ज्योतिर्निबन्ध

यतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि ... दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है।

यथा—

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) **दग्धा तिथि परिहार**—विवाह लग्न समय केन्द्र—त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—**मु० गणपति**

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त लगाए गए हैं।

कश्यपर्वि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो—दोषो न, भवेत्सर्वं सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) [illegible] भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा—भद्र दायिनी॥

(iii) "दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"
उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब **भद्रा भू—लोक में (सम्मुख)** रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू—लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा—मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **बृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से,** दिन की **भद्रा सर्पिणी**, रात्रि की भद्रा **बृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **बृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल—शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त में शुद्ध विवाह—लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने—अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
∴ गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। ज्योतिनिर्बन्धानुसार–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) **का समय गोधूलि काल है।**

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम् ॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त चिन्तामणि)

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम् ॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैर्ऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, वायव्य (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बुधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा **"एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।**
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत योगिनी पूर्वम ॥।" –(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.–इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप**

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार—

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **''आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः ॥ मु. चिंतामणि ॥''**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राद्या धनादया जन्मभोदये।
जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सग्गे बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्द्धमनुः)**। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु का दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे—

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है—

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिष्ण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है—

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है—

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है—

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

वर—वरण एवं सगाई मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबित सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अंगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर का शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित **'विवाह पद्धति'** का अवलोकन करें।

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों **वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों** में, रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त्त—

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

लता दोष

सूर्यः	चन्द्रः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः
१२	७	३	२२	६	२४	८	९
धन हानि	अशुभ	मृत्यु	अशुभ	बंधु-नाश	कार्य-नाश	कुल-क्षय	मरण

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लता एवं पूर्ण चन्द्र के दिन नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७वां हो तो चन्द्रमा की लता जाने।

(पात-दोष कुरु, जांगल, कलिंग बंग और मगध में अतिनिन्दित है।)

अश्वि	भर	कृति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुर्न	विशा	अनु.	ज्येष्ठा	उषा	श्रव	धनि	शत	पूभा
मघा	हस्त	स्वा	मूला	मघा	रोह	रोहि	उफा	उषा	मृग	उषा	स्वा.	मृग	रोहि	उफा
अनु	उषा	उफा	००	हस्त	मृग	उषा	उषा	००	मघा	अनु.	००	स्वा.	हस्त	हस्त
रेव	उभा	००	००	मृग	उफा	००	००	००	मूला	००	००	मूला	उषा	अनु
००	००	००	००	००	अनु.	००	००	००	रेव	००	००	रेव	उभा	००

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात दोष लगता है, हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, शूल—इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो भी पात दोष लगता है।

युति-दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ व पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चंद्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। क्रूर ग्रहों की युति विशेष करके वर्जित है। यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

वेध दोष

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	उषा	श्रव	रेव	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा

ऊपर के नक्षत्रों में से विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह क्रूर ग्रहों के वेध विशेषतया वर्जित माना गया है।

विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वा	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
अभि	ज्ये.	धनि	पूभा	उभा	अश्वि	कृर्ति	मृग	पुन	उफा	हस्त

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जार्मित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जार्मित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिंद्य है।

बाण दोष

रोग	अग्नि	राजपं	चौरपंचक	मृत्यु	
८, १७ २६	२।११ २०।२९	४ १३।२२	६।१५ २४	१।१० १९।२८	सूर्यांश
व्रते रवौ रात्रौ	गृहकार्यें भौमे दिवा	सेवाया शनौ दिवां	यातंरा भौमे रात्रौ	विवाह बुधे संध्याया	कार्येषु वारे समये

एकार्गल दोष

वि.	अति	शू	गं	व्य	व	वै	यो

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन विरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकार्गल दोष होता है। यह काश्मीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २२वें, २३वें, २४वें, २५वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्ति साम्य दोष

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	सूर्य	चन्द्र
सिंह	मकर	धन	वृश्चि.	मीन	कुम्भ	चन्द्र	सूर्य

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्ति-साम्य दोष हो जाने से विवाह में सर्वदा वर्जित है। *वैशा., आषा., भाद्र., कार्ति., पौष., फा. मासों में शुक्ल पक्षीय तिथियां तथा ज्ये., श्रा., अश्वि., मार्ग व माघ में कृ. पक्षीया तिथियां ही वर्जित है।

दग्धा तिथि दोष

वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	मार्ग.	कार्ति	पौष	
श्रावण	फाल्गुन	आश्विन	भाद्र	माघ	चैत्र	मास
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

इन २ मासों में से २ तिथियां दग्ध होती है सो विवाह में वर्जित कहीं हैं, मध्य देश में त्याज्य है। कुछ विद्वानों अनुसार*

लत्तादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैनादि) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर इत्यादि)। एकार्गले व काश्मीरे वेघं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षे कुरु वाल्हिकेषु (आगरा आदि) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम्॥ सौराष्ट्र (कठियावाड़) शाल्वेः लताभं त्यजेत् विद्धकिल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद गौड़े (बंगाल) जार्मित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे तिथयो मध्यदेशें विवर्जितः। युतिपरिहार-स्वर्क्षस्थः स्वोच्चगश्चंद्रो पित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो वली केन्द्रगतो विधुः। लत्तापांप उपग्रह परिहारः-वनसंख्यं चरणे खेट स्तत्संख्यं चरणं त्यजेत्। लत्तोपग्रहदानेषु त्याज्या नैवाऽघ्रय परे॥ परिहार-लत्तोपग्रहजामित्रयांतैकार्गलकर्त्तरी। एते दोषा विंनश्यंति लग्नेऽकें दुर्बलान्विते॥

भूमि खरीदने (क्रय) का मुहूर्त्त

वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ (प्रवि. ७ तक) मार्गशीर्ष, माघ और फाल्गुन मास भूमि क्रय के लिए उत्तम कहे गए हैं।

शुभ तिथियाँ—प्रतिपदा (कृष्ण-पक्षे), कृष्ण तथा शुक्ल पक्षे २, ५, ६, १०, ११, १५ तिथियां।

शुभ नक्षत्र—मृगशिर, पुनर्वसु, अश्लेषा, मघा, विशाखा, अनुराधा, तीनों पूर्वा, मूला, रेवती, शतभिषा एवं स्वाती नक्षत्र।

शुभवार—सोमवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार।

आवश्यक मुहूर्त विचार

नाम मुहूर्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में एवं चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (२१ दिसं. से २० जून तक) ५वें ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा—तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (२० जून तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल) तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, वीर, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, वीर, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव-रेव।
स्कूटर, कारादि सवारी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में।	अश्वि, उत्तरा-३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, पूर्वा-३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु. धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)ष १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भादर, माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	रोह, मृग, जुन, पुष्य, उत्तरी, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (१,५,७,९,१०,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्ट।
नए घर में प्रवेश	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, चंद्र, बुध, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त	१ (कृ), २,३,५,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आ, श्रा, भा., आश्वि, मार्ग, माघ, फागु.।	अश्वि, कृति, रोह, मृग, मघ पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मू, श्रव धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. शं. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा अनु, मूला, रेव।
मुहूर्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, माघ व फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूला, रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूला, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूला, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवणं, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्र, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त्त

मास—वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न—शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यत: निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद—(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है—

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। **यथा—**

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह अन्येऽपि—

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष भंग होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, बृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता।

यथोक्तम्—

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले बृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ —मु. पारिजात

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता।

"द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते" —मु. चिंतामणि

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता—

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ —मुहूर्त्त दीपक

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता—

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥ —मुहूर्त्त दीपक

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता—

"केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥" —मु. चिंतामणि

अपरंच—

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता—

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ —मु. चिंतामणि

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है।

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

—मुहूर्त्त दीपक

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक ("लग्ने व्यये पाताले—") के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त ग्रंथों जैसे—विवाह वृन्दावन, मुहूर्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा—

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा। —मु. संग्रह दर्पण
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥

(शेष पृष्ठ 156 पर देखें)

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे—सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु—इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में—विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :—

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** —ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग** ३६ होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —**मु० गणपति**

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार—४, ५, १२ राशियों का **ब्राह्मण,** १, ५, ९ का **क्षत्रिय,** २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार—यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार—सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। **समान वश्य होने पर २ गुण,** एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार—कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार—अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे—गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**—योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण—वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री—ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार—वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा—

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —वृहज्जयोतिः सार

अपवाद—वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा—

राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार—अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण,** तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण,** कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का **राक्षसगण।**

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम,** देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गुण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में भिन्नता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। —पीयूषधारा

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। —मुहूर्त्त मार्त्तण्ड

(७) भकूट विचार—इसे **राशिकूट** भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष,** यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा—१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य,** अथवा राशि स्वामी ग्रह **समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा—

न वर्गवर्णौ न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ —वृ. ज्योतिरसार

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है—

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर—ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिभ्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ —शार्गधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पति प्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। —मुहूर्तमार्त्तण्ड

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे—वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम **(समसप्तक)** होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया—

मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ —ज्योतिनिवन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है—आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्ये.	मूले	शत	पूभा
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पूफा	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उषा	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की **आदि (प्रथम)** नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। —बृहज्योतिषसार

नाड़ी गुण विभाग—भिन्न नाड़ी में आठ गुण तथा समान नाड़ी (नाड्यैक्य) होने की स्थिति में शून्य गुण-अर्थात् गुणाभाव होता है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार—

(i) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है—

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

(ii) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता—अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ —मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा—

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

*नोट—ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे** एवं **तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(iii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद—इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ —ज्यो० चिन्तामणि

उपयुक्त उपायों से परिहार—

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्री मृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है—

अन्यत्र भी लिखा है—श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त—

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

पृष्ठ 153 का शेष भाग

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। सभी लग्न कुण्डलियों में मंगलीक दोष का प्रभाव एक जैसा नहीं होता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कुछ लग्न कुण्डलियों में मंगल अथवा मंगलीक दोष का अशुभ एवं अनिष्ट प्रभाव वर-कन्या के वैवाहिक जीवन पर पड़ता है, परन्तु यदि किसी कुण्डली में मंगल अन्य ग्रहों के सहचर्य से योगकारक हो, उच्चस्थ या स्वराशिगत हो अथवा गुरु आदि शुभ ग्रह की दृष्टि से प्रभावित हो, तो मंगल अशुभ की अपेक्षा **शुभ प्रभाव कारक** होगा। जैसे—मकर, मेष, बृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशि के मंगल को शुभ माना जाता है तथा **कर्क** एवं **सिंह लग्नों** में मंगल **केन्द्र त्रिकोणपति** होने से मंगल अशुभ न होकर योगकारक माना जाएगा—

''सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहा शुभफलप्रदाः।
इसी भान्ति स्वोच्चस्थितः शुभफलं प्रकरोति पूर्णम्।
नीचर्क्षगस्तु विपलं रिपु मन्दिरेऽल्पम्॥ **(सारावली)**
भाव सर्वे शुभपतियुता वीक्षितः वा शुभेशै—
तत्तद्भावाः सकल फलदाः पापदृक्योगहीनाः॥''

अतएव वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय उनके सुखी एवं सम्पन्न दाम्पत्य जीवन के लिए केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धीं **अन्य तत्त्वों** का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जिनमें कुछ मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(१) चलित भाव कुण्डली—जो ग्रह भाव मध्य होते हैं, वह भाव सम्बन्धी पूर्ण फल प्रकट करते हैं, जो ग्रह भाव सन्धि में होते हैं, वह शून्य फल दिखाते हैं। तदनुसार वर-कन्या की कुण्डलियों का मिलान करते समय दोनों की कुण्डलियों के ग्रह स्पष्ट, भाव स्पष्ट एवं चलित भाव कुण्डली बनी होनी चाहिए, तभी मंगल अथवा मंगलीक दोष की वास्तविक स्थिति का पता चल पाएगा। यदि दोनों की कुण्डलियों में **मंगल** सन्धिगत होगा, तो मंगलीक दोष भंग माना जाएगा।

(२) सप्तम भाव में सप्तमेश या शुभ एवं योगकारक ग्रहों की स्थिति अथवा मंगल या सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि अथवा सप्तमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि होने से मंगलीक दोष क्षीण होगा।

(३) सप्तमेश ग्रह उच्चस्थ या स्व-मित्रादि राशिगत होकर केन्द्र त्रिकोणादि भावों में स्थित हो तो विवाह में मंगल का दोष निष्प्रभावी होगा।

(४) इसके विपरीत सप्तमेश त्रिक में हो, पापग्रह युक्त व पाप दृष्ट, नीच राशिगत अथवा अस्तंगत हो तो विवाह का **पूर्ण सुख नहीं होता**—

दुःस्थे कामपतौ तु पाप ग्रहगे पापेक्षिते-तद्युते। तज्जाया भवनस्य मध्यमफलं सर्वं शुभं चान्यथा॥

(५) इसके अतिरिक्त लग्नेश, कुटुम्बेश (द्वितीयेश), पंचमेश, अष्टमेश, सप्तमेश एवं चन्द्र, शुक्र, गुरु, मंगलादि ग्रहों के बलाबल का विचार करना भी नितान्त आवश्यक है।

(६) अष्टकूट नक्षत्र राशि मिलान पर यदि वर-कन्या में परस्पर राशिमैत्री उपलब्ध हो गुणाधिक्य (२७ या अधिक) गुण मिलते हों तो भी मंगलीक दोष अविचारणीय होगा।

इस प्रकार वर-कन्या की कुण्डली में मंगल के अतिरिक्त कुण्डलियों में अन्य सभी ग्रहों के शुभाशुभत्व का सम्यक विचार करते हुए विद्वान् ज्योतिषी को मेलापक सम्बन्धी अपना अन्तिम निर्णय देना चाहिए।

वैदिक समाज [पञ्जी]

(सम्प्रति वेदाचार्य रामजीलाल पालीवाल सांगवेद विद्यालय का संचालन)

४६ संगमविहार फेस-१, नजफगढ़, नई दिल्ली-४३ । दूर०- ९८६८५८९९७६, ९९१०७७१०७१

संख्या.................. दिनांक:..................

श्री ____

____ निवासी से

रू० ____________ नकद/ ____________ बैंक, शाखा ____________ चैक/ड्राफ्ट

संख्या.................. दिनांक ...., ____________ निमित्त सधन्यवाद प्राप्त किये।

रू०

ह० प्राप्तकर्त्ता

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

कन्या नक्षत्र ↓ / वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पूफा 1 से 4	उफा 1	उफा 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	१९॥ 2,4,5	१२ 2358	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 8,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ 123व
	पूफा 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५ 0	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ 1268
	उफा 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ 1236
कन्या	उफा 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 3,5,6	१२॥ 3568	२७ 3,5,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368	१४॥ 2346	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-२)

वर/नक्षत्र →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
कन्या	नक्षत्र ↓	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पूफा 1 से 4	उफा 1	उफा 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२॥ 3,4,6	१४ 3468	२८॥ 3,4	२४ 3,7	२०॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९॥ 3,6,9	२०॥ 3,5,6	११ 3568	२६॥ 3,5,व	२५॥ 3,5,व	११॥ 3568	१७॥ 456व	१७॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७॥ 3,4	२९॥ 3	१७॥ 3,6,8	१३ 3678	१५॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५॥ 3,5व	२५॥ 3,5व	२६ 2,3	२७॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२०॥ 3,4,8	१५॥ 3478	१०॥ 3678	१८॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१॥ 4,5,6	१८॥ 3,5,8	१७॥ 358,व	१९॥ 358व	१७॥ 2346	१७॥ 2346	१९ 2346	२७॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४॥ 1478	१९॥ 1,4,8	१४॥ 1368	२२॥ 1,3,6	१२॥ 1567	१३ 1567	१३॥ 1567	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	१५॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३॥ 136व	२१॥ 146व	१७॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५॥ 1378	२० 1367	२४॥ 1,3,6	२७॥ 1,3,4	२०॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२०॥ 1,5,7	२६॥ 9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८॥ 1367	२५ 1,3,7	२९॥ 1,3	२२॥ 1,3,6	२२॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५॥ 135678	१०॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४॥ 1345
धनु	मूला 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९॥ 1,5,7	१३ 1567	१३॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७॥ 4678	१७॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पूषा 1 से 4	२६ 9	१८॥ 8,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 14567	१८॥ 1457	११ 14578	१८॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३॥ 37,व	१३ 3478	१७॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७॥ 8,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३॥ 13568
	उषा 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७॥ 1,3,5	२३॥ 37,व	२३॥ 3,7,व	८॥ 678व	८॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२८॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उषा 2,3,4	२७ 3,4,5	२८॥ 4,5	१४॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६॥ 5678	१८॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४॥ 4,9व	१९॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२०॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९॥ 4,5,7	५॥ 5678	१२॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१०॥ 4568	२६ 3,4,5	३०॥ 3,4	२७ 4,6	१९॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८॥ 3469	१३ 4567	४॥ 45678	१९॥ 357व	२५॥ 3,5,व	११ 568व	१८॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२॥ 3	२५॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६॥ 3,5,व	२०॥ 356व	१२॥ 568व	११॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पूभा 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१॥ 3,4	३१॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७॥ 4,8,9	१८॥ 4,8,9	१३॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९॥ 5,6,व	२५॥ 4,5व	१६॥ 458व	१५॥ 4,7,8	१५॥ 3478	१७॥ 3467
मीन	पूभा 4	१४॥ 1248	२२ 1234	१६॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३॥ 1347	१४॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८॥ 1456
	उभा 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७॥ 9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९॥ 1456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-३)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२ ॥ 1346	२६ ॥ 1,3,4	२२ ॥ 1346	१८ ॥ 3467	२५ ॥ 3,7	१४ ॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३ ॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२० ॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
	भर 1 से 4	१३ ॥ 1368	२९ 1,3	२१ ॥ 1,3,6	१७ ॥ 3467	१७ ॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८ ॥ 8,9	२६ 4,9	२७ ॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९ ॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	२७ 2,3
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 1,3,4	१५ 1368	१९ ॥ 1348	१५ ॥ 3478	१९ ॥ 3,6,7	२५ ॥ 3,7	२५ 3,9	१८ ॥ 4,6,9	१२ ॥ 6,8,9	१३ ॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९ ॥ 1356	१७ ॥ 2346	१९ ॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४ ॥ 1378	२० ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,6	३० ॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१० ॥ 4689	२४ 3,4,9	२९ ॥ 1,3,4	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
	रोह 1 से 4	१९ ॥ 1,6,7	१५ ॥ 1378	९ ॥ 1678	१५ 1368	२९ ॥ 3,4	२४ 3,6	१४ ॥ 3567	१९ ॥ 3,5,7	११ ॥ 4578	१६ 4,8,9	१७ ॥ 4,8,9	२० ॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
	मृग 1-2	१२ 1678	२५ ॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१ ॥ 3,5,8	२४ ॥ 3,6	१५ 3567	१० ॥ 3578	१७ ॥ 3457	२२ 3,4,9	२५ ॥ 4,9	१३ 4689	१९ ॥ 1468	२७ 1,4,6	२९ ॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८ ॥ 3458	२५ 3,4,5	२० ॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१ ॥ 6,9	२४ 3,9	२५ ॥ 3,5,व	१७ ॥ 3,5,8	२६ ॥ 3,5,व
	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२० ॥ 4,6,9	१३ 4567	१७ ॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१८ 467व	१९ ॥ 4,6,7	१२ ॥ 4689	१७ ॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६ ॥ 3,5व	२७ 3,5,व
	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२ ॥ 3,7व	२३ ॥ 3,7,व	१७ ॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८ ॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७ ॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८ ॥ 14678	२१ 147व	२१ ॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८ ॥ 1567	१० ॥ 14578	१६ ॥ 4,8,9	२६ ॥ 9	२६ 3,9
	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६ ॥ 1,3,5	२१ ॥ 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 8,9	२१ 6,9	१७ ॥ 1367	११ ॥ 1478	२१ ॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४ ॥ 145678	१४ 13567	१८ ॥ 1457	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ 9
	श्ले. 1 से 4	२५ ॥ 1,3,5	१२ 1568	१७ ॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२० ॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७ ॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७ ॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४ ॥ 1,3,5	११ ॥ 13568	१६ ॥ 1358व	२२ ॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९ ॥ 6,9व	८ ॥ 689व	३ ॥ 15678	४ ॥ 15678	१८ ॥ 1,5,7	२४ ॥ 1,5,व	२५ ॥ 1,5,व	१८ ॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३ ॥ 6,7,8
	पूफा 1 से 4	१० ॥ 1568	२५ ॥ 135व	१८ ॥ 156व	२४ 3,6व	२३ ॥ 3,8व	२५ ॥ 3,6व	२० 6,9व	१७ ॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८ ॥ 1,5,7	४ ॥ 15678	११ 1568	१९ ॥ 156व	२४ ॥ 135व	२५ 3,7	१७ ॥ 3,7,8	२६ 3.7
	उफा 1	१७ 13456	२५ ॥ 1,3,5	१६ ॥ 13456	२२ ॥ 3,4,6	३१ ॥ 3,व	१७ ॥ 3,6,8	९ ॥ 3689	२५ 9,व	२५ ॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११ ॥ 1567	१७ ॥ 1356	११ 3568	१५ ॥ 358व	१६ 3478	२६ ॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उफा 2,3,4	१६ ॥ 1246	२५ ॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७ ॥ 3,5व	१३ ॥ 568व	१४ 3568	२९ ॥ 5	२९ ॥ 5	२४ ॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६ ॥ 1367	१० ॥ 3678	१४ ॥ 1378	१७ ॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६ ॥ 1,2,3	१८ ॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३ ॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८ ॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	११ 4,6,9	११ 1467	८ ॥ 34678	१३ ॥ 1378	१६ ॥ 3458	२६ ॥ 3,5व	२७ ॥ 3,5,व
	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६ ॥ 1,2,3	२८ ॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७ ॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५ ॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६ ॥ 1467	१९ ॥ 3456	१० 34568	१९ ॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी — (भाग-४)

वर/नक्षत्र →		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र ↓	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूला 1 से 4	पूषा 1 से 4	उषा 1 चरण	उषा 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पूभा 1,2,3	पूभा 4	उभा 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 3,7,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12568	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूला 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पूषा 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उषा 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उषा 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पूभा 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पूभा 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उभा 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट--गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, तीसरे चरण में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्रं** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽवज्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूला नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ—कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूला नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ट के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूला नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूला के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूला नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—
भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूला नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८ ।४५ है। ४ ।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८ ।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८ ।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, दूसरे में मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

गण्डमूल नक्षत्र शान्ति के लिए हमारे कार्यालय से नवीन प्रकाशित सम्पूर्ण **'गण्डमूल नक्षत्र-शान्ति प्रयोग'** पुस्तक मंगवा लेवें। मूल्य-35 रुपए।

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से "**व्रत और त्यौहार**" एवं **सप्तवार कथा** मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विध्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्**॥ अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—"**एहि सूर्य सहस्त्राशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर**" स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "**ॐ नमः शिवाय**" आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे—चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र "**ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः**" की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, हृदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए "**ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**" बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारण करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रणाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र "**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**" का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे—मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र "**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**" का यथाशक्ति पाठ करे। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समधि,

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी ... श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। ... शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेटे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

"**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**" की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथा शक्ति मात्रा में करें—मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। ... श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा कावल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र "**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥**" का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र "**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**" की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय या मुहूर्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	बृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	बृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	..
नीचांश	तु. १०	बृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे.२०°	बृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचश्ला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उषा
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर(मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पूषा
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूला
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उभा
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पूभा
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूला	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ।।ज२	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उफा

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-वृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें आगामी पृष्ठ।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है—

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, स्वास्थ्य धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं—

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☞(१) गर्भाधान संस्कार—यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां—१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार—सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र—रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न—लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल—रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त—यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार—रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल व बुध वारों** में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र—रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞(३) सीमन्त संस्कार—यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**—रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र—मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवण:

लग्न—१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त—यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां—२, ७, १२

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞(४) जातकर्म संस्कार—कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार **११वें** अथवा **१२वें** दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = च., बु., गु., शु.

नक्षत्र—अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞मेधा-जनन संस्कार—जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोघृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः **''ॐ भूस्त्वपि धधामि।'' ॐ भुस्त्वपि दधामि।''** तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞स्तनपान का मुहूर्त्त—जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि—१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र—रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९. १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞षष्ठी पूजन—जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन,**

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞प्रसूता स्नान मुहूर्त्त—सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार—रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र—आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न—२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞नामकरण संस्कार—यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है—

"नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥"

गृहारम्भ—प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞नामकरण—सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ—१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न—१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मास में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞झूला आरोहन मुहूर्त्त—बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां—१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र—अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞निष्क्रमण मुहूर्त्त—जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां—१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न—२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त—जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त—

शुभ तिथियां—१ (कृ) 2,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न—२,५,८,११ राशि लग्न।

☞जीविका परीक्षा—'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त—जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र—अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हों।

विशेष—अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके ...

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा [illegible] माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

कर्ण वेध का मुहूर्त्त—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्टान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की शलाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

कन्या की नासिका छेदन—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यत: लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रात: उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती हो। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों [illegible] तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में —वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ बर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

क्षौर (हज़ामत) कर्म मुहूर्त्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हज़ामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुन: ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ खोद कर उसे जल भर दें। प्रात:काल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी [illegible] हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फु[illegible] गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १०, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अत: इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्त्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार—प्रातः ७/३० से प्रातः ९ बजे तक
मंगलवार—अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार—दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार—दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार—प्रातः १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार—प्रातः ९/०० से प्रातः १०/३० बजे तक
रविवार—सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

स्त्री जातक विचार

- यदि कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तमेश ग्रह के साथ शनि स्थित हो, तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है।
- यदि सूर्य, मंगल, बुध लग्न में हो और गुरु द्वादश भाव में स्थित हों, तो भी उस कन्या का विवाह दीर्घकाल में ही होता है।
- जिस स्त्री के जन्म काल में सप्तम भाव में शुभ-अशुभ—दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाहों के योग बनते हैं।
- यदि किसी स्त्री के सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा अन्य कोई पाप ग्रह ७वें भाव में स्थित हो, तो ऐसी स्त्री को वैवाहिक—सुख कम मिलता है।
- यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युति हों, तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।
- आठवें भाव में बुध गया हो ऐसी स्त्री काक—बन्ध्या होती है अर्थात् एक बार सन्तान होकर पुनः सन्तान होने में बाधा होती है।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री—

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंटे
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)**—भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गणीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

अथ प्रसूति [illegible] विचार

अथ प्रसूति लक्षणादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

ग्रह व राशियों के तत्त्वों पर से शारीरिक स्थिति

जन्म समय जिस प्रकार की उदित लग्न राशि और ग्रह के तत्त्व होंगे, जातक की शरीर संरचना भी वैसी ही होगी। शरीर की स्थिति के सम्बन्ध में विचार करने के लिए ग्रह और राशियों के तत्त्व नीचे लिखे जाते हैं—

ग्रह	शुष्कादि	तत्त्व	कद
सूर्य	शुष्क ग्रह	अग्नि	मध्यम
चन्द्र	जल ग्रह	जल	दीर्घ
मंगल	शुष्क ग्रह	अग्नि	ह्रस्व
बुध	जलीय	पृथ्वी	मध्यम
गुरु	जलीय	आकाश या तेज़	मध्यम या ह्रस्व
शुक्र	जलीय	जल तत्त्व	ह्रस्व
शनि	शुष्क	वायु तत्त्व	दीर्घ
राहु	शुष्क	वायु	दीर्घ
केतु	शुष्क	वायु	मध्यम

राशि तत्त्व

राशि	तत्त्व	कद
मेष	अग्नि	ह्रस्व
वृष	पृथ्वी	ह्रस्व
मिथुन	वायु	मध्यम
कर्क	जल	मध्यम
सिंह	अग्नि	दीर्घ
कन्या	पृथ्वी	दीर्घ
तुला	वायु	दीर्घ
वृश्चिक	जल	दीर्घ
धन	अग्नि	मध्यम
मकर	पृथ्वी	मध्यम
कुम्भ	वायु	ह्रस्व
मीन	जल	ह्रस्व

(१) जन्म लग्न में जल राशि हो एवं उसमें जल तत्त्व ग्रह की स्थिति हो, तो जातक का शरीर मोटा एवं पुष्ट होगा।

(२) लग्न एवं लग्नाधिपति ग्रह जलराशिगत हो, तो भी शरीर स्थूल एवं पुष्ट होगा।

(३) यदि जन्म लग्न अग्नि राशि का हो और अग्नि तत्त्व के ग्रह उसमें स्थित हों, तो मनुष्य शक्तिशाली एवं बली होता है, पर शरीर देखने में दुबला लगेगा।

(४) पृथ्वी राशि का लग्न हो और उसका राशि स्वामी ग्रह जल राशि में हो तो शरीर साधारणतया स्थूल होता है।

(५) पृथ्वी राशि लग्न हो और लग्नपति ग्रह पृथ्वी राशि में हो, तो शरीर स्थूल और दृढ़ होता है।

(६) यदि लग्न राशि पृथ्वी तत्त्व की हो और उसमें पृथ्वी तत्त्व का ही ग्रह पड़ा हो, तो जातक नाटे (छोटे) कद वाला होता है।

(७) यदि लग्न वायु तत्त्व राशि वाला हो और उसमें वायु तत्त्व के ग्रह हों, तो जातक दुबला, परन्तु तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा।

(८) यदि लग्न अग्नि या वायु तत्त्व की राशि वाला हो और लग्नाधिपति जल राशिगत हो तो शरीर स्थूल होगा।

(९) यदि लग्न में अग्नि या वायु तत्त्व की राशि हो और लग्नेश ग्रह पृथ्वी राशिगत हो, तो हड्डियाँ साधारणतया मजबूत और शरीर पुष्ट होगा।

इसके साथ ही लग्न की राशि ह्रस्व, दीर्घ या सम (मध्यम), जिस प्रकार की हो, उसी के अनुसार जातक के शरीर की ऊँचाई समझनी चाहिए।

इसी भान्ति लग्न राशि और लग्नेश ग्रह के अनुसार जातक के रूप-रंग का निर्णय करना चाहिए।

राशियों द्वारा वर्ण ज्ञान

मेष लग्न में लाल मिश्रित, **वृष** में पीला मिश्रित श्वेत, **मिथुन** में विविध मिश्रित श्वेत, **कर्क** में नीला मिश्रित सफेद, **सिंह** में गन्दमी, **कन्या** में श्याम मिश्रित सफेद, **तुला** में तालिका युक्त सफेद, **वृश्चिक** में लालिमा युक्त सफेद, **धनु** में पीत वर्ण युक्त सफेद, **मकर** में चितकबरा सफेद, **कुम्भ** में आकाश सदृश नीला, **मीन** में पीत युक्त गौर वर्ण। इस भान्ति लग्न राशि और लग्नेश के स्वरूप के अनुसार जातक के रूप-रंग का निश्चय करना चाहिए। इसके अतिरिक्त लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों का भी प्रभाव रहता है।

ग्रहों के अनुसार वर्ण (रूप-रंग) विचार

सूर्य से रक्त-श्याम (गन्दमी) **चन्द्र** से गौरवर्ण, **मंगल** से लाल वर्ण, **बुध** से दूर्वादल के समान श्यामल, **गुरु** सुवर्ण (बादामी), **शुक्र** से (नीलिमा युक्त) सफेद, **शनि** से श्यामवर्ण, **राहु** से कृष्ण एवं **केतु** से **धूम्र वर्ण** जानना चाहिए। **बुध-शुक्र** एक साथ हों तो गौरवर्ण न होते हुए भी सुन्दर आकृति होती है। **लग्न** एवं **लग्नेश** पर पाप ग्रह की दृष्टि होने से जातक के सौन्दर्य में कमी आती है।

शरीर के अंगों पर व्रण, तिलादि का विचार—जिस अंग का विचार करना हो, उस अंग की राशि जिस प्रकार की ह्रस्व या दीर्घ हो तथा उस राशि में रहने वाला जैसा ग्रह होगा, उस अंग की वैसी ही स्थिति (ह्रस्व या दीर्घ) होगी।

द्वादश भावों में अंग ज्ञान—ज्योतिष शास्त्र में **लग्न भाव** में स्थित राशि से सिर, **दूसरे भाव** की राशि को मुख, **तीसरे भाव** से वक्षस्थल और फेफड़े, **चौथे भाव** की राशि से हृदय और छाती, **पंचम** स्थान से कुक्षि और पीठ, **छठे भाव** से कमर और आंते, **सप्तम** स्थान से नाभि और गुप्तांग के बीच का स्थान, **अष्टम** स्थान से गुप्तांग, **नवम्** भाव से ऊरू और जंघा, **दशम्** स्थान से टेहुना, **एकादश** स्थान की राशि से पिण्डलियाँ, **द्वादश** स्थान से पाँव का विचार करना चाहिए।

राशि के अनुसार अंगों का विचार—(१) **मेष राशि** से मुख, मस्तिष्क। (२) **वृष** से नेत्र, जिह्वा, कण्ठ, भुजाएँ। (३) **मिथुन** राशि से हाथ, कन्धे, हृदय। (४) **कर्क** से पेट, (५) **सिंह** राशि से कमर, पीठ, मेरुदण्ड। (६) **कन्या** राशि से नाभि, पेट। (७) **तुला** राशि से नाभि के नीचे, गुर्दे, मूत्राश्य। (8) **वृश्चिक** से मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय, गुदा आदि। (९) **धनु** से जंघाएँ, नितम्ब। (10) **मकर** राशि से दोनों घुटने। (11) **कुम्भ** से दोनों पिंडलियां। (12) **मीन** राशि से दोनों पाँवों का विचार किया जाता है।

काल पुरुष में राशि ज्ञान

काल पुरुष एक काल्पनिक विराट् समय को पुरुष माना गया है, जिसमें द्वादश राशियों की कल्पना की गई है।

कालपुरुष के शिर में मेष राशि मुख में वृष, वक्षस्थल में मिथुन, हृदय में कर्क, उदर में सिंह, कटि में कन्या इत्यादि काल पुरुष

के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्मे वह शिर जानना अन्य सब राशि क्रम से अंग होते हैं।

ग्रहों के अनुसार अंगों पर चिन्ह विचार

जिस भाव एवं राशि पर पाप ग्रह हों, उसमें व्रण (घाव) आदि और जिसमें शुभ ग्रह हों, उस स्थान पर चिन्ह कहना चाहिए। यदि ग्रह अपनी राशि या अपने नवांश में हो, तो, व्रण या चिन्ह जन्म (गर्भ) से ही समझना चाहिए। अन्यथा ग्रह की अपनी दशा के समय व्रण या चिन्ह प्रकट होते हैं।

यदि किसी जातक के जन्म लग्न में मंगल और सप्तम भाव में गुरु या शुक्र हो, तो उसके सिर में व्रण (दाग) होता है।

जन्म लग्न में **मंगल-शुक्र** और चन्द्रमा हों तो जातक को जन्म से दूसरे या छठे वर्ष सिर में चोट लगने से घाव होता है। जन्म लग्न में शुक्र और आठवें स्थान में राहु हो, तो मस्तक या बाएँ कान में चिन्ह होगा। यदि लग्न में गुरु, सप्तम में राहु और आठवें स्थान में पाप ग्रह हों, तो जातक के बाएँ हाथ में चिन्ह होता है अथवा लग्न में गुरु या शुक्र हो और अष्टम में पाप ग्रह हों, तो भी बाएँ हाथ पर चिन्ह होगा।

पाँचवें या नवें (८, ९) शनि हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो, तो मूत्रेन्द्रिय या गुदा के समीप तिल होता है। पांचवें या नवम् भाव में शुक्र और बुध हों, अष्टम में गुरु और लग्न या चतुर्थ भाव में शनि हो, तो पेट पर चिन्ह होता है। **चतुर्थ स्थान** में राहु या शुक्र दोनों में से एक ग्रह स्थित हो और लग्न में शनि या मंगल स्थित हो, तो पाँव के तल्वे में चिन्ह होता है। दूसरे भाव में शुक्र, **आठवें भाव** में सूर्य और तीसरे में मंगल हो तो जातक की कमर के आस-पास चिन्ह होता है। १२वें भाव में गुरु, नौवें भाव में चन्द्रमा और तीसरे या ११वें में बुध हो, तो गुदा स्थान में चिन्ह होता है।

जातक के शरीर में तिल, मस्सा, चिन्ह आदि का विचार लग्न राशि, लग्न स्थित द्रेष्काण राशि एवं शीर्षोदय राशि आदि के द्वारा भी किया जाता है।

पितृ-परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय पिता घर में था या नहीं ? जन्मकुण्डली में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो बालक के जन्म समय उसका पिता घर में नहीं था, यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान में चर राशि का होकर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थित राशि का हो तो पिता घर में नहीं था, परन्तु देश ही में है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा होगा।

माता पिता को अरिष्ट योग

पिता के लिये सूर्य तथा दशम् स्थान से और माता के लिये चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिये। यदि बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम् स्थान में पाप ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिये। यदि सूर्य से ४/ ६ /८ स्थान में पाप ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानें।

इसी प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २। १२ स्थान में व ४। ६। ८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जाने।

पंचाँग-परिवर्तन करना

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर

पंचाँग-परिवर्तन करना

'**पंचांगदिवाकर**' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 8 अप्रै., 2008 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/08 सू.उ. प्राप्त (घण्टा मिनट वाले पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/12) से 4 मिनट पूर्व (पहले) है। अतः घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे**, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

8 अप्रैल, 2008 ई. को जालन्धर का पंचांग—	**8 अप्रैल, 2008 ई. को दिल्ली का पंचांग**
घटी पल	**घटी पल**
तिथि — ४२/५० (समाप्ति काल)	**तिथि** — ४३/०० (समाप्ति काल)
नक्षत्र — २४/१५	**नक्षत्र** — २४/२५
योग — ४३/८	**योग** — ४३/१८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०६४ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में वैशाख कृष्ण तृतीया प्रविष्टे २३ चैत्र, तदनुसार 5 अप्रै., २००७ ई. को दोपहर २ बजकर २४ मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ३० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२१°/१४'/१५" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई उसके निकटवर्ती अक्षांश ३१/२० की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जा सकती है। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २१° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें १/४१ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/३० में जमा कर देने से कुल जोड़ २२/११ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २२/११ कर्क (३) राशि के सामने और २७ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २०/११ से केवल ४ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ४ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इसी प्रकार ४ पलों के पीछे २० कलाओं का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/३० घट्यादि) ३ गत राशि अर्थात् कर्क लग्न, २६ अंश, ४० कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ३/२६°/४०'/००')। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक '**ज्योतिष तत्त्व**' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५।०।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१।३०)** चरखण्ड १५१।१२०।५१

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे—लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
मेष	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
वृष	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
मिथुन	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	११
३	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
कर्क	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
सिंह	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
कन्या	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
तुला	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
वृश्चिक	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
धनु	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
मकर	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१०	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
मीन	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° **पलभा ४।७।५५**

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४
मकर	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षाश २३° पलभा ५ /५ /३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१ वृष	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३ कर्क	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५ कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७ वृश्चिक	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८ धनु	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९ मकर	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	५९
	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांश २७° पलभा ६ /६ /५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५२
१ वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३
२ मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३ कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३
४ सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५
५ कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७ वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८ धनु	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९ मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, अमृतसर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५६
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशंमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१२ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**— जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि,** और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त** हो जाती हैं।

—पं० पन्ना लाल ज्यो.

षड्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	वर्ग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा. षट्		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

षड्वर्गी फलादेश विचार

षड्वर्ग में १ होरा, २ द्रेष्काण, ३ सप्तमाश, ४ नवमांश, ५ द्वादशांश, ६ त्रिशांश स्पष्ट कुण्डलियों का विचार किया जाता है। यदि ६ वर्गों में वर्गेश अधिकांश शुभ ग्रह हों तो शुभफल यदि अधिकांश अशुभ ग्रह हों तो अनिष्ट फल देते हैं।

षड्वर्ग सारणी—होरादि ६ वर्गों के लग्न व उनमें ग्रह स्थापन हेतु पीछे जो षड्वर्ग सारिणी दी गई है। अपने लग्न स्पष्ट से प्राप्त राशि अंशानुसार नवांशादि लग्न का ज्ञान करें। राशि व होरादि वर्ग के सामने और अंशों के नीचे कोष्ठक में जो अंक होगा, वही उस वर्ग का लग्न होगा।

उदाहरण—मान लें लग्न स्पष्ट ५।४।२९।२५ है। यहां पर लग्न राशि कन्या और अंशादि ४।२९॥२५ है। सारिणी में ३ भाग ४।१७ पर समाप्त होता है। अत: हमारे अभीष्ट अंशादि (४।२९) ४ चतुर्थ खाने के नीचे पड़ेगे। अतएवं कन्या राशि के सामने (दाईं ओर) तथा चतुर्थ भाग के नीचे की तालिका पर होरा के सामने ४ अर्थात् **कर्क लग्न, द्रेष्काण** ६ (कन्या), सप्तमांश का १ (मेष), नवमांश का ११ (कुम्भ), द्वादशांश का ७ (तुला), एवं त्रिशांश का २ (वृष) लग्न निकलेगा। इन वर्गों के स्वामी क्रमशः चंद्र, बुध, मंगल, शनि, शुक्र व शुक्र ग्रहों में २ पापग्रह तथा शेष ४ शुभ ग्रह होने के कारण उक्त कन्या लग्न शुभग्रह फलयुक्त-श्रेष्ठ फल होगा। ग्रहस्थापन हेतु उदाहरणार्थ यदि सूर्य स्पष्ट ७।८।१०।४२ है, ७वें भाग एवं ८।३४।१७ अंशादि के नीचे तथा (७) एवं राशि वृश्चिक के सामने दाईं ओर कोष्ठक के होरादि वर्गों में क्रमशः ४।८ ।३ ।६ ।११ ।६ राशियां होंगी। सूर्य होरादि वर्गों में तदनुसार राशि में स्थापित करे। इसी भाँति अन्य चन्द्रादि ग्रहों की स्थापना करेंगे।

होरा फल

होरा लग्न में सिंह (५) अथवा कर्क लग्न ही रहता है। **होरा लग्न** विषम ५ राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक पुरुषार्थी, उच्चपदाभिलाषी, शूरवीर होगा, गुरु, मंगलादि मित्र ग्रह साथ में हों तो व्यक्ति विद्वान, धन धान्य युक्त उत्तम मित्र युक्त, उच्चपदासीन, नेता व सम्पत्तिवान् होगा। यदि सम ४ राशि सूर्य होरा में शनि, भौम क्षीण चंद्र, राहु आदि पाप ग्रह हों तो जातक नीच प्रकृति वाला, कुल मर्यादा विरुद्ध आचरण करने वाला एवं निर्धनी होता है। **होरा लग्न** में सम राशि हो और चन्द्रमा उसी में स्थित हो तथा साथ में शुक्रादि शुभ ग्रह हों तो जातक मृदु-भाषी, शान्त स्वभाव, व्यवसायी, समृद्ध, धनी, सुखी परिवार वाला, सुशील व राजदरवार से लाभ प्राप्त करने वाला होगा। यदि चन्द्र होरा में सूर्य, शनि आदि पाप ग्रह हों तो नीचाचरण वाला निर्धनी, नीच कार्यों में प्रवृत्त, सुख में कमी होगी।

द्रेष्काण फल विचार

अपने वर्ग के द्रेष्काण में स्थित सौम्य ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो जातक सत्यवक्ता, धनी, विद्वान् व अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। **द्रेष्काणपति** शुभ ग्रह की राशि में हो या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हो तो धन, मान व यश की वृद्धि और अनेक सुखों की पूर्ति करता है। **द्रेष्काणपति** चन्द्रमा से युक्त व भौम अथवा शुक्र द्वारा वीक्षित हो तो जातक को स्वार्जित धन की प्राप्ति होती है। **द्रेष्काणेश** शत्रु या नीच राशि में हो तो उस राशि अनुसार शरीर में घाव, चोटादि का चिन्ह होगा। जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा स्थित हो उस द्रेष्काण का स्वामी सौम्य ग्रहों द्वारा दृष्ट हों तो तदग्रहानुरूप शुभफलदायक होगा।

सप्तमांश फल विचार

सप्तमांश लग्नपति चन्द्रमा से युक्त या शुभ ग्रहों द्वारा युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक भाई बन्धुओं से युक्त प्रसिद्ध कांतिवान, धनी, वाक्पटु, एवं मित्रों द्वारा सहायक होता है। सप्तमाँश में पड़े अधिकांश ग्रह उच्च राशिस्थ हों तो जातक समृद्ध, नीच हों तो दरिद्र होता है। सप्तमांशपति पुरुष ग्रह स्वराशि हों या मित्रराशि में हों या शुभ ग्रहों से युक्त हों तो जातक को सुन्दर, सुशील, गुणी, पुत्र संतान का सुख प्राप्त होता है। **सप्तमांश लग्नपति** पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो अयोग्य व नीच कर्म करने वाली सन्तान होती है। सप्तमांश लग्नपति स्त्री ग्रह हो और शुक्र, बुध आदि स्त्री ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होंगी। **सप्तमांश** लग्नपति लग्न से ७।८ ।१२वें स्थान में पापग्रह से दृष्ट या गृष्ट हो तो जातक संतानहीन होता है। तृतीय स्थान स्थित रवि या गुरु अथवा भौम सप्तमांश में हो तो जातक सत्यवादी, मनोवांछित अर्थात् निर्वाह योग्य धन प्राप्त करने वाला होता है।

नवमांश कुण्डली विचार

वर्गोत्तम (लग्नानुरूप नवांश) को छोड़कर लग्न का प्रथम नवांश हो तो जातक चंचल, दुष्ट स्वभाव व चोर होता है। **द्वितीय नवांश** हो तो पुरुष संगीत और स्त्रियों का प्रेमी व भोगी होता है। तृतीय नवांश में उत्पन्न धर्मात्मा, रोगी व ज्ञानी होगा। चतुर्थ में उत्पन्न व्यक्ति गुरुभक्त व सम्पन्न होता है। पंचम में दीर्घायु प्रसिद्ध व बहुपुत्र वाला, **षष्ठ** में स्त्री के वशीभूत, नपुसंक अपव्ययी व प्रमादी होता है। सप्तम में उत्पन्न पराक्रमी व बुद्धिमान्, अष्टम नवांश में व्यक्ति कृतघ्न द्वेषी, बहुसंतान युक्त व क्लेश में रहता है। नवांश में उत्पन्न पुरुष प्रतापी, कार्य-कुशल व धनधान्य से युक्त होता है। जो ग्रह जन्मकुण्डली व नवमांश कुण्डली-दोनों में उच्चराशिस्थ या स्वराशिस्थ हो वह वर्गोत्तम कहलाता है जिसका फल अत्युत्तम कहा जाता है। **नवमांश लग्न** का स्वामी मंगल हो या मंगल द्वारा दृष्ट हो तो जातक की स्त्री मिलनसार, श्वेत वर्ण पर कुछ तेज़ स्वभाव की होगी। बुध हो तो सुन्दर आकृति, चतुर, शिल्पविद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, विद्यावान, धार्मिक स्वभाव व शुभाचरभ वाली। शुक्र हो तो चतुर, श्रृंगारप्रिय, श्वेतवर्णा सुन्दरी व कामुक होगी। **नवमांशपति शनि** हो तो क्रूर स्वभाव की, श्यामवर्णा पति से विरोध करने वाली स्त्री होती है। नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और वह स्वराशिस्थ अथवा केन्द्र त्रिकोण में स्थित तो जातक को स्त्री का अच्छा सुख मिलता है। **नवांशपति** भाग्योश के साथ २।५।११वें भाव में उच्च या स्वराशि का होकर पड़ा हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल से धन लाभ होता है। नवमांशपति पाप ग्रहों से युक्त या पाप ग्रह से दृष्टय होकर ६, ८वें या १२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। अधिकांश ग्रह यदि नीच नवांश में हों तो जातक पराधीन होकर जीवन निर्वाह करता है। **नवाँश कुण्डली** में जितने पुरुष ग्रह बलवान् होकर ५वें भाव में

स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या पापयुक्त या दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के

स्थित हों व ५वें भाव पर पूर्ण दृष्टि करें उतने ही पुत्र होंगे। यदि ५वें चन्द्रमा, शुक्र या बुध हो या इनसे दृष्ट हो तो कन्याएं होती हैं। केतु या शनि होने से गर्भ स्थिर नहीं रहता है। अर्थात् गर्भपात का भय होता है।

द्वादशांश फल विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुःख तथा आयु सीमा का विचार किया जाता हैं। **द्वादशांश लग्न** का स्वामी पुरुष ग्रह स्वराशि, मित्रराशि या उच्च राशि में स्थित होकर १ ।४ ।५ । ७ ।९ ।१०वें भावों में स्थित हो, तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि हो तो पिता का अल्प सुख होता है इसी भांति **द्वादशांश लग्न** का स्वामी स्त्री ग्रह शुभ ग्रहों युक्त, स्वराशि, मित्र या उच्चराशिस्थ होकर १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० वें भावों में हो तो माता का विशेष सुख होता है। यदि स्त्री ग्रह पापयुक्त या दृष्ट होकर ६ ।८ ।१२वें भाव में हों तो माता के बहुसुख में कमी रहती है। बारह राशि के द्वादशांश में क्रम से आयु प्रमाण इस प्रकार से वर्णित है। ८०, ८४, ८६, ८४, ६०, ५३, ७०, ५०, ६६, १०० अर्थात् क्रम से द्वादशांश में इतने वर्ष की आयु प्राप्ति की संभावना होती है।

त्रिशांश फल विचार

त्रिशांश में जो ग्रह मित्र के घर में या उच्च में हो वह सभी कार्यों में उत्साही धनी, धर्मिष्ठ व पूज्य होता है। मंगल अपने त्रिशांश में स्थित हो तो वह प्राणी तेजस्वी धैर्यवान स्त्री-धन से युक्त, बुध अपने त्रिशांश में हो तो बुद्धिमान, संगीत, प्रेमी, गुरु हो तो जातक उद्यमी, धनवान, **शुक्र हो** तो जातक बहुपुत्रों वाला, अनेक स्त्रियों से मित्रता करने वाला होता है। **शनि** हो तो परस्त्रीगमन करने वाला, दुःखी व मलिन हृदय होगा।

पंजाब के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
अमृतसर	31 37	74 55	30 20
अजनाला	31 51	74 48	30 48
अटारी	31 37	74 36	31 36
अमलोह	30 37	76 15	25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	26 36
अबोहर	30 08	74 12	33 12
अकालगढ़	29 50	75 54	26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	25 56
अलावलपुर	31 27	75 26	28 16
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	23 52
आदमपुर	31 21	75 26	28 16
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	27 16
कपूरथला	31 23	75 25	28 20
करतारपुर	31 27	75 32	27 52
कादियां	31 49	75 23	28 28
कीरतपुर साहिब	31 11	76 34	23 44
कुराली	30 50	76 35	23 40
कोटकपुरा	30 34	74 52	30 32
खन्ना	30 42	76 13	25 08
खरड़	30 45	76 37	23 32
खेमकरण	31 08	74 35	31 40
गड़दीवाला	31 44	75 45	27 00
गढ़शंकर	31 13	76 11	25 16
गुरदासपुर	32 03	75 27	28 12
गोइन्दवाल सा.	31 22	75 08	29 28
गोराया	31 06	75 47	26 52
गोबिन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	24 28
गुर हरसहाय	30 40	74 32	31 42
घनौर	30 21	76 37	23 32
चण्डीगढ़	30 44	76 53	22 28
चमकौर साहिब	30 55	76 24	24 24

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
छहरटा	31 16	74 53	30 28
जण्डियाला गुरु	31 51	75 37	27 32
जगरांव	30 48	75 30	28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	33 00
जालन्धर	31 19	75 34	27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	28 16
जीरा	30 57	74 59	30 04
जैतों	30 28	74 53	30 28
जैजों	31 21	76 09	25 24
जाखल	29 48	75 41	26 36
ढिलवां	31 25	75 19	28 44
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	31 12
डेरा बाबा नानक	32 02	75 04	29 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	28 36
तरनातरन	31 28	74 58	30 08
तलवाड़ा	32 05	75 38	27 38
तलवंडी साबो	29 59	74 59	30 04
दतारपुर	31 53	75 45	27 00
दसूहा	31 49	75 39	27 24
दीनानगर	32 08	75 30	28 00
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	25 56
दमदमा साहिब	30 50	76 04	25 44
दौलतपुर	31 58	75 38	27 28
धारीवाल	31 57	75 19	28 44
धूरी	30 22	75 52	26 32
धर्मकोट	30 53	75 14	29 04
नकोदर	31 07	75 29	28 04
नूरमहल	31 01	75 22	28 32
नवांशहर	31 07	76 08	25 28
नाभा	30 25	76 09	25 24
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	24 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
नंगल	31 23	76 23	24 28
पटियाला	30 20	76 25	24 20
पट्टी	31 17	74 51	30 36
पठानकोट	32 17	75 42	27 12
फरीदकोट	30 40	74 57	30 12
फाज़िल्का	30 24	74 04	33 44
फगवाड़ा	31 13	75 47	26 52
फतेहगढ़ साहिब	30 39	76 22	24 32
फिल्लौर	31 01	75 48	26 48
फतेहगढ़ (फिरोज़)	31 03	75 03	29 48
फिरोज़पुर	30 55	74 40	31 20
बरनाला	30 23	75 33	27 48
बस्सी	30 35	76 50	22 40
ब्यास	31 32	75 18	28 48
बसी पठानां	30 40	76 23	24 28
बटाला	31 49	75 14	29 04
बंगा	31 11	75 59	26 04
बलाचौर	31 03	76 19	24 44
बेला	30 56	76 24	24 24
बिलगा	31 02	75 26	28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	27 44
भटिण्डा	30 11	75 00	30 00
भुलत्थ	31 32	75 32	27 32
भवानीगढ़	30 16	76 01	25 56
भुच्चो (मंण्डी)	30 13	75 06	29 36
भीखी	30 05	75 34	27 44
मजीठा	31 46	74 57	30 12
मोरांवली	31 18	76 01	25 56
मुकेरियां	31 57	75 37	27 32
मलोट	30 13	74 29	32 04
मलकाणा	29 56	75 03	29 48
मलेरकोटला	30 31	75 59	26 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण अं. क.
मोगा	30 48	75 10	29 20
मोरिण्डा	30 48	76 30	24 00
माच्छीवाड़ा	30 56	76 14	25 04
मोहाली	30 43	76 42	23 12
मानसा (मण्डी)	29 59	75 23	28 28
मुबारिकपुर	30 37	76 51	22 36
मुक्तसर	30 29	74 31	31 56
राजपुरा	30 29	76 34	23 44
रामपुरा फूल	30 17	75 14	29 04
रायकोट	30 41	75 36	27 36
राहों	31 03	76 07	25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	23 52
लोहियां खास	31 08	75 28	28 04
लहरगागा	29 55	75 54	26 04
लुधियाना	30 55	75 54	26 24
शाहकोट	31 03	75 19	28 44
शाहपुर	32 17	75 46	26 56
संगरूर	30 12	75 53	26 28
सुजानपुर	32 19	75 26	28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 11	75 12	29 12
सरहिन्द	30 38	76 23	24 28
समराला	30 51	76 11	25 16
सनौर	30 18	76 30	24 00
समाना	30 09	76 12	25 12
सोहाणां	30 42	76 42	23 12
सुनाम	30 08	75 48	26 48
हमीरा	31 27	75 19	28 44
हरयाणा	31 36	75 48	26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	30 12
होशियारपुर	31 32	75 57	26 12
हाजीपुर	31 57	75 37	27 32

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

नोट–जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश में उतने मिनट पश्चिम है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अमृतसर (पंजा.)	31 37	74 55	-30 20
अलीगढ़ (उ. प्र.)	27 54	78 06	-17 36
अगरतला (त्रिपुरा)	23 49	91 18	+35 12
अटारी (पं.)	31 36	74 35	-31 40
अहमदाबाद (गुज.)	23 03	72 40	-39 20
अहमदनगर (महा.)	19 05	74 48	-30 48
अखनूर (काश.)	32 54	74 45	-31 00
अजमेर (राज.)	26 27	74 42	-31 12
अल्मोड़ा (उत्तरां)	29 37	79 40	-11 20
अलवर (राज.)	27 34	76 38	-23 28
अमरावती (महा.)	20 56	77 48	-18 48
अम्बाला (हर.)	30 21	76 52	-22 32
अम्बिकापुर (म. प्र.)	23 10	83 15	+03 00
अंकलेश्वर (गुज.)	21 38	73 03	-37 48
अमेठी (उ. प्र.)	26 08	81 50	-02 40
अमरोहा (उ. प्र.)	28 54	78 29	-16 04
आनन्दपुर सा. (पं.)	31 15	76 32	-23 52
आनन्द (गुज.)	22 32	73 00	-38 00
अनन्तनाग (काश.)	33 43	75 12	-29 12
अनूपगढ़ (राज.)	29 07	73 06	-37 36
आजमगढ़ (उ. प्र.)	26 03	83 13	+02 52
अयोध्या (उ. प्र.)	26 48	82 14	-01 04
अबोहर (पंजा.)	30 08	74 12	- 33 12
आसनसोल (बंगा.)	23 42	87 01	+18 04
आगरा (उ. प्र.)	27 10	78 00	-18 00
आबू (राज.)	24 40	72 45	-39 00
इलाहाबाद (उ. प्र.)	25 28	81 54	-02 24
इटावा (उ. प्र.)	26 47	79 02	-13 52
इम्फाल (मणि.)	24 46	93 58	+45 52
इन्दौर (म. प्र.)	22 44	75 50	-26 40
इटारसी (म. प्र.)	22 30	77 55	-18 20
उदयपुर (राज.)	24 35	73 41	-35 16
उज्जैन (म. प्र.)	23 09	75 43	-27 08
उन्नाव (उ. प्र.)	26 33	80 31	-07 56
उत्तरकाशी (उत्तरां.)	30 44	78 27	-16 12
ऊना (हि. प्र.)	31 32	76 18	-24 48
उधमपुर (ज. का.)	32 55	75 07	-29 32
ऋषिकेश (उत्तरां)	30 07	78 18	-15 12
ऐजावल (मिज़ो)	23 43	92 44	+40 56
एटा (उ. प्र.)	27 38	78 40	-15 20
औरंगाबाद (महा.)	19 53	75 23	-28 28
कटक (उड़ी.)	20 28	85 54	+13 36
क़ठुआ (ज. का.)	32 17	75 36	-27 36
कारगिल (ज. का.)	34 30	76 13	-25 08
किश्तवाड़ (ज. का.)	33 19	75 48	-26 48
कटरा (ज. का.)	33 01	74 58	-30 08
कटनी (म. प्र.)	23 47	80 27	-08 12
करनाल (हरि.)	29 42	77 02	-21 52
करतारपुर (पंजा.)	31 27	75 32	-27 52
कपूरथला (पंजा.)	31 23	75 25	-28 20
करौली (राज.)	26 30	77 01	-21 56
कांगड़ा (हि. प्र.)	32 05	76 18	-24 48
कानपुर (उ. प्र.)	26 28	80 22	-08 32
कालका (हरि.)	30 49	76 57	-22 12
कुल्लू (हि. प्र.)	31 58	77 10	-21 20
कुराली (पंजाब)	30 50	76 35	-23 40
कोटकपूरा (पंजाब)	30 34	74 52	-30 32
कादियां (पंजाब)	31 49	75 23	-28 28
करसोग (हि. प्र.)	31 23	77 14	-21 04
किन्नौर (हि. प्र.)	31 32	78 20	-16 40
कंडाघाट (हि. प्र.)	30 57	77 08	-21 28
कोहिमा (ना.)	25 41	94 07	+46 28
कुमारसेन (हि. प्र.)	31 18	77 37	-19 32
कुरुक्षेत्र (हरि.)	29 59	76 48	-22 48
कैथल (हरि.)	29 48	76 26	-24 16
कोल्हापुर (महा.)	16 42	74 16	-32 56
कोचीन (केर.)	9 58	76 14	-25 04
कोलकाता (बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोटखाई (हि.प्र.)	31 08	77 36	-19 36
कन्नौज (उ. प्र.)	27 03	79 58	-10 08
कोटा (राज.)	25 10	75 52	-26 32
खन्ना (पंजाब)	30 42	76 13	-25 08
खरड़ (पंजाब)	30 45	76 37	-23 32
खुर्जा (उ. प्र.)	28 15	77 50	-18 40
खण्डवा (म. प्र.)	21 50	78 07	-24 28
खेमकरण (पं.)	31 08	74 35	-31 40
गया (बिहार)	24 49	85 01	+10 04
गगरेट (हि. प्र.)	31 41	76 04	-25 44
ग्वालियर (म. प्र.)	26 14	78 10	-17 20
गंगटोक (सि.)	27 22	88 36	+24 24
गिलगित (ज. का.)	35 55	74 22	-32 32
गुरदासपुर (पंजाब)	32 03	75 27	-28 12
गुड़गांव (हरि.)	28 28	77 04	-21 44
गोरखपुर (उ. प्र.)	26 45	83 24	+03 36
गुवाहाटी (आसा.)	26 11	91 47	+37 08
गोधरा (गुज.)	22 45	73 40	-35 20
गाजीपुर (उ. प्र.)	25 34	83 35	+04 20
गोईंदवाल (पंजा.)	31 22	75 08	-29 28
गोराया (पंजा.)	31 06	75 47	-26 52
गोण्डा (उ. प्र.)	27 08	82 01	-01 56
गढ़शंकर (पंजा.)	31 13	76 11	-25 16
गाजियाबाद (उ. प्र.)	28 40	77 26	-20 16
गाजीपुर (उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गुलमर्ग (ज. का.)	34 05	74 25	-32 20
गुना (म.प्र.)	24 40	77 20	-20 40
गोवा (पंजिम)	15 27	73 50	-34 40
गोलकुण्डा (आ. प्र.)	17 24	78 23	-16 28
घुमारवीं (हि. प्र.)	31 28	76 42	-23 12
चम्बा (हि. प्र.)	32 34	76 08	-25 28
चित्तौड़गढ़ (राज.)	24 54	74 42	-31 12
चण्डीगढ़ (के. प्र.)	30 44	76 52	-22 32
चन्दौसी (उ. प्र.)	28 27	78 49	-14 44
चमौली (उत्तरां.)	30 24	79 21	-12 36
चूरु (राज.)	28 19	75 01	-29 56
छपरा (बिहा.)	25 47	84 45	+ 9 00
छतरपुर (म.प्र.)	24 54	79 38	-11 28
छिन्दवाड़ा (म. प्र.)	22 03	78 58	-14 08
जालन्धर (पंजा.)	31 19	75 34	-27 44
जण्डयाला	31 36	75 03	-29 48
जंडियाला गुरु	31 51	75 37	-27 32
जम्मू (ज. का.)	32 43	74 54	-30 24
जौनपुर (उ. प्र.)	25 46	82 44	+00 56
जैसलमेर (राज.)	26 55	70 54	-46 24
जयपुर (राज.)	26 55	75 52	-26 32
जीन्द (हरि.)	29 19	76 21	-24 36
जमशेदपुर (बिहार)	22 50	86 10	+14 40
जामनगर (गुज.)	22 27	70 07	-49 32
जोगिन्द्रनगर (हि. प्र.)	31 58	76 45	-23 00
जोधपुर (राज.)	26 18	73 04	-37 44
जबलपुर (म. प्र.)	23 10	79 59	-10 04
जलगांव (महा.)	21 03	75 39	-27 24
जैतों (पंजाब)	30 28	74 53	-30 28
ज़ीरा	30 57	74 59	-30 04
जगाधरी (हरि.)	30 10	77 16	-20 56
ज्वालामुखी (हि. प्र.)	31 53	76 20	-24 40
जाखल (हरि.)	29 49	75 49	-26 44
जूनागढ़ (गुज.)	21 31	70 36	-47 36
जोरहाट (आसा.)	26 46	94 16	+47 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
झांसी (उ. प्र.)	25 27	78 37	-15 32
झरिया (बिहार)	23 50	86 24	+15 36
झुंझुनू (राज.)	28 06	75 25	-28 20
टांडा उडमड़ (पंजा.)	31 40	75 39	-27 24
टोहाना (हरि.)	29 43	75 53	-26 28
टिहरी (उत्तरां.)	30 20	78 00	-16 00
टोंक (राज.)	26 11	75 50	-26 40
टोडारायसिंह (राज.)	26 00	75 29	-28 04
डबवाली मंडी (पं.)	29 59	74 42	-31 12
डोडा (ज. का.)	33 11	75 34	-27 44
डलहौज़ी (हि. प्र.)	32 31	76 00	-26 00
डिब्रूगढ़ (आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डिगबोई (आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डूँगरपुर (राज.)	23 50	73 43	-35 08
तरनतारन (पंजा.)	31 28	74 58	-30 08
तिरुपति (आंध्र)	13 40	79 24	-12 24
तेजपुर (आसा.)	26 38	92 49	+41 16
त्रिवेन्द्रम (के.)	08 29	76 57	-22 12
थानेसर (हरि.)	29 58	76 56	-22 16
दिल्ली	28 39	77 12	-21 12
देहरादून (उत्तरां.)	30 19	78 04	-17 44
दसूहा (पंजा.)	31 49	75 39	-27 24
दीनानगर (पंजा.)	32 08	75 30	-28 00
देहरा गोपीपुरा (हि.प्र.)	31 55	76 14	-25 04
देवास (म. प्र.)	22 58	76 06	-25 36
दतारपुर (पंजा.)	31 53	75 45	-27 00
दार्जिलिंग (बंगा.)	27 03	88 18	+23 12
दुर्गापुर (बंगा.)	23 30	87 20	+19 20
दुर्ग (छत्तीसगढ़)	21 10	81 17	-04 52
द्वारिका (गुज.)	22 14	69 01	-53 56
देवरिया (उ. प्र.)	26 32	83 45	+05 00
दतिया (म. प्र.)	25 39	78 27	-16 12
धनबाद (बिहा.)	23 47	86 30	+16 00
धर्मशाला (हि. प्र.)	32 16	76 23	-24 28
धौलपुर (राज.)	26 42	77 53	-18 28
धूरी (पंजा.)	30 22	75 52	-26 32
नागौर (राज.)	27 11	73 40	-35 20

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
नवलगढ़ (राज.)	27 51	75 18	-28 48
नकोदर (पंजा.)	31 07	75 29	-28 04
नूरमहल (पंजा.)	31 01	75 22	-28 32
नोहर (राज.)	29 11	74 46	-30 56
नसीराबाद (राज.)	26 18	74 46	-30 56
नरवाणा (हरि.)	29 36	76 08	-25 28
नासिक (महा.)	20 01	73 50	-34 40
नागपुर (महा.)	21 09	79 09	-13 24
नारनौल (हरि.)	28 02	76 14	-25 04
नंगल (पंजा.)	31 23	76 23	-24 28
नवांशहर (पंजा.)	31 07	76 08	-25 28
नाभा (पंजा.)	30 25	76 09	-25 24
नाहन (हि. प्र.)	30 33	77 21	-20 36
नालागढ़ (हि. प्र.)	30 57	76 22	-24 32
नैनीताल (उत्तरां.)	29 23	79 30	-12 00
नौशेहरा (ज. का.)	33 11	74 17	-32 52
पठानकोट (पंजा.)	32 17	75 42	-27 12
पटियाला (पंजा.)	30 20	76 25	-24 20
पट्टी (पंजा.)	31 17	74 51	-30 36
पंचकूला (हरि.)	30 43	76 53	-22 28
पानीपत (हरि.)	29 23	77 01	-21 56
पिहोवा (हरि.)	29 56	76 36	-23 36
पिथौरागढ़ (उत्तरां.)	29 35	80 13	-09 08
पिंजौर (हरि.)	30 49	76 55	-22 20
पुँछ (ज. का.)	33 51	74 08	-33 28
पहलगाँव (ज. का.)	34 01	75 24	-28 24
पटना (बिहार)	25 37	85 13	+10 52
पीलीभीत (उ. प्र.)	28 38	79 48	-10 48
पालमपुर (हि. प्र.)	32 06	76 33	-23 48
पपरौला (हि. प्र.)	32 04	76 34	-23 44
प्रतापगढ़ (उ. प्र.)	25 50	81 59	-02 04
पाली (राज.)	25 46	73 25	-36 20
पोरबन्दर (गुज.)	21 40	69 37	-51 32
पंचमढ़ी (म. प्र.)	22 30	78 22	-16 32
पुरी (उड़ी)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया (बंगा.)	23 20	86 24	+15 36
पूना (महा.)	18 34	73 53	-34 28
पोर्टब्लेयर (अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पन्ना (म. प्र.)	24 44	80 14	-09 04
पिलानी (राज.)	28 23	75 35	-27 40
पुष्कर (राज.)	26 30	74 34	-31 44

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
पौड़ीगढ़वाल (उत्तरां)	30 09	78 47	-14 52
फतेहगढ़ सा. (पंजा.)	30 39	76 22	-24 32
फैज़ाबाद (उ. प्र.)	26 47	82 06	-01 36
फर्रुखाबाद (उ. प्र.)	27 24	79 35	-11 40
फगवाड़ा (पंजा.)	31 13	75 47	-26 52
फतेहपुर (उ. प्र.)	25 56	80 52	- 6 32
फतेहपुर सीकरी (उ.प्र.)	27 07	77 40	-19 20
फतेहाबाद (उ. प्र.)	27 01	78 19	-16 44
फतेहाबाद (हरि..)	29 31	75 29	-28 04
फरीदकोट (पंजा.)	30 40	74 45	-31 00
फाज़िल्का (पंजा.)	30 24	74 04	-33 44
फिरोज़पुर (पंजा.)	30 55	74 40	-31 20
फिल्लौर (पंजा.)	31 01	75 48	-26 48
फरीदाबाद (हरि.)	28 25	77 20	-20 40
बटाला (पंजा.)	31 49	75 14	-29 04
बंगा (पंजा.)	31 11	75 59	-26 04
बलाचौर (पंजा.)	31 03	76 19	-24 44
बद्रीनाथ (उत्तरां.)	30 44	79 30	-12 00
बक्सर (उ. प्र.)	25 35	83 59	+05 56
बड़ौदा (गुज.)	22 18	73 13	-37 08
बड़गाम (ज. का.)	34 00	74 44	-31 04
बरनाला (पंजा.)	30 23	75 33	-27 48
बिजनौर (उ. प्र.)	29 23	78 09	-17 24
बुलन्दशहर (उ. प्र.)	28 24	77 52	-18 32
बनारस (उ. प्र.)	25 20	83 00	+02 00
बरेली (उ. प्र.)	28 22	79 27	-12 12
बलिया (उ. प्र.)	25 44	84 11	+06 44
बहराईच (उ. प्र.)	27 35	81 36	- 3 36
बदायूं (उ. प्र.)	28 02	79 07	-13 32
बाराबंकी (उ. प्र.)	26 56	81 13	-05 08
बारामूला (ज. का.)	34 10	74 20	-32 40
बनिहाल (ज. का.)	33 32	75 19	-28 44
बल्लभगढ़ (हरि.)	28 21	77 19	-20 44
बहादुरगढ़ (हरि.)	28 42	76 55	-22 20
बीकानेर (राज.)	28 01	73 22	-36 32
बांसवाड़ा (राज.)	23 30	74 24	-32 24
बागपत (उ. प्र.)	28 57	77 13	-21 08
बून्दी (राज.)	25 27	75 40	-27 20
बेजनाथ (हि. प्र.)	32 03	76 36	-23 36
बिलासपुर (हि. प्र.)	31 19	76 45	-23 00
बिलासपुर (छत्ती.)	22 05	82 12	-01 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
बस्तर (म. प्र.)	19 10	81 59	-02 04
बैंगलुरू (क.)	12 58	77 36	-19 36
बुढलाडा (पं.)	29 56	75 34	-27 44
बगुसराय (बि.)	25 25	86 08	+14 32
भटिंडा (पंजाब)	30 11	75 00	-30 00
भद्रवाह (का.)	33 01	75 50	-26 40
भिवानी (हरि.)	28 47	76 08	-25 48
भुवनेश्वर (उड़ी)	20 10	85 50	+13 20
भरतपुर (राज.)	27 05	77 30	-20 00
भावनगर (गुज.)	21 46	72 11	-41 16
भुज (गुज.)	23 15	69 40	-51 20
भिलई (छत्ती.)	21 13	81 26	-04 16
भिण्ड (म. प्र.)	26 36	78 46	-14 56
भीलवाड़ा (राज.)	25 21	74 40	-31 20
भोपाल (म. प्र.)	23 16	77 24	-20 24
मलेरकोटला (पंजा)	30 31	75 59	-26 04
मजीठा (पंजाब)	31 46	74 57	-30 12
मलोट (पंजाब)	30 13	74 29	-32 04
मानसा (पंजाब)	29 59	75 23	-28 28
मोगा (पंजाब)	30 48	75 10	-29 20
मोहाली (पंजा.)	30 43	76 42	-23 12
मार्तण्ड (का.)	33 48	75 18	-28 48
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	28 18	76 09	-25 24
मनसादेवी (हरि.)	30 44	76 52	-22 32
मकराना (राज.)	27 04	74 43	-31 08
मेरठ (उ. प्र.)	29 00	77 42	-19 12
मिर्ज़ापुर (उ. प्र.)	25 10	82 36	+00 24
मुरादाबाद (उ. प्र.)	28 51	78 49	+14 44
मुगलसराय (उ. प्र.)	25 17	83 11	+02 44
मंसूरी (उत्तरां.)	30 27	78 06	-17 36
मथुरा (उ. प्र.)	27 30	77 41	-19 16
मुज़फ्फर नगर (उ.प्र.)	29 28	77 41	-19 16
मुक्तसर (पंजाब)	30 29	74 31	-31 56
मन्दसौर (म. प्र.)	24 03	75 08	-29 28
मैसूर (कर्ना.)	12 18	76 42	-23 12
मण्डी (हि. प्र.)	31 43	76 58	-22 08
मनीकरण (हि. प्र.)	32 01	77 20	-20 40
मनीमाजरा (ह.)	30 42	76 52	-22 32
मनाली (हि. प्र.)	32 17	77 10	-21 20
मद्रास (चेन्नई) (ता.ना.)	13 04	80 17	-08 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुम्बई (महा.)	19 00	72 54	-38 24
मोरिण्डा (पं.)	30 48	76 30	-24 00
यमुनानगर (हरि.)	30 08	77 16	-20 56
रामपुर बुशै. (हि. प्र.)	31 28	77 39	-19 24
रोहड़ू (हि. प्र.)	31 12	77 44	-19 04
रोपड़ (पंजाब)	30 57	76 32	-23 52
राजपुरा (पंजाब)	30 29	76 34	-23 44
रायकोट (पंजाब)	30 40	75 36	-27 36
रोहतक (हरि.)	28 54	76 38	-23 28
रिवाड़ी (हरि.)	28 12	76 40	-23 20
रामबन (ज. का.)	33 14	75 15	-29 00
रियासी (ज. का.)	33 04	74 53	-30 28
रामनगर (ज. का.)	32 50	75 22	-28 32
रतलाम (म. प्र.)	23 21	75 07	-29 32
राजौरी (ज. का.)	33 23	74 18	-32 48
रायपुर (छत्ती.)	21 15	81 41	-03 16
रायबरेली (उ. प्र.)	26 14	81 16	-04 56
रामपुर (उ. प्र.)	28 48	79 2	-13 52
राँची (झार.)	23 23	85 23	+11 32
रायसिंहनगर (राज.)	29 32	73 27	-36 12
रानीखेत (उत्तरा.)	29 39	79 25	-12 20
राबर्टसगंज (उ. प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रिवालसर (हि. प्र.)	31 38	76 50	-22 40

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
राजकोट (गुज.)	22 18	70 48	-46 48
रामेश्वरम् (ता.)	09 17	79 22	-12 32
रूड़की (उत्तरां.)	29 52	77 53	-18 28
रुद्रप्रयाग (उत्तरां.)	30 16	78 59	-14 04
लुधियाना (पंजा.)	30 55	75 54	-26 24
लेह (ज. का.)	34 10	77 40	-19 20
लक्सर (उत्तरां.)	29 48	78 02	-17 52
ललितपुर (उ. प्र.)	24 41	78 25	-16 20
लैंसडाऊन (उत्तरां.)	29 50	78 41	-15 16
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	-10 00
लखनऊ (यू.पी.)	26 52	80 56	-06 16
लखीमपुर (उ. प्र.)	27 57	80 49	-06 44
लाडवा (हरि.)	29 59	77 05	-21 40
वाराणसी	25 20	83 00	+02 00
विशाखापट्टनम	17 42	83 20	+03 20
विदिशा (म. प्र.)	23 32	77 50	-18 40
शिमला (हि. प्र.)	31 06	77 13	-21 08
शाहदरा (दिल्ली)	28 40	77 20	-20 40
शाहाबाद (हरि.)	30 10	76 55	-22 20
शाहजहांपुर (उ. प्र.)	27 54	79 57	-10 12
शोलापुर (महा.)	17 42	75 56	-26 16
शिलांग (मेघा)	25 34	91 56	+37 44
श्रीनगर (का.)	34 06	74 51	-30 36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
श्रीगंगानगर (राज.)	29 49	73 50	-34 40
श्रीमाधोपुर (राज.)	27 25	75 32	-27 52
संगरूर (पं.)	30 12	75 53	-26 28
सरहिन्द (पं.)	30 38	76 23	-24 28
सुल्तानपुर लोधी (पं.)	31 11	75 12	-29 12
समाना (पं.)	30 09	76 12	-25 12
समराला (पं.)	30 51	76 11	-25 16
सुनाम (पंजाब)	30 08	75 48	-26 48
समस्तीपुर (बि.)	25 55	85 50	+13 20
सिलीगुड़ी (बं.)	26 42	88 26	+23 44
साम्बा (ज. का.)	32 33	75 07	-29 32
सुन्दरनगर (हि. प्र.)	31 33	76 54	-22 24
सोलन (हि. प्र.)	30 55	77 09	-21 24
सुजानपुर टि. (हि.प्र.)	31 50	76 31	-23 56
सरकाघाट (हि. प्र.)	31 43	76 22	-24 32
सिरसा (हरि.)	29 32	75 06	-29 36
सोनीपत (हरि.)	28 58	76 59	-22 04
सूरतगढ़ (राज.)	29 19	73 57	-34 12
सूरत (गुजरात)	21 10	72 50	-38 40
सीकर (राज.)	27 36	75 09	-29 24
सवाईमाधोपुर (राज.)	25 59	76 30	-24 00
साम्भर (राज.)	26 55	75 10	-29 20

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सिरोही (राज.)	24 54	72 55	-38 20
सागर (म. प्र.)	23 50	78 48	-14 48
सिहोर (म. प्र.)	23 12	77 00	-22 00
सहारनपुर (उ. प्र.)	29 58	77 30	-20 00
सीतापुर (उ. प्र.)	27 36	80 42	-07 12
सीतामढ़ी (बि.)	26 35	85 32	+12 -8
सीवां (बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सोमनाथ (गुज.)	21 04	70 26	-48 16
होशियारपुर (पंजा.)	31 32	75 57	-26 12
हमीरपुर (हि. प्र.)	31 42	76 30	-24 00
हांसी (हरि.)	29 06	76 00	-26 00
हिसार (हरि.)	29 10	75 46	-26 56
हरिद्वार (उत्तरां.)	29 58	78 12	-17 12
हल्द्वानी (उत्तरां.)	29 13	79 31	-11 56
हाथरस (उ. प्र.)	27 36	78 06	-17 36
हनुमानगढ़ (राज.)	29 35	74 21	-32 36
हापुड़ (उ. प्र.)	28 43	77 50	-18 40
हरदोई (उ. प्र.)	27 23	80 10	-09 20
हसनपुर (उ. प्र.)	28 43	78 17	-16 52
हुबली (कर्ना.)	15 20	75 14	-29 04
होशंगाबाद (म. प्र.)	22 46	77 45	-19 00
हावड़ा (बंगाल)	22 25	88 23	+23 32

गण्डमूलादि शान्ति आवश्यक क्यों ?

गण्डान्त नक्षत्रों की शान्ति करवाने का प्रचलन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। फलित दृष्टि से भी आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूलादि गण्डमूलक षड् नक्षत्रों के अरिष्ट प्रभाव का उल्लेख फलित ग्रन्थों में सर्वत्र मिलता है। कुछ गण्डान्त नक्षत्र-चरणों के विशेष अंशों में शिशु के जन्म को अपने शरीर अथवा अपने परिवार के सदस्यों (माता, पिता, भाई आदि) के लिए अशुभ माना गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से तो महान् सन्त तुलसीदासजी का जन्म भी मूल नक्षत्र में होने से, उन्हें भी उसके अरिष्ट प्रभाव स्वरूप माता-पिता के सुख से वंचित रहना पड़ा। केवल गण्डान्त नक्षत्र (आश्ले., मघा, ज्ये., मूल, रेवती एवं अश्विनी) ही अरिष्ट प्रभावोत्पादक नहीं होता, बल्कि कुछ अन्य नक्षत्रों को भी किसी विशेष आयु में अशुभ फल प्रकट करता है।

यदि किसी कारणवश जन्म काल से लगभग 27वें दिन उसी नक्षत्र में गण्डान्त शान्ति न करवाई जा सकी हो, तो जातक के जन्मदिन के आसपास, अथवा 27वें मास या 27वें वर्ष में विवाह से पूर्व उसी गण्डमूल नक्षत्र में शान्ति करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश गण्डान्त शान्ति करवाने वाले सुयोग्य पण्डित न उपलब्ध हो सकें, तो फिर उसी नक्षत्र में जातक द्वारा **महामृत्युंजयं का पाठ या अमोघ शिव कवच का पाठ,** अथवा **श्री दुर्गा सप्तशती** का **दुर्गा कवच सहित** पाठ करके जातक द्वारा **तुलादान** करवाकर, उस अनाज को अन्धविद्यालय आदि किसी समाज संस्था में वस्त्र-फल आदि सहित लंगर करवा देना चाहिए। अभुत् मूल गण्डान्त की स्थिति में तो यदाशक्ति गौओं एवं कुष्टों की सेवा करने का भी विधान है। **ग्रह-नक्षत्रों का प्रतीकात्मक रूप से ध्यान, अर्चन, होमादि करना वास्तव में उस विराट, परमपुरुष परमात्मा की ही पूजा है। पं. पन्नालाल ज्यो. की छपी 'सम्पूर्ण गण्डमूल शान्ति' मंगवाएं।**

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर (स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है।)

हिमाचल प्रदेश के नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर (स्टैण्डर्ड अन्तर सर्वत्र ऋण है।)

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अम्ब	31 43	76 06	25 36
अर्की	31 09	76 59	22 04
आनी	31 28	77 20	20 40
आलमपुर	31 54	76 30	24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	27 16
ऊना	31 32	76 18	24 48
करसोग	31 23	77 14	21 04
कसौली	30 54	77 02	21 52
कथला	31 59	76 47	22 52
कल्पा	31 34	78 16	16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	21 28
कांगड़ा	32 05	76 18	24 48
काला अम्ब	30 29	77 13	21 08
कुफरी	31 07	77 12	21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	21 48
कोटखाई	31 08	77 36	19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	20 04
कोटला	32 17	76 02	25 52
कुल्लू	31 58	77 10	21 20
कुमारसेन	31 18	77 37	19 32
कुनिहार	30 58	77 10	21 20
किन्नौर	31 32	78 20	16 40
केलांग	32 37	77 05	21 40
खजियार	32 31	76 03	25 40
गर्ली (परागपुर)	31 48	76 18	24 48
गगरेट	31 41	76 04	25 44
गोहर	31 32	77 02	21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	23 12
चम्बा	32 34	76 08	25 28
चच्योट	31 36	77 04	21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	24 32
चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	25 44
चायल	31 03	77 14	21 04
चौपाल	30 58	77 36	19 36
जवाली	32 06	76 01	25 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जस्सूर	32 17	75 55	26 20
जतोग	31 08	77 08	21 28
जुब्बल	31 07	77 38	19 28
जोगिन्द्र नगर	31 58	76 45	23 00
ज्वालामुखी	31 53	76 20	24 40
टीसा	32 48	76 12	25 12
ठयोग	31 08	77 33	19 48
डमटाल	32 13	75 41	27 16
डगशई	30 53	77 06	21 36
डल्हौज़ी	32 31	76 00	26 00
डैहर	31 29	76 52	22 22
ढलियारा	31 52	76 11	25 16
तारादेवी	31 04	77 10	21 20
तत्तापानी	31 14	77 10	21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	21 24
ददाहू	30 35	77 28	20 08
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	26 08
धनेटा	31 38	76 29	24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	24 28
धर्मपुर	30 54	77 04	21 44
धारा	31 49	77 15	21 00
धौलाकुआं	30 30	77 29	20 04
नगर	32 08	77 08	21 28
नगरोटा बगवां	32 06	76 22	24 32
नादौन	31 47	76 22	24 32
नाहन	30 33	77 21	20 36
नालागढ़	30 57	76 22	24 32
नूरपुर	32 18	75 56	26 16
नगरोटा	32 07	76 23	24 28
निरमण्ड	31 28	77 34	19 44
नारकण्डा	31 15	77 28	20 08
नैना देवी	31 19	76 31	23 56
पच्छाद	31 47	77 08	21 28

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पण्डोह	31 41	77 07	21 32
पपरोला	32 04	76 34	23 44
परवाणू	30 52	77 05	21 40
पाओंटा साहिब	30 28	77 38	19 28
पालमपुर	32 06	76 33	23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	24 08
बसौली	31 34	76 23	24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	21 00
बंजार	31 40	77 20	20 40
बनीखेत	32 32	75 58	26 08
बकलोह	32 27	75 59	26 04
बिलासपुर	31 19	76 45	23 00
बैजनाथ	32 03	76 36	23 36
भरवाईं	31 47	76 07	25 36
भरमौर	32 27	76 32	23 52
भुन्तर	31 54	77 09	21 24
भांखड़ा	31 20	76 30	24 00
मण्डी	31 43	76 58	22 08
मनाली	32 17	77 10	21 20
मनीकरण	32 01	77 20	20 40
मुबारकपुर	31 44	75 59	26 04
मशोबरा	31 07	77 14	21 04
मंगवाल	32 03	76 05	25 40
महासू	31 05	77 13	21 08
मैहतपुर	31 22	76 17	24 52
रिवालसर	31 38	76 50	22 40
रामपुर बुशैहर	31 28	77 39	19 24
राजगढ़	30 52	77 22	20 32
रायसन	32 05	77 07	21 32
रोहड़ू	31 12	77 44	19 04
लाहौल स्पीति	32 31	77 01	21 56
शाहपुर	32 14	76 12	25 12
शिमला	31 06	77 10	21 20
शेरपुर	32 34	75 59	26 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सपाटू	30 59	76 59	22 04
सरकाघाट	31 43	76 22	24 32
सन्धोल	31 59	76 45	22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	24 40
सैंज	31 49	77 19	20 44
सोलन	30 55	77 09	21 24
सुन्दरनगर	31 33	76 54	22 24
सुजानपुर टिहरा	31 50	76 31	23 56
हमीरपुर	31 42	76 30	24 00
हड़सर	32 21	76 33	23 48
हाटकोटी	31 09	77 44	19 04
हरिपुर	32 39	76 11	25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	20 08

राजस्थान के मुख्य नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
अजमेर	26 27	74 42	31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	37 36
अलवर	27 34	76 38	23 28
असोप	26 48	73 44	35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	25 30
अमेट	25 20	73 59	34 04
आबू	24 40	72 45	39 00
आमेर	26 59	75 52	26 32
उदयपुर	24 35	73 41	35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	34 56
करौली	26 30	77 01	21 56
कांकरोली	25 02	73 54	34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	30 32
केकड़ी	25 55	75 10	29 20
कोटा	25 10	75 52	26 32
खण्डेला	27 37	75 32	27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	35 44
गंगानगर	29 49	73 50	34 40
गंगापुर (टोंक)	26 29	76 46	22 56
गंगापुर (भीलवाड़ा)	25 13	74 16	32 56
घोटारू	27 18	70 04	49 44
चात्सू	26 36	75 59	26 04
चित्तौड़गढ़	24 54	74 42	31 12
चूरू	28 19	75 01	29 56
चौमू	27 08	75 47	26 52
चोटां	25 28	71 06	45 36
छाबरा	24 40	76 54	22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	31 36
जयपुर	26 55	75 52	26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	40 00
जालौर	25 22	72 38	39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	46 24
जोधपुर	26 18	73 04	37 44
जोधासर	28 07	73 50	34 40
झालावाड़	24 36	76 09	25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	28 04
टोंक	26 11	75 50	26 40
डूंगरपुर	23 50	73 43	35 08
डीडवाना	27 17	74 25	32 20
तिजारा	27 55	76 50	22 40
थानागाजी	27 25	76 19	24 44
देओरा	26 30	70 42	47 12
देचू	26 47	72 20	40 40

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
देवली	25 46	75 25	28 20
देवलिया	24 38	74 42	31 12
देवीकोट	26 38	71 07	45 32
दौसा	26 51	76 21	24 36
धौलपुर	26 42	77 53	18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	30 56
नागौर	27 11	73 40	35 20
नाचना	27 29	71 45	43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	26 48
नोखा	27 35	73 29	36 04
नौहर	29 11	74 46	30 56
पचपदरा	25 55	72 21	40 36
पाली	25 46	73 25	36 20
परबतसर	26 53	74 47	30 52
पिलानी	28 23	75 35	27 40
पल्लू	28 56	74 13	33 08
पुष्कर	26 30	74 34	31 44
पोखरन	26 56	71 55	42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	30 00
फलौदी	27 09	72 22	40 32
फुलेरा	26 52	75 16	28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	32 08
बयाना	26 55	77 17	20 52
ब्यावर	26 06	74 21	32 36
बाड़मेर	25 46	71 25	44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	23 44
बाप	27 24	72 22	40 32
बाराँ	25 07	76 30	24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	32 24
बालोतरा	25 50	72 14	41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	35 12
बीकानेर	28 01	73 22	36 32
बून्दी	25 27	75 40	27 20
भरतपुर	27 05	77 30	20 00
भादरा	29 15	75 20	28 40
भीनमाल	25 01	72 19	40 44
भीलवाड़ा	25 21	74 40	31 20
मकराना	27 04	74 43	31 08
महाजन	28 49	73 56	34 16

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
मांगरोल	25 21	76 30	24 00
मारवाड़ जंक्शन	25 44	73 45	35 00
मावली	24 48	73 58	34 08
मेड़ता	26 40	74 06	33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	34 20
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	49 00
मोहनगढ़	27 17	71 18	44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	41 08
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	48 00
रायसिंहनगर	29 32	73 27	36 12
रीगस	27 21	75 34	27 44
रूपनगर	26 47	74 54	30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	29 44
लाठी	27 03	71 30	44 00
लूनी	26 00	72 52	38 32
शाहगढ़	27 08	69 58	50 08
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	40 36
शेरगढ़ (झालाबाड़)	24 41	76 32	23 52
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	45 12
समदड़ी	25 49	72 35	39 40
सरदार शहर	28 27	74 30	32 00
सरूपसर	29 22	73 37	35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	24 00
सांगानेर	26 49	75 52	26 32
सांचोर	24 41	71 50	42 40
साम्भर	26 55	75 10	29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	28 24
सिरोही	24 54	72 55	38 20
सिवाना	25 37	72 27	40 12
सिरोही	24 53	72 54	38 24
सीकर	27 36	75 09	29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	32 36

हरियाणा के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
अम्बाला	30 21	76 52	22 32
अलीपुर	29 10	75 52	26 32
अगरोहा	29 20	75 38	27 28
करनाल	29 42	77 02	21 52
कलानौर	28 52	76 23	24 28
कालका	30 49	76 57	22 12
कुरुक्षेत्र	29 59	76 48	22 48
केसरी	30 15	76 53	26 28
कैथल	29 48	76 26	24 16
खतौली	30 37	76 58	22 08
गुड़गांव	28 29	77 04	21 44
गोहाना	29 09	76 41	23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	22 08
चरखी दादरी	28 36	76 16	24 56
जगाधरी	30 10	77 16	20 56
जाखल	29 49	75 49	26 44
जीन्द	29 19	76 21	24 36
झज्जर	28 38	76 39	23 24
टोहाना	29 43	75 53	26 28
थानेसर	29 58	76 56	22 16
दादरी	28 33	77 32	19 52

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
नरवाणा	29 36	76 08	25 28
नारनौल	28 02	76 14	25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	21 24
नाहर	28 23	76 23	24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	22 24
पंचकूला	30 45	76 53	22 28
पटौदी	28 19	76 48	22 48
पलवल	28 10	77 19	20 44
पानीपत	29 23	77 01	21 56
पिंजौर	30 49	76 55	22 20
पिपली	29 59	76 52	22 32
पिहोवा	29 56	76 36	23 36
फतेहाबाद	29 31	75 30	28 00
फरीदाबाद	28 25	77 22	20 32
बल्लभगढ़	28 21	77 19	20 44
बहादुरगढ़	28 42	76 55	22 20
बरवाला	29 22	75 54	26 44
भादसों	29 56	76 56	22 16
भिवानी	28 47	76 08	25 48
मनसादेवी	30 44	76 52	22 32
मनीमाजरा	30 42	76 52	22 32

नगर	अक्षांश (उत्तर)	रेखांश (पूर्व)	स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण
	अं. क.	अं. क.	मिं. सैं.
महेन्द्रगढ़	28 18	76 09	25 24
माहम	28 58	76 19	24 44
मोहाना	29 04	76 50	22 40
यमुनानगर	30 08	77 16	20 56
रादौर	30 02	77 06	21 36
रैना	29 28	74 54	30 24
रिवाड़ी	28 12	76 40	23 20
रोडी	29 44	75 15	29 00
रोहतक	28 54	76 38	23 28
रिवासा	28 48	75 57	26 12
लाडवा	29 59	77 05	21 40
लोहारू	28 16	75 45	27 00
शाहाबाद	30 10	76 55	22 20
सिरसा	29 32	75 06	29 36
सिवानी	28 55	75 37	27 32
सोनीपत	28 58	76 59	22 04
हसनपुर	27 59	77 29	20 04
हांसी	29 06	76 00	26 04
हिसार	29 10	75 46	26 56

जम्मू-कश्मीर के नगरों के अक्षांश-रेखांश

नगर	अक्षांश	रेखांश	अन्तर
अनन्तनाग	33 43	75 12	29 12
अखनूर	32 54	74 45	31 00
अवन्तीपुरा	33 56	75 03	29 48
अमरनाथ गुफा	34 13	75 33	27 48
इश्कुमान	36 36	73 50	34 40
उड़ी	34 04	74 02	33 52
ऊधमपुर	32 55	75 07	29 32
कठुआ	32 17	75 36	27 36
कटरा	33 01	74 58	30 08
कारगिल	34 30	76 13	25 08
केरन	34 40	73 59	34 04
किश्तवाड़	33 19	75 48	26 48
कोटली	33 30	73 57	34 12
कुलगाम	33 42	75 02	29 52
खपालू	35 10	76 20	24 40
खरताक्षो	34 53	76 12	25 12
गुलमर्ग	34 05	74 25	32 20
गिलगित	35 55	74 22	32 32
गुरयास	34 38	74 56	30 16
चिनैनी	33 01	75 20	28 40

नगर	अक्षांश	रेखांश	अन्तर
चिलास	35 27	74 06	33 36
चुशूल	33 35	78 39	15 24
छम्ब	32 51	74 23	32 28
जम्मू	32 43	74 54	30 24
जंगला	33 40	77 00	22 00
जास्कार	33 30	77 00	22 00
जस्मेरगढ़	32 18	75 05	29 40
डोडा	33 11	75 34	27 44
तेरू	36 11	72 45	39 00
द्रास	34 22	75 50	26 40
नवांशहर	32 30	74 46	30 56
नागिर	36 17	74 45	31 00
नौशेहरा	33 11	74 17	32 52
पदम	33 28	76 54	22 24
पहलगांव	34 01	75 24	28 24
परिपंजाल	33 36	74 22	22 32
पुंछ	33 51	74 08	33 28
बनिहाल	33 32	75 19	28 44
बटोटी	33 06	75 19	28 44
बटोत	33 10	75 06	29 36
बड़गाम	34 00	74 44	31 04

नगर	अक्षांश	रेखांश	अन्तर
बसौली	32 30	75 49	26 24
बारामूला	34 10	74 20	32 40
भद्रवाह	33 01	75 50	26 40
मार्तण्ड	33 48	75 18	28 48
मिनीमर्ग	34 49	75 02	29 52
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	35 56
मनावर	32 50	74 25	32 20
रामनगर	32 50	75 22	28 32
राजौरी	33 23	74 18	32 48
रामबन	33 14	75 15	29 00
रियासी	33 04	74 53	30 28
लेह	34 10	77 40	19 20
वैष्णो देवी	33 03	74 56	30 16
वूलर	34 20	74 37	31 22
शेरकिला	36 05	74 04	33 44
श्रीनगर	34 06	74 51	30 36
साम्बा	32 33	75 07	29 32
सोपूर	34 19	74 30	32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	28 40
सोन्दर	33 29	75 57	26 12
सोपुर	34 19	74 30	32 00

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंग्लैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रात: के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– **एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्राय: अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। पं. विवेक शर्मा

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मि. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
अथींस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	-24 32	30 00 पू.	+03 30
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	-21 12	180 00 पू.	-06 30
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	-02 48	75 00 प.	+10 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	-22 20	60 00 पू.	+01 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	-31 00	90 00 प.	+11 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	-38 56	90 00 प.	+11 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	-10 00	120 00 प.	+13 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland)	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	-40 28	15 00 पू.	+04 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)*	England	55 52 उ.	3 12 प.	-12 48	00 00	+05 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 29 प.	-33 56	105 00 प.	+12 30
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	-5 00	00 00	+05 30
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	-04 00	30 00 पू.	+03 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	-03 44	86 15 पू.	-00 15
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	-73 20	120 00 पू.	-02 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
कराची	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	-31 48	75 00 पू.	+00 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मि. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	-08 00	67 30 पू.	+01 00
कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	-07 28	82 30 पू.	+00 00
कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	-10 56	82 30 पू.	00 00
कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	-10 00	15 00 पू.	+04 30
कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	-39 56	75 00 प.	+10 30
कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	-09 20	90 00 प.	+11 30
कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	-36 12	105 00 प.	+12 30
ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	-35 24	15 00 पू.	+04 30
जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	-01 30
जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	-10 00	82 30 पू.	00 00
जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
टोक्यो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	-03 30
टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	-35 48	120 00 प.	+13 30
डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	-04 08	00 00	+05 30
डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	-32 12	75 00 प.	+10 30
डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	-25 00	00 00 प.	+05 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टे. अन्तर (स्थानीय स्टे. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं. क.	भा. स्टे. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
न्यूजर्सी (E.T.)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 09 प.	+03 24	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट(Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पू.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रैडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-17 32	75 00 प.	+10 30
बेकर्सफील्ड (Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30
मस्कट	(Oman)	23 37 उ.	58 35 पू.	-5 40	60 00 पू.	+01 30
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada (E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada (E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
•रोम (Rome)	Italy	41 55 उ.	12 27 पू.	-10 12	15 00 पू.	+04 30
लाहौर (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एजलंस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वॉलवरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada (P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada (P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A. (P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A. (P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	39 08 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (—) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (—) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्राय: सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (—) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग २/३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर —२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (—२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे—इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

—शुभचिन्तक पं. पन्ना लाल गणितकर्त्ता

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगर अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या — करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश | अक्षांश १०° उ. | अक्षांश २०° उ. | अक्षांश २५° उ. | अक्षांश ५०° उ. | अक्षांश ५२° उ. | अक्षांश ५४° उ.

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19 जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अक्तूबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

की सारणी भा. स्टै. टाईम

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग २ मिनट घटाने तथा अस्त में २ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में ११ अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें जिला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय ६ घण्टे १ मिनट तथा सूर्यास्त १८ घण्टे ४४ मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार—१ घण्टे ०४ मिनट घटाने से हमें ५ घण्टे ५९ मिनट ५६ सैकेण्ड और १८ घण्टे ४२ मिनट २६ सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर | काँगड़ा-धर्म | हमीरपुर | ऊना | बिलासपुर | मंडी-कुल्लू | सरकाघाट | शिमला | सोलन | चम्बा | नाहन | रामपुर बुशै.

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुश.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्तू.	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
जोगिन्दर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

Note: the row between नगरोटा and ज्वालामुखी reads "ज्जियार | + १ १२".

हमीरपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार मिं. सैं.
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५६
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त भा. स्टैं. टा.

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३ मिनट घटाने तथा अस्त में ३ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	6 59	17 20	7 20	17 40	7 32	17 47	7 17	17 24	7 05	17 43	6 20	16 59	6 48	17 15	1
2	7 35	17 34	7 29	17 31	7 23	17 30	7 21	17 33	6 59	17 21	7 20	17 41	7 32	17 48	7 17	17 25	7 05	17 44	6 21	17 00	6 48	17 16	2
3	7 35	17 35	7 29	17 32	7 23	17 31	7 21	17 34	7 00	17 21	7 21	17 43	7 33	17 49	7 17	17 25	7 06	17 44	6 21	17 00	6 48	17 17	3
4	7 35	17 36	7 29	17 33	7 24	17 32	7 22	17 35	7 00	17 22	7 21	17 43	7 33	17 50	7 18	17 26	7 06	17 45	6 21	17 01	6 48	17 17	4
5	7 35	17 36	7 29	17 34	7 24	17 32	7 22	17 35	7 00	17 23	7 21	17 43	7 33	17 51	7 18	17 27	7 06	17 45	6 22	17 02	6 49	17 18	5
6	7 35	17 37	7 29	17 35	7 24	17 33	7 22	17 36	7 00	17 24	7 21	17 44	7 33	17 51	7 18	17 28	7 06	17 46	6 22	17 02	6 49	17 19	6
7	7 35	17 38	7 29	17 36	7 24	17 34	7 22	17 37	7 00	17 24	7 22	17 45	7 33	17 52	7 18	17 28	7 07	17 47	6 22	17 03	6 49	17 20	7
8	7 35	17 39	7 29	17 36	7 24	17 35	7 22	17 38	7 00	17 25	7 22	17 46	7 33	17 52	7 18	17 29	7 07	17 47	6 22	17 04	6 49	17 20	8
9	7 35	17 40	7 29	17 37	7 24	17 36	7 22	17 39	7 01	17 26	7 22	17 46	7 33	17 53	7 18	17 30	7 07	17 48	6 22	17 04	6 49	17 21	9
10	7 35	17 40	7 29	17 38	7 24	17 37	7 22	17 39	7 01	17 26	7 22	17 47	7 33	17 54	7 18	17 31	7 07	17 49	6 22	17 05	6 49	17 22	10
11	7 35	17 41	7 29	17 39	7 24	17 38	7 22	17 40	7 01	17 27	7 22	17 48	7 33	17 55	7 18	17 32	7 07	17 49	6 23	17 06	6 49	17 23	11
12	7 35	17 42	7 29	17 39	7 24	17 39	7 22	17 41	7 01	17 28	7 22	17 49	7 33	17 56	7 18	17 32	7 07	17 50	6 23	17 06	6 49	17 23	12
13	7 35	17 43	7 29	17 40	7 24	17 40	7 22	17 42	7 01	17 29	7 22	17 50	7 33	17 57	7 18	17 33	7 07	17 51	6 23	17 07	6 49	17 24	13
14	7 35	17 44	7 29	17 41	7 24	17 40	7 22	17 43	7 01	17 30	7 21	17 50	7 33	17 58	7 18	17 34	7 07	17 51	6 23	17 08	6 49	17 25	14
15	7 35	17 45	7 29	17 42	7 24	17 41	7 22	17 44	7 01	17 30	7 21	17 51	7 33	17 59	7 18	17 35	7 07	17 52	6 23	17 09	6 49	17 26	15
16	7 35	17 46	7 29	17 43	7 24	17 42	7 22	17 45	7 01	17 31	7 21	17 52	7 33	18 00	7 18	17 36	7 07	17 53	6 23	17 09	6 49	17 26	16
17	7 34	17 47	7 29	17 44	7 24	17 42	7 21	17 46	7 01	17 32	7 21	17 53	7 33	18 01	7 18	17 37	7 07	17 53	6 23	17 10	6 49	17 27	17
18	7 34	17 47	7 28	17 46	7 23	17 43	7 21	17 46	7 00	17 33	7 21	17 53	7 32	18 01	7 17	17 38	7 07	17 54	6 23	17 11	6 49	17 28	18
19	7 34	17 48	7 28	17 47	7 23	17 44	7 21	17 47	7 00	17 34	7 21	17 54	7 32	18 02	7 17	17 39	7 07	17 55	6 23	17 11	6 49	17 29	19
20	7 34	17 49	7 28	17 46	7 23	17 45	7 21	17 48	7 00	17 34	7 21	17 55	7 32	18 02	7 17	17 40	7 07	17 56	6 23	17 12	6 49	17 29	20
21	7 33	17 50	7 27	17 47	7 23	17 46	7 20	17 48	7 00	17 35	7 20	17 56	7 32	18 03	7 17	17 41	7 06	17 56	6 23	17 13	6 49	17 30	21
22	7 33	17 51	7 27	17 48	7 22	17 47	7 20	17 49	7 00	17 36	7 21	17 56	7 32	18 04	7 16	17 42	7 06	17 57	6 22	17 13	6 49	17 31	22
23	7 33	17 52	7 27	17 49	7 22	17 48	7 20	17 50	6 59	17 37	7 20	17 57	7 31	18 05	7 16	17 43	7 06	17 58	6 22	17 14	6 48	17 32	23
24	7 32	17 53	7 27	17 50	7 21	17 49	7 20	17 51	6 59	17 37	7 20	17 58	7 31	18 06	7 16	17 43	7 06	17 59	6 22	17 15	6 48	17 32	24
25	7 32	17 54	7 26	17 51	7 21	17 49	7 19	17 52	6 59	17 38	7 19	17 59	7 31	18 08	7 15	17 44	7 06	17 59	6 22	17 16	6 48	17 33	25
26	7 31	17 55	7 26	17 52	7 21	17 50	7 19	17 53	6 59	17 39	7 19	18 00	7 30	18 08	7 15	17 44	7 05	18 00	6 22	17 16	6 47	17 34	26
27	7 31	17 56	7 25	17 53	7 20	17 51	7 19	17 54	6 59	17 41	7 18	18 01	7 30	18 09	7 14	17 46	7 05	18 01	6 21	17 18	6 47	17 35	27
28	7 30	17 57	7 25	17 54	7 20	17 52	7 18	17 55	6 58	17 41	7 18	18 01	7 30	18 09	7 14	17 46	7 05	18 01	6 21	17 18	6 47	17 35	28
29	7 30	17 58	7 24	17 55	7 19	17 53	7 18	17 56	6 57	17 41	7 18	18 02	7 30	18 10	7 13	17 47	7 05	18 02	6 21	17 18	6 46	17 36	29
30	7 29	17 58	7 23	17 56	7 19	17 54	7 17	17 56	6 57	17 42	7 17	18 03	7 29	18 11	7 13	17 48	7 05	18 02	6 21	17 19	6 46	17 37	30
31	7 29	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	6 57	17 43	7 17	18 03	7 29	18 12	7 12	17 49	7 04	18 03	6 20	17 20	6 46	17 38	31
फर.	7 28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	6 56	17 44	7 16	18 04	7 28	18 13	7 12	17 50	7 04	18 04	6 20	17 20	6 45	17 38	फर.
2	7 27	18 01	7 22	17 58	7 17	17 56	7 15	17 59	6 56	17 44	7 16	18 05	7 28	18 14	7 11	17 50	7 03	18 05	6 20	17 21	6 45	17 39	2
3	7 27	18 02	7 21	17 59	7 17	17 57	7 15	17 59	6 55	17 45	7 15	18 06	7 27	18 15	7 11	17 51	7 03	18 06	6 19	17 22	6 44	17 40	3
4	7 26	18 03	7 21	18 00	7 16	17 58	7 14	18 00	6 55	17 46	7 15	18 06	7 26	18 15	7 10	17 52	7 03	18 06	6 19	17 22	6 44	17 41	4
5	7 25	18 04	7 20	18 01	7 15	17 59	7 14	18 01	6 54	17 47	7 14	18 07	7 26	18 16	7 09	17 53	7 02	18 07	6 18	17 23	6 43	17 41	5
6	7 25	18 05	7 21	18 02	7 15	18 00	7 13	18 02	6 53	17 47	7 14	18 08	7 25	18 17	7 09	17 54	7 02	18 08	6 18	17 23	6 43	17 42	6
7	7 24	18 06	7 19	18 02	7 14	18 01	7 13	18 03	6 53	17 48	7 14	18 08	7 25	18 18	7 08	17 55	7 01	18 08	6 17	17 24	6 42	17 43	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	6 52	17 49	7 13	18 09	7 24	18 18	7 07	17 56	7 00	18 09	6 17	17 25	6 41	17 43	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	6 52	17 50	7 12	18 10	7 23	18 19	7 07	17 56	7 00	18 09	6 16	17 25	6 41	17 44	9
10	7 21	18 08	7 16	18 05	7 11	18 04	7 10	18 06	6 51	17 50	7 11	18 11	7 23	18 19	7 06	17 57	6 59	18 10	6 16	17 26	6 40	17 45	10
11	7 20	18 09	7 15	18 06	7 11	18 05	7 09	18 06	6 50	17 51	7 10	18 12	7 22	18 20	7 05	17 58	6 59	18 11	6 15	17 26	6 39	17 45	11
12	7 20	18 10	7 14	18 07	7 10	18 06	7 09	18 07	6 50	17 52	7 10	18 12	7 21	18 21	7 04	17 59	6 58	18 11	6 15	17 27	6 39	17 46	12
13	7 19	18 11	7 13	18 08	7 09	18 06	7 08	18 08	6 49	17 53	7 09	18 13	7 20	18 22	7 03	18 00	6 58	18 12	6 14	17 28	6 38	17 47	13
14	7 17	18 12	7 12	18 09	7 08	18 07	7 07	18 09	6 48	17 53	7 08	18 14	7 19	18 23	7 03	18 00	6 57	18 12	6 14	17 28	6 37	17 47	14
15	7 18	18 13	7 11	18 10	7 07	18 08	7 06	18 09	6 47	17 54	7 07	18 14	7 18	18 23	7 02	18 01	6 57	18 13	6 13	17 29	6 37	17 48	15
16	7 16	18 14	7 10	18 11	7 06	18 09	7 06	18 10	6 47	17 55	7 06	18 15	7 18	18 24	7 01	18 02	6 56	18 13	6 12	17 29	6 36	17 49	16
17	7 15	18 14	7 10	18 11	7 05	18 09	7 05	18 11	6 46	17 55	7 06	18 16	7 17	18 25	7 00	18 03	6 55	18 14	6 12	17 30	6 35	17 49	17
18	7 13	18 15	7 09	18 12	7 04	18 10	7 04	18 12	6 45	17 56	7 05	18 16	7 16	18 26	6 59	18 04	6 55	18 14	6 11	17 30	6 34	17 50	18
19	7 14	18 16	7 08	18 13	7 03	18 11	7 03	18 13	6 44	17 57	7 04	18 17	7 15	18 26	6 58	18 04	6 54	18 15	6 10	17 31	6 34	17 50	19
20	7 12	18 17	7 07	18 13	7 02	18 11	7 02	18 13	6 43	17 57	7 03	18 18	7 14	18 27	6 57	18 05	6 53	18 15	6 10	17 31	6 33	17 51	20
21	7 11	18 18	7 06	18 14	7 01	18 12	7 01	18 14	6 42	17 58	7 02	18 18	7 13	18 28	6 56	18 06	6 52	18 16	6 09	17 32	6 32	17 52	21
22	7 10	18 18	7 05	18 15	7 00	18 13	7 00	18 14	6 42	17 59	7 01	18 19	7 12	18 28	6 55	18 07	6 51	18 17	6 08	17 32	6 31	17 52	22
23	7 09	18 19	7 04	18 16	6 59	18 13	6 59	18 15	6 41	17 59	7 00	18 20	7 11	18 29	6 54	18 07	6 50	18 17	6 07	17 33	6 30	17 53	23
24	7 08	18 20	7 03	18 17	6 58	18 14	6 58	18 15	6 40	18 00	6 59	18 20	7 10	18 29	6 53	18 08	6 50	18 17	6 07	17 33	6 29	17 53	24
25	7 07	18 21	7 02	18 18	6 57	18 15	6 57	18 16	6 39	18 01	6 59	18 21	7 09	18 30	6 52	18 09	6 49	18 18	6 06	17 34	6 29	17 54	25
26	7 06	18 22	7 01	18 19	6 56	18 15	6 56	18 16	6 38	18 01	6 58	18 21	7 08	18 31	6 51	18 09	6 48	18 18	6 05	17 34	6 28	17 55	26
27	7 05	18 22	7 00	18 20	6 55	18 16	6 55	18 17	6 37	18 02	6 57	18 23	7 07	18 31	6 50	18 10	6 47	18 18	6 04	17 35	6 27	17 55	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 36	18 02	6 55	18 23	7 06	18 32	6 49	18 11	6 47	18 19	6 03	17 35	6 26	17 56	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 34	18 03	6 55	18 23	7 05	18 33	6 47	18 12	6 46	18 20	6 01	17 37	6 25	17 56	मार्च
2	7 01	18 25	6 56	18 21	6 52	18 19	6 52	18 19	6 33	18 04	6 54	18 24	7 04	18 33	6 46	18 13	6 45	18 20	6 00	17 38	6 24	17 57	2
3	7 00	18 26	6 55	18 22	6 51	18 19	6 51	18 20	6 32	18 05	6 53	18 24	7 03	18 34	6 45	18 14	6 44	18 21	5 59	17 38	6 23	17 57	3
4	6 58	18 26	6 54	18 23	6 50	18 20	6 50	18 21	6 30	18 05	6 52	18 25	7 02	18 34	6 44	18 14	6 43	18 21	5 58	17 38	6 22	17 58	4
5	6 57	18 27	6 53	18 23	6 49	18 20	6 49	18 22	6 29	18 06	6 51	18 26	7 01	18 35	6 43	18 15	6 42	18 22	5 57	17 39	6 21	17 58	5
6	6 56	18 28	6 51	18 24	6 48	18 21	6 48	18 22	6 28	18 06	6 50	18 26	7 00	18 35	6 41	18 16	6 42	18 22	5 56	17 39	6 20	17 59	6
7	6 55	18 29	6 50	18 25	6 47	18 21	6 47	18 23	6 27	18 07	6 49	18 27	6 59	18 36	6 40	18 18	6 41	18 23	5 56	17 40	6 19	17 59	7
8	6 54	18 29	6 49	18 25	6 45	18 22	6 45	18 23	6 26	18 07	6 48	18 27	6 58	18 36	6 39	18 17	6 40	18 23	5 55	17 40	6 18	18 00	8
9	6 53	18 30	6 48	18 26	6 44	18 23	6 44	18 24	6 25	18 08	6 46	18 28	6 57	18 37	6 38	18 18	6 39	18 23	5 54	17 40	6 17	18 00	9
10	6 51	18 31	6 46	18 27	6 43	18 23	6 43	18 24	6 24	18 08	6 45	18 28	6 56	18 38	6 37	18 18	6 38	18 24	5 53	17 41	6 16	18 01	10
11	6 50	18 31	6 45	18 27	6 42	18 24	6 42	18 25	6 23	18 09	6 44	18 29	6 55	18 39	6 36	18 19	6 37	18 24	5 52	17 41	6 15	18 01	11
12	6 49	18 32	6 44	18 28	6 41	18 25	6 41	18 26	6 22	18 09	6 43	18 30	6 54	18 39	6 35	18 20	6 36	18 25	5 51	17 42	6 14	18 02	12
13	6 48	18 33	6 43	18 29	6 40	18 26	6 40	18 27	6 21	18 10	6 42	18 31	6 53	18 40	6 33	18 20	6 35	18 25	5 50	17 42	6 13	18 02	13
14	6 46	18 34	6 42	18 29	6 39	18 27	6 38	18 27	6 20	18 11	6 41	18 31	6 52	18 40	6 32	18 21	6 34	18 26	5 49	17 42	6 12	18 03	14
15	6 45	18 34	6 40	18 29	6 38	18 27	6 37	18 28	6 19	18 11	6 40	18 32	6 50	18 41	6 31	18 21	6 33	18 26	5 48	17 43	6 11	18 03	15
16	6 44	18 35	6 39	18 30	6 36	18 28	6 36	18 28	6 18	18 12	6 39	18 32	6 49	18 41	6 30	18 22	6 32	18 26	5 47	17 43	6 10	18 03	16
17	6 43	18 36	6 38	18 31	6 35	18 28	6 35	18 29	6 17	18 12	6 38	18 33	6 48	18 42	6 29	18 23	6 31	18 27	5 46	17 44	6 09	18 04	17
18	6 41	18 36	6 36	18 31	6 34	18 29	6 34	18 29	6 16	18 13	6 37	18 33	6 47	18 42	6 27	18 23	6 31	18 27	5 45	17 44	6 08	18 04	18
19	6 40	18 37	6 35	18 32	6 33	18 30	6 33	18 30	6 15	18 13	6 36	18 34	6 46	18 43	6 26	18 24	6 30	18 27	5 45	17 44	6 07	18 05	19
20	6 39	18 38	6 34	18 33	6 31	18 31	6 31	18 30	6 14	18 14	6 35	18 34	6 45	18 43	6 25	18 25	6 29	18 27	5 44	17 45	6 06	18 05	20
21	6 38	18 38	6 33	18 34	6 30	18 31	6 30	18 31	6 13	18 14	6 33	18 35	6 44	18 44	6 24	18 25	6 28	18 28	5 43	17 45	6 05	18 06	21
22	6 36	18 39	6 32	18 34	6 29	18 32	6 29	18 31	6 12	18 15	6 32	18 35	6 43	18 44	6 23	18 26	6 27	18 28	5 42	17 45	6 04	18 07	22
23	6 35	18 40	6 31	18 34	6 28	18 32	6 28	18 32	6 11	18 15	6 31	18 36	6 41	18 45	6 21	18 26	6 26	18 28	5 41	17 46	6 03	18 07	23
24	6 34	18 40	6 30	18 35	6 26	18 33	6 26	18 32	6 10	18 16	6 30	18 36	6 40	18 45	6 20	18 27	6 25	18 29	5 40	17 46	6 02	18 07	24
25	6 32	18 41	6 28	18 36	6 25	18 33	6 25	18 33	6 09	18 16	6 29	18 37	6 39	18 46	6 19	18 28	6 24	18 29	5 39	17 46	6 01	18 08	25
26	6 31	18 42	6 27	18 37	6 24	18 34	6 24	18 33	6 08	18 17	6 28	18 37	6 38	18 46	6 18	18 28	6 23	18 29	5 38	17 47	5 00	18 08	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 07	18 17	6 27	18 38	6 37	18 47	6 17	18 29	6 22	18 30	5 37	17 47	5 59	18 09	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना																				ति
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 05	18 18	6 26	18 38	6 36	18 47	6 15	18 29	6 21	18 30	5 36	17 47	5 57	18 09	28
29	6 27	18 44	6 23	18 39	6 20	18 35	6 21	18 36	6 04	18 18	6 25	18 38	6 35	18 48	6 14	18 30	6 20	18 31	5 35	17 48	5 57	18 09	29
30	6 26	18 44	6 22	18 39	6 19	18 36	6 20	18 36	6 03	18 19	6 24	18 39	6 34	18 49	6 13	18 31	6 19	18 32	5 34	17 48	5 56	18 10	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 02	18 19	6 23	18 39	6 32	19 49	6 12	18 31	6 18	18 32	5 33	17 48	5 55	18 10	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 01	18 20	6 22	18 40	6 31	19 50	6 10	18 32	6 17	18 32	5 33	17 48	5 54	18 11	अप्रै.
2	6 22	18 46	6 18	18 42	6 15	18 38	6 16	18 38	6 00	18 20	6 21	18 40	6 30	19 51	6 09	18 32	6 16	18 32	5 32	17 48	5 53	18 11	2
3	6 21	18 47	6 17	18 42	6 14	18 39	6 15	18 38	5 59	18 21	6 20	18 41	6 29	19 51	6 08	18 33	6 15	18 33	5 31	17 49	5 52	18 11	3
4	6 20	18 48	6 16	18 43	6 13	18 40	6 14	18 39	5 58	18 21	6 19	18 41	6 28	19 52	6 07	18 34	6 15	18 33	5 30	17 49	5 51	18 12	4
5	6 19	18 48	6 15	18 43	6 12	18 40	6 13	18 39	5 57	18 22	6 18	18 42	6 27	19 52	6 06	18 34	6 14	18 33	5 29	17 49	5 50	18 12	5
6	1 17	18 49	6 13	18 44	6 11	18 41	6 12	18 40	5 56	18 22	6 16	18 42	6 26	19 53	6 05	18 35	6 13	18 34	5 28	17 50	5 49	18 13	6
7	6 16	18 50	6 12	18 44	6 10	18 41	6 11	18 40	5 55	18 23	6 15	18 43	6 24	19 53	6 03	18 35	6 12	18 34	5 28	17 50	5 48	18 13	7
8	6 15	18 50	6 11	18 45	6 09	14 82	6 09	18 41	5 54	18 23	6 14	18 43	6 23	19 54	6 02	18 36	6 11	18 34	5 24	17 50	5 47	18 14	8
9.	6 14	18 51	6 10	18 46	6 08	18 42	6 08	18 42	5 53	18 24	6 13	18 44	6 22	19 54	6 01	18 37	6 10	18 35	5 26	17 51	5 46	18 14	9
10	6 16	18 52	6 09	18 47	6 06	18 43	6 07	18 43	5 52	18 24	6 12	18 44	6 21	19 55	6 00	18 37	6 09	18 35	5 25	17 51	5 45	18 15	10
11	6 11	18 52	6 07	18 47	6 05	18 43	6 06	18 43	5 50	18 25	6 11	18 45	6 20	19 55	5 59	18 38	6 08	18 35	5 24	17 51	5 44	18 15	11
12	6 10	18 53	6 06	18 48	6 03	18 44	6 05	18 44	5 49	18 25	6 10	18 45	6 19	19 56	5 58	18 39	6 07	18 36	5 23	17 52	5 43	18 15	12
13	6 09	18 54	6 05	18 48	60 2	18 44	6 04	18 44	5 48	18 26	6 09	18 46	6 18	19 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 42	18 16	13
14	6 08	18 54	6 04	18 49	6 01	18 45	6 03	18 45	5 47	18 26	6 08	18 46	6 17	19 57	5 55	18 40	6 05	18 37	5 21	17 53	5 41	18 16	14
15	6 07	18 55	6 03	18 50	6 00	18 45	6 02	18 45	5 47	18 26	6 08	18 46	6 16	19 57	5 55	18 40	6 05	18 37	5 21	17 53	5 41	18 16	15
16	6 05	18 56	6 01	18 50	5 59	18 46	6 01	18 46	5 45	18 27	6 06	18 47	6 15	19 58	5 52	18 42	6 02	18 38	5 20	17 53	5 39	18 17	16
17	6 04	18 56	6 00	18 51	5 48	18 47	6 00	18 46	5 44	18 28	6 05	18 48	6 14	19 58	5 52	18 42	6 02	18 38	5 19	17 54	5 38	18 18	17
18	6 03	18 57	5 59	18 52	5 57	18 48	5 59	18 47	5 43	18 28	6 04	18 48	6 13	19 59	5 51	18 42	6 01	18 38	5 18	17 54	5 37	18 18	18
19	6 02	18 58	5 57	18 53	5 56	18 48	5 58	18 47	5 43	18 28	6 03	18 49	6 12	19 59	5 51	18 42	6 01	18 38	5 18	17 54	5 37	18 19	19
20	6 01	18 58	5 56	18 54	5 55	18 49	5 57	18 48	5 42	18 29	6 02	18 49	6 11	19 00	5 49	18 43	5 59	18 39	5 17	17 55	5 35	18 19	20
21	6 00	18 59	5 55	18 55	5 54	18 50	5 56	18 49	5 41	18 29	6 01	18 50	6 10	19 00	5 49	18 44	5 59	18 40	5 16	17 55	5 34	18 20	21
22	5 59	19 00	5 54	18 55	5 54	18 50	5 56	18 49	5 41	18 29	6 01	18 50	6 10	19 00	5 49	18 45	5 59	18 40	5 15	17 55	5 33	18 20	22
23	5 58	19 00	5 53	18 56	5 52	18 51	5 54	18 50	5 40	18 30	5 59	18 51	6 08	19 01	5 47	18 45	5 57	18 41	5 14	17 56	5 23	18 21	23
24	5 57	19 01	5 52	18 57	5 51	18 51	5 53	18 51	5 39	18 31	5 59	18 52	6 07	19 02	5 46	18 46	5 56	18 41	5 14	17 56	5 32	18 21	24
25	5 56	19 02	5 51	18 57	5 50	18 52	5 52	18 51	5 38	18 31	5 58	18 52	6 06	19 03	5 45	18 46	5 55	18 41	5 13	17 57	5 31	18 21	25
26	5 55	19 02	5 50	18 57	5 49	18 53	5 51	18 52	5 37	18 32	5 57	18 53	6 05	19 04	5 44	18 47	5 55	18 42	5 12	17 57	5 30	18 22	26
27	5 54	19 03	5 49	18 58	5 48	18 53	5 50	18 52	5 36	18 32	5 56	18 53	6 04	19 04	5 43	18 47	5 54	18 42	5 11	17 57	5 29	18 22	27
28	5 53	19 04	5 48	18 58	5 47	18 54	5 49	18 53	5 35	18 33	5 55	18 54	6 03	19 05	5 42	18 48	5 53	18 43	5 11	17 58	5 28	18 23	28
29	5 52	19 04	5 47	18 59	5 46	18 55	5 48	18 53	5 34	18 34	5 54	18 54	6 03	19 05	5 41	18 49	5 53	18 43	5 10	17 58	5 27	18 23	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 33	18 34	5 53	18 55	6 02	19 06	5 40	18 49	5 52	18 43	5 09	17 59	5 26	18 24	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 32	18 35	5 53	18 55	6 01	19 07	5 34	18 50	5 51	18 44	5 09	17 59	5 25	18 24	मई
2	5 49	19 06	5 45	19 02	5 43	18 57	5 45	18 55	5 37	18 35	5 52	18 56	6 00	19 07	5 38	18 51	5 50	18 44	5 08	17 59	5 29	18 25	2
3	5 48	19 07	5 43	19 03	5 43	18 57	5 44	18 56	5 31	18 36	5 51	18 56	5 59	19 08	5 37	18 51	5 50	18 44	5 07	18 00	5 24	18 25	3
4	5 47	19 08	5 43	19 03	5 42	18 58	5 44	18 57	5 30	18 36	5 50	18 57	5 58	19 08	5 36	18 52	5 49	18 45	5 07	18 00	5 23	18 26	4
5	5 46	19 09	5 42	19 04	5 42	18 59	5 43	18 57	5 30	18 37	5 50	18 57	5 57	19 09	5 36	18 53	5 49	18 45	5 06	18 01	5 23	18 26	5
6	5 45	19 09	5 41	19 05	5 41	18 59	5 43	18 58	5 29	18 37	5 49	18 58	5 56	19 09	5 35	18 53	5 48	18 46	5 05	18 01	5 22	18 27	6
7	5 44	19 10	5 40	19 05	5 40	19 00	5 42	18 58	5 28	18 38	5 48	18 59	5 55	19 10	5 34	18 54	5 48	18 46	5 05	18 02	5 21	18 27	7
8	5 44	19 11	5 40	19 05	5 39	19 00	5 41	18 59	5 27	18 38	5 47	18 59	5 55	19 11	5 33	18 55	5 47	18 47	5 04	18 02	5 21	18 28	8
9	5 43	19 11	5 39	19 07	5 38	19 01	5 41	19 00	5 27	18 39	5 47	19 00	5 54	19 11	5 32	18 55	5 47	18 47	5 04	18 03	5 19	18 29	9
10	5 42	19 07	5 38	19 07	5 38	19 02	5 40	19 01	5 26	18 40	5 46	19 00	5 54	19 12	5 32	18 56	5 46	18 48	5 03	18 03	5 19	18 29	10
11	5 41	19 13	5 37	19 07	5 37	19 02	5 39	19 01	5 25	18 40	5 46	19 01	5 53	19 12	5 31	18 56	5 46	18 48	5 03	18 03	5 19	18 29	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 41	5 45	19 01	5 53	19 13	5 30	18 57	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 30	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.	मई
13	5 40	19 14	5 36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 24	18 41	5 44	19 02	5 52	19 13	5 30	18 58	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 31	13
14	5 39	19 15	5 35	19 10	5 35	19 04	5 38	19 03	5 24	18 42	5 44	19 02	5 51	19 14	5 29	18 58	5 44	18 50	5 01	18 05	5 17	18 31	14
15	5 38	19 15	5 34	19 11	5 34	19 05	5 37	19 03	5 23	18 42	5 43	19 03	5 50	19 14	5 28	18 59	5 44	18 50	5 01	18 05	5 17	18 32	15
16	5 38	19 16	5 34	19 11	5 33	19 06	5 36	19 04	5 23	18 43	5 43	19 04	5 50	19 15	5 28	19 00	5 43	18 51	5 00	18 06	5 16	18 32	16
17	5 37	19 17	5 33	19 12	5 33	19 06	5 36	19 04	5 22	18 44	5 42	19 04	5 50	19 15	5 27	19 00	5 43	18 51	5 00	18 06	5 16	18 33	17
18	5 37	19 17	5 33	19 12	5 32	19 07	5 35	19 05	5 22	18 44	5 42	19 05	5 49	19 16	5 26	19 01	5 42	18 52	4 59	18 07	5 15	18 33	18
19	5 36	19 18	5 32	19 13	5 32	19 08	5 34	19 06	5 21	18 45	5 41	19 05	5 49	19 17	5 26	19 02	5 42	18 52	4 59	18 07	5 15	18 34	19
20	5 35	19 19	5 32	19 13	5 31	19 08	5 34	19 07	5 21	18 45	5 41	19 06	5 48	19 18	5 25	19 02	5 41	18 53	4 59	18 08	5 15	18 34	20
21	5 35	19 20	5 31	19 14	5 31	19 09	5 33	19 07	5 20	18 46	5 40	19 06	5 48	19 18	5 25	19 03	5 41	18 53	4 58	18 08	5 14	18 35	21
22	5 34	19 20	5 31	19 15	5 30	19 09	5 33	19 08	5 20	18 46	5 40	19 07	5 47	19 19	5 24	19 03	5 40	18 53	4 58	18 09	5 14	18 35	22
23	5 34	19 21	5 30	19 15	5 30	19 10	5 32	19 08	5 19	18 47	5 40	19 07	5 47	19 19	5 24	19 04	5 40	18 54	4 58	18 09	5 14	18 36	23
24	5 33	19 22	5 30	19 16	5 29	19 10	5 32	19 09	5 19	18 47	5 39	19 08	5 47	19 20	5 23	19 05	5 40	18 54	4 57	18 09	5 13	18 36	24
25	5 33	19 22	5 29	19 16	5 29	19 11	5 31	19 09	5 19	18 48	5 39	19 08	5 46	19 20	5 23	19 05	5 39	18 55	4 57	18 10	5 13	18 37	25
26	5 33	19 23	5 29	19 17	5 29	19 11	5 31	19 10	5 18	18 48	5 39	19 09	5 46	19 21	5 23	19 06	5 39	18 55	4 57	18 10	5 13	18 37	26
27	5 32	19 24	5 28	19 18	5 28	19 12	5 30	19 10	5 18	18 49	5 38	19 10	5 46	19 21	5 22	19 06	5 39	18 56	4 57	18 11	5 12	18 38	27
28	5 32	19 24	5 28	19 18	5 27	19 13	5 30	19 11	5 18	18 49	5 38	19 10	5 45	19 22	5 22	19 07	5 39	18 56	4 56	18 11	5 12	18 38	28
29	5 31	19 25	5 27	19 19	5 27	19 14	5 30	19 11	5 17	18 50	5 38	19 11	5 45	19 22	5 22	19 08	5 38	18 57	4 56	18 12	5 12	18 39	29
30	5 31	19 26	5 27	19 19	5 27	19 14	5 29	19 12	5 17	18 50	5 37	19 11	5 45	19 23	5 21	19 08	5 38	18 57	4 56	18 12	5 12	18 39	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 12	18 40	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 11	18 40	जून
2	5 30	19 27	5 26	19 21	5 26	19 16	5 28	19 13	5 17	18 52	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 10	5 38	18 59	4 55	18 13	5 11	18 40	2
3	5 30	19 27	5 26	19 22	5 26	19 16	5 28	19 14	5 16	18 52	5 37	19 13	5 44	19 25	5 20	19 10	5 38	18 59	4 55	18 14	5 11	18 41	3
4	5 30	19 28	5 26	19 23	5 26	19 17	5 28	19 14	5 16	18 53	5 37	19 13	5 44	19 25	5 20	19 11	5 38	18 59	4 55	18 14	5 11	18 41	4
5	5 30	19 28	5 27	19 23	5 26	19 17	5 28	19 15	5 16	18 53	5 36	19 14	5 44	19 26	5 20	19 11	5 38	19 00	4 55	18 15	5 11	18 42	5
6	5 30	19 29	5 26	19 23	5 26	19 18	5 28	19 15	5 16	18 54	5 36	19 14	5 44	19 26	5 20	19 12	5 38	19 00	4 55	18 15	5 11	18 42	6
7	5 29	19 29	5 26	19 24	5 26	19 18	5 28	19 16	5 16	18 54	5 36	19 15	5 44	19 27	5 20	19 12	5 38	19 00	4 55	18 15	5 11	18 43	7
8	5 29	19 30	5 26	19 24	5 25	19 19	5 28	19 16	5 16	18 54	5 36	19 15	5 44	19 27	5 20	19 13	5 38	19 00	4 55	18 16	5 11	18 43	8
9	5 29	19 30	5 26	19 24	5 25	19 19	5 28	19 17	5 16	18 55	5 36	19 15	5 44	19 28	5 20	19 13	5 38	19 01	4 55	18 16	5 11	18 43	9
10	5 29	19 30	5 26	19 25	5 25	19 19	5 28	19 17	5 16	18 55	5 36	19 16	5 44	19 28	5 20	19 13	5 38	19 01	4 55	18 16	5 11	18 44	10
11	5 29	19 31	5 26	19 25	5 25	19 20	5 28	19 18	5 16	18 56	5 36	19 16	5 44	19 29	5 19	19 14	5 38	19 02	4 55	18 17	5 11	18 44	11
12	5 29	19 31	5 26	19 26	5 25	19 20	5 28	19 18	5 16	18 56	5 36	19 16	5 44	19 29	5 19	19 14	5 38	19 02	4 55	18 17	5 11	18 44	12
13	5 29	19 32	5 26	19 26	5 25	19 20	5 28	19 19	5 16	18 57	5 36	19 17	5 43	19 29	5 20	19 15	5 38	19 03	4 55	18 18	5 11	18 45	13
14	5 29	19 32	5 26	19 26	5 25	19 21	5 28	19 19	5 16	18 57	5 36	19 17	5 43	19 30	5 20	19 15	5 38	19 03	4 55	18 18	5 11	18 45	14
15	5 29	19 32	5 26	19 27	5 25	19 21	5 28	19 19	5 16	18 57	5 36	19 17	5 43	19 30	5 20	19 15	5 38	19 03	4 56	18 18	5 11	18 45	15
16	5 29	19 33	5 26	19 27	5 25	19 21	5 28	19 19	5 16	18 58	5 37	19 18	5 43	19 30	5 20	19 15	5 38	19 03	4 56	18 18	5 11	18 45	16
17	5 30	19 33	5 26	19 27	5 25	19 22	5 28	19 20	5 16	18 58	5 37	19 18	5 43	19 30	5 20	19 15	5 38	19 04	4 56	18 19	5 12	18 46	17
18	5 30	19 33	5 26	19 27	5 25	19 22	5 28	19 20	5 16	18 58	5 37	19 18	5 44	19 31	5 20	19 16	5 38	19 04	4 56	18 19	5 12	18 46	18
19	5 30	19 34	5 26	19 27	5 25	19 22	5 29	19 20	5 17	18 58	5 37	19 19	5 44	19 31	5 20	19 16	5 39	19 04	4 56	18 19	5 12	18 46	19
20	5 30	19 34	5 26	19 28	5 26	19 23	5 29	19 21	5 17	18 59	5 37	19 19	5 44	19 32	5 20	19 17	5 39	19 05	4 57	18 19	5 12	18 47	20
21	5 30	19 34	5 27	19 28	5 26	19 23	5 29	19 21	5 17	18 59	5 37	19 19	5 44	19 32	5 20	19 17	5 39	19 05	4 57	18 19	5 12	18 47	21
22	5 30	19 34	5 27	19 28	5 26	19 23	5 30	19 21	5 17	18 59	5 37	19 20	5 44	19 32	5 20	19 17	5 39	19 05	4 57	18 20	5 12	18 47	22
23	5 31	19 34	5 27	19 28	5 26	19 23	5 30	19 22	5 17	18 59	5 38	19 20	5 44	19 32	5 20	19 17	5 39	19 05	4 57	18 20	5 13	18 47	23
24	5 31	19 35	5 27	19 29	5 27	19 23	5 30	19 22	5 18	18 59	5 38	19 20	5 44	19 32	5 21	19 18	5 40	19 05	4 57	18 20	5 13	18 47	24
25	5 31	19 35	5 28	19 29	5 27	19 23	5 30	19 22	5 18	19 00	5 39	19 20	5 45	19 32	5 21	19 18	5 40	19 05	4 57	18 20	5 13	18 48	25
26	5 31	19 35	5 28	19 29	5 27	19 23	5 31	19 22	5 18	19 00	5 39	19 20	5 45	19 32	5 22	19 18	5 40	19 05	4 58	18 21	5 13	18 48	26
27	5 31	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 00	5 39	19 20	5 46	19 32	5 22	19 18	5 41	19 06	4 58	18 21	5 14	18 48	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 00	5 39	19 20	5 46	19 32	5 22	19 18	5 41	19 06	4 58	18 21	5 14	18 48	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 41	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	जुला
2	5 34	19 35	5 29	19 29	5 30	19 24	5 32	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 48	19 33	5 24	19 18	5 42	19 06	5 00	18 21	5 16	18 48	2
3	5 34	19 35	5 30	19 29	5 30	19 24	5 33	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 48	19 33	5 24	19 18	5 43	19 06	5 00	18 21	5 16	18 48	3
4	5 34	19 35	5 30	19 29	5 31	19 24	5 34	19 22	5 21	19 00	5 41	19 21	5 49	19 33	5 25	19 18	5 43	19 06	5 00	18 21	5 16	18 48	4
5	5 35	19 35	5 31	19 29	5 31	19 24	5 34	19 22	5 21	19 00	5 42	19 21	5 49	19 33	5 25	19 18	5 43	19 06	5 01	18 21	5 17	18 48	5
6	5 35	19 35	5 31	19 29	5 31	19 23	5 34	19 22	5 22	19 00	5 43	19 20	5 50	19 33	5 26	19 18	5 44	19 06	5 01	18 21	5 18	18 48	6
7	5 36	19 35	5 33	19 29	5 32	19 23	5 32	19 22	5 22	19 00	5 42	19 21	5 50	19 33	5 25	19 18	5 44	19 06	5 01	18 21	5 17	18 48	7
8	5 36	19 34	5 33	19 29	5 32	19 23	535	19 21	5 23	19 00	5 43	19 20	5 51	19 33	5 26	19 18	5 44	19 06	5 02	18 21	5 18	18 48	8
9	5 37	19 34	5 33	19 29	5 33	19 23	5 35	19 21	5 23	19 00	5 43	19 20	5 51	19 33	5 27	19 17	5 44	19 06	5 02	18 21	5 18	18 48	9
10	5 37	19 34	5 34	19 28	5 33	19 22	5 36	19 21	5 23	18 59	5 44	19 20	5 52	19 32	5 27	19 17	5 45	19 06	5 02	18 21	5 19	18 48	10
11	5 38	19 34	5 35	19 28	5 34	19 22	5 36	19 21	5 24	18 59	5 44	19 20	5 52	19 32	5 28	19 17	5 45	19 05	5 03	18 21	5 19	18 48	11
12	5 38	19 33	5 35	19 28	5 34	19 22	5 37	19 20	5 24	18 59	5 45	19 20	5 52	19 32	5 28	19 17	5 45	19 05	5 03	18 21	5 20	18 48	12
13	5 39	19 33	5 36	19 27	5 35	19 22	5 38	19 20	5 25	18 59	5 45	19 19	5 53	19 32	5 29	19 17	5 46	19 05	5 04	18 20	5 21	18 47	13
14	5 39	19 33	5 36	19 27	5 35	19 21	5 38	19 20	5 25	18 59	5 46	19 19	5 53	19 32	5 29	19 16	5 46	19 05	5 04	18 20	5 21	18 47	14
15	5 40	19 32	5 37	19 27	5 36	19 21	5 39	19 20	5 26	18 58	5 46	19 19	5 54	19 31	5 30	19 16	5 47	19 05	5 05	18 20	5 21	18 47	15
16	5 41	19 32	5 37	19 26	5 36	19 21	5 39	19 19	5 26	18 58	5 47	19 18	5 54	19 31	5 30	19 16	5 47	1904	5 05	18 20	5 22	18 47	16
17	5 41	19 32	5 37	19 26	5 37	19 21	5 40	19 19	5 27	18 58	5 47	19 18	5 55	19 30	5 31	19 15	5 48	19 04	5 05	18 20	5 22	18 46	17
18	5 42	19 31	5 38	19 26	5 38	19 20	5 40	19 19	5 27	18 57	5 48	19 18	5 55	19 30	5 32	19 15	5 48	19 04	5 06	18 19	5 23	18 46	18
19	5 42	19 31	5 39	19 25	5 38	19 20	5 41	19 18	5 28	18 57	5 48	19 17	5 56	19 29	5 32	19 14	5 49	19 04	5 06	18 19	5 23	18 46	19
20	5 43	19 30	5 39	19 25	5 39	19 20	5 41	19 18	5 28	18 57	5 49	19 17	5 56	19 29	5 33	19 14	5 49	19 03	5 07	18 19	5 23	18 45	20
21	5 44	19 30	5 39	19 24	5 39	19 19	5 42	19 17	5 29	18 56	5 49	19 17	5 57	19 29	5 33	19 13	5 50	19 03	5 07	18 19	5 24	18 45	21
22	5 44	19 29	5 40	9 24	5 40	19 19	5 42	19 17	5 29	18 56	5 50	19 16	5 57	19 29	5 34	19 13	5 50	19 03	5 07	18 18	5 24	18 45	22
23	5 45	19 29	5 41	19 23	5 40	19 18	5 43	19 16	5 30	18 55	5 50	19 16	5 58	19 28	5 34	19 12	5 51	19 02	5 08	18 18	5 25	18 44	23
24	5 45	19 29	5 41	19 23	5 41	19 18	5 43	19 16	5 30	18 55	5 51	19 15	5 58	19 27	5 35	19 12	5 51	19 02	5 08	18 17	5 25	18 44	24
25	5 46	19 28	5 42	19 22	5 42	19 17	5 44	19 15	5 31	18 54	5 51	19 15	5 59	19 27	5 36	19 11	5 52	19 02	5 09	18 17	5 26	18 43	25
26	5 47	19 27	5 43	19 22	5 42	19 17	5 44	19 15	5 31	54	5 52	19 14	5 59	19 26	5 36	19 11	5 52	19 01	5 09	18 17	5 26	18 43	26
27	5 47	19 26	5 44	19 21	5 42	19 16	5 45	19 14	5 32	18 53	5 32	19 14	6 00	19 25	5 37	19 10	5 53	19 01	5 10	18 16	5 26	18 43	27
28	5 48	19 26	5 44	19 21	5 43	19 16	5 45	19 14	5 32	53	5 53	19 13	6 01	19 25	5 37	19 10	5 53	19 01	5 10	18 16	5 27	18 42	28
29	5 48	19 25	5 44	19 20	5 44	19 15	5 46	19 13	5 33	18 52	5 53	19 13	6 01	19 24	5 38	19 09	5 54	19 00	5 10	18 15	5 27	18 41	29
30	5 49	19 24	5 45	19 19	5 45	19 14	5 46	19 13	5 33	18 52	5 54	19 12	6 01	19 24	5 39	19 08	5 54	19 00	5 11	18 15	5 28	18 41	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 34	18 59	5 54	19 12	6 02	19 23	5 39	19 08	5 54	18 59	5 11	18 14	5 28	18 40	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 34	18 51	5 55	19 11	6 02	19 22	5 40	19 07	5 55	18 59	5 12	18 14	5 29	18 40	अग.
2	5 51	19 22	5 47	19 17	5 46	19 12	5 48	19 11	5 35	18 50	5 55	19 10	6 03	19 22	5 40	19 06	5 55	18 58	5 12	18 13	5 29	18 40	2
3	5 52	19 21	5 48	19 16	5 47	19 11	5 49	19 10	5 35	18 49	5 56	19 10	6 03	19 21	5 41	19 05	5 55	18 57	5 12	18 13	5 30	18 38	3
4	5 52	19 20	5 49	19 15	5 47	19 10	5 50	19 09	5 36	18 49	5 56	19 09	6 04	19 20	5 42	19 05	5 56	18 56	5 13	18 11	5 31	18 37	4
5	5 53	19 20	5 49	19 15	5 48	19 10	5 50	19 09	5 37	18 48	5 57	19 08	6 04	19 19	5 42	19 04	5 56	18 56	5 13	18 11	5 31	18 37	5
6	5 54	19 19	5 49	19 13	5 49	19 09	5 51	19 08	5 37	18 47	5 57	19 08	6 05	19 18	5 43	19 03	5 57	18 55	5 14	18 11	5 31	18 36	6
7	5 54	19 18	5 50	19 12	5 49	19 08	5 51	19 07	5 38	18 46	5 58	19 07	6 06	19 18	5 43	19 02	5 57	18 55	5 14	18 10	5 32	18 36	7
8	5 55	19 17	5 51	19 11	5 50	19 07	5 52	19 06	5 38	18 46	5 58	19 06	6 07	19 17	5 44	19 01	5 58	18 54	5 14	18 10	5 32	18 36	8
9	5 55	19 16	5 51	19 11	5 51	19 06	5 32	19 05	5 39	18 45	5 59	19 05	6 07	19 16	5 45	19 00	5 58	18 54	5 15	18 09	5 32	18 34	9
10	5 56	19 15	5 52	19 05	5 51	19 05	5 53	19 04	5 39	18 44	5 59	19 04	6 08	19 15	5 45	19 00	5 58	18 53	5 15	18 08	5 33	18 34	10
11	5 57	19 14	5 53	19 09	5 52	19 04	5 53	19 03	5 40	18 43	6 00	19 04	6 08	19 14	5 46	18 59	5 59	18 52	5 16	18 08	5 33	18 33	11
12	5 57	19 14	5 54	19 08	5 52	19 03	5 54	19 02	5 40	18 42	6 00	19 03	6 09	1914	5 46	18 58	5 59	18 51	5 16	18 07	5 34	18 32	12
13	5 58	19 12	5 54	19 07	5 53	19 92	5 54	19 01	5 41	18 42	6 01	19 02	6 09	19 13	5 47	18 57	5 59	18 51	5 16	18 06	5 34	18 31	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	41	18 41	6 01	19 01	6 10	19 12	5 48	18 56	6 00	18 59	5 17	18 05	5 35	18 30	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 52	18 39	6 02	18 59	6 11	19 10	5 49	18 54	6 01	18 48	5 18	18 04	5 36	18 29	15
16	6 00	19 09	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 42	18 39	6 02	18 59	6 11	19 10	8 49	18 54	6 01	18 48	5 18	18 04	5 36	18 29	16
17	6 01	19 08	5 56	19 03	5 55	18 58	5 57	18 57	5 43	38	6 03	18 58	6 11	19 9	5 49	18 53	6 01	18 47	5 18	18 03	5 36	18 28	17
18	6 01	19 07	5 56	19 02	5 56	18 57	5 58	18 56	5 43	18 37	6 04	18 58	6 12	19 8	5 50	18 52	6 02	18 46	5 18	18 02	5 36	18 27	18
19	6 02	19 06	5 57	19 01	5 56	18 56	5 58	18 55	5 43	18 36	6 04	18 57	6 12	19 7	5 50	18 51	6 02	18 45	5 19	18 02	5 36	18 27	19
20	6 02	19 05	5 59	18 59	5 57	18 55	5 59	18 54	5 44	18 35	6 05	18 56	6 13	19 06	5 51	18 50	6 03	18 45	5 19	18 02	5 36	18 26	20
21	6 03	19 04	5 59	18 59	5 58	18 54	5 59	18 53	5 44	18 34	6 05	18 55	6 13	19 5	5 52	18 49	6 03	18 44	5 19	18 00	5 37	18 24	21
22	6 04	19 03	5 59	18 58	5 58	18 53	6 00	18 52	5 45	18 33	6 05	18 54	6 14	19 4	5 52	18 48	6 03	18 43	5 20	17 59	5 38	18 24	22
23	6 04	19 02	6 00	18 57	5 59	18 52	6 00	18 51	5 45	18 32	6 06	18 53	6 14	19 3	5 53	18 47	6 04	18 42	5 20	17 58	5 38	18 23	23
24	6 05	19 00	6 01	18 55	5 59	18 51	6 01	18 50	5 56	18 31	6 07	18 52	6 15	19 02	5 53	18 46	6 04	18 41	5 20	17 57	5 39	18 22	24
25	6 06	18 49	6 01	18 55	6 00	18 50	6 01	18 49	5 46	18 30	6 07	18 51	6 15	19 1	5 54	18 54	6 04	18 40	5 21	17 51	5 39	18 22	25
26	6 06	18 58	6 02	18 54	6 00	18 49	6 02	18 48	5 47	18 29	6 07	18 50	6 16	18 00	5 54	18 43	6 05	18 39	5 21	17 56	5 39	18 21	26
27	6 07	18 57	6 03	18 52	6 01	18 47	6 02	18 47	5 47	18 28	6 08	18 49	6 16	18 59	5 55	18 42	6 05	18 38	5 21	17 55	5 40	19 20	27
28	6 07	18 54	6 04	18 50	6 01	18 46	5 48	18 27	5 48	18 27	6 08	18 47	6 17	18 57	5 56	18 40	6 06	18 38	5 22	17 55	5 40	18 19	28
29	6 08	18 54	6 04	18 49	6 02	18 45	6 03	18 45	5 48	18 26	6 08	18 47	6 17	18 57	5 56	18 40	6 06	18 37	5 22	17 53	5 41	18 18	29
30	6 09	18 53	6 04	18 49	6 03	18 44	6 04	18 44	5 49	18 25	6 09	18 46	6 18	18 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 41	18 17	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	5 49	18 24	6 09	18 46	6 18	18 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 41	18 17	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	5 49	18 23	6 10	18 44	6 19	18 58	5 55	18 36	6 06	18 34	5 22	17 51	5 42	18 14	सितं.
2	6 10	18 50	6 06	18 46	6 05	18 41	6 05	18 40	5 50	18 22	6 10	18 42	6 19	18 53	5 58	18 35	6 07	18 33	5 22	17 50	5 42	18 13	2
3	6 11	18 48	6 06	18 45	6 05	18 40	6 06	18 39	5 50	18 21	6 11	18 41	6 20	18 52	5 59	18 34	6 07	18 32	5 22	17 49	5 43	18 12	3
4	6 12	18 47	6 07	18 43	6 06	18 39	6 06	18 33	5 51	18 20	6 11	18 40	6 20	18 50	5 59	18 33	6 07	18 31	5 23	17 48	5 43	18 11	4
5	6 12	18 46	6 09	18 41	6 06	18 37	6 07	18 37	5 51	18 19	6 11	18 39	6 21	18 49	6 00	18 32	6 07	18 30	5 23	17 47	5 44	18 10	5
6	6 13	18 45	6 08	18 41	6 07	18 36	6 07	18 36	5 52	18 18	6 12	18 38	6 21	18 48	6 00	18 30	6 08	18 29	5 23	17 46	5 44	18 09	5
7	6 13	18 43	6 09	18 40	6 07	18 35	6 08	18 34	5 52	18 17	6 12	18 37	6 22	18 46	6 01	18 29	6 08	18 28	5 24	17 45	5 44	18 07	7
8	6 14	18 42	6 10	18 38	6 08	18 34	6 08	18 32	5 52	18 15	6 13	18 36	6 23	18 45	6 02	18 28	6 08	18 27	5 24	17 44	5 45	18 06	8
9	6 15	18 41	6 11	18 36	6 08	18 32	6 09	18 31	5 53	18 15	6 13	18 35	6 23	18 44	6 02	18 27	6 07	18 26	5 24	17 43	5 45	18 05	9
10	6 15	18 39	6 11	18 35	6 09	18 31	6 09	18 30	5 53	18 13	6 14	18 34	6 23	18 43	6 03	18 26	6 09	18 25	5 25	17 42	5 46	18 04	10
11	6 16	18 38	6 12	18 34	6 09	18 29	6 10	18 29	5 54	18 12	6 14	18 33	6 23	18 42	6 03	18 24	6 09	18 24	5 25	17 41	5 46	18 03	11
12	6 16	18 37	6 12	17 33	6 10	18 28	6 10	18 28	5 54	18 11	6 14	18 31	6 23	18 41	6 04	18 23	6 10	18 23	5 25	17 40	5 46	18 02	12
13	6 17	18 36	6 13	18 31	6 10	18 27	6 11	18 27	5 55	18 10	6 15	18 30	6 24	18 40	6 04	18 22	6 10	18 22	5 25	17 39	5 47	18 01	13
14	6 17	18 34	6 13	18 31	6 11	18 26	6 11	18 00	5 55	18 09	6 15	18 29	6 24	18 38	6 05	18 21	6 10	18 21	5 26	17 38	5 47	18 00	14
15	6 18	18 33	6 13	18 30	6 11	18 24	6 12	18 00	5 55	18 08	6 16	18 28	6 25	18 37	6 05	18 19	6 10	18 20	5 26	17 38	5 47	17 59	15
16	6 19	18 32	6 14	18 28	6 12	18 23	6 12	18 00	5 56	18 06	6 16	18 27	6 25	18 36	6 06	18 18	6 10	18 19	5 26	17 37	5 48	17 58	16
17	6 19	18 30	6 15	18 25	6 12	18 22	6 13	18 22	5 56	18 05	6 17	18 26	6 26	18 35	6 06	18 17	6 11	18 18	5 26	17 36	5 48	17 57	17
18	6 20	18 29	6 15	18 25	6 13	18 21	6 13	18 21	5 57	18 04	6 17	18 25	6 26	18 34	6 07	18 16	6 11	18 17	5 27	17 35	5 49	17 56	18
19	6 20	18 28	6 16	18 24	6 13	18 19	6 14	18 20	5 57	18 03	6 17	18 23	6 27	18 32	6 07	18 14	6 11	18 16	5 27	17 33	5 49	17 55	19
20	6 21	18 26	6 17	18 22	6 14	18 18	6 14	18 19	5 58	18 02	6 18	18 22	6 27	18 31	6 08	18 13	6 11	18 15	5 27	17 32	5 49	17 53	20
21	6 22	18 25	6 18	18 20	6 14	18 17	6 15	18 18	5 58	18 01	6 18	18 21	6 28	18 30	6 09	18 12	6 12	18 14	5 27	17 31	5 50	17 52	21
22	6 22	18 24	6 18	18 19	6 15	18 16	6 15	18 17	5 58	18 00	6 19	18 20	6 28	18 29	6 09	18 11	6 12	18 13	5 28	17 30	5 50	17 51	22
23	6 23	18 23	6 18	18 19	6 16	18 14	6 16	18 16	5 59	17 58	6 19	18 19	6 29	18 28	6 10	18 09	6 13	18 12	5 28	17 29	5 50	17 50	23
24	6 23	18 21	6 19	18 18	6 16	18 13	6 16	18 14	5 59	17 57	6 20	18 18	6 29	18 27	6 10	18 08	6 13	18 11	5 28	17 28	5 51	17 49	24
25	6 24	18 20	6 20	18 15	6 17	18 12	6 17	18 13	6 00	17 56	6 20	18 17	6 30	18 26	6 11	18 07	6 14	18 10	5 29	17 28	5 51	17 48	25
26	6 25	18 19	6 20	18 14	6 17	18 11	6 17	18 12	6 00	17 55	6 20	18 15	6 30	18 24	6 11	18 06	6 14	18 09	5 29	17 27	5 52	17 47	26
27	6 25	18 17	6 21	18 13	6 18	18 09	6 18	18 11	6 01	17 54	6 21	18 14	6 31	18 23	6 12	18 04	6 14	18 08	5 29	17 26	5 52	17 46	27
28	6 26	18 16	6 21	18 12	6 18	18 08	6 18	18 09	6 01	17 53	6 21	18 13	6 31	18 22	6 12	18 03	6 14	18 07	5 29	17 25	5 53	17 45	28
29	6 27	18 15	6 22	18 10	6 19	18 07	6 19	18 08	6 02	17 52	6 22	18 12	6 32	18 21	6 13	18 02	6 15	18 06	5 30	17 24	5 53	17 43	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 02	17 51	6 22	18 11	6 32	18 20	6 13	18 01	6 15	18 05	5 30	17 23	5 53	17 43	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कलकत्ता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्तू	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	अक्तू
अक्तू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 02	17 49	6 23	18 10	6 33	18 19	6 14	17 59	6 15	18 04	5 32	17 21	5 54	17 42	अक्तू
2	6 28	18 11	6 24	18 07	6 21	18 03	6 20	18 05	6 03	17 48	6 23	18 09	6 33	18 18	6 15	17 58	6 15	18 03	5 32	17 20	5 54	17 40	2
3	6 29	18 10	6 25	18 05	6 21	18 02	6 21	18 03	6 03	17 47	6 24	18 08	6 34	18 16	6 15	17 47	6 16	18 02	5 32	17 19	5 54	17 39	3
4	6 30	18 08	6 25	18 04	6 22	18 01	6 21	18 01	5 04	17 46	6 24	18 06	6 34	18 15	6 16	17 56	6 16	18 01	5 33	17 18	5 55	17 38	4
5	6 30	18 07	6 25	18 02	6 22	18 00	6 22	17 00	5 04	17 45	6 25	18 05	6 35	18 14	6 16	17 55	6 17	18 00	5 33	17 17	5 55	17 37	5
6	6 31	18 06	6 26	18 02	6 23	17 58	6 23	17 59	5 05	17 44	6 25	18 04	6 35	18 13	6 17	17 53	6 17	17 59	5 33	17 16	5 55	17 36	6
7	6 32	18 05	6 27	18 00	6 23	17 57	6 24	17 58	5 05	17 43	6 26	18 03	6 36	18 12	6 18	17 52	6 18	17 58	5 34	17 15	5 56	17 35	7
8	6 32	18 03	6 27	18 00	6 24	17 56	6 24	17 57	5 06	17 42	6 26	18 02	6 36	18 11	6 18	17 51	6 18	17 57	5 34	17 14	5 57	17 34	8
9	6 33	18 02	6 27	17 59	6 25	17 55	6 25	17 56	5 06	17 42	6 27	18 01	6 37	18 10	6 19	17 50	6 18	17 56	5 34	17 13	5 57	17 33	9
10	6 34	18 01	6 29	17 57	6 25	17 54	6 25	17 55	5 07	17 40	6 27	18 00	6 37	18 09	6 19	17 49	6 18	17 56	5 35	17 12	5 57	17 32	10
11	6 34	18 00	6 30	17 55	6 26	17 53	6 26	17 54	6 07	17 39	6 28	17 59	6 38	18 08	6 20	17 48	6 19	17 55	5 35	17 11	5 58	17 31	11
12	6 35	17 59	6 30	17 55	6 27	17 51	6 26	17 53	6 08	17 38	6 28	17 58	6 38	18 07	6 21	17 46	6 19	17 54	5 36	17 10	5 58	17 30	12
13	6 36	17 57	6 31	17 54	6 27	17 50	6 27	17 52	6 08	17 37	6 29	17 57	6 39	18 06	6 21	17 45	6 19	17 53	5 36	17 09	5 59	17 29	13
14	6 36	17 56	6 32	17 52	6 28	17 49	6 27	17 51	6 09	17 36	6 29	17 56	6 40	18 05	6 22	17 44	6 20	17 52	5 36	17 09	5 59	17 28	14
15	6 37	17 55	6 33	17 51	6 29	17 48	6 28	17 50	6 09	17 35	6 30	17 55	6 41	18 04	6 23	17 43	6 20	17 51	5 37	17 08	6 00	17 27	15
16	6 38	17 54	6 33	17 50	6 29	17 47	6 28	17 49	6 10	17 34	6 30	17 54	6 41	18 03	6 23	17 42	6 20	17 50	5 37	17 07	6 00	17 27	16
17	6 39	17 53	6 33	17 49	6 30	17 46	6 29	17 48	6 10	17 33	6 31	17 53	6 42	18 02	6 24	17 41	6 21	17 49	5 38	17 06	6 01	17 26	17
18	6 39	17 52	6 34	17 48	6 30	17 45	6 30	17 47	6 11	17 32	6 31	17 52	6 42	18 01	6 24	17 40	6 21	17 49	5 38	17 05	6 01	17 25	18
19	6 40	17 50	6 35	17 48	6 31	17 44	6 31	17 46	6 12	17 31	6 32	17 51	6 43	18 00	6 25	17 39	6 22	17 48	5 38	17 05	6 01	17 24	19
20	6 41	17 49	6 35	17 46	6 32	17 43	6 31	17 45	6 12	17 30	6 33	17 50	6 43	17 59	6 26	17 38	6 22	17 48	5 39	17 04	6 02	17 23	20
21	6 42	17 48	6 36	17 45	6 32	17 42	6 32	17 44	6 13	17 29	6 33	17 49	6 44	17 58	6 26	17 37	6 23	17 47	5 39	17 03	6 03	17 22	21
22	6 42	17 47	6 37	17 44	6 33	17 41	6 33	17 43	6 13	17 28	6 34	17 48	6 45	17 57	6 27	17 36	6 23	17 46	5 40	17 02	6 03	17 21	22
23	6 43	17 46	6 38	17 42	6 34	17 40	6 34	17 42	6 14	17 27	6 34	17 47	6 46	17 56	6 28	17 35	6 24	17 45	5 40	17 01	6 04	17 20	23
24	6 44	17 45	6 39	17 42	6 35	17 39	6 34	17 41	6 15	17 26	6 35	17 47	6 46	17 55	6 29	17 34	6 24	17 44	5 41	170 1	6 05	17 20	24
25	6 45	17 44	6 40	17 41	6 35	17 38	6 35	17 40	6 15	17 25	6 36	17 45	6 47	17 54	6 29	17 33	6 25	17 43	5 41	17 00	6 05	17 19	25
26	6 45	17 43	6 40	17 39	6 36	17 37	6 35	17 39	6 16	17 25	6 36	17 45	6 47	17 53	6 30	17 32	6 25	17 42	5 42	16 59	6 06	17 18	26
27	6 46	17 42	6 41	17 38	6 37	17 36	6 36	17 38	6 16	17 24	6 37	17 44	6 48	17 52	6 31	17 31	6 26	17 42	5 43	16 59	6 06	17 17	27
28	6 47	17 41	6 42	17 37	6 37	17 35	6 36	17 37	6 17	17 23	6 37	17 43	6 48	17 51	6 31	17 31	6 26	17 41	5 43	16 58	6 07	17 16	28
29	6 48	17 40	6 42	17 37	6 38	17 34	6 37	17 36	6 18	17 22	6 37	17 42	6 49	17 51	6 31	17 30	6 27	17 41	5 43	16 57	6 07	17 16	29
30	6 49	17 39	6 43	17 36	6 39	17 35	6 38	17 35	6 19	17 21	6 39	17 42	6 50	17 50	6 33	17 28	6 27	17 40	5 44	16 57	6 08	17 15	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 10	17 14	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 09	17 14	नवं.
2	6 51	17 37	6 45	17 33	6 41	17 31	6 40	17 34	6 20	17 19	6 41	17 39	6 52	17 48	6 34	17 26	6 29	17 38	5 45	16 55	6 10	17 13	2
3	6 52	17 36	6 47	17 32	6 42	17 31	6 41	17 33	6 21	17 18	6 41	17 39	6 53	17 47	6 36	17 25	6 30	17 38	5 46	16 54	6 11	17 12	3
4	6 53	17 35	6 48	17 31	6 43	17 30	6 42	17 32	6 22	17 18	6 42	17 38	6 54	17 46	6 37	17 24	6 31	17 37	5 46	16 54	6 11	17 12	4
5	6 53	17 34	6 48	17 31	6 43	17 30	6 42	17 32	6 22	17 18	6 42	17 38	6 54	17 46	6 37	17 24	6 31	17 37	5 6	16 54	6 11	17 11	5
6	6 54	17 33	6 48	17 30	6 44	17 29	6 43	17 31	6 23	17 17	6 44	17 37	6 56	17 45	6 38	17 23	6 32	17 36	5 47	16 53	6 12	17 10	6
7	6 55	17 33	6 50	17 30	6 45	17 28	6 44	17 30	6 24	17 16	6 44	17 36	6 56	17 45	6 39	17 22	6 32	17 36	5 48	16 52	6 13	17 10	7
8	6 56	17 32	6 51	17 29	6 46	17 27	6 45	17 29	6 24	17 15	6 45	17 36	6 57	17 44	6 40	17 21	6 33	17 35	5 48	16 52	6 14	17 09	8
9	6 57	17 31	6 52	17 28	6 47	17 27	6 45	17 29	6 25	17 15	6 46	17 35	6 57	17 44	6 41	17 21	6 33	17 35	5 49	16 51	6 15	17 09	9
10	6 58	17 31	6 52	17 27	6 47	17 26	6 46	17 28	6 26	17 14	6 46	17 35	6 58	17 43	6 41	17 20	6 34	17 34	5 50	16 51	6 15	17 08	10
11	6 59	17 30	6 53	17 27	6 48	17 25	6 47	17 28	6 26	17 14	6 47	17 34	6 59	17 42	6 42	17 20	6 34	17 34	5 50	16 50	6 16	17 08	11
12	7 00	17 29	6 54	17 26	6 49	17 24	6 48	17 27	6 27	17 13	6 48	17 33	7 00	17 41	6 43	17 19	6 35	17 33	5 51	16 50	6 17	17 07	12
13	7 00	17 29	6 54	17 26	6 50	17 23	6 48	17 27	6 28	17 13	6 49	17 33	7 01	17 41	6 44	17 18	6 35	17 33	5 55	16 50	6 17	17 07	13
14	7 01	17 28	6 55	17 26	6 51	17 23	6 49	17 26	6 29	17 12	6 49	17 33	7 01	17 40	6 45	17 18	6 36	17 33	5 52	16 49	6 18	17 06	14
15	7 02	17 28	6 56	17 25	6 52	17 22	6 50	17 26	6 29	17 12	6 50	17 32	7 02	17 40	6 46	17 17	6 37	17 32	5 53	16 49	6 19	17 06	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 30	17 12	6 51	17 32	7 03	17 39	6 46	17 17	6 38	17 32	5 53	16 49	6 19	17 06	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 31	17 11	6 52	17 31	7 03	17 39	6 47	17 16	6 38	17 32	5 54	16 48	6 20	17 05	17
18	7 05	17 26	6 59	17 23	6 54	17 21	6 53	17 24	6 32	17 11	6 52	17 31	7 05	17 39	6 48	17 16	6 39	17 31	5 55	16 48	6 21	17 05	18
19	7 06	17 26	7 00	17 23	6 55	17 21	6 54	17 23	6 32	17 10	6 53	17 31	7 05	17 39	6 49	17 16	6 40	17 31	5 55	16 48	6 22	17 05	19
20	7 07	17 25	7 01	17 22	6 56	17 21	6 55	17 23	6 33	17 10	6 54	17 30	7 06	17 38	6 50	17 15	6 41	17 31	5 56	16 48	6 22	17 04	20
21	7 07	17 25	7 01	17 22	6 57	17 20	6 55	17 23	6 34	17 10	6 55	17 30	7 06	17 38	6 51	17 15	6 41	17 31	5 57	16 48	6 23	17 04	21
22	7 08	17 24	7 02	17 22	6 57	17 20	6 56	17 22	6 35	17 10	6 55	17 30	7 07	17 38	6 51	17 15	6 42	17 30	5 57	16 47	6 24	17 04	22
23	7 09	17 24	7 04	17 22	6 58	17 20	6 57	17 22	6 35	17 09	6 56	17 30	7 08	17 38	6 52	17 14	6 42	17 30	5 58	16 47	6 24	17 04	23
24	7 10	17 24	7 05	17 21	6 59	17 20	6 58	17 22	6 36	17 09	6 57	17 29	7 09	17 37	6 53	17 14	6 43	17 30	5 59	16 47	6 25	17 04	24
25	7 11	17 23	7 06	7 21	7 00	17 19	6 59	17 22	6 37	17 09	6 58	17 29	7 09	17 37	6 54	17 14	6 43	17 30	5 59	16 47	6 26	17 03	25
26	7 12	17 23	7 06	17 21	7 01	17 19	7 00	17 22	6 38	17 09	6 58	17 29	7 10	17 37	6 55	17 14	6 44	17 30	6 00	16 47	6 27	17 03	26
27	7 13	17 23	7 07	17 21	7 02	17 19	7 01	17 22	6 38	17 09	6 59	17 29	7 11	17 37	6 55	17 13	6 45	17 30	6 01	16 47	6 27	17 03	27
28	7 14	17 23	7 08	17 20	7 03	17 19	7 02	17 22	6 39	17 09	7 00	17 29	7 12	17 37	6 56	17 13	6 46	17 30	6 01	16 47	6 28	17 03	28
29	7 14	17 23	7 08	17 20	7 03	17 19	7 02	17 21	6 40	17 09	7 01	17 29	7 13	17 37	6 57	17 13	6 46	17 30	6 02	16 47	6 29	17 03	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 58	17 13	6 47	17 30	6 02	16 47	6 30	17 03	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 59	17 13	6 48	17 30	6 03	16 47	6 30	17 03	दिसं.
2	7 17	17 22	7 11	17 20	7 06	17 19	7 04	17 21	6 42	17 09	7 03	17 29	7 15	17 36	6 59	17 13	6 49	17 30	6 04	16 47	6 31	17 03	2
3	7 18	7 22	7 11	17 20	7 06	17 19	7 04	17 21	6 43	17 09	7 04	17 29	7 16	17 36	7 00	17 13	6 49	17 31	6 05	16 47	6 32	17 03	3
4	7 19	17 22	7 12	17 20	7 07	17 19	7 05	17 21	6 44	17 09	7 05	17 29	7 17	17 36	7 01	17 13	6 50	17 31	6 05	16 47	6 32	17 03	4
5	7 19	17 22	7 13	17 20	7 08	17 19	7 06	17 21	6 44	17 09	7 06	17 29	7 17	17 36	7 02	17 13	6 51	17 31	6 06	16 48	6 33	17 04	5
6	7 20	17 22	7 14	17 20	7 09	17 19	7 07	17 21	6 45	17 49	7 07	17 29	7 18	17 37	7 03	17 13	6 52	17 31	6 07	16 48	6 34	17 04	6
7	7 21	17 22	7 14	17 20	7 09	17 19	7 07	17 21	6 46	17 09	7 07	17 29	7 19	17 37	7 03	17 13	6 52	17 31	6 07	16 48	6 35	17 04	7
8	7 22	17 23	7 15	17 20	7 10	17 19	7 08	17 22	6 46	17 09	7 08	17 30	7 20	17 37	7 04	17 13	6 53	17 32	6 08	16 48	6 35	17 04	8
9	7 22	17 23	7 16	17 20	7 11	17 19	7 09	17 22	6 47	17 09	7 09	17 30	20	17 37	7 05	17 1B	6 53	17 32	6 09	16 48	6 36	17 04	9
10	7 23	17 23	7 17	17 20	7 12	17 19	7 10	17 22	6 48	17 10	7 09	17 30	7 21	17 37	7 06	17 14	6 54	17 32	6 09	16 49	6 37	17 05	10
11	7 24	17 23	7 18	17 20	7 12	17 19	7 10	17 22	6 49	17 10	7 09	17 30	7 22	17 37	7 06	17 14	6 54	17 33	6 10	16 49	6 37	17 05	11
12	7 25	17 23	7 19	17 21	7 13	17 20	7 11	17 23	6 49	17 10	7 10	17 30	7 23	17 38	7 07	17 14	6 55	17 33	6 11	16 49	6 38	17 05	12
13	7 25	17 24	7 19	17 21	7 14	17 20	7 12	17 23	6 50	10	7 11	17 31	7 23	17 38	7 08	17 14	6 56	17 33	6 11	16 50	6 38	17 05	13
14	7 26	17 24	7 20	17 21	7 14	17 20	7 13	17 23	6 50	17 11	7 11	17 31	7 24	17 39	7 08	17 15	6 57	17 33	6 12	16 50	6 39	17 06	14
15	7 27	17 24	7 21	17 22	7 15	17 21	7 13	17 24	6 51	17 11	7 12	17 31	7 24	17 39	7 09	17 15	6 57	17 34	6 12	16 50	6 40	17 06	15
16	7 27	17 25	7 22	17 22	7 16	17 21	7 14	17 24	6 52	17 12	7 13	17 32	7 25	17 39	7 10	7 15	6 58	17 34	6 13	16 51	6 41	17 06	16
17	7 28	17 25	7 22	17 22	7 16	7 21	7 14	17 24	6 52	17 12	7 13	17 32	7 25	17 39	7 10	17 16	6 58	17 34	6 14	16 51	6 41	17 07	17
18	7 28	17 25	7 23	17 23	7 17	17 22	7 15	17 25	6 53	17 12	7 14	17 32	7 26	17 40	7 11	17 16	6 59	17 35	6 14	16 51	6 41	17 07	18
19	7 29	17 26	7 23	17 23	7 17	17 22	7 15	17 25	6 53	17 13	7 14	17 33	7 26	17 40	7 11	17 17	6 59	17 35	6 15	16 52	6 42	17 08	19
20	7 30	17 26	7 24	17 23	7 18	17 23	7 16	17 26	6 54	17 13	7 14	17 33	7 27	17 41	7 12	17 17	7 00	17 36	6 15	16 52	6 42	17 08	20
21	7 30	17 27	7 24	17 24	7 18	17 23	7 16	17 26	6 55	17 14	7 15	17 34	7 27	17 41	7 12	17 17	7 01	17 36	6 15	16 53	6 43	17 09	21
22	7 13	17 27	7 25	17 25	7 19	17 14	7 17	17 27	6 55	17 14	7 16	17 34	7 28	17 42	7 13	17 18	7 01	17 37	6 16	16 53	6 44	17 09	22
23	7 31	17 28	7 25	17 25	7 19	17 24	7 17	17 27	6 55	17 15	7 16	17 35	7 28	17 42	7 13	17 18	7 02	17 37	6 17	16 54	6 44	17 10	23
24	7 32	17 28	7 25	17 26	7 20	17 25	7 18	17 28	6 56	17 15	7 17	17 35	7 29	17 43	7 14	17 19	7 02	17 38	6 17	16 54	6 45	17 10	24
25	7 32	17 29	7 25	17 26	7 20	17 26	7 18	17 28	6 56	17 16	7 17	17 36	7 29	17 43	7 14	17 20	7 03	17 38	6 18	16 55	6 45	17 11	25
26	7 32	17 29	7 26	17 27	7 21	17 26	7 19	17 29	6 57	17 16	7 18	17 37	7 30	17 44	7 15	17 20	7 03	17 39	6 18	16 55	6 45	17 11	26
27	7 33	17 30	7 26	17 27	7 21	17 27	7 19	17 29	6 57	17 17	7 18	17 37	7 30	17 44	7 15	17 21	7 03	17 39	6 19	16 56	6 45	17 21	27
28	7 33	17 31	7 27	17 28	7 21	17 27	7 20	17 30	6 58	17 17	7 18	17 38	7 30	17 45	7 15	17 21	7 04	17 40	6 19	16 57	6 46	17 12	28
29	7 33	17 31	7 27	17 28	7 22	17 28	7 20	17 30	6 58	17 18	7 19	17 38	7 30	17 45	7 16	17 22	7 04	17 40	6 19	16 57	6 47	17 13	29
30	7 34	17 32	7 28	17 29	7 22	17 28	7 21	1731	6 58	17 19	7 19	17 39	7 31	17 47	7 16	17 23	7 04	17 41	6 20	16 58	6 47	17 14	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	6 59	17 19	7 20	17 40	7 31	17 47	7 16	17 23	7 05	17 41	6 20	16 58	6 47	17 14	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोत्तरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करें॥

उदाहरण— यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अत: **५ दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।**

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२१		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से **ज्योतिष तत्त्व** मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृ. उ. फा. उ. षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा.पू. भा.				पुष्य. अनु.उ. भा. ५७			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूला. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि			पुष्य विशा शत.			श्ले. अनु. पूभा. अश्वि		

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उभा. भर.			पूफा मूला रेव कृति			उफा. पूषा रोह			हस्त उषा मृग		

योगिनी दशा विचार—योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा—ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि—अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ—यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा—अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा—मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**— पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि—जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा** और **अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत—विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर-दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र—6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	6
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	16	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	16	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	?	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि की महादशा में शनि आदि अन्तर्दशाओं के फल

गत वर्षों में हम सूर्य, चन्द्र, राहु एवं गुरु ग्रहों की महादशा में अन्य ग्रहों की अन्तर्दशाओं का फल दिया गया था। इस बार शनि एवं बुध की महादशा में अन्तर्दशाओं का फल दे रहे हैं। अधिक व सम्पूर्ण जानकारी के लिए **'ज्योतिष तत्त्व'** फलित खण्ड द्वितीय भाग पढ़ें।

शनि मध्ये शनि का अन्तर—शनि उच्च या स्वराशि एवं केन्द्र-त्रिकोण व ११वें भाव में हो, तो शनि की अन्तर्दशा में जातक को उच्च पद की प्राप्ति, पारिवारिक सुख, कृषि, तेल, लोहादि के क्रय-विक्रय से धन लाभ, विदेशी भाषा एवं सभ्यता की ओर झुकाव, स्त्री एवं सन्तान सुख, आध्यात्म, मंत्र-तंत्र आदि विद्याओं की ओर रूचि, जायदाद एवं सवारी आदि सुख व उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क होते हैं। यदि शनि नीच या पाप युक्त होकर 1,5,7,8, या 12वें भाव में हो, तो शरीर कष्ट, बन्धुओं से क्लेश, धन का अपव्यय तथा बनते कामों में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।

शनि मध्ये बुध का अन्तर—बुध केन्द्र-त्रिकोण में शुभस्थ हो, तो इस दशा काल में उच्च विद्या में सफलता, कम्पयूटर, शिल्प या किसी अन्य तकनीकी विद्या के क्षेत्र में सफल, बौद्धिक कार्यों में रूचि, पदोन्नति, स्त्री एवं सन्तान एवं पारिवारिक सुखों में वृद्धि, ज्योतिष, आध्यात्म आदि विद्या में रूचि, नए-नए प्रतिष्ठित मित्रों के साथ सम्पर्क, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति तथा कार्य-व्यवसाय में धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। बुध महादशेश (शनि) से ६, ८ या १२वें भाव में हो, तो किसी निकटस्थ बन्धु या मित्र द्वारा विश्वासघात हो, पारिवारिक परेशानियां, बनते कार्यों में विघ्न, वात, पित्त, कफ़ादि के कारण शरीर कष्ट, त्वचा, रोगादि का भय रहे।

शनि मध्ये केतु का अन्तर—शनि व केतु शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर केतु शुभ भावों (3,5,9,11) में हो, तो जातक को शेयर, लाटरी आदि कार्यों से अकस्मात् धन लाभ, नवीन कार्य में रूचि, स्थानान्तरण या विदेशादि यात्रा से लाभ, इस दशा में जातक रहस्यपूर्ण एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग भी करता है। यदि शनि व केतु में 1,4,7,8 व 12वें का परस्पर सम्बन्ध हो, तो जातक की नीच एवं दुष्ट लोगों के साथ कलह, बुरे स्वप्न, अज्ञात भय, धन हानि, वात-पित्त के कारण शरीर में विकार, पारिवारिक सदस्यों के साथ विवाद, सर्प भय, ज्वर आदि अशुभ बातें घटित होती हैं।

शनि मध्ये शुक्र का अन्तर—शुक्र यदि उच्च या स्वराशि का केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो इस दशा में रत्न, आभूषण, स्त्री-संतान एवं वाहनादि के सुख प्राप्त हों। क्रय-विक्रय द्वारा धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। जातक की किसी नवीन कार्य करने में रूचि, कामासक्ति, संगीत, कला, साहित्य आदि एवं पेय पदार्थों पर खर्च होगा। यदि शुक्र शनि से या लग्न से 1,4,6,8 या 12वें नीच, शत्रु राशि या अस्तंगत हो, तो स्त्री कष्ट, स्थान परिवर्तन, धन हानि, कन्या सन्तति का जन्म, अपव्यय, ज्वर, पीड़ा आदि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये सूर्य का अन्तर—सूर्य यदि उच्च या स्वराशि का, शनि से केन्द्र-त्रिकोण स्थानादि में हो, तो जातक के उत्साह एवं पराक्रम में वृद्धि, संतान सुख, पिता, आत्मीयजनों एवं भाई-बन्धुओं से सहयोग तथा लाभ प्राप्त हो। पुत्र प्राप्ति के योग, परिवर्तन एवं पदोन्नति के योग बनते हैं। यदि सूर्य लग्न या शनि से 1,6,8 या 12वें भाव में नीचस्थ हो, तो जातक को स्थान हानि, घरेलू कलह-क्लेश, प्रियजन से वियोग, वृथा खर्च, नेत्र रोग, तनाव, शरीर कष्ट, दौड़धूप आदि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये चन्द्र का अन्तर—चन्द्रमा यदि स्वराशि या उच्च राशिस्थ शुभ ग्रह गुरु से दृष्ट होकर केन्द्र त्रिकोण में हो, तो इस दशा में सौभाग्य में वृद्धि, माता-पिता का सुख, धन लाभ के अवसर, स्त्री एवं संतान सुख होता है। परन्तु यदि चन्द्रमा पाप ग्रह से युत या दृष्ट होकर क्षीण बली हो, तो माता-पिता सम्बन्धी कष्ट, शारीरिक एवं मानसिक तनाव, धन हानि, असन्तोष, वात, कफ़ादि रोगों के कारण कष्ट आदि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये मंगल का अन्तर—मंगल स्वराशि, उच्च राशि, केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें हो, तो इस अन्तर्दशा में भूमि, मकान, वाहनादि की प्राप्ति, धातु, लोहे, तेल, रबड़ आदि से सम्बन्धित व्यवसाय में लाभ परन्तु प्रत्येक कार्य अत्यन्त संघर्ष एवं कठिनाईयों के पश्चात् ही सफल हो पाता है। यदि मंगल नीच, शत्रु अथवा अस्तंगत, वक्री हो, तो अवांछित स्थान में परिवर्तन, अग्नि एवं शत्रु से भय, वात और रक्त-विकार से रोग, नज़दीकी बन्धुओं से झगड़ा, शत्रुओं में वृद्धि, अपव्ययादि अशुभ फल होते हैं।

शनि मध्ये राहु का अन्तर—राहु यदि अशुभ भावस्थ हो तो इस अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, निकट बन्धुओं एवं मित्रों से कलह-क्लेश, धन हानि, स्थान परिवर्तन, किसी प्रिय-बन्धु से वियोग एवं बनते कामों में बाधाएँ, गुप्त रोग का भय, ऋण लेने की नौबत तथा नीचजनों के साथ संगति एवं व्यसन आदि में रूचि बनती है। यदि राहु स्वराशि या उच्चक्षेत्री हो, तो धन लाभ, वाहनादि सुखों की प्राप्ति अथवा विदेश आदि यात्राओं में सफलता मिलती है।

शनि मध्ये गुरु का अन्तर—यदि गुरु स्वराशि, उच्च राशि में शुभ ग्रहों से युक्त होकर केन्द्र त्रिकोण एवं 11वें स्थान में शुभस्थ हो, तो सोची हुई कामनाओं में सफलता, कुछ नवीन कार्यों के करने की जिज्ञासा बने। उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, धन लाभ, भूमि, कृषि, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति, पश्चिमोत्तर दिशा में यात्रा, लौहादि धातुओं, पत्थर, लकड़ी आदि से सम्बन्धित व्यापार से अच्छा लाभ हो। स्त्री व संतान सुख की प्राप्ति, धर्म एवं परोपकार की भावना में वृद्धि होती है। यदि गुरु अस्तंगत, नीच या पाप ग्रह से युत होकर 6,8,12वें स्थान में हो, तो धन सम्पदा की हानि, बनते कार्यों में विघ्न, भाई-बन्धुओं से विरोध, शरीर कष्ट एवं संतान सम्बन्धी चिन्ता होगी।

बुध की महादशा में बुधादि अन्तर्दशाओं का फल

बुध में बुध का अन्तर—बुध स्वराशि, उच्चादि होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो बुध की अन्तर्दशा में उच्च विद्या में सफलता, पदोन्नति, प्रिय मित्र से मुलाकात, स्त्री व संतान सुख, धन लाभ, नवीन विद्या एवं नए कार्य में रूचि, ज्योतिष, मंत्र, तन्त्र एवं परोपकार, धर्मादि कार्यों में प्रवृत्ति होती है। बुध नीच राशि या पाप ग्रह युत होकर 6,8 या 12वें स्थान में हो, तो अकस्मात् धन हानि, स्त्री, सन्तान के सम्बन्ध में कष्ट, किसी निकट बन्धु के कारण दुख, वात-पित्त, कफ़ आदि के कारण त्वचा रोग एवं शरीर कष्ट, वृथा खर्च आदि अशुभ फल होते हैं।

बुध मध्ये केतु का अन्तर—केतु शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो इस दशा में अत्यन्त संघर्ष के बाद धन लाभ प्राप्ति, उच्च विद्या में सफल, सर्विस या व्यवसाय द्वारा निर्वाह योग्य आय के साधन बनते हैं। जातक गुप्त युक्तियों द्वारा शेयरों, लाटरी, क्रय-विक्रय द्वारा लाभ प्राप्त करने में सफल होता है। किसी नवीन कार्य में रूचि, नए-नए मित्रों के साथ सम्बन्ध बनते हैं। यदि केतु बुध से 6,8 या 12वें भाव में हो, पाप ग्रह से युक्त हो, तो जातक को आय कम तथा खर्च अधिक रहे, परिवाह में कलह-क्लेश, धन हानि, ऋण लेने की सम्भावना, सवारी आदि से दुर्घटना या चोटादि का भय तथा बनते कार्यों में विघ्न पैदा हों।

बुध मध्ये शुक्र का अन्तर—कुण्डली में शुक्र शुभस्थ हो, तो उच्च विद्या में सफलता, कम्पयूटर, सिनेमा, संगीत, कला आदि के क्षेत्रों में विशेष रूचि बढ़े, व्यवसाय (या क्रय-विक्रय) से धन लाभ, सौभाग्य एवं सौन्दर्यानुभूति अधिक रहे, स्त्री एवं सन्तान (कन्या सन्तति) का सुख हो, सुन्दर वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधन, सुन्दर आवास एवं वाहनादि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति, दक्षिणोत्तर दिशा में जाने से लाभ रहे। बुध से शुक्र की स्थिति 6,8, या 12वें स्थान में हो अथवा शुक्र नीच एवं अस्तंगत हो, तो लाभ कम खर्च अधिक, स्त्री को कष्ट अथवा सुख में कमी, किसी प्रिय बन्धु से विरोध, विलासादि कार्यों पर खर्च की अधिकता आदि अशुभ फल होते हैं।

बुध मध्ये सूर्य का अन्तर—सूर्य उच्च, स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण एवं 11वें भाव में हो, तो जातक पराक्रमी, उद्यमी, भूमि, जायदाद से धन लाभ प्राप्त करने वाला, पिता एवं भाई-बन्धुओं के सुखों से युक्त, उच्च प्रतिष्ठित एवं सौभाग्यवान, मकान एवं सवारी आदि वाहनों के सुखों से युक्त, धर्म-कार्यों एवं परोपकारी कार्यों में रूचि, परन्तु यदि सूर्य महादशा स्वामी से 12वें स्थान में हो, तो जातक को व्यवसाय में धन हानि, शिर पीड़ा, नेत्र एवं पित्तजन्य रोग एवं भाई-बन्धुओं एवं मित्रों के साथ वैमनस्य होता है।

बुध मध्ये चन्द्रान्तर—चन्द्र स्वराशि, उच्चस्थ या शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो जातक को उच्च तकनीकी विद्या में लाभ, माता का सुख, विविध साधनों द्वारा धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त हो। स्त्री एवं कन्या संतान सुख, सवारी आदि सुखों की भी प्राप्ति हो। व्यवसाय अथवा नौकरी में लाभ व उन्नति के अवसर मिलें। चन्द्रमा यदि क्षीण होकर बुध से 6,8 या 12वें हो, तो धन हानि, बनते कार्यों में विघ्न-बाधाएँ, माता को कष्ट, निकट बन्धुओं से मनमुटाव, कफ़, पित्तादि के कारण शरीर कष्ट, नेत्र विकार, त्वचा रोग, मस्तिष्क एवं कण्ठ में पीड़ा तथा मन में अशान्ति होती है।

बुध मध्ये मंगल का अन्तर—मंगल उच्च, स्वराशि एवं शुभ ग्रहों से युत होने पर इस उपदशा में भूमि, धन, मकान, मान-सम्मान, विद्या लाभ, संतान, स्वास्थ्य एवं धन लाभ, उद्यम व पुरुषार्थ से लाभ, भाई-बहिनों एवं मित्रों से सुख होता है। यदि नीच, अस्त या वक्री हो, तो गृह में कलह-क्लेश, है।

बुध मध्ये राहु का अन्तर—राहु उच्च राशि या 3,6,10,11वें स्थान पर हो, तो व्यवसाय में उन्नति, शेयर, लाटरी आदि से अकस्मात् लाभ, प्रिय बन्धु से सुख, समाज में मान-प्रतिष्ठा व सम्मान, सवारी सुख, विदेश में लाभ और कीर्ति प्राप्त होती है। राहु यदि नीच राशि या बुध से अशुभ स्थानों पर हो, तो शरीर कष्ट, धन हानि, बुद्धि में विक्षिप्तता, प्रिय बन्धु से वियोग, नीच लोगों द्वारा बनते कार्यों में अड़चनें, ऋण तथा गुप्त रोगों की सम्भावना होती है। नेत्र, मस्तिष्क, उदर एवं त्वचा (चर्म) सम्बन्धी विचित्र रोगों का भी भय होता है।

बुध मध्ये गुरु का अन्तर—गुरु उच्च, स्वराशि या शुभ ग्रहों से युत होकर केन्द्र-त्रिकोण आदि में हो, तो विद्या में सफलता, धन लाभ, श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ सम्पर्क, धर्म एवं परोपकार में प्रवृत्ति, ज्योतिष, मंत्रादि विषयों में भी रूचि होती है। यदि गुरु 6,8,12वें होकर नीच अथवा पाप ग्रह युक्त हो, तो मानसिक तनाव, आत्मीयजनों के साथ विरोध एवं अपमान, बनते कार्यों में विघ्न, धन हानि तथा परिस्थितियों के प्रति असंतोष बढ़ता है। वात, कफ़ादि से पेट विकार एवं कर्ण पीड़ा होती है।

बुध मध्ये शनि का अन्तर—शनि यदि उच्च एवं स्वराशि का होकर केन्द्र-त्रिकोण में हो, तो उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, धर्म एवं आध्यात्म विद्या की ओर प्रवृत्ति, विदेश यात्रा, धन, वाहन एवं पारिवारिक सुखों में वृद्धि, व्यवसाय में क्रय-विक्रय द्वारा लाभ की स्थिति बनती है। यदि शनि नीच, या वक्री तथा अशुभ भावस्थ हो, तो अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, आर्थिक परेशानी, भाई-बन्धुओं एवं परिवार के सम्बन्ध में परेशानी, बनते कार्यों में रूकावटें, पारिवारिक कलह-क्लेश, वात, कफ़ एवं चर्म, गुप्त रोग और क्लिष्ट रोग एवं शत्रु भय आदि अशुभ फल होते हैं।

भाग्योदय देखने का चक्र

यदि आपको किसी व्यक्ति के भाग्य का फल जानना हो, तो उस व्यक्ति को कहें कि वह व्यक्ति 1 से 31 की संख्या के भीतर कोई भी अंक मन में सोच ले। तदुपरान्त उसको पूछें कि नीचे लिखे A से लेकर E तक के पाँच यन्त्रों में से किस-किस यन्त्र में उसका सोचा हुआ अंक विद्यमान् है। जिस-जिस यन्त्र में अमुक व्यक्ति का सोचा हुआ अंक मिले, उस यन्त्र के दाईं तरफ के सबसे ऊपर के कोने वाले पहले हिन्दसों को परस्पर जमा कर लेने से व्यक्ति विशेष के मन में सोची हुई संख्या पता लग जाएगी। उस अंक की संख्या के आधार पर व्यक्ति के '**भाग्य का फल**' आगे लिखे अनुसार जानें—

उदाहरण—मान लो किसी मनुष्य ने अपने मन में 22 का अंक सोचा है। अब देखो कि यह 22 का अंक खाना नं० A, B, C, D, E में कहाँ मिलता है। अब इन यन्त्रों B, C, E के ऊपर के दायें कोनें के अंकों 2 + 4 +16 को जोड़ो तो 22 का जोड़ बनता है। अत: प्रश्नकर्त्ता ने 22 का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। इसी भान्ति अन्य अंकों के बारे में भी विचार करें।

नं० A

7	5	3	1
15	13	11	9
17	19	21	23
25	27	29	31

नं० B

7	6	3	2
15	14	11	10
23	22	19	18
31	30	27	26

नं० C

30	29	28	4
22	21	20	23
15	13	12	14
5	6	7	31

नं० D

30	10	28	8
26	25	24	31
14	13	12	27
9	29	11	15

नं० E

29	30	31	16
26	25	24	20
21	22	23	27
17	18	19	28

(1) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुमकों इस का ध्यान भी न होगा। (2) धैर्य रखें, भाग्योदय होने वाला है। फिर भी प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहें। (3) किसी ऐसे साधन द्वारा तुम्हारी आशा पूर्ण होगी जिसका आपको ध्यान भी नहीं होगा। (4) जिस गुप्त चिन्ता के लिए आप परेशान हो, उसकी सफलता के लिए अभी कुछ विलम्ब हो सकता है, अपना पुरुषार्थ जारी रखें। (5) आपके लिए खुशी का समय आने वाला है, धैर्य रखें। सूर्य उपासना करना शुभ होगा। (6) घबराओ नहीं, तुम्हारी बेहतरी का साधन (ईश्वर कृपा से) शीघ्र निकल आएगा। (7) आपकी मुश्किलों का हल माता-पिता के आशीर्वाद से ही निकल पाएगा। (8) तुम्हारे भाग्य में धन-सम्पत्ति का सुख लिखा है, किन्तु विशेष परिश्रम करना होगा, लक्ष्मी चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा। (9) थोड़े दिनों में आपके सामने विदेश यात्रा सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जाएगा, इसको स्वीकृति देने से पहले गम्भीरता से विचार करना उचित होगा। (10) इस समय आपका भाग्य गर्दिश में है, विशेष पुरुषार्थ एवं शिव उपासना करने से सफलता मिलेगी। (11) आपके संघर्ष और परेशानियों का समय बीत गया है, आने वाले दिनों में धन-लाभ एवं सुख के साधन बढ़ेंगे। (12) उतावलेपन से बनते काम बिगड़ सकते हैं। धीरज से काम लें, धीरे-धीरे ही बिगड़े कामों में सुधार आएगा। (13) किसी प्रिय बन्धु के सहयोग से बिगड़ा हुआ कोई विशेष काम बनेगा। (14) अभी बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। मानसिक तनाव व उद्विग्नता से बचें। (15) भाग्य में अभी कशमकश रहेगी। लगभग अढ़ाई महीने बाद सुधार के योग हैं। (16) ईश्वर पर भरोसा रखो, लगभग दो महीने बाद भाग्य में परिवर्तन होने के संकेत मिलते हैं। (17) अभी सितारे गर्दिश में है, लगभग डेढ़ मास बाद हालात में सुधार होगा। (18) अनावश्यक चिन्ता एवं तनाव से बचें, अच्छा समय आने वाला है। (19) उत्साहपूर्वक कर्म करते रहें, भाग्य में परिवर्तन व शुभ लाभ के योग पाए जाते हैं। (20) अपने भाग्य एवं पुरुषार्थ पर भरोसा रखें, मनोवांछित कार्यों में सफलता मिलने वाली है। (21) वर्तमान काल में आपके भाग्य के सितारे गर्दिश में है। लगभग एक मास बाद हालात में सुधार के योग हैं। (22) विदेश गमन सम्बन्धी विचार बनेगा। व्यवसाय में कुछ परिवर्तन के योग हैं। (23) आर्थिक परेशानियों के कारण तनाव होगा, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में लाभ व उन्नति के योग हैं। (24) वर्तमान में समय संघर्षपूर्ण होगा। निकट भविष्य में मनोवांछित कार्यों में सिद्धि प्राप्ति होने के संकेत हैं। (25) किसी अंतरंग मित्र की सहायता से कोई बिगड़ा काम बनेगा। अचानक धन लाभ भी होगा। (26) वृथा कामों में समय न गंवाओ, आने वाले दो महीनों में लाभ व उन्नति के योग हैं। (27) व्यर्थ की चिन्ता न करें, लगभग डेढ़ मास बाद भाग्य में सुखद परिवर्तन होने के आसार हैं। (28) उत्साह से अपने कर्त्तव्य पालन में लगे रहें, लगभग दो मास में भाग्य में शुभ परिवर्तन होने वाला है। (29) संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण मन अशान्त रहेगा। लगभग अढ़ाई मास बाद आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। (30) अपने निश्चय पर दृढ़ रहें, लगभग डेढ़ मास आर्थिक कामों में सुधार होगा। (31) वर्तमान परिस्थितियां संघर्षपूर्ण होंगी। कार्य-व्यवसाय में परिवर्तन के बाद सफलता प्राप्त होगी।

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती है। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातः काल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता	कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद	गर्भपात	गम्भीर रोग	ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक	ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख	कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले	घूंघट देखना	नया कारोबार	जुआ खेलना	धन हानि	तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति	कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो	घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता	जेब काटना	धन हानि	तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
अन्धेरा देखना	दुःख मिले	कबूतर देखना	शुभ समाचार	घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा	जड़ें देखना	दीर्घायु	तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता	काला नाग	राज्य सम्मान	घायल देखना	संकट से मुक्त होना	जड़ें काटना	संकट का सूचक	तैरते देखना	आयु में वृद्धि
अर्थी देखना	रोग मुक्त	किला देखना	तरक्की पाना	घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो	जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की	तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग	कोढ़ी देखना	रोग सूचक	घडी देखना	यात्रा का संकेत	झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले	तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
आकाश देखना	तरक्की होना	कन्या देखना	तीर्थ यात्रा	घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक	झाड़ू देखना	नुकसान हो	तीर मारना	खुशी मिले
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ	कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा	चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ	झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ	तूफान देखना	परेशानी बढ़े
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि	कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो	चरखा देखना	आर्थिक लाभ	झांकी देखना	अशुभ	तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो	कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी	चावल खाना	शुभ समाचार	झोली देखना	विजय संकेत	तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
आत्महत्या करना	दीर्घायु	कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो	चोर देखना	धन प्राप्ति	झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक	तोता देखना	धन लाभ
आलू देखना	मुसीबत आना	कोयल देखना	कोई शुभ समाचार	चादर देखना	बदनामी हो	झरना देखना	दुःख दूर हों	तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह	कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता	चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद	टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना	तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो	कबाब खाना	अपयश/विवाद	चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत	टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि	तराजू देखना	व्यापार लाभ
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख	कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि	चीखें मारना	परेशानी व कष्ट	टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति	ताली बजाना	खुशी मिले
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति	खून करना	संकट आना	चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक	टेलीफोन करना	शुभ समाचार	ताश खेलना	व्यापार लाभ
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की	खिलौना देखना	सुख शान्ति	छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद	टापू देखना	संकट लक्षण	ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
ईंजन देखना	योजनाएं असफल	खरबूजा देखना	धन लाभ	छिपकली देखना	अचानक धन लाभ	टोपी देखना	प्रगति हो	तरबूज देखना	परेशानी
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति	खेत देखना	संकट पूर्ण	छींकना	कार्य बाधा	ठग मिलना	धन हानि	तांगा देखना	झगड़ा हो
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य	खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप	छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा	ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य	थूक देना	परेशानी बढ़े
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन	गुरु देखना	कार्य सफलता	छपाई देखना	अपमानित होना	ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक	थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो	गोबर देखना	पशु लाभ हो	छंटनी देखना	पदोन्नति	ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति	थप्पड़ खाना	शुभ
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले	गंगा देखना	शेष जीवन सुखी	जख्म देखना	परेशानियां	डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति	धन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
ऊँट देखना	अंग घात	ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता	जादूगर देखना	अशुभ लक्षण	डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना	दूध पीना	खुशी प्राप्ति
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान	गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण	जहाज देखना	परेशानी दूर हो	डोली देखना	कोई परेशानी हो	दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
ऐनक देखना (काली)	निराशा	गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो	जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति	डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो	दही देखना	सफलता
कमल देखना	धन प्राप्ति	गरीबी देखना	सुख समृद्धि	जल देखना	मान सम्मान	डाकू देखना	धन हानि	दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दक्षिणा देना	मंगल कार्य
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व दखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दु:ख दूर हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मधुमक्खी देखना	व्यापार वृद्धि
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दु:ख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	चिन्ता, हानि
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीयं ॥

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
अश्विनी १	रोग दिन संख्या ०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवेद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्रचयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ।५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसत्रृतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्लया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नंहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण				कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	१	२	३	४						
स्वाती १५	रोग दिन संख्या ६०	 १७	 ३०	 ००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमवितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु– वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीडा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र– –पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः शृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा– –द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्य पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीडा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पूफा	उफा	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूला	श्रव०	पूभा	अश्वि	रोहि
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वाती	पूषा	उषा	उभा	रेवती	मृग

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

मंत्रं को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से	पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१ मा १ व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रात: समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२ मा ०२ व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३ मा ०३ व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४ मा ०४ व ०४	१ मुखर्मंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्ब के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५ मा ०५ व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशो: स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६ मा ०६ व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७ मा ०७ व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गो श्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८ मा ०८ व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९ मा ०९ व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १० मा १० व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११ मा ११ व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप.देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२ मा १२ व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गो श्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो मंगल, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—**सूर्य** के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, राहु के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९
गुप्त मित्र	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११
प्रत्यक्ष शत्रु	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७
गुप्त शत्रु	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुनः जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। "सूर्य सिद्धान्तानुसार" उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से '**वर्षफल चन्द्रिका**' लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे।

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में—**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुन: उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुन: उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्पयूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 3	22	44
	8	28	14
अर्थात् (रविवार)	1 वार	4	14

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि—आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे,** सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रात: साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2005 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2005 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 31 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 31 के सामने हमें 3 वार, 22 घण्टे एवं 44 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार 28 घण्टे, 14 मिनट प्राप्त हुए। अब 28 घण्टों में से 24 घं. घटा देने और 1 वार बढ़ा देने से हमें 8 वार अर्थात् रविवार की प्रात: 4 बजकर, 14 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की मध्य रात्रि एवं 2 अक्तू. की प्रात: 4 बजकर 14 पर हमें **सिंह वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न सिंह में सं. २०६२ की पंचांग से 2 अक्तू. 2005 ई. प्रात: 4/14 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी फरवरी

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

मार्च — दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अप्रैल — दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्ट. टा. समाप्ति काल दिल्ली

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी

	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जुलाई ता.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अगस्त ता.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दैनिक लग्न सारिणी सितम्बर मा. स्टै. टा.

ता.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्तू	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

ता.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होता है। **चन्द्रमा की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्दमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**—विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**—पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र

वार	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।।चौघड़ियां मुहूर्त।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।।चौघड़ियां मुहूर्त।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त १ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते हैं। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**—सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

श्री गंगा स्नान की महिमा

भगवान् शङ्कर ने अपने मस्तक पर गङ्गा जी को धारण कर रखा है। गंगा जी द्रवके रूप में भगवान् सदाशिव की कोई परा शक्ति है। करुणारूपी अमृतरस से भरे हुए देवाधिदेव भगवान् शंकर ने समस्त संसार का उद्धार करने के लिये ही गंगा जी को प्रवृत्त किया है। गंगाधर शिव ने दयावश श्रुतियों के अक्षरों को निचोड़कर उस ब्रह्मद्रव से ही गंगा का निर्माण किया है। जो गंगा जी के तट की मिट्टी को अपने मस्तक लगाता है, उसका अज्ञानान्धकार नष्ट हो जाता है। गंगा अपने नाम का कीर्तन करने से पुण्य की बुद्धि और पाप का नाश करती है। दर्शन, स्पर्श, जलपान तथा उसमें स्नान करने से क्रमशः दसगुना फल होता है।

ऋषियों द्वारा सेवित, भगवान् विष्णु के चरणों से उत्पन्न, अति प्राचीन तथा परम पुण्यमयी धारा से युक्त भगवती गंगा जी की जो लोग मन से शरण लेते हैं, वे ब्रह्मधाम प्राप्त होते हैं। जो माता की भांति इस संसार के जीवों को पुत्र मानकर सदा उन्हें स्वर्गलोक को पहुंचाती है और सम्पूर्ण उत्तम गुणों से सम्पन्न है, उत्तम ब्रह्मलोक की इच्छा रखने वाले जितेन्द्रिय पुरुषों को सदा ही उस गंगा की उपासना करनी चाहिये। जैसे ब्रह्मलोक सब लोकों में उत्तम है, उसी प्रकार गंगा समस्त सरिताओं और सरोवरों से श्रेष्ठ है।

गंगा के जल में स्नान करने वाले पुरुष का समस्त पातक तत्काल नष्ट हो जाता है और उसे उसी क्षण महान् श्रेय की प्राप्ति हो जाती है। गंगा में पुत्र-पौत्र आदि यदि अपने पितरों के लिए श्रद्धापूर्वक जल देते है, तो उस जल से वे पितर तीन वर्षों तक पूर्णतया तृप्त रहते हैं।

जैसे मन्त्रों में ॐकार, धर्मों में अहिंसा और कमनीय वस्तुओं में लक्ष्मी श्रेष्ठ हैं तथा जिस प्रकार विद्याओं में आत्मविद्या और स्त्रियों में गौरी देवी उत्तम हैं, उसी प्रकार सम्पूर्ण तीर्थों में गङ्गातीर्थ विशेष माना गया है। गंगास्नान धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चारों पुरुषार्थों में सिद्धि करके मोक्ष प्रदान करता है।

गंगास्नान करने के लिए विशेष रूप से तिथि, नक्षत्र और पूर्व आदि दिशा का विचार नहीं करना चाहिए, क्योंकि गंगा में स्नान करने मात्र से समस्त संचित पाप का नाश हो जाता है। जो प्रतिदिन आदर से गंगा जी का माहात्म्य सुनते हैं, उन्हें गंगास्नान का फल होता है। जो पितरों के उद्देश्य से गंगाजल के द्वारा शिवलिंग को स्नान कराते हैं उनके पितर यदि नरक में पड़े हों तो भी तृप्त हो जाते हैं।

जो एक बार भी तांबे के पात्र में रखे हुए अष्टद्रव्ययुक्त गंगाजल से भगवान् सूर्य को अर्घ्य देते हैं, वे अपने पितरों के साथ सूर्यलोक में जाकर प्रतिष्ठित होते हैं। जल, दूध, कुश का अग्रभाग घी, मधु, गाय का दही, लाल कनेर और लालचन्दन-इन आठ अंगों से युक्त अष्टाङ्ग अर्घ्य देता है उससे भगवान् सूर्य अधिक सन्तुष्ट होते हैं।

चन्द्रमा और सूर्य ग्रहण में, व्यतीपात योग में, विष्णु-योग में तथा दोनों अयनों में (मकर और कर्क संक्रान्ति के दिन) किया हुआ गंगा स्नान लाख गुना पुण्य देने वाला होता है। यदि सोमवार को चन्द्रग्रहण और रविवार को सूर्यग्रहण हो तो वह चूड़ामणि नामक पर्व कहलाता है उसमें किया हुआ गंगा स्नान असंख्य पुण्यदायक है।

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में हस्त नक्षत्र युक्त दशमी तिथि को जो विधिपूर्वक "**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै स्वाहा।**" इस मन्त्र का जप करके गंगास्नान एवं पूजा, दान, होम करता है वह दस जन्मों में उपार्जित दस प्रकार के पापों से निःसन्देह छूट जाता है। यदि इस तिथि के साथ बुधवार का योग हो, तो उस दिन गंगा जी के जल में खड़ा होकर, "'**ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः। नमस्ते विष्णुरुपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोस्तुते॥**' स्तुति करके गंगास्तोत्र का दस बार पाठ करता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। जो इस स्तोत्र लिखकर अपने घर में रखकर पूजन करता है, उसे कभी अग्नि, चोर, सर्प आदि का भय नहीं होता।

श्री गंगा स्नान के विशेष पुण्यप्रद पर्व दिन

विशेष रूप से चन्द्र ग्रहण और सूर्यग्रहण में, व्यतीपात योग, मकर एवं कर्क संक्रान्ति, चूड़ामणि पर्व, ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि, अमावस, पूर्णिमा, चतुर्दशी, सप्तमी, **अक्षय तृतीया, सूर्य एवं गुरु** दोनों मकर राशि में हो तो गंगा स्नान करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है। वैशाख, ज्येष्ठ, माघ मास एवं फाल्गुन (सूर्य कुम्भे स्थितः) में गंगा जी तट पर स्नानोपरान्त श्रद्धा से किया श्राद्ध, पिण्डदान, तिलोदकदान पितरों की अनेकों पीढ़ियों का उद्धार करने वाला माना गया है। इसके अतिरिक्त महाविषुव दिवस (20 मार्च), वैशाख संक्रान्ति, चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, वैशाख पूर्णिमा, गंगा-दशहरा, आषाढ़ (गुरु पूर्णिमा), श्रावण-भाद्र पूर्णिमा, आश्विन अमावस, शरदपूर्णिमा, कार्तिक अमावस, माघ-एवं फाल्गुण संक्रान्ति, फाल्गु पूर्णिमा, चैत्र अमावस और ग्रहण काल—सूर्यग्रहण (1 अग० शुक्रवार 2008 ई०), चन्द्रग्रहण (16 अग० शनिवार, 2008 ई०) को मौनी अमावस का स्नान 6-7 फर० 2008 ई० को करना शुभ रहेगा।

विशेष—तीर्थ में निवास एवं गंगास्नान के दिनों में पापकर्म, हिंसा, झूठ आदि अन्येकर्मों में लिप्त नहीं होना चाहिये। चूंकि पुण्यक्षेत्र में किया हुआ थोड़ा सा पुण्य भी अनेक प्रकार से वृद्धि को प्राप्त होता है, तथा वहां किया हुआ छोटा सा पाप भी महान हो जाता है—

पुण्यक्षेत्रे कृतं पुण्यं बहुधात्रऋद्धिमृच्छति।
पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं महदण्वपि जायते॥ (शिव पुराण)

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल–कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला–साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर–दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र–बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय–विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा है**। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क–वितर्क करने में कुशल, दूर–दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन–पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य–क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए–नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय–विक्रय, पुस्तक–लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल–पुर्जों के कार्य–व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र–मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला–संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, वृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर–पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश–विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि–चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी–छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े–बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई–बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य–व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन–यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध–शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा–गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय–विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना है**। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न–तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक

श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा (Diamond)** अथवा **श्वेत मोती शुभ** नग है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

बृश्चिक लग्न—वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न—धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न—मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न—लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए, पुखराज शुभ** होगा।

मीन लग्न—मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान्, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

श्री दुर्गा चरित् एवं सप्तशती की महिमा

कलियुग में समस्त दुःखों एवं कष्टों के निवारण का एकमात्र उपाय भगवती देवी दुर्गा की उपासना ही शास्त्रों में बतलाया गया है। **''कलौ हि कार्य सिद्धयर्थमुपायं श्री दुर्गार्चनम्॥''** श्री दुर्गासप्तशती में वर्णित श्री दुर्गा जी के चरितों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य एवं सौभाग्यादि की प्राप्ति होती है। शुभ कार्यों में बार-बार पड़ने वाले विघ्नों की शान्ति होती है। विधिपूर्वक पाठ करने से जीवन के चारों क्षेत्रों-धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में मनोवाँछित फल प्रदान कराने वाली **मन्दाकिनी** है।

जो व्यक्ति चैत्र, आश्विनादि नवरात्रों में दीपावली, दशहरा, अष्टमी आदि पर्वों पर अथवा कोई आकस्मिक संकट उपस्थित हो जाने पर श्रद्धा भक्ति के साथ श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करता है। माँ दुर्गा की कृपा शक्ति से समस्त विघ्न दूर होकर मनोवांछित फलों की प्राप्ति हो जाती है। पाठोपरान्त पाठ की दशांश संख्या में श्री दुर्गा हवन करने से शीघ्र ही कामना सिद्धि होती है।

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्म ग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रन्थ है। पं. पन्ना लाल ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा सप्तशती के प्रस्तुत नवीन संशोधित संस्करण में मूल पाठ के साथ हिन्दी टीका, श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ विधि, श्री दुर्गा पाठ सार कथा, श्री नवदुर्गा महिमा, देवी कवच, अर्गला स्तोत्र, तीनों रहस्य, नवचण्डी, शतचण्डी-विधान, श्री सप्तशती के प्रत्येक अध्याय के मन्त्रों की आहुतियां हवन विधि सहित, अनुष्ठान हेतु अनेक **काम्य तान्त्रिक प्रयोग,** कनकधारा स्तोत्र, आरतियां इत्यादि अनेक नवीन विषय जो अन्य किसी भी अन्य प्रचलित सप्तशती में आप नहीं पाएँगे॥ धर्म पारायण प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय एवं उपयोगी पुस्तक। इसमें दिए गए तान्त्रिक प्रयोगों की सहायता से मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति हो सकती है। श्रीदुर्गासप्तशती (सरल भाषा में) भी उपलब्ध है। **पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।**

भेंट—65 रु., डाक व्यय अलग॥

नोट—कार्यालय के नियमानुसार 50 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजें।

शिवमन्त्रावली भा. टी.

प्रस्तुत बृहद् पुस्तक **''शिवमन्त्रावली''** में भगवान् **शिव** के अतिरिक्त अन्य प्रमुख देवी-देवताओं जैसे गौरीपुत्र गणेश, भगवान् विष्णु, महालक्ष्मी, भगवान् कृष्ण, माता-गायत्री, श्री राम, माता सरस्वती देवी, श्रीदुर्गा माता, श्रीहनुमान, भगवान् सूर्य, ब्रह्म मन्त्र, यक्षिणी, बगुलामुखी, महाकाली, अन्नपूर्णा देवी इत्यादि देवी-देवताओं के प्रमुख जपनीय मन्त्रों का अपूर्व संग्रह किया गया है।

इसके साथ ही शिवलिङ्ग का प्रादुर्भाव, सृष्टिक्रम, जपानुष्ठान के नियम, विविध कल्याणकारी मन्त्र, महामृत्युञ्जय मन्त्रों के विभिन्न स्वरूप **बीज मन्त्रों** का रहस्य, **यन्त्र** निर्माण विधि, प्राण-प्रतिष्ठा, **भगवान् शिव के त्रिनेत्र, सर्पादि रहस्यमय प्रतीक चिह्न,** रुद्राक्ष महिमा, **शिवोपासना से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति,** महाशिवरात्रि व्रत माहात्म्य, द्वादश ज्योतिलिङ्ग, मन्त्र और स्तोत्र में अन्तर, विविध स्तोत्र, अभीष्ट वर, कन्या प्राप्ति प्रयोग आदि अनेक विषयों का समावेश दिया गया है। मूल्य 150 रु., फोन--0181-2457959

मंगवाने का पता—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8 (पं.)

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी ३१°। १९ अक्षांश जालन्धर, एवं २३°। ३० अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यतः अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन २८ की अपेक्षा २९ होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या −) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की १ तारीख से २८ फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **१ मार्च से ३१ दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

२९ फरवरी के लग्न मान के लिए २८ फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**—ता. १६ अप्रैल, १९९५ को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. १६ अप्रैल को ७.२९ पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +२ मिनट प्राप्त हुए। अतः सन् १९९५ में **मेष लग्न** ७.३१ पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९२B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१
१९९३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१९९४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
१९९६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
१९९६B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	−१	−१	−१	−१
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	—१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	—१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८B	−१	−१	०	०	०	०	०	०	०	−१	−१	—१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५२७	७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	३१	५ ३९	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	१ १५	२ ४०	४ ०२
15	ज्ये.	५ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	२	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	३	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	४	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	५	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	६	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	७	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	८	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	९	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	१०	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	११	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१२	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१३	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१४	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१५	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१६	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१७	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१८	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	१९	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२०	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२१	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२२	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२३	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२४	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२५	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२६	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२७	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२८	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	२९	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३०	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३१	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —					

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	३२	६ ०१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५
17	[illegible]	[illegible]				— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	२	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	३	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	४	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	५	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	६	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	७	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	८	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	९	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	१०	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	११	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१२	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१३	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१४	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१५	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१६	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१७	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१८	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	१९	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२०	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२१	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२२	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२३	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२४	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२५	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२६	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२७	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२८	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	२९	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३०	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	३१	६ १९	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४
17	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	२	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	३	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	४	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	५	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	६	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	७	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	८	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	९	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१३	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१४	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू.	१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१८	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	१९	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२०	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२३	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२४	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२५	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२६	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२८	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	२९	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३०	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (अक्तू-नवं. (कार्तिक)) (नवं-दिसं. (मार्गशीर्ष)) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्तूबर	कार्तिक	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५१	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी दिसं.-जन. (पौष) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ० ६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ० २	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जन.-फर. (माघ) भा. स्टै. टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी (फर.-मार्च (फाल्गुन) भा. स्टे. टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५६	९ १८	१० ५१	१२ ४५	१४ ५९	१७ २२	१९ ४२	२२ ००	० २२	२ ४२	४ ४६	६ २७
25	१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
26	१४	७ ५०	९ १२	१० ४५	१२ ३९	१४ ५३	१७ १६	१९ ३६	२१ ५४	० १६	२ ३६	४ ४०	६ २१
27	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३६	६ १८
28	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३२	६ १४
29	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २८	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी (मार्च-अप्रैल (चैत्र)) भा. स्टे. टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (—) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**—मान लो आपने १६ जुलाई, २००७ को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें —८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। **निधि शर्मा M.Sc.**

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	-५	-५	-५	-३	-३	-६	-५	-५	-४	-५	-५	-५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	-१	-३	-४	-१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	-१	-५	-४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	-१५	-१२	-१३	-१५	-२१	-२९	-३४	-३७	-३६	-३२	-२६	-२०
अलीगढ़	-४	-३	-३	-५	-७	-१३	-१६	-१७	-१७	-१३	-११	-७
अयोध्या	-१८	-१८	-१५	-१९	-२१	-२५	-२८	-३०	-२८	-२७	-२४	-१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	-४	-६	-७	-७	-४	+१	+४
आगरा	-४	-२	-३	-६	-७	-१२	-१५	-१६	-१६	-१३	-१०	-६
अगरतला	-५०	-४७	-४६	-५३	-६०	-६७	-७५	-७८	-७६	-७३	-६४	-५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	-८	-१४	-१९	-१७	-१०	-१	+७
ऊना (हि.प्र.)	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३
उधमपुर	-२	-२	-२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	-७	-१४	-१९	-१७	-१०	-२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	-४	-८	-६	-१	+६	+१३
करनाल	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-४	-३
कालका	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-४	-३
कुरुक्षेत्र	-४	-३	-३	-४	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-३	-३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	-१	-१	+१	-०	-०	-०	-०	-१
कोटखाई	-७	-७	-७	-७	-७	-८	-७	-७	-७	-६	-६	-७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	-१	-६	-११	-१४	-१३	-८	-२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	-०	-०	-१	+०	-०	-०	-०	-०	-१
काठमण्डू	-३२	-३१	-३१	-३०	-३३	-३८	-४०	-४२	-४२	-४०	-३६	-३३
कोलकत्ता	-३७	-३२	-३५	-४०	-४९	-५८	-६४	-६९	-६८	-६१	-५३	-४४
कानपुर	-११	-१०	-१०	-१३	-१८	-२२	-२५	-२७	-२६	-२१	-१७	-१३
कांगड़ा	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
कुल्लू	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-५	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	-२	-२	-२	-१	-०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	-१	-१	-१	-०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-३	-३	-२	-२	-३
ग्वालियर	-२	+१	+०	-५	-९	-१२	-१६	-१८	-१७	-१३	-८	-५
गुरदासपुर	-१	-१	-१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	-२३	-२१	-२२	-२४	-२७	-३२	-३५	-३७	-३६	-३२	-२७	-२४
गुड़गांव	-१	-१	-१	-३	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-६	-४
गोहाटी	-५५	-४८	-५३	-५५	-६१	-६८	-७२	-७५	-७३	-६९	-६४	-६०
गाज़ियाबाद	-२	-१	-१	-२	-२	-७	-९	-११	-११	-९	-६	-३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	-२६	-१८	-२३	-२७	-३३	-४२	-४७	-५१	-४१	-४४	-३७	-३२
चण्डीगढ़	-५	-४	-४	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
चिन्तपूर्णी	-२	-१	-२	-२	-३	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-१
चम्बा	-६	-६	-६	-५	-४	-२	+१	+२	+१	+०	+३	-४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	-३	-७	-९	-९	-७	-२	+३
ज्वालामुखी	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४
जम्मू	-१	-१	-१	+०	+२	+४	+६	+७	+६	+५	+३	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	-२	-१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	-१	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	-२	+१	+०	-६	-११	-१७	-२२	-२५	-२३	-१८	-१३	-७
जगन्नाथपुरी	-२२	-१६	-१३	-२६	-३७	-४९	-५९	-६४	-६३	-५५	-४४	-३२
दिल्ली	-२	-१	-१	-४	-४	-८	-११	-१२	-१२	-१०	-७	-५
दुर्ग (म. प्र.)	-६	-०	-२	-१०	-१९	-२७	-३७	-४२	-४२	-३१	-२१	-१४
देहरादून	-१०	-१०	-९	-१०	-९	-११	-१२	-१२	-१३	-११	-९	-९
धर्मशाला	-५	-५	-६	-५	-५	-५	-५	-५	-४	-४	-४	-४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-११	-१२	-१४	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१६	-२३	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-१०	-११	-१३	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+८	+२	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ(उ.प्र.)	-६	-३	-४	-७	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	+०	-१	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१२	-१६	-२२	-२४	-३०	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-१	+१

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा-तेजी)	120 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	50 रु.
मोटर वाईडिंग	40 रु.
पशु चिकित्सा	40 रु.
विवाहित आनन्द	35 रु.
पत्नी पथ प्रदर्शक	35 रु.
लाटरी गाईड	40 रु.
स्वर लिपि संग्रह	50 रु.
व्यापार रत्न	300 रु.
तबला वादन कोर्स	80 रु.
Dictionary (Big)	250 रु.
Dictionary (Med.)	120 रु.
ताश के जादू	40 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज (बड़ी)	150 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	95 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	200 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	120 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	50 रु.
जूडो कराटे सीखें	30 रु.
हारमोनियम सीखिए	60 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	50 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	50 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	48 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	40 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	25 रु.
मिलिंग मशीन	45 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	50 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	80 रु.
ए. सी. मोटर वाईडिंग	80 रु.
स्टीम बायलर्स और इंजन	100 रु.
आर्य संगीत रामायण	110 रु.
स्क्रीन प्रिंटिंग	100 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
बनाइये खाना वेजीटेरियन	75 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	100 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	40 रु.
भारतीय व्यंजन	25 रु.
आलू पनीर के व्यंजन	40 रु.
माइक्रोवेव कुकिंग	40 रु.
फल सब्जी से चिकित्सा	40 रु.
101 वर्ष कैसे जिएं	35 रु.
चाइनिज कुकरी	35 रु.
शहनाज ब्यूटी बुक	125 रु.
योगासन चिकि. स्वा. रामदेव	125 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स	50 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	35 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
एलोपेथिक चिकि. (कोकचा)	200 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	180 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	100 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	60 रुपए
घर का वैद्य	40 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
सूर्य शक्ति से ईलाज	25 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	150 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	35 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	135 रुपए
न्यू एलोपैथिक मैडी. गाईड	40 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	50 रुपए
योगासन एवं साधना	50 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	35 रुपए
जड़ी-बूटियाँ	30 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	160 रु.
यूनानी चिकित्सा सार (वैद्यनाथ)	150 रु.
सचित्र योगासन	30 रु.
वनौषधि शतक (वैद्यनाथ)	100 रु.
रस भस्मों का सेवन	25 रु.
भैषज्य भास्कर	50 रु.
ईलाजुलगुर्बा	85 रु.
शरीर रचना क्रिया वि.	50 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	40 रु.
आयुर्वेद मंथन	30 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी-बूटियां	200 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	245 रु.
गुणकारी जड़ी-बूटियां	60 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	45 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	60 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	70 रु.
भाव प्रकाश निघन्टु	120 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	50 रु.
आपका आरोग्य आपके हाथ	55 रु.
योगासन	30 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	30 रु.
घरेलू इलाज	30 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	125 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	100 रु.
84 योगासन व स्वास्थ्य	40 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	50 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

पुस्तक	मूल्य
काली किताब	400 रु.
काली किताब (छोटी)	150 रु.
महाइन्द्रजाल	150 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	100 रु.
शाबर मंत्र विद्या	50 रु.
तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य	300 रु.
यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र (छोटी)	40 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	60 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	60 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	125 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	200 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	120 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	40 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	60 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	60 रु.
काली तंत्र शास्त्र	50 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	50 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	60 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	30 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके	40 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	60 रु.
धनप्रदायक तांत्रिक क्रियाएं	50 रु.
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	40 रु.
11000 गंडे ताबीज और टोटके	200 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	150 रु.
मंत्र रहस्य	80 रु.
यंत्र विधान	120 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	75 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	50 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	50 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	60 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	60 रु.
मनोकामना सिद्धि	30 रु.
वशीकरण मन्त्र	30 रु.
चीन बंगाल का जादू	30 रु.
कामाक्षा मन्त्र	30 रु.
सूर्य तन्त्रम्	40 रु.
कामाख्या उपासना	60 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	150 रु.
महाविद्या मंत्र तंत्र	35 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	80 रु.
श्री नवग्रह साधना रहस्य	50 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	35 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	20 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीपः	80 रु.
विवाह पद्धति	45 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
कर्मकाण्ड पद्धति	100 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	65 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	100 रु.
कर्मकाण्ड भारती	70 रु.
पूजा पद्धति	50 रु.
पूजा भास्कर	40 रु.
हवन रहस्यम्	50 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	30 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	55 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	50 रु.
श्री दुर्गा पूजन विधान	15 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	60 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा)	30 रु.
सनातन संस्कार विधि	150 रु.
संस्कार पद्धति	60 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	55 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	20 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	180 रु.
हवन पद्धति	25 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	25 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा	60 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	40 रु.
सर्व व्रतोद्यापन प्रकाश	100 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	40 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	100 रु.

अपने आर्डर के साथ 50/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता-

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर।

फोन-2457959

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का **संक्षिप्त विवरण** लिख रहे हैं—

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्यमराग, हिन्दी में माणक, **मानिक**, **अंग्रेज़ी** में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि—असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (२) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (३) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि—माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों, **रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र—ॐ, ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं अंग्रेज़ी में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान—शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना, चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा—(१) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (२) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति—चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि—मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न—चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)—यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा—(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त **रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, बृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि एवं लग्न** वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र

में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र—ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

''पन्ना'' बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald)। पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा—(१) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (२) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण—'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए लाभप्रद** माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि—यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र—ॐ, ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु—रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (**बृहस्पति**) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत में** इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज**, व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि—जो पुखराज स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि का** माना जाता है।

परीक्षा—(*i*) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (*ii*) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण—पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख** की **बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग—इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि—पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वज़न का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **''ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः''** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हज़ार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक, राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न—सुनैला इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व **'हीरा'** है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान—अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा—(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण—हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक** सुख में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण—हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे—दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि—शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र (**ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**) का १६ हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न—(i) फिरोज़ा नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)– यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान—असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा—(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।

गुण—नीलम धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति—नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि—नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं पुष्य, उभा, चित्रा, स्वा, धनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः मन्त्र से २३००० की संख्या में अभिमन्त्रित करके धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न-गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि—सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि—गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र—"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है। जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया ४ रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान—(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि—लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठिका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र—"ॐ स्रां स्रीं, स्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूर्मवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'रत्न ज्योतिष विज्ञान' पुस्तक 35 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य १०० रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

धन–वैभव प्रदायक–श्रीयन्त्र

धन-सम्पदा और वैभव की देवी महालक्ष्मी की कृपा पाने के लिए **श्री यन्त्र** की उपासना एवं प्रयोग प्राचीन काल से प्रचलित है। आर्थिक दृष्टि से **श्री यन्त्र** को समस्त यन्त्रों का **शिरोमणि** और '**यन्त्रराज**' माना गया है। **श्री यन्त्र** उस **त्रिपुरा महाशिवशक्ति** का प्रतीक है, जो धन-वैभव, सुख-समृद्धि एवं सम्पन्नता की अधिष्ठात्री भी महात्रिपुर सुन्दरी के रूप में प्रसिद्ध है।

ब्रह्मा की उत्पत्ति, स्थिति और पालना की सामर्थ्य प्राप्त करने का श्रेय '**श्री**' के कारण ही है। जगद्‌गुरु स्वामी शंकराचार्य के अनुसार ''यदि शिव शक्ति के सहित होता है, वही शक्ति युक्त अर्थात् सर्व सामर्थ्यवान होता है। शक्ति से रहित हुआ देव स्पन्दन करने योग्य (शुभाशुभ फल देने योग्य) नहीं होता।''

शिवः शक्त्या युक्तो तदि भवति शक्तः प्रभवितुम्॥ न चेदेवं देवो न खलु कुथलः स्पन्दितुमपि॥

शास्त्रानुसार लक्ष्मी, सरस्वती एवं ब्रह्माणी—तीनों लोकों की सम्पत्ति, वैभव एवं शोभा का नाम ही ''श्री'' है।

लक्ष्मी सरस्वतीधात्री त्रिवर्गसम्पद् विभूति शोभासु। उपकरणवेष रचना विद्यासु श्रीरिति प्रथिता॥

जो **ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश**—इन तीनों से जो पुरातन हो, वही त्रिपुरा है।

श्रीयन्त्र में पाँच त्रिकोण की नोंक ऊपर की ओर, और चार त्रिकोण की नीचे की ओर है। जिनकी नोंक ऊपर की ओर है, उन्हें भगवती की शक्ति का प्रतीक माना जाता है और उसे शिवशक्ति भी कहा जाता है। नीचे की ओर नोंक वाले त्रिकोण कल्याणकारी शिव के प्रतीक हैं। इन्हें श्रीकण्ठ भी कहते हैं। ऊर्ध्वमुखी पाँच त्रिकोण—पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियां, **पाँच तन्मात्रा और 5 महाभूतों** के प्रतीक हैं। शरीर में यह अस्थि, मेदा, माँस, अवृक और त्वचा के रूप में विद्यमान् हैं।

अधोमुखी चार त्रिकोण शरीर में जीव, प्राण, शुक्र और मज्जा की द्योतक है और ब्रह्माण्ड में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के प्रतीक हैं। पाँच ऊर्ध्वमुखी और चार अधोमुखी त्रिकोण नौ (9) मूल प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस प्रकार श्री यन्त्र में एक आठ दल वाला और दूसरा सोलह दल वाला कमल है। भगवान् शंकर के मतानुसार सृष्टि से ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण अग्नि-तत्त्व के, वृत्त वायु तत्त्व के, बिन्दु आकाश का और भूपुर पृथ्व तत्त्व का प्रतीक माना जाता है।
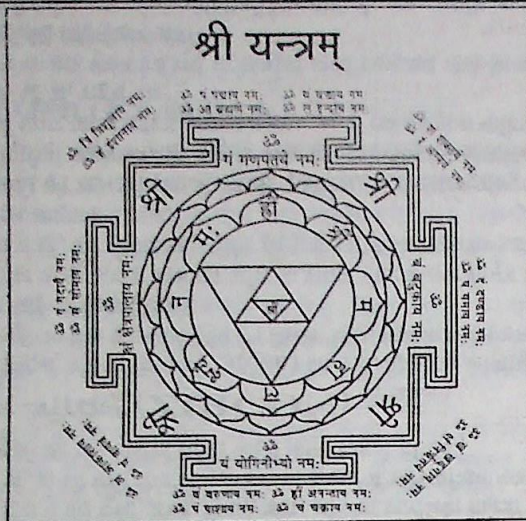
''**श्री यन्त्र**'' की संरचना किसी शुभ मुहूर्त में स्वर्ण-पत्र, रजत-पत्र, ताम्र-पत्र अथवा भोजपत्र पर शुद्धतापूर्वक एवं श्रद्धापूर्वक करवानी चाहिए। तदुपरान्त किसी सुयोग्य पण्डित से उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करवाकर विधिवत् लाल पुष्पों द्वारा पूजन करना चाहिए। यद्यपि श्रीयन्त्र की शास्त्रीय पूजन विधि अत्यन्त जटिल एवं विस्तृत प्रक्रिया है, परन्तु यहाँ पर संक्षिप्त विधि का उल्लेख करते हैं—

संक्षिप्त पूजन विधि—नित्य स्नान पूजा,, पाठोपरान्त शुद्ध स्वच्छ वस्त्र धारण करें। श्री यन्त्र को लाल वस्त्र (बिना सिलाई किए हुए) एवं मौली लपेट कर लाल चन्दन का तिलक लगाकर श्री गंगा जल द्वारा ''ॐ पवित्रापवित्रो....... वा'' मन्त्र द्वारा शुद्धिकृत आसन पर यन्त्र को स्थापित करके धूप-दीप अगरबत्ती द्वारा वातावरण को पवित्र करके यन्त्र के सम्मुख नीचे शुद्धासन (कम्बल अथवा कुशसन) पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें तथा निम्न मन्त्र पढ़ते हुए यन्त्र को प्रणाम करें—

''दिव्यां परां सुधवलां चक्रयातां, मूलादि बिन्दुपरिपूर्णा कलात्मरूपाम्।
स्थित्यात्मिकां शरधनुसृणि पाशहस्तां, श्री चक्रतां सततं नमामि॥''

'**श्री यन्त्र**' की अधिष्ठात्री देवी महात्रिपुर सुन्दरी है, अतः यन्त्र को प्रणाम करने के बाद निम्न मन्त्र द्वारा देवी का ध्यान करें—

बालार्कयुत तैजसं त्रिनयनां, रक्ताम्वरोल्लासिनी। नानालंकृति राजमान वपुषं बालेन्दु युत शेखरम्॥
हस्तैरिक्षु धनुः सृर्णि सुरशंर, पाशं मुदा विभ्रतीम्। श्रीचक्र स्थित सुन्दरीं, त्रिजगतामाधारभूतां भजे॥

इसके पश्चात् श्रीयन्त्र की पंचामृत अथवा गंगा जल से स्नान कराकर लाल चन्दन, अक्षत, रोला, लाल पुष्प, धूप, दीप-नैवेद्यादि अर्पित करते हुए पूजा करें। फिर कलश पर शुद्ध घी का दीप जलाकर यशाशक्ति संख्या में मन्त्र जाप प्रारम्भ करें॥ जप के लिए मूंगे, लाल चन्दन अथवा रूद्राक्ष की माला श्रेष्ठ रहती है। जपार्थ निम्न कोई भी मन्त्र अपनी सुविधा अथवा सामर्थ्यानुसार सवा लाख, 51000, 31000, 21 हज़ार अथवा 11 हज़ार या 108 की संख्या में नियमित रूप से, प्रतिदिन एक निश्चित समय पर (बिना क्रम तोड़े) संकल्प पूर्वक करने से अभीष्ट सिद्धि होती है। मन्त्र इस प्रकार से हैं—

नमः श्री चक्रंस्थेऽखिलमयि नमो बिंदुनिलये। नमः कामेशाक्तं स्थितिाते नमस्तेऽव ललिते॥

अथवा

नमो हेमादिस्थे शिवशक्ति नमः श्री पुरगते। नमः पद्माख्यां कुतुकिनी नमो रत्नगृहगे॥

अथवा

''ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः॥''

विधिपूर्वक पूजनोपरान्त इस यन्त्र को अपने निवास स्थान (गृहादि) में, व्यवसायिक स्थान (दुकानादि) में अथवा अपने पास ताम्र, चाँदी आदि धातु में मुद्रित करवा कर रखने से अनेक प्रकार के संकटों से निवृत्ति, विघ्न बाधाओं का निवारण होकर जातक को धन धान्य, सौख्य आदि की वृद्धि होती है। प्रतिदिन केवल एकाग्रचित होकर दर्शन करके मन्त्र सहित प्रणाम करने मात्र से आर्थिक कष्टों से निवृत्ति होकर धन-सम्पदादि सुखों की प्राप्ति होती है। यन्त्र के मध्यस्थ श्री बिन्दु पर एकाग्रचित्त होकर ध्यान लगाकर मन्त्र जपने से अनेक मानसिक विकार दूर होते हैं।

हमारे यहाँ से विधिवत् तैयार किए हुए श्री यन्त्र चाँदी, ग्लेज़ पत्र पर रंगीन ''**श्री यन्त्र**'' प्राप्त किए जा सकते हैं। श्रीयन्त्र सम्बन्धी अधिक विस्तृत जानकारी हेतु हमारी प्रकाशित पुस्तक ''**मन्त्र सार संग्रह**'' का अवलोकन करें।

समस्त भारत में ऐम बी डी का एकछत्र राज्य